

| !        | معنمون  | Ú.        | 3.      | مفتمون                                     | Ţ.  |
|----------|---|-----------|---------|--|-----|
|          | ا معول درایت کے برجب اقعات کی<br>صحصیے مراتب- | 14        |         | ديباجيا زصفئه تاصغن سيسام                  |     |
|          | البيخ لاطرز بخريه                             | <b>r.</b> | r       | متيد-                                      | 1   |
|          | آریخ اورا نشایردازی مافرق-                    | 1         | "       | أيربغ كاعضر مرقومين موحود مولك             | ۲   |
|          | یورپ کی بے اعتدا لی سے احتراز۔                |           | -       | عرب کی خصوصیت ۔                            | ۳   |
|          | ترميب بتائج متعلق خيامورقابل عالا-            | 77        | "       | عرب مین ایریخ کی ابتدا-                    | س   |
| <u>,</u> | ت عمرکا نام ونب سِن رشدوز                     |           | "       | سيرت نبوى من سي سيلي مقتنيف                | ۵   |
| 1        |   |           | 0       | قديم ناريخنين-                             | 4   |
|          | ازصفحة سابآ اصفحة اس                          |           | ا المام | قدماک جو نقسنیفات آج موجود ہیں۔            | 4   |
|          | حضرت عمرك جدامجدا ورأكفوجو مرتب               | 7 77      | 9       | متاخرین کا دور-                            | ^   |
| _        | حاصل تقا-                                     |           | "       | متاخرین نے قدما کی خصصیتیں جھیڑ دین۔       | 9   |
| •        | حفزت عمرکے برا درعم زا د ژمیر۔                | 10        | ).      | آریخی م <b>تربی</b> ت -<br>تاریخ کی متربیب |     |
| 1        | حفزت عركے والد خطأب -                         |           | 11      | آریخ کے کیے کیا چنرین لازم ہیں۔<br>م       |     |
|          | حنرت عمر کی ولادت -                           | 76        | "       | قدیم اریخون کے نقص اور اسکے اساب -<br>ت    |     |
| •        | سن رشد  | 70        | سوا     | واتعات كي صحت كامعيار-                     | عوا |
| •        | ىنىپ دانى كى تعلىم-                           | 74        | "       | روایت -                                    | سرا |
|          | فنتِ ببلوان کی میلیم                          | ۳.        | 14      | درایت-                                     | 10  |
| ,        | شمسوارى كى تعليم غېررمونا -                   | ۱۳۱       |         | الفاروق مين قديم اريخون كي لمي كبطيح       | 17  |
| ۰.       | للمنے کی تعلیم                                | ٦٣        | 10      | پورى كى گئى-                               |     |
| "        | فكرمعات- أ                                    | ۳۳        |         | درابت کے اصول بن سے الفاروق                | 14  |
| ,        | تجارت كے كئے سعز۔                             | 474       | 14      | ين كام يا كيا-                             |     |
| 1        | بول سلام أصبي اسر بامنويه                     | 10        | 16      | امولِ رہی جن مرا بدلک سکتا ہے۔             | 1~  |

|  | <u>'</u>                               |  |                |
|--|--|--|----------------|
| الله معنون الله  |  | المعنمون   | 17             |
| مو غروهٔ حلین-<br>م م قرطاس کے واقعہ کی تبشہ ا   |  | بجرت اضفه بهبه تاصفت بدمه  | 7              |
| The state of the s | 1                                      | ھزت عرکی ہجرت۔   | <del>-</del> 4 |
| مقیفهٔ بنی ساعده ، حضرت ابوبکر گی خلات<br>محصرت اصوری می اصوری   |  | حضرت عركے سائقة جن لوگو أی ہجرت کی                                       | ٣٤             |
| ورهنرت عمر كاشخلاف رصفيه ۴ تا صفيم ۲۲  | 11 1                                   | حضرت عرشے کمان قیام کیا۔<br>مام میں میں میں ان اس میں میں                |                |
| ه ه سقیفهٔ بنی ساعده کے واقعات کیتعلق<br>بخواطع میلی آتی ہے آئی فقطَ الحبت۔ ا  |  | نها جرمین اورا نضارمین ا <b>وت</b> -<br>حضرت عرکے اسلامی <b>بمبا</b> ئ - |                |
|  | -                                      | ا ذان کا طریقہ حضرت عمر کی راسے کے                                       |                |
| نلافت ورفتوحات اصفيهم تناصفي م   | يسر                                    | موافق قائم ہوا۔  |                |
| و ه اعراق وشام براسلامی علد کے اساب سم ہا،   | نسم                                    | مپر <i>نجری ا</i> وفات رسول تصلع   | سيا            |
| لتوحات عراق از صفحهٔ ۹ یما صفحهٔ ۸۹  | 11                                     | ارْصفی سالصفره   |                |
| ۵۵ عراق برنشارکشی-<br>۵۶ واتعهٔ جسرادر سلمانون کشکت- ۲۸  | ٣٠                                     | غزدهٔ بدرسته ه-  | 1              |
| ه واتعه حبرادر سلمانون کتکست- ۲۸   |  | قیدیون کے معالمے مین حضرت غیری رائے<br>غزیریات                           | 1              |
| اقعهٔ بورب مضان میں احاز صفحه ۸  | 9 7                                    | غرزهٔ سولیت-<br>غرزهٔ اعدسسیم-   | 1              |
| تاصفت ۱۰۲  |  | حضرت عمركي واقعة أصدمين ابت قدم  | 4              |
| ٥٥ يزو گرو کې تخت نشيني ادرايراينون کې   | Petro                                  | 1/1  |                |
| انی طیاریان- او او   | \\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\ | حفزت حفصه کاعقدر سول متد کے سا  <br>۱ قدم مذلف سر نهمه                   | 46             |
| ۹۰ المصنرت عمرکا خود حسبیه سالار نبارا<br>مرینه سے بحل ا   | وبم                                    | ور من بوسیر صداد<br>جنگ خندق او خراب سیده -                              | 79             |
| ۲ سعدد قاص کی سیسالاری - ۹۳  | . قناسو                                | دافويص ميدسية م  | ٥.             |
| ٢ افنج ي زيب دراكيا يُم حمد فنج كي الم   | ام م                                   | حفرت عركا ابن سويون كوطلاق دينا-<br>ا                                    | 01             |
| ٦١ حضرت عمر كي بدايتين- ٢١   | ٠, ال                                  | جل ينبر المرابع  | 01             |

| ſ                      |  | i i   |          |  |              |
|------------------------|--|-------|----------|--|--------------|
| 3;                     | مضمون  | ij.   | 4        | مفنون  | Ť.           |
| 122                    | خزا دُ نوشيروان كاعجين عرب دياين                     | ~ i1  | 96       | تبليغ اسلام الم المنظ الموران وكالمنظ                          | 40           |
| 171                    | لو لاي <u>ب ۳ اه صفحت ۱۲۳</u>                        | VAP   |          | يزو كُرُوك سائق شفراك اسلام كا                                 | 44           |
|                        | و دري تو آو پر                                       |       | 4^       | سوال وحراب۔<br>فورین زبریہ تاس میں ان                          |              |
|                        | نتو <i>حات شام صغن ب</i> ۱۲                          | 3     | 1-1      | رمعی اسفیرنگررستم کے پاس حانا۔<br>من                           | 44           |
|                        | شام کی فٹکرٹنی کے ابتدائی طالات۔                     | r     | 1.7      | منعیره ی سفارت-  | <del> </del> |
|                        |  | •     | المحدد ا | بركي خباك وزفتح محرم مسلامير أص                                | وسي          |
| 177                    | ومثق از صفحه مجاراً اصفحت                            | منتح  |          | تأصفحتها   |              |
|                        | حفزت فالدكاعجيب دغويب بهادري                         | 24    | 1.4      | فزج کی ترتب-   | 4            |
| 174                    | سے شرعا ہ برجرها۔                                    |       |          | فرج کے جوس دلانے کے نئے تفحای                                  |              |
| نع ۲۸                  | - <b>دُوفقره ميل</b> يم أصفي ١٦ ما                   | فخا   | 4        | عرب کی انش زبانی-  |              |
| حد '                   | 9970   |       | 100      | ارمُحُرِّ تَقْفَى كاايك بَرِجِ مِنْ واقعة-<br>ر                | 1            |
| IFA                    | حفرت معاذبن جبل کی سفارت ۔                           | ~0    |          | ايک عورت کااپنے بيٹون کواپي مُرِزور<br>آف سره پر فوران         | 4            |
| اسم                    | مهيلة انصفح سيرة باصفحه                              | ممم   | 1111-4   | تقرریسے جوہن دلاہ-<br>اخیرموکہ                                 | 1            |
| 100                    | عاة وعزه کی فتح۔                                     | 76    | יוואיין  | ا بیر عرفیه<br>رستم کا ارا جانا-                               | 1            |
| 1                      | ۱۰ د مرد کاری در | 1 1   | 116      | نردوسی کی غلط بیانی کا اخلار-<br>ازدوسی کی غلط بیانی کا اخلار- | 6            |
|                        |  | -     | 110      | سعدوقاص برلوگون كالمعن-<br>سعدوقاص برلوگون كالمعن-             | 6            |
| مند <i>اه</i><br>معموم | ٥- حب مه المصفود ١٠١٠)<br>١٩٠٤ ع از عراق             | يرموك | 11       | انتظارِ فتح مین حصرت عمری مبتیا بی-                            | 6            |
|                        | ذبیون کے سائن مراعات کی ایکھیب                       | ^^    | 114      | ابلى ج-  | 6            |
| ٤٣٤                    | شال-   |       | 114      | مراین کی فتع-  | 6            |
| مرسوا                  | بزيه كضعلّ نهايت نيته بخيروا تعات-                   | 19    |          | اسلامی فوج کاعجیب غرب مبادری                                   | 4            |
| ומץ                    | اكيب عيساني قامد كاسلان برومانا-                     | 9-    | 119      | سے دریا کا عبور کرنا۔  | ,            |
| "                      | خالدً كاسفير نكرما! -                                | 41    | 11%      | الوان كسرك كي تقويردن كا فائر ركمنا-                           | 1            |

|   | 4 |
|---|---|
| 4 | ~ |
|   |   |
| r | ▾ |
|   | • |

|        | The second secon | r i      | 1 2          |   |       |
|--------|--|----------|--------------|---|-------|
| .33    | معنمون   | ij.      | 12           | مضمول   | ·Ž:   |
| 100    | عىيائيون كى مرطرت سے حلما تورى-  | 11.      | 144          | خالدر منر کی تقریر به   | 98    |
| "      | حفرت عرف كامرطرف سن فوج كمرتميزا-  | 111      | ١٨٥          | حفزت خالد م كانئة قاعد سي فرج كورُ انا-                                   | ۳۹    |
| "      | حفرت عرم كاخوروشق كوروانه مونا-  |          | "            | خطيبون كافرج كوحرش دلانا-   | 44    |
| 109    | عىيا يئون كى شكست -  | 115      | ١٣٦          | عورتون كالرنا -   | 1 1   |
| 14.    | ت خالدٌ كامرول بونا ازصفحهٔ  | حفرر     | "            | عيسا يئون كاحملة  | 1     |
| , ,    | •  |          | 144          | معاذبن مبل وغيره كالحبيباب قدمي-  |       |
|        | ماصفخهٔ ۱۹۳  | ·        | 1540         | فالدرم ا ورعكرمه كاحملية  | 1     |
|        | حفرت خاله نم کی مغرولی سکے متعلق تمام  | 1        | 149          | مسلمان امنسرون کی دیری او ُوابت و <b>ری</b><br>ری                         |       |
| 1 7.   | مورّخون کی غلطی۔   |          | 10.          | ایک عجیب واقعہ۔<br>دیر سی نیک میریت                                       |       |
| "      | معزدلی کے اصلی اساب۔   |          |              | عييا يئون كى تنكست اورانگے تقترون<br>م                                    | 1 1   |
| 141    | معزولی کی برا ترکیفیت -<br>نریز در در ای   | 1        | 101          | کی تعدا د-<br>هٔ سرق ن برسر کن  | 1 1   |
|        | حصرت عمر نمو کا بیشته کرنا که خاله نم کی خرد<br>دن:  |          | "            | قیصرکا قسطنطینیه کوسماگنا ۔<br>حاب فوت                                    | 1 1   |
| 145    | خیانت وعیّره کی وجب زمتی۔  |          | ior          | طب کی فتح ۔<br>انطاکیہ وعیٰرہ کی فتح ۔                                    | 1 1   |
| 1.     | ل کی وہا ہے۔<br>اس کی وہا ہے۔ اوسائی از صفحہ ۱۲  | عمواس    | "            | الطالية وغيره ي ع-  | 1.4   |
|        | صفحه ۱۹۵۶ ا<br>صفحه ۱۹۵۶   |          | المحمرة الما | لمقدس يواثه إصفحه الاهاما   | ببيتا |
| 145    | Control of Control of the Control of | T.,,     |              | حفزت عرزه  کامت المقدس کور وازنوا   | \     |
| ,,,,   | حفزت عمر م کا شام کی طرف روانه مونا -<br>حفزت ابوعبیده کا حضرت عرم پرازاد ن  | 114      | 101          | مفرت عربون کے معاری سا دگی۔<br>حضرت عربون کے معاری سا دگی۔                |       |
| 144    | موج عن برنایه<br>موج عن برنایه   |          | 104          |   | 1.6   |
| اعوادا | معاذین جبل کی و فات۔   | 14.      | 106          | عضرت عمرهٔ کامیت القدس مین دخله -<br>نصرت بلال مزکا نمازک وقت ادار مبنایه | 1.4   |
| 144    | ع درور عاص کی حصن تدرید-   | 111      | "            | مورك ساتد هذت عربه كارباؤ   | 1.4   |
|        | حونت عربز کا حدث عالم کرانیا هائم ته کار   | 144      |              | 24/   |       |
| 140    | کر میران میران میران<br>کرکے شامر کوروا نیرونا۔  |          | ش            | رعبيا ئون بی دو اره لوست  | مصر   |
| "      | ر<br>سفرکي سا دگي۔   | ١٢٣      |              | منايا ارصفي وآماصفوا وا   | •     |
|        | <i>0- 9</i>  | <u> </u> |              | ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~                                     |       |

|            |   |         | <u> </u> |   |                       |
|------------|---|---------|----------|---|-----------------------|
| 13         | مضمون   | jį.     | 12       |   | 7,2:                  |
|            | صنرت عرزه كاحفرت على منكى راسير                                 | 144     | 190      | مناسب أتظامات   | 174                   |
| 144        | عل کرنا اورمس نزار فوج روانه کرنا-                              |         | 144      | قيباريركي فتع شوا <b>س وا</b> هيم ضوروا                                 | glandy-de-gar-francis |
| 166        | مغيره كاسغير نكرما! ا-  |         |          |   |                       |
| "          | 0.200   | 1100    | 140      | ومسلطام أصفيه الماصغير  | 17.                   |
| 169        | منبطوراشقلال کی ایک عجب ثمال ا<br>عجم کی تکت -                  | ا و صوا | 140      | کریت کی نتح ۔<br>اگریت کی نتح ۔   |                       |
| <u> </u> " |   |         | "        | 1 3/10/   | 170                   |
| 10.        | ى رِعَام لتُنكِر كُتْنَى اللهِ أَوْمُو                          | וגונ    |          |   | // <del> </del>       |
|            | "ماصفحة ١٨١   |         |          | خوزستان   |                       |
| 100        | حنرت عرء خود ملا كزانين عابت تق                                 |         | 144      | ا ہواز کی فتح-  | 126                   |
| "          | لتُلُكِشْ كَى دِحبِ-<br>ا <b>معن</b> يان كى فق -                | 1       |          | جوبوگ وزیری علام بالسے گئے تھے مفر                                      | Ira                   |
| 101        |   |         | "        | عرر ذکے حکم سے انکا رہا ہونا۔   |                       |
| IAT        | همران وغيره كى فتح-   | الدلد   | 14.      | ہُرمزان کی قیاریان۔   | Ir 9                  |
| 100        | آذبیان سطام صفر ۱۳ ما   | ١٣٥     | 147      | بْر مزان کا امان طلب کرنا۔<br>ہر مزان کا شوکت و شان کے ساتھ منہ         |                       |
|            | ط سال بر ۲۲ه صورتهما  |         | "        | ين د الله بوناا ورابل وب كي حيرت-                                       |                       |
| ^p         | طبرشان سرسيطيه صفخهم  | 16.7    | 164      | مِرْان كا اسلام لا ا-   |                       |
| 100        | أرميني صفخت ٥٨١   | 16.6    | 146      | عمراع أضفيهما أماصفخها  | عراق                  |
| 100        | ر سیتی اضفر ۲۰۱ تاصغی   | فارس    |          | زورد كائے سرے سلانون رِعلم كيليے  | ساسا                  |
|            | יי פון נאוויני  |         | 143      | ا و حرب کا فراہم کرنا۔<br>اولا ایس نامی کرمیذہ میں                      | سومين                 |
| IAA        | ا فارس بر محد رست کا اتفای شب -<br>ا مناوه نارس کا مفتد جرمونا- | 100     | "        | دير هرا که توجون کا فراهم سوما-<br>حدد ۱۳ ع به برای کسر حد مدر تا جدارم | د سدر                 |
| 114        | کهان میستام صفی و ۱۸  | 10.     | "        | معرف عربه ۱۹۰۵ مهم من عام عابر<br>سے مشور و کرنا۔                       | 150                   |
|            | 7- 7-1-09   |         |          | 7   |                       |
|            |   |         |          |   |                       |

|              |  |     | 1    |  |
|--------------|--|-----|------|--|
| 1.1          | مضمون  | 14. | .1.5 | المنابع المعتمول   |
| 144          | عُباوہ ابن صامِت کا سپسالا بئن کر<br>طهرزنا ۔  | 144 |      | سيتان سار مصفح ن وا  |
|              | قاصد کا حضرت عروز کے باس خام فتح<br>لیکر مانا۔   | 144 | 14-  | ا ۱۵ ما برے کی بابندی کی ایم عجب شال-  |
| <b>P</b>     | حضرت عمره كااسان حنبك كواختيا ردنيا  | 140 | N    | ١٥١ كران ١٩٣٠ ومفخر ١٩٠  |
| -            | احب نرمب کوعا ہئن تبول کریں۔<br>م  |     | يت   | حزاسان کی معتم اور بیز د گرد کی ہزم  |
| •            | ت عربز کی شها دت ۲۶ زورا<br>میرون  |     |      | سرم وعرفه الماصفي والماصفي والماصفي والماسفي وال |
| مفحة         | المهم مطابق مستهم مهم وعازه  |     | 191  | ۱۹۷ یزدگرد کا خاتان چین سے مردطلب کرا-   |
|              | ۲۰۲ صفح ۲۰۷  | a   |      | ام ۱ ا فا قان مین کی مدسے بزدگر د کا سلمانون<br>کے ساتھ معرکہ آرا ہونا۔  |
|              | کِلِّ مِّنْت فلانت ابرس ۹ میین، جارّدن)<br>حفرت ع <sub>مر خ</sub> اکا حفرت عاکثه رنهسے اجازت                         | 1 1 | 191  | 1. (4.   |
| r. r         | معرف مروا بالعرف عند المسابق المعامين-<br>هلاك الاربول مارك بيامين من حصرت عربع كا<br>خلافت ك اتناب بين حصرت عربع كا |     | 147  | مصرى فتح بنياة أصفي ١٩٥٥ ماصفي   |
| ۳۰۳۰         | ترد دا وراسکاسب -  |     | 191  |  |
| <b>k.</b> lv | فلانت کے معاملے میں معفرت عمر مذا ور<br>صفرتِ عبداللّٰدا ہر عباس کی نشکو۔  | 146 | 190  | ۱۵۶ استفرت زبیری جانبازی اور خطاط ک<br>نتخه-   |
|              | حفزت عررہ کا حفزت علی رہ کوسب سے   | 1 1 | 194  | ٥٥ ا عرب عاص اورعيسا يؤن كابري عويت  |
| r.0          | ٹرمکرستی خلافت ہمھنا-<br>حصرت عررم کی وفات کے وقت کی   | 144 | ۲۰۲  | اسكندريه كي فتح ساسره أفيفيه ٩ آماصفي  |
| 7.4          | وصيتين-  | 1 1 | 190  | ١٥٩ قبليون كامسلمانون كورد دينا-   |
| "            | غیرزمب والون کے سائد موردی۔<br>س   | 1   | "    | ١٩٠ اسلامي نوج كا قلومين كُفُسا-   |
| 4.6          | حفرت ع <sub>رر</sub> ہ کے قرمنہ کا بندولست -<br>   | 141 | 11   | ا۱۶ عروبن عاص كانتيه موما بالوكريت على ا<br>سينج كر كل أناب  |
|              |  |     | 1    |  |

|        | and the second s |            | <u> </u> |  |      |
|--------|--|------------|----------|--|------|
|        | ووم الفاروق  | 1          | يره      | فهرت مضامر   |      |
| 1.5.   | مصنون  | Ú.         | 13.      | معنمون   | ju   |
| 10     | عکوست بین عام رعایا لی مرخلت -   | مهرا       | ۲.       | ت پرایک جالی گاه ارصفی   | لوما |
|        | ا ملیفه کاعام حقوق مین سب محساته   | 10         | _        | ما صفي ۱۲  |      |
| 14     | امیا وی ہونا۔<br>حدوث یا بیز در کا تازیں میں کر ہا   |            |          | نترمات فارد تی کی وسعت۔  |      |
| اور    | حضرت عربہ نے مکی انتظامات کے الگ۔<br>الگ صینعے قائد کئے ۔  | 17         | ۲        | ر مات کاروی و حت<br>فتح کے اساب پر مین مقرضین کی راے                 | r    |
| 7-1-1  |  | -          | <u>ب</u> | ک معنا ہا پیربان معنان کا ایک کا<br>کےموافق۔                         |      |
| فردارا |  | ملك        | otr      | يورمين مورخون كى راك كى علطى-  | ٣    |
|        | للكي أزصفي موسر اصفحربهم   |            | 7        | فتوهات کے صلی اسباب-   | ~    |
| 77377  | حفرت عربه کے مقرر کردہ صوبے-   | 16         | 952      |  | ٥    |
| rn'    | نوشروانی عدیے صوبے۔  | 10         | 1117-    | فتة ما تدمين معنرت عرمهٔ كا اختصاص ـ                                 | 4    |
| 10     | صوبون کے اصر   | 19         | 447      | م حكومت ا رصفحه ۱۷ ما صفح  | فا   |
| اوتارم | عمدہ دارون کے اتنحاب بین حصرت<br>عمدہ کی جو ہرشناسی۔   | 4.         | 11       | مصرت عُمْرِی حکومت غفی محی یا جمهوری-                                | 6    |
| 1      | همران جوبرط می-<br>عهده دارونکے مقرار کرنیکے بیٹ علیس شور کے   | ١٦         | 1,,      | مهموری اور خصی معلنت کا موازنه -<br>مهموری اور خصی سلطنت کا موازنه - | ^    |
| "      | تخواه کامعالمه-<br>تخواه کامعالمه-   |            |          | عرب وفارس وغيروين جمهوري حكوت  | 9    |
| ۳.     | عالمون کے فرائین میں اٹکے فرائفن۔  | ۲۳         | ١٨٠      | شرمقتي -   |      |
| 1      | عالمون سے جن باتون كاعمد نيا جاتھ  | ٣٣         |          | حضرت عمونا کی خلانت میں محلب شورے                                    | į.   |
| "      | عاملون کے ال واساب کی فہرست۔   | ro         | 10       | د کوکش -   |      |
| 44     | زا نه ج مِن نام عالمون کی طبی-<br>رو میرون   | 44         |          | محلس شورکے کے ارکان اوراً سکے نتعاد<br>ریمانہ م                      | 1    |
| ۳۳     | عا ملو <i>ن کی تنبید '</i><br>اور برای جنت تا پیر  | <b>P</b> 4 | 4        | کا طریقیہ۔<br>محبس شوری سے مبلیے۔                                    |      |
| 44     | عا لمون کی تحقیقات<br>عالمون کی تحقیقات کے کیے کمیشن-  | ~4         | 14       | مبس مورف ع سبع-<br>ایک اورملس-                                       | 1    |
| 70     | عامون فيفات عبيت   | 77         | 16       | ايدارر-  |      |

| 7.1   | معنمون   | j.   | 1.1         | معنون  | 17.  |  |  |
|-------|--|------|-------------|--|------|--|--|
| 46    | معرمن فرعون کے زمانے کے قواعد لگزای              | 44   |             | عالمون کے ناجائزا خوال رینایت مختی                               | 900  |  |  |
| 11    | روميون كاد منافه-                                | 44   | و متراوس    | کے مانڈ گزنت۔  |      |  |  |
| 4917K | حضرت عرز نے قدیم طریقے کی جسلاح کی۔              | ~~   | <b>Ju</b> 4 | عالمون كى نخوا ہو كا ميش قرار ہوا-                               | 14   |  |  |
| ٥.    | شام ين خراج كا قديم طرنقية                       | 44   | "           | عاً لانِ فارو قى كى فهرست-                                       | ۳۳   |  |  |
| rlai  | قانون الأزرى من حضرت عرم كي صلاحا                | ٥٠   | 40          | ياصل خراج) زمنفي بهم ما صفي                                      | ٠.٠  |  |  |
| ۳۵    | إن اصلاحات كالمكي اثر-                           | ١٥   | 27          | فالحس (برمج) ارصفی ۱۹۰۰ ما سنو                                   | مرود |  |  |
|       | بندولست الكزاري مين دسيون سس                     | or   |             | عزاج كاطريقه وببين حفرت عيثن                                     | 44   |  |  |
| 94    | را کینا۔   |      | ٨٠.         | ایجادکیا -   |      |  |  |
| 00    | ترتی زرعت -                                      | or   |             | مالك مفتوحه كاصلى إشندون كحقبضا                                  | 44   |  |  |
| 04    | محار آبياشي-                                     | ٥٣   | 41          | مین صبورنا اوراس امرین محا برکا اختلا                            |      |  |  |
| "     | خراجی ورعشری زمین کی تفریق -                     | 00   | 42          | صنرت عرنم كا <sub>ا</sub> ستدلال-                                | 1 :  |  |  |
| ļ     | ملمانون کے ساتہ عشری زمین کمنیں                  | ۲۵   | 0           | واق كابندونست-   | ۲۳   |  |  |
| ٥٤    | کی وجہ   |      | سربم        | ا فسرانِ مند نوبت -  | ٣2   |  |  |
| 39%   | کی آمرنیان ازصفیٔ مرہ ناصفی                      | انور | 11          | عواق کا کل د قبه۔  | 1 1  |  |  |
|       | -16 1  |      | LL          | نگان کی شرح -<br>مدید کردنده                                     | 1 1  |  |  |
|       | گھوڑون پرزگۈة -<br>ء به                          | 24   | "           | ئراق کا <b>خراج</b> -<br>ده در به تهایه                          | 1 (  |  |  |
| 9lon  | -78  | ٥٠   | 40          | زمیندا را ورتعلقدار-<br>میندا بر دند به ق                        |      |  |  |
| 4.    | عدالت ازصفيه واصفح                               | صيغة | "           | بیداوارا وراً مدنی مین ترقی-<br>از از از این مرکزند مین ایرافا ا | 42   |  |  |
| 1= .  | محكر نفنا-                                       | T    |             | هرسان الادرى عنيت رعاية ههارا                                    | 200  |  |  |
| -109  | الكريم الركرة الماريم المراديم                   | 09   | "           | ياجان-   |      |  |  |
|       | رومن اميا رك واعد عدالت قاحر                     | 7.   |             | معترت عربه مسازمات بين بس عدر ا                                  | 44   |  |  |
| 41    | ے فوا عدمے مواز ند-<br>جب ال کرمشار میں دیا ہے ذ |      |             | فراج د صول ہوازا نہ ا بعد میں جسی                                |      |  |  |
|       | قواعدعدالت کے متعلق حصرت عمر نه<br>کی مختسد رہا۔ | 41   | אין         | سین ہوا۔<br>میں نقال میں میں سال                                 |      |  |  |
| 44    | נגיים איניי                                      |      | "           | زلج کا د فتر فارسی اور روی را ان مین -                           | 40   |  |  |

|         |                                    |            | 7      |  |       |
|---------|------------------------------------|------------|--------|--|-------|
| 1.      | معنموان                            | .J.        | 18     | معتمون   | Ž.    |
| 44      | جورتم دارا نا فترك خواسيس كتي      | 49         | 40     | قضاة كانتجاب-  | 44    |
| ۸۳.     | : ك إنظامة للفراضوية اصفور         | مادر       | 44     | حفزت عرف كراني ك مكام عالت   | 4 94  |
| ļ.,     |                                    |            | "      |  | 1 1   |
| cate    | 0.000                              |            | 46     | ر اوت سے معفوظ ریکھنے کے وسائل۔  | 40    |
| 60      | نهرمقل-                            |            | 4      | انغداف مین مساوات -  | 77    |
| "       | بنرسعد-                            | Ar         |        | اً إدى كے ليا فسے قضا قر كى تعداد  | 46    |
| 49      | نهراميرالومنين-                    |            | 70     | کا کا بنی ہونا۔  | ļ     |
| ^•      | ہنرسویزگی طیاری کا ارا دہ-         | مهم        | 74     | ا هرمین من کی شها دت-  |       |
|         | معزت عرفتك عهدين مملعت صيغون       | ^&         | 4.     | عدالت كامكان-  | 44    |
| "       | کی عارتین-                         |            |        | أقيا ارصفحت اصفحة ٢٧   |       |
| ^1      | פו רוע ארם-                        | 44         |        |  |       |
| *       | وفتر                               | 14         | 4.     | محكمة اقا كى عنردرت-   | 4.    |
| "       | حنندانه-                           | ^^         | 41     | حفرت عمز کے زمانے کے مُغتی۔  | د ا   |
| ~       | تيدفانے -                          | ^ <b>9</b> | "      | برخض نتوك دين كامجاز نقاء  | 47    |
| "       | مهان مانے-                         | 4-         | 10     | ری اور پولسرل زصفیری ناص   | فرمرا |
| 1       | مطركون كانتطام-                    | 41         | 2010   | , ,  |       |
|         | كأمعلنيس مرنية لتنورة مك جوكيال ور | 40         | 613 Er |  |       |
| وتراس   | سراميُن-                           | -          | 214    | جلا وهنی کی سنرا <sup>-</sup>  | انهم  |
| 91      | ن كا أبا و كرنا اصفحة ٣ - "ما صفحة | شرو        | 64     | ، المال ما دخرانه) ارضفه به ميما ما  | بب    |
| سه اس   | ىبرە-                              | 91"        | 414    | ميت المال يبلي نه تقاء   | 60    |
| ه ما عم | کو فہ۔                             | 411        | 60     | بيت المال كسِ سندمين قائم بوا-   | 24    |
| ~~      | ضطاط-                              | 40         | "      | می <sup>ت</sup> المال کے اصبر  |       |
| ^4      | فنطاط کی وسعت آباوی-               | 44         | 44     | بت المال کی عارتین -   | 40    |
|         |                                    |            |        | The second secon |       |

|          |  | 1      | <del>'</del> |  | <del></del> |
|----------|--|--------|--------------|--|-------------|
| 3;       |  | .77.   | 15.          | معنمون                                       | 17          |
|          | زج من عجی ر دمی مهندوستانی اوربود <sup>ی</sup> | سما ا  | 9.           | موصل-  | 44          |
| V-661-0  | 1  | -1     | "            | اجيزه-                                       |             |
| 1-0      | 0,0.0,19                                       |        |              | صيغة فوج أرضعة ١٨١                           |             |
| 1.1      | رسد کانتظام-                                   | 114    |              |  |             |
| pl 1-9   |  | 116    |              | قديم سلطنتون كے نوجی انتظامات                | 44          |
| 1 "      | خدراک ورکیٹرا اور مبتہ۔                        | 110    | artai        | غيركتن تقيه -                                |             |
| 110      |  |        | 94           |  | \$40        |
| "        | نخواه کی ترقی ا                                |        | Polar        | 1/   | 1-1         |
|          | اختلات موسم کے لیا فاسے فیج گھٹیم آ            |        | 94           | باقاعده فوج اور والنشير                      | 1.4         |
| 1        | بهاركے زانے من فوجون كا قيام-                  |        | 94           | فوجی صدرمقامات -                             |             |
| 111      | آب وہوا کا لحاظ۔                               | 1      |              | صدرمقامات من فوج کے لیے فوتہ فاما            | 1           |
| "        | نوج کی مالت مین بنج کی آرام کا دن-<br>ا        | ١٢٨٠   | 9^           | تقفي أكمي تفصيل-                             |             |
| "        | رخصت کے قاعدے۔                                 | l      | "            | ورجى باركين-                                 | 1           |
| 1 190    | فوع كالباس-                                    |        | 1 1          |  | 1           |
| "        |  |        | 1 1 5        | فرج كا دخر-                                  | - 1         |
| المالا   | 0,0,,,0  |        |              | رسدکا غلّہ                                   | - 1         |
| "        | فزج کے جھتے۔                                   | 114    |              | نوجي جيا وُنيونِ كا قائمُ كُرِنا اور كَانبدو |             |
|          | هرسیایی کوجوعزوری چنرین ساته رهمنی<br>است      | 12.    |              | فزجى عياؤنيان كس اصول ربستائم                | 11-         |
| 110      | یر بی گفتین-<br>مذات میران                     |        | ۱۰۳          | الى تتين-                                    |             |
| "        | قامنه کنان کالات-                              | وسو ا  | 1-4          | فوجی د فترکی وسعت۔                           | )!)         |
| 114      | مفرسيا-  | 122    | "            | برسال ۱۰۰ براری می طبار بونی می-             | 111         |
| HILLHY   | <i>خبررسانی ا در جاسوسی -</i>                  | 177    |              | حفرت عرفه كا فومي أتبطا مركس إك              | 111         |
| 110      | برجير نوسيون كا انتظام-                        | بهاملا |              | الك قائم را اورأك تغيرك                      |             |
|          | صيغة بتعليب صفخت. ١١٩                          | iro    | 1-0          | نتائج- '                                     |             |
| <u> </u> |  |        | <u> </u>     |  |             |

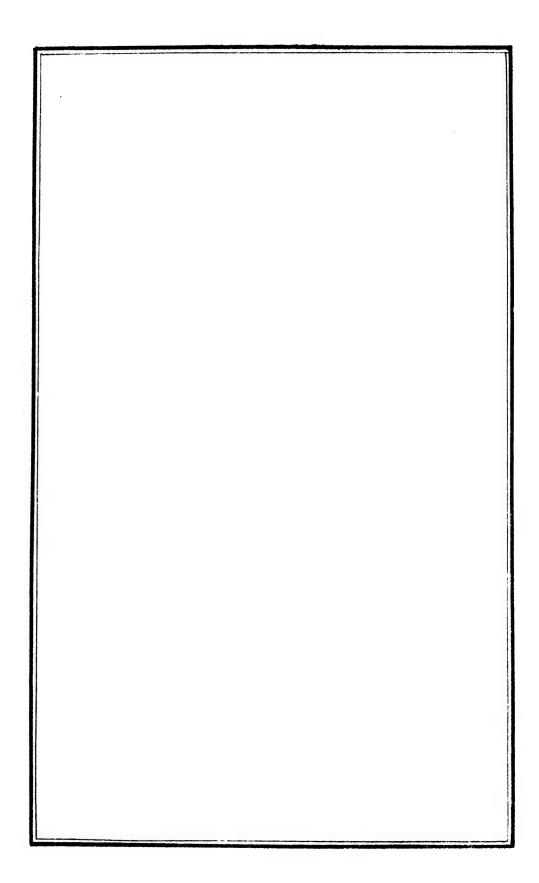
|                | 7.7                                |        |         |  |         |  |
|----------------|------------------------------------|--------|---------|--|---------|--|
| 1.1.           | مصنمون                             | ·Ž.    | 1.1.    | مفنمون                                 | 19.     |  |
| سوسو ا         |                                    | 1 1    | ومما    | فدمنهبي ازصفنه والااصفحية              | صي      |  |
| "              | کیلی تدبر <u>-</u>                 | 100    | ~       | , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,  | -       |  |
| مهموآ ما       | د وسری تدبیر                       |        | 1712119 |  | 144     |  |
| يا سو ا        | نيسري تربير                        | 104    | 100     | اشاعت اسلام کے اسباب                   | 146     |  |
| "              | چر محتی تربیر-                     | 100    |         | حفنرت عمر ماکے زانے مین جولوگ          | 120     |  |
| 1746           | نغته کی تعلیم کا انتظام-           | 1      | 441     | اسلام لائے۔                            | .       |  |
| ١٣٨            | فقي <i>ا کی ننوا مين-</i>          | 1290   | lire    | حفرت عرزف قرآن مجبدي حمع وترتيب        | 194     |  |
| "              | معلّمير فقه كي رفعتِ شان -         | 1.11   | 1000    | مین جر کومشش کی۔                       |         |  |
| 6194A          | مترخص فقه كي تعليم كأمجاز نه تها - | 180    |         | قرأ نِ مجيد كى حفاطنت ا وصِحت الفاظو   | ١٨٠     |  |
| ١٣٠.           | ا ما مون ا در متو و نون کا تقرر-   | اسو. ا | 119     | اعواب کی تدبیرین-                      |         |  |
| "              | حاجیون کی فافله سالاری-            | 140    | "       | قرآن مجيد كي تعليم كانتظام-            | اببرا   |  |
| "              | سا جد کی تعمیر آ                   | 140    | "       | مكاتب ِ قرآن - ا                       | الميما  |  |
| امما           | حرم محترم کی وسعت۔                 | 144    | "       | لېزۇن كوجېرى تعلىمة                    | اسرسما  |  |
| 2              | حرم کی تخدید-                      | 144    | "       | کتابت کی تعلیمہ                        | بهما    |  |
| ۱۳۶۱           | متحدِنبوی کی مرّت اور وسعت-        | 140    |         | قرار مها بركاتعكيم قرآن كے لئے دور راز | מאו     |  |
| "              | مسحدمین فرش ورروشنی کا نتطا م-     | 144    | 1940    | مقامات برمبينا بأ                      |         |  |
| 120            | ق نظامات زصفي سهم آماضغ            | مته    | اسوا    | لغليم قرآن كاطرنعية-                   | ١٣٦     |  |
| حم ۱۱٬۲۰۰<br>ا | ر حاد کار سی ۱۱۲۱ کا               |        | "       | ومشق كى سجرين طلبئة قرأن كى تعداد-     | 1,46    |  |
| ما برا         | سنهجري كامقرركزان                  | 12.    | "       | انتاعتِ قرأن كے اور ورمائل۔            | 15%     |  |
| סאו            | مختلف فتم کے رصبر                  | 141    | الوموا  | <b>حا</b> مطون کی تعدا د-              | 149     |  |
| "              | د فترحمن راج-                      | icr    | "       | صحّت اعراب کی تدبیرین-                 | 10.     |  |
| "              | بيتالمال كح كاغذات كاحساب          |        | "       | ادب اورء مبت كي مليم-                  |         |  |
| المه به ا      | مصارف جگکے کاغذات۔                 | 1      | سوسو ا  | مریث کی تعلیم-                         | 100     |  |
| "              | مردم شماری کے کا غذات -            | 120    | "       | فنته ا                                 | 101     |  |
| <u></u>        |                                    |        |         |  | <u></u> |  |

| 1.5.   | معتمون   | 17:         | 1,3-   | مضمون  | Ť:  |
|--------|--|-------------|--------|--|-----|
| 140    | معنمون<br>عیسا پُونکے ملا وطن کرنے کا معا لمہ۔ | 141         | الايما | كا غذات صاب ك لكفية كاطريقية                               | 144 |
| 174    | جزبه کی محبث -                                 | 140         | ١٣٤    | لبكَّ-   | 166 |
| 1446   | ى كارواج كم كرنا أصفي ١٦٩ تا صنا               | غلام        | 14.9   | إ كي حقوق از صفي مهم آما صفح                               |     |
| 149    | عب كاغلام نهوسكنا-                             | 194         | 100    | قديم سلطنتون كابرتا وُغيرتو مونكے ساتھ۔                    | 160 |
| 161    | مالك فتوحدين غلامي كو كلمثانا-                 | 194         | 189    | حفرت عرم نے ذمیون کے ساتھ کیا برا وکیا                     | 169 |
| 144    | حصنرت شهربا بوكا قصته                          | 14~         | "      | مِتِ المقدّس كامعا بده-                                    |     |
|        | شاہی خاندان کے اسال خبگ کے                     | 144         |        | ذمیون کے جان وال کوسلما نون سکے                            | 1~1 |
| سر ک ا | ما تقبرًا ؤ-                                   |             | 101    | جان ومال کے برا بر فرار دینیا۔                             | 1   |
| "      | فلامون کے سائم مراعات۔                         | ۲.,         | 100    | بندولت الگزاري بن دشيون كاخيال -                           |     |
|        | غلامون كا اليني غزيزوا فارب سي جدا             | ۲-1         | "      | ذبتيون سے ملکی انتظافات مین شورہ-                          | IAP |
| 14 17  | المکیا جانا-                                   |             | liar   | وْتْرِنْكُ مِنْ تُومِرْتُمْ كَلِي رَعَامِتِ كَيْ مَاكِيدٍ- | ١٨٢ |
| 160    | غلامون من ابل كمال كاييدا مونا-                | <b>r•</b> r | 100    | نهبی امورمین آزادی-  | 1   |
| اصفحة  | ت د تدبير عدل والفياف                          | ميار        | 104    | مسلمان اور د متیون کی تم سری -<br>مسلمان اور د متیون       | 1 1 |
|        | ١٠٩ أاصفحه ٢٠                                  |             | 100    | زمین کی غزت کا خیال <i>-</i>                               | 1 1 |
|        |  |             |        | مازمن ا در نو) دت کی حالت میں و تبیول کے                   | in  |
|        | عام سلاطین اور حنرت عرز کے طریق                | ! 1         | "      | ما يقسلوک ـ  | 1 1 |
| 144    | سياست مين فرق -                                |             | 109    | تيون بران رعايتون كاكيا اثر موا-                           | . , |
| 160    | حصزت ومفرکی شکلات -                            | ۲.۳         |        | اِنیون کے حقوق کی منیات غیر قورون کی                       |     |
| 149    | حفرت عرمز کی مگوست کی خصوصیتین                 | ۲.0         | 14-    | للعائميونك وجوه اوراكاجواب                                 | 1 1 |
| 114    | اصول مساوات-                                   | ۲۰4         |        | ميون كوخاص بباس ورز آريح بنهال                             | اما |
| ٦٨٢    | اميرالمومنين كالقب كيون اختياركيا-             | 7.6         | 141    | اكيون حكم تفا-   | \$  |
| ロード    | سات.   | 4.7         | 145    | سلیب اورنا توس کی بت۔                                      | 195 |
| 100    | عهده وارابِ للمنت كانتخاب-                     | 7.9         | 170    | مىطباغ كى مجث ـ  | 191 |
| 106    | سیاست -<br>عهده داران بللنت کانتخاب -          |             | 1190   | , , ,  | 7 ) |

|      | و دو در میاند کا کا در در  | ,           | Γ.     |   |      |
|------|--|-------------|--------|---|------|
| 1.2  | معنمون   | 1/2         | 12     | مضمون<br>ب لاگ عدل واضات -<br>قدیم سلطنتون کے حالات اور اتخالات | ji.  |
|      | مهائل اعتقا دی مین حنرت عمر مزک  | 774         | 100    | ب لاگ عدل واضات-  | 41.  |
| 4.6  | نمته شنجی-   |             |        | قدىم سلطنتون كے حالات اور أتغلالات                              | p 11 |
| p.6  | مئلة قفنا وقدر   | <b>7</b> 7^ | 109    | سے واقعیت ۔   |      |
| "    | تعنيم شعائرا مند-  | <b>77</b> 9 |        | واتفیت طالات کے لیے پرجبنویس اور                                | rlr  |
|      | بنی کے اترال دا مغال کمان کمف  | ۲۳-         | 191    | واقعه گار-  | 1 1  |
| 7.0  | نبوت سے نعلق رکھتی ہیں۔<br>-   |             | 1797   |   | rip  |
|      | حنرت عرم کے نزدی احکام شرکت  | 771         | 190    | ، نام کامون کا وقت پر انجام یا نا-                              | 414  |
| r-4  | امول عقلی رمیننی هونا -  |             | 197    | رفاوعام کے کام-   |      |
|      | معنرت ع <sub>ر</sub> ذنے علم اسرارالدین کی<br>بنیا وطوالی-   | rrr         | 146    | غرباا ورماكين كے روزينے-  | 714  |
| 71.  |  |             | N      | مهانخانے۔   | 1 1  |
| 111  | ا ملاقبِ اسلامی کامعنو لمرکمنا اورترقی دنیا  | ı           | 4      | لاوارث بيخ -<br>يتمون کی خبرگنري -                              | MA   |
| 717  | نخروغ وركا استيعال-  |             | 1 1    | يتميون کی خبرگري -  | ¥14  |
| .414 | ہجو کی ما نفت ۔  |             | 1 1    | مخطئا أتعلام  | 44.  |
| 10   |  |             |        | ر فاہ عام کے متعلق صنرت عمر ہزگی<br>ریب                         | 771  |
| יאוץ |  | 1           | 199    | کمشنجی ت<br>را به به  | 1    |
| 11   | شرایخواری کی روک-  | 1           | ) )    | جزئات رتوخه-<br>رين نزر سيد تروي                                | 1    |
| مام  | ارا دی ا در حق گوئی کافائم رکھنا۔  | 1           |        | رعایای شکایتون سے دامنیت کے                                     | 177  |
| 714  | حفرت عمر هم کی اجتها دی ختیب -   | 77.         | 7.1    | وسائل-  |      |
| PIC  | اما دیث کانفخص۔  | ایم ۲       | 2      | نفارت-  | 777  |
| "    | مد تبدل کی اشاعت۔  | ومام        | . "    | تام کا سفرادررعایا کی خبرگیری-                                  | 173  |
| ria  | اكب وقبق تكمته-  | 74          | 1 1.00 | رعایا کی خبرگری کے متعلق صنرت مرا                               | 1774 |
| FF14 | ا ما دیث مین فرق را تب   | rrr         | 1 64.4 | 2) "July " 20 " 20 " 20 " 20 " 20 " 20 " 20 " 2                 |      |
| 1771 | روايات كي ميان بين-  | 7 144       | Ya     | من احدادافیوند میراصفه  | امد  |
| 270  | كفرت روايت سے ردكا ـ   | rm          |        | י לעי אט נין־קרייזי פּי   |      |
| لنا  | the state of the s | 1           | 11     |   |      |

| <u> </u> |   |      |       |   | <del></del> |
|----------|---|------|-------|---|-------------|
| 3!       | معتمون  | 1.   | 1;    | مضمون   | 19.         |
| م از     | ع الات اوراخلاق وعا دار                                       | ران  | irrr  | حفرت عردات کم روایت کونے کی   | 7 176       |
| 11       | صفحت ۹ ۲۵ تاصفی ۲۰۰۳  | 1    | 110   | دم.۔<br>صحابین جونوگ روایت کرکڑنے تھے۔                              |             |
| l        | عب مين جوا وصا ٺ لازمرُ سترانت مجھے                           |      | 774   | عامبین مونول روایک مرزعت.<br>سندا ورر وایت کے شعلق حضرت ورخ         | P p/4       |
|          | وب ین بود و میں میں اربر سروت ہے<br>جانے تھے مضرت عرمز مین سب |      | V V Z | کو روزوہ چاک میں سرف مر<br>کے اصول۔                                 | , , ,       |
| p4.      | موجود ستقے۔   |      | N     | علم نقه-  | 40.         |
| a.       | قوت تقرریه<br>خطه   | 140  |       |   |             |
| 674.     | نطبع-   | +44  | ושפע  | فقہ کے تمام سلسلون کے مرج حضرت<br>عمر مزہیں۔                        |             |
| 777      | <u> خلیے کے گئے ملیا رہ</u> ونا -                             | 1    | 1 1   | حصرت عرز كاشكل سائل وطلمبندكرنا-                                    |             |
|          | نخاح کاخطبهٔ انجها نهین دلیکتے تھے اور<br>ر                   |      |       | د قبت مسائل مین <b>دُنتاً فرقتاً خِرْم رَزِ</b> رْماً-<br>:         |             |
| ייקףיין  | ائسکی وجہ-<br>مدہ ن   |      |       | فتوحات کی و سب کے وجہسے نئے مسّالون<br>مارید اور زر                 |             |
| אדין     |   | 444  | א אין |   |             |
| 770      |   |      |       | وگون کاحفرت عمرضے شفتاکڑنا۔<br>صحابہ کے مشور نیسے مسائل کو طے کڑنا۔ |             |
|          | مران معاول -<br>معزت عرره زمير كواشوالشواكت تق-               | 740  | 100   | کابرت خورتیا شان و تصرباته<br>مسائل اجاعیه                          |             |
| r4~      | زمېري سنبت دهنرت تفركاريادك-                                  |      | "     | حفرت عمر م کے سائل نقبیہ کی تعداد-                                  |             |
| r4 4     | ئا بنه کی تعریف۔<br>نا بنه کی تعریف۔                          | 1 1  | 1-    | /   | 1           |
| "        | امرر انقیس کی نتیت انگیراے۔                                   |      |       | جزاماً دے کابل احتجاج ہونے کی ب-                                    |             |
| 760      | شعر کا ذوق۔   | 740  | tyr.  | تياس-   | l.          |
| 11       | حفظ اشعار-  | 464  | 444   | استناط احكام كاصول-   | 4 44        |
| 741      | ا شعار <i>کا تعلیم</i> ن داخل کرنا-<br>ش                      | 44.  | 100   | مسائل مهمته مین مصنرت عرفه کے اجتمادا                               | 444         |
| "        | شاوی کی اصلاح۔  | r ~1 | tro.  | ممس کامشلہ<br>ویریں   | 1           |
| "        | لطيفير-<br>علىن و و   | 222  | ror   | شفی کامتلہ-<br>اف کا کو ف   | 1           |
| Per      | علما لانناپ-  | 7.7  | 400   | افی فدک کی مجث۔   | 1744        |

| 1;                   | مغمون                                 | j.      | 1.5  | M .                                       | · 1.    |
|----------------------|---------------------------------------|---------|------|---|---------|
| 144                  | مسكن-                                 | یماه سو | 164  | عبرانی زبان سے واقینت-                    | 1 1     |
| 194                  | وسائل معاش-                           | p-0     | 744  |   | 1       |
| *                    | تجارت -                               |         | 760  | عكىما نەمقەك-                             |         |
| "                    | ماكير                                 |         | 747  | صائب الرام ہونا-                          |         |
| "                    | مشا ہرہ۔                              | ٨. مع   |      | ا سلام کے وہ احکام جرحفرت غمر کی          |         |
| 790                  | زراعت.                                | m-9     | "    | راك يحدوا فق قرار يائے-                   |         |
| "                    | عنذا-                                 | ۲۰ ۱۰   |      | جن سائل من ا و <b>رحا برنے حضرت عمر</b>   |         |
| 11                   | <i>بباس-</i> بربا                     |         |      | سے اختلاف کیا امین صنرت تمرکی راسے        |         |
| "                    | سا دگی اوربے تکفنی۔                   | ۳۱۲     | 766  | کاصائب ہونا۔                              |         |
| 794                  | مليب.                                 |         | 1    | قامبية خلافت كي نسبت حفرت عرزم كي ري      |         |
| 1499<br>1404         | اتوليات-                              | אוץ     |      | نکته سبخی اورغوررسی-                      |         |
| 404                  | ج واولا دارْصفحهٔ ۰۲ <b>۳ ناص</b> فؤ  | اروا    | 1729 |   | . [     |
| P'- P                | ازواج-                                | P10     | ras  | مجي تنظيع                                 | - 1     |
| 44.44                | احضرت م كلتوم سے بحاح كرنا -          | 414     |      | علم فرائفن کی درستی ورتزمیب کے گئے        | - 1     |
| ابرا میدا            | اولاو دکور-                           | ٤١٤     | Y~Y  | ایک یونا نی عیسانی کوطلب کرنا -<br>م صریب |         |
| "                    | عبيدا متأربن عمر-                     | 1       | YAP  | على عبتين-<br>ص                           |         |
| ۳.0                  | سالم من عبدالله                       | m 14    | MAN  | ارباب مجبت -                              |         |
| pr. 4                | عبيداً متر-                           | بوس     | 400  | ایل کمال کی قدر دانی-                     | 496     |
| "                    | عاصب                                  | mri     | 14.  | متعلقين خابر سول تنزكاياس ولكاط           | 741     |
|                      | خاتمه ازصفحه ٤٠٠ تاصفي ١١١            |         | r41  | اخلا <i>ق وعادات</i> ۔<br>پیر             | 799     |
|                      | دنیا مین میں قدرمشهور فرا فرواا ور    | pp      | "    | تواضع وساوگی-                             | per 0.0 |
|                      | ارباب کمال گذرے می <i>ن سب رحفر</i> ت |         | rar  | زنده ولی.<br>سرید.                        | pr - 1  |
| ا ک وسو ما<br>ا ا سو | غررون کی ترجیح-                       |         | 190  | نراج کی مختی-<br>پر                       |         |
|                      |                                       |         | 190  | اگ واولاد کے ساتھومحتبت -                 | pw. pv  |
|                      |                                       |         |      |   |         |



## كب مالتّدالزّمُن الرَّمِمُ

## وساحير

الفاروق حبكاغلغله وجودمين آنے سے پہلے تام ہند دستان من مبند ہو حكاہے ا ا قِل أَسكانًا مِ زَانِون بِرَاسِ تَقْرِيبِ سِي آياكُ المامون طَبِعِ ا قِل كِي دِياجِينِ ضِمنًا أَبِكا و کراگیا تھا-اسکے بعد اگر دیمصنف کی طرف سے بالکل سکوت اختیا رکیا گیا ایم نام میں کمی ایسی دلچیسی تمتی که حزد بحبولیا گیا بیات مک کداُ سکے ابتدائی اجزا ایمی طیّا زمین ہو چکے تھے *دتام ملک مین اس سرے سے اس سرے ک* ال**فارو ت** کالفظ بجیجیکی زبان رتھا اِد هر کھیا لیے اساب بین آئے کہ <del>الفاروق کا سلسارُک گیا اوراُسکے بھاے ووس</del>ے وسرے کا م حیورنگئے ،خیا کخراس آنا بین متعد رتصنیفیر مصنّف کے فارسے کلیر اور شائع ہومئن لیکن حربگاہین فاروق عظم کے کوکیۂ ملال کا اتتظار کرری تعین انکوکسی وسرے ملوہ سے سیری نمین ہوسکتی تھی۔ سور اتفاق بیکہ محمکر اتفاروق کی طرف سے بیدلی کے بعض ایسے اساب بیدا ہوگئے ستے کوئی نے اس بقینیف سے کوئی أتماليا تقاليكن ملك كيطرت ستة تقاضني كممين وره كراس قدرملندم وتي تقيين كرمين

مجبوراً قام ہاتھ سے رکھ رکھ کو کھا گیتا تھا۔ بالآخرہ انہ گست سے دی کوئین نے ایک قطعی فیصلہ کرلیا اور شقل اور کسل طریقے پراس کا م کوشروع کیا۔ ملازمت کے فرائفن اور آتفا تی موانغ وقاً فوقاً اب بھی ستراہ ہوتے رہے بیان کم کوشوع کو اور تفاقی موانغ وقاً فوقاً اب بھی ستراہ ہوتے رہے بیان کم کوشود دفغہ کئی صینے کا اغربین آگیا لیکن جو بکہ کا م کاسلسلہ مطلقاً بند نمین ہوا اس لیے کچرنہ جماف ہونگا میان کمک کرتے ہورے جا رہیں کے بعد بینزل طے ہوئی اور فلم کے مسافر سنے کہرونوں کے لیے آرام لیا۔

شكركهٔ خَبَازه بمنزل سيد زورقِ انديشه ساحل سيد

یہ کتاب داوحونتون مین فقیم - بہلے جھتے مین متید کے علاوہ حفنرت عمری ولادستے وفات مک کے واقعات اور فتوحات ملکی کے حالات میں - دوسرے حقیے مین اُنکے ملکی اور ندیبی انتظامات اور علمی کمالات اور ذاتی افلاق اور عادات کی فصیل ہے اور یہی دوسرا جھئے مصنفت کی سعی و محنت کا تماشا گاہ ہے -

اس کتاب کی محت طبع مین اگری کو کورکم کوشش نمین کائی کا بیان مکن نے تحویدی اور نبا مین الیکن متواتر سجر بون کے بعد محملوا سِ بات کا اعترات کوالی اسے کو مکن اس وا دی کا مردمیدان نبین کا بون کے دیجھنے مین ہمینے میری گا ہ سے غلطیا ان ہجاتی میں ۔ اور مین اسکی کوئی تدبیر نبین کرسکتا ۔ لیکن اگر صاحب مطبع اجازت دین توہقیر کمنے کی حرات کرسکتا ہون کداس جرم کا مین تنها مجرم نبین بلکر کچھ اور لوگ بھی شرکت میں ۔ بہرجال کی ب کے آخر مین ایک غلطنا مداکا دیا گیا ہے جو گفار ہ جرم کا کام دسکتا ہوئی۔

اس کتاب من معض الفاظ کے الما کا طریقیہ نیا نظر آنگا شلاً اصافت کی حالت د کمی" اور در مدینه» کے بجاہے «کتے» اور در مدسنے » اور حمیع کی حالت میں دموقع "او د محمع، کے بیا ہے «موقعے» اور دمجمعے «لیکن میرمسراطریق املانہیں ہے ملکا بی پوسن ص وه ایسکے بولا ن عل کرنے رکسی طرح راصنی منہ ت تتمسر العلم إمولا مات على لمكامي تجميع اتفا يكوتم ، رسعاره وست مررست من اس دورے وصف نے آکمواس ات پڑا دہ ک ، نواب مخرصنل الدين خان سكند رخيّگ قبال لدولة *قت* للسارة ائم کیا جاہے جوسلسلیم صفیتہ کے لقب سے لمقب ہوا دروہ ہنگا ولت اصفيه كي حرتصنيفات خلعت مول باين وه اس سلسليمن و امل كيما مين-

جناب نواب صاحب مدوح كوعلوم وفنون كى ترويج وانتاعت كى طرف ابتداسے جو اتنقات وتوخیری ہے اور سکی سبت سی محسوس ما دگا رہی ہوقت موجود ہن اسکے لحاظ سے ب مروح نے اس درخواست کو نہایت نوشی سے منطور کیا۔ خیا بچائی رس سے م . سلسلة فائرے- اور بهار سے تمس العلمار کی کتا **ترکز ان عوب ح**یکی شهرت عالماً ہومکی ہے ہی ساک کا ایک بین بہا گوہرہے۔ خاكساركومنك ثاءمين جناب نواب مروح كي نتيكا وستعطية ابيوار كي حوسندعطا بوني ئىيىن ي*ىھى درج تھا كەخاكسار كى تام آيند*ەتصنىفات اس <u>سلسلىم</u>ىن داخل كىجابئىن-اسی با پرینا چیز تعینیت می اس مبارک سلسلیمین دخل ہے۔ جلداول کے آخرمن اسلامی دنیا کا ایک نقشة ثنا مل ہے جبین جنیا ہے سول ٹیمیا پروسکرکے عہدسابک سے بیکر نوامتیہ کے زمانے کے مرعهد کی فتوحات کا خاص خاص رنگ <u>اِگیا ہے جبکے دکھنے سے بیک نظر علوم ہوسکتا ہے کہ مزمکنی کے وقت مین دنیا کاکرقد ر</u> ہ، اسلام کے حلقہ مین شامل ہوگیا۔ یہ تقشہ اس می<del>ن جرمن کے چ</del>ندلائق پر دفسیہ و<sup>ہ کے</sup> طیتارکیا تھالیکن حذکہ دہ ہاری کتاب کے بیانات سے پورا پورامطابق نبین ہوا تھا <sup>ہیسے</sup> ہمنے ال کتاب کے ماشیمن موقع ہوقع اُن اختلافات کی طرف اثبارہ کردیاہے ﴾-تىلى نعانى

تقام عظم كدهه

. عُرُب بِرضي لاء نبر مفضا سواني عري مصرت مرري لاء نبري سال والح عري ن عمرُ کے نام ذِسكِ ولادے ليكرد فات كے حالات و زفتوحات التفضيل درج مين ا می رین کا در محفر و با می پرین کا مورین به بری

## حضئهاول

## كبب التدااخمن الربيم

ای مهمه دربرده نهان رازتو بی خب رانجام - راغازتو

المنجن علی می المنظاری کالمت کمافی علی می کون می اله و اله و الحی اله آجی آب گاری گاری می المنظاری اله و المحی المنظاری المنظاری

متید تاریخ کا

ریا جا تا تھا۔ آپ دادا کی تقلید کے لیے ٹرانی عادات ورسوم کی یا د گارین خواہ مخواہ قام رکقی جاتی تقین، اور ہی چنرین <del>تاریخ تھی</del>رہ کاسرایہ ہین-اس نایر، <del>عرب عجم -</del> ترک ا َ ار- ہندی- افغانیٰ -مصری- یو انی- غرصٰ دنیا کی تام وہمین دنی اریخ کی قالمیت میں یمسر**ی کا**نجیان دعوسے کرسکتی ہیں۔ ليكن اس عموم مين عرب كواكب خصوصيت خاص عاصل تهيي - عرب مين بعضاص ماص باتبری<sub>ا</sub> اسی بایئ جاتی تقیین خبکو تا ریخی <del>سلسل</del>ے سے تعلق تھا اور جوا ور قومون مین نہیں ایک جاتی تھیں۔ مثلاً ا نساب کا چرجا حس کی پیکینیت تھی کہ بچہ بجتے اپنے آبا وجزا کے نام اور اُنکے رشتے ناتے دنل دہن بارہ بارہ مثیتون کم محفوظ رکھتا تھا، بیا آنگ کہ انسانون سے گذر کرگھوڑون اورا ونٹون کے سنب نامے محفوظ رکھتے جاتیے تھے۔ یا ا **یام العرب حبکی م**رولت <del>عکا فا</del> کے سالانہ شیلے مین قومی کا رنا مون کی روات بین سلەسلىلەنىزارون لاكھون آ دىيون كتابىنچ جاتى تقىن ، ياشا عرمى حبكايە مال تھاکا ونٹ جرانے دالے بڑوخبکو لکھنے ٹرھنے سے کئیرسروکارنہ تھا ،اپنی زبان آوری ے سامنے تمام عالم کو بیج سمجھتے تھے اور درحقیقت حس سادگی اور صلیت کے ساتھ وہ وا قعات ا ورجذ بات كى تصوير كمينح سكتے كتے ونيايين كسى قوم كوريات كبيرى فسينين بولى-اِس نبایر َ عرب مین حب تمرُّن کا آغاز ہوا توسب سے پیلے تاریخی تصنیفات، وجود مین آئین - اسلام سے بہت ہیلے اوشا ہاں حیرہ نے تاریخی وا قعات کلمبند کرائے اور

وہ مّرت تک محفوظ رہے خِیا پخہ <del>ابن مشام نے کتاب التیجان مین تقریح کی ہے ک</del>می<del>ن نے</del>

وب کی غصومتیت

و ب من ماریخ کی تندا

ان تا لیفات سے فائدہ اُٹھا یا۔اسلام کے عہدمین زبانی روایتون کا ذخیرہ انبداہی میں ہ ہوگیا تھالیکن جزیکہ تصنیف وہالیف کا سلسلہ عمواً ۔ایک مّرت کے بعد قائم ہوا اس لیے کوئی خاص کیا پ اس من من نبین تھم گئی لیکن حب الیفات کا سِلسارشروع ہوا توسے پہلی تیا ہ جولکمی گئی این کے فن مین بھی <sup>یہ</sup> امیرمعاوتهٔ المتوفی سنت کے زانے مین عبیدین شربه ایک تحض تھا جینے جا لمیت کا أر مانه ديكها تها، اورا سكوعب وعجم ك اكثر معرك يا ديقي امير معاوية ن اسكوصنعارت بلايا اور کا تب اورمحزر تعین کیے کہ حوکھ وہ بیان کر ا جائے فلمبند کرتے جا بین- علامہ ابن الندیم نے کتاب الغہرست مین اسکی متعدد تا پیفات کا ذکر کیا ہے جنین سسے ایک کتا ب کا مام کتاب لملوک واخبارالماضئین لکھاہے۔ غالباً یہ وہی کتاب ہے حبیکامسوڈہ امیرمعاویہ کے حکم سے طیار ہوا تھا۔ عبید کے بعد، عوانة بن الحکم المتوفی سے لئے کا ام ذکرکے قابل ہے جواخبار وانساب کابراا مرتھا۔ اسنے عام آریج کے علاوہ خاص منوا میداور امیرمعاویہ کے حالات مین ایک کتاب لکیمی سئالے میں مشام بن عبدالملک کے حکم سے عجم کی نمایت مفصل ایخ کا ز مربہلوی سے ء تی مین کیا گیا ، اور پہلی کتاب تھی جوغیرز ابن سے عربی مین ترحمہ کی گئی۔ سلم لہ میں حب تفسیر- صربت - فقہ دغیرہ کی مروین شروع ہوئی توا و علوم کے ساتھ أبريخ ورجال من تعبي تقل كتابين لكمي كيئن - خيانچه محدين اسحاق المتوفي سلصله خيم تعوي عباسی کے بیے خاص سیرتِ نبوی پراکی کتاب مکھی جوئج مجی موجود ہے۔ ہمارے موزمین کا دعو سے ہے کہ فنِ ایریخ کی پہلی کتاب ہے۔ لیکن میسے یہے کہ اِس سے پہلے موسی بیقی اِللہ

سیرت جون بین سب جانصنیف

سلملی نے انخصارت کے مغازی فلمیند کیے تھے ۔موسیٰ نیایت تقدا و متماط تنفر سھتے اور صحائبکا زا نہ یا یا تھا اسلیے آئی ہیکتا ب تحذیب کے دائرے میں ہی غرت کی گا ہ سے دمجھی جاتی ہے اسکے بعد قن اربخ نے نہایت ترقی کی اور برے رہے نامور موزخ بیدا ہوئے ،جن میں ا بو خف کلبی- واقدی زیاد و مشهو بین-ان بوگون نے نهایت عمده ا و رصر بینوانو نیر کهامین لکھیں۔ متلاکلبی نے افواج اسلام، قریش کے بیشے، قبائل ءب کے مناظرات ،حاہیت اور اسلام کے احکام کا توارد ان مضامین پرشتقل رسالے لکھے۔ رفتہ رفتہ اس <u>بلسلے</u> کو نهایت وسعت ہوئی بیان کے کہ چوتھی صدی کک ایک فترہے پایان طیار ہوگیا ا ورٹری خوبی کی بات بیمتی که سرصاحب ِفلم کاموضوع ا درعنوان حدا تھا۔ اس دورمین بشیار مُوّرخ گذرے-انمین حن لوگون نے ابتخصیص انحفنرت صلی اللہ علا والدوسلما ورصحائبُ کے حالات مین کتا میں تھیں اُنکی مختصر ہی فہرت یہے۔ محيح مرني غزوات بنوي كتاب الحبل منى حضرت على آور ضربن مزاحم كوفي عاُئتْهُ كِي زُودِيُ كاحال-كتاب الفتوح الكبير-نهایت مشهورمُورخ ہے۔ تيف بن عرالاسدي ا مامخاری کے اُتارالاتار تقے سمرين راشتد كوفي كتاب المغازي-**ل** موسیٰ بن عقبہ کے لیے تنزمیب التهذیب و مقدر مرنتح الباری سترح میم نجاری و مکیو۔ ۱۲

|  | 1                         | 0 0,,,   |
|--|---------------------------|--|
| كينيت                                  | تقنيف                     | نام معنف   |
|  | فتوحات خالدبن الوليد      | عبدا متدبن سعد زهري لترفئ                                  |
|  |                           | مثته ه   |
| ت شين انتقال کيا -                     | كأب صفة لبني صلعم وكتاب   | ابوالبختري ومب بن دمب                                      |
|  | نضائل الانصار             |  |
| اسن الخصرت اورخلفا کے حالات            |                           | ا بوانحسن على بن محد بن عبد مبتد<br>المدأني-المتوفى مسئلتة |
| مین کثرت سے کتا بین محمین اور          |                           | المأنى-المتوفى سنت تنه                                     |
| سْنُعُ نَتُ عَنُوانِ اخْتَيَارِ كِيمِ- |                           |  |
| مدائني كاشاگرد تھا۔                    | كتاب المغازى إمار الخلفار | احمد بن حارث حنسنرا ز                                      |
|  | وكُتَّا بهم-              |  |
| نهایت نقه اورمقه مُورخ تھا۔            | مناقب وريش.               | عبدالرحمٰن بن عبده -                                       |
| مشهور مُورِخ ہے۔                       | كتاب أمراء الكوفة كتاب    | عربن شبه المتونى سنكته                                     |
|  | امرا رالبصرة -            |  |
| سروا در السکال                         | م لا د کام                | ائد تر دان تر ال   |

اگرج بی تصنیفات آج ناپید ہیں لیکن اور کتابین جو اسی زمانے مین یا اسکے بعد ا قریب ترزمانے میں لکھی گئیں اُن میں اِن تصنیفات کا بہت کچھ سرما یہ موجو دہے ، چاپخہ ہم انکے نام اُنکے صنفین کے عنوان سے تکھتے ہیں۔

عبدالتُدبن سلم بن ميتبة المتولد سلاميم والمتونى سلاميم - يهنايت امورا ورستند معنت

قداکی جو تسنیفات اَج موجود مین احدین دا وَدابوصنیفہ دیوری المتوفی سلٹ تھ بہمی شہور صنف ہے۔ اربخ براسکی کتاب کا نام الا خبار الطوال، ہے۔ اِس مین خلیفہ عظیم باللہ کک حالات ہین خلفا م را شدین کی فترحات مین سے عجم کی فتح کوتفعیل سے لکھا ہے۔ یہ کتاب پورپ مین بقام لیدن مششاء مین جمیبی ہے۔

محمربن سعدکاتب الواقدی المتوفی نسسته مهایت تقدا و رعته رمورخ مها اگر جداسکا سا د واقدی صغیف الرابی به ایکن خود البیک تقد مونے مین کسی کو کلام نمین الرحد اسکا شا د واقدی صغیف الرابی به الدوستان و تبعی آبعین کسی کو کلام نمین کسی است و الدوستان و تبعی آبعین کسی کا به الموست مین به الموست مین کبی به اورتهام واقعات الموتی تا مدوری به الموست مشهور به سین ایسکا و تعلی کسی در کی الم سے مشہور به سین ایسکا تعلی کننی در کی الم سے مشہور بہ سین ایسکا تعلی کننی در کی الم سے مشہور بہ سین ایسکا تعلی کننی در کی الم سے میں برے ایسکا مسے جیب رہی ہے۔

ا حد بن ابی تعقوب بن واضح کا تب عباسی یترمیسری صدی کائورخ ہے مجکوا سکے حالات رجالی کائورخ ہے مجکوا سکے حالات رجالی کا بون مین بنین ملے یسکین اسکی کتاب خودشدا دت دیتی ہے کہ دہ بڑے یا بیکا مصنف ہے جونکدا سکو دولت عباسیہ کے دربارسے تعلق متما اسلیم ماریخ کا تجا اسلیم کی دربارسے تعلق متما اسلیم ماریخ کا تجا اسلیم کی دربارسے تعلق متما اسلیم کا ب حقوالی کے دربارسے مشہورہے ۔ دوربیمین میں کے نام سے مشہورہے ۔ دوربیمین

مقام لیدن سشداء مین جھایی گئے ہے۔

احمربن تحیلی البلا فرری المتونی سفته ابن سعد کا شاگرد اورالمتوکل بالشرعباسی کا درباری تھا۔ رسی وسعت نظر اوروعت روایت ، مخذمین کے گروہ مین بھی سلم ہے۔

آریج و رجال مین اسکی دوکل بین مشہور ہیں۔ فتوح البلدان - انساب الاشراب یہلی گیا ب کا بطب درہے کہ کہلاد ، سلامیہ بین سے ہر ہرصوبہ ، یاضلع کے نام سے الگ الگ عنوان قائم کیے ہین ، اور انگے تعلق ابتدا ہے توج سے اینے عمد تک کے حالات بھی این - دوسری تیاب ، ذرک کے طور پرہے جبین حضرت عرشکے حالات بھی ہیں ۔ فتوج البلدا ، بین میری نظرے گذرا ہے ۔ اور انساب الاشراف کافلمی نسخہ قسطنطینیہ ایور پ مین نیایت اشہام کے ساتھ جبی ہے ۔ اور انساب الاشراف کافلمی نسخہ قسطنطینیہ ایور پ مین نیایت اشہام کے ساتھ جبی ہے ۔ اور انساب الاشراف کافلمی نسخہ قسطنطینیہ ایور پ مین نیایت اشہام کے ساتھ جبی ہے ۔ اور انساب الاشراف کافلمی نسخہ قسطنطینیہ ایور پ مین نیایت اشہام کے ساتھ جبی ہے ۔ اور انساب الاشراف کافلمی نسخہ قسطنطینیہ ایور پ مین نیایت اشہام کے ساتھ جبی ہے ۔ اور انساب الاشراف کافلمی نسخہ قسطنطینیہ ایمن میری نظرے گذرا ہے ۔ س

ابو حیفر محمد بن جریرا نظیری المتوفی سنتیم یه حدیث و فقه مین بھی امام مانے جاتے مین جیائی ایک اربوکے ساتھ بوگون نے انکو محبتدین کے زمرہ مین شمارکیا ہے تاریخ مین ایفون نے ایک نهایت مفضل اور سبطا کتا ب کھی جو ماضخیم طبرون مین ہے اور یوروپ مین مقام لیدن نهایت صحت اور اہتمام کے ساتھ جمیبی ہے۔

ابوائحس علی بن سیس مسعودی المتوفی سنتهٔ هون مایخ کا امام ہے - اسلام مین ایج کی امام ہے - اسلام مین ایج ہیں اسکے برابر کوئی وسیع النطائوڑخ پیدائنین ہوا - وہ دنیا کی اور قومون کی توایخ کا مجمی بہت بڑا ماہرتھا - اسکی تمام ناریخی کیا بین کمتین توکسی اورتصنیف کی کجیم طاجت منوقی ، لیکن اضویس ہے کہ قوم کی مرفرا تی سے اس کی اکثر تصنیفات ، ناپیدم کوئین توریج

فع بڑی تلاش سے دُوکنا بین متیاکین ایک مروج الذہب اورووسری کتاب الا تسراف والنہ موج الذہب اورووسری کتاب الا تسراف والنہ موج الذہب مقربن بمی حبیب گئی ہے۔

نیا فرین کا دور

قد اک خمصیتین

يرتصنيفات حس زمانے كى بن وہ قدماكا دُوركىلا اہے۔ يانخوين صدى كے أعاز سے شاخرین کا دور شروع ہوتا ہے جونن ارتخ کے تنزل کا پیلا قدم ہے۔ متاخرین ی اگرچەمبىيارمئورّخ گذرے جنمین سے ابن الأثير سمعانی- زمبی - ابوالفدار- نویرمی-سیوطی-وغیرہ نے نہایت شہرت حاصل کی لیکن اِنسوس ہے کان لوگون نے ہاریخ کے سیا تھ من حیث لفن کوئی ا حسان نمیس کیا - قدما کی حوخصوصیّات تحقین ، کھودین اورخود کوئی نمی ا تنین پیدا کی مثلاً قدا کی ایک یخصوصیت تھی کر ترصنیف نئ معلومات برشتل ہوتی تھی [ مَّا خَرِين نے ميرطرزا حتيا ركيا كە كوئى قدىم تصنيف سائنے ركھ لى اور بنيرائيك كەسپر كجوامنا د ارسکیس، تغیرا ورا خضا رکے سائڈ اسکا قالب بدل دیا<sup>، ت</sup>ایخ <sup>ابن الانتیر</sup>کوعلآمہ ابنجاکان نے مِنْ خِيَا اللَّقَا سِ کُما ہے اور در حقیقت اسکی قبولیت عام نے قدیم تصدیفین اپید گردین، لیکن حیان مک زمانے کا اشتراک ہے ایک بات بھی سین طبری سے زائد نین السكتى اسى طرح ابن الاتيرك بعد حولوگ بيدا موس أنضون في اينى تعنيف كا مدار، صرف ابن الاثيرر ركما وَهُلُورَجُرًا-إس سے بُره كرية تأخرين نے قدما كى تابون كاجو اختصارکیا اِس طرح کیا که حبان حربات حیورٌ دی ، و ہی ائس تمام واقعہ کی روح متمی ،خیالخیہ ہاری کتا ب کے دوسرے حصے مین اسکی بہت سی مثالین انٹنگی۔ قدامین ایک خصوصیت میمتی که وه نمام واقعات کوحدمیت کی طرح بسند تصلی نقرّ

کرتے سکتے۔ متاخر بن نے یہ النزم بالکل تعبور دیا ایک اور خصوصیت قدماً میں یہ تمی کروہ اگرچ کسی عمد کی معاشرت و تد آن پر جدا عنوا ن نتین قائم کرتے سکتے لیکن صنمناً اُن جزئیات کو لکھ جا تے سکتے جن سے تدرُّن ومعا شرت کا کچھ کچھ بتہ حلیا تھا۔ متاخر بین نے پڑھیوت بھی قائم نہ رکھی۔

لیکن اس عام کمتہ جینی میں آبن فلدون کا نام شامل بنین ہے۔ اُسے فلسفہ آین کا فن ایجا دکیا اوراسپر ناصرت متاخرین بلکسلمانون کی کل قوم ناز کرسکتی ہے۔ اسی طرح اُسکا شاگر دعلاَم مقرزی تھی کہ بجا ہے ، مرح و سامیش کا مستحق ہے۔ بسرطال افعار و ق کی الیعن کے لیے جو سرا یکا م اُسکیا تھا دو ہی قدما کی تصنیفا تھیں، لیکن حقیت یہ ہے کہ آین و تذکرہ کے فن نے اُج جرتر تی کی ہے اُسکے لحاظ سے یہ بساخرا نے بھی جیندان کا را مرنیین اِس اجمال کی تفعیل سیمھنے کے لیے سیلے ہوا تنا جا بہا کرون تا رہے کی ماہیت اور حقیقت کیا ہے ؟۔

آریخ کی توبعیت اسلیے اُن گذشتہ وا قعات کا یتہ لگانا اورانکواس طرح ترتبیب دنیا حس سے ظاہر ہوکہ

ہر موجودہ واقعہ گذشتہ واقعات سے کیونکر میدا ہوں اسی کا ام آیخ ہے۔ اِن تعرفیات کی بنا پر تا پیخ کے بیے وزو باتین لازمی ہیں۔ ایک میر کو جس عہد کا حال لکھا جا ہے۔ اُس زمانے کے ہوستم کے واقعات فلمبند کیے اسے اور ان

ي پيمياپزين لازمهن ری ہے۔ ایک میرکا حال لکھا جا ہے۔ اس زائے کے ہرفتم کے واقعات قلمبند کھیے عامین، بعنی تمدن، معاملترت، اخلاق، عادات، ندمب، ہرجیز کے متعلق علومات کا سامیے مہیا کیا جائے۔

دوسرے یہ کہ تمام واقعات مین سب اور سبب کا سلسلہ لا مٹ کیا جائے۔ توریم ماریخون میں یہ دونون چیز بن مفقود ہیں۔ رعایا کے اخلاق، وعا دات، اور میں کے انتہا

تمرن ومعاشرت، کا توسِرِ سے ذکرہی نہیں آما، فرا زواے وقت کے حالات ہوتے

مین لیکن ان مین تعمی فتوحات اورخانه خبگیون کے سواا ورکومینین ہوتا۔ نیقص اسلامی آ ریخون کک محدود نہیں ، بلکہ کل ایشیائی تاریخون کا بھی انداز تھا ، اور ایسا ہونامقتفای

، ریوں مک مدرور میں جنہ ک میعیا می دیروں ما یک مور ملک مرور میں ہربہ سطانی اساب علام استیامی ہوئی ہے۔ اساب تھا۔ ایشیآمین ہمیشہ شخصی سلطنتون کارواج رہا، اور فرمانرواے وقت، کی ممت

واقتدارکے آگے تمام چنرِین میچ ہوتی تقین، اسکا لازمی اثر تھاکہ ایخ کے صفون بنا ہی

عظمت وملال کے سوا اورکسی چنر کا ذکرنہ آئے اور چونکہ اُس زانے مین قانون اورفاعدہ

حوکچرتھا، بادشا می زبان متی، اس سے سلطنت کے اُصول اوراً مین کا بیان کراہی

الوياب فائده تعا-

وا قعات من سلسلهٔ اساب يرتوجه كرف كافراسبب يه مواكر فن اين ميشه أن لوگون

قديم ا رئيك كه نعص اور أسكه اساب کے اتو مین را جو فلسفہ اور عقابیات سے اثنا نہ سے ۔ اس لیے فلسفہ اریخی کے مول و تالیج پر آئی نظر نہیں پڑسکتی تھی۔ یہی وجہ ہے کہ احادیث وسیر بین روایت کا بجہ میشہ ورایت سے بھاری را بلکہ انصاف یہ ہے کہ درایت سے جس قدر کام لیا گیا ذہیہ جائے امول و کے برابر تھا۔ اخیرا خیران آبن فلدون نے فلسفہ آبیج کی بنیا دو الی اورایکے امول و آئین منضبط کیے۔ لیکن اُسکو اس قدر فرصت نملی کو اپنی آبیج مین اِن اصولون سے کام کے سکتا۔ اُسکے بعد سلمانون میں کمی تنزل کا ایسا سلسلہ قائم را کوکسی نے بھراس طرف خیال بھی نکیا۔

ايك براسبب مبكي دوست اربخ كامن نه صرب مسلما نون مين للكة تام قومون مين كاتمام ر باييه المريخ من جود اقعات ندكور موت مين الكونحنف فنون ست رابطه موتا مع مثلًا الرائي ك واقعات فن حرب سع ،أتطامي المورقانون سع، اخلاقي تذكر سع علم الاخلاق سے تعلّق رکھتے ہیں- مُورّخ اگران تام علوم کا ما ہر ہو تو وا قیات کوعلم پیشیت سے دکی سکتاہے ورنہ اسکی نظراسی قتم کی سرسری او طحی ہو گی جیسی کہ ایک عامی کی موسکتی ہے۔ ہبکی مثال بیہ کوا گئسی عمد وهارت برایک ایسے وا قعد گا را نشا پرواز کاگذر ہو حوانجنیری کے فن سے ناوا قف ہے تو گو وہ اس مارت کا بیان ایسے ولکش بیرائے مین کر گاجس سے عارت کی رفعت اور وسعت اور ظاہری شن وخوبی کی تصویراً مکمو استے سامنے پیر مائے لیکین اگرائے بیان مین خاص انجنیری کے علمی اصول اور اکی ایکیان وُموندُهي مايئن تونه السكين گي- يهي سب ہے كما ريخون مين مالات فبك كے فهارون صفح برهکریمی فن خبگ کے اصول پر کوئی معتد براطلاع نهین طاصل ہوتی۔
انتظامی امور کے ذکر مین قانونی حیثیت کا اسی وجہسے بتیہ نہیں لگنا کوموفیر جو قانوالی فرستے ۔ اگرخوش متی سے اینے کا فن اُن لوگون کے ہاتھ مین رہا مواج آریج کے ساتھ فن فبگ ، اصول قانون ، اصول سیاست ، علم الا فلاق سے بھی اُنسنا ہوتے تو آج یہ فن کہاں سے کہان کہ بنیجا ہوا۔ ا

واقعات کی متشکامیا

بيحبث تواس لحافات تعتى كة قديمة الريخون مين تما م ضروري واقعات مذكورنين موا رورس قدر ہوتے ہیں اُنمین اساب وعلل کا سلسانہین م*تبا یسکین ایکے علاوہ ایک اور* صروری عبث ہے۔ وہ یہ کہ حووا قعات مذکو بین خود اُنگی حت پر کہات بک اعتبار موسکتا ہے ؟ - واقعا*ت کے جانجنے کے حرف د*'وطریقے ہیں۔ روَّایت و دَرَّامت **روا بیت سے** یہ مرادہے کہ جووا تعدمیان کیا ماے اُستحفیر کے ذریعے سے بیان کیا ماے جوفوراس وا قومین موجود تھاا وراسے لیکراخیراوی مک روایت کاسلسانتصل بیان کیا جاہے۔ إكسائة تام را دبون كي نبت تحقيق كيا جائك ده صبح الرواتير اورضا بطرته إسنين-درایت سے یہ مراد ہے کا صواعقلی سے وا قعہ کی نقید کی جاہے۔ اس امررسلمان بے شبرفخ کرسکتے ہیں کروایت کے فن کے ساتھ اکفون سے حبس قدرا غناكياكسي قوم نے كہمى نهين كيا تھا۔ اُنھون نے مرشم كى روايتون ميسلسل سند کی میتی اور را ویون کے حالات استعفی اور الاش سے ہم میونیائے کا اسکواکی مقل من نبا دیا جومن رجال کے نام سے مشہورہے۔ یہ توجہ اور امتمام اگر دیہ ہسس امن

روا میت

ا حا دیث بنوی کے لیے شروع ہوا تھا لیکن فن تا ریخ بھی اس فنے سے محروم ز ہا علب ہی مقوح البلدان ملب**قات ابن** سعد وغیرہ مین نام واقعات بسندِیِّصل مٰرکورمن کیورپ سے فن الرح کو آج کمال کے درہے یُرہنجا دیاہے لیکن اِس فاصل مرمین وومسلمان وُرخوت مبت بیجیے ہیں ۔ اکمووا قو بگارکے نقدا ورغیر نقہ ہونے کی کھیریر وامنین ہوتی بیان ک کہ وہ جرج و تقدیل کے نام سے بھی اشتا نئین-

درایت کے اصول بھی اگر حیموجو دیمتے جنائیہ ابن حزم ابن القیم خطابی ابن عبدالبر انے متعدد رواتیون کی تنفید میں ان اُصولون سے کام لیاہے لیکن انصاف پیہے کہ اس من گرجس قدر ترقی ہونی جاہیے بھی نہیں ہوئی'' اور اربخ مین تواس سے بالکل کا مہنین لیا گیا البته علاما بن فلدون نے جوانطوین صدی ہجری میں گذراہے حب فلسفہ ماریخ کی بنیا د

اڈالی تو درایت کے اصول نهایت کمیسنی اور ار یک ببنی کے ساتھ مرت کیے جنانے اپنی

آماب کے دیباہے میں لکھتاہے۔

اتُ الاخبار لذا اعتمد فيها علي النقل النبون من الرمن روايت يراعتبار كربيا ما الله الرراية من الراية ما المراية ما وطبيغالعم إن الاحوال فك المجتماع الانسكا سوسائي ك أقفا كالحاط المجي طرح مركيا ما س

لر خيكم اصول لعادة وفواعل لسياسة المارة ك امول اورسيات ك قواعد اور اساني

الكافنيس المخائب منها بالنشاه م والخاصر اورغائب كوما مزيرا ورمال كوكذ سشتهيرية

بالذاهب في بمالونون فيها موالعثوي- ايس كيامات تواكثر نزين برى-

علامة موصوف نے تعریح کی ہے کہ واقعہ کی تقیق سکے لیے بیلے را ویون کی جرح وقعلم

10

سے تعبث منین کرنی جا ہیے بلکہ یہ د کھینا جا ہیے کہ وا قعہ نی نفسہ مکن تھی ہے یا منین کونے اگر وا قعہ کا ہونا مکن ہی نبین تو راوی کا عاد ل ہونا برکا رہے علامۂ موصوت نے بیر مجی ک*ھا ہر کر دیا ہے ک*وان موقعون مین امکان سے امکان عقلی مرا دہنین بلکہ اصول عادت اور قوا عدِیمرن کے روسے مکن ہونا مرا دہے۔ اب مکویه دیکینا ہے کہ خونقص قدیم تا ریخون کے متعلق میا ن کیے گئے انکی اُج کہان ک تلافی کیجاسکتی ہے بعنی ہم اپنی کتاب (انفاروق) میرکب*س حترک اس کی کوورا کرسکتے ہی* ارُحهِ بدا مرابكل صحيح ب كه حوكًا من حصرت عرضك حالات مين تنقل حميت سيكهم کئی مین ان مین م*رفتم کے صرور*ی واقعات منین ملتے لیکن اور متم کی تصنیفون مسے ایک مذبک اسکی تلا فی موسکتی ہے۔ شالاً الاحکام انسلطانیۃ لا بن انوردی ومقدماین خلدون وكتاب الخزاج سيحصنرت عمرتك طربق حكومت وآمئين انتظام كيمتعلق ت سی با تین معلوم سرسکتی بین ، اخبارا لقضا قر لمحدین خلف الوکیع سے خاص صیغة مضا کے تتعلق انخاط بق عل معلوم ہوتا ہے۔ کتا ب الاوائل لابی ہلال انعسکری ومحاسن ا بوسائل الی اخبارالا وائل مین انکی اولیات کی تفصیل ہے۔عقد الفرید وکتا البیان ولتبيير وللحافظ مين أنك خطيه منقول من - كتاب العرة لابن رشيق القيرواني سي أكا شاء اند مذاق معلوم ہوتا ہے۔میدانی نے کتاب الانتال مین ایکے حکیما ندمقو کے نقل کیے ہین-ابن جرزی نے سیروالعربیٰ میں انکے اخلاق اورعا دات کو تفضیل سے انکھا ہے۔ شاه ولی الله صاحب شے ازالہ انتخامین اُنکے فقہ اوراجہا دیراس محبّدا نظر تقیت

تجٹ کی ہے کواس سے زیا دومکن ننین-

لیتمام تصنیعات میرے بیش نظر ہیں اور مین نے اُن سے فائدہ اُنھا یا ہے

ریا من النفنرة للمحب الطبری مین بھی حصرت عمرے حالات تفصیل سے ملتے ہیں اور

<u>شاہ ولی اللہ صاحب</u> نے اسی کتاب کواپنا ما خذ قرار دیا ہے لیکن اُس مین نهایت

انثرت سے موصنوع ا وطنعیف روایتین فرکورمین اس لیے مین نے والے ہائس سے ر

احترا زكي -

واقعات کی تحقیق و نقید کے لیے ورایت کے اصواب بہت ٹری مرڈ سکتی ہے۔ ورایت کا فن اب ایک مستقل فن نبگیا ہے اورائیکے اصول و فاعد سے نہایت

نوبی سے شفنبط ہوگئے ہیں اِن مین سے جواصول ہمارے کام مین اُسکتے ہوجب ویا ہیں تا بر مار میں میں میں میں میں میں میں ایک میں اُسکتے ہوجب ویا ہیں

ا- واقعه مرکوره ، اصولِ عادت کے روسے مکن ہے اینین ؟ - واقعه مرکوره ، اصولِ عادت کے روسے مکن ہے اینین ؟

٢-أس زماني من بوگون كاميلان عام واقعه كم خالف تما ياموافق ؟

سا - وا تعدا اگسی صر مک غیر ممولی ہے تو آسی سبت سے نبوت کی شما دت زیادہ .

قوی ہے یا تنین اِ۔

مهم-اس امری نفتیش که راوی جس چیز کوواقعه ظا هرکر نامی اسمین اسکے تیاس ادر راے کاکس قدر حقِبه شامل ہے ؟

کے ان تعینفات بن سے تماب الاوائل ورکماب العمرة و کاظمی نسنے میرے کتب خانے میں موجود ہے سیرتو العمری ا خبار الفقائ قراور محالی اللہ اللہ کی سینے تعسینے کی میں اور سین میں اور میں نے میں میں اور سین میں اور میں ہیں ہیں ہیں اور سین کو سین ہو۔ میرے باس موجود میں ہو۔ ۵-رادی نے داقعہ کوجس صورت مین ظاہر کیا وہ واقعہ کی بوری تقدیر ہے یا ہے۔ امرکا احمال ہے کہ را وی اُسکے ہر مہابو پیظر نہیں موال سکا اور واقعہ کی تما مخصوبیتین نظر مین نہ اسکین-

ا اس بات کا اندازه که زماند کے امتداداو ختلف راویون کے طریقۂ اوائے روامیت مین کیا کیا اورکس کس متم کے تغیرات بیداکردیے ہیں۔ ان اصولون کی صحت سے کوئی شخص انخار نہیں کرسکتا اور انکے ذریعے سے مبت مخفی راز معلوم ہو سکتے ہیں۔ مثلاً آج حس تعدر تاریخین متدا دل ہیں ان مین عیرور پ

ی رور سوم ہوتے ہیں مسلوبی بن حدر مار میں سکر دوں ہیں اِن ین میروسوں کی سنبت حضرت عمرے نہایت سخت احکام منقول ہیں لیکن جب اِس بات پر کا الم کیا جا سے کہ بیائس زمانے کی تصنیفین ہیں جب اِسلامی گروہ میں بتھٹب کا زراق سیا

یہ . ہوگیا تھا 'اوراسی کے ساتھ قدیم زمانے کی تصنیفات پرنظرڈالی جاسے بنین ا<sub>ی</sub>س

فتم کے واقعات بالکل نہیں ایہ بت کم میں۔ توصا ت معلوم ہوتا ہے کر جس تعقیب والی سر رئیست میں نہ بیز اقتیاب کے این معرور گئی ہے تاہد ہوتا

آنا گیاہے اُسی قدررواتین خود بخود تعصّب کے سانچے مین موحلی گئی ہیں۔ تمام تاریخون ا

مین نمر کورہے کہ حضرت عمر نے حکم دیا تھا کہ عیسا نگ سی قامت اور کمبی نا قوس نہ بجاسنے

یا مین نگین قدیم کتابون (کتاب الحزاج تایخ طبری دعیره) مین بی<sup>ر</sup> وایت اس قبید

کے سائقہ منول ہے کہ جس وقت سلمان نازیڑھتے ہونِ اُسوقت عیسا بیُ نا قرس

نهجامین- ابن الاثیروغیرہ نے لکھا ہے کہ حضرت عمرے مکر دیا تھا کہ قبیلہ تغلیبے

عيساني اپنے بحيّن كو صطباع نددينے يا مُن لكين بهي روايت اُريخ طبري مين ان

امول ا سے جن ابوہ کاپتری کمانکا سے انفا فاسے مذکورہے کر ' جولوگ اسلام قبول کرھیے ہون اُن کے بیجُون کو زبرد مستی صطباع نردیا ماہے'۔

یا شلاً بهت سی تاریخون مین به تقریح می کو حضرت عمر نے تحقیرا و رمزالی کے اسے عیسائیونکو ایک فاص الباس بنیزیجورکیا تقالیکن زیا وہ تدفیق سے معلوم ہوائے کروا قور مرف ایس فدرہے کو حضرت عمر نے عیسائیون کوایک فاص الباس اختیا رکونے کی موات کی تحقیر کا خیال راوی کا قیاس ہے جنا بخہ اسکی فضل سے بیت کی موات کی ہوائی۔ اسکے آئے آئے۔

یا شلاً وہ روہ تین جو تاریخی ہونے کے ساتھ ذہبی حیثیت بھی رکھتے ہیں انہیں اللہ یہ صوصیت صاف محسوس ہوتی ہے کہ جس قدر ان مین نقید ہوتی گئی ہے اسی قدر ان مین نقید ہوتی گئی ہے اسی قدر ان مین نقید ہوتی گئی ہے اسی قدر اسی سقید نہیں ساعدہ کے واقعا این عسا کر۔ ابن سعد۔ مہیقی مسلم بخاری۔ سب نے نقل کیے ہمین لیکن جس قدر ان بزرگون کے اصول اور شذت احتیاط مین فرق مراتب ہے اُسی نسبت سے روامتی ن بن شتبہ اور زاع الگیرالفاظ کم ہوتے گئے ہین۔ میان کہ کو خود سلم و خابی کی مناسب موقع برنفصیل مین فرق مراتب کا بیا اثر موجود ہے جنا بخدار سکا بیان ایک مناسب موقع برنفصیل میں فرق مراتب کا بیا اثر موجود ہے جنا بخدار سکا بیان ایک مناسب موقع برنفصیل میں فرق مراتب کا بیا اثر موجود ہے جنا بخدار سکا بیان ایک مناسب موقع برنفصیل سے آئیگا۔

انفی اصواعِ علی کی بنا فیجلف متم کے واقعات میں صحت واعتبار کے مراج معی افتحات تا میں اسلام کے مراج معی افتحات تا میں اسلام کے مقترت عمر کی خلافت کے واقعات تناور ہرکے افتحات تناور ہرکے اسلام کے مقترت عمر کی خلافت کے واقعات تناور ہرکے

بعد تحریرین آئے اس بنا پر بیسلیم کرنا جاہیے کہ موکون اور لوا ایئون کی بنایت جزئی تفصیلین مثلاً صف آرائی کی کیفیت، فرقین کے سوال وجواب ایک ایک بها در کی معرک آرائی - پبلوانون کے دانو ہیج - اس شتم کی جزئیات کی تفصیل کار تبلقین کا نبین بیخ سکتا بیکن ا ' تنظامی امورا ور فواعدِ حکومت چونکہ مترت کم محسوس صورت میں وجود رہے ۔ اس کیے انکی نسبت جو واقعات منقول بین وہ بے شبہ یقین کے لائت ہن لکم نے بہدوشانین جا مین اور قاعدے جاری کیے ایک ایک بخیران سے واقعت ہے اور ان کی نسبت کوئی شبہتن کیا جا سکتا جبکی یہ وجہنین کہ صورت کی طرح آسکی لیے اور ان کی نسبت کوئی شبہتن کیا جا سکتا جبکی یہ وجہنین کہ صورت کی طرح آسکی لیے اور ان کی نسبت کوئی شبہتن کیا جا سکتا جبکی یہ وجہنین کہ صورت کی طرح آسکی لیے قطعی روہ تین موجود ہین بلکاس لیے کوہ انتظامات مترت تک قائم رہے اور اکبر کے قطعی روہ تین موجود ہین بلکاس لیے کوہ انتظامات مترت تک قائم رہے اور اکبر کے اسے آن کو سفہت تھی۔

حضرت عمرکے خطبے اور حکمت امیز مفتو سے جومنعول ہیں اُن کی منبت یا قیاس کرنا چاہیے کہ جو فقرے زیادہ پُراٹر اور فقیح و بلیغ ہیں وہ صرور میچے ہیں کیزکم ایک فقیح مقررکے وہ فقرے صرور محقوط رہجاتے ہیں اور اُن کا مُرّت اک جرحا پر ہتا ایک فقیح مقررک کوہ فقر کے وہ جلے ضروً میں جن میں کوئی خاص ٹررت اور اثر ہوتا ہے۔ اسی طرح خطبوں کے وہ جلے ضروً فابل اعماد ہیں جنون کوگر فقتہ کی اور اُن کوگر فقتہ کی جاتوں کولوگ فیقتہ کی جاتوں کولوگ فیقتہ کی جاتوں کولوگ فیقہ کی جاتوں کولوگ فیقہ کی جاتوں کولوگ فیقہ کی جاتوں کے دو کر ہے ہے۔

جودا قعات اُس زمانے کے مزاق کے لیا فاسے چندان قابل وکر نہ سکتے اور با وجود اِسکے انخا وکر اُجا آہے اُن کی سنبت سمھنا جا ہیے کہ صل اقدائی ہے ازیاده موگا- مثلاً ہمارے موّر ضین رزم وزم کی معرکه آرائیون اور نگینیون کے مقابے مین اتتفامی امورکے بیان کرنے کے بالکل عا دی نہیں ہیں۔ با اپنیم<del>ہ حصرت عم</del> کے حال مین عدالت - پولیس - بندوست - مردم شاری وغیره کاضمناً جود کرا آجا یا ہے اُسکی سنبت یہ خیال کرنا جا ہے کہ بس قدر ولمبند ہوا۔ اُس سے بہت زیادہ چھوڑ ویا گیا ہے <del>۔حفرت عمرے ز</del>ہر ونقشف سخت مزاجی اور خت گیری کی نسبت کیرون روانتین مذکورین اوربے شبههٔ اورصحابه کی نسبت یه اوصاف أن بین زبا ده محقے لیکن اس کے متعلق اُن تمام روایتون کو صحیح نبین خیال زاجا ہے <u> جرحلت الاوليا- ابن عساكر كنزالعال - ريامن النضره وغيره مين مذكورين ملبه</u> يسمجنا حابي كرجونكه اس قتم كى رواتيين عمواً كرم مخفل كاسب موتى تقين اورعوام اُن کونهایت فوق سے سنتے سے اِس کئے اُن مین خود بخود مبالغہ کا رنگ آنا گیا ہے۔ ایکی تصدیق اس سے ہوتی ہے کہ جو کتا بین زیادہ ستند اورمعتبر مین اُن مین یورواتین بہت کم یا بی جاتی میں-اسی گئے مین نے اِس مشم کی جوروانتین اینی کتاب مین نقل کی ہین اُن مین بڑی احتیاط کی ے اور راین النفرة وابن عسا کرو حلیة الا ولیا وغیره کی رواتیز کمو بالکل نطرانداز کیا ہے۔ اخیرین طرز تحریر کے متعلّق کچھ لکھنا بھی صرد رہے۔ اجل کی اعلیٰ دیجے کی الماريخين مجفون من قبول عام حاصل كيا مع فلسفه آورانشا يروازي سے مركب امین اداس طرزسے برهکرا ورکوئی طرزمقبول عا م<sup>ن</sup>نین موسکتا لیکین و*حقیقت باریخ* ۱ ور

تایخ کا مرز تزیر

دماجير

تاریخ اور انتاردازی کانشدن افتا پردازی کی حدین بالکل مداحدا ہیں۔ ان دونون مین جوفر ت ہے وہ نقشہ اور تصویم کے فرق سے مثابہ ہے۔ نقشہ کھینے والے کا یکام ہے کرسی حقمۂ زمین کا نقشہ کھینے وہ تا ہے ویدہ ریزی کے ساتھ اسکی ہمئیت شکل سمت جہت اطراف - اصلاع ایک ایک جیزیکا اصلاح کے ساتھ اسکے مصفور صرف ان خصوصیتون کو ہے گایا اس کو زیادہ نایان صوت ا حاطہ کرے بخلات اسکے مصفور صرف ان خصوصیتون کو ہے گایا اس کی توز تا منفعلہ برا فرزیا ہیں و کھلائیگا جن میں کوئی خاص اعجو گئی ہے اور جن سے انسان کی توز تا منفعلہ برا فرزیا ہے۔ فیلاً رستم و سمراب کی داشان کو ایک موزج کھے گا تو سادہ طور پر دا قورے تمام حزئیات بیان کردیکا لیکن ایک انشا پردازان خربیات کو اس طرح اداکر کگا کہ سمراب کی خطری کی جہوا ہے ، اور واقعہ کے منطلومی ذکھی اور ساتے بھر جا ہے ، اور واقعہ کے منطلومی ذکھی اور دساننے ہوئے کے نظر نے مین ۔

موّرخ کا مهلی فرصٰ بیہ کہ وہ سادہ واقعہ گاری کی صدسے تجا وزنکرنے بائے۔ یوبیا مین آج کل حربرامورزخ گذراہے اور جوطزہ حال کا موجدہے رنیکی ہے اسکی تعریف ایک پروفنیسرنے اِن الفاظمین کی ہے ''اسنے تاریخ مین شاءی سے کام نمین لیا۔ وہ زملک کا ہمدر دبنا نہ نم ہب اور قوم کا طرفدار ہوا کسی واقعہ کے بیان کرنے مین طلق بیتہ نمیں بلگا کہ وہ کرن با تون سے خوش ہوتا ہے اور اُسکا ذاتی اعتقاد کیا ہے''۔

یا مرتھی خبا دنیا صرورہے کہ اگر چیو بیٹن نے دا قعات میں اسباب وعلا کے سلسلے پیا ارنے کی کوشش کی ہے ، لیکن ایس اب مین پورپ کی ہے اعتدا لی سے احتراز کیا ہے۔ اساب وعلل کے سلسے پیدا کرنے کے لیے اکثر طکہ قیاس سے کام لیٹا ٹیز اہے۔ اس سے امرز خے کوا حبتا دا ورقیاس سے جارہ نہیں لیکن یہ اسکا لازمی فرمن ہے کہ وہ قیاس اور احبتا دکو واقع میں اس قدر مخلوط نہ کروے کروئی شخص دونون کوالگ کڑا جاہے تو نہ کرسکے ۔ اجبتا دکو واقع میں اس قدر مخلوط نہ کروے این اور ایس ترتمیب اور اندا وسے لکھتے ہیں کہ واقعہ بالکل آنکے اجبتا دکے قالب میں دمل جاتا ہے اور کوئی شخص قیاس اوراجہا دکو واقعہ سے الگ نہیں کرسکتا۔

اس کتاب کی ترمیب اورا صول تحریب کا بینایس کتاب کی ترمیب اورا صول تحریب کا بینایس بین واقعات مختلف میشیدین رکھتے ہیں او مختلف عنوا نون کے بحت نی بیزا ہوئے ہیں اور محتایات کی بین اور ایسا ہونا صرور محالین ہیں اس سے اس سے اس متم کے واقعات کتا ب مین کرر آگئے ہیں اور ایسا ہونا صرور محالین کی اس عنوان کے نتیجے وہ واقعد کھا گیا ہے وہ ان اُس عنوان کے جیشیت زیادہ ور دکھلائی گئے ہے۔

کی جیشیت زیادہ ور دکھلائی گئے ہے۔

۲- کتا بون کا حواله زمایده ترانفین وا قعات مین دیاگیا ہے جوکسی تثبیت سے قابلِ تقیق تنے اور کوئی خصوصیت خاص رکھتے تتھے۔

سا حوکتابین روایت کی جنیت سے کم رتبہ بین مثلاً ازالدائفاً وریاص انفرہ وعنیرہ اُن کا جمان حوالہ ویاہے اِس بنا پر دیاہے کہ خاص اُس روایت کی تصدیق اور شرکتا ہو سے کرلی گئی منی۔

غرص کئی رہس کی معی ومحنت اور تلامش وتحقیق کا جزمتیجہے وہ قوم کے ساسنے ہی۔

40 نهایت قالمبیت سے انجام دیا اوراس وجبسے بیسے عالی رتباد گون کے مقدات انکے یاس نیصلہ کرنے کے لیے آتے تھے۔ رسول اللہ صلع کے حدامی عملات ورحرب بن آمیّهٔ مین حب ریاست سام که دعوسے پر نزاع مونی تو دونون نے نفیل ہی وطَكُمُ ما نا ۔ نفیل نے عبد المطلب کے حق میں میں علیما اورائسوقت حرب کی طرفت مخاطب ہوكر بيطے كيے۔ آتُنَا فُرِيرَ جُلِا هُولِطُول مِنك فَامَةً واوستُوصَافَةً وَالْفِطْمُونِكُ هَامَةً والنَّ مِنْكُ ولِدًا وَاجْزِلُ مُنْكَ صَفْتًا وَانْ لَافُولَ هٰذَا وانك لبَعَيْدُ الْعَصَرَ فِيعَالَمُهُ في العرّب جلد المرّس للمتبل العشيق-نفیل کے دومیے تھے۔ عمرو۔ خطّاب عمروممرلی لیا قت کے آدمی تعیاسکین سے بٹے زبد جونفیل کے بوتے اور <del>حضرت ع</del>رکے ج<u>ا</u>زا دیجائی تھے نہایت عالی درجیفس ستھے۔ وہ اُن ممتاز بزرگون مین سقے جنون نے رسول التو ملم کی بہت سے بیلے اپنے اجتها دسے ُبت پرستی کوترک کردیا تھا اورموجد ننگئے تھے اِن میں 'ڈیدرکے سوا باقیون سکے يه نام ہين۔فش بن ساعدۃ - ورقة بن نوفل -ر میر بت پرستی اور رسوم جا لمبیت کوعلانیه بُرا کنتے تھتے اورلوگون کو دین ابرامیمی کی ترعنیب دلاتے تھے اِسیرتام لوگ انکے دیٹمن ہوگئے جن میں حصرت عمر کے والد، خلّاب سبسے زیادہ سرگرم تھے ،خلّاب نے اِس قدرانکونگ کیا کہوہ اُفرمجبوروکر مِمْ مَعْمِی سِے نکل گئے اور حرا رمین جارہے ، ایم کھی کھی چئیپ کر کعبہ کی زیارت کو آھے۔ زمر

حفرت م کے برادر می نوا و کریو کے اشعاراج بھی موجود ہین جن سے آنکے اجتماد اور روشن نمیری کا اندازہ ہوسکتا ہے ؤوشعر بیبیں ۔

ایک فداکوانون کو بانزارون کو بین نے الات اور عزتی (بتون کے ام تقے) سب کو خیراد کما اور سمجودار آدمی ایس ہی کڑاہ ہے ۔ ارَتَّا وَلَحِمَّ الْمِ الْعَنْ رَهِي الْمُورِي الْمُتَّالِمُ الْمُعْنِي الْمُورِي الْمُتَّالِمُ الْمُرْتِي اللاحت والعُرِّي اللهِ المُتَّالِمُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ

بم خطاب حفرت عمرے والد ویش کے متازا دمیون مین سے تھے۔ قبیله عدی ا اور منبوع بدائتمس مین مرت سے عداوت علی آتی تھی۔اور چونکہ نبوعبد لتمس کا فا زان طرح اس بیسر علم ایفیں کے التولی میں کرتامہ فازان میں نرجس میں خطالب

بڑتھا اس کیے علبہ انھیں کورہاتھا۔عدی کے تام خاندان نے جس مین حطاب مھی شامل تھے مجبور ہوکر تنویسہ کے دان مین نیاہ لی۔اسپر بھی مخالفون نے لڑائی

ای دهمکی دی تو خطاب نے یہ انسوار کیے -

ابوعِدُن ابعم و ودوني رَجَالُ لا يفنهما العَعبُد

رجال من بعدم الى ابياتهم ياوى الطريد

كل آن ه شعر بین اور علامه ازرقی نے تاریخ مکہ مین انکو بتبامها نقل کیا ہے۔ عدی

كاتمام فاندان كمرم عظم من مقام صفامين سكونت ركها تقاليكن جب أعفون نے

بنوسهم سے تعلق بیداکیا تومکا نات بھی ایمنی کے بات بیج ڈالے، لیکن خطاب کے

ك زيرًا معتل ما ل سدانا تريكاب الدوايل- ادرمعارت بن تتيبه من من كال- كل كماب المعارف بن قتيب

مغرت عمر کے والد خطا س

شعد د مکانات صفامین بھی باقی رہے جن من سے ایک مکان <u>حصنت ت</u>مرکو وراثت میر ، 'بیاتھا۔ یہ مکان۔ صفاً ومرو ہ کے بیج مین تھا۔ <del>حضرت عمر نے</del> اپنی خلافت کے ر نانے میں اُسکو ڈھا کرحاجیون کے اُرنے کے لئے میدان نیا دیالیکن اُسکے تعلق تعفی او کا نین مرت مک حفرت عمر کے خا ندان کے قبضے مین رمی<sup>4</sup>-تخطّاب نے متعدّ د نتا دیا ن اونے اویخے گھرانون میں کین ، چنا کی حضر لی مان خبکا **ام خنتمہ تھا ہشام بن المغیرہ کی بیٹی تقین** ۔مغیرہ اس رتبے کے اُدمی جب قربیش کسی فیلیے سے رائے کے لئے جاتے تھے تو فوج کا اہتمام انھی کے متعلّق ہوتا تھا۔ اسی مناسبت سے انکوصاحب الاعِنّہ کا نقب حاصل تھا حضرت خالہ انھی ج تے تھے۔ مغیرہ کے بیٹے شام تھی حو حضرت عمرے نا اعقے ایک مماز آدمی تھے۔ حصزت عمرمشہورر وابت کے مطابق ہوت بنوی سے بہ برس قبل میدا ہو ہے کی ولادت اور بحبین کے حالات بالکل نامعلوم ہیں۔ حافظ بن عساکنے <sup>تا</sup> رخج وشق مین <u>عمروین انعاص</u> کی زباین ایک روایت نقل ک*ی ہے* کرمین حیندا حبا *ب کے ساتھ* یب حلسے میں مبھا ہواتھا کہ د نعتہ ایک غلّ انتھا۔ دریا نت سے معام ہوا کہ خط**ا ب** کے ر مبیا پیدا ہوا'' اس سے قبایس ہوسکتا ہے کہ حضرت عمرکے بیدا ہونے پرغرمعمولیٰ وکھ گئی تھی'اُ کے سِن رشندکے حالات بھی بہت کم معلوم مین اور کیونگر معلوم ہو تے۔ ئیس وقت کِس کوخیال تھا کہ یہ نوجوان آگے جل کر**فار و ق** عظمیٰ ہونیوا لاہے <sup>تہ</sup>ام

ا بخ مُدلازرتی ذکرر اع بی عدی بن ا

حفرت عمر کی دلادت

بتنرشر

نهايت معفل ورلاس سے كھر كھير حالات بىم يېنچ حبيكا بيان تقل كرنا يا موزون نهوگا-سِن رشد کو منیکر خطاب انکے باب نے انکو حوضرست سیرد کی وہ اونٹون کا کیرا نا تقا- يشغل ارُحيوب مِن عيوب بنين مجها جا يا تعا بلاً قومي شعارتها ليكن خطاب نهايية بیرحمی کے سابھ ان سے سلو*ک رہے تھے۔ ت*ام تام دن اونٹ چرانے کا کا م لیتے او<sup>ج</sup> المجهى تھک كروه دم لينا چاہتے توسزا ديتے ۔جس ميدان مين حضرت عمر كو يصعيب أ خدمت انجام دینی پڑتی تھی اسکا ام صنجنان تھا جومکہ مغلمےسے قریب قدیہسے اسل کے فاصلے پرہے' خلافت کے زما نسے مین ایپ د فعہ حضرت عمر کا اور ھرگذر موا توا نکو نهایت عبرت ہوئی۔ آبدیدہ ہوکرفرہا یاکهٔ الٹیاکبر!ایک وہ زما نہ تھاکہ میں بیان ندے کا کرتہ بینے ہوئے اونٹ چرا باکرا اور تفک کرمٹی جا آ اتوبا ہے کے اِتھ سے مارکھا آیا۔ آج به دن ہے کہ خدا کے سوا ، میرے اویرا در کو ٹی حاکم نہیں <sup>ہے ،</sup>۔ شاب کا آغاز ہوا توحصرت عمر اُن شریفا نہ شنعلون میں مشغول ہوہ جو شرفای عزا مین عمو مًا معمول سکتے۔ عرب مین اِسوقت جن حینرون کی معلیم دی جاتی تھی اور جولازم کہ

کا من حضرت عمرکے خاندان مین مور و ٹی حلِا آ انھا۔ جا حظ نے کتاب البیان و تببئین مین تصریح لکھا ہے کہ حصرت عمر اورانکے باپ اور دا دانفیل تمینون مبت بڑے نشاب تصلیم خالباً اسکی وجہ یکھی کہ حضرت عمر کے خاندان مین جیسا کہم ابھی لکید اسسے ہین

نترافت جنال ی جاتی تقیین ، تسب دانی سیهگری ، میلوانی ، اور مقرری تھی بنشانی

ك ملتهات بن سعدة ك كما ب مركور مطبوعة مصر صغير ١١٠٠ و ١٢٠-

<u>سفارت</u> اور فیلهٔ منافرة به دونون منصب موروتی طیح ا*تے بق*ے اورانکے انجام دینے کے لئے انساب کا جاننا سب سے مقدم امر تھا۔حضرت عمرے انساب کا فن اپنے ا پ سے سکھا۔ ماحفانے تقریح کی ہے کہ حضرت عرجب انساب کے متعلق کھی ماین ات مق تومبشهاني إي خطاب كاحوال دي عقر -سیلوانی اورکشق کے فن مین بھی کمال حاصل کیا بہان تک کیُح **کا ط**ک وگل مین موکے کی تشتیا ن رستے تھے <u>عمکا ظا</u>جب<del>ل عرفات کے پاس ایک ب</del>قام تھا جہان سال کے سال اس غرص سے میلالگیا تھا کہ توب کے تام اہل فن حمیم ہوکرانیے کما لات کے جوم الكولات عقره اس لئے عرف وہي لوگ بهان ميش ہوسكتے تھے جوکسي فن مين كمال ركھتے تحقے - نابغه ذبیا ین - حیان بن تابت - نش بن ساعدة - خنیا رخبکو شاعری اور ملکهٔ تقریری کا عرب ما تنائقا استعلیمیگا ہ کے تعلیم ما فیتہ تھے۔حضرت عمر کی نسبت علامہُ ہا ذری ہے کتا ب الانشراف مین بسند به روایت مقل کی ہے کور عکا قاکے ذکال مرکشتی اُراکسے تھے "اِس سے قیاس ہوسکتا ہے کہ حضرت عربے اس فن میں بورا کمال حاصل کیا تھا شهسداری کی نسبت انخا کمال عمو مامست<u>م سے جنائ</u>ے <del>جا خطانے لکھا ہے ک</del>روہ گھوٹرے يراً حيل كرسوار موت كقة اوراس طرح فم كونمينة كالمديد بدن موجات كقه-وتت تقریر کی نسبت اگر حیکوئی مُصَیّح شها دت موجرد نبین کیکن یه امرتام موّفین نے اِتفاق لکھاہے کا سلام لانے سے پیلے تُربیق نے انکوسفارت کامنصب دیدا تھا ،

ا وربینضب صِرف اُس شخف کومل سکتها تھا جوقوتِ تقریراِ درمعا مله نهمی مین کمال کھاتھا

على ظ

اس کتاب کے دوسرے جصنے مین ہم نے اس واقعہ کو تفقیل سے لکھا ہے کہ خفتر عمر شاعری کا نهایت عمدہ مذاق رکھتے تھے اور تام مشہور نتعرار کے جبیدہ شعاراً نکویا دیھے۔ اس سے قیاس ہوسکتا ہے کہ یہ مذاق اکفون نے جالم تت ہی مین عکا فرکی تعلیم گاہین حاصل کیا ہوگا۔ کیونکدا سلام لانے کے بعدوہ مذہبی انسفال میں ایسے محوم و گئے تھے کہ اس فتم کے چرہے بھی جیندان بیند نہیں کرتے تھے۔

اسی زمانے میں آئفون نے لکھنا پڑھنا بھی سیکھ لیا تھا اور یہ وہ خصوصیت تھی جڑپ زمانے میں بہت کم لوگون کو حاصل تھی۔علاّمہ بلاذری نے بہسندلکھا ہے کومبابخضرت معوف ہوئے تو قربیق کے تمام جیلے میں ، اومی سکتے جولکھنا جانتے تھے اُنین ہے ایک عمرین خِطَاب سکتے،۔

ان فنزن سے فازع ہوکروہ فکرمعا بن مین مصروت ہوئے۔ عرب مین معاش کا دلایے وارہ فرارت تھا اس سے انھوں نے بھی بی شغل انھیارکیا اور بی شغل آئی ہمبت بڑی ترقیوں کا سب ہوا۔ وہ تجارت کی غرض سے دور دو رامکون میں جاتے تھے اور برطی ترقیوں کا سب ہوا۔ وہ تجارت کی غرض سے دور دو رامکون میں جاتے تھے اور برطے برائے اور برطے برائی معاملہ وانی ، تیمام اوصا ف جو آئین اسلام لانے سے قبل پیدا ہوگئے تھے سب انھی سفرون کی بدولت سے سے ان سالم لانے سے قبل پیدا ہوگئے تھے سب انھی سفرون کی بدولت سے ان سفرون کی بدولت سے ان سفرون کی جو الات اگر دیا بنایت دلیب اور نیمتی خیز ہونگے لیکن افسوس سے کہتے۔ ان سفرون کے حالات اگر دیا بنایت دلیب اور نیمتی خیز ہونگے لیکن افسوس سے کہتے۔ ان برتر خینین کی علامتہ مسعود تی نے اپنی مشہور کیا ب موج الدہ ہو کے الدہ ب

## مین صرف اس قدر لکھا ہے کہ-

وَلِعِي بِنِ الْحِظَّابِ اخْبِأَكُونُونُوفُ فِي السَفَائِلِ عَرِينَ فَقَابِ نَهُ عِلِيَّتَ كَرَافَ مِن وَانَ او شَام فی کجا هلیّة الی الشاهم والعراف مع کتبیر کے جسفریئے اوران سفرون مین سرح دوء برمم مِنْ مُلُوكِ الْعَربِ والعِيمِ ﴿ وَقَدَ النَّيْنَا لَكَ إِدْتَا بِون سَدِيمَ الْكِمْ مَنْ بِتَ سَي واقعات علىمىسوطها فى كتابنا اخبار الزمان ابن مبرين في تنسيل كسا عداين تاب الزان اوركتاب الاوسطيين لكهاب-

والكتاب الاوسط

علاّمهٔ موصوف نصے جن کتا بون کا حوالہ دیا اگرحہ وہ من تاریخ کی جان میں کیکن قوم کی مبذاتی سے مرت ہوئی کہ نابید مومکییں، مین نے صرف اس غومن سے کر حصرت عمر کے ان مالات المایته لگ سکے تسطنطینیہ کے تمام کتب خانے جمان ارسے دیکن کھرکا میابی منول -<u>محدث بن عساکرنے ایخ دمشق مین صبکی معین حلدین میری گاہ سے گذری ہین مقرا</u> -عركے سفرك معبن واقعات لكھے من ليكن انين كوئى دلچيسى نهين-مختصر کے عکا فاکے موکون 'اورتجارت کے بجربون نے 'ا نکوتام ءب میں روشناس کردیا اور لوگون یرا کی قالمیت کے جوہر وزر وز کھنتے گئے مہان تک کہ قریش نے اکوسفار**ت** کے منصب پر مامور کر دیا۔ قبآلی مین حب کوئی ئیرخطرمعا ملہ بیش آیا تو ایمنی کوسفیر ناكز سيخيخ

فبول سلام او وبحرت حضرت عمر كاشأ ميئيوان سال تقا كأعرب مين أقتاب رسالت طلوع موانعني

رسول الشد صلی الشدعاید وسلم مبوت موت اوراسلام کی صدرا لمبند مونی - حضرت عمر کے گھرانے مین زیری وجہسے توحید کی آواز الکل انوس نندن رہی تقی جیا نیے سب سے بیلے زیر کے بیٹے سعیدا سلام لائے سعید کانخاح حضرت عمری بہن فاطمیسے ہوا تھا-اس تعلق سے فاملہ بھی سلمان ہوگئین - اِسی خاندان میں ایک اور نورشخف تغیم بن عبداللہ نے بھی اسلام قبول کرلیا تھا۔ لیکن <del>حضرت ع</del>مرا بھی تک اسلام سے بالکل م**گای**ز تھے۔ اِن کے کا نون مین حب بیر صدابهجی نوسخت بریم ہوئے بیان تک کر قبیلے مین جولوگ اسسلام لا چکے تھے اُنکے وشمن بن گئے۔ لبندا نکے خاندان میں ایک کنیز تھی جینے اسلام قبول کرامیا تھا۔اُسکوبے تحاشا ہارتے۔اور ہارہے ہارتے تھک حباتے تو کہتے کہ ذرا دم لیے ہوں و بھیرار ظا ۔ تبنید کے سواا ورصب حسب پر قابوعاتیا تھاز دوکوب سے دریغ نہیں کرتے تھے لیکن سلام كا نشه ايسا تقاكه حبكو حريه جا تا تقا أتر تا نه تها ، إن تام تختيون براكيشخف كوتبي و واسلام سے بردل نرکسکے - آخرمجبور موکر فیصلہ کیاکہ دنفوذ باستہ خود بانی اسلام کا قعِتد ایک کردین -توار کرے نگاسیدھے رسول اسٹدی طرف جلے کارکنان قطانے کہا ع امرآن ایرے کہ ما مے فواتیم

راہ مین اتفا قاً مینم بن عبداللہ طِل کُٹے اِسکے تیورد کھیکر بوجیا خیرہے ؟ بولے کہ محکم کا فیصل کرنے جا اہون ، اعفون نے کہا تیلے اپنے گھر کی خبرلوخود مقاری مین اور مبنوئی اسلام لا عیکے ہن افرر آبیٹے اور مہن کے ان پہنچے وہ قرآن ٹر ہر ہی تعین ، آبی آہٹ یا کوئی اور قرآن کے اور مہن کے اور مین اور قرآن کے اور مین ٹر جا کی تیمن اور قرآن کے اور مین ٹر جا کی تیمن سے بوجیا کہ یو کیا آواز کھی ؟

مبن نے کہا کچے ننیں۔ بولے کہ نبین مَین سن حیکا ہون کہتم د ونون مرتد ہوگئے ہو''۔ یہ کمکر سنونی سے وست وگربیان مو گئے اور حب انکی مبن محانے کوآمین توانکی مبی خبر لی بیان مک کُواکا ہ. ن بىولىا ن موگيا-اسى مالت مين أنكى زبان سے كلا كُوعَمراجو بَن اسْے كرولىكين اسلام<sup>،</sup> اً ب دل سے کل نبین سکتا 'اُن ا نفاظ نے حضرت عمرکے دل برایک خاص اثر کیا ۔ بہبر کمیلاٹ تحبّت کی نگا ہ سے دیکھا 'آنکے برن سے خون جاری تھا پرد کھیکرا وریمبی رقت ہوئی۔ فرا اگریم لوگ جورٹیھ رہے تھے محباکھیں کتنا ؤ- فاطمینے قرآن کے اجزارلاکرسائنے رکھدیے- آتھا کر وكمها تويه سورة متى سبقة يتلوما في السَّمَا في السَّمَا فِ وَالْأَرْضِ وَهُوَالْعَزِيرُ الْكُلِيمُ وَلَكُ لِك تفظيران كاول مرعوب مرقبا حاباتها بيان كر كرمباس مت يرميني الميتحا الميتو ورسمولة توب المتاري رام من كران من الله كالكالله والله والله كالتا عَمَا لَ عَمَا لَ مَنْ الله والله والله یہ وہ زما نہ تھا کہ رسول اللہ صلم ارقم کے مکان میں جو کو ہ صفا کی لمی میں واقع تھا ، پنا وگزین تھے ۔حفزت عمرے آ شا نُرمبارک پر پنچکر دشک دی ۔چونکہ شمشیر کمب گئے تھے ، اوراسِ ازہ وا قعہ سے کسی وطلاع نہ تھی، اس کئے صحابہ کو ترو دہمواہمین ھنرت امیر حمزہ نے کہاکہ ' اٹنے دو مخلصانہ ایا ہے توہیٹر، ورنہ اُسی کی ملوارسے سکاسترفلم کردیا جائیگا ، حضرت عمرنے اندر قدم رکھا تورسول النگرخود آگے بڑھے اوران وامن كرار فرما ياكيون عمر إكس ارا د است آيات ؟ نبوت كي يرعب ا وازنے انکوکیکیا دیا۔ نہایت خضوع کے سابھ عرصٰ کی کرایان لانے کے لئے'' نفنرت سبے ساختہ اللہ اکبر کیارا کھے اور سائقہی تمام صحابہ نے بل کراس ز<del>ور س</del>ے

التُداكبرُ فوه الأكه مكه كي تام بيارُ إن تُوبَخُ الحَيْنَ -

حفنرت عرکے ایمان لانے نے اسلام کی تاریخ مین نیا دور بیداکردیا ، اِسوقت مک اگر حیم مه - ۱۰ - ۱ دمی اسلام لاکھیے تھے عرب کے مشہور بہا در حفرت تمزوسیدانشہدار نے بھی اسلام

قبول کردیا تھا۔ تاہم سلمان اینے فرائفن مزہبی۔ علانیہ نین اداکر سکتے تھے ، اور کعبہ بین نماز پرمنا توابلان مامکن تھا۔ حصرت عمرکے اسلام کے ساتھ دفعۂ یہ طالت مدل گئی۔ انفون نے

علانیہ انیا اسلام ظا ہرکیا، کا فرون نے اول اول انیرٹری شدّت کی سکین وہ براز ابت قدمی سے مقابلہ کرتے رہے بیان کہ کوسلمانون کی جاعت کے ساتھ کعبہ ہیں جاکر نا زادا کی ابن

بندر المراب والمور المربي مسوركي ربابي إن الفاؤمين روايت كيا مخطسًا السكارة عُمَّرًا

قَاتَلَ فَرُيْبًا حَتَى عَنْ اللَّهُ عَبَاقَ وَصَلَّيْنَا مَعَ مُعِنْ عِبِ عَرْسِلام لاكْ تَوْوْسِ مِسْ رَكْ يمان ك

ا کیعبہ مین نماز ٹرجی اورانکے ساتھ ہم وگون نے بھی ٹرجی۔

حصرت عمرکے اسلام کا وا قورسند نبوی کے حصیتے سال مین واقع ہوا۔

، بجرت

ال ورسین، ایک مترت که الخضرت کے دعوام بنوت کو بے بروائی کی اسے دیجھتے رہے، لیکن اسلام کومس قدر شیع جوا جا آتھا انکی ہے بروائی ، غضہ اور ناراصنی سے برلتی جاتی تھی بیانتک کو جب ایک جاعت کئیر اسلام کے صلفے میں آگئے تو قولیش نے زوراور تو ت کے ساتھ اسلام کو مٹا دنیا جا استحدال کے بعد کفار مٹا دنیا جا استحدال کے بعد کفار

ك انابالانزون بلا ذرى وطبقات بن سعد واسابقابه وابن مساكرو كامل بن الاثيرة

و(فره جرم صد 'کنی کار برددی کار؟ معمود چا

> موت وکھ ساتھ من وگون سے ،بحر شکی

حزت وکا نیانگاه

برطرب والتو کھڑے ہوئے ا ورحبکو صب مسلمان پر قابو ملا اِسطیح شانا شروع کیا کواکراسلام کے جویش اور دازمنگی کا اثر نترما تواکی شخف می اسلام یژایت حدم ننین روسکتا تها <sup>،</sup> پیرمالت بایخ چەرىس كىرىمى اورىيزانداسىختى سے گذرا كراسكى قىفىيل ايك نىلايت وروانگيروا تاان ب-اِسی آنیا مین- مربیّهٔ منوّرہ کے ایک مغرزگروہ نے اسلام قبول کربیا تھا اِس کئے مخفرت نے حکم دیا کہ من اوگون کو کفار کے ستم سے نوات نیس ال سکتی وہ مرینہ کو ہورت کرما میں۔ ، سے بہلے ابرسلم عبداللہ بن اللہ عرصفرت بلال بودن ادرعار باسر نے ہجرت کی ، ، بدر حضرت عمر نے ببیل آدمیون کے سابقر مرینے کا قصد کیا <mark>صحیح نجاری میں ۲۰ کاعدد</mark> لورہے لیکن امون کی تفصیل منین-این مشام نے بع**ینون کے نا م**رکھے ہیں اوروہ ہو ہین - زیربن خطا ب۔ سعید مین زیر بن خطاب نیننس بن حدا فق<sup>ی</sup>ہی عمرو بن مُسراقه عبارتنگا بن سراقه- واقد بن عبدالنَّهُ تمتمي خولي بن إبي خولي- مالك بن إبي خولي- اياس بن كمير عال ن مکبیر- عامر بن کمبیر خالد بن کمبیر-ان مین سے زمد حصرت عمرے معالی سعید نہیتے مخینیس دا ما درا ورباتی دوست احباب تھے۔

مریز رمتی و معت چونکه کم گئی، مهاجرین، زیاده ترقبارین (جومر نیسے دُومین لی می مهاجرین، زیاده ترقباری کے مکان پر کار میں میں میں مہاجرین کر فاعی بن عبدالمنذرکے مکان پر کار میں میں میں انکے فرودگاه کا نام عوالی، ہی لکھا ہے معنزت عمر میں انکے فرودگاه کا نام عوالی، ہی لکھا ہے معنزت عمر کے بعداک ترصی ایت ہوئے میں نے دو جاب رسالت بناہ کے محدول اور اقتاب رسالت بناہ کے افق سے طابع ہوا۔

مریز ہینچکرسب سے پیلے انحضرت نے مهاجرین کے رہنے سہنے کا انتظام کیا۔انصا کوئلاکران مین اورمها جرتین مین برا دری قائم کی حسکا بیا ترمواکه حرمها جرحس انفهاری کا بها نُي بِنَ جانا مَهَا انضاري- اسكوا بني جائزاد الساب الباب انقدى تام چنرون من سنة أوها أدها بانت ديّا عقا- إس طرح تمام مهاجرين اورانصار تبيا بيُ بهائي بن سُّنَ - إس رشتہ کے قائم کرنے میں آنحفزت طرفین کے رتبہ او حثیت کا فرق مراتب بلحوظ رسکھتے تقے بینی حوُمها جرمب درجے کا ہوتا تھا اُسی رہنے کے انصاری کو اُسکا بھائی بناتے تھے جنا بخ<del>د حفزت عمر كوسكا ب</del>هائئ قرار دياً انخا ما <del>معتبان بن الك</del> تعاجز مبيلهُ بني سالم كے سر دار تھے اللہ "انفزت کے تشریب لانے پر مبی اکثر صحابہ نے قبل رہی میں قیام رکھا۔حضرت عمر بھی ہین قیم رہے لیکن می<sup>م</sup>مول کرلیا کہ ایک دن ناعذ دیکر الالترزم آنخصرت کے پاس ما سے اور دن دن عفر خدمتِ اقدس مین حاصر رہتے۔ ناغدے دن یہ بندونست کیا تھا کہ اُسکے برا درا سلامی، عتبان بن مالک انحفترت کی خدمت مین ما منرموتے ا ورجو کھی انخفنرت سے سُنتے حصرت عرسے ماکرر وایت کرتے، خیا یخہ نجا ری نے متعد د ابواب شلا ا ب بعلم إب النكاح وغيره مين ضمناً اس واقعه كاذكركا ہے-مینے مین پنچکراس بات کا وقت آیا که اسلام کے فرائفن دار کان محدود ا ومومتی کئے جامیُن کیونکہ کمی منظمین مبان کی حفافلت ہی سب سے بڑا فرمن تھا، یہی دحہمتی ک<sup>ھ</sup>ا کے دکھیرسیرہ بن شام- مانڈبن حجرنے مقدمۂ فتح الباری دصغرا ۳۰) مین متبان کے بجاے اوس بن خرل کا نام لکھا ہے اوراسی کی تعیم کی ہے ملی تغیب ہے کو وعلار موصوت نے اصابہ میں ابن سعد کے والے متبان بی کا نام لکھاہے ، اوراوس بن حولي كاجهان مال لكماهي، حفيزت عمركي اخوت كالحو ذكرمنين كما -

مه*ا برین اور* ایفیارمین اخوت

مفرت عرکم اسلامی معانی ا ذان کا طراقیہ معنزت ع کی را سے سکے موافق فاکم

روزه - زکوة - نازممه برنا عید- صدقهٔ فطر کوئی چینروجود مین منین ای تقی - نمازون می مجی ئیرا خ**صّارتها ک**ر مغرب کے سوا باقی نما زون مین صرف دُو دُوکوتین تغیین ، بهان ک*ک دُنا*ز کے اعلان کا طریقہ تھبی نہیں معین ہوا تھا جنانچہ سب سے پیلے انحضرت نے اسکا اُ تیفام ارنا جا ہا۔ ہیودیون ا درعیسا میون کے ہان نمازکے اعلان کے لئے بوق اورنا قوس کارواج تھا-ایس سئے تعلی بہتے ہیں راے دی-ابن شام نے روایت کی ہے کہ بیخود انخضرت کی وزیقی، مبرطال بیمسُلهٔ زیریحبت تقا اورکوئی راے قرانِنین اتی بقی ک<del>رحفرت قر</del>آنجلے اور ون نے کہاکہ ایک آ دمی اعلان کرنے کے لئے کیون نہ مقرر کیا جا ہے۔ رسول انٹر صلع نے اُسی وقت حصرت بلال کوا ڈا ان کامکمردیا۔ یہ بات لحاظ کے قابل ہے کہ اوان ، نماز کا دیباجیا وراسلام کا ایک بڑا شعارے ، حفیر<del>ہ</del> عرکے گئے اِس سے زیادہ کیا فخرکی اِت ہوکتی ہے کہ پیشعار علم اُنھی کی راے کے موافق

> سیا پیجری تا و فات رسول لیملعم ۱۹۲۳ء نووات و دگرهالات

سبب لیہ بری سے ، انحفزت کی وفات تک ، حفزت عمرکے واقعات اور حالات بقرقت سیرت نبوی کے اجزار ہیں۔ انخفرت کو جراڑا ئیان میٹی آئین ، غیروزمون سے جو معامرات عمل مین آئے ، وقیاً فوقیاً جوانتظامات جاری کئے گئے ، اشاعتِ اسلام کے لئے جوزر بریا

كم ميم بخارى كمّاب الاذان-

اختیار کیگئین، ان من سے ایک واقعہ بھی ایسائنین حج حفرت عمر کی شرکت کے بغیرا سخام یا یا موا۔ سکین شکل بہے کواگر تام وا قعات پوری تفصیل کے سائھ لکھے جامین توکا کا حصت سیرت نبوی سے بڑل جاتا ہے ، کیونکہ حضرت عرکے یہ کارنامے ، گوکتنے ہی خطیم اشان ہون *لیکن چونکہ وہ رسول متٰر کے سلسلۂ حا*لات سے داہتہ مین اس کئے حب علمبن رکئے <del>مِنگ</del>ے توتام دا تعات كاعنوان رسول الله كانام امي قراريائيكا اور حفرت عمرك كارنام ضمناً اڈکرمن ا مین گے۔اس لئے ہمنے مجبوراً پیطریقیہ اختیا رکیا کہ ہے وا قعات نہایت اختصار کےساتھ معیے جائین اوجن واقعات بن حفرت عمر کا خاص تعلق ہے انکوکسی قد تعفیر ہے لکھا جا ہے۔ ا مورت مین اگر <del>میجھنرت ع</del>مر*کے کا رنا ہے ن*ایا ن ہوکرنظر نہ ائینگے کیونکہ حب مک واقعہ کی و*ر*ا تصویرنه د کھائی جائے - اُسکی اصلی شان قائم نمین رہتی، اہم اِسکے سواا ورکو ئی تدبیز پڑتی اب مم نهایت اختصار کے سائقہ اُن وا قعات کو لکھتے ہیں۔ " انحفرت نے حب مینہ منورہ کو بحرت کی توقریش کوخیال مواکدا گرسلمانون کاجارہ میال نرکر دیا جائیگا تو د و زیاد و زور کیژ مائینگے - اس خیال سے انعون نے مرینہ برجلے کی ملیا راین مشر وع کین- تا ہم ہجرت کے دوسرے سال تک کوئی قابل ذکرمعر کہنیں بہوا، **میرن** اس تحدر موا کہ دُوتمین د نعہ قربیش میوٹ میوٹ کیو واکے ساتھ مرسنے کی طرف بڑھے لیکن آنحفرت نے خبر ما کرانکے روکنے کے لئے تھوڑی تھوڑی سی فوجین تھیجدیں ؛ وردہ وہین رُل گئے مربیت مین مدر کا واقعه مین آیا حربهایت مشهور مورکه ہے -اسکی اتبدایون ہوئی کا دسفیان ا جو قرنسن کا سردار تھا تجارت کا مال لیکر شا مسے واپس آر ؛ تھا را ہین بید غلط خبر مستکرا

فرده مرا

کوسلمان اسپر حلکرنا جاہتے ہیں۔ قریق کے پاس قاصد بھیجا اور ساتھ ہی تمام کو آمنڈا یا سوائٹہ ا صلعم پی خبر شکر تمین سو آ دمیون کے ساتھ مرینے سے روانہ ہوئے۔ عام مور فیبن کا بیان ہے کہ رسول الله صلعم کا مرینہ سے نخلنا صرف قافلہ کے بوشنے کی غرص سے تھا لیکن یوامر محض غلط ہے قرآن تجدید سرسے زیادہ کوئی قطعی شہا دت منبین ہو کئی اس میں حبان اس واقعہ کا ذکر ہے یوافا فوہن۔

ان أيتون سے صاف أبت مواہے كر-

۱) حب انخفرت نے مینہ سے نکلنا چا ہا توسلما نون کا ایک گروہ کچکیا تا تھا او برعتا تھا ادموت کے منفومین جانا ہے۔

رم مریف سے بھلنے کے وقت کا فرون کے دوگردہ تھے ایک غیر آذابیاللہ والہ ہوئی ہیں البہ والہ تھو کہ ایساللہ واللہ والل

ایکے علاوہ ابوسفیان کے قافلے مین کل بہ آدمی تھے اورانحضرت مریثے سے متن ستوبہادرون کے ساتھ نکلے تھے، تین سوا دمی ، ہم آ دمیون کے مقالے کوکسی طرح موت کے مندمین ما نامنین خیال کرسکتے تھے۔اس لئے اگر انحفیزت قافلے کے دیشنے کے لئے کاتے ا تو خدا مرگز قرأن مجبدین یه نرفرا اکرمسلمان انکے مقابے کوموت کے نمخه مین جانا مجھتے تھے۔ بہرمال ۸ ۔ رمضان سستہ بچری کوانخصرت ۳۱۳- آدمیون کے ساتھ جنین سے ۹ ممالن اور ہاتی الضاریمتے ، مرینہ منور و سے روا نہ ہوئے ۔ قریش کے سابقہ ہ و کی مبیت تھی جن مین بڑے بٹے مشہور بہا درشر کی مقے۔ <u>مقام مررمین جو مربنی منورہ سے قرساً</u> و ننرل ے۔معرکہ مواا ورکفارکوشکست فاش ہوئی۔مسلمانون مین سے مہرا۔ آدمی شہید ہوسے جن مین ۶ مهاجرا و ۸- الضار بحقه قربین کی طرف ۵۰ مقتول اوراسی قدر گرفتار موسخ تفتولین مین ابوحهل، عتبه بن رمبعیه، شیسه ، اور پیپ برے رؤسار مکه تھے ، اورانکے قتل ہونے سے قربیش کا زور توٹ گیا۔ حصنرت عمرا گرحیہ اس معرکہ میں راہے و تدہیر، ما نبازی ویامردی، کے لحاظہ میرقع پر رسول منڈرکے وست دبارزو رہے۔ سیکن <sup>ا</sup>نکی شرکت کی محسوس حضوصتیات یہ ہن۔ دا) قرمیش کے تمام قبائل اس مورک مین آئے لیکن بنوعدی مینی حفزت عمر کے فیلیمین سے ایک تنتفس بھی شرک خبگ نئین ہوا ۔ اور یہ امرحبان یک قیاس کیا جا سکتا ہے ك مرى برين ولوكر بغيمن قريش بطنًا لانغرصنه وناس الا بنى عدى ب كعيب

الميزج منهم ترج ل كاح ك صفي ١٣٠٠-

سرت حزت تمركے رعب دواب كا الزيخا-

دم) حفزت عرکے سائر آنکے قبلی اور ملفارکے ۱۰ ادمی شرکیہ جنگ تھے ، جنگ

ية نام بين- زير عبدالتذين سراقه عمروبن سراقة واقدين عبدالله خولي بن ابي خولي -

مالك بن ابي خولي - عامر بن رسجة - عامر بن بكير- عاقل بن كبير- فالدبن كبيرَ ايس بن كبيرَ

(معلى)سب سے بیلے جرشخص اس مورکھین شہید ہوا وہ مجع حصرت عمر کا غلام تھا۔

زمم) عامی بن بشام بن مغیره جو تومیش کا ایک مزز سردارا و **رحفرت عرکا** ما مون مقا

حصزت عركے إت ماراكيا - يا إت حضرت عمري خصوصيات مين شماري كئي ہے

را سلام کے معاملات میں قرابت اور محبت کا اثر ۔ اُن رکھبی غالب سنیں اُسکتا تعانیا نیا

یہ وا تعدا سکی میلی مثال ہے۔

اِس معرکے مین مخالف کی فوج مین سے جولوگ زنرہ گزفتا پہوئے آگی تعدا دکم دمیق

عملی اور انین سے اکثر قربیق کے برٹے بہے معزز سردار تھے متااً حصرت عباس عِقیل

(حصرت علی کے عبائی) ابوالعاص بن الزمیع- ولید بن الولید- ان سردار دن کا ذلت

کے سابھ گزفتار ہوکرا فا ایک عبرت خیزسان تھا جس نے سلما نون کے ول ریمبی اثر

کیا بیان ک*ک ک*رسول امٹد کی زوجۂ مبارکہ سودہ کی نظرحب ائن پر بڑی توہے خت یار

بول عبين كه الحَطينهُ بايلِ كَبُرُ هَلاَّهُ مُنَهُ كُكِيلًا مِنَّا تَهِ عِيهِ وَرَاكِ مِنْ فَرَعُون كَ مُنْ أرومين كَانَا

اس بنایر یجب بیدا ہوئی کہ ان لوگون کے ساتھ کیا سلوک کیا جا ہے۔ رسول افتار

المله ابن بتام معنيَ ١٩٥٠ عله ابن بتام معنيَ ٥٠٩ و مستياب

ید بونطے معالمے بن حصرت عم کی را ہے

سے تمام صحابہ سے راے ہی، اورلوگون نے مختلف راہین دیں ، حضرت ابو کم نے کہا کہ یہ اپنے ہی تھائی بندمین، اس سے ان سے فدیر لیکر صور ویا جاسے حضرت عرف انسال کیا ا ورکہا اسلام کے معاشے مین رشتہ و قرابت کو دخل نہیں ان سب کوفتل کردنیاجا ہے اوراس طرح کہم میں سے شخص دینے عزیز کو آیتال کردے ،علی <u>عقیل ،</u> کی گردن بن تمزه -عباس كاسرارًا دين، اورفلات عض جرميرا غرزيه اسكا كام مين تمام كردوك-انخفرت نے تنان رحمت کے اقتفاسے حضرت ابو بکر کی راے بیندگی اور فدیے ے کرچھوڑ دیا۔ اسپر بدائیت نازل ہوئی۔ مَأْكُاكَ لَيْنِي إِنْ تَبْكُونَ لَهُ السَرَى حَتَى إِسْ بِيْرِكَ لِيهِ يِزِيانِين رُاكَ إِس نِيرِي بِونِيَكِ يَخْدِر فِي الْمُرْمِي الْحُرِ الْحُرِي مُؤْرِنِي مُؤْرِنِي مُؤْرِنِي مُؤَرِنِي مُؤَرِنِي مُؤَرِنِي مُؤرِن مِر رکی نتج نے اگر چیز قرمین کے زور کو گھٹا یا لیکن اس سے اور نئی مشکلات کا ایک سلسله شروع موار مرینه منوره اور اسکے اطرات پرایک منت سے میودیون نے قبضه کررکھاتھا غضرت جب مینہ مین تستریعن لائے توملکی انتظامات کے سلسا میں سے پیلا کام ہ کیا کرسو دیون سے سعا ہرہ کیا کرسلما نون کے برخلات وشمن کومرد نہ دینگے اور کوئی مثمن م بنه پرجڙھ اُنگا توسلما نون کی مرد کرننگئائسکن حب انحضرت بررسے نتھا۔ ہوئے تو اُنکوور ایدا ہواکہ سلمان زور کم<sup>و</sup>کر، اُنگے برا رہے حریف نربن جا مین، چنا پیز خو**ر جیمیر شر**وع کی ا وکہا و وسن والع فن حرب سے الشناسقے بم سے كام ترا توم دكھا ديتے كورنا الكوكتيمن ا سله طبری مفحد ۵ مراسد

نوبت بیان کت پنجی کر رسوال الله رسے جرمعا ہرہ کیا تھا، تورڈ الا- انحفزت نے شوال سے مسلم سے مسلم سے میں اور بالآخر وہ گرفتار ہو کر مریز سے جلا وطن کر دیے گئے بہلا کی تاریخ میں بیوویوں سے لڑا ئیوں کا جوا کی تصل بلسلہ نظرا آ ہے اسکی ابتدا راہی سے موئی تھی۔ موئی تھی۔

تربین بررمین کما کراتهام کے جوش مین ہے اب تھے۔ ابوسفیان نے عمد کر ایا تھا کہ جب کک بررکا اتھا م نہ لوگاغنسل کک نکر ذکا خیا بی فروجی سیام مین قراس استار کے ساتھ مرینہ کے قریب بینجار حوکے سے در سلما بون کو کمیڑا اورا کوئٹل شخر سوارون کے ساتھ مرینہ کے قریب بینجار حوکے سے در سلما بون کو کمیڑا اورا کوئٹل کردیا۔ رسول اینڈ کو خبر موئی تو آپ نے تعاقب کیا لیکن ابوسفیان کل گیا تھا۔ ابر ستم کردیا۔ رسول اینڈ کو خبر موئی تو آپ نے تعاقب کیا لیکن ابوسفیان کل گیا تھا۔ ابر ستم کے جیو سے جو سے واقعات اور بھی مین آتے رہے بیان کمک کوشوال سے بیٹر میں مین استان کمک کوشوال سے بیٹر میں مین استان کمک کوشوال سے بیٹر میں میں استان کمک کوشوال سے بیٹر میں میں استان کمک کوشوال سے بیٹر میں میں استان کمک کوشوال سے بیٹر میں استان کمک کوشوال سے بیٹر میں کو بیٹر کیا تھا۔ استان کمک کوشوال سے بیٹر میں کوشوال سے بیٹر میں کوشوال سے بیٹر میں کوشوال سے بیٹر میں کہ کوشوال سے بیٹر میں میں کوشوال سے بیٹر میں میں کوشوال سے بیٹر میں کوشوال سے بیٹر میں میٹر کوشوال سے بیٹر میں کوشوال سے بیٹر میں کوشوال سے بیٹر میں کوشوال سے بیٹر کیا گیا تھا کہ کوشوال سے بیٹر کوشوال سے بیٹر میں کوشوال سے بیٹر میں میں کوشوال سے بیٹر کرنے کا کوشوال سے بیٹر کوشوال سے بیٹر کی کوشوال سے بیٹر کے بیٹر کی کیا گیا کہ کوشوال سے بیٹر کی کوشوال سے بیٹر کوشوال سے بیٹر کوشوال سے بیٹر کوشوال سے بیٹر کی کوشوال سے بیٹر کی کوشوال سے بیٹر کے بیٹر کے بیٹر کوشوال سے بیٹر کی کوشوال سے بیٹر کوشوال

غ روسونت

غردهٔ احد<sup>ا</sup> مسته

را ور • • ، سوزر ہ بوش کتے میمیز کے افسرخالدین الولیدا ورمیسرہ کے عکرمہ بن ابی ممل محقے- (اُسوتت کک یہ دونون صاحب اسلام نبیرن لائے تقے اوھ کُلُن ﴿ ارمی تنتے جن میں سکوزرہ پوش او رمرت دوسوسوارتھے - مدینے سے قریباً تمن میل براُ جا ایک بیارہے۔اُسکے وامن میں **دونون نومی**ن صف از اربین <sup>ت</sup>ا انخصرت سے عبداللہ جب و · ٥ تيراندازون كے سائقہ فوج كے عقب پر تعين كيا كه أو هرسے كفّار حله نەكرنے يا مئن-ے۔ نتوال مفتہ کے دن لڑائی شروع ہوئی۔ سب سے پہلے زبیرنے اپنی رکا ب کی فوج کولیکے حله کها ۱ و زویش کے میمنه کوشکست دی بیمه عام خبگ شروع مبوئی - حضرت حمزه ، حضرت علی ، ابو د جانہ دشمن کی فوج میں گھس گئے اور آ کی ضین کٹ دین۔ لیکن فتح کے بعد لو گفتمیت پر ٹوٹ یرے ۔ تیرندازور ، نے بیجھاکہ اب معرکہ ہو حیکا اس خیا اسسے وہ بھی ہوئینے مین مصرو<sup>ن</sup> موے - تیراندازون کا ہٹنا تھا کہ خالد نے دنعتہ عقب سے بڑے رنور شورکے ساتھ حما کیا۔ لمان جذکہ ہتیا رڈال کرغینمت مین مصروت ہوچکے تھے ۔اِس ناگیا نی زد کونہ رُوک سکے۔ کفار سے رسول سی میں میں میں اور تیرون کی دوجیاری سیان مک کرا کیے دندان مبارک شید ہوئے۔ بیشانی بِزرخم آیا، اور رخارون مین مغفر*ی گڑیان جُومِ گئین-ابیکے سائن*ہ آپ ایگٹے ہے مِن رُرِيك اورلوگون كى نظرت حييك كفي اسى رجى من يفل ريكيا كرسول الله واركيك -ا سِ خبرنے مسلما بزن کے ہتعلال کواور شزلزل کردیا اور چوجهان تھاوم ن سلر ہے موکر گیا۔ اِس امرمن اختلاف ہے کا نحفیت کے ساتھ اخیروقت تک کِس قدر بھانیا ہت قدم ہے بلم بن حضرت انس سے روایت ہے کا معرمین انخضرت کے ساتھ صرف سائت انصا

اُور دُو ویشی بینی سعدا در طلی رنگئے تھے۔ نبائی او ربیقی مین بندھیے منقول ہے گاگیا رہ نھا اور طلی کے سوا اور کوئی انحضرت کے ساتھ نئین رہا تھا۔ محد بن سعد نے ہما۔ اُد میون کا نام ایسا ہے ۔ اور طلی کے سوا اور کوئی انحضرت کے ساتھ نئین رہا تھا۔ محد بن سعد نقح الباری مین اِن اینو ایسا ہے ، اِسی طرح اور مجمی مختلف رواتیین مین ۔ طافظ بن مجر نے فتح الباری مین اِن ایسی میں اِس طرح تطبیق دی ہے کہ کوگ حب اور حراو در حرفیل گئے تو کا فرون نے دفعیۃ عقب میں اور مسلمان سراسی مہوکر حرجہان مقت اومین روگیا۔ بھر حب طرح موقع ملیا گیا، اوگ انتخاف کے بیاس بینچے گئے؛

تهم روایتون رِنظردا لنے سے معلوم ہو ہاہے کہ جب انحفیزت کی شہادت کی خبرشہوزوئی تو کچیرلوگ توامیسے سراسمیہ ہوئے کہ انخون نے مرینے سے اِ دھر د مہنین لیا کھیرلوگ عان م میل کرامتے رہے کہ رسول کٹارکے بعد دینیا ہیکا ہے۔ معضون نے مایوس ہوکرسپرڈال دی کواب اطنے سے کیا فائزہ ہے حضرت عمراس تعیرے گروہ میں تھے۔علا مُزطبری نے مِندُ مُقَعل حسكي رُوا وَبن حميدُ سلم بحربن اسحاق، قاسم بن عبدا زحمن بن را فع من -روبيت كى ہے كاس موقع رجب انس بن نفرنے حضرت عمرا ورطلحا ورا ورجیٰ دمها جرمین اورانصار کو دیکھا کہا پوس ہوکر بیٹھ گئے ہیں، تو بوجھا کر بیٹے کیا کرتے ہو، اِن بوگون نے کہاکہوائیڈ نے توشہا دت پائی- انس بوبے کہ رسول مٹرکے بعد زندہ رکرکیا کروگے ؟ تم بھی اُنہی کم طرح لڑکر مرحا وُ" میک کماکر کقار رجا ہے ورہوئے اور شہادت حاصل کی۔ قامنی ابویوسف صنا نے حز د حضرت عمر کی زبانی نقل کیا ہے کہ انس بن نقر میرے یاس سے گذرے اور مجست مل یه پورتیفیل نتح الاری مطبوعهٔ معرطبیم تم صفی ۱۲۰۶ مین سے - ملک طبری صفی ۱۲۰۰ موجها كورسول متدركما كذرى من نے كماكرمراخيال مے كوآب شهيد موے -انس ك کہا رسوّل شدستید ہوئے تو موئے خدا تو زنرہ ہے " یہ کمکرتلوار میان سے کمینے لی اور استقدر ارشے کہ شہا دت حاصل کی<sup>ہ</sup>۔ ابن شام مین ہے کہ انس نے اس وا بعد مین تنزرخم کھائے۔

طبری کی روایت مین به امرلیا طاکے قابل ہے کہ حضرت عمر کے ساتھیون من طلحہ کا نام بھی ہے اور پیسلم ہے کاسِ مورکہ مین ائن سے زیادہ کوئی تابت قدم نہین رہا تھا۔ \ ببرحال بدامرتام روانيون سے ثابت ہے کسخت بریمی کی حالت مین بھی حصرت عمرا ميدان خبگ سے نبین ہٹے اورجب الخضرت کا زندہ ہونامعلوم ہواتو فور اُحدمتِ اقدین کے

یہنچے طبری اورسیرت بن مشام میں ہے۔

وَلَفُضِ خُوالنَسْعِبِ مع عِلَيُّ بِنَ لِي طَالِبِ لَي يَنِي اورَّبِ ورُّون رُورِيُرِميا رِك دره يررِّ عِنْ يُسَوِّت عَا بخے -

ابويكرين البن فحافه وعمر بنُ الخطاب و الما تدمنرت على معزت بويرَ معنرت عمر ، علوين عبيرته طلحة بن عبيد الله والنبير أب لعوام ارسيد بن الوام- اور مارث بن ص والحارب بنهمة

علاً مه بلا ذرى صرف ايك مورّخ من حغون نع انساب الاشراف مين حضرت عمر ك مال مین لکھا ہے۔

ك كتاب اخزاج صفي ٢٥٠

الله الله المستقبي المستقبل ا

مَّهُ بِلاَوْرِی نِے ایک اور روایت نقل کی ہے حبکا یہ خلاصہ کی تحضرت عرب اپنی است کے زبانے میں اور روایت نقل کی ہے حبکا یہ خلاصہ کی تحضرت عرب کی سنبت میں اور میں دورینے مقرر کیے توایک شخص کے روزینے کی سنبت میں نے کہا کہ ان سے زبادہ سخت آبکے فرز نرعبداللہ جمین تحصرت عربے فرایا بنین، میں تابت قدم رہا تھا اور عبداللہ کا باب رمینی خود حصرت عمر میں ما تھا اور عبداللہ کا باب رمینی خود حصرت عمر میں میں رہا تھا ا

سیکن یہ روایت قطع نظرابیکے کد دراتی غلط ہے کیونکہ موکر جہاد سے بھاگنا ایک ایسانگ مبکوکوئی شخص علائیہ تسلیم نہیں کرسکتا تھا- اصول روایت کے لیا طاسے بھی ہم اسیر بنیار بنین کرسکتے۔ علّامۂ موصوف نے جن رّوا ہی سنرسے یہ روایت بیان کی ہے بنین

س بن عبدالتّدالباكسات او عنین بن اسحاق بین اوریه دونون محبول الحال بین -کے علاوہ اور تمام روایتین اِسکے خلاف مین -

> اس تجت کے بعدیم بیراصل واقعہ کی طرف اُتھے ہیں۔ ------

لدا کی دسته وزج کے سائر آنخفزت کی طرف بڑھے، رسول الٹرائس وقت تینز صحابے انتر بپاڑ پر تشریف رکھتے تھے۔ خالد کو آنا دیکھ کر فرایا کہ بغدایا! یہ لوگ بیان کٹ آنے پائن پیرت عمر نے چند مهاجرین اور انصار کے سائمۃ آگے بڑھکر حملے کیا اورائن لوگؤنکو مٹا دیا ہے

ه سیرت بن شام صفی ۲۶ وطری صفی ۱۱۸۱

ابوسفیان سالار قربیق دره کے قریب بیونجگر تا را کداس گروه مین مخترین یا نتین ہے۔ انخصرت نے اشارہ کیا کر کی جواب نہ دے ، ابوسعنیان نے پیر حصرت ابو مگر وعمر کا نا مزر ليكركهاكه بيرد ونون إس محمع مين بن يانتين ؟ اورحب كسى نے يحوجواب نه ديا تو بولا كه صرورن يه لوگ مارے گئے " حصرت عرصے نه راگیا ميجا رکر کها مواً و دخمن خدا اہم سب زنرہ ہیں ا ابوسفنان نے کہا اعل مُسُلِّل معنی رواے نہ بل داکی سُت کا نام تھا) بلندمو، رسول متّد ف حصرت عرس فرا يا حواب د والله اعلى وَاجَلُّ ومينى مدالمن ورررك -ابس سال حفنرت عمر کوییشون حاصل ہوا کانکی صاحبرادی حفنرت حفصہ پروالیند کے عقد میں امین حفصہ کا بحاح جا ہمیت میں خنیس بن خدا فرکے ساتھ ہوا تھا بُحنیس کے اتقال کے بعد <del>حصزت عمر نے حصزت ابو کمرسے خواہش کی کرحفصہ</del> کواینے کاح مین ٹامین المفون نے کھ حواب نہ دیا۔ میں حصرت عمان سے درخو ست کی۔ وہ مبی حیب رہے ۔ کیونکہ اِن د و نون صاحبون کومعلوم ہو حیکا تھا کہ خو د خبا ب رسول اسٹیصلیم حصنر<del>ت حف</del>صہ ہے اللح كزا جا ہتے ہیں جنا بخہ شعبان ستا میں انحفرت نے حفصہ سے کاح کیا۔ سبہ یئے مین <u>بنونصنیر کا</u> واقعہ میٹی آیا۔ اور یم لکھ آئے ہین کہ مدینہ رمنور ہ میں ہو د کے جِ قبائل آباد تھے انحضرت نے اُن سے صُلح کا معا ہرہ کرایا تھا۔ اِئیر ،سے <del>بنوقینقاع</del> نے بررکے بعد نقفن عہد کیا اوراس جرم مین مرینے سے کال دیے گئے۔ دوسر اقبیلہ بنونفيركاتها يالوگ بمي اسلام كے سخت دخمن تقے ۔ ستاھ ميں انحفزت ايب معاملے مين ك سرت مشام صفئ ۲۰۵ وطبري صفي ۱۲۱۵-

ھزتہ طعم عقد ہول منہ کے سائمتہ

واقوينونير ساس هي ۱۲۶۴

متعانت کے بیے حصرت عمرا و <u>رحفرت ابو کم ک</u>وساتھ سے کرانکے پاس تشریف ہے گئے۔ اِن ہوگون نے ایک شخف کو حسکا نا م عمروین حمایش تھا آمادہ کیا کہ ٹھیت *پر چڑھا آنخفزت کے* سرية يقركي سِل گرادے وہ حقيت يرحرُ و حكا تھا كەلخصرت كوخبر ہوگئی۔ آپ اُٹھا جائے گئے وركهلا بعيجا كهتم لوگ مدينے سے حل حاؤ ۔ اُنھون نے انخار كياا ورمقابلے كى تياريان لين، انخضرت نے اُن يرفا بويا كرحابا وطن كرديا، چنا يخه اِن مين سے ك<sub>ي</sub>شام كو <u>جلے گئے</u>؛ يُحْيِيمِينِ عِاكراً ادِمُوسِئِ اوروبان حكومت قائم كرالي -خيبروالون مين سلام بن إبي كحقيق - كنا نية بن الزميع ا ورُحيتي بن أخطب مرب برُ مزرسردار تھے۔ یہ لوگ خیبرمن پنجام طین ہوئے تو انخصرت سے انتقام لینا جا ہا۔ مکہ غظمهٔ مین *جاگر قرمیق کورغیب دی ،* قبائ*ل عرب کا د وره کیا ۱۰ ورتام م*لک مین ایک آگ نگادی۔ چندروزمین دسٰ ہزاراً دمی <del>قربیش</del> کے علم پنیجے حمیع ہوگئے اور شوال ہے شدمین ابوسفیان کی سیسالاری مین اس سلاب نے مرسنہ کارنے کیا انحفزت نے مریخ سے ا مزعل کرسلع کے آگے ایک خندق تیا رکرائی۔عرب مین خندق کار واج نرتھا اس کیے لقار کو اسکی کمیر تدبیرین نه آئی مجبوراً محا صرہ کرکے ہرطرت فوجبین بھیلا دین ا در رسدو عیرہ بندکردی- ایک مسینے تک محاصرہ رہائے اکبری تھی خندق اُٹرکر جلکرتے تھے۔ آتھ خرت سے اس غومن سے خندت کے اِدھر کھیے کئے فاصلے برا کا برصحاً بہکومعین کردیا تھا کہ دشن اُوھ سے آنے یائے ۔ایک حصتے رحصنرت عرمعین سفے بنائے میان اُنکے نام کی ایسے ال طرى مغرد ١٥م١- الله يدين على الدوالك ما را الديارات

جُگ خندق یا حزاب سٹ میرم

تج بھی موجود ہے۔ ایک ون کا فرون نے حلے کا ارا دہ کیا <del>توحفرت عمر نے زبر ک</del>ے ساتھ ا کے بر حکر رو کا اور انکی جاعت درہم ورہم کردی۔ ایک اور دن کا فرون کے مقابلے مین اس قدران کومصروف رہنا پڑا کوعصر کی نا زقصنا ہوتے ہوتے رہ گئی۔ خیائخہ آنحفزت کے پاس ارومن کیا کہ آج کا فرون نے نماز برھنے تک کاموقع نہ دیا۔ رسول اللہ نے فرمایا مین نصے بھی اب کے عصر کی نما زمنین مڑھی۔ اس لڑائی مین عروین عبدود عرب کامشہور مہا درجو آیسوسوارون کے برارسمھا جاتا تھا حفرت علی کی ہات سے اراکیا۔ اِسکے ارب جانے کے بعد اُدھر تو قریش مین كمير بدي بيدا مونى ١٠ و هرنعيم بن معدد نع جواسلام لا يكي عقد اوركا فرون كوانِك سلام کی خبرند تھی جو از توریسے قربیش اور میو دمین بھوٹ او اوی مختصر ہے کہ گفر کا ابر ساہ جورینی کے افت برمیا گیا تھا روز بروز مخستا گیا اور حیندروز کے بعد طلع الکل صاف ہوگیا-مراج ہمیں انحفزت نے صحابہ کے سائھ خانہ کعبہ کی زیارت کا قصد کیا اوراس وعن واندميميه السي كرفريين كولرائ كاشبه نهو حكرديا كدكوني تعض ستبار باندهكر نهطي ووالحليف دمينة چفه میل برایک مقام ہے) سنچکر حضرت عمر کوخیال ہوا کہ اس طرح حلیا مصلحت منین ' متار نگوا ہے۔ حب کم معلمہ دُ ومنزل رمگیا تو کمے سے بشرین سفیان نے اگر پہ خبردی کم تام قریش نے عدد رایا ہے کوسلمانون کو مگرمین قدم زرکھنے دیگے، رسول الترنے الله يه دا قد شاه ولي لله ما منه الله الخارين المعاب الكن من ف كسى تناجمين اللي سنرنين إلى -

لآجا باكه اكابرصحابهين كسي كوسفارت كے ملوز تيجبين كەمكولا نامقصود منيين خياي خصرت عمركو س خدمت پر ما مور کرنا میا با استون سے عرمن کی کر تربیق کو مجرمت سخت عداوت ہے ر ایس خاندان مین و بان کو بی شخص میرا ما می موجو د منین عثمان کے غزیروا قارب وہین ہُن اس سے انکومبینا مناسب ہوگا <sup>ت</sup>انحضرت نے اس راے کوبیند فرما یا اور <del>حضرت عم</del>ان ں گرہیجیا۔ فریش نے حضرت عثمان کوروک رکھا اورجب کئی دن گذرگئے تو ہیشہورہوگیا روه شهید کردیے گئے - رسول اللّٰہ نے یمننک<del>ر صحابہ سے</del> جوتعداد میں خوراہ سو تھے جہا دیم بعیت لی اور چونکہ عبت ایک درخت کے جنیجے لی گئی تقی یہ واقعہ مبتی الشجرة کے نام سے مشهورم واقرآن مجيد كي اس أيت من لقَارَ صَى الله عَنِ المؤمِنِينَ الْجِبُمَا يِعُونِكُ خَتَ الننجيرَة وسي واقعه كي طرف اشاره م اوراً ت كي مناسبت سے ٱسكو مبية ار منوان هي كتة بن-حفنرت عرف ببیت سے بیلے اڑائی کی طیاری شروع کردی تھی صحیح نجاری (غزوۃ صرمیبہ<sub>ی)</sub> مین ہے کہ میبہمین حضرت عربے اینے صاحبزادے عبدا م<sup>لد</sup> کو بھیا کہ نسالان ا نضاری سے گھوٹر ا ماگٹ لامیئن ۔ عبدا متٰدین عمر با بیزیکلے تو دیکھا کہ انحفیرت ہوگو ن سے جا دیرمعیت سے رہے ہین ، انمون نے بھی جا کرمعیت کی ، حضرت عمرے یاس والسسے تو دکھا کہ دہتیا رسج رہے ہیں عبدا ملائے اسے بعیت کا واقعہ بیان کیا۔حضرت عمرای وقت اُسمُ اورجار المخضرت كے بات ربعت كى-قرمین کوامرار تماکرسول الله- کمه مین مرکز داخل نبین بوسکتے. بڑے ردومرا<sup>ک</sup>ے

ُ بعدانِ شرائط رمعا بره مواكداس د فعمسلمان أنطے واپس جا مي*ن* اگلےسال مرّ لبكر. تین دن سے زما دونه محترین-معا برومین بیشرط بھی دخل بھی کردنل رہس مک ڑا تئ 🖟 موقوف رہے اوراس آننا رمین اگر قریش کا کوئی آ دمی رسول انٹر کے ہان حلاجا ہے تورسول التندائسكوقرميش كے پاس والين بھيجدين ليكن سلمالون مين سے اگر کوئتی فر آفریسنی کے بات آ جامے توانکوا ختیار ہو گا کہ اُسکوانیے <sup>با</sup>یس روک بین-اخیر شرط چونکہ نظا مرکا فرون کے حن مین زیادہ مفید بھی -حضرت عمر کونما میت اضطراب مواہما ہدہ ابھی لکھا ہنین جا چکا تھا کہ وہ حضرت ابو بکرکے یا س پینچے اور کہا کہ اس طرح دب اکراپی صلح کی جا ہے ، انھون نے سمجھا یا کہ رسول استہ حو کھیے کرتے ہین اسی میں ملحت ہوگی ، لیکن حصرت عمر کوسکیس نہیں ہوئی جو درسول اللہ رکے یا س گئے اوراسطر گفتگو کی يا رسول النند! كياآب رسول خدانتين بين ؟ رسول بنير بنيك مون-حضرت عمر- کیا جارے دہتمن مشرک منین ہیں ؟ رسول التد- سرورمن-تصنرت عمر تھے، تم اپنے مذمب کو کیون دلیل کرین ۔ رسول بته صلع میں خدا کا بنم پر مون اور خدا کے حکمے خلاف ننین کرتا۔ حصنرت عمركي بيركفتكموا ورخصوصاا نداز گفتگوا گرجه خلاف ادب مقاحيا يخرىبدمين انکوسخت ندامت ہوئی ا وراسکے کفارہ کے بیےروزے رکھے،نقلین ٹریمن،خیرات دی غلام اُراد کئے۔ انم سوال وجواب کی اس بنا اس کمتر بیتی کدسول اللہ = کون سے افغال- انسانی حیثیت سے افغال- انسانی حیثیت سے تعلق رکھتے ہیں اور کون سے رسالت کے منصب سے خیائے اور کی فصل محیث کیا ہے اور کی منصب کے دور سے حصتے میں ائیگی۔

خوض معاہدہ صلح لکھا گیا اور اُسپر رہے بڑے اکا برصحابہ کے جس میں حضرت عمر جمی داخل سے د شخط ثبت موے معاہدہ کے بعد انحفزت نے مرنیہ منورہ کا قصد کیا ، را ہ میں سورہ فتح نازل ہوئی ۔ انحفزت نے حصرت عمر کو بلاکر فرما یا کہ محبہ برائج ایسی سورہ ازل موئی ہے جم محبکو دنیا کی تا م چیزوں سے زیادہ محبوب ہے ، ید کدا ب نے یہ تین پڑھیں اِنّا فَتَحَمَّا لَاکَ فَتَحَا الْکَ فَتَحَا مُبِدِینَا اِنْ فَتَحَمَّا لَاکَ فَتَحَا الْکَ فَتَعَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَعَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَعَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَعَا الْکَ فَتَحَا الْکَ فَتَعَا الْکَ الْکُ الْکِ الْکُ الْکُ فَتَحَا الْکَ فَتَحَا الْکَ الْکَ الْکُ الْکُ الْکُ الْکُ کُونِ الْکُ الْکُونِ الْکُونِ

مختمین نے کلما ہے کہ اسوقت کہ مہلمان اور کفار الگ الگ ہتے سے اسلام کے سائل صلح ہوجا نے سے اسلام کے سائل صلح ہوجا نے سے اسلام کے سائل اور خیا لات روز برد زرایدہ بھیلتے گئے۔ اسکا یا اثر ہوا کو دو برس کے اندراندرجس کثرت سے لوگ سلام لائے مابرس ما قبل کی وسیع مرت میں نہیں لائے تھے۔ جس بنا پر رسول لٹلہ منے ملکے کی تقی اورا تبدا کر حصنرت عمر کی ختم میں نہا کی، وہ ہمی صلحت بھی اورا تبدا کر حصنرت عمر کی ختم میں نہا کی، وہ ہمی صلحت بھی اورا ہی بنا پر ضلا کے سورۂ فتح میں ایس صلح کو فتح کے لفظ سے تعبیر کیا۔

اس زمانے ک کا فرہ عورتون کاعقد نجاح مین رکھنا جائز تھا۔لیکن جب بیآ تیت

ک طبری صفی ۱۶ م ۱۵ م کے صبیح بخاری واقعه صدیبیا و معلق فتح الباری مطبوعهٔ مصرطله، صفی که

مهم سو وكرهدسيد-

صبت علا الال بوئي وكالنشيكل بعضم الكواجب تويدا مرمنوع بوكيا-رس نيا يرحضرتع اینی دونون موبون کوحوکا فروهمین طلاق دیدی-ابنینسے ایک کا نام قریبه آور د وس کا اُم کلٹوم سنت حرول تھا۔اِن د ونون کے طلاق دینے کے بعد، حصرت عمر کے حمیلا سے جوْاںت میں ابی الافلح کی ہیٹی تقین کلاح کیا ،حصرت عرکے زرند عاصم اپنی کے بطر<sup>ی ت</sup>ھے تھے اسی سال رسول دلته صلع نے سلاطین اوروا بیان کمک کنے ام دعوت اسلام کے خطر وکھیے۔ عبده مین خیبر کامشهو رمورکرمیش آیا۔ اور تم رٹیھ آئے ہو کر قبیلۂ نبونصیر کے ہوگا جرمہ نئیمنو رہسے کا لے گئے تھے جیسرمین جاکرا با دموٹ ' اپنی مین سے سلام و کنا نتہ فیم نے سے پیمین قریش کو جا کر کھڑ کا یا اورانکو مدینہ پرجرٌ ھالا ئے۔اس مربیرمین اگر حیائن کو نا کامی ہونی کیکن اتقام کے خیال سے وہ بازنہ آئے اوراً سکی تدبیرین کرتے رہتے تھے، خیالحیا ته مین قبیلهٔ بنی سعدت انکی اعانت پرآماد گی ظاهر کی <del>آنخفترت</del> کو پیخبرعلوم موئی تو <u>حصنرت علی کو بھی ا۔ بنوسعد معباگ گئے اور یا نشوا و نرغنیمیت میں اِت اُٹے۔ بیم قبیلیۂ غلفان کو</u> الاه وكما خائخ جب الخفزت خيبركي طرف برم توسب سي بيك اسى فبيلان سترراه ہونا جا ہا- اِن حالات کے لحاف*اسے صرور تھا کہ ہو دیون کا زور تو مرّد یا جا ہے و زیسلما*ن ائن کے خطرے سے طمئن نیر ، ہوسکتے تھے۔ غرص سٹ چیمیں انحفزت نے جورونٹولیدل اور دوسٹوسواروں کے سا

رخ کیا۔ خیبرین ہودیون نے بڑے بڑے معنبو ما قلعے بنائے تھے مثلاً حصر نہا عج له طبری دا قات سسته مسل مواجب کدننی و زرقانی در سرتیم علی الی بی سود-

رصعب- وطبيح اورسلاكم يرسب فلع حلدهله فتح بهو تئئے نىكىن وطبيح وسلا لم حن ريوب نہور بہا در **مرحب فا** بعض تھا اُسانی سے فتح نہیں ہوسکتے تھتے <sup>،</sup> انحضرت نے حصرت بو کمر کوسب سالار بنا کر بھیجا نسکین و ہ اکام آئے۔ بھر حصرت عمرا مور موٹ - وہ برابردُ ودن جا جا کررٹے سکن دونون دن اکا م رہے ، انخفرت نے یہ دکھیکر فرما ما کوکٹ میں ایسے شخص بوعَلَم دوگا جوحلهٔ و رببوگا-اگلے دن تمام اکا رصِحا به عَلَم بنوی کی اسیدمین بڑے سروسا ما ہے تهيا سَبْج سَبْح كرائك - ان مين حص**رت ع**ربجي سقة ا ورائكا حذد ساين سه كرند مين كمبري اس موقع کے سواعکم رواری اورا فنسری کی آرزونتین کی" لیکن قضا دَفدرنے **یڈفخز ،حضرت علی** کے یئے اُٹھارکھا تھا۔خیانچہ انحضرت نے کسی کی طرف تو قبنیین کی اور حضرت علی کو ُ ہلا اُ عَلَمُ اُنا عنایت کیا۔ مرحب حضرت علی کے بات سے اراگیا اورائیکے قتل پراس مرکہ کامبھا ترکیا خیببر کی زمین انحضرت نے مجا ہرون کو تعتبیر کردی جنا بخہ ایٹ کرا حبکا نام تمغ تھا حصرت عمرکے حِصتے مین آیا ، حصرت عربے اُسکوخدا کی اِ مین و فقت کردیا جیائی صحیح ب الوقف مين يه تفته يعفيل مُركورت - اوراسلام كي اريخ مين به بهلا و فقت تفاج عمل مين آيا-اہی سال انحفیرت نے حضرت عمرکو . ۱۰ - آ دسیون کے ساتہ قبیلۂ ہوازن کے مقابیے کو بھیجا اُن لوگون نے حضرت عمر کی آمدشنی تو بھاگ تکے اور کوئی معرکہ میش نہیں آیا۔ سبب يثمين مكه فتح موا- اسكى ابتدا يون مونى كه صدميه مين وصلح قرارياني تقى أسمن یک مشرط پیمبی مقی که قبائل وب مین حوج اسے قربیش کا ساتھ دے اور حوجاہے اسلام کے

سائد امن مین اسنے - چنا بخہ قبیار خواعہ نے انحفرت کا اور فاندان بنو کہتے قریش کا سائد دیا۔ اِن دونون قبیلون مین مرت سے اُن بُن متی اور بہت سے معرکے ہوئیے کا سائد دیا۔ اِن دونون قبیلون مین مرتبہ کی صلح دقوع میں آئی اور شرا نظا معاہدہ کی روسے وونون قبیلے لڑائی سے دست بردار ہو گئے۔ لیکن چندی روز کے بعد بنو کہنے نفقن عمر کیا اور قریش نے انکی اعاش کی میان تک کی خواعہ نے حرم مین جا کرنیاہ لی تب جی اُکونیاہ خواعہ نے اُکی اعاش کی میان تک کی خواعہ نے میں مافنہ ہوکی تو بیش بندی مافنہ موئی تو بیش بندی سے میں خواجہ نے کہ خواجہ نے دیا۔ وہ اُٹھکر حصن آبو کم اور میں مونی تو بیش بندی صلح کی درخواست کی آبخفرت نے کہ موجواب نہ دیا۔ وہ اُٹھکر حصن آب ہو کہا ور می جواب عربے کہ وہ بالکل آب اس موالے کو طلح کو اور تیجے۔ حصنہ ت عمر نے اس محنی سے جواب دیا کہ وہ بالکل ناارید موگیا۔

ان المنظرت نے مکہ کی تیار این منر وع کین اور رمضان سٹ ہو ہیں انہ انہ اور خرک ساتھ مدینہ سے بھے۔مقام مرافقران بین زول اجلال ہوا تو حفرت عباس انخصرت کے خیر رہوارہ ورکہ کی طرف جلے اور حسے ابوسغیان آر ہا تھا حفزت عباس نے اس سے کھا۔ آئی میں تھے کو رسول الٹرسے امن دلادون ورز آج تیری خیر نمیین ابو منبان اس سے کھا۔ آئی میں تھی ورلادون ورز آج تیری خیر نمیین ابو منبان اس سے کھا۔ آئی میں تعمیل اور حفرت عباس کے ساتھ ہولیا۔ راہ مین حفرت عمرا سانا ہوا ابوسفیا کو ساتھ دکھیکر حفرت عباس اس سکی سفارش کے بیے جارہے ہیں گو ساتھ دکھیکر حفرت عباس اسکی سفارش کے بیدا بس بڑی تیزی سے بڑھے ، اور آنحفزت کی فدمت مین حاصر ہوکر کھاکہ مرتون کے بعد اس

دشمن اسلام پر قا بوملاہے اجازت دیجیے کہ سکی گردن مادون۔ حصرت عباس نے ا ا عمر! ابوسفیان اگر عبد منافت کے فا ندان سے نہوّا اور ہمارے قبیاد کا اُدمی ہوّا ' ا ہوئتم اِس طرح اُسکی جا ن کئے خوا ہان نہوتے ۔ <del>حصرت عمرے فرا ا</del>یک<sup>رر</sup> عندا کی متم میرا اب خطّاب اسلام لآ ا توممبكواتن خوشي نهوتي حبتني ائس دقت مودئ متى حب آب اسلام لاكے یقے ،، ۔ انحضرت نے حضرت عباس کی سفارین قبول کی ا ورابوسینان کوامن دیا۔ " انحفزت برےجاہ دحلال ہے مگہ من دامل ہوئے ا در در کعبہ پر کھوے ہو کر منابت فقیح ولمبيغ خطبه برها حوبعبينة ما ريخون من ننقول ہے، پير حضرت عمر کوسا تو سيار تقام صفار ہوگوں سے بعیت کینے کے لیے تشریف فرا ہوے، لوگ جوق جوق آنے سکتے اور عبت کرنے جاتے تھے حضرت غرائحفزت سے قریب لیکن کسی قدر نیچے میٹے تھے ۔جب عور تون کی ہاری آئی'ا چونگه انخفزت بیگا نه عورت کے ہائھ کوئٹ نہیں کرنے تھے، حضرت عسب کوارشاد فرا یا کم انسے مبت و، خیا نج تمام عور تون نے انھیں کے اور آنحفزت سے مبت کی۔ اسی سال ہوازن کی اڑائی ہیٹ آئی حوغزوہ خنیں کے نام سے مشہورہے۔ ہوا زن عوب کا مشہورا ورمغرز قبیلہ تھا <sup>،</sup> یہ لوگ ابتدارے اسلام کی ترقی کو رقا ہت گیٰ گاہ سے دیکھتے آتے تھے انخفزت حب فتح کدیکے ارادہ سے مرنیہ منورہ سے أتكلے توان بوگون كوگمان ہوا كەم يەحلەكزامقصود ہے جنا ئخواسى وقت خبگ كى تيا لان سروع کردین- اورجب میعلوم ہوا کا تخصرت مگہنچے-تومگہ پرحملہ کرنے کے لیے بڑے نئہا ہ ك منين ، علات كي يعيد ايك وادى والمري منظرت نوديل ميل ب

نۇورە ئۇدۇرىيىن

سے روانہ ہوکر حنین میں درے والے' انخصرت نے بیر خرشنی توبارہ ہزار کی معیت کے ساتھ رہ منظمہت ، وانہ مہوسے ،حنین مین دونون نوجین صعت آرا ہومئن یمسلما نون نے سیلے حلے میں موازن کو بھگا دیا ، لیکر جب غنیمت کے بوشنے میں مصروف ہوے توہواز اس <sup>سے</sup> *علد کیا اوراس قدرتیرربیائے کوسلمانون بین ہل علی مڑگنی اور بارہ منزاراً ومیون میں سے* مدودے چند کے سوا باقی سب بھاگ تکلے، اس معرکہ میں جوصحابۃ ابت قدم رہے، نا'ام خسوسیت کے ساتھ لیا گیا ہے ،اور <sub>ا</sub>منین ح**صرت عمر**یجی شامل ہیں، جنا بخیہ للآمرُ طبری نے صاف تصریح کی ہے۔ محمرین اسحاق نے جرامام نجاری کے تیبزج حدث مین داخل ہین ا ورمغازی دسیرکے امام اسے جاتے مین کتاب المغازی میں لکھاہے و با پیغامبر حنیدتن از مُهاجرین وانعها روابل مبت با زمانده بو دندیشل آبو کم رعلی وعرف عماس عوري-

ڑائی کی صورت بگوکر بھیر بن گئی تعینی سلما یون کو فتع طال ہوئی اور ہوازن کے خد ہزار آدمی گرفتار ہوئے۔

میں ہے جہ میں یہ خبر شہور ہوئی کہ تھیر ہوم عوب برحلہ کی تیاریان کرد ہاہے انحفرت فی سے استان کی استان کی استان کی استان کی استان کی اور عسرت کا رہا نہ تھا کے یہ سنگر صحابہ کو تنایدی کا حکم دیا ۱۱ ورجو نکہ یہ نمایت نگی اور عسرت کا رہا نہ تھا کہ آئے مبری سل میچ سلم فروہ منین - سل ابن اسحالی میں نے مبین دیمی لیکن اسکا کہ نمایت قدیم ترجمہ زباب فارسی میں میری نفرے گزراہے اور عبارت منقول اسی سے افراہے ، یہ ترجم براللہ میں سعد بین نہی کے حکمے کیا گیا تھ اور اسکا ایک نمایت قدیم نسخ ادا اور عام بین نوجود ہے ۔ اس نائی کے حکمے کیا گیا تھ اور اسکا ایک نمایت قدیم نسخ ادا اور عام بین نوجود ہے ۔ ا

اس سے بوگون کو زرومال سے اعانت کی ترعنیب دلائی خیا بخداکٹر صحابہ نے بڑی رفتین بدیا ہے اکثر صحابہ نے بڑی رفتین بدین بین بحصارت عمر نے اس وا ساب مین سے اچھا لاکر آن حصنرت کی خدست میں مین کیا " غرض اسلحہ وررسد کا سامان مرینا ہوگیا تو المحضرت مدینیہ سے روانہ ہوئے۔ لیکن مقام تبوک مین بنجام علوم ہوا کہ وہ خبر علط محتی اس سیے چندر وزقیام فرما کرو ایس آئے۔

اسی سال انحفنرت نے ازواج مطبرات سے نارامن ہوکرائن سے علیٰ گی اختیا رکی ا و حیزنکه لوگو کی آیکے طرز عمل سے میرخیال میدا ہوا تھا کہ آپ نے تمام ارواج ا کوطلاق دیدی اس بے تمام کونهایت سرنج و افسوس بھا تا ہم کوئی شخفو آنخفزت کی خدمت مین کچھ کہنے سننے کی حرائت منین کرسکتا تھا ۔حضرت عمر نے ما عرفدمت ہونا چا ہا لیکن بابر بابراذن مانگنے پر بھی احازت نہ بلی۔ آخر <u>جھنرت عمر ن</u>ے یُگار کر ورابن سے کہا کہ منابیہ رسول استرکو برگیا ن ہے کہمین حفصہ (حضرت عمر کی میٹی آ وررسول متٰد کی زوحۂ مطهرہ) کی سفارش کے بیے آیا ہون، خدا کی *شم اگر رسول متّد کل*م ین تومین *جا کرحفصہ کی گرد*ن ماردو<sup>ہے،</sup> آنخصرت شعبے فوراً کیالیا ، <del>حصرت عر</del>نے عِن کی کہ کیا آپ نے ازواج کوطلاق دی؟ آپ نے فرمایا کہنین "حضرت عرب کہا۔ تمام مسلمان مسجد مين سوگوا زميني مهين ، آپ اجازت دين تو انکوير مزو هُسا اوُن ، اين قعه مع حضرت عرك تقرب كا اندازه موسكتاب، خيائي حضرت ام سلمن انجين واقعات <u>۵</u> ترفرى دا بردا دودسن بردا تعد فضائل بركير يحت برخ قول بديكن غرده كي معين مين يهي - على ميخ سلم باب العلاق -

کے سلسلے میں ایک مقوم پر کما کو تا اتم ہر جیز میں وحیل ہوگئے ہو بیان مک کو اب ازول ج کے معاملات میں بھی وخل دینا ماہتے ہوئے

بہنا ہمین تمام اطراف عرب سے نمایت کثرت سے سفار مین ایکن اور ہزارون بیر در سب کی جات ہیں اور

لا کھون آ دمی اسلام کے طلقے مین آئے۔

اسی سال انخفترت شے ج کے بیے گزمنظمہ کا قصد کیا اور یہ جج آپ کا اخیر جج تھا۔ سیب لام اوم فرمین انخفرت نے رومیون کے مقالبے کے لیے سارین زیروا ہو کیا اور

تهام اکا برمِحا برُومکم دیا که آنکے ساتھ جامین، لوگ تیار موصلے سقے کہ اخیر سفریین آنحفنرت بیار موصلے اور بیتی نزلمتوی روگئی۔

يارمونځ اورينځوزملتوی ره کئ-سنن<del>----</del>

المخضرت بروایت مشهور ۱۹ دن بهاری به به بیقی نے بستر میمی ۱۹ دن کی تعداد بیان کی سے سلیمان می تعداد بیان کی سے سلیمان می مالت کمیان تو کی سے سلیمان می مالت کمیان تو کی سے سلیمان می مالت کمیان تو کمی ناز وافرائی کمی ناز وافرائی سے بیان کمی ناز وافرائی سے بیان کمی کوئیات کے دن نماز وجرکے وقت طبیعیت اس قدر بھال می کدا ب وروازے کا در وازے کا در اور بردہ اُکھاکر لوگوں کونماز میں متحد و کمیما تو نمایت محفوظ ہوسے اور

تبشم فراي-

. قرطاس کا

بماری کالرامشهوروا قعه قرطاس کا دا قعه ب حبکی تعمیل به ب کرآب نے دفات سے تین روز سیلے علم ورد دات طلب کیا اور فرما یا کرمین متمارے سیے اسی چیز کھوڑ گا

سله نخ اباری جلده معندُ ۹۰

ائم آیذه گراه ننوگی، اسپر حفرت عرف بوگون کی طرف منی طب ہو کرکھا گرانخفرت کو در دکی شدّت ہے اور ہمارے سے قرآن کافی ہے ،، حا حنرین مین سے بعضوان نے کما کہ رسول اسٹر ہمکی باتین کررہے ہین دنعوذ بابلتہ (روایت بین هجر کا لفظ ہے جبکے معنی نزیان کے ہین ہ

یہ واقعہ بطام ترجب اگیزہے۔ ایک مقد طن کہ سکتا ہے کاس سے زادہ اور کاگشاخی ایر سے زادہ اور کاگشاخی ایر سکتی ہوگی کہ جناب رسول اور تحصلی بہتر مرک پر ہیں اور آمت کے ورد وعمواری کے کیا فاسے فراتے ہیں ''کہ لاؤ مین اگی ہوایت نامہ لکھدوں جر مکو گمرای سے مفوظ رُسکتے '' یہ ظا ہر ہے کہ گمرای سے بچانے کے لیے جو ہدایت ہوگی دہ سب بوگی وہ سب بوگی اور ایس لیے اسین ہو و خطاکا احتمال نہیں ہوسکتا۔ مرح و مات ہوگی و در ایس لیے اسین ہو و خطاکا احتمال نہیں ہوسکتا۔

وج داسکے حفرت عمر بے بروائی ظامر کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ کچھ صرورت ہنیں آ وقرآن کا نی ہے ،، طرّہ بیک تعبل رواتی نین ہے کر حصرت عمر ہی نے آنحفرت سکے میں ارشا دکو ہٰدیان سے تعبیر کیا تھا۔ (نعوز بالٹر)۔

یا عترامن ایک مرت سے جلاآ تا ہے اور سلمانوں کے دُوختلف گردہ سے میرا آتا ہے اور سلمانوں کے دُوختلف گردہ سے میرا میر طربی طبیعاً زما ئیان کی میں۔ لیکن جونکہ اس عبث میں غیر تعلق ابنین تعرباً گئیں را صول درایت سے کسی نے کام نہیں لیا اس لیے مسل مسئلہ امنفصل رہااؤ میں عجیب بریا رحبتین بیدا مرکئین بھات کم کہ یہ سکہ چھیڑا گیا کہ بین ہے ہوائی ا جہ کیونکہ نہای اشانی عوامِن میں ہے اور آنخفرت عوار منِ اسنانی سے بری نہ ہے۔

یمان درصل یا مرغورطلب ہے کر حبورا قد حس طریقے سے روایتونین منقول ہے اس سے کہ راتنا دروسكا م يانين اس عن كيلي سبك واتعات ويل كوميش نفر كمنا ما مي-(۱) انخفرت کم ومبش ۱۰ دن یک بمایریس - 🛫 (r) کا غذوقا طلب کرنے کا وا تعدیمبرات کے دن کا ہے جیسا کہ سے خاری وسلم مین تبھریج ندکورہے اور چزکہ انحفزت نے دو خنبہ کے دن اتقال فرما یا اس کیے آر وا قویکے بعد انخفرت کارون کک زندہ رہے۔ رمه) اس تمام مرت باري من الخصرت كي نسبت اوركوني واقعاحلالح إل كاكسى روايت من كبين مركورتبين-رمم) ایس وا قدیک وقت کثرت سے صحابہ موجود سقے لیا السبت سے طریقوین سے مردی ہے دخیائے مرت صیح نجاری مین ہے) با اینمہ بخرعبداللہ بن عباس کے اورکسی سے اِس واقع ہے ' ب حرت سمى منقول نىين-(۵) عبدالله بن عباس کی عمرائس وقت صرف ۱۳۰ - ۱۸۷ - برس کی مقی-رہ) سب سے بڑھکر میرکھیں وقت کا یہ وا قعہہے اُس موقع پرعبدا لٹدیج باس

(۶) سب سے بڑھکر ہی کہ جس وقت کا یہ وا قعہ ہے اُس موقع برعبدالتّدبع آس خود موجود نہ تھے اور برعلوم نیبن کہ میہ وا قعد اُکفون نے کس سے مشالیہ ملھ غاریں کی وہ دید موریہ ناکہ اسے ذار عدورت اے کھونت عددات و جا ہی اس جا قوم و موریضے اسے

مله بخاری إب لآن بدام بن جومد بن ذكوب أست بنا برمادم به اب كاحذت عبد القدين هباس اس واقد من موجود تقريب اليديد ن مريخ بن ك به اورود كال قعدية ابت كياب كرده موجود زيق - وكليو فع البارى إب كما تباهلم-

رہ تام روا بیون میں مزکورہے کرجب <u>انخفیرت</u> نے کا غذ قلم مانگا تولوگون نے کہا رسول التدميمي موني بايتن كرسيم بهن "-اب سب سے پیلے یہ امرلیا فاکے قابل ہے کہ حب اورکوئی واقعہ ما قرینہ انخفنرت سکے چىلال حواس كاكىيىن كىسى روايت مىن ندكورنىيىن، تومىرت اس قدر كەن<u>ىے سے كەرت</u>ىلار دا الله وكون كونديان كاخيال كيونكر بدا هوسكتا تعاع فرض كربوكه ابنياست نريان سزرد ۔ پسکتا ہے لیکن اسکے یہ توعنی نبین کہ وہ معمولی بات بھی کہیں تو نہریات مجب*ی جا سئے*۔ ب بغیر کا وفات کے قریب میکنا کہ ' تعلم دوات لاؤمئن اسی چنر لکھدون کرتم آیندہ ر و منهو ، اسمین نمر ماین کی کیا بات ہے ؟۔ یہ روایت اگر خواہ مخواہ مجیم مجمعی جائے تب بھی ل قدر مبرها الصلیم کرنا ہو **گاک** را وی نے روایت مین وہ وا قعات چھوڑ دیے ہیں جب لون کو بیخیال بیدا مواکه مخضرت موسق مین منین هین اور مهیوشی کی مالت مین فلم دو<sup>ت</sup> ا فرارہے ہیں۔ بس ایسی روایت سے جس مین کدراوی نے واقعہ کی نمایت صردری کے علامۂ ترمبی نے یہ اویل کی ہے اوراسیرا کونا زہے کہ لوگون نے یہ لفظ انا راور ستعیاب کے طور ریکها تھا میسی اِگُرائخفرت کے مکم کی تعییل کرنی م**یا ہیں** مدانخوا ستہ انخفرت کا قوال منر این توننین کا بس بر بحا فوند کیا جا و سے گا ویل لگتی بولی ہے۔ لیکن بخاری وسلم کی معین روایتون مین الیسے صاحت الفائد ہم جنین ا<sub>س</sub>س ما ویل کا حمال نین ششراً يُوجِي (وُووفعه) إِ اتَّ مَصُولُ الله صَلَى الله عَلَيْهِ وَسَكُوبِ حَجُرُ رَبِي سَلَى اللهِ عَلَيْهِ المنان مصيفهون افرین کی به زویز که سول مشراکه ما اسین حانتے تھے اسلیتے ایکا یه فرما کود میں انکھ دون، ہر این کا قرشہ تھا و مورد ما منین کر ملینے کے معنی محدوات نے میں آتے مین اور برمجاز عمو اُشائع اور زوائع ہے ما

مسك طرىمىفى ۱۳۰ -۱۸۰

عزمن آنحفزت آس وا قد کے بعد کیاردن تک زندہ رہے اوراس آنامین دقا اور من تا کہ مالت اس قدر فرقا ہمت سی ہرائیں اور وسیتین فرا بین، عین دفات کے دن آبی مالت اس قدر سنبعل گئی تھی کہ لوگون کر بالکا صحت کا گمان ہوگیا اور صفرت ابو بر آبی خیال سے ہینے مکان کو حور مرنیہ منو رہے و فات کے محال کو حور مرنیہ منو رہے و فات کے وقت کے موجود رہے و فات سے معام دو بیر کے تو معام میں انتقال فرا یا۔ سیت بند کود و بیر دھلنے پر مدفون ہوے ۔ جا تا معام مردایت ہے اسلام کو آبی و فات سے جو صدمہ ہوا اسکا اندازہ کون کرسکتا ہے ؟ عام روایت ہے اسلام کو آبی و فات سے جو صدمہ ہوا اسکا اندازہ کون کرسکتا ہے ؟ عام روایت ہے۔

یه واقعه بغلام ترعب سے خالی نهین که حب آنحفرت نے اتبقال فرمایا تو فوراً خلافت کی نزاع برمیرا ہوگئی اوراس بات کابھی انتظار نرکیا گیا کہ بہلے رسول التیصلیم کی تجفیز کوفین سے بڑنت حاصل کرلی جا ہے ، کیسکے قیاس مین آسکتا ہے کہ رسول اللہ انتھال فرما مین اورجن لوگوں کو انکے عشق ومحبت کا وعوی ہودہ اُن کو ہے گور وکھن جوٹر کرسطے جا بین، اوراس بند دستین معروف ہون کرمند حکومت اورون کے قبضے مین نراق جا سے۔

ستحب برتعب یہ کے کریفل اُن لوگون سے رصنت ابو کروعمی سرز دہوا جواسانِ اسلام کے مہروا ہ تسلیم کیے جاتے ہیں اِس فعل کی اگواری اُس وقت اور زیادہ نایا ن ہوجاتی ہے جب یہ دکھیا جا آ ہے کہ جن لوگون کو اُن حصرت سے فطری تعلق تھا بینی حضرت علی و فازان بنی اِسْمُ اُن برِفطرتی تعلق کا بورا اثر ہوا اوراس وجبسے اُن کو انحضرت سے ور دو عمرا و رجمنے و تکفین سے ان باتون کی طرف متوجہ ہونے کی ذصت نہ کمی۔

ہم اسکوتسایر کرتے ہیں کرکتب مدرت وسیرے بطا ہراسی فتم کا خیال بیدا ہوتا ہے کی فقیزی اسکان سے کے بیچ ہے کہ حضرت عمر اردا ہو کمرد غیرہ انخفرت کی تحبیز دکھنیں میپورکر سفی نہا مولا کی اسلام ہوئی کے بیٹر دکھنیں اسفار سفی کو گارائی کو سطیع گئے ، یہ میں بیچ ہے کہ انتھون نے سفی مقدون رہے کہ گو با انیروئی حادثہ بیش ہی نہیں آیا تھا۔ بیج کی اور اس طرح ان کوشوں میں مصروف رہے کہ گو با انیروئی حادثہ بیش می نہیں آیا تھا۔ بیج کہ انتھوں نے ابنی خلافت کو نہ صرف انفسار ملکہ بنو باستم اور حضرت علی سے بھی بزور سیج ہے کہ انتھوں نے ابنی خلافت کو نہ صرف انفسار ملکہ بنو باستم اور حضرت علی سے بھی بزور سے منوانا جا با گو بنو باشتم نے اسانی سے آئی خلافت تسلیم نہیں کی۔ لیکن اس بحث میں غورطلب الموانی میں من وہ یہ بن۔

(۱) کیا فلانت کا سوال، حفرت عمر دغیرہ نے مجھٹراتھا۔ (۲) کیا بدلوگ خودا بنی خواہ ش سے سقیفہ بنی ساعدہ میں گئے تھے۔ (۳) کیا حفرت علی اور بنو ہاشم خلانت کی فارسے بالکل فارغ تھے۔ (۳) ایسی حالت میں جو کچھ حضرت عمر وغیرہ نے کیا، وہ کڑا جا ہئے تھا یا منین۔

و'دہبلی عبّون کی نسبت ہم نها مت مستند کتا ب، مسند ابو معلی کی عمبا رت نقل کرتے ہیں حب سے واقعہ کی مینیت بخوبی سمجھ میں ہکتی ہے۔

مِنِما بَخِنُ فِي مِنْرَلِ رَسُولِ الله صَلِى الله صَلِى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَى الله عَلَ عَلَى وَسِلُوا ذَاحِلِ نِيادِي مِن وَراء الحِيلِ مِن نَصِّحَ عَقَدَ كَهُ وَنِهَ وَيِرِكَ يَعِيبُ اللهِ أَوْمِتُ

ك دكميونتم الباري ملد، صغيرُ ٢٠٠٠

فعال له قل حدث احر فان أله نصل البني الفاريقيغ بن العَمْ موسة بن اجتمعُوا في سقيفة بني ساعدة فادركوا سي لي مبرئيمُ يكرأن ل خروا سانه بررانفار

أن اخر جرالي ما أبون الحنطاب فقلت اتوازدي كراين اغلاب! ومنت عم ورايا مرأور المات عنی فات منك منساغبل بعنی من نے كها د مار سو، م روك انفزت به زرت باهر بي ولا الله صلى الله علب وسلو من شغول من - أف كما أيد ما وتدميل إيه ھوان بجد نظاهل کیون فدہ حرب ایک ایسی بت ارسین جس سے را ای تورا ا الفلك البربكر انطلق - الرقتين ف الوكرت كما رُمير-

س سے مل ہر ہوگا کہ نہ حضرت عمر وغیرہ نے ، ملانت کی عبث کو حمیمیرا تھا نہ وہ اپنی خوشی سے سقیفہ نی ساعدہ کومانا ماہتے تھے۔

تمیسری مبت کی کیفیت ہے کہ اس و قعت جاعت اسلامی مین گروہون میں بھیم كى ما سكتى متى بنوَّا شمرس مين معنرت على نتامل تقے۔مثاہرین خبکے رمیِّس وا فسسر حغنرت الوئرد نمرتم والفيارخيك تيخ القبيله عبارة ومحقية انتمنون مين سے أيك مروه مبن خلافت کے خیال سے خالی نہ تھا۔ انصار نے تو علانیہ اینا ارا دہ افھارکردیا تھا۔ بنو استم کے خیالات ذیل کی روایت سے معلوم ہونگے۔

ا انحفرت کی وفات کے دن حفرت علی مکان سے با ہزیکے اوگون نے اُن سے یو حیا ا کر سول انٹیرکا مزاج کییاہے۔ چونگر انحفزت کی ظاہری حالت بالکا سنجل گئی تھی۔ حفیت على نے كما خدا كے فغنل سے آپ اچھے ہوگئے ، حضرت عباس نے انجا ا تھ كرو كركما كر خدا

تشم تم تین دن کے بعد غلامی کروگے ، مین انکھون سے دکھیدرہا ہون کدرسول استعقاریہ اِس مرصن مین وفات یابین گے ،کیونکه محبکواسکا تجربہ ہے کہ خاندان عبد مطلب کا جہرہ موت کے قریب کس طرح متغیر ہوجا آئے او جلو، رسول التاسے یو حمد لین کرآ یا کے تعبد بینصب دخلانت کسکو عاصل موگا ۱۰۱گریم اسِکے سخق مین تورسول امت*دمارے کیے قیت* ز ا دیگے ،، حصرت علی سے کہا مین نہ رہیمی<sup>و گا</sup> کیونکہ اگر ہو چھینے پر آنحصرت سے انخار کر دیا تو بھڑ میڈ اكونى اسيرنسين رسائلي،-

اس روایت سے حصرت عباس کا خیال توصا ف معلوم ہوتا ہے۔حضرت علی کو تحصر ای وفات کا <sub>ا</sub>سوقت کم بقین نه تھا ا<sub>ی</sub>س سے اُنفون نے کوئ*ی تحریک کرن*ا مناسنہیں بھو ا سِکے علاوہ انکوایے اتخاب کیے جانے پر بھروسنتھا۔

" انحفرت کی و فات کے بعد حضرت فاطمیکے گھرمین ایک محمیع ہواجس مین تام منو انتماد نکے آنباع شرکی تھے اور حفرت علی انکے میٹیروستھے سعیع نجارٹی میں حضرت عمری زبانی

كانتمن خيرنا جبن توفي الله نبيه ان الانضا الماس سردشتيه وبمبض في الله نبير والما الانفالياتوا ضا اعن وخالف عناعلى والنهار ومربعهما اورعلى دزبروران كسائقون ني يخالفت كي اورماين

خالفوتا واجتمعوا باسره وفي سفيفة مبى النة قاطبة مارى فالفت ك اور تعيفني ساعره من ميم ميك الوكمركے إس جمع بوسے-واجتمع المهاجر تالى الي كمك

م العلم عن الماري الماري من الماري - مل هم بخاري كتاب الحدود اب رجم المبلي-

تا تقریر - حفرت عرف ایک ببت برسے مجمع عام مین کی تقی جبیین سیرو و ق کها بودون استی ایس سیے اس بیان بات کا گما ان نمین بوسکتا که انھون نے کوئی امر خلاف واقع کها بهو - وزیر کا انکو و بین لوسکتے - امام مالک کی روایت مین برواقعه اورصا من بوگیا ہے ،اسکیے بانفاذا بن وائد الذیب و الله کی روایت مین برواقعه اورصا من بوگیا ہے ،اسکیے بانفاذا بن وائد الذیب و الله کا ماری و مرتب و الله کا ماری و مرتب و الله کا میں میں کا کہ میں میں کا کہ میں میں کا کہ میں میں کا کہ میں ہوئے۔

فی بیت فاطمة بنت دسول الله از برارے کا میں میں انگل برکر جمی ہوئے۔

کا ریخ طبری مین ہے<u>۔</u>

وتخلف على والندبير واخترط ادر مفرت على د زبيرت على كانتيارى ادر وسم النرب بيرسيفه و قال ١٧ اعتمد المحنى ني تواريان كيني لى ادر كما كو متبك على كه التيجيبية بيابع عَلى الله المحاسبة ال

اِن تمام رواتیون سے صاف یہ تا بج کلتے ہین کو-

(۱) انخفرت کے وفات کے ساتھ ہی خلافت کے باب مین میں گروہ ہوگئے ،انغیار مہاجری ا بنو ہاست م

رمی معاجرین حفزت ابوبکرکے ، اور بنویا شتم حفرت علی کے ساتھ متھے۔

رس حبطرج حفزت عمروغیرہ انخفزت کو محبور کرسقیغہ کو بلے گئے تقے، حفزت علی تھی انخفزت کے یا س سے چلے اٹنے تھے اور حفزت فاطمہ کے گھرمن نبز ہائتم کا محبع ہواتھا۔

تقیفه مین حفزت علی کا نه ما نا اس دحبت نه تقا که ده انخفزت کے غم والم مین مصرو<sup>ن</sup>

مل فع البارى مترح مدت ذكور مل اريخ طرى صفى ١٩٢٠ -

تنف ورأنكوا يسے يُردردموتم يرخلانت كاخيال نبيناً سكا تھا لمِكہ اسكى وجبه يمقى كه سقيفه مین مها مرین وا ن**غیا رخم بع تقے اور ا**ن دونون گروہ مین سے کوئی حضرت ملی کے دعو*ے* کی نا ئید نه کرتا کیونکه مهاجرین - حفزت ا بو کمرکومنیواتسیرات بھے اورانضارکے رمئیں صدین عباد ہ تھے۔ ' اخير بحبث يهب كه حوكميه موا وه بحيا تقا يا بجا ؟ اسكو مترخص جوذرا نمي اصول مرّن ست واقفیت رکھا ہو آسانی سمجہ ساتا ہے۔ آنخفرت نے جس وقت دفات فرائی مرینی منورہ منافعتون سے تعراموا بڑا تھا جرمزت سے اس بات کے متبطر تھے کہ رسول اسٹہ کا سا یا ٹھر حا تواسلام کوم**ایال کردین- اس نازک دقت مین آیا بیصرو**ری تعا که بوگ جزع و فرع اورگری*ه و دانی* مین مصروت رمین یا یه که فوراً خلافت کا خطام کرنیا میاے اورایک تعلیمانت قائم ہوما انصارت این طرف سے خلانت کی بجت جیٹر کر حالت کوا ور ازک کردیا کو تو ہوتی جو انعباركوا سقدر حقيرتنمقير نمتح كدخبك مرزين حب انعبا أنكح مقالمج كؤنك توعتبه نے إنحفز لوخاطب كرك كما كرمحر! بم المبنون سے نبین اسکتے ،كسى طرح انفيار كے آگے متر لمر تر نہیں رکتے نے قرایش پرکیا موقوت ہے، تمام وب کو تعیاری منابعت ہے انکار ہوّا ۔ بینا نخہ **حصنرت ابو مکرنے سقیعذمین حرخطبہ دیا اسمین صاحت اس خیال کو ظاہر کیا ا** وک**رما** وات العرب لانعرف من الأهل الهنائعي من فرنش اليك علاوه الفارمن فود دُوگُروه تھے اوس اورخزرج اورامِنین ہا بم اتفاق نیھا۔اِس مالت مین صرورتھاکہ بھیا کی دعوی خلافت کود با د ا ماے اور کوئی لائق شخص فوراً اتنجاب کرنیا جاہے جمبع میں حوالِک مدحود هف انین سب سے ابا ترا ور بزرگ ا در مقرحصرت ابو کرستھ ،ا ور نوراً انکا اتنی ب

موممی مآبالیکن اوگ ، انصار کی بحث ونزاع من مینیر گئے تھے اور بحث طول ک*یزگر قریب تھ*اک نوارین میان سے کل آمیر 'جعنرتع **م**رنے یہ رنگ دکھیکر دفعتہ مخصرت ابو کمرکے ہاے میں ہے دید اکسب سے بیلے میں مبیت کرا ہوں۔ ساتھ ہی حصرت عمان -ابوعبیدہ جراح عبدالرحمن بن عوت نے بھی ابھے بڑھا گے اور پھر عام خلقت ٹوٹ بڑی ۔اس کارروائی سے ایک تھا مواطوفان ُرک گیا ١٠ورلوگ طمئن موکرکار و بارمین شغول موگئے ۔صرف بنو ہاشم اپنے اقعا پر رکے رہے اور حضرت فاملہ کے گھرمن و تنا فو تناحیع ہوکرمشورے کرتے رہتے تھے، مصرت ع نے بزورا کن سے بعیت لینی جا ہی سکین <del>بنو ہاشم حضرت علی</del> کے سوا اورکسی کے ایکے سرنبین تحب*کا سکتے تھے۔* ابن ابی شیبہ نے مصنف مین اور علا مُه طبری نے ماریخ کبیرمین رو<sub>ا</sub>ت تعل کی ہے کہ حضرت عرف ، حضرت فاظمی کے گھرکے دروازے پر کھڑے ہو کرکہا کہ یا بنت سول اللہ خدا کی فتم آپ تکہو سے زیادہ مجوب ہیں، اہم اگر آ کیے بان لوگ اِس طرح محمع کرتے رہے تومین ان لوگون کی **و دہسے ،گھرمین آگ لگا د وُگا''۔ اگرچ**ین دکے اعتبار سے اِس روایت پرمم اینا اعتبار ظا ہر نبین کرسکتے کیونکاس روایت کی روا ہ کا مال مکونبین علوم ہوسکا اہم ورایت کے عتبا سے اس وا تعدکے انکار کی کوئی و جہنین ۔ حصنت عمر کی تندی اور تیزمزاجی سے بیحرکت کچھ ببید بنین ، صفت یہ ہے کہ س ازک وقت میں **حضرت عر**نے نمایت تیزی اور *سرگرمی کے سا* جو کارر دائیان کمین آمنین گومعن ہے اعتدالیان مائی حاتی ہون، لیکن ما در کھنا جا ہے کانس لاعمالیا استنتے موتے فتنون کو دیا دیا۔ <del>بنو ہاستم کی</del> سازشین اگر قائم رہتین تواسی وقت جاعت <sub>ا</sub>سلامی ك ابن الما دروى ف الاحكام السلطانية مين لكهائ كا ول صرف يُنخِ شخفوان في مبيت كي غمي -

ا کا شیرازه کبیر ما با اور دمهی خانه خبگیان بر با به وما مین جرآگے جلکر خباب امیرعلیه السّلام اور امیرمعاً دبیمن واقع مهوئین-

حفرت البر کم کی فلافت کی متت سوا دو برس ہے کیونکد انفون نے جُادی الثانی سے اللہ میں اللہ میں اللہ میں اللہ میں الرح جس قدر بڑے بڑے کا م انجام یا سے حضرت عمری کی شرکت سے انجام یا سے کا ہم ائن وا قعات کو ہم الفاروق میں نہیں کی سکتے ہم ہی کی شرکت سے انجام یا سے کا ہم ائن وا قعات کو ہم الفاروق میں نہیں کی سکتے کی شرکت سے انجام یا ہے وا قعات ہن اورائش خص کا حصتہ میں حبکو حضرت ابو مجرکی سے میں کا شرف ماصل ہو۔

حضرت ابو کمرکواگر میہ مرتون کے بجریہ سے بقین ہوگیا تھا کہ خلافت کا بارگران ، حفزت م کے سواا ورکسی سے اُرد منین سکتا ہم وفات کے قریب، اُکفون نے عام را سے کے اندازہ ارنے کے لئے اکا برصحابہ سے مشور و کیا۔ سے بہلے عبدا ارمن بن عوت کو ملاکر توجعیا اُنھو<del>ن</del> لها دعرکی فالبیت مین کیا کلام ہے لیکن فراج میں ختی ہے ،حضرت ابو کمرنے فرا یا انکی سختی ښ کئے تھی کرمین زم تھا، حب کام اُنھی رَا ٹر نگا تو دوخو دنخو د نرم ہوجا مُنگے۔ بھر <del>حضرت غما</del> او کااکر رحیا- آئنون نے کہا مین اس قدر کہ سکتا ہون کو عرکا باطن، طا ہرسے انجما ہے- اور م ہوگون میں اُنکا جواب منین " حب اِس اِ ت کے چرہے ہوئے کہ حفرت او کر 'حفرت عرف فلیفه کرنا چاہتے ہیں توبعینون کو ترد دہوا خیا ن<u>ی طلح نے حصنت ابو کر</u>سے جاکر کھاکہ آپ کے موجود ہوتے، عمر کا ہم بوگون کے ساتھ کیا برنا و تھا ؟ اب وہ خود خلیفہ ہونگے بوخداجانے ا کونگے، آب ب مدا کے بان مائے من سوخ سمے که خداکو کیا جواب د بھی کا حضرت ابو کم

منے کہا مین خداسے کمو محاکہ مین سے تیرے بندون پرائے متحض کوامنے مقرر کیا جوتیرے بندون مین سب سے زیادہ اُخیا تھا<sup>ید</sup> یو کمکر <del>حضرت عمان کو</del> بلایا ورعمیذا رزخلانت لکموا شروع كيا، ابتدائي الفافولكموا حكي تق كغش أكيا حصرت عمان نه يد وكميكر والفافواين طرت سے لکمدیے کئیں عمر کوفلیف مقرر کرا ہون " تعوری دیرے بعد موش آیا توحفرت عمان سے الماكيالكما تما مجكور مكرنا و-حفرت عُمان نع برماتو بسياخة التُداكير كارتف اوركما له خد آ مکوجزاے خیردے ، عدر امب لکھا جا چکا توحفزت ابو کمرنے اپنے غلام کو د ماکہ حاکر مجمع عام مین سُنا کے ، میمروز و بالا فانه پرجا کر دوگون سے جونیجے ممبع سقے نماطب موسکا د اکما کمین نے اپنے کسی معانی بند کو خلیفہ نمین مقررکیا الکی عمر کومقر کیا اکم اوگ اسپر دامنی و ىب نے سمعناو اطعنا کہا۔ ب<u>عرحمنرت ع</u>رکو *ئلا کرنیایت موٹرا درمغینیمتین کین جوحنر*ت حرکے سئے عدہ وستوراعل کے بجاے کا م آئین ہو-



## خلافت اورقبوحات

حضرت الویکی عدین مرتبی عرب اور دعیان برت کا خاند ہو کوفتو مات المی کا آفاز ہو پچاتھا۔ فلافت کے دو مرسے ہی برس بنی سلد ہجری میں عوان راسلامی فوجیں تام م الماع کے تمام اصلاع فتے ہوگئے بہتہ ہی بی میں شام برجلہ ہوا اوراسلامی فوجیں تام م الملاع میں پیل گئیں۔ اِن متمات کا ہجی آغازی تھا کہ صفرت ابو بکر کا انتقال ہوگیا۔ حضرت عجر نے عنانِ فلا انت یا تمرین کی توسب سے صفروری کا م ایمنی مهات کا انجام دنیا تھا۔ بیکر قبل اسے کہم اِن واقعات کی فصیل کھیں یہ تبا نا طرورہ کو اسلام سے بیلے عوب کو فارس و شام سے کیا تعلقات تھے۔

عرب کا ننایت قدیم فاندان جوجب بایده کنام سے مشہوب اگر جدا سکے مالات الکل مامعلوم بین آئیم اس قدرشہورہ کو عاد اور عالقہ نے عواقی پر تبعند کرلیا تھا۔عوب عوا برج کمین کے فرانز دائے آئی عکومت ایک زمانے مین بہت ندور کرگڑئی تھی۔ بیمان کک کونپوارعواتی بر فامعن ہوگئے اورسلطنت فارس کے ساتھ انگویمسری کا دعوی ارہا۔

رفته رفته وته وحرمومت فارس کے علاقه من آباد مونے سروع ہوئے بجت نفرت جوبابل کا با دشاہ مقا اور مبت المقدس کی بربادی نے اُسکے نام کوشہرت دیری ہے، جب عرب پرطد کیا تو بہت سے جمیلے اسکے مطبیع ہوگئے اور اس تعلق سے عواقی میں جاکرا باد ہوگئے۔ زفتہ وقتہ معد بن عدنان کی بہت سی نسلین ان مقابات میں اُباد ہوتی گئیں، یمان کس کر رایت کی من ورائی اور بوزگواس زمانے مین سلطنت فارس مین طوائف الملوکی فائم ہوئی تنی ، ورائی الله و الله و

سائے اتے سے آنکے شانے آکرواڈا آتا تھا جنا بجراسی وجب عرب میں وہ والاکھا فی سے مشہورہ۔

سلا طبین جرو مین سے مفان بن سندر نے جوکسری بردیز کے زمانے میں تھا، عیسوی میں جبول کرلیا۔ اوراس تبدیل ذرہب پر یا اور کسی سب سے بروزنے اسکو تبدکردیا اور پی میں اسے وفات بائی۔ نعمان نے ابنے ہتیار وغیرہ بائی کے باس الم نت رکھوا دکے تھے جو تبدیل میں اسے وفات بائی۔ نعمان سے وہ جزین طلب کین اور جب اسنے انخار کیا تو ہرفران کودو فرار فی سے دمیا اس تا بھی کہ بردو ہوں اس میں برے سردسا ان فی کے ساتھ بھی کر دو ہوں اسلامی سے وہ جزیرن طلب کین اور جب اسنے انخار کیا تو ہرفران کودو فرار فی کے ساتھ بھی کر دو ہوں اسلامی سے دمیم ہوک اور تیت سرکہ ہوا۔ فار سیون نے شکست کھائی اس ڈائی میں فی آب سول اسکامی بھی تشریعین رکھتے سفے اور آپ نے فرایا کہ

علا اول يوم انتصعت العرب من العجيم التي ين ينادن بدروب نع عمرت برديا ...

عوب کے تمام شعرانے اس واقعہ بربرے فخرا ورج بن کے سائد ضید سے اور اشعار کھے تو سے میں حب رسول المند ملم نے تمام باد شاہوں کو دعوتِ اسلام کے خطوط تھے تو با وجود اسکے کو ان خطوط میں جنگ و مبدل کا اشارہ ک نہ تھا پر ویز نے خطابہ مکر کھا کہ دمیرا فلام ہو رم مجلووں لکمتا ہے 'اسیری فناعت نہ کی لمکر آبان کو ج بمن کا عالی تھا لکھا کہ کو بھیجہ وکر محمل کو ان اسکے اسیری کا اسکے بھیجہ وکر محمل کو کر قار کرکے ور بارمین لائے 'انھا تی سے اسی زمانے میں یہ ویز کو اسکے بھیجہ وکر محمل کردیا ورمعا لمرسین کم رکھیا۔

رومی سلطنت سے عرب کا جرنعلن تھا یہ تھا کہ ب سے چند قبیلے میں و منان و میزام

رہ برہ الم کے سرمدی ہنداع بن ماکزا در ہوگئے تھے۔ اِن دوکون نے رفتہ رفتہ شام کے ارفاہ مرکئے تھے۔ اِن دوکون نے رفتہ رفتہ شام کے ارفاہ اندروی ہنداع برجی قبصند کرایا تھا اور زیا دہ قوت و مبتیت حاصل کرکے شام کے باوشا کہ لانے گئے ہے۔ لیکن یافتہ و و ان کا خانہ ساز لقب تھا ور زمبیا کر توزیح ابن الانتیرے تھے۔ تھریح کی ہے درجتیت و ورومی ملطنت کے صوبہ دار تھے۔ اِن لوگون نے اسلام سے مبت بیلے عیسائی خرمب قبول کرایا تھا اور اس وج سے

آن دوگون نے اسلام سے بہت بیلے عیمائی ذہب مبول کرایا تھا اوراس وجہ سے انکور ومیون کے ساتھ ایک شم کی کا گیت ہوگئی تھی۔اسلام کا زانڈ ایا توسٹرکیون عرب کی طرح وہ بھی اسلام کے دشمن بھلے یہ سے شمین حب رسول انٹوسلیم نے قیمبروم کو دعوت اسلام کا دشم میں بینچے اسلام کا خواکل اور دحیکہ بی دو خطائے کئے گئے کا واپس آتے ہوئے ارض ہذام میں بینچے تو اپنی شامی عوب نے دحید برحل کیا اور انجا تما ما الی اسباب بوٹ لیا۔ اِسی طرح مب رسول اسٹرنے حارث بن تمریکو خطا دیکے کئے کا خام الی اسباب بوٹ لیا۔ اِسی طرح مب رسول اسٹرنے حارث بن تمریکو خطا دیکے تعبی والی نٹرنے ساتھ میں فشکر کشری اور غوو و موسی انگرون کی اور غوو و موسی کا گئی تعبی کی اور غوو و موسی کا اور غرو و موسی کا ایک میں زیر بن حارث و حصرت حبو ملک کے ایس میں دواحہ و برج کے اس کی ایک میں تربی مار تہ و حصرت حبو ملک کی اور غرو اسلامت کل آئی کی تربی میں تربی مار تہ کے صحاب میں دوخیقت شکست تھا۔

انگروشی و جگلے دوخیقت شکست تھا۔

سفت من روسون نے فاص مریز پر ملے کی متیا را ان کین بلین جب رسول المعلم خور بیٹیندمی کرکے مقام بول کت بنیجے تو اکو اگے برھنے کا حوصلہ ننوا اگر ہوائس وقعت عارمنی مورسے اڑا کی رک کئی۔ لیکن رومی او بونیاتی مسلمانون کی فکرے بھی غافل میں رہے

امان ک کوسل نون کوہمیشہ کھٹکا لگا رہتا تھا کرمینر حرام ز آئین میں بخاری میں ہے کہ جب رسول الله كى نسبت مشهور بواكرآب نے ازواج مطهرات كوطلاق ديري تواكي تخفي مے معنرت عرسے جا کہا کو مترے منا!! معنرت عمرے ذایا کیون کہیں عنتانی تونیین یڑہ آئے ! اِسی حفظ ا تقدم کے لیے سلاہجری من رسول اسٹرنے اُسامین زیرکو سردار بناكرشام كيمهم يهبيجا اوريونكه اكيه غليم الشان سلطنت كامقا بله تها حصزت ابوبكروغمرا ور رمسے رہسے امور صحابہ امور ہوئے کہ فوج کے سائھ ما بین -آسامہ اسمی روانہ نین ہوئے متعے که رسول اللہ نے بھار مرکزا تقال فرا یا غرص حب حصرت ابو بجرمت بغلامت پڑمکن ہوسئے توغرب کی بیرحالت تمتی کروہ دونون مہا پیلطنتون کا ہرت بن چکا تھا۔حضرت ابو کمرنے شام پرنشاکشی کی تو وج سے نماطب ہو کر فرا یا گڑمین و شفس ارا جائیگا شہیر کا ورجوزي جائيكا مرا فع عن الدين مو كالعني دين كواسنے وشمنون كے حلےسے بالم موكاً" ان دا قات سے فاہر ہوگا کہ حضرت ابو کرنے جوکام شروع کیا ادر حفزت عرفے جس کی کمیں کی آسکے کیا اساب سنے واس تہیدی بیان کے بعدیم مول طلب شروع کرتے ہین

## بقتومات عرأق

فارس کی مکومت کا چوتھا دورج ساسان کملا اہے نوشیروان عاول کی دویسے مبت نام اورہے - اسخفنرت کے زمانے میں اسی کا پڑا روز تحنت نثین تھا۔ اِس مزور ماد ثنا کے زمانے کک سلطنت منابت توی اورزورا ورزی لیکن اسکے مرتبے کے سابھ وفعتہ اسی ا تبری پیدا موگئی کرایوان حکومت مرّت کم تنزلزل را ا- <del>شیرویه آسکیبی</del>ے نے کُل آ نُوسینے مكومت كى اوراپنے تام معايئون كوجوكم وبيش ه استے متل كرا ديا۔ اسكے مبدأ سكا مبيا آروشير ، برس کی عربین بخت پرمٹیا۔ لیکن ڈریمہ برس کے بعد دربار کے ایک انسرنے اسکوتش کودا ا ورأب یا دشا و بن مبلیا- پرسنم بری کا بار کلوان سال مقامیندر ورسک بعددر باریون سنے اسکونٹل کرکے حوان شیرکوتخت نشین کیا۔ وہ ایک برس کے معبد تعنا کرگیا۔ اب جز کا خانہ ا می<u>ن بزوگرد</u>کے سواج منابیت منغیرالسن تھا اولادِ ذکورماتی منین رہی تھی۔ پوران دخت کو س شرط پر تحنت نشین کیا گیا کریز و گر دیس شور کو پینی جائیگا تردی اج و تخت کا الک <u>برگات</u> کے جزا فیدنوری وات کے در مینے کیے من یعنی وحمت وب سے محق ہے اُسلووات وب اور م مستم مے محق ہے سكووا څېر کينے ہيں۔ واق وب کی حدو دارو بریمین ۔ شال مین جزیرہ ، مجزب مین مجزِوارس ، مشرق مین فرزشان اور مشرق میں بالم مع حبكا مشرور شروس - والهلان اسكابنداد ب ادرو رفيك فيد شرايين كادمين وه بعرو، كوفه، واسطا وفيروبن ال مسك بارك مرفين كا مام طريقة بيب كروم سينين كومنوان قواردية بين أليكن اسين يرفيق به كروا تعات كاسلسله توٹ وٹ طالب شلا وہ ایون کی فتومات کھتے آتے مین کرسند ختر ہوا جا ہتا ہے ۔ اور اکنوائس سند سے تام وا تعات کھنے مین اس بیے قبل سکے کواران کی فتومات تام ہون امرزون موقع برائل سلسالوں نتام دمور کے واقعات کوجراس سندین مین اك تعيم وياريان الما الميون في الان كام فوات كواك والدان المواك ما المواك ما الكمام الكل شرور كع دوس حكومت كى ترتيب اورنا مز كالتنين مين موّرمنين اس تدمِمْ تلف بهن كوئوموّر فع بھى ا بهتفق منين - فروسى كا بيان سينج الكسيم - ينيے مجا فريم العداد رفارس لنسل بونيك الومنيعة ويزرى كربان كوترج دى سعاء

بروزك مبدح انقلابات مكومت بوت رم اسكي ووسم مك من ما ياك امني الك خِنا يَدْ بِدِران كَے زانے مِن يرشهور موكيا كرفارس مِن كوئي دارتِ اج وتحت منين را <del>بر ا</del> نام ایک عورت کوایوان شامی مین عبار کما ہے۔ اس خبر کی شہرت کے ساتھ عواق من مبیلہ دائل کے دُوسردارون منتنی شیباً نی اور سویر عجابے تھوٹری تقوری سنج میت ہم **بنیا کر**وا ق ی سرمدحیره - واکیه کی طرن غارتگری شروع کی<sup>انه</sup> بیصنرت ابو بگر کی خلانت کاز انتظاار خالہ سین اللہ کامدا ورویگر قبائل عرب کی مهات سے فارغ ہو چکے تھے۔ متنیٰ کی ۔ نے حصہ ابو کمرکی مذمت مین حاصر موکرعوات پر ملد کرنے کی اجازت حاصل کی۔متنی خود اگرجہ ملام لاحكيج تقع ليكن اسوقت كك نخاتام قبيله عبيا أي ايت بريست تفاحضرت الومكر كي خدمت سے و اس اُرانفون سے اپ قبیار کو اسلام کی رغب دی اور قبیار کا قبیار سلمان ہوگیا۔ ان نوسلون كا اكب مراكروه ليكرواق كارخ كيا-اد حرحفرت ابو كمرشے خالد كومد و كے النے بميا - خاليف وا ق ك تام سرمدى مقامات فتح كرك اور حيرة يرعكم فت نف كيا يو مقام کو فدسے تین میل ہے۔ اور جو نکر سیان نعان بن منڈرنے حور تی ایس مشہوم نايا تما وه اي إد كارمقام خيال كيا جا آتھا-عاق کی فتوطات فالدہے بہت برسے کا زامون برشمل من سکین اُنکھے بالی منک يمحانين- خالد نخ مُهَاّت عراق كا فا مته كرديا بردًا - ليكن حوْكُه أو هرشا م كي مع مرا متى اوجب زورخورس وان عيابون نے المنے کا آبان كى تبين أسكے مت المكا المل اخاراللوال الدمنية ويؤرى السك فتوح البلدان بافدى منفئ اسا-

وان برراسا أن زمّا معفرت او كمرت اثنا في سينا بحري من خالد و كم ميما كه ورا شام كوروا نه مون اور شنی کوانیا مانشین کرت جا مین -خالدا و هرروا نهوے اور عواق كی متوحات دفعة مُرگ كئين -

حصرت عرسند فلانت بربيني توسب سے بیلے عوات کی مرزوخه کی سبت ملات کے گئے تمام اطرات و دیارہ سے بنتیا را ومی استے تھتے اور میں دن مک انحا آنا تبار حار ہاتھا حضرت عمرمي اس موقع كفنيت سمجها اورمجمع عام مين حبها وكا وعظ كما ليكن جؤ كمه لوگون كا عام خیال تھا کہ عواق مکوستِ فارس کا یا پُرتخت ہے۔ اور وہ خالد کے بغیر بھتے منیر ہوسکتہ اس کیے سب خامومن رہے۔حضرت عرفے کئی دن کے وعظ کمالیکن کچے اثر ننوا۔ آخر حویتے ون اس جین سے تقرر کی کہ حا مزین سکے دل ہل گئے ۔ تمنی شعبا نی نے اٹھار کہ اگ سلما نوامین نے مجوسیون کو از الیاہے وہ مردمیدان نبین میں - عراق کے بڑے ٹری نال<sup>ع</sup> ومم شنے فتح کرلیا ہے اور عجم ہارا لوم مان گنے ہیں 'حاصرین میں ابو عبید تفقی بھی تھے جو قبیلہ ً نقیمت کے مشہور سروار ستھے۔ وہ جویش میں ا*کر اُنٹر کھڑسے ہوئے اور کما کہ* اناکھ لا بینی <sup>در</sup>اس كام كے لئے مَيْن ہون" ابوعبيد كى بہت نے تام ما ضربن كوگرا ديا۔ ورببرطرف سے غلغال ما ایم بھی ما ضہین حضرت عرف مدینہ منورہ اور مُصنا فات سے مِزْراَد می اُتخاب کئے اور ا يوعبيد كوسيه سالا رمقر كيا-

ابومبيدكوا خضرت كاحبت كاشرت حال زنعا يعنى صحابى زيتمي اسودس انكى

الع باوری من ۱۵۰ مله و باوری کی روایت اومنیفددینوری نه و فررتعدولس به ۱۰

مری رکسی کسی کوخیال ہوا۔ بہان یک کراکٹ غفر نے آزاد انہ کہا کڑ عمر اُصحابین می کومینصب دو- فوج مین سیکرون معایبین اورانجا انسر مجی صحابی بی موسکتا ہے " <del>نىرت ع<sub>ى</sub>ن صما بەكى طرت</del> دىكىيا ا دركها كەتىكوم بىشر*ت تھ*ا دە ئىبت ا ورېتىقلال كى د جېست مقا بلین اس شرف کو نمانے خود کھودیا۔ پہرگز نبین ہوسکتا کر جولوگ کرنے سے جی ترایئن وہ رمقرر کیے جا مین " - تاہم مونکہ صحابہ کی دلجوئی صرور متی - ابوعبید کومرایت کی کرانا ادب المخوط ركمنا اورمركام من أن مصمشوره لينا-مضرت الوكرك عمدين عواق يرحو حلمهواأسني ايرانيون كوجو كادبا بمايجنا بخديران و نے رستم کو ج فرزح زاد گور زخراسان کابیا ا در منابت نتجاع اور صاحب تدبیر مقادیا یں طلب کیا اوروز برحرب م*قر رکوسے کہاکہ توساہ وسید کا مالک ہے۔ یکماؤسکے سر*ر پل ركها اور درباریون کوجن مین مام امراا و اعیاب لطنت شامل تقے اکید کی کرستم کی اطا كم مى انخراف ناكرين مونكرابل فارس اينى نا اتفاقيون كانتجرد كيه حيك مقد أنمون ولست إن احكام كي الماعت كي، إسكاما خربو المجندر وزمين تام بأتظاميا بي كين رسلطنت نے بعروبی زوروقوت بدارلی جهرمزوروزیکے زمانے مین اسکومال متی-رسم منع بهلی مربیرید کی کوهنا عواق مین مواون مرکارے اور نقیب دورا دی خبول مے مہبی حمیت کا جوسن دلاکرتا م ملک مین سلمانون کے برخلات بغاوت بھیلادی پنجائج الم يني سع بيل ييك ورت ك تام اصلاع من بنكامر يا بوليا اورو معالمة

لما نون کے بینے میں اُسکے تھے ایکے اِترے سنگلے پوران دخت سے رسم کی اعات کیلے

ائیدا در فریج گران قیار کی اور ترسی وجایات کوسید سالار مقرر کیا - جایان ، واق کا ایم مشهور این این اور واق سے اسکو فاص مداوت متی - نرسی کسری کا فاله زاد بمبائی تما اورواق کے بعض اصلاع ، قدیم سے اسکو فاص جا کہ دیتے ۔ یہ دونون اسٹر نمانسان مالکہ جا کہ میں جا کہ میں میں میں اسٹر واقت کی طرف برہے اور حرا و مبدیہ و نون کی جا کہ دیتن کی قیار یون کا حال معلوم ہوا جملات دکھیکر خفان کو مہت ایک نارق مینی خید زن ہوا -

ابوعبیہ نے اس انامین فرج کوسروسامان سے اُراستہ کرلیا۔ اور مبنیقہ جی کوسکے خود علے کے لئے بڑھے، نمارق پرد ونون نوجین صف آرا ہوئین۔ جا بان کے بیمنہ و میسرہ پرج شن شاہ اور مردان شاہ د ور شہو او نہ سے جو بڑی اُ بت قدمی سے لائے ۔ لیکن اُرائز شکست کھائی او میمین موکر میں گرفتار ہوگئے۔ مردان شاہ۔ برختہ ہے اسی وقت قل کو با اللہ ما ایک مجانی اسی بھائی او میمین موکر میں گرفتار کیا تھا وہ اسکو بھا نا نہ تا اللہ ما اسی بھائی کا جسن کھا گیا کہ جس شخص سے اسکو گرفتار کیا تھا وہ اسکو بھا نا نہ تا ما اللہ میں مجہور دو۔ اور جا این ما و منے میں مجہور ہو۔ اور ما ایک میں مجہور دو۔ اور ما ما و منے میں مجہور دو۔ اور ما اسلام میں مرجمد کی ایک میں مرجمد کی ایک اسلام میں مرجمد کی ما کا راسلام میں مرجمد کی ما کور منین ۔

ابر مبید نے اس مرک می بوکسکر کا رخ کیا جمان نرسی فوج سے پڑا تھا۔ تھا میں دونون نومین تقابل ہوئن ۔ نرسی کے ساتر بہت بڑا نشکر تھا اور خود کسریٰ کے دُوامون اور میں میں نہدویہ اور تیروید میں نہ اور میں ویرسے ۔ نام نرسی آس وجسے ٹرائی مین دیرکر مات

کیا پینخت سے امرادی فوجین روانہ ہو مجی تقین ۔ ابو عبید کو بھی یہ خبر سینج میکی متی ۔ ابنون سفے اثر عکر خباک شروع کردی ۔ بہت بڑے مورک بعد نرسی کوشکت فاسٹ ہوئی ۔ ابو عبید ندے فود سقاطیہ مین مقام کیا اور تقوری تقوری میں فوجین ہرطرون بھیجدین کرایرانیون نے جمان جبان میا افرائی میں کا کیا ہوئی کا کیا ہوئی کے جمال حیان میا میں ہے انکور ہاں سے کال دین ۔

ورفرا و زواد و براد جوباروسا اورزوابی کے رئیس تھے مطیع ہوگئے جنا بندا فہارضو کیلیے ایک ون او عبید کو ننایت عمرہ عمرہ کھانے کیوا کر بھیج - او عبید نے دریافت کیا کہ یسا ا ایک فوج کے سے ہے - یا صرف میرے ہے ؟ فریخ نے کہا اس جلدی مین ساری فوج کا ہمام منین ہوسکتا تھا- ابوعبید نے دعوت کے قبول کرنے سے انخار کیا اورکہا کوسل نون میں ایک کو دوسرے پر کھے ترجیح نبین-

اس نکست کی خبر سنگر رخم نے مردان شاہ کو جو جب سے دلی عداوت رکھا تھا اور سکو فرشروان نے نقدس کے لیاؤسے ہمن کا خطاب دیا تھا چار ہزار فوج کے ساتھ اس سا مان سے روا ذکیا کو دفیق کو یا تی جو کئی ہزلد برس سے کیائی خاندان کی بادگار میلا آیا تھا اور فتح وظفر کا دیبا جبہ مجاجا آیا تھا اُسکے سرریا یا گا جا آیا تھا۔ مشرتی فرات کے کنارے ایک مقام برمیکانام مرد حد تھا دونون مربعین صف آرا ہوں۔ چونکہ تھے میں دریا مایل تھا ہم بہت کہ لاہمیا کہ بائم اس بارا ترکر آو کا ہم آئیں۔ ابو عبید کے تمام سردارون نے کہ فیان ہم مروادون رہنا چاہیے لیکن ابو عبید جو نتی عت کے نشخے مین سرتار تھے بچھے کم ہوکہ کا کہ کو اس طرف رہنا چاہیے لیکن ابو عبید جو نتی عت کے نشخے مین سرتار تھے بچھے کم ہواری کے میدان بن مجربی ۔ بنامردی کی دلیل ہے مروادون سے کہا یہ نئین ہوسکتا کہ جا نبازی کے میدان بن مجربی ۔ بنامردی کی دلیل ہے مروادون سے کہا یہ نئین ہوسکتا کہ جا نبازی کے میدان بن مجربی ۔ بنامردی کی دلیل ہے مروادون سے کہا یہ نئین ہوسکتا کہ جا نبازی کے میدان بن مجربی ۔ بنامردی کی دلیل ہے مروادون سے کہا یہ نئین ہوسکتا کہ جا نبازی کے میدان بن محربی ۔ بنامردی کی دلیل ہے مروادون سے کہا یہ نئین ہوسکتا کہ جا نبازی کے میدان بن مجربی ۔ بنامردی کی دلیل ہے مروادون سے کہا یہ نئین ہوسکتا کہ جا نبازی کے میدان بن مجربی ۔ بنامردی کی دلیل ہے مروادون سے کہا یہ نئین ہوسکتا کہ جا نبازی کے میدان بن مجربی ۔

ہم سے اتنے جرم جامین ۔ مردان ثماہ جرمنیام میکر آیا تھا اسٹے کہا ہاری فوج میں عافم ہے کورعرب مردمیدان نین مین <sup>ب</sup>ساس جلے نے اور مبی استعال دلا باا ورا بوعب یہ نے میں م فن کو کربندی کا حکم دیر یا یمنی اور سلیلا و نمیر براے بڑے افسران فوج اِس راے کے ؟ اکل مخالف تقے اوطلت وشان من تحارتبه ابوعبیدسے برحکرتھا جب ابوعبید نے اصرار کیا تو ائن نوگون شے کہاکہ اگر چرچگوطعی یقین ہے کہ اس راسے پیمل کرنے سے تمام فوج غارت ہوگی نام اس وقت تم افسرم واورا فسرى نمالفت بها راشيو ينين - غوم كثيتون كايل انهاكيا ا ورتمام فیح بایراً تر کوننیم سے سرکه آرا ہوئی <sup>-</sup> بارکا سیدان ننگ وزنا مموار متعا ایس کیے سلمان<sup>ون</sup> لومقع منین ل سکتا تعا کرفوج کوتر تعب سے آراستہ کرسکتے۔ ایرانی فزج کانفاره نایت میب تمابهت سے کوه پکر انتی تفیح مِن رکھنٹے لیکے سے اور را زورے بحتے ماتے تھے۔ کھورون برمنی ایکور تبین سوار سمور کی لمبی توبیان و ڑھے ہوسئے صحرائی جانور علوم ہوتے تھے۔ عرب کے گھوڑون نے میمیب نظارہ کمبھی نبین د کمیا متھا' بَرک کرنت<u>ھے مٹے ابر عبیات</u>ے و**کیما کہ ہائی**ون کے سامنے کچرز ورمنین طیت مورے سے کو دیڑے۔ اور سا تقیون کولاکا راکہ جا تبارو! یا متبون کو بیج مین سے لوا وربُود دان کو سورون میت اُلٹ دو ً اِس آواز کے سائھ سب محمورون سے کودیزے اور ہُودون کی سا ا شكاط كفيل نشينون كوخاك برگرا ديا ميكن إنتى مبس طرف تحكيفة سقيم معن كي معن بير حاتي

ات و الم المبعد يه د کويکر بيل مفيد رو وار بيان و من جس طرف جيد سے معن ماسون مورد اور الماری استک منتی- الومبيد يه د کويکر بيل مفيد رو واسب کا سردار تما حل آور موسئ ادر سونڈ برلوار الری استک سے الگ موکنی- وائمتی نے جرمکرا کو زمین برگرا دایا ورسینے پر اپنون رکھدیے کہ فریان کے جو

نے پرانکے بمانی حکرنے عکر ات میں ایا اور استی برحلہ اور سے است رہبید کا طرح اگریمی پانون میں لیسٹ کرسک دیا۔ اس طرح سائع آدمیون نے وسب کے ب الرونيير على منب اورخاندان تقيف سے تقے، إرى الرو عَلَم إت من لئے اور اللہ خرمین فرنے عکر لیا لیکن اسوقت اوائی کا نقشہ گرو کیا تھا اور فرج میں بھا گر رہ مکی تھی۔ مرتب ہواکہ ایشخص نے ووڑ کو سے تختے توڑو ہے کوئی شخف ہوا کے کر مانے نہ یاسئے۔لیون نوگ اسلی مرحواس مور کھا گے متھے کوئیل کی طرف رست منا طا<mark>ز</mark> دریا مین کو در میے شم ہے۔ نے وہ بارہ کی بندھوا یا اورسوارون کا ایک دشہ بیجا کہ مجا گئوں کو اطبیان سے بارا کار 🗲 فوذی کی و ج کے ساتھ وشمن کا آگاروک کرکھڑے ہوئے اور کی نابت قدمی سے اٹ کہ افجاری لما فوای کود باتے اتے تھے رک گئے اور اسٹے نر بڑھ شکے تاہم حساب کیا گیا تو معلوم ہوا کہ ویزا فع من عصر صوت من مزار رمكى-الاام کی ایخ من-میدان خبگ سے فرار کرنا نمایت شا ذاور نادرو قوع من ایا ہے ا ورا کر کم و ایبا وا قدمین اگیا ہے واسکا عجیب اصوساک از مواہے -اس از ای من جن اوکون ریزدنت اسم برئ تمی ده مرت مک فا زبروس بور بر رسی اور شرم سے این کرونکونین ما تے کیو کٹررو یارتے اور لوگوں سے مُغرجیا ہے بھوتے۔ میڈمنور و میں یہ خربہی تواتم وگر اوک سلمان کی مبتمتی را منوس کرتے ستے اور دستے ہے جولوگ مریز مینچار کھرون مرج ویٹ تے اوانے ہے! مزمین کتے تھے۔ صرت فرانکے پاس ماکر انکونسٹی دیتے تھے اور کہتے

منے کرتم اُفی مختیا الف فیٹ فیے میں وافل ہو لیکن اُلمواس تا ویل سے تسلی نیین ہوتی تھی۔
یہ واقعہ دسب بیان بلاذری ہفتہ کے دن رمضان سلام میں ۔ واقع موا۔ اِس اُرائی میں اموصی بیون میں سے جولوگ شہید ہوئے و اسلیط - ابوزیدانساری عقبہ وعبداللہ بیان مبلی بن اموصی بیون میں الله ناری - ابو امیت الفرازی دعیرہ ستے -

واقع بوبيا مضان مسايم

اس شکست نے صفرت عرکوسمت بریم کیا اور نها بیت زور شورسے ملہ کی ملیار بان
کین - تا م عرب مین خطبا او زمنی بھیجہ ہے جنموں نے بُرج س تقررون سے تا م عرب بن ایک آگ لگادی اور مرطون سے عرب کے قبائل اُسٹرائٹ نے مبیلیا آدد کا سروا توف بن بلیم بائٹ سوار دن کوسا مذک کرا یا بنوئیم کے ہزارا دم صبین بن معید کے سامقائے - حا می طافی کے بیچ عدی ایک جمیت کشیلی مینے - رسی طرح قبیل سراب - بنوکن زقیقی بنوخ فلہ - بنوح نبر کے بری بری عدی ایک جمیت کشیلی مینے - رسی طرح قبیل سراب - بنوکن زقیقی بنوخ فلہ - بنوح نبر کے بری بری م معرک بین بھی توم کے سامقامین " ان وونون سرداروں کے سامقر اُن کی قبیلے کے ہزارہ آئی کیا معرک بین بھی قوم کے سامقرمین " ان وونون سرداروں کے سامقر اُن کے قبیلے کے ہزارہ آئی کیا معرک بین بھی قوم کے سامقرمین " ان وونون سرداروں کے سامقر اُن کے قبیلے کے ہزارہ آئی کیا معرک بین بھی قوم کے سامقرمین " ان وونون سرداروں کے سامقر اُن کے قبیلے کے ہزارہ آئی کیا

آفاق سے امنی دفون جربر کجلی دریا رِفلانت مین ما مزموا۔یہ ایک شہور سوار مقا اور خاب رسول اللہ کی مدمت مین ماصر موکر درخواست کی تھی کہ اپنے قبیلے کا سردار مقرر کردیا جاسئے۔ رسوں،مذہ معرب و درواست علور کری میں لیکن میں کی دوست میں ان می محصرت کو ۔ پاس ما حزموا تو انفون ، نے عوب کے تام عال کے نام اعکام میں بینے رجان وسکے قبیلے کے اومی ہون ایخ میں پراسکے پاس بینے جائیں۔ جریز تیمیت اعلم لیکود ارو مرشیم مین ما عذم ہے۔

أد هرمتن في عوال مح تام سرصري مقامات مِن نَعْبًا بسيكِ الكِ برى فوج مجمع كراي متى . اردنی جاسوسون نے برخبرین شاہی دربار مین سبجا میں۔ پوران وخت نے حکم دیا کہ فوج رسے بارہ ہزارسوارا تخاب کیے جامین اور مران بن مهرویہ مرانی احسر تقرر کی ہران کے اتخاب کی یہ وجریمتی کا کسنے خو دعرب بین ترمیت پائی تھی ا درا س وجیسے وہ عرب کے زور وقت کا ازارہ کرسکتا تھا کو فرکے قریب بریب آم ایک مقام تھا، اسلامی فوج ن سے یمان تنجار درے ڈالے۔ مهران، ای تخت سے روانہ وکرسد حابوب بینجا اور در اے فرات و بی مین وال کر خمیدن مواهیج موئے فرات اُز کر بڑے سردسا مان سے نشکر آرائی منروع کی منی نے بھی ہنایت زمیب سے معت ورست کی۔ فیج کے مختلف صفے کرکے بڑے بیسے الورو ل التى من ديے خاب ميذ برزور ميرو برنسير بيدل برمسود و النيٹر بريام م گشت كى فن پر عصمہ کومقرریا - فتکرز استم موجا تومنتی سے اس سرے سے اس سرے کما کیا مكرتكا يا دراك ايك علرك إس كعظي موكركها-بها دروا وكمينا المعارى وجست تامو أربرنامي كاداع شاتك"-

اسلامى نوح كى رائى كا يا قاعده تعاكرسردارين دخد الله كبركتما تقا يبلى كبيرر فون

مریه و متبارے آراستہ وجاتی متی دوسری کمبرراوگ متبارتول لیتے تھے اورتبیرے نفرہ حلوروا حانا تقاقتی نے دوسری کمبیرائجی نبین کہی تھی کا پرانیون نے حلوروا۔ یاد کھیارسل منبط ذكرسك اور كميراوك جوش من اكرصف سے أشك كل كئے منتنی نے غصتے مين آكرد ارى وانتون مین و بالی اور یکا رسے کومذا کے لیے اسلام کو رسوا نکرو اس آواز کے ساتھ فورالوگ تعجیم مٹے اور سینتحض کی جان جگر متی وہن اکرم گیا۔ یومتی کبیرکو کرمنی نے حاکیا۔ عجى إسطح كرجت بوك رشط كتام ميدان كونخ أشاتمن فع فوع كولاكارا دهبرانا ننین یهٔ ا مردانهٔ غل ہے۔عیسائی سردارون کوجرسا نقر سفتے بلاکرکما کوئم اگرمیے میسائی ہولکین مجقوم ہوا وراج قوم کا معاملہ ہے۔ مین مهران برحار را ہون تم ساتھ رہنا۔ انفون نے لیک نها۔ تمنی نے اِن سردارون کودونون اِزوون برکے کردھا واکیا اور پیلے ہی حملہ مین مهران كاميمة توركولب من كمش سيئة عجبي دوماره سيمطه ا وراس طرح توث كركوسه سلمانوں کے قدم اکٹر گئے۔ ثنی سے لاکا راکوسلمانو! کمان جاتے ہوہ میں یکٹر ایول اس آوازکے ساتوسب لیٹ پڑھئے۔ تنی نے انکوسمیٹ کرمیر حلوکیا۔ عین اس حالت مین مسعود حرمتنی کے بھائی اور شہورہا در سے زخم کھا کرکرے۔ آئی رکاب کی فوج بدل ہوا جا ہتی متی ۔ متنی نے لاکا راکوسلما تو! میرانجائی اراگیا تو کھیرروائنین سُرفایون ہمان واكت من وكميومتها را عَلَمْ عَلَى زيامين فردسود ن الساكم المرب رف

مله الاخاراكوال لا بي منيفة الدنوريء،

ويرك مري تمسان كي را ني رمي- بس بن مال وعيساني سرداريقا اورمري ے رور ہا تھا زخم کھا کڑرا ۔ تنی نے خود گھورے سے اُٹر کراُسکوگو ڈین لیاا ورا پنے بھائی لما نون کی طرف ر*ئیت رئیسے* اونسرارے گئے لیکن مثنی کی ابت قدمی سے لڑائی کا بلداسی طرف بھاری رہا بجر کا قلب خوب جم کراڑا۔ گرکل کا کل را دہوگیا۔ ہا دری سے تیغ کبیت اٹر یا تھا کہ قب آر نعلب کے ایک نوحوان نے کموارہے اُسا تام کرد! - مهران گهونی<sup>ے ہے</sup> گرا تونوجوان انعیل کر گھوٹیے کی میٹھ پرجا بیٹھا <sup>( زخوز کے</sup> ے سحمین کیا را رمین ہون تغلب کا نوجوان اوررمس عجم کا قاتل ؛ مہران سے متل پراڑا نی کا خاتہ ہوگیا جم نها بت ابتری سے بھائے۔ متنی سے فوراً کو سے ۔۔۔ روک بیاک<sup>ے ع</sup>مرعمال کرنہ جانبے یا مئن ۔ مترمنین کا بیان ہے ک<sup>کسی ا</sup>رائی شیے ے قدر مبیارلاشین اپنی اوگارین نبین *جیورین - خیانچہ ک*ر تون کے بعد حب مسافرون ک لذر مواتوا مغون نے جا بالم یون کے انبار یائے۔ اس فنح کا ایک خاص تربیبواک وا ا جُرِعِب جِما لِي مواتها ما ما رائه الموتقين موكيا كراب سلطنتِ تسرى كے اخرون سلط ومن كابيان ب كراسلام سيليم من بار فاعجرست الرحكامون-اس ب ربعاری محقے لیکن آج ایک وب دش مجمی پر مباری ہے۔ اس مورک بعد مسلمان واق کے **نام علاقہ میں بھیل رہے**۔

مل مری بردایت سین

جهان اب بغیراوآ ا دہے اس زمامتے میں وہاں بہت بڑاما زارلگیا تھا۔ منی رہے میں بازار كے ون حدكيا- بازارى جان باكر وحرا وحريال كئے اور شيار نقدا وراساب باترا يا یا می تخت مین میخبرین نبیین توسب ن*ے یک زبان ہو کر کما ک*وزنا نہ حکومت ، اور اس کے ا خلاف کا بھی متی ہے تھا۔ اسی وقت پوران وخت کو تخت سے آبار کر زوگر دکو جو سول مرس کا جوان تقا اورخا ندان کسری کا وہی ایک زمنیہ یاد کارر بگیا تھا تحت نشین کیا<u>۔ س</u>تم اور<u>فیرو</u> جسلطنت کے دست وباز وستے اور ایس مین عنا در کھتے تھتے درباریون نے اُن سے کہا کہ ا بمی اگریم دونون منفق ہو کو کام منین کرتھے توہم خرد متھارا فیصلہ کئے دینے میں۔ غوض زدگر اُی تحت نشینی کے ساتھ سلطنت مین نیئے سرسے جان گئی۔ ملکی اور فوعی انسر حیان جہان فس کام پر تنصمتند ہوگئے۔ تما م قلعے اور فوجی جھا وُنیا بن تنکو کردم کئیں عواق کی آبان جنتح برحكي تقيين عجم كاسهارا باكروبان تمبى بغاوت بمبل كئي اورتاهم مفتوحه مقامات لمانون حضرت عمركو ينجيرس تبغيين توفوراً متني كوحكم بسيجا كه فوجون كومرط ف ہن اکوللبی کا حکر بھیجہ وکر ایخ معتین رحمع ہوجا میں۔ اسکے ساتدخود رہے سروسا ہان سے فوحی ملیا رہان شروع کین سرطرت نفیب <del>مقبطے</del> الاصلاع عوب بين جبان حبب ان كوئي بها در - رئيس - صاحب تربير فتاء خطيب مل عالبر منیفه و نیوری کار دایت به طبری ندا و برس کی عربیان کی ہے۔

ا بل الراس بو- نوراً دربار خلانت من آئے۔ جونکہ جے کا زماندا بچکا تھا خود معظم کورواند ہوئے اور جے سے فارنع ننین ہوئے تھے کہ ہرطرت سے قبائل عرب کا طوف ان المنطاي - سعدين وقاص ف تين مزاراً دمي بينج من من سے ايك ايشفس من وكم کا الک تھا۔ حذموت، معدف ۔ مذجے اقیس ، عیلان کے بیسے بیسے سردا رہزارون لی مبیت لیکرائے مشور قبائل مین سے مین کے ہزار بنولتیم ورباب کے جا رمزارہ حضرت عسم ج کرے وہیں آئے تو جمان کے نگا وجاتی تھی اُدمیون کاگر مِفْراً ما حكر دياكه نشكر نهايت ترتيب سے أرسته ہومَيْن خورسيد سالار نبكر طيو كا - خيا مجه هراول بطلحه-مینه پرزمبیر-میسره پرعبدالرمن بن عوت کومقررکیا- فوج ارمستهویی توصنرت ملی کوئلا کرخلا فت کے کاروبا رسیرو کئے اور وزو مرینہ سے بحل کرعراق کی طرف رواز ہوسے، حفزت عربی اس متعدی سے ایک عام جسٹس پیدا ہوگیا اورب نے مرتبے پر کرین بازولین- صرار جو مرسب سے تین میل پراک حیثر ہے وان بنج رمقام کیا اور به اس سغری گویا بیلی منزل کمتی- چونکه امیرالموننین کاخود معرکز خبگ من جانا معبن معلمتون کے محافات مناسب نہ تھا۔ اِس کئے صرار مین فوج کو حمع ارکے تمام وگون سے ماسے طلب کی۔ عوام نے کی زبان ہو کرکماکوامیرالموشین!

عمر آپکے بغیر سر منولی، لیکن بڑے بھے مماہتے جمعا ملکا نشیب و فراز ہجتے سے اسکے خلاف راسے و وزر بھتے سے اسکے خلاف راسے دی۔ عبدالرمن بن عوت نے کماکرانی کے وونو بہلوین اگر

مذائخوا ستشکست مونی اوراً پکو به صدر شبغ او بجراسلام کافاته به حضرت عرف کفته ایران براز ترقر رکی اورغوام کی طون خطاب کرکے کماکر سین تماری رائے برعل کرا جا بہا مقالیکین اکا برمعا براس راسے سے شفق نیین - غرمن اسپرانفاق برگیا کہ حضرت عمر خود مسید بسالا بنکر نجا بین لیکن شکل پیمتی کرا ور کوئی شخص اس بارگران کے اٹھانے کے تعالی میں استی میں تا تھا - ابو عبیدہ و فالد شام کی مقات بن مصردت تھے - حضرت علی علیہ السلام سے ورخواست کی کئی گرا نمون نے اٹھار کیا ۔ لوگ اِسی جیس و بھی مین تھے کرد فت ولور کوئی تعالی کے این حورت عمر نے والیا کوئی ؟ بوسے کر سعد بین حورت نے اٹھا کہ کا کمی نے یا یا - حضرت عمر نے درایا کوئ ؟ بوسے کر سعد بین ابی وقاص -

سعد رئیب رتبه کے صابی اور رسول الترکے امون مختے انکی ببادری اور تبجاعت

بھی ستم سی کی طرف سے اطبال تا تا اور اس کی قالمبیون کی طرف سے اطبال تا تا اس بنا پر صفرت عمر کو بھیر بھی تروو تھا لیکن جب تام ما صربی ہے عبدالرحمان بن عون کی راسے کی تا بید کی تو چا را با جا رضا و رکیا تا ہم احتیاط کے کا فاسے، نشکر کی تام مقات بعث انتقار بین رکھیں۔ چا بیزان مرکون میں اقواسے اخر کت فوج کی تقل دحرکت، طماکا بند دست، نشکر کی ترمیب، فوج ن کی تقییم و غیرہ کے متعلق بھینے وقا و مثا احکام ملکا بند دست انشکر کی ترمیب، فوج ن کی تقییم و غیرہ کے بغیر انجام منین باسکا تھا۔ بیا تک کی میں جا بی مزایدن بھی خود صفرت عمر ہی نے افراد دی کھین جنا بخد میں تا میں باس بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے افراد دی کھین جنا بخد میں تا میں بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے افراد دی کھین جنا بخد میں تا میں بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے افراد دی کھیں جنا بخد میں تو تا می بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے امر بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے امر بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے امر بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے امر بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے امر بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے امر بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے امر بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے امر بنام انکی تقیرے کو دھنرت عمر ہی نے دور کھنوں کو دھنرت عمر ہی نے دور کو کھنوں کے دور کھنوں کے دور کھنوں کے انکی تقیرے کے دور کھنوں کے دور کھنوں کے دور کھنوں کے دور کھنوں کو کھنوں کے انکی تقیر کے کہنوں کے دور کھنوں کے دور کست ان کی کھنوں کے دور کے دور کھنوں کے دور کے دور کے دور کھنوں کے دور کے

غرص سورت نشار كانشان حرها يا اور مرنية منوروس رواز موت مهام مامنولين مے کرکے تعلبہ کہنچے اور بیان مقام کیا۔ تعلبہ کو قدسے تین منٹرل برہے اور این کی فرا ورموقع كى خربى كى وحبست بيب ان ميينے كے ملينے إزار لگا تھا تيمن ملينے سات ا ، ہا۔ تمنی موضع وی قارمین آٹھ ہزار آدمی لئے یڑے سے جن مین خاص مگرین **و**ائل کے چههٔ نېرار جوان سن<u>تے متنی کو سور</u>کی آمر کا انتظار تھا کہ سائم ہو کر کو فدیر طرحین ۔ سکن حیمہ كے مركے مین جزخم كھائے تھے گرتے گئے اورا فرائس كے صدمے سے انتقال كيا۔ سعد نے تعلبہ سے بل رَمشراف میں ڈریسے ڈالے۔ یمان متنیٰ کے بھائی معنیٰ اُن سے اُک مے اور شنگ سے جو صروری مشورے دیے تھے سورسے بیان کئے جو نکہ حضرت عمر کا تھا کہ حبان فوج کا بڑا وُہووہان کے تمام حالات لِکھکراً بیئن۔سعدنے اُس مقام کانقشہ تَسَكُرُكَا سِيلًا وُ- فَرُودُكُا هُ كَاثُرُ مِنْكُ - رَسْرَى كَيْنِيت - إن تمام حالات سے أنكوا طلاع دى -و ہان سے ایک مفصل فرمان آیاجس مین میت سی ہدانتین - اور فوج کی ترتمیب کے قوامد تھے۔ سیدنے اِن احکام کے موافق ہلے تام فوج کا جایزہ لیا جو کم دہیں تیس ہزار میری بهرسینه ومیره دغیره کی تقسیم کے مراکب پر حدا حدا اونسر تقرر کئے۔ فوج کے حدا حدا حعتُّون اورانکے اسرون کی تفلیل طبری سے بیان کے موافق ذیل سے نقشے سے معلوم مبوگی-

ملے بدذری نے تعدبا درطبری نے زرود لکھا ہے۔ یہ دونون مقام آبس مین تنامیت بتصل اور بالکل قریب بہن۔

رنبرو بن عبد الله رقبارة حالميت من مريح بن ك إوشاء مقر سوالله براول کی مذمت من اپنی وتم کی درف سے وکیل ہوکر است مح اوراسلام لاك مح-بيمنه دوامان حصل عبدالتدين المعتصم اصحابي سفي ميسره (النصمة) الشربيل بن اسمط نوجوان آدمی سفے مقرَمَرِین کی خاک مِن ما نتهرت ماصل کی تقی-ساقه رنجعیلاحقه) عامهم بن عمرداتیمی طلایع (گشت کی فرج) سوا دبن ما لک مرورتباً عده فرج) اللمان بن بتيالبالي حال بن الك لاسدى يبيرل شترسوار عبدالندبن ذمي العمين تا منی و خزایخی | عبدالرحمن بن بتیالباملی مشهور صحابی بین-فارس کے رہنے وہلے رايدىينى رسد وغيرو كالسلمان فارسي بندونبت كرك وال بلال بجرى مترمم زاد بن ابی سفیان

فببيك

اُمُراب اعْتَارِمِين سے سَشْروه صَحَابِ مِنْ جِوْزُوهُ بِرِرمِين شَرِكِ مِنْ مِنْ سَوَّو ه جربیته ارمنوان مین ما منر نفی اسی قدروه بزرگ جرفتی کمرمین شرکی منتے - سات ننو ایسے جرمحا بہ نہ منتے لیکن صحابہ کی اولاد منتے -

سعد شراف بی من من کے کر دربار خلافت سے لیک اور فربان آیا میکا معنوان یہ تعا از شراف سے آگے بر حکر قاد سیمین مقام کرو اور اس طرح موریج جاؤگر سامنے عجم کی زمین اور منیت برع ب کے بیاو ہون اکر فتح ہو تو جان کک جا ہو بڑھتے ہے جاؤا در خدانخواستہ دوسری صورت بیش اسے تومہ کے رہیاڑون کی نیا ومین آسکو۔"

تادسید نمایت شاداب اور نهرون اور پلون کی دجه معنوفر نفام تھا۔ حضرت عمر المهیت میں ان مقامت سے اکثر کذرہ منے ۔ اور اس موقع کی ہمیت اور کیفیت سے واقف تنے ۔ جنا بخد سعد کوج فران بھی اسین تا دسیہ کا موقع اور محل بھی ذکور تھا۔ ایم جو کدیرانا بخر بر تقاسعد کو لکھا کہ دوقا دسیم بھی ہر انقشہ لکھکی بھیج ۔ کیونکہ میں سے بوٹکہ یُرانا بخر بر تقاسعد کو لکھا کہ دوقا دسیم بنیل کھیں کہ توقع اور مقام کے پورے حالات محبکون کو معنی منزوری باتین اسی وجہ سے بنین کھیں کہ توقع اور مقام کے پورے حالات محبکون کو مند من منزوری باتین اسی وجہ سے بنین کھیں کہ توقع اور مقام کے پورے حالات محبکون کو مناب میں ایک جو کا ایک بھی کا میں تھے موت اور مالات لکن بھیے بھی کے بیان مجبون کا ایک بھی کا میں تا میں تھے مرت اسی فرد کھا ہے کہ بیا تی جمیون کا میں تھے مرت اسی فرد کھا ہے کہ دورا در مالات کون میں تا تہ جا بیا ہے۔ ہوا با شرقاء ا

ر اکر اتھا اوروہ مفت ات او قادسیت کی سوسے سرطرف مرکارے دورائے کفتیر کی خبرلامین-انفون نے اکربیان کیا کہ رستم زمیر فرزح زاد) جرا رمینیہ کا رمیں سے سیسالار تقرب مواہد اور مداین سے چل کرسا باطبین تقهراہے ۔سعدتے حضرت عمر کواطلاع دی وات حِوابِ آیاکد لڑا ئی سے پیلے کچہ لوگ سفیر سبکر جا مین اور انکوا سلام کی عِنبت دلامین - سعد ت سرواران قبایل مین سے چودہ امور شخص انتخاب کئے دمختلف صفتون کی لحافم سے تام عب میں اتخاب تھے۔عطار دہن حاحب۔ شعث برقیس حارث بن سان- عاصم بن عمر عمرومعدی کرب -مغیره بن شعبه میعنی بن حارثه- قدوقامت- ا ور ظا ہری رعب و داب کے بما ماسے تمام عرب میں مشہور متھے۔ نغمان بن مقرن۔ تبسر ک ا بی رمم- طهین جویت<sub>ه - خطل</sub>ته بن از بیع انتهی<sub>ک</sub> فرات بن حیان ایس- عدمی بن تهمیل ىغىرەبن زرارە بىقل دىربىر- اور حزم وسائت مىن اينا جواب نىيىن ركھتے تھے -ساسانیون کا پای تخت ، قدیم زانے مین صطحریتها دیکین نوشیروان نے مرائن کو دار کہلکنت فراردیا تھا اورائس وقت سے وہی ای تخت چلاآ اٹھا۔ میں تقام سعد کی فرودگا دمینی قا دمسیت ۳۰ بهمیل کے فاصلے پر تھا مفرا کھوٹی آرا کے موسے سيرم مداين بيني را دمين جده رسے گذر مواتها تا تا يؤن كى بعيراگ ماتى تتى. ایمان کم کو استا دُسلست کے قریب پنجار مٹیرے -اگرچہ اِنکی ظاہری عورت ہمتی کا گھوڑن برزین اور اعتون مین متیا زک زتما آهم میا کی اور دیبری انکے چیرون سے مکتی تھی اورتما شائون براسكا أثرته المائمة ب جوسواري من سخة را نون سف كله ما أرشة

اوربار بارزمین برای پ ارتبے سفے بینما بخد ابون کی آواز پر دکر دکے کائی کے سینجی اور استے دریافت کیا کہ یکسی آواز ہے۔ معلوم ہوا کواسلام کے شفرا آئے ہیں۔ یہ سکر نرجی سے سروسا مان سے در بارسجا یا اور شفرا کو طلب کیا۔ یاوگ عربی بھتے ہیئے ، کا ندھون برہنی جاری گرائے۔ یاوگ عربی بھتے ہیئے ، کا ندھون برہنی جاری گرائے۔ گرائے در بارمین و اہل ہوئے۔ بھیلے موکون نے قالے موکون نے مام ایران میں عرب کی دھاک بڑھا دی تھی تروکر دئے سفیرون کو اس نتا ن سے دکھا تو ایک میدیت طاری ہوئے۔

ا بیرسب نے سکوت کیا۔ لیکن مغیرو بن زرارہ صنبط کرسکے اور اُٹھکر کما کہ یاوگ (اپنے رفیقون کی طرف انتارہ کرسکے) رؤسا سے عرب ہین اور طم و وفاری وجسے زادہ گوئی نئین

رمایا جرق جوق بزدگرد کے پاس سنجا فرادی ہوئی کاب ہاری خافت کی جائے ور دہم اللہ عرب کے مطیع ہوئے جاتے ہیں۔ جارنا جارستم کومقا بلے کے لیے برمنا پڑا۔ ساٹھ ہڑا را کی مجبیت کے سابقہ آبا ہوست کلا اور قادسی بنجادیوں ڈائے دیکن فوج جن جربتا ات کا اور قادسی بنجادیوں ڈائے دیکن فوج جن جربتا ات کا دری ہر حکم بنایت ہے اعتدا یا ان کین ۔ تا م اسٹر شراب بی کر دبستیان کرتے سقے اور دوگون کے ناموس کمکا کیا فائیس رکھتے تھے ۔ ان با تون نے عام ملک مین برخیال بھیلا یا کہ سلطنت عجراب فناہوتی نظراتی ہے۔

رستم کی فرمبین جس دن سا با داسے بڑھین سورٹے ہر طرت ہ له دم دم می خبر من مینیتی رمین - فوج کا رنگ دُ هنگ - تشکر کی ترنیب م<sup>ر</sup>آنا رسے کا رُخ -ان با تون کے دریافت کے بیے فوجی ا فسرتعین کیے۔ ہمین کمبی مبنی دخمن کا سامنا بھی موجآ ہاتھ جنا یخه ایک و مغوللیمه رات کے وقت رستم کے نشکرمین بیا س مدل کرگئے- ایک جگرا کی مثر بہا مورًا تقان بربندها و کمیا - بلوارسے باک ڈور کا ٹ کرایے گھوٹے کی باگ ڈورسے اُسکالی سِ ع صے مین بوگ **جاگ** اُسطے اورانجا تعاقب کیا ۔ معورے کا سوارا کیے شہورا منسرتھا اور بزارسوارك برابر ماناجآ ما تعااست قرب بنجكر رجمي كاوا كيا- المغرن نصفالي ديا-وه زمين رگر اینون نے تجعک کر رہمی اری کہ سینے کے ارہوگئی۔ اسکے ساتھ دوادر سوار تھے۔ اپنین سے ایک اسکے اعزے اراگیا اور دوسوے نے اس شرط پرامان طلب کی کومن قبدی نکم مريتا مون- شفوم من تام فرج مين بل على لركني اوروك مرطرت سے نوط يو ن ملیواٹتے عربت صاف کل آئے اور سائڈ مزار فرج دکھیتی کی دکھیتی گئی۔ قیدی

سعدکے سامنے آل سلام قبول کیا اور کما کر مونون سوا رجو الیجہ کے ایجہ اسے کئے میں است آل سلام قبول کیا اور کما کر مونون سوا رجو الیجہ کے ایجہ کا امر سلام کے بعد قبیدی کا امر سلام کے بعد است معلوم ہوئے جوا دکھی طرح معلوم نہیں اور سلام کی فوج کے بیت سے ایسے حالات معلوم ہوئے جو اور کہ اور میرموقع بیزتا بت قدی اور جا نبازی کے جو بیرد کھا ہے۔

رستم بوبکد ارشنا سے جی مجرا اسما ایک دفوا و صلح کی کوششش کی ۔ سعد کے ہیں بنام بمیجا کہ تعارا کوئی معترا دمی آئے توصلح کے تعلق گفتگو کی جائے۔ سعی نے رہبی بن عامر کوہ س مذہت پر امور کیا۔ دوجمیب وغریب ہیت سے ہے۔ عق گیر کی زرو نبائی اور ہی کا ایک ٹکڑا مرسے لیبیٹ لیا۔ کم میں رستی کا ڈرکا بازیما اور لموا رکے میان زیما ہے لیبٹ لیے۔ اس میکت کہ ان کے شریب گھورے پر سوار موکر نکھے۔ وحرا را نیون نے بڑے مروسا مان سے در بار سجایا۔ ویبا کا فرش- نرتین گاؤ تھیے۔ جریر کے پر دسے۔ صدرین مرض تحت رام بی فرش کے قریب اکر کھورسے سے آرہے۔ اور بائل ڈور کو کا دیگھے سے آگا دیا۔

درباری بے بروائی کی اواسے اگر جد کھی نہ ہوئے اہم دستورکے موافق متیار رکھوا لیٹ ا چا استون نے کہا مین کلا باہوا آیا ہون ۔ کمواس طرح میرا آیا سطور منین تومین اٹیا بیر ما آیا ہون ۔ درباریون نے رشم سے عصل کی۔ اُسٹے اجازت دی۔ یہ نمایت ہے بروائی کی او ا سے آ مستہ آسسہ تخت کی طرف ٹرھے ۔ لیکن برجمی صبر سے عصا کا کا مربیا تھا اُسکی اُنی کو ایس مرح فریش میں جیورہ جاتے تھے کاریکھف فریش اور قالین جزمیے ہوسے تھے ما بجاسے

کٹ بیٹ کر رکار ہوگئے یخت کے قریب پنجاز میں رنبزہ ماراجو فرین کو آریا رکھے زمین مین را کیا۔ سرخ نے یو جھاکا س ملک بن کیون آئے ہو؟ ایفون سے کما اس سے کوخلوق کے بیا سے خالی کی عبارت کی جا ہے ' ستم نے کہا مین ارکان لطنت سے مشورہ کرکے جواب دونگا- درباری بار بار بعی کے پاس اگرانکے ہتنیا رو بھیے ستھے اور کتے ستے کواس ال ایران کی متح کا را د ہے ؟ لیکن حب رہی نے لموار سیان سے کالی تو انکھون مرج اسی کوندگئی۔ اورجب اُسکے کا ش کی از ایش کے بیے وُھالین میش کی کئیں تورسی سے انکے کرے اڑا دیے۔ ربعی اسوقت ملے آئے لیکن نامددیا م کا سلسار را رجاری رہا۔ ا خیر سفارت مین مغیره گئے اس دن ایرانیون نے بڑے کھا کڑسے درمار جما یا۔ مِس قدرندیم اورانسر بقع اج زَربنپکار کرسیون پزینھے ۔ ضمے مین دیبا وسنجاب *کا فرمنس* بچیما یا گیا اور خدام اور منصبدار توسینے سے دورویہ رہے جا کھڑے ہوئے مغیرہ گھو<sup>ئے</sup> سے از کرسیہ صدر کی طرف بڑھے۔ اور رستم کے زانوسے زانو الاکر بیٹھی گئے ۔ اس کتاحی پر تام درباربهم مولیا بیان ک کوچیدارون نے بازو کور ایکو تخت سے آارویا۔مغیرہ نے منسران درابری طرف خطاب کرے کها کرمین خود منین آیا - بلکه تم نے بلایا تھا- اِس کیے مهان کے ساتھ یہ سلوک زیبا نہ تھا تھھاری طرح ہم لوگون میں میر وستور بندیں کہ ایشے فس خد انگر بنيقير اورتهام لوگ آسكے اُگے بنده موكر گردن تھ بكا مين مترجم نے جسكا مام عبود تھا اور حيرة كا با شنده مهما اس تقرر كا ترحمه كما توسارا دربار شا ترموا-اورمعن بعض بول أسف كرمهارى هى تقى جولىي قوم كو دلىل سمجت تقے۔

وا دسیری خباک اور فتح محرم سیبانجسری

مرستم ابنک الرائی کو برابرا ال جا اسا میکن نغیره کی گفتگونے اسکواس قدر غیرت دلائی کرائسی وقت کر نبدی کا حکم دیا۔ ننر فزیجے مین مائل متی حکم دیا کوسیج بوتے ہوتے ایک سرک نبا دی مباہے میں کہ یہ کام انجام کو مینجا۔ اور دو بیرسے بیلے بیلے فوج ننر کے اس پاراگئی۔ خو دسا مان خبگ سے آراستہ ہوا۔ و میری ذرین مینین ۔ سربر خودر کھا۔ ہمتیار تھا ملے فا دسہ واق و بر کامنہ رشہر تھا، در در من سب کے دسا بن تھا اب دربان برا ہوا ہے۔ ہارے نقطے بن اسکو منہ

رائن كي مقال مجنا مانيه ال

بعِراسبِ خاصهطلب کیا اور سوارموکر حِبش مین کها گه کُل عرب کومکنا بُور کرد و نگا، کسی سایم كما- إن ارفدان عا إ- بولاكه وخداف زعا إ تبيي"-فوج نبایت زمیب سے آرہت کی آگے تیمیے تیرہ مغین فائرکین قلب کے پیج اتھیون کا قلعہ اِندھا۔ ہو دجون اورعار بون من ہتیار بندسا ہی بٹھائے میمنہ ومیسرو کر بھلے ملوک موریر نامتیون کے برے جائے خبررسانی کے بیے موقع حبا*ک سے یا یُ* بخت بک اِ فاصلے پرا دمی بھا دیے ۔جووا تعدمین آیا تھا موقع جنگ کا آ دمی چلاکر کتا تھا اور درح مائن کک خبر سینج ماتی متی۔ قا وسیمین ایک قدیم شامی محل تھا موعین میدان کے کنارے پر واقع تھا یس کوچونکہ ورکھے 🖟 📆 کی شکارت متی و رفینے پیرنے سے معدور متے ۔ اِس سے فوج کے سابقہ شرکی ہوسکے . ممر*کررا* ا برمیدان کی طرف رخ کرکے کمید کے سمارے سے بیٹے اور خالدین و فطر کو اینے با ی سیا مقرر کیا تا ہم فوج کو اڑا ہے خود تھے یعنی جس وقت جو کمرد نیا مناسب ہو اتھا پر حون لکھکر ا ورگولیان نباکرخالد کی طرف بھینکتے ماتے ہتے۔ او رخالداً تمنی ہرا تیون کے موافق موقع موقع اراً ئى كا سلوب برنتے جاتے مقے - سرن ك انبدائي زمانے من ان خباك كا اس ت ترقی کزائتجب کے قابل اوروب کی تیزی طبع اوربیاقت جنگ کی دلیل ہے۔ فومبين آراسته مرمكيين توعوب كيمشهو رشعرا اوخطيب صفون سنع تحلي اوايخ تغرفها سے نمام فوج من اگ لگا دی منسوامین مناخ محطئیہ اوس بن مغراعبدۃ بن الطبیب ع ومعدى كرب او رخليبون من قبيس بن مبيره - غالب - ابن المذيل الاسدى - نبسر بر

را مین اورس قدر زمنی محتے مرحم سی کے لیے عورتون کے حوالے کیے بیروزے کو کمر سندی کا با - لأائي المبي شروع تنيين بوئ متى كرنته مرى طرف سي عنها را مفااكر دعيق تومعلوم بواكر الوعد سے نتام سے جوامدادی فومبین بھیجیری تبین وہ اپنجین حفرت عربے میں رمانے میں عواق پر مطل كى متياراين كى متين أسى زانى مين الرعب يره كوحرشام كى مم يريا مورسمتے لكر بمبيا تھا كہء ا ق كى جوفوج و ہان بھی ہی گئی تھتی اُسکومکر د و کہسعہ کی فوج سسے حاکرال جائے جنانے میں وقت ی<sub>ا</sub> بە فرخ بىينى اورّائىيۇنىي تىجىمى گئى- تىغە بىزارسا بى سىتقە جن مىن يايخ مېزار رىبعة ومصرا در بېرا تھے۔ ہاشم بن عتبہ (سعد کے بھائی) سبر سالا رسنے · اور مراول قعل کا ب بن تقا تِعَقَاعَ نے پہنچتے ہی صعب سے بخل کرنگا را کدا پرانیون میں کوئی بہا در ہو تومقا هرسے تبمن کلا <u>قعقاع حبیر</u>کا واقعہا دکرکے یکارائٹے ک<sup>ور</sup>لیا ابوعب رکا فاتل حانے نیاستے "- وونون حرایت لموارسے کرمقابل ہوئے- اور کھے در کی ردوبیل ے بعد مہن آراکیا۔ دیریک دونون مرت کے بہا در تنا تنا سیدان بن کل رشحا<sup>ع</sup> مع جوہر دکھا تے رہے۔ سیسان کا شہزادہ شہر را زاعور بن قطبہکے ہا توسے اراگیا۔ برجم رانی جواکی شهورها در تعاقمقاع سے زُرُقل ہوا۔ غرمن نہگامۂ عام ہونے سے بیلے ایانی فوج نے اکثراسیے نامورہا درکھود ہے تاہم بڑے زورشورسے و ونون فومین علرآورہوئی۔ شام کی امدادی فرج کوفتقاع نے اِس تربیسے روانکیا تقاکه میوملے میوسٹے دستے کردیے ستے اور حب ایک دستہ میدان جنگ مین پینچ م**آ**نا م**تا ت**و دوسرا د کو رہے مزوار ببوّا منا-رس مرح تام دن فزج ن كا مأتيا بينه حار بااورايرانيون يُرْعِب مِما أكّيا

ہردستہ اللہ اکبرکے مغرب اڑا ہواآ تھا اور مقاح اسکے سائھ ہوکر دہمن جسسلا ہوا۔ ہوتے ہتے۔

ہ تیون کے لیے قعاع نے یہ تدبیر کی کدا ونٹون برخیول اور برقع ڈال کرہا تیون کی طرح مئیب نبایا۔ بیصنوعی ہائتی حس طرف رخے کرتے سنتے ایرانیون کے گھوڑے برک کر سوارون کے قا پوسے بحل عباتے ستے۔

عین ہنگار خبگ من حفرت عمرے قاصد سنچے خبکے ساتھ نہایت بیتی فیمت وہی گئے۔
اور لموارین تقین ان لوگون نے فوج کے ساسنے بگار کرکھا کو امیرالونیس نے یہ انعام اُن
لوگون کو بعیجا ہے جواسکا حق ا داکر سکیں۔ خبانچہ تعقاع نے حال بن الک۔ بیل بن عمرہ ملکے بین نو ملی عاصم بن عمراتیمی کو لموارین حوالو کین اور قب لیزیر بوج کے جا رہا درون کو گھر ا عابیت کیے۔ بیل نے نو کے جوش میں اگر فی البد رہیہ بیٹو رڈ ہوا

لقر علوا لا فقام انا احقهم انا احقهم ان احقهم الما المعلوم المعلو

حبوقت لڑائی کا ہمگا مدگرم تھا ابو محجر تھفی جواکی مشہور ببادرا ورتباع ہے اور خبکوشراب پینے کے جُرم پر سور نے قید کردیا تھا قید فانے کے در تیجے سے ٹرائی کا تا شاد کی رہے سکتے اور شجاعت کے جومن میں ہے اختیار ہوئے جاتے ہے۔ آخر نہ ضبط کرسکے سلمی (سعد کی دی) کے پاس گئے کرفدا کے لیے اس وقت مجا وجور کردو۔ ٹرائی سے جتیا بجا بوخو داکر ہیں بہران میں ون کا سلمی نے انکار کیا ۔ یہ حسرت کے سابھ واپس آئے اور بار ار بردر د ہو مین شبطار

يرمن تق ـ

كفيحنناان ترحى الخيل بالقنا واترك مشدودا على وثاقيا

س سے بر هکر کیا عم ہوگا کہ سوار نیزہ بازیان کر ہے ہیں 💎 اور مین رمجنسی سرون مین بند ها بڑا ہون

اذاقمت عناني الحدين واغلقت مصاديع من دوني تصم المنادبا

مب کعرا هو نا ما بهنا مون توزنجر استنف نهین دیتی هسه اورد مازی مع بند کردید جاتی بین کوگیار بنوالا پگار تو گلی **د تعامل آ** 

ان اشعار نے مکمی کے دل پر بیا ترکیا کہ خود اگر بیڑان کاٹ دین - انفون نے فراہ طبل مین جاکر سعد کے کھورے پر حبکا ام ملقا تھا زین کسًا اور میدان خبگ مین منچکی کھا ہے کے

مین جا رسورے هورسے پر حبا ام بلها ها رین کسا اور میدان جباب بن پیچار ها صفحت ای تو نوالتے موے ایک د فونمیمندسے میسرة مک کا حیار لگایا۔ بھراس زور دشورسے حلد کیا کوس

طرت كل كئے صف كى صف اكث دى۔ تمام نشكر تتي تماكد يون بها درہے۔ سعد يعبي حيان

تے۔ اور دل مین کتے تھے کہ حکم کا انداز المِحجن کا ہے لیکن وہ تو قید خانے میں تیدہے۔ شام

ہوئی توانومجی نے تیدخانے میں اکر خود بٹریا ن ہیں لین سلمی نے یہ نام مالات سعدسے بیان ریم

کیے۔ سعد سے اُسی دقت اُ کمو۔ ہاکر دیا اور کما خدا کی شیم سلما نون پر حَجْف یون شار ہوئی ہو

سزا منین دے سکتا''۔ابوجم نے کہا بخدامین نمی آج سے تھرکیبھی شراب کو ہتر نہ لگاؤگا۔ خنسا رجوب کی مشہورتیا عرومتی اس موکے مین شرکیے بھتی اورائیکے جارون میٹے

مل کتاب الخراج ما من ابورسف صعفی ۱۰ مسل فشار کوا قات نمایت و نمید و غرب و غرب بن اسکا و بوان برو آ من مجیب کی ب دوراسک مفتل ما لات ملآم ابوا لفرج اصفهانی نے کتاب الا غانی بن تکھے ہن - اصناف شعر مین مرفید کرئی بین اسکا کوئی نظیر نین گذرا جنانچ بازار سحر کی قطین اسکے میے کے دروا رسے براک علم نفسب کیا جا آئا ست حس بر کھا ہوتا تھا ارزی العرب بینی تمام عرب مین سب سے بڑھکر مرفتہ گو- دوا سلام بھی لائی اور صفرت عمر کے درمار

## بمى سائمة سنة - ران جب سروع بوئى تواسنے بيون كى طرف خلاب كيا اوركها-

لوتنب بكوالبلاد و لمتقفى كوالسنة بايد بير البيط كرد و مرفق الم برقابرا مقال الموتنب بالمكود و مرفق الما المراب المراب المراب المكوم المراب ال

میون نے ایک سائقر باگین آٹھا میں اور دخمن پرٹوٹ پڑے جب کا ہے اوٹھبل ہوگئے توحنشا رہے اسمان کی طرف ہو تھ آٹھا کر کہا حذا یا! میرے میٹون کو بجانا ہے

اس ون سلمان و و المراراورارانی دس بزار مقول و مجروح موسے تاہم مع و اللہ اللہ اللہ مع و اللہ اللہ اللہ اللہ الل کا کچر نبیلہ ہنوا۔ یم عرکه اغواث کے نام سے مشہورہے۔

تمسرامرکی یوم العاس کے نام سے مشہورہے۔ ایمین قفاع نے یہ تدبیری کرات کے وقت جندرسانون اوربیدل فرج ن کر کا دیا کہ اور سے دور شام کی طرف کل جائن پوئیے شورسانوں اوربیدل فرج ن کمورے اڑا تے ہوئ ایکن اور اور رسانے اسی طرح برابر اسے جائے ہوئے ہوئے ایکن خراب اسی طرح برابر اسے جائے ہوئے ہوئے ہوئے بہلارسالہ بہنجا۔ تمام فوج نے الٹراکر کا نوہ اراور عمل اور عمل اور عمل کا دی اور اور میں اگئیں۔ سائٹری حملہ ہوا میشن اتفاق یہ کہ مشام جبکو ابو صبیدہ نے اسلام میں اور برابر فوج برسات شوسوارون کے سائٹر ہی جی ایک ایک اور مرابر فوج برسات شوسوارون کے سائٹر ہی جی ایک ایک اور مرابر فوج برسات شوسوارون کے سائٹر ہی خوت کی طرف خلاب کیا اور مرابر فوج برن بھی اجا تا تھا۔ مشام نے فرح کی طرف خلاب کیا او

الما متمارے بمایون نے تمام کو فتح کرایا۔ فارس کی فتح کاج خداکی طرف سے وعدہ ہواہے ے ا ت سے بورا ہوگا معول کے موافق خبگ کا آغا زیون ہوا کو ایرا نیون کی فوج سے اكيسهيلوان شيركي طرح وكارنا موا ميدان من آيا-إسكافيل ووُل وكمفكرلوك اسك مقاسبك سے جی میرات تھے لیکین ایم عجیب اتفاق سے وہ ایک کمزور سیا ہی کے ہات سے اراکیا ایرا بنون نے بخربرائفاکر ہائیں وامین ایئن بین بیدل فومبین قائم کردی تھیں۔عمر معد کی نے رفیقون سے کہا کوئن مقابل کے ہائتی پر حلد کر اہون تم سابقر مہا ، ور ند عمرومعد کر س ماراگیا تو <u>کومودی کرب</u> پیدانهوگا- به که کهلوارمیان سے تعسیف بی اور بائتی پرحما کیا لیکی ميدل فومبين حودامين بالمئن كقلين د فعثه ان بريوث يرين اوراسقدر گرد انعمي كه ينظرسيم گئے۔ یہ دکھیکرازی رکاب کی فوج حلہ آورہوئی اور بڑے موکے کے بعد ترش بیچیے ہئے۔عم معدى ركب كايه مال تقاكه تمام حبم خاك سے اٹا ہوا تھا۔ بدن پر ما بجا رہمیون كے زخم تھے۔ أبهم كموار فيضف من متى اور التحيلاً ما ما عقال المن حالت مين اكب إيراني سواررا رست كلا-ر منون نے اسکے کمورے کی وم کیونی-ایرانی نے باربار مہنے کیا لیکن گھوڑا جگہ سے ہل زسکا الخرسواراتر رمعال كلا- اوريهم لكورك كي مينيه يرجابيعي-

سعدت یہ دکیفکر کہ انتخی سطوت ترج کرتے ہیں وُل کا وُل محبِّ خیا ہے جہے وسلم وعیرہ کوجو یارسی تقے اورسلمان ہوگئے تھے بُلاکر ہوجھاکا اس بلاے سیاہ کا کیا علاج ہے۔ انتخون نے کہاکوا کی سونڈ اور کمیس بکار کردیا بین یہ تمام غول میں دُوہ ہمتی ننا بیت بمیب اور کوہ بیکرا ورگو یا کُل نا تینوں کے سردار مقے۔ایک ابین اور دو مرا آجرب کے نام سے شہرتما سورف قنقاع - عاصم حال ربل وکلاکهاکه میم تمهار بات ب خفقاع نے بیلے کچرسوا اور پیا دے بھیج رہے کہ ہاتھوں کو زغین کرلین ۔ بھرخود برجھا ہاتھ بن لیکڑیل سفید کی طرف بڑھے - عاصم بھی ساتھ تھے - دونوں نے ایک ساتھ برجھے ہارے گا کھون بن بویت ہوگئے ہائمتی تجرھبری لیکڑھیے بٹا ساتھ ہی فقاع کی لوا بڑی اور سونٹر مشک سے الگ ہوگئی۔ اِ دھر بریل و حال نے اجرب پر حلاکیا - وہ زنم کھا کھا گاتو تام ہائمتی آسکے تیجے ہوئے اور دُم کی دُم مین یرسیا ہ باول باکل جمین گیا -

اب بهاورون كوحوصلة زماني كاموقع الاا وراس رور كارن مرا كد نغرون كي كرج سفرر دہل دہل ٹرتی ہتی۔ چنانچہ اسی مناسبت سے اِس موسکے کولیلۃ المریکنتے ہیں۔ ایرا ینو<del>لی</del> فرج نیئے سرسے ترتیب دی <sup>ق</sup>طب مین اور د<sub>ا</sub>مین با مین تیرہ تیر**امن**ین قائم *کین مسلمانون* بمی تام فرج کوسمیٹ کر کھیا کیا اورآ گے بیھے تین رہے جائے سب سے آگے سوارو کا رسالہ . انکے بعد بیدل نومین، اورسب سے بیچیے تیرانداز۔ سورنے مکم دیا تفاکر تمبیری کمبیر رحمار کیا جا و لین ایرانیون نے حب تیر رسانے شردع کیے تو تعقاع سے منبط نہوسکا۔ اوراپنے رکا م ی فرح لیکر دشن پرڈٹ پڑے۔ فومی اصول کے لھا فاسے یہ حرکت افرمانی مین وافل تھی۔ ام را ن كاد منك اور تعقاع كاج ش د كم يكرسور كم تنسب ب امتيا رنولالله حاحف له و نصر اعن اعتفرا تعقاع كوموا ف كرنا اورأسكا مددكار بنا قعقاع كود كمعكر منواسدا ورنبواسدك د کمیا دکمی بخ بحلیہ کندہ یب وٹ یہ ۔ سود ہر تعلیے کے حلے پر کہتے جائے تھے کرفدا اسکو لمعا ف كرنا اوربا وربها - اول اول سوارون كے رمالے نے حلكيا يكين ايراني فومين حودوا کی طرح تمی کوری تقین اس تابت قدمی سے روین کو کمویت آئے زرجہ سکے۔ یہ دکھی کرب کھوڑون سے کو دیشے اور بیادہ حملہ آور ہوئے۔

ایانیون کا کی رساله سترا یا توہی بن عزق تھا تعبیاتی فیت اسپر علم کیالیکن لواین زرہون پرائیٹ انجیٹ انجیٹ کرگئین-سروا تِعبیانی لاکا را-سب نے کما زہون پر تموارین کا نمین دتیین-اسٹے تفصیمین اکرا کیسا برانی پر جیسے کا وارکیا کی کرووٹر کرنگل گیا۔ یہ دکھیکرا ورونکو

عى متت مونى اوراس سادرى سفارك كرساله كارساله براد بروكيا-

مرهی،اورفیزان و مرفر ان کودات ہوئے رستم کے قریب نینج گئ۔ ستم تخت برمنجیا فنج کولڑار ہاتھا۔ یہ حالت وکم پیکر تخت سے کودیڑا اور دیر تک مردا ناڑیا رہا جب زفنون سے اِل

وربولیا تربهاگیلا الل ام-ایدسیای نے تعاقب کیا-اتفاق سے ایک نفرساسنے

اگئی۔ رستم کو دیڑا کہ تیرکنل ما ہے۔ سائٹمی ہلاآ مجی کو دسے اور ڈائی۔ ، کیوکر ما ہو کھینج السنے عبر لدوارسے کام تمام کردیا۔ ہلال نے لائٹ مجردن کے ایون بین ڈالدی اور تخت برطر کھڑ گئی ہے کہ در رستم کامین نے فائد کردیا ہے۔ ایرا یون نے دمکھا تو تحت سیسا لاسے فالی تھا تمام فوج کر رستم کا میں بھا کو جم گئی۔ مسل نون نے وور تک تھا قب کیا اور ہزارون لاشین میدان میں بھیا دیں۔
جھیا دیں۔

ا منوس ہے کہ اِس واقعہ کو ہمارے ملک انتھوا دیے قومی جوس کے ازیسے اِ لکل علم

برا مرحز وسنے بکردار عب نیک سوی رستم نیک سوس سعد چودیدار سیم بخون تیره گشت جوان مردِ تازی بردچیر گشت

ہارے شاع کو یم معلوم ننین کرسوراس وا قدمین سرے سے شرکی ہی ذیتے۔

شکت کے بدر می جندا موانسر ورباستون کے الک تقومیدان مین ابت قدم رہے۔ ہندے

شهرایه- ابن الهربه- فرخان ابهوازی یحنه و شنوم بهدانی شے مردانه جان دی۔ تیکین مرفران بهود تن مارن موقع بایر بمباگ نکلے - ایرانیون کے کشتون کا توشمار نرتھا یسلل ن بھی کم وہیں

منيد مزاركام أك-

اس نتے میں ویکسعد خود شرکی خبک ندستے فوج کو اکلی طرف سے برگانی رہا

سل علاً مر با دری نے تکھا ہے کرہتم کے قاتل کا ام معلوم نین ۔ لیکن عمرومعدی کرب علیم بن قولیر فولین عجل ال آیون اسپرطاکیا تھا ہوئے جوروایت لکمی ہے وہ الا خبار العوال کی روایت ہے۔

بثكةادسي

يهان كركي شاعف كما-

وقالت حنى انن ل المه نص لا

این برا برازاکیا-بیان کمک کرفدانے اپنی مردمیمی

فابنا وقدامت ساءكثيرة

ېم وايس پېرس تومسيكرون عورتين بوه مومكي تتن

لکن سعسدگی کوئی بوی بعوه مثین بهوئی

وسنواة سعداليس فيهن الشئر

لیکن سعد- فا وسی کے دروازے سے ملیط رہے

م اشعاراً می وقت نیج دیج کی زبان برجر ملکئے - بیان کر کرسورنے تمام فرج کو میم کر کرا این کرون کی ایک دارد مین میزار میں

آلبون کے زنم دکھائے اوا بنی معذوری ٹابت کی۔ م

فرایا نبین کچر ہرج نبین ہم سلسار کلام کونہ در وخیا بند اسی طرح اسکے رکاب کے ساتر ساتھ گھریک آئے۔ مرتبے سنجام میں عام میں فتح کی خوشخبری شائی۔ اورا یک منایت پُراڑ تقریکی

حبيكا اخيرفقره يتقائيسل نوامين لبوشا منين ببون كتمكوغلام نباناجا هون بمرُح فود خداكا غلام ہون البتہ خلافت کا بارمیرے سرر رکھا گیا ہے۔ اگرمین اِس ملرج بھا را کا مرکزون کرتم ہیں۔ المرون مین سوئو تومیری سعا دت ہے اورا گرمیری میخواسش مورکر تم میرے دروازے پر ما ضری ووتومیری مرخبی ہے۔ مین محتولیم دنیا جا ہما ہون کین قول سے نبین لکھ عمل ہے، ا وادسيك مرك من وعجب إعرب ملانون سارم عقرانين السامي جوْل سے زُنا منین چاہتے تھے بلکہ زردستی فوج مین کمرا سے تھے۔ مبت سے لوگ گھڑھو گر کا کستے مقے- فتے کے بعد یوگ سع رکے پاس آئے اور امن کی ورخو است کی سعون ور مار فلافت کو لكها حفرت عرف صابركو للاكرراس لى- اورسب ف بالاتفاق منطوركيا عرص تام مك كوان ویدیا گیا۔جونول گرمیور کر من گئے تھے وائس آاکر آباد ہوتے گئے۔ رعایا کے ساتھ یوار تباطر جا الاكترزرگون ف امنین رشته داراین كرسن ایرانیون نے قادسیے سے بھاگ کر بابل مین مقام کیا تھا اور چونکہ ہوا کی محفوظ و مقام تقا- اطینان کے ساتھ جنگ کے تام سامان میاکر تھے۔ اور فیوزان کو سرنشکر قرار سینابری دیاتھا۔ سعدت انکے استصال کے سے سیابی بری میں بابل کا الدہ کیا اور نیدسروا راسکے ر وا ذركيے بررمسته معاف كرتے جا بين بينا بيد مقام ترس مين تقبيري ستراه مواا ورميدان خلک مین رقم اُنٹا کر ابل کی طون بھاگ گیا۔ برس کے رئیس نے حبکا نام سبطام تعاصلے كرلى اور ابل كم موت يموقع بل تلاكر ادب كاسلامي فومين به تكف كذرها من إلى ین ار دعیم کے رسے بیسے سروا نخیروان- مرزان- مران مروان و وفرو تھے لیکور

میدخانے کی مگراب تک مفوظ مقی - سعد اسکی زیارت کو گئے اور درود میر ایت ایس ایس الله الايام نلا ولها بَينَ الناس بوقى سے أسك إستخت ك قريب بروتيراك مقام مقا بهان ایک شاہی رسالہ رہتا تھا جومبرروزایک بارشم کھا کرکتنا تھا کہ، حب کہ جم بیلینتِ فارآ

تبی زوال بنین اسکتا ، یمانی یک نشیرالی بواتها جو کبرکے سے بہت بلا بواتها اوراسی لیے اس شرکو ببرؤ شیر کہتے تھے۔ سعد کا نشار قریب بینچا تو وہ ترب کر کلالیکن باشم نے جو مبراول سے اصر تھے اِس ضفائی سے کموار ماری کروہین ڈھیر ہوکرر کمیا۔ سعر نے اِس بیا دری را میں

110

مِینان جوم ل-

أتح برمكر سورف بهرؤستيركا عاصروكيا اورفوج ف إدهراد هرميل كرمزارون أدمى كرفيار مع مشرزاد نے جوسا باط کارئیس تھا سوسے کماکریمولی کاشتگارین انکے قید کرنے سے کیا مال بنا پزسعد مرانک ام ذقرمن درج کرانیے اور چیور دیا۔ اس ایس کے تام رئیبو<del>ن کے</del> جزية قبول كرلها ليكن شهر ريقبغه منوسكا- دُوسُية ، رميني يك را رجها صور با -ايرا في م يميمي فلعه سے خل كم سوكه آرام و الصفح - ايك دن رفي جوش خردس سف سب عرف برفرين و مريان موران مير رسات برك على مل انون نع بمى برا بركاجراب ديا - زمرة جراك مسهوا وسرتها وروكون مین سب سے ایکے آگے رہتے تھے ۔ انکی زرہ کی کوان کمیں کمیں سے ٹوٹ کرئی تیں۔ لوگون نے کہ الاس زره كوبدل كزئ مين بيجيد برائ كين ايساخون متست كمان بون ؟ كومش كيترس كو چور کرمیری می طرف این - اتفاق بیکربیلاتیرامنی کواکرنگالوگون نے نظالما یا او انتخاب منا لیا کرجب مک بیر بدن مین ہے اُسی وقت تک مین زندہ مجی ہون "جیا پیزائسی حالت مین حملہ رت بوست مرمع ا در شهرراز کو جوایک نامی ا ضرفعا توارست ارا- تعیری در آرکرارانی ما گسیا أورشروانون في المعلم كالميرر إأرايا-

برشيراورماين من مرف وجله مايل تعا سودبرشيرس بنه واسكه دمارتما الانوا

نے بیلے سے جمان جمان کی بدھے تو ورکر بکارکوٹ متے۔ سورد ملرک کارے بر ا پنچے توزیل بھٹ دفیع کے فرح کی مرت نماطب ہوکر کھا۔ براورانِ اسلام! دہمن نے ہومرف سے مجبور ہو کردریا کے وہن میں بناہ ای ہے۔ بیٹم معی سر کراہ تو میر مطلع صاف ہے » سیک کو گھوڑا دریا مین وال دیا- انکود کھیکرا ورون نے بھی مہت کی اور د نعتہ سب نے گھوڑے دریا مین ڈالدیے · و. پااگرچیهنایت دفارا ورمواج تھالیکن تہت اور چین نے طبیعتون میں بیہ تقلال پیدا ار دیا ہتا کر موہبین را برگھوڑون سے اکر گراتی مغین اور پر رکاب سے رکاب سے رکاب ملاکر آمیں میں بانتین کرتے جاتے تھے۔ رہان کے کہین وسیار کی حوز تمیب بھی آمیر بھی فرق نایا وورس كنارب برايراني يه حيرت أكميز تانتا دكيوب متع حب فرح بالك كنارك كتوب اَكُنَى تُواْ كُوخِيال مِواكه بدأومي منين ، جن مِن - خيانجد- ديوان أمرند- ديوان أمرندكت موسك عبائے۔ ام سیسالا خرزاد تقوری سی فرج کے ساتھ جارہ اور گھاٹ پرتیرا زوزون کے دستے متعین کردیے۔ایک گروه در ایمن آرکرستراه موالیکن سلان سیلاب کی طرح ترصتے ملے گئے اورتیراندازون کوهن وفانتاک کی طرح ہٹاتے یا زیل آئے سیزد کردشنے حرم اورخا نداشتا ہے کو ميهليمي حلوان رواز كردبا بتعاميه خبر شكرخو دمبي شهر ميور كزنل كيا يسعد مراين مين داخل موسئة برطرف تناماتها-نهايت عبرت موئى اورب إختيارية بتين زابن سيخلين بحد تن كعا من جنات وعيون وَمرد في عومفا إلكر بير وبعمة كانوا فيها فاله ين الد وَ أُوسُ مِناهَا فَوْمًا احْسِينِ -

مله اليخوري من بيندسي الفاظين-

ابوان كسرك مين تحني شاي كے بات مرتفب موار فيائ ميدي ما راسي من ادا لی گئی اور پر میلاهم به تفاجرواق مین اداکیا گیا- ہمارے فقما کوتعجب ہوگا کوسی دئے باوجود مکہ اکا ہر معاببین سے تھے اور ربون خباب رسالت اب کی عبت میں رہے تھے عالمگیرومحمود کی تقلیہ مین کی بلدایوان مین مرحب مدمیر مقصورین تقین سب برقرار رہنے دیں -وَوَمِّنَ ون عَمُر كرسعدت حكم دياكرا يواناتِ شامي كاخزا نداورنا درات لا كريكما كيه جامين-بانی سلسلےسے لیکرنوشیروان کے عمد کک کی مزارون یا دم کا رضرین مثنین- فا فان مین رامردم رر دم ـ نغان بن منذر سیا وُتن - ببرام چوبین - کی زرمین اور لموارین تقین کسیری، هرمزاور بادك ننوسف توشيروان كالاج زربيجار ا در لمبوس شا بي تما سونے كا ايك كھوڑا تعاميم عاندی کازین کساہوا تھا۔ اورسینے پر اقیت اورزمرو جڑے ہوئے تھے۔ چاندی کی ایک ڈی متی جبیر سونے کی یالان بھی اور مہارین ببیٹر تمیت یا قرت پروٹے ہوئے تھے۔ ناقہ سوار س<u>ر س</u>ے بإنون كب جوابرات سيمرقهم تفايب سيعجب وغريب اكب فرس تفاصكواراني مها كنام سيكارت تقديه فريش إس غومن سعيقار كياليا تعارجب بباركاموم كل ما باتعا وأمير مبيكي رشراب بيتي تقع اس رعايت سي أمين مبارك تمام سامان متيا كي مقع بزج من سنرے کا مین مقا- جارون طرف عبد دلین تقین- ہر متھ کے درخت اور ورخون مرتب ہے وربيول ادعيل مقعه عُرّه بيرُم وكي تعازر وجوا هرات كانتما ليني سونے كى زمن - زمّرو كا سبزو راج کی مدولین ۔ سونے ما ندی کے درخت حررکے تیے۔ عوابرات کے عیل مقے۔ لے ملار بری سے جراب محدث بی مقع تعربے کے ساتھ ایس وا تدکو لکھا ہے۔

محانام مربندین ایک خف تماج نهایت موزون قامت او خوبهورت مقاحفرت مح نے حکم دیا کہ نوشیر وان کے مبرسات اُسکو لاکر بنیا نے جائیں - یہبرسات محقف حالتوں سخے سواری کا جدا - دربار کا جدا حبث کا جدا ۔ شنیت کا حدا ۔ خیا بخیہ باری باری تمام مبرسات محاکم بنجائے گئے حب مبرس خاص اور اپنج زرگار بینا تو تا شایئوں کی آنھیں خیرہ ہوئین اور دیر کک لوگ حیرت سے تکتے رہے - فرش کی شبت لوگوں کی راسے متی کر تفسیم نہ کیاجا سے خود حضرت عمرا بھی ہی مشارتا کی جفرت علی کے احرارسے اس مباریج بھڑان آئی موردولت نوشیروا تی کے مرقع کے بُریزے اُر گئے۔

یورپ کے مرج دو زات کے موافق ہا ایک دشیانے وکت تھی لیکن ہرز مانے کا فراق جدا ہے۔ و معقد میں ریا یہ جس مین زخار وب و نیوی کی عزت منین کیجاتی تھی۔ دنیا دی او کارون

کی کیا پرواکرسکتا تھا۔

جلولار سيب لترابجري

یه مورکه فتوحات عواق کا خارمته تھا۔ مداین کی مختصے میدر ایرانیون نے مبلولا رمین خبگ کی

تياريان شروع كبين اورا يك برى فوج عمع كربي <u>مخزا ونه</u>يج وستم كانجا بي اورسرنشكرها نها

تدبیرسے کام لیا۔ شہرکے گردخندق تیار کرائی اور پیتون اور گذرگا ہون برگو کھرو کھیا دیے۔

سعد کو بیخبری توحفرت عمر کوخلا کلما - و بان سے جواب آیا کہ باشم بن عتبہ آبرہ ہزار فوج لیکر اس مئم پر ماہئین اور مقدمتہ کمبیش رقعق کی مینہ نیسو بن اللہ میسرہ پرعمو بن الک سادیا

مران ما بدن برا می مرد مرمه این بیشن میشد به حرب مرب میشیری به مرد برای مان میشد. عمروبن مرقه مقرر مون- مانتم، مراین سے روانه مور حوب تقے دن جلولاً رمیو پنے اور شهر کامحام ا

ایا۔ مینون مما مرور بارانی وقا فرقا قلعت کل رحله اور بوت سفے۔ اس طرح اتنی موسے

ہوسے لیکن ایا نیون نے ہمیششکست کمائی اہم جو کہ شہرین مرطرے کا ذخیرہ دمیّا تھا اور

لا كمون كى مبيت متى بيدل نين بوت مقے -ايك دن بيت رورشورس كے يسلما نوب ك

مبی حم کرمقا بله کیا- آنفاق بیرکه د فعتهٔ اس زور کی آندهی ملی کزرین داسمان مین اندهیار ایگا مربعی میرکه ایرکها

ایرانی مجبور ہوکتیمیے ہٹے۔ بیکن گردو عباری وجسے کچھ نفر منین آنا تھا۔ ہزارون آدمی خنرق من گرگر کر مرگئے۔ ایراینون نے یہ دکھکر جا بجا سے خندق کو بایٹ کر استہ نبایا مسلمانوں کو خبر

ہوئی توا مغون نے اس موقع کونتیت ہما اور حلے کی تیار مان کمیں ایرانیوں کو بھی دم دم کی

خبرين بنيتى تقين أسى وقت سلانون كى أكدك ترخ كو كعرو تجيوا دي اور فوح كومروسال

مله جلولام - بنداد كسوادمين اكم مشرب وبب عيوم مونيك فقية من مندع منين مح مبدادس فراسان جاسك وقت را وين يراسط

سے درست کرکے قلعہ کے در وازے برح اویا۔ دونون حرایت اس طرح دل توٹا کراٹھ کرانڈالٹرک کے سوائمبی نبین ارک تھے۔ اول تیرون کا میغر برسا ٹرکش خالی ہوگئے تو بہا درون نے نیرے بنماك بیان نك كزیزے بمی توٹ توٹ كرد مير مركئے تو بيغ ونج كاموكر شروع ہوا فتقاع نہایت در<sub>یم</sub>ی سے رٹر ہے بہتے اور را رائے بڑھتے جانے بہتے۔ بیان مک ڈھوکے بھالک تب بینج گئے ۔ لیکن سیرسا لارفوج معنی <del>امتم تیم</del>ے رہ گئے تھے اور فرج کا فراحتہ انفین کی **کا** م مين تما - تعقاع نے نقيبون سے يكردا دياكسيدسالار، فلعدكے دروازے كي سنج كيا ہے فرج الم و التم الم التم المرونعة ولا الري الراني المرازان المرازاد هر الوهر الماك المكن من طرف جانے تھے گو کھردیجھے ہوئے تھے مسلمانون نے بیدریغ مثل کڑا شروع کیا۔ بیان کک کومورخ لبری کی روایت کے موافق لا کو آدمی حان سے مارے گئے۔ اور مین کروفنیت ایترائی۔ سورك فرده منتح كساتم الخوان حقد مريز منوره بعيار زادت موفروه فغاك لئے تھے نہایت مضاحت کے ساتھ جنگ کے حالات بیان سکیے حضرت عرف فرایا کوان قاتما داسی طرح مجیع عام مین بھی بیان کرسکتے ہو ہے زیاد سے کہا مین کسی سے مرعوب ہوتا تواکی سے ہرتا۔ خِنا پنہ محمع عام ہوا اور انتفون نے اس فضاحت و **با**عنت سے تمام وا قعات بیان سیسے مرکری تقور کھینے دی۔حضرت عربی استھے کی خطیب اسکوکتے ہیں۔ انتخون نے برجت کہا۔ ان جندنا اطلقون بالفعال الس اسك مدرز باد سنفنيت كا ذخيره ما مزكيا يكن أس وقت شام بريكي عتى اسك بيم لتوى ربى ا ورمون مجرمين انخا دهير لكا وياكيا - عبدالرمن بن عوف اورعبدالله بن ارقع

رات بحربیره و یا صبح کو مجمع عام مین جا در مانی گئی دیم در نیا رکے علاوه انبارک انبارجوا برات محربیره و یا صبح کو مجمع عام مین جا در مانی گئی دیم در نیا رک علاوه انبارک انبارجوا برات سخت حصرت عمرب ماخته رو برس بورس بورس می ماخته ای برخی در انبار کا قدم آنا ہے زندک د صدبیمی ساخته ای برخی آر کا در ان کی در دانبروا اور حضرو تستونم کو جوا کیک مغز دانسر تھا جند رسالوں کے ساتھ کا دانسی حفاظت کے بیے جیٹور ناگیا سعی خود جلولاین مغز دانسر تھا جند رسالوں کے ساتھ کا دانہ کی حفاظت کے بیے جیٹور ناگیا سعی خود جلولاین مغرب در دانہ کی حادات کی حفاظت کے بیے جیٹور ناگیا سعی خود جلولاین مغرب در دانہ کی طرف روانہ کیا ۔ قدمات کے جیٹے جیٹور ناگیا سعی خود جلولاین کے طرب در دانہ کی حادات کی حفاظت کے بیے جیٹور ناگیا سعی خود جلولاین کی حادات کی حادات کی حادات کی حادات کی حدادت کیا ۔ قدمات کے جیٹور ناگیا سعی خود جلولاین کی حدادت کی حدادت کی حدادت کی حدادت کی حدادت کی منافت کے حدادت کی کارس کی حدادت کی حدادت

ے قریب بینے بھے کونسروشنوم خود آگے بر حکرمقابل ہوالیکن شکست کھا کر بھاگ کا اقتقاع نے حلوان بنج پرمقام کیا ا در ہرطرت امن کی منا دی کرا دی- اطراف کے رئیس اگر خربیول

رتے جاتے تھے اور اسلام کی حایت مین آھے جاتے تھے۔ یہ فتح عواق کی فتوحات کا فائد تھی۔ کیونکہ عواق کی مدریان ختم ہوجاتی ہے۔

فتوحاتبثام

تمام ملک سے نومبین مم کرکے الگ الگ اصرون کے مقابلے بھیمبین ، یہ دکھیکر اصراب ا ف اسپراتفا ق کیا کدکل فومین کمیا حمیع ہوجا مین -ایسکے ساتھ حضرت الو کمرکوحفا لکھا کہ ا و ر نومین مرد کورواز کی حامین<sup>،</sup> خی**ایی خالدین اولید ج**و<del>واق کے ع</del>مم رامور منصح واق سے جل کرل<sup>و</sup> من عبوتی میوٹی اڑائیان اڑتے اور فتح حاصل کرتے ، وشق بینے۔ اوراً سکومدر مقام قرار دیکر وان مقام كيا تقيصرف ايك ببت راى فرح مقابلے كے ليے روان كى جنے اجنا دين بہنچار خبگ کی متیاریان شروع کمین <sup>،</sup> خالدا ورا ہوعب یہ خود مثیقیر می کرسکے اجنا دین تر رہھا و ورا فنسرون كولكريم إكروم بن اكر لمحامين، خيائية شرجل يزيد عمروين العاص- وقتِ مقرّره پر آخبا دین بینج گئے۔ خالد نے بڑھکر حارکیا اور بہت بڑے مورکے کے بعد میں میں بین ہزار لمان ارسے سُئے نفتح کا مل حاصل ہوئی۔ یہ واقد حسب روایت بن اسحاق مہم دی لاق سے ہمین واقع ہوا۔ اِس مهرسے فاغ ہو کرخالدنے پیر دُشْق کا رخ کیا اور تیق ہینچ ک مرطرف سے شہرکا محا صرہ کرایا ، محا صرہ اگر حیا حصرت ابو بکریکے عہد میں مشروع ہوا۔ لیکن جزئد متح حضرت عمرك عهدمين ماصل موئى بم اس مركه كا حالفي اس محصة من فنتح ومشوت بيه شهرشام كاايك براصدر مقام مقاءا ورجونكه جأبهيت مين البع بابتارت كيعلق سے اکثروہاں آیا مایا کرتے تھے اسکی طنت کا شہرہ تمام عرب مین تھا۔ان دجرہ -افالدند براے اہتام سے می مرمے سا ان کیے۔ فہرنیا ہ کے برے برے دروازون پرائن امنسرون کومقرر کیا ج<sup>نت</sup> ام کے صوبون کی فتح پر امور ہوکر ایسے تھے۔ جنا بخی<sup>ہ عمر و</sup>

<u>ښالعاص - اِب توا پرِ- نشرجل اِب الفرادس</u> پر- ا<u>بوعب پره، اِب الجابيته پر</u>متعين موس<sup>ا</sup> اور خروخالد نے ایخ ہزار فوج سا تدلیکر باب الشرق کے قریب ٹوریسے ڈوائے محاصرہ کی مختی وكميكرعديا بئ بمبّت إرب جات تقے ضوماً اسوجہ سے كہ آنكے جاسوس جردر یافت مال سے يے سلانون كى فرح من أتے تھے ، أكر د كھتے تھے كہ ام فرح من اكب جوش كا عالم ہے۔ شرفض بر ایک نشه ساچها یا ہے۔ ہرم فرومین دلیری آبت تدمی، راستبازی، عزم اورا شقلال پایا آ ہے تاہم انکویہ سمارات اکہ تول سررموج دہ اورمع سے امرادی فرمین عَلِی میں -سی آنا -من مصرت ابو کرنے اتقال کیا اور مصرت عمر سند آراے خلافت ہوئے۔ عيبا يئون كويمبي خيال تفاكه إلى عرب إن مالك كي سردي كي برد اشت منين كريكتے عليم موسم سرائک یه بادل آپ سے آپ تعینٹ جائیگا۔لیکن آنکی دونون امیدین سکارگئین مسلما فزا کی سرگرمی جاڑون کی شدّت من بھی کم ننوئی ۔ اُوھر خالد نے ذوا کلاع کو کیرفزج دی<u>کرومشق</u> سے ا کی منزل کے فاصلے پرتعتین کردیا تھا کا اُوھرسے مردنہ آنے یا گئے خای ہر ممل نے مقل سے جونومبين مجيم بي مين روك الكئين- ومشق دا يون كواب بإنكل ياس بوگئي، اسي أنمار مین اتفاق سے ایک واقعہ میں آیا حوسلما نون کے حق مین تائینونیسی کا کام دے گیامینی بطربق دمنت کے کھرمین از کا پیدا ہواجسکی تقریب مین تام شہر نے فوٹنی کے علیے کیے اور اس کترت سے شرامین بین کر ثنا م سے پڑ کر سورہ - خالدر اتون کوسُوت کم تقے او مِعموری کی در ا ذراسی بات کی خبر رکھتے تھے ، اِس سے عمر موقع کمان بات آسکتا تھا، اُسی وقت أمنے اور حید بها درا منہ دن کوسا تولیا ۔ متر نیا و سکے بنیجے خندق اپنی سے لبرزیمتی کمشک کے

سمارے بارا ترے اور کمندے ذریعے سے ویوار برج هدائنے-ادیرجا کرئتی کی سارھی کمندسے اٹھاک ینچے لٹا دی،اس رکیب سے تھڑی درمین مبت سے جان نتا نصیل پر پہنچ گئے۔خالا ہے أتركه يليدر بانون كوترتين كيا- محتفل توطركر دروازے كھول ديے-ا دھر فوج سيكے سے طت ا کھڑی تھی۔ وروازہ کھلتے کے ساتھ سیلاب کی طرح گھسل ئی ادربیرو کی فوج کو تہنیغ کردیا، عیسا یئون نے یرنگ دیکھ کشہرنا ہے تام دروازے خود کھول دیے اور ابوعبیدہ سے متجی موسے کہ بمكو<del>فالدس</del>ے بيانيے <u>مقسلاط</u>مين حربط طيرون كا بازارتھا<sup>، ا</sup>بوعبيده وخالد كا سامنا موا-**فال**د نے متہر کا جوحقیہ متح کیا تھا اگر حیار کر فتح کیا تھا لیکن ابوعبیۃ سنے چونکہ منظور کر لی تھی ۔ مفتوصهصِّیمین بمی صلح کی شطین تسلیم کی گئین بعنی زمنیمت کی اجازت دی گئی۔ نہ کوئی شخص بونٹری غلام نبایا گیا- ب*یمبارک فتح جرتما*م بلاد تِسامیہ کی فتح کا دیباجی*تھی۔ رحب ع*الم میم کو فخل- دوقده مسلم بجري ومتن کی تکست نے رومیون کوسخت برہم کیا اوروہ مرطرف سے جمع موکر رہے زور اور قرّت کے سابھ مسلمانون کے مقاببے کے ہے آہارہ ہوئے - دمشق کی فتح کے بعد حوکہ سلما د کے اردن کائرج کیا تھا۔ اس کیے اُتھون نے اُسی صوبے کے ایک شہور شہر مبیان مرفوم ن ممع كرني ستروع كين يشهنشا ومرفل نف دشق كي امراد كے ليے جونو صين بي يحتين ورد تو تک زَمَيْخِ سَكِي تقيين - دويمي مين أكرشا لل بركنين - اس طرح مين جاليين مزار كالمحمع بوگيا جسكا لے مطبری کی روایت ہے۔ بلاذری کا باین ہے کہ خالد کو عیسائیون کے جشن کی خبرخود ایک میسائے نے دی تھی اور مٹیرحی بمی عیسائی لائے تھے۔

سيه سالار سكلارنام ايك ردى افسرتفا-

موقع خبگ کے سمجھنے کے لیے یہ تبادیا عزدرہے کہ شام کا ملک حمیاضلعون مین نفسم ہے جنین سے سوئشق جمص اردن فلسطین بشہور منالاع ہین -اردن کا صدر مقام طبر ہیں ہے جو

وشق سے غارنزل ہے - طبریہ کے مشرقی جانب باراہیں کی ہی ایک میں ایک میں ایک اس

چندمیل پرایک چیوٹاسا شهرتماحبکا پُرانانام مسلا اور نیامینی عربی نامخل ہے۔ یاڑائی اسی۔ تہرکے نام سے مشہورہے۔ یہ مقام اب بالکل دیران ہے تاہم اسکے کیرکھیڑ آپارانجی

سمندری سطع سے خیبہ سونیٹ لمبندی رہیسوس ہوتے ہیں۔ بیان طبریہ کی حزبی طرف میل

پرواقعے-

غون وی نوجین بهیان مین مجمع بومین اورسلمانون نے انکے سامنے قل میں مراؤ والا، روبیون نے اس ڈرسے کوسلمان دفعتہ نا پڑین - اس باس جس قدر ندین تقیق کے بند تورد ہے اور قول سے بیا ت کہ تما م عالم آب ہوگیا۔ نیجر اور پانی کی و وجسے تما مراہ ایک کئے لیکن اسلام کا سیلاب کب ترک سکتا تقایسلمانون کا ہتقلال د کھی کوسیائی سلح برا ما دہ ہوئے اور ابو عبیدہ کے باس بنیا مربعیا اکر کی شخص سفیر نظر آئے - ابو مبیدہ نے معافر بن جیل کو جیمیا، منعا و ۔ روبیون کے نشکر من بینے تو د کھیا کہ چنے میں بیابی زیر کا وراب بیجا ہے۔ و بین عار گئے ۔ ایک عیسائی نے اکر کما کہ کھوڑا میں تھام لیتا ہون اآب دراب مین جاکز شخصے ۔ معا ذکی برگی اور تقدیم کا عام جرجا تھا اور عیسائی جک اس سے قوام سنے ۔ اس سے وہ و اتعی آنکی بڑگ اور تقدیم کا عام جرجا تھا اور عیسائی جک اس سے قام سنے ۔ اس سے وہ و اتعی آنکی بڑگ اور تقدیم کا عام جرجا تھا اور عیسائی جگرا رہنا آنکور ان کو آتھا

. فأذنه كهاكرمن اس فریش پرحوغ پیون كا حق جیمین كرطتیار مواہبے معینیا منین ما ہما، يكما ر مین پرمٹیر کئے۔عدیبا یؤن نے افسوس کیاا درکھا کہم متماری غز*ت کرنی ماہتے تھے لیک*ین لرخودا بن عزّت کا خیال نبین رمبرری ہے معا ڈرنوغصّہ آیا گھٹنون کے بل کھڑے ہوگئے<sup>۔</sup> در کها که در حبکوهم عزّت سمجتنے موجهکو اسکی بیرواننین اگرزمین برمبینیا غلامون کاشیره ہے توجیسے ۔ هکرکون خدا کا غلام ہوسکتا ہے ؟ رومی انگی بے پروانئ اورآزا دی برچیرت ز دو تھے *ب*یان کرایک شخص نے بوعیا کرسلما نون میں تم سے بھی کوئی ٹر حکرہے ؟ اُنھون نے کہا ‹رمعا ذاتُ سے برتر بنون 'رومی ٹیپ ہو گئے ۔معاذ شمے کیجہ دیر یک انتظار رکے مترجے سے کماکورون سے کمدوکراگر تکو محصیہ کی کمنا نبین ہے تومین وہ سے جا اہون، ومیون نے کہا ہمکویہ بوجینا ہے کہ تم اس طریت کس غرص سے آئے۔ ابی سینسیا کا لمک تم نرب ہے۔ فارس کا باد ثنا ہ مُرُکیا ہے اور للطنت ایک عورت کے بات میں ہے، اُکو تھوڑا تمنے ہاری طرفت کیون ترخ کیا ؟ عالا کمہارا بادشا ہسب سے بڑا بادشاہ ہے اور تعداد میں ہم آسمان کے شارون اورزمین کے ذرّون سے برا برمین' معاز نے کہا درسب سے بہلے ہماری پر درخواست ہے کہ تم مسلمان ہوجاؤ۔ ہمارے قبلہ کی طرف نماز پڑھو سنتراب بیزا محدودہ تُورِكاً كُوسْت نه كما ؤ- اگرنم نے ایسا کیا توہم متھا رہے بھا بی ہیں-اگراسلام لا مامنطور مند ہو جرم ا ہیں سے بھی انکا رمو**ز**و آھنے تموارہ -ا**گر**تم اسمان کے شارون سے برابر ہوتو ہمکوفکت او زت كى روانين بارك فداف كمات كومن فيية قليلة غلبت فت لكثيراة داس**یزا زے کرتمایسے ت**نا ہنشاہ کی رعا یا ہو مبکو متھاری جان وہال کا اختیارہے،لیکر بہنے

جبکواینا با دنیا ه بنا رکهاہے، وهسی بات مین اینےات کوتر جیے منین دے سکتا۔اگروہ زلا ارك تواسكورت كانے جابين - چورى كرك توبات باك داك جابين - ده يردك مين بنين بنجفيا- اپنے آپ کو تمسے بڑا ہنیں سمجتا۔ ال ود دلت بن اُسکو ہم برکوری ترجیح ہنیں ۔ روميون نے کہا۔ اُ تیما ہم تکو بلقاً رکا ضلع اورار دن کا وہ حِصّہ جوہتھاری زبین سے مقال ہے ویتے ہیں۔ تم یہ ملک چیوڑ کر فارس جاؤ ہوعا ذ نے انجار کیا اور اٹھکر جلیے اسکے۔ رومیوں نے برا ہر است ابر عبیدہ سے گفتگ<sub>و</sub> کرنی جا ہی، جنا پنہ اس غرصن سے ایک خاص حاصہ مہیجا ۔ حب وقت وهُ بُنيخا - ابوعبيده زمين يزميني مهوئ تقيم اور بالتهمين تير سقي حبكواكث لميث كريج تقے۔ قاصدنے خیال کیا تھاکہ پیسالار ٹراجاہ وختم رکھتا ہوگا اور میں اُسکی ثنا خت کا در بعیہ موگایکن دہ جس طرت انکوا تھا کر دیکھیتا تھا سب ایک رنگ میں ڈویے نظراتے تھے آخر گھے اِکر بوجیا کہ تمعارا سردار کون ہے ؟ بوگون نے ابرعبیدہ کی طرف اشارہ کیا 'وہ جرا ره گبا ا ورتحب سے انکی طرف مناطب مورکه اکه کیا در تقیقت تم می سردارمو و ابوعبیده نے کہا<sup>ور</sup> ہان، قاصد مے کہا ہم تھاری فوح کوفی کس دُودُواستُرفیان دینگے تم ہیا ن سے چلے جا وٰ ابوعب یرہ نے انحارکیا قاصد رہم ہو کراٹھا ، ابوعب یہ اسکے تبورد کھیکرفوج کو کم سندی کا حکردیا اور تمام حالات حضرت عمرکولکی تھتے۔ حضرت عمرے جواب مناسب لکھا او حوصله دلا ياڭة تأبت قدم رموفدالمقارا يا درا درمردگارت، -------ابوعببیدہ نے اُسی دن کمر مندی کا حکودید یا تھالیکین رومی مقابلے میں نہ آئے۔ایکے وا كم فترة اشام زدى مين بكرين ها يب مي ليلزليا تعا و معنزته عركي ترغيب مي سلمان موكيا -

تنها فالدمیدان من سنّے صرف سوارون کا رساله رکاب مین تھا، رومیون نسے بھی خبگ ) کی طباری کی اور فوج کے تمین حصے کرکے باری باری سے میدان مین ھیجے - ہیلادستہ خالہ کی طرون اِگین اٹھائے چلاآ اتھا کہ خالہ کے اثارے سے قبیس بن میرہ نے معت سے کل کے أنخائكا تروكا اوسخنت كشت وخون موااييم حركه العبي سينين مواتحا كرد وسري فوخ كلي خالة سرة بن سرزق كواتياره كيا، ده ايني ركاب كي فوج ك كرتفابل ، دي تيسرا شكر را وِسا مان *سے کلا-ایک شہور سردا رسیر سالار تھا*اور ٹری تدبیر سے فوج کو بڑھا آآ اسھا ترب بنیکے حود کا ہرگیا وراکب اصنرکو تقوری سی فرح کے ساتھ فالبکے مقابلے پر ہیجا۔ فالد نے برحاریمی ننامیت ہتنقاد اُسے سبنھا لاء آخرسیے سالارہے خود حلہ کیا اور بہلی دونون وجبین عبی ارا گئیں۔ ویر تک مورد رہا ،مسلما نون کی ابت قدمی د کھیکر رومیون نے زیادہ ڈرنا برکا مجهان ورأتا وابس مأما إ- فالرق ساعيون كولاكا راكر ومي ايناز ورصرف كرهاي -اب ہماری باری ہے، اِس صداکے ساتھ مسلمان دفعتہ ٹوٹ پڑے اور رومیون کو ہرا برد اِ تے یلے گئے۔

عیسائی دوکے اتفامین (ائی استے جاتے ہے۔ خالدائی موجال سمجر کئے اور ابوعبیدہ اسے کہا کارر ومی ہم سے موجوب ہو چکے ہیں۔ حلے کا بھی دقت ہے، خیا بخد اُسی وقت ہے، خیا بخد اُسی وقت ہے ، خیا بخد اُسی فرج میں جا کرگا والے موجد کی مروسامان سے حتیار ہے ہو رات کے بھیلے ہم ابوع بھیر وقاب ہے اُسی اور فرج کی ترمیب شروع کی ۔ معاذ بن جبل کو میمند بڑھر ا

ا کی الحتی مین دیے گئے بوخ از <sub>ا</sub>ستہ ہو حکی تو<del>حضرت ابوعبیدہ ن</del>ے اس سرے سے اُس ہم كت ايك چكرنگايا ايك ايك علمك بإس حاكر كوث برت عقم اوركت عقم -

عباد الله استنوجبوامن الله النصب اليني فدست مردعا بتتي موتوثاب قدم رمو ،كيونكمفذا

اباالصَّابرفاتَ الله مع الصَّاب بن - أبت تدبون كم ما تدربتا ك،

رومیون نے حوتقریباً • ۵ مزار تھے - آگے بچھے ایسنے صفین فائمکین نیکی ترتیب یہ تھی کہ پہلی صعت مین مرمرسوار کے وامین با مین و و دوقدرا نداز میمندا ورمبیرہ پرسوارون کے رساسے میسے بیا دہ نومبین-اس ترتیب سے نقارہ و دامہ باتے سلما نون کی طرف ٹریھے، خالد چونکہ مراول برسقے بیلے ابھی سے مقا لمہوا۔رومی قدراندازون نے تیرون کا اس قدر منفر سایا كمسلما نون كوجيعيم منايرا ، فالدا وحرس بيلو ديم ممينه كي طرف تُعِيك كيونك أسين سوابي سوآ تھے قدرا زاز زیمتے ،رومیون کے حوصلے اِس قدر بڑھ گئے تھے کومینہ کارسالہ فوج سے الگ موکرخالد پرچله آورموا ،خالداً مهته تم بته مینت مات سختے بیان یک که ساله نیج سے دُور عُل آیا- خالد نے مرقع پاکراس زور شوہ سے حله کیا کہ صفین کی صفین اُلٹ دین ۔ گیارہ ٹرس ارم ا مندانکے ہا تہت مارے گئے۔ اُو حرفیس بن مبیرہ نے مسیسرہ پر ملد کرکے رومیون کا دوسرا بازویمی کرورکرد با تا ہم فلپ کی نوح تیراندا زون کی وہبسے محفوظ متی- استم بن عتبه نع جوميسره كح سردار يق ، عُلَم الماكها وحداكي ستمب ك اسكو قلب مين بنجكر نْ كَارْدُودْ كَا يُدِرُنَهُ وَكُلُ ، يَكُمُ كُمُورِكِ سَيْ كُورُ رُبِكَ اور الت مِن سِيرلِيكِ رُرْت بِعُرت اس قدر فریب بینے کھے کہ تیرو فذنگ سے گذر کرتینے وشمشیر کی نوست آئی۔ کا مل کھنٹہ بھراڑائی رہی اور

تمام میدان خون سے زمگین ہوگیا۔ آخر رومیون کے پانون اکھڑکئے اور نہایت برحواسی ہے اسی سے سیال سے اسی سے سیال سے معارف معنوت عمرونا مُدفع لکھا اور پوچھا کہ مفتوصین کے ساتھ کیا سلوک کیا جا اسی سے معارف میں جواب میں لکھا کو 'رعایا ذمی قرار دیا ہے۔ اور زمین مرستور زمیندارون کے قبضے میں جیور دیا ہے۔

اس موکے کے بعد ضلع اردن کے تام شہراور مقامات بنایت آسانی سے فتح ہوگئے اور ہر حکبہ شرا کطوسلی میں پر لکعد ما گیا کہ نفتوصین کی جان، مال، زمین، مکانات، گرج، عبار گاہ سب محفوظ منیگی۔ مرف سجدون کی تعمیر کے لئے کسی قدر زمین سے بی جائیگی۔

> حمض سیله بجری ۴۶۳۰

تنام کے اضلاع میں سے بیا کی بڑافعلع اور قدیم خرب اگرزی میں اسکوا میسا کمتے ہیں۔ قدیم زانے میں اسکی خہرت زیادہ اسو جہت ہوئی کہ بیان آقاب کے نام رکہ ا بڑا ہمکل تھا۔ حیکے تیر تو کے بیے دُور دُور سے لوگ آئے تھے اور اُسکا نجاری ہونا بڑے فخت م کی بات سمجمی عابی تی۔ دُشق اور ارون کے بعد خین بڑے بڑے شہررہ گئے تھے جہا نفتوں ہونا تنام کامفترے ہونا تھا۔ جبت المقدس جمعی۔ اور انطاکیہ جہاں خود ہر قول تھیم تھا جمعی ال ودنون کی نیسبت زیادہ قریب اور مجمعیت وسامان میں دونون سے کم تھا ، اسر سے فنارہ اللہ ملک واقع بونی کی نیسبت نریادہ قریب اور مجمعیت وسامان میں دونون سے کم تھا ، اسر سے فنارہ اللہ کی کھیا تھیں نتی اشام اور ی سے گئے ہے جبری دغیرہ میں اسکونیا تیا متح اس تھیاں کیا ناور ہم

اس موکے میں شرم کی میری نے اکیلے سائت سوارون کوفتل کیا اور فوج سے لگ ہوکر حربدہ جمعس کی مارٹ بڑھے، نتہ کے قریب رومیون کے ایک رسالے نے اکمو تنا وکھیک حله کیا اس کفون نے بری تابت قدمی سے خباک کی ایبان کک کرجب دمن کیّا رہنمفر ا بھے اِ ت سے ارے کئے توروی بھاگ تلے اورا کی گرط مین حرومیسحل کے ام سے شہر تما جا کرنیاه بی- سائد ہی میمبی پینچے۔گروا میں ایک جاعت کثیرموجود تعتی، یہ جارون طرف سے گھر گئے، ور دھسلیون اور خقرون کی بوجھاڑمین رحمٰی ہوکر شہادت حاصل کی-میسو کے بعد خالدا ورابو بمبیدہ نے ہی تھی کارخ کیا اور محاصرہ کے سامان بھیلا دیے ، چونک نهایت شدّت کی سردی بهتی رومیون کونقین ها کوسلمان کھلے میدان مین دیر مک آولین الكيسائر برقل كا قاصداً جِكا تقاكر ببت جلد مذهبي جاني مي بنا ينداس مكم كموافق جزریہ سے ایک مجست بظیم روانیمی موئی الیکن سع بن ابی قاص مصح برعراق کی مهم پرامور تے یہ خبرش کر کھیے فوجین بینج دین جس نے اُن کو وہین رُوک لیا ۱ ور آ کے

نے نددیا۔ جمع والور ، ہے مرطرت سے ما یوس مرکز صلح کی درخوہست کی ا بوعبیدہ نے مباده بن صامت کود بان محمورا اور خورخا و کی طرف روانه بوے حاقر والوں نے انکے ہنچنے کے ساتھ صلح کی درخواست کی اور جزیہ دنیا منطفر کیا ، وہان سے یہ وانہ ہو کرمنتغرر ور**شیررسے** مع**رہ النعان ہیوئے** اوران مقامات کے لوگون نے خوداطاعت قبول ارلی،ان سے فاغ موکرلاذ قبیہ کا رُخ کیا، یہ ایک نهایت قدیم شهرہے بنیشن عهد مین اسکو انتظا تتے تھے حضرت ابوعبیدہ نے بہان سے کچھ فاصلے پرمقام کیا ۔ اور سکی منبوطی اور استواری <sup>و کمچ</sup>کرا کمپ نئی تدبیرا **فتیار کی بینی میدان مین بهت سے نما رکھند وائے۔ بیزغار اس تدسرا و ر** احتیاط نے طیار ہوئے کہ ہتمنون کو خبر تک نبونے ایک۔ایک دن فوج کو کوج کا حکودیا اور ماصره حیورگرمم کی طرف روانه ہوئے، شہروا بون نے جُومَرت کی قلور نیدی سے تنگ آگئے تھے۔ اورانخا تام کا روبار مند تھا 'ارسکو ہائیڈیپی خیال کیا اور شہر نیا وکا دروازہ کھول کر کار دارمین مصروت مہوئے بسلما ن اسی رات کو واپس کرغار دن میں حیب رہے تھے۔ تتبج کے وقت کمین گا ہون سے کل کر دفقہ حلہ کیا اور دم کی دم بین شہر فتح ہوگیا ۔ خمصر کی فتح کے بعدا بوعبیدہ نے فاص مرقل کے پا*ے تخت کا ا*رادہ کیا اور کھیم نومین <sub>ا</sub>س طرت . میں بھی دین لیکین دربا بِفلافت سے حکم پہنچا ک<sup>وا</sup>سِ سال او آگے ٹرھنے کا اادہ ندکیا جائے۔ **خِنا پخ**اس ار**تنا دکےموا فق فرمین و ایس الای گئی<sup>ت</sup>۔ اور پڑے بڑے شہرون میں افسرا و۔** نا سُبِیج دیے گئے کو اِن سی طرح کی ابتری نونے یائے۔ خالدا یک ہزار فوج کے ساتھ وشق کو مله كال بالانتيز عله والد تديم شرمص الترفينسين كورميان مين واتع بور مثله فتوح الوي صفح الما

گئے۔ <del>عمر وہن العاص ن</del>ے اردن مین مقام *کیا۔ ابوعبیدہ نے حوّد جمع*ں میں آقامت کی يرموك - ٥-رجيب ايري ردى جولست كها كها كروشق وخمص وغيره سے تكلے عقے الفاكيد بيني اور مرفل سے فرايد ای کرء ب نے تام شام کو مایال کردیا ، مرحل نے اپنین سے جند ہوشیارا و مِعززاً دمیون کو درمامین طلب کیا اورکماکووب تمسے رورمین جمعیت مین اسروسا مان مین کم بین انجومتم انکے مقالبے مین کیون نبین عشر سکتے ، اِسپرسب نے مرامت سے سرح مکا ایا ا ورسی نے کچھ حواب نریا ایک انگیے تخریہ کاڑ بی<u>ے نے ع</u>ومن کی کہ عرب کے اخلاق ہارے اخلاق سے اُنتھے ہیں، وہ رات کوعباد<sup>ت</sup> ارتے ہن ون کوروزے رکھتے ہن اکسی رطانین کرتے یہ بس مین ایک ایک سے برابری کے سا قدلمآا ہے۔ ہارا یہ حال ہے کہ شراب بیتے ہیں ، برکار اِن کرتے ہیں ، اور کی ایندی ہیرکہ تے ا در ون پڑھلم کرتے ہیں، اِسکا یہ انترہے کرانکے ہرکام میں جوش اور ہتقلال یا یا جا آیاہے اور بہارا ا جو کا م ہوتا ہے ہمت اورا شقلال سے خالی ہوتا ہے۔ تیصر در حقیقت شام سے عل جانیکا ارادہ ار دکا تھا لیکن مہرشہرا در مرضلع سے جوت جوت عیسائی فرادی چلے آتے تھے ۔ تیصر کوسخت غیرت آئی، و رنمایت جبین کے سابقرآ، وہ ہواکہ شمنشاہی کاپوراز و یوب کے مقالمے مین صرف ردِ يا عائ - روم مصطنطينية جزرِه - أمينيه مرحكمها حكا م صيح كه تا م فوجين إت تخت انطاكيمين اكية لايخ متين كك حاصر موجانين- تمام منلاع كے احسرون كولكم بيجا كر حس قدراً دمي جمال سے میتا ہو تکمین روانہ کیے مامین، اِن احکام کا پنچا تھا کہ فوجون کا ایک ملوفان اَمنڈا یا ،

انطاکیک عارون طرف جهان مک نگاه جاتی متی فزجون کاملری اُل تھیلا ہو استقسا

حفنرت ابوعبیده شے جومقا بات فتح کرنیے تھے و ہان کے امرا ورمئیں انکے عدا ورانعیا کئے ہیں قدر گرو مرہ ہوگئے متھے کہ اِ وحرد نما لیب ندمب کے خود اپنی طرف سے دہمن کی ضرلانے کے لیے جا سوس تقرر کررگئے تقے ، جنا پڑ آنکے ذریعے سے حعنرت ابوعبیدہ کوتمام واقعات کی ا طلاع ہو ئی۔ انھون نے تما مرا منسرون کو حمیع کیا اور کھوٹے ہوکرا کی*ے ی*را ترتقربر کی ۔حبیکا خلاصہ یه تقاکهٔ سلما نوا خدانے تکو بار بار **مانیا اور تم** ا*شکی مانخ* مین بورے اُترے ۔ جنا بخدا ہے صلے میں خ<sup>دا</sup> نے ہمیتہ ککونطفرومنصور رکھا۔ اب ہتھا را قبمن اس سروسا ان سے تمہارے مقاملے کے لیے جلاہے کذرمین کا نیے اکھی ہے۔ اب تبا وکیا صلاحہے ؟۔ یزیرین ابی سفیان (معاور کے *بھائی کھڑے ہوئے اور کہاکہ میری راے ہے کہ عور*تون اور بخیان کو شہرمین مینے دین اور مم حزد ستٰہرکے! ہرنشکرارا ہون ، ایسکے سائقہ خالدا و عروین ابعاص کوخط لکھا جاے کہ مِشق اور فلسطین سے میل کرمرد کو آمیئن۔ شر<del>مبل بن حسن</del>ہ نے کہا کا سِ موقع پر میرخفس کو آزاد انرا سے دینی چاہیے ، یز دینے حوراے دی ہے شہد خیرخواہی سے دی میکن میں اسکا مخالف ہون-شہروا ہے تام عیسائی ہن مکن ہے کہ و تعقب سے ہارے اہل وعیال کو ک*یرگر قیصر کے ح*کے ردین یا حود ارو الین-حصرت ابوعبیده نے کہا اسکی تدبیریہے کہم عبیا یئون کوشہر<u>سے</u> کال دین ، مشرخیل نے اُسٹھارکہا اے امیرا تمجیکو ہرگز بیوت حاصل نین ہم نے اعبیا یکون ں منترط پرامن دیاہے کروہ شہرمین اطمینان سے رہن ،اس کیے نقض عمد کیونکر مہرسکتاہے . مصرت ابرعبیده نے اپنی علطی سلیم کی سکین میجب طی نہیں ہوئی کر آخر کیا کیا جائے ؟-عام حاصرین نے راہے دی کہمض میں عشر کر امدادی فوج کا انتظار کیا ماہے، ابوعبیہ ہف

كما آنا وقت كما ن مع ؟ أخريرا ك عشرى كر ممس حيور كرد مشق رواز بهون، والحالد موجود ہن اور عرب کی سرحد قریب ہے۔ یارا دہم مربط تو حضرت ابوعبیدہ نے صبیب بن سلمه كوحوا منسرخزا ندمتن بلاكركها كأعيسا يئون سے جوہزیہ باحزاج نیا جا ہاہے اس معاوصنہ میں لیا جا تا ہے کہ ہم اکمو۔ انکے دشمنون سے بجاسکین لیکن اس وقت ہماری حالت ایسی نازک ہے کہم اُکی حفاطنت کا ذمہ نین اُٹھا سکتے اس لیے جو کھیران سے وصول ہو<del>ہ</del> سب انکووایس ویرواورائ سے کیدد کہ ہمکوہتھا رے سائد حبیعلی تھا اب بھی ہے لیکن جونکہ اسوقت تھاری حفاطت کے ذمّہ دارمنین ہوسکتے اس سے جزیہ حو**حفا فلت کا** معاومنہ ہے تکودابس کیا جا اے نیا پنے کئ لاکھ کی رقم جووصول ہوئی ہے کل وابس کردی گئی۔ عیسا یئون پراس وا قعہ کا اِس قدرا تر ہوا کوہ روتے جاتے تھے او چیش کے ساتھ کتے جاتے تھے کہ خدا مکوواہیں لائے ''ہیودیون پراس سے بھی زادہ اثر ہوا ،انفون نے کہا **تورمیت** کی سمجب تک ہم زنرہ ہیں۔ تقیر جمص رقب بنین رسکتا ، یہ کمر شرنیا ہ کے دروادے بندارویے اور ہر حکیمہ حولی میرہ بھا دیا۔

عرض ابوعبيده ، وشق كوروانه موسي - اوران تمام حالات سے حضرت عمركواطلاع دى ،

مله ان دا قمات کوبلافری نے نتیج البدان دمنی ۱۳ مین قاصی ابورسعت نے کیا ب الزاج مین (منفی ۱۸) اردی نے فتیج التام (منفی ۱۳۷۸) میں تینفیل بکھا ہے ہو، مسلمہ میں نے بین بیادا تعات ننوح الشام اندی سے لیے ہیں سکن ابوعبید کا کھم مجور کردمش جلا آنا ابن دامنح عباسی اصد کر مرتز خون نے بھی بیان کیا ہے ۱۰

صنرت عمر بیننارکومیلما ن دومیون کے ڈرسے معن سے جلے آئے نہایت رخبیرہ ہوئے لیکن انكويه معلوم ہواكة كلُ مزج اورانسران مزج نے يہى منصله كيا توفى الحارستى ہوئى اور فرما ياكر «خدشے ی صلحت سے تمام سلمانون کواس رائے بِرُسفق کیا ہوگا" ابر عبیدہ کو حواب لکھا ک<sup>و</sup> رمین مرجے ے سعیدین عا مرکزمیتما ہون لیکن فتح وتنگست نوج کی قبّت دکٹرت پرمنین ہے »ابرعبیرہ شن ننچکرتام اصنرون کوثم به کیا اورائ سے مشورت کی - یزید بن آبی سفیان مشر<del>بیل رجینیة</del> ىعا زىن جىل -س**ب نەخىلەن** رايىئن دىن ارسى أنيا رمىن عمروين انعاص كا قا **ص**ەخطالىكرىبىغا حبکا بیصنمون تھا کاردن کے اضابع مین عام نبا وت بھیل گئی ہے۔ رومیون کی امرا مرتے تهلکا دال دیاہے اورمص کو حمیو کر کر ملا آنا نہایت ہے عبی کاسب ہوا ہے۔ ابوعبیدہ نے جوب من لكها كرممس كويمن وركزين ميورا المكة مصووية عاكوش محفو فرمقا مات سے عل آكے اور اسلامی فومبین حرما بجانبیلی ہوئی ہین، کما ہو حامین خطی*ن بیمی لکما اکرمّا بین حکیست ن*ٹلو، مَیْن وہیں اکر نم سے ملیا ہون-و دسرے ون ابومبیدہ دمشق سے روا نہو گئے اورارون کی مدو دمین یرموک پنجگر قیام یا۔ عمروین العامس میں ہیں اکرہے یہ مقع خبک کی صرور تون کے بیے اِس لحا ذہبے مناسبے اع ب کی سرحد بسنبت اور تمام مقاات کے بیان سے قرمیب بھی 'اور شبت پری ب کی سرحد ئك كھلاميدان تعاحب سے بيموقع حاصل تعا كەحزورت يرحبان مک عامين تيمھيے ہمئتے جامين، حصرت عمرت سعيدين ما مرك سائة حو فزج روانه ي متى وه المجي نبين سنجي متى - أو ال

رومیون کی آمرا در آنکے سامان کامال من شکر سلمان گھیرائے جاتے تھے۔ ابوعبیدہ سنے

حضرت عرك بإس ايك اور قاصد وورايا اور كهاكدر ومي بجروبرست أبل ريب بين اورج كايه حال ك وفرج حس راه سے گذرتی ہے ، را بب - اور خاتھا ہشین مجنون سنے كبم ُ طوت سے قدم اہر منین کا لا تھا۔ کل کل کر فوج کے ساتم ہونے جاتے ہیں۔ خاریکی حضرت عرف مماجرین اورانفهار کوجمع کیا اورخط پڑھکر شایا، تام صحابہ بنا متیارروپرے اور ز جوس کے ساتھ نگا رکرکہا کہ وامیرالمونین! حذا کے بیے ہمکو ا مارت دے کہم اپنے بھا ئیون ماكز تنار موجا مين - خدانخواسته أكا بال ميكاموا تو ميرمبنيا بيسود ب، مهاجرين وانصار لجوسش را رطرهتا جا تا تعایمان مک ک<sup>عبدا زم</sup>ن بن عوت سے کها کرمزامیرالمونسین توخود سیما بن اور بمكوسا توسے رحل و ميكن اور صحاب نے اس راسے سے اختلات كيا اور راسے يو مخبر لەاورا مادى فومبىن ئىيجى جايئن <del>- حفرت ع</del>رفے قاصىرىسے دريافت كىاكەرتىن كىان ئك ا<sup>گ</sup> مین- آسنے کہا یرموک سے تین جا رمنرل کا فاصله رنگیا ہے حضرت عمر نمایت غردہ ہوئے ا فرایا کا منوس اب کیا ہوسکتا ہے؟ اتنے عصم مین کیونکرمرد بینج سکتی ہے؟ - ابو عبیدہ کے نام نهایت یرّا نیرانفاظ مین ایک خط لکهما اور قاصی*ت کهاکه خود*ایب ای*ک صف* مین جا کرمه خط منا<sup>ن</sup> اورزانى كناكه كلاعم بغريك السلام ويقول لكحبا اعل الإسلام اصداقو اللقاء وشدواعليهم شلالليُّوث. ولتكونوا اهون عليكون الذُّرِّي فاناقلا علمناانكوعليهم منصورون-

یعجیب حسن آنفاق ہواکہ میں دن قاصد ابوعبیرہ کے پاس کیا اسی دن عامر تھی ہما آدمی کے ساتھ بینچ گئے ۔ سلمانون کو نمایت تقویت ہوئی - اوراُ نفون نے نمایت ہتقلال

کے ساتھ ڑائی کی ملّیار ماین منتروع کین ،رومی فومین برموک کے مقابل دیر جبل مراتین خالدے اڑائی کی ملیاریان شروع کیں۔ م<del>عاذ برجبل ک</del>و جوم**رے رتبہ کے صحابی س**ے میمنہ برمقرم کیا۔ قبات بن شیم کومیسرہ آور ہاشم بن عتبہ کو پیدل **فوج کی** ہنسری دی اپنے رکا ب کی فزے کے جا رحصے کیے ۔ ایک کواپنی رکاب مین رکھا، اِتی رفیس بن مبیرہ ممیرہ من وق عمرد بن طفيل كؤ عرركيا ، يتمنيون مهادرتا م عرب مين اتنحاب تحقے اوراس وحبرے فاير نبحر کہلاتے تھے، رومی میں بیٹ سروسا ان سے بکلے۔ ذولا کوسے زیادہ کی معبیت بھی اوروا صعنین تھیں جیکے آگے آگے ایکے نرہی میشوا الا تھون میں لیبین لیے جو من ولاتے ماتے تھے ، نومبین بائکل مقابل اگئین تواکب بطریق صف چیرکز کلا ا درکہا کہ مین تہنا ٹرنا جا ہتا ہو بسره بن مسرد ق نے گھوڑ ابڑھا یا گرخو کم حرایت نہایت تنومندا وردون تھا خالد نے روکا اور فیس بن ببیره کی طرف د کیما ده به شعار پرھتے بڑھے۔ سائل نساء المحتى بفي حجبالها الست يوم الحرب من ابطالها بروونشین عور تون سے یو جمہ او کیا مین ٹر ان کے دن بادردن سے کام نین کرا تعقيس المصرح عبيث كرمينج كم تطربق متياره بينين سنهال حكاتها كالأواطل كيا عوارسر بریزی اورخود کوکاشتی مونی گردن تک اترانی- بطریق و کمکا کرگھوڑے سے گرا، ساتیری سلما بون نے بمبیرکا بغرہ مارا۔ خالدہے کہا نتگون اُچھا ہوا، اوراب خدانے چا ہا تواگے نتح ہے۔ <del>عیمای</del>ئون ن**ے خالد کے بمرکا**ب اسٹرون کے مقابلے مین حداحد انوجین متعین کی تغیین ،لیکن سب نے شکست کھائی ،ائس دن بیبین کمپ نومت پنچکے ٹرائی ملتوی کمئی۔

رات کو با ہان نے سروارون کو جمع کرکے کہا کرع بون کو شام کی دولت و مفت کا مزہ لرجی انبتر ہیں ہے کہ ال وزر کی طمع ولاکرا نمو ہیا ن سے مٹالا جا ہے۔سب نے اِس را*ے سے* آنفا ق کیا۔ دوسرے دن ابوعبیدہ کے یاس قا صدیمیا کیسی مززانسرکو کارسے اس محیدہ ہم اس سے مبلے کے متعلق گفتگورنی چاہتے ہیں ، ابوعبیدہ نے خالد کو اتنحاب کیا، قام حربیغام ہے کر یا سکانا م مارچ تھا۔جس وقت وہ پنچا نسام ہوکئی تی، ذرادرسے بعد مغرب کی نا زشرع ہوئی،مسلمان میں ذوق شوت سے نکبی*ر کہ کھٹے ہوے،* اور حیں محومت ۔سکور، ووقارہ ا دب دخنوع ۔سے اُنمون نے نا زا دا کی۔ قاصد نہایت حیرت و ستعاب کی گا وسے د کمیتار ہا - بیان تک کرجب نما زہو حکی تواسنے ابوعبید ہ سے چند سوالات کیے ،جنمین ایک یمبی ت*ھا گذمینے گینسبت کیا اعتقا در کھتے ہو؟ ابوعبید ہے* فرآن كى ياتين رمين-يااهل الكتأب لانعنلوفى دبيكرو لانقى لواعلى الله الا الحن الما المسيد عبسى بن حرير سول الله وكلة القاه الى عريع- لَنْ بستنكف المسيمان كيون عباً الله ولاالملائكة المغربون مترجم نعان الفاظام ی ، توجا رج بے احتیا رُیُا اُ تھا کہ نے تنگ عیسے کے میں ادصا ف میں اور مبتیک بمعاملہ سخاہے ، یہ کہ اُسنے کلم یہ توحید پڑھا اوزسلمان ہوگیا۔ وہ اپنی قوم کے پاس واپس جا انجی ننین عامتا تھا لیکن حضرت ابوعبیدہ نے اس خیال سے کر دمیون کو مرعمدی مل ىنومبوركيا اوركماكة كل بيان سے جوسفيرمائيكا أسكے ساتھ طيے آنا-ووسرے دن خالدرومیون کی شکر گا و مین گئے۔ رومیون نے اپنی شوکت و کھانے

کے لیے پہلے سے بیا تعلام کررکھا تھا کہ راستے کے دوبون جانب دور تک سوار و کل مغین فایم کی تقین جوسرسے یا نون کے بوہے مین عزق سقے بلیمن <u>خالداس ہے بروائی</u> او تجھتیر ں نگا م*ے اُن پرنظرڈا لنے جاتے تھے حس طرح شیر کمر*یون کے رپوڑ کوحیر تا حلاجا اہے ، اِ اِ کے جھے کے پیس پینچے تواُسنے نہایت اخرام کے سائر ہتھال کیا ، اورلا کرا ہے برابر بٹھا یا ۔مترحم کے ذریعے سے گفتگو شروع ہوئی۔ الن نے معمولی ابت حبیت کے بدلکھے کے طریقے رتقررینتروع کی، حضرت علیلی کی تعرفیت کے بعد قصیرکانا مربیا او فونسے کماکہ مارا با دنتاه تمام بادنتا هون كاشنشا وهب - مترحم إن انفاظ كايورا ترقم بنيين كرحكا تقاكه خالد نسم ا بان کوروک دیا اورکها که تمهارا با و شاه اییا ہی ہوگا لیکن ہم نے حبکوسردا رنبار کھا ہے مہکو ایک لحظہ کے لیے اگر با دشاہی کا خیال آئے توہم فوراً اسکوموزول کردین ، آبان نے پیمر ىقرىرىشروع كى اوراپنے ج**ا و** و دولت كا فخر بيان كركے كها ك<sup>ور دا</sup>لىء ب. انتمارى قوم كے جو لوگ ہاہے لک مین اکرآبا دہوئے ہم نے ہمیتہ آنکے سائندوستا نہ سلوک کیے ہمارا خیال تھا ک<sup>وا</sup>س مراعات کا تما م عرب ممنون ہوگا ، نیکن خلاتِ توقع تم<sub>ی</sub>ما ہے ملک پرخ<sub>ی</sub>ھ آئے اورجا ہتے ، وکہ ہمکہ ہمارے کمک سے کال دوہ ککومعلوم نین کرست سی قومون نے ار اسے ارا دے کیے لیکن تھی کا میاب نیس ہوئین ، اب مکوکر تمام دنیا میں تھسے زا دہ کوئی قوم ا عابل وسنی، اوربے سروسامان منین به حوصله مواہے، ہم اسپر بعی درگذر کرتے میں ملکہ اگر تم میا سے چلے ما وُتوانعام کی طور پرسیہ سالارکو دس ہزار دنیا را درا درا مشرون کو ہزار ہزارا ورعام سامیون کوشوسو دینار دلا دیے جامین گے ،-

با با ن این تفررخیم کرمیا تو خالداً تنظے ا ورحمہ و نعت کے بعد کہا کوسبے شہریم و وہمنہ ہو؛ مالا ہو ، صاحب حکومت ہو ، مترنے اپنے ہما یہ عوبون کے ساتھ جرسلوک کیا وہ بھی مکموعلوم ہے ، تسكن ميمقارا كجفراحسان ندنتقا للكاشاعت ندمهب كيابك تدبيريقي حسبكايرا ترمواكهوه عبيابي ہو گئے اور آج حوٰد ہمارے مقابے مین تھارے ساتھ ہوکر ہم سے ٹرتے ہیں۔ یہ ہی کہتم نہا مخاج نگدست اورخانه بردوس تختے - ہمارے ظلم دحبالت کا بیرحال تھا کہ قوی کمزور کو میس فوالتا تھا، قبائل - ایس مین لا *او کر بر*یاد ہوتے جاتے تھے۔ بہت سے خدا بنا رکھے تھے ا وُراْ مُلوبِ جِنْے تھے۔اپنے ہم تھ سے بُت تراشتے تھے ا دراُسکی عبادت کرتے تھے سکین ختنے ہم بررحم کیا۔ اور ایک سفر بھیا جو خود ہاری قوم سے تھا اور ہم مین سب سے زر یا وہ شىرىي ، زباد ، فياصن ، زباد ، ليك خوتها ، أسنى بمكو توحيد سكه ملا بيُ اورتبا ديا كه خدا كاكوبي شرکی بنین، رہ بوی اورا ولا دہنین رکھتا۔اور بالکل کمیّا دیگانہے "اُسنے ہمکوییمج کم دیا يهم ان عقائدُ کوتام دنيا ڪے سامنے بيش کرين ، حسنے انکوانا د ټسلمان ہے اور ہارا عائي ے عصنے نرمانالیکن جزیر دنیا قبول کراہے اُسکے ہم طامی اور محا فظ مین ، حبکو دونو<del>ن</del> انكا رمواسكے ليے لموارب-

ا بان نے جزیر کا ام منکرا کم سمندی سائن بھری اورایے نشاری طرف اشارہ کر کا کہ مندی سائن بھری اورایے نشاری طرف اشارہ کر کا کہ میں جزید نیسے بین دیتے بنین ، غرص کوئی معا ملہ طے بنین بوا اور فا اُدا تھکر ملیے آئے۔ اب اُس اخیر را ای کی طیار بان سفر دع ہو بُن جبکے بعدر وہی بھر بھی سنبس ذکے۔ فالد کے میلے آئے۔ کے بعد۔ با بان نے سروارون کو جمع کیا اور کما کو مشنے سنبس ذکے۔ فالد کے میلے آئے کے بعد۔ با بان نے سروارون کو جمع کیا اور کما کو مشنے

ننا الى عب كو دعوى ہے كرجب كم أنكى رعايا نه بن جاؤا نكے حلى سے مفوظ نبين ره سكتے۔ ا اگوانی غلامی منطورہے وہمام اضرن سے بڑے جو مت*ن سے کہا کہ ہم مرحا بنیگے گرز*دِ آت گوا راندیں ہوسکتی' صبح موئی تورومی اس جویش اورسروسامان سے نکلے کے مسلمانون کوھی حیرت موگئی۔ خالدے یہ دکھیکروب کے عام قاعدے خلات نئے طورسے فوج آرائی کی۔ فوج جو ۳۰ ہ سرارتھی اسکے ۲۶ حصے کئے اور آگے بھیے نہایت ترمیب کے ساتھ اسی قدر صعنین قائم مین بخلب فوج ابوعبیده کودیا *بهمینه برغروین العاص در شربیل* امورمو*ت بهمیه و نر*ید <del>بن ابی سنیا</del>ن کی کمان مین تھا -اتکے علاوہ مصف پرالگ الگ جوا نسترمیین کئے ٹیر کرآن بوگون *کوکیا جو بها دری او زفنون خبگ مین شهرت عام رکهتے تقے خطبا* جوائیے زور کلام سے ہوگون میں بل عُلِن ڈال دیتے تھے اس خدمت پر امور ہوئے کر رجو بتل تقررون سے فوج کوجوش دلامین- الخیس من الوسفیان تھی تھے جوفوجون کے سامنے یہ الفاظ كت يورك عقر الله أنكونوادة العرب وانصاد الاسلام وانهوزادة الوم وانصار النن ك اللهموات هذا بوعم من ابامك اللهمواز ل نصرا عاعبادك عموبن العاص كهتے پھرٹ تھے۔

ا بیان کم ک<sup>و</sup> بر معیو*ن کی نوک ب*راً ما مین توشر کی اطرح أن يرتوط يرو-

الهاالناس غضواابصاكه والنترعواالرماح إروائ بيني ركمو برمييان تان وابني مكمه والضوامر اكزكم فاذاحل عدف كوفاحه لو صوحتى اذاكه والطرات الاستنة فتنوانى وجوهم وتنوب ألأسك

مزی کی تعدا داگر جیم متی بینی ۲۰ - ۳۵ ہزارے زیادہ آدمی نہتے لیکن تمام وب بین انتخاب سے اس میں سے خاص وہ بزرگ جنون نے رسول اللہ کا جال مبارک دکھا تھا ایک ہزار سے سور اللہ کے ہمرکا بہ ہے تھے۔ عرب کے مشہور قبائل میں سے دئل ہزارے زیادہ صرف از دکے قبیلے کے ہتے ۔ حمیر کی ایک ٹری مشہور قبائل میں سے دئل ہزارے زیادہ صرف از دکے قبیلے کے ہتے ۔ حمیر کی ایک بیج بی تعدیق ہمان مولا کی ایک بیج بی تعدیق ہمان مولا کی ایک بیج بی تعدیق ہمان مولا کی ایک بیج بی تعدیق ہمان میں میں میں میں میرکی ایک بیج بی تعدیق ہمان میں میرکی ایک بیج بی تعدیق ہمان میں میں میرکی ایک بیج بی تعدیق ہمان میں میرکی ایک بیج بی تعدیق ہمان میں میرکی ہمان میں میرکی ہمان میں میرکی کی میں میرکی ہمان میں میرکی کے میں میرکی در ایک بین جوریت کرتی ہوئی ہمان میں میرکی در ایک ہمان کی بین جوریت کے میرکی در ایک میں میرکی در ایک کی کی در ایک کی کی در ایک کی در ایک کی کی در ایک کی کی در ایک کی کی کی کی کی کی کی کی کر کی کی

مقداد مورنایت خوش آواز تھے۔ فوج کے آگے آگے سرزہ انفال جبین جہا دکی ٹریب سے تلاوت کرتے جاتے تھے۔

اُدهر دومیون کے جویش کا بیما کم تفاکر تمیں ہزار آ دمیون نے پانون مین بیٹریائی لبین ا کہ ہٹنے کا خیال تک ندائے۔ خبگ کی ابتدار دمیون کی طرف سے ہوئی۔ داد لا کھ کا کہڑئی ا ایک ساتھ برجا، ہزارون پادری او رُتبپ ہا تو ن مین تعلیب سے انگے تھے اور حضرت ہیں گی ہے گیارتے اتے تھے۔ یہ سروسالمان دکھی ایکے تعفی کی زبان سے ہے امتیا زکا اکرائی ہے اُس قدر ہے انتہا فوج ہے ''خالد نے تجفال کر کھا جیب رُو، خدا کی شیم میرے گھوڑے کے شم اُبھتے ہوتے تو مَین کد تیا کرد عیبائی اتنی ہی فوج اور بڑھالین'' غوض عیبا یئون نے نہایت زور توریسے حمل کیا ''اور تیرون کا میخد رساتے بڑھے۔

سلمان تركت ابت تدم رہے نيكن حلابس زور كا تفاكەسلمانون كاميمنہ توٹ كرنورج سے عليمٰ و ہوگیا ، اور ننایت بے ترتبی سے بیچیے ہٹا۔ ہرکت اِنتہ ہٹتے ہتے حرم کے خیرہ کا ہ کک اگئے۔ حولیا ا کویه مالت دیکیماسنت عضد آیا ۱۰ و ضمیر کی حوبین آکھا ٹالین اور کیارین که مارد و! او هراسے تو حربون سے مقا را سرور دنیگے "خوار برشعر را مکر لوگون کو عزب دا آئ تین-ياهاس باعن نسويخ تفنّبات - مُرمبت بالسّه حرف المنيات یہ حالت د کھیکر مُعا زیب جبل حوسمینہ کے ایک عِنے کے سیالار سنتے گھوڑے سے کُوڈ بڑے اور لها کهین توپیدل اُرتا مهون کین کوئی مبیا دراس گعو*شه کاحت اوا کرسکتے تو کھوڑ*ا حاصرہے' منگ میٹے نے کہا ہُان ۔ بیعق مین ادا کرونٹا 'کیونکیس سوار ہو کراُتھا ارسکتا ہون، غرصٰ دونو الیاب جیتے فرج مین گئنے اورا<sub>س</sub> دیری سے خباک کی کرمسلما نون کے اُکھڑے ہوئے یا نو بھیسیر سنبها كئے۔ساتدى تخاج حوقبىلەزىدىكەسىدارىقى يانندارى كىكررھادىيسا ئوكاموسلمان کا تعانب کرتے چلے آھے تھے ، م اگا روک لیا <u>-می</u>ندمین قبیلۂ ارْد شروع ح*است* اہت قدم رہا تھا ، عیسا یئون نے اُرائی کاساراز درائن پرڈوالالیکن وہ سیارٹی طرح ہے رہے۔ جنگ کی میر خدّت بھی کہ فوج میں ہرطرف، سر، ہات، اِزو، کُٹُ کُٹُ کُرُّت جاتے تھے بیکن اِن سکے یا ی نبات کونفرنتر نهین بوزی هی عمروین طفیل حوصبایک سردار تنتی تموارا رسای جا سے متحاور اللكارت جات محفى كُازولوا وكمهنا مسلمانون ريمهارى وجس داغ ناك ورب برك الها درانکے بات سے ارسے گئے اور آخر حزد شہادت حاصل کی۔ <u> صنرتِ خالدِ نے اپنی فوج کو تیجیے لگا رکھا تھا۔ دفعت صنحیرکر تنگے اوراس زورسے حملا</u>

کیا کردو میون کی مغین ابتر کردین - عکرمه نے جو ابو جہل کے فرز ندسمتے اورا سلام لانے سے

بیلے اکثر کفار کے ساتھ را کمر ارش سے ، گھوڑا آگے بڑھا یا اور کہا عیدا یُوا مَن کسی زمانیون

د کفر کی حالت مین )خود رسول النتہ سے رِّح کیا ہوں - کیا آج ہما رسے مقابلے مین میرا با بون

بیچے بڑسکتا ہے ، یہ کمرفوج کی طرف د کھیا اور کہا مرنے پرکون جیت کر اہے ؟ - جا رشوخصون

نے جن مین ضرار بن ازور کمی سے مرنے پر بیت کی اور اس نا بت قدمی سے رسے کو ذور بیا سب کے سب وہین کئے کردہ گئے ۔ عکرمہ کی لاش مقتولون کے ڈو میرمین می کی گئے دم اتی اتحا ۔ خالد نے اپنے زانو بڑا کا سرر کھا اور گھے مین بانی میکا کرکھا ' فندا کی متم عرضا گما ان علط تھا کہ مہنہ میرکر نہ مرین گئے۔

کی میں میں کئے کہ اور گھے مین بانی میکا کرکھا ' فندا کی متم عرضا گما ان علط تھا کہ شہید ہوکر نہ مرین گئے۔

عُومَن عَكَرَمَهُ اوراً تَنَى سائعتی گوخود ہلاک ہو گئے لیکن رومیون کے ہزارون آ دمی رباد

کردیئے۔ فالدکے حلون نے اور بھی انکی طاقت توردی بیان کک کہ آفرا کو تیجے ہٹنا بڑا اور
فالڈاکمو دائے ہوئے سیالار در زنجار ہی کہ بینج گئے۔ در نجاراً ور ر ومی انسرون سنے
انکھون پر رومال ڈوال لئے کوراگریے کھیین منع کی صورت ندد کج بسکین توکست بھی نہ دکھیوں '
عین ائس ونت جب او حربمنیہ میں بازر قال گرم تھا ابن فاطر نے بسرہ برحکہ کا ہمیتی میں مورد بالے اس حصف میں انظر کے بسرہ برحکہ کا ہمیتی میں مورد بال
سے اس حصف میں اکثر کئی وغنیان کے قبیلے کے آدمی کھے جو تیا م کے اطراف میں بودو بال
میں سما یا ہوا تھا اُسکا یہ اثر ہواکہ بیلے ہی حلے میں اُسکے یا فون اُکھر گئے۔ اوراگراف ون نے
میں سما یا ہوا تھا اُسکا یہ اثر ہواکہ بیلے ہی حلے میں اُسکے یا فون اُکھر گئے۔ اوراگراف ون نے
میان سما یا ہوا تھا اُسکا یہ اثر ہواکہ بیلے ہی حلے میں اُسکے یا فون اُکھر گئے۔ اوراگراف ون نے میں اُسکے یا فون اُکھر گئے۔ اوراگراف ون نے میں میں دونہ کی دونہ کے بین اس میں دونہ کی دونہ کے دونہ کی دونہ کے دونہ کی دونہ کی دونہ کی دونہ کے بین اُسکے یا فون اُکھر گئے۔ اوراگراف ون نے میں اُسکے یا فون اُکھر کئے۔ اوراگراف ون نے میں میں دونہ کے بین اُسکی کا میں دونہ کی بین اُس کے دونہ کے دونہ کی دونہ کے دونہ کونہ کے دونہ کی دونہ کی بین کا میں دونہ کے بین کا میں دونہ کی بین کونہ کے دونہ کے دونہ کی دونہ کے بین کا میں دونہ کی دونہ کے بین کا میک کیا تو کی دونہ کی میں کا میں دونہ کونٹ کی دونہ کی بین کا میں دونہ کو بیا کی دونہ کے بیس کی دونہ کی میں کی دونہ کی کونہ کی دونہ کی میں کونٹ کی دونہ کی دونہ کی دونہ کی دونہ کی میں کونٹ کی دونہ کی دونہ کی کونٹ کی کے دونہ کی دونہ کونٹ کی دونہ کے دونہ کی دونہ

ا ہی ہے بہتی کی ہوتی تواڑا ن کا خاتمہ ہوجیکا ہوتا۔ روی۔ بھاگتون کا بچھاکسے مرکے خیمون تک بینچ گئے۔ عورتین یہ عالت دکھ کرہے اختیا بھی ٹرین اورُانکی یا مردی نے عبیا میُون کوا تگے ۔۔۔ ٹرھنے سے روک دیا۔ فوج اگر حیا بتر ہوگئی تھی ہلکن اعشرون میں سے قبات بن آہمے سعید ہو زید- بزیرین ابی سفیان عمروین العاص- شرجبل بن صنة ، دا دشیاعت دے رہے تھے قبات ، ہا تھ سے ملوارین ا ورنیزے ٹوٹ ٹوٹ کرکرتے جاتھے تھے گرانکے تیوریزل نہ آیا تھا۔ نیزہ کوگر زِیّا توکتے کہ کوئی ہے ؟ حواست خص کو ہتریا روے حبر سے خداسے اقرار کیا ہے کرمیدان خبکے سے منے گا تومرکریٹے گا ''- ہوگ فوراً آمواریا نیزہ انکے ہاتھ مین لاکر دبیبیتے، وربھیروہ شیر کی طرح جمیٹ کر دینمن پرجا برتے۔ ابوالاعور کھوٹیے سے کو دیریں ا وراینے رکا ب کی نوج سے مخاطب ہو کر کہا لصبرو ستقلال دنیامین عزّت ہے اور عقیے مین رحمت ، دیکھٹا یہ دولت ایتوسے نمانے ائے ، سعیدین زیف متن میٹے میکے ہوئے کوے تھے۔ رومی اکلی طرف بڑھے تو ترکیطیع <u>جھیٹے</u> اور مقدمہ کے افسہ کو مارکر گرادیا <u>؛ یزیدین ابی سفیان</u> دمعا ویہ کے بھائی ہڑی ابتیدی سے رارہ بھے ، آنفاق سے انکے باب ا<del>بوسفیان جوفوج کو حویث دلاتے پھرتے ستھے 'اک</del>ی طرف آنخلے۔ بیٹے کو دکھیکرکہا روحان میرا! اس وقت میدان میں ایک ایک سیا ہی۔ شجاعت کے جومبرد کھار ہاہے۔ توسیہ سالارہے اور سامیون کی بسبت تجمیر شجاعت کاربادہ حق ہے، تیری فوج مین سے ایک سیامی تھی اس سیدان میں تھرسے ازی سے گیا تو تیرے کئے تمرم کی حکھ ہے ، - شرجیل کا یہ حال تھا کہ رومیون کا جا رون طرف سے نرغہ تھا اور یہ بیج مین بہار ا بع من المؤمني أيت- إنَّ الله الشارى مِنَ المؤمني المؤمني المؤمني المؤمني الفَسَعَ في المُومني الفَسَعَ الم

امواله عراب که عراب که بیاندگی کی سیدیل الله فیقتلوک و بقیتالوک بیشته تقی اور منره دارت مقی گرفته ای ساته سوداکرن والے اور خدا کے مهایی بننے والے کمان بین ؟پیدا وار خیکے کان میں بڑی ، بے اختیاروٹ بڑا بیان مک کرا کھری ہوئی فوج کیر سنبھل گئی اور شریا ہے ایک کا میں بوئی فوج کیر سنبھل گئی اور شریا ہے ۔
انکو کے کراس بہا دری سے جنگ کی کہ رومی جو ٹوٹ چیلے آئے تھے بڑھنے سے کرک گئے ۔
انکو عور بین جمون سے عل محل کی کروج کی بیشت پرا کھڑی ہویں اور جبال کرتی تھیں نا ور جبال کرتی تھیں نا کہ میدان سے قدم میل ایو بھر او مہارا مُنع مند دکھیا ، ا

ران کے دونون سیلواتبک برابر مقے - بلکہ فلیہ کا یآر ومیون کی طرف تھا- دفع بقس ین مبسرہ خبکوخالہ نے فزج کا ایک مقدد کم مسیرہ کی بیٹ پرتعتین کردیا تھا عقب سے علے اوراس طرح ٹوٹ کر رسے کر ومی سردارون سے بہت سبنما لا گرفوج سنجل نیکی تام صفین ابتر موگئین درگھبرا کر تھے ہٹین سائق ہی سعید بن زیرنے قلب سے کل کر حلد کیا ، رومی دوزیک ہٹتے چلے گئے میان کا کہ میدان کے سرے یر جوالہ تھا اسکے کا ہے ک آگئے تقاری درمین اُنکی لاشون نے وہ نا لہ بھردیا اور میدان خالی ہوگیا-اس رُائى كايە واقعداد كھنے كے قابل ہے كھیں وقت گھسان كى لڑائى ہورى كھی۔ بہاش بن میں جواکب مبادرساہی تھے طری جانبازی سے *رٹرہے تھے۔*اسی آنا رمین ی نے اُنکے یا ون پر تلوار ہاری اور ایک با نون کٹ کرالگ ہوگیا۔ جبا بن کوخبر کمنوئی تقو<sub>ا</sub>ی دیرکے بعد ہوش آیا تو دھونٹر ہے بیرے تھے ک*رمیرا یا وُن کیا ہوا ؟ ایکے قبیلے کے* ہوں میں دا تعدید منتے بحرات تھے۔ جنا بخسوار بن اوفی ایک شاع نے کہا۔

ومنااین عناب و ناشدس جله و منااللذی ادی الی الحی حاجباً روئیون کے بس قدراً دمی مارے گئے انکی تعداد مین اختلاف ہے - طبری ادراز دی نے انکی تعداد مین اختلاف ہے - طبری ادراز دی نے انکی تعداد مین اختلاف ہے - طبری ادراز دی نے انکی تعداد مین از اور این کی طرف تین الم کا نقصان مواجبین صرار بن از ور - بشام بن اماسی - ابان سعید وغیرہ تقے قیمے مرافعا کیہ مین تھا کا تنگست کی خبر بنجی - اسی وقت قسط نظیم نی طیاری کی سطیعے وقت شام کی طرف کرنے مین تھا کی تا میں وقت قسط نظیم نی طیاری کی سطیعے وقت شام کی طرف کرنے کی کہا "الوداء دری شام کی عرف کرنے کے کہا" الوداء دری شام کی عرف کرنے کے کہا" الوداء دری شام ک

ابوعبیدہ نے حضرت عمرکونا رئه نتح لکھا۔اورا کی مختصرے سفارت میمی جبین حذیفہ برالیا مہمی تھے۔حضرت عمر ریموک کی حنبرکے انتظارین کئی دن سے سوئے نہ تھے۔ نتح کی خبرہ بنجی۔ تع

د فقتهٔ سجد سین گرے اور خدا کا شکرا داکیا-

ك يتام واقد فتوح البلدان صفيراس مين مركور ب

ابوعبیده پروازیا-شهرواون کے-اورخالدکوقتنسری روازیا-شهروالون نے
اول مقابلہ کیا لیکن بھر قلع بند ہو کر جزیہ کی شرط رہنا کر لی - بیان عرب کے تبائل بن سے
قبیلہ منوزج کر مت سے اگرا اور ہوگیا تھا، یالوگ برسون تک کمل کے جنمون بن سبرکرتے ہے
سیتے لیکن رفتہ رفتہ میز کن کا یہ اثر ہوا کہ بڑی عالی شان عاربین بنوالی تقین حضرت
ابوعبیده نے بہ هنوی کے اتحاد سے انکواسلام کی ترغیب وی جنا پنے سب سلمان ہوگئے
صرف بنوسیے کا فاندان عدیا میت برقایم ریا اور جند روز کے بعددہ بھی سلمان ہوگیا جیا گیا
سے بھی بہت سے لوگ بیان آباد کتے ۔امغون نے بھی ابنی خوشی سے اسلام قبول کیا۔
سے بھی بہت سے لوگ بیان آباد کتے ۔امغون نے بھی ابنی خوشی سے اسلام قبول کیا۔

قنسرين كي فتح كے بعد الوعبيدہ نے حلب كافرخ كيا۔ شهرسے باہر-ميدان من عرب کے بہت سے بیلیے آباد تھے۔انھون ننے جزیہ رصلح کرلیا ورتھوڑے دنون کے بعد سب کے ب سلمان ہوگئے تقلب والون نے ابوعبیدہ کی آمر شکر قلعہین نیا ہ لی۔عیا<del>ص برغ</del>نم نے ج<sub>و</sub> تقدمتہ الجبیش کے افسر تقے ۔ شہر کا محا صرہ کیا اور حیندر وزکے بعدا ورمفتوحہ شہرون کی *طرح*ان شرا ئط پرصلے ہوگئ کہ عبیہا یئون نے جزیر و نیا منطور کیا۔ اورانکی جان۔ ال-شہرنا ہو۔ مکا اُت تطعے- اور گرجون کی حفاظت کامعا ہرہ لکھیدیا گیا جلب کے بعد انطاکیہ آئے۔ چونکہ ہے تصر کا نماص دار اسلطنته تما ببت سے رومیون اورعام عبیایون نے بیان اکرنیا ہ ای تمی -ا بوعبیدہ نے مرطرف سے شہرکا محاصرہ کیا اجندروزکے بعد عیسایئون نے مجبور موکرصلے کرلی ا ان صدرمقا مات کے نتح ہونے نے تمام تنام کو مرعوب کردیا اور یہ نوبت ہینجی کہ کوئی ا منسر تخوری سی مبیت کے ساتھ حس طرف مکل جآ اتھا۔ عیسائی خوداً کرامن وصلی کے خوہنگار ہوتے تھے۔خیائ الطاکیہ کے بعد الرعبیدہ نے چاردن طرف نومین تھیلادین۔ برقا۔ جرمہ رمن - توزی - تورس - تل غواز - دلوک - رعبان - معصوط محموم مقارات اس سانی سے نوتح ہوتے گئے کہ خون کا ایک قطرہ بھی زمین پر ننین گرا' اسی **طرح با**لس اور قاصر بن بھی سے دلمہ من نتح ہوگئے - جرحومہ والون نے جزیاسے انخارکیا اور کما کیم ٹرائی میں سلمانون کا سائة دينگے جوز کم حزبہ فوحی خدمت کا معاد صنب آنکی ہے درخواست منطور کرلی گئی۔ انطاکیکے مضافات میں منزاس ایک مقام تھا جسسے ایشیای کوچک کی سرحد لمریمی بان وب کے بہت سے قبائل عنیان- تنوخ- ایاد-رومیون کے ساتھ <del>ہرقل</del> کے پار

مانے کی ملیا ریان کررہے تھے مبیب بن سلم نے اُن پیملکیا اور برامعرکہ ہوا۔ ہزارون قبل ہوئے خالدنے معش رحل کیا اور اِس شرط رصلے ہوئی کہ عبیا کی شرحوڑ کر کلیانیا

## ميت المقدس بيل م

مرا ویرلکو آئے ہین ک<del>ے حضرت ابو کمیٹر نے حب تیام برحر</del>یھائی کی تو**م رم صوب** برالگ الگ ربھیجے۔ خیائی فلسطین۔ عربین العاص کے جفتے مین آیا۔ عربین العاص نے تعجز ت حضرت ابو کمر ہی کے عہد میں فتح کر لیے تھے اور <u>فار وقی عہد</u> کہ تو ناملیس ۔ لد<del>۔</del> غمواس بمیت جربین تام نرب بڑے شہرون رفصت، ہو حکا تھا۔حب کوئی عام مورکہ بیش اُ جا تا تعا تووهٔ فلسطین حیو رکر انوعبیده سے بائتے تتے اورانکو مدودیتے تقے لیکن فاغ مونے کے ساتھ فوراً وابس اُ جاتے تھے اورانے کام مین شغول موتے تھے۔ یہا آگ ا آس ایس کے شہرون کو نتح کرکے خاص <del>مبت المقدیس</del> کا محا صر*ہ کیا۔عیب*ائی قلوینبر ہوکرائے بہے، اُس وقت صنرت ابوعبیدہ ۔ تمام کے انتائی اضلاع قسین وعیرہ نعتح أركي منع ،خيا بني ارُ هرسے فرصت يا كرمبت المقدس كا رُخ كيا۔ عديا يئون نے مَتَ ہ رکھلے کی درخواست کی اور مزید اطینا ن کے لئے بیشرط اصافہ کی کھوخود سیا آنہیں ورمعا برؤصلح انك إلى عون سے لكما مائے - ابرعبيده نے حصرت عركوخط لكھا ألميَّة ا کی فتح ایکی تشریف آوری برموتون ہے ۔ حضرت عرفے تمام منز زصی بر کومبر کیا اور سك متوح البلدان صغير ١١٠٠

شورت کی۔ حضرت غنمان نے کہا کہ رعبیا بی مرعوب اور شکستہ دل موجیکے ہین ۔اُر نکی اس درخواست کور د کر دین تو انکوا ورنجی ذتت موگی اور سیمحباکهٔ سلمان انکو با نکل بقیر مجتے ہیں۔ بغیرکسی تسرداکے ہتیا روال دنیگے ، میکن حضرت علی نے ایکے خلان سے ی حضرت عربے اتھی کی راے کو سند کیا ۔ورسفر کی طیاریان کس عضرت علی کوائر تقرر کرکے فلافت کے کارو ہارا کوسیرد کیے اور جب سلامہ بین مینہ سے روانہو گئے۔ 'ا طرین کوانتی**فا** رہوگا کہ **فاروق عظم کا سفر- اورسفریمی وہ جس سے دشم**نون پر سلامی حلال کا عب بنها نامقصود تھا کیس سروسالان سے ہوا ہوگا ؟ یسکن ہیان لقاً ره دنوبت خدم دحشم٬ لا ونشكر اي*ب طرف بهم*ولی فرير**ه او زممية بک نه ت**ها-سواري مين لموراتها اوجنيدمهاجرين وانصار سائقه تتعية الهم حبان بيا وازبيغي تقي كنفاروق أعظم نے مرمیہ سے تیا م کا را دوکیا ہے زمین وہل جاتی تھی-سردارون کواطلاع دیجا چکی تھی کہ جا ہیمین اگرائن سے لمین 'اطلاع کے مطابق یزیربن ابی سفیان اورخالدین الولیدوغیرونسے بہین استقبال کیا۔ شام مین رہ ک اِن امنسرون مِن ءب کی سادگی اقی منین رمی *هی بینا ی<mark>ذ حضرت عر</mark>کے سامنے ی*لوگ آئے تواس مسئت سے آئے کرمن رحررو دیا کے بیلتے اور رکھنف قبا مین مقین اورزق رق پوشاک ورفا ہری شان و شوکت سے عمی معلوم ہوتے ستھے حفرت عمر کو سخت عقر یا۔ کمومیسے آتر ہیے اور سگرزے اٹھا کا کی طرف تعینکے کہ اس قدر ملید تم نے عجم عا دمین ل یوبری کی دوایت بے معقوبی نے حضرت مل کے بجائے حفرت مثمان کا ام بیا ہے۔ ملک میقوبی صفی ۱۹۰-

امتيا ركرلين-

ان لوگور بنے عون کی کرقباؤن کے نتیجے ہتیار من دسینی پیمگری کا جوم را توسیمین رہاہے) فرہایا''تو کھیے مضائقہ ننین'' شہرکے قربیب ہونچے توایک اوسنے میلے پر کھڑے موکوارو طرت علی و ڈالی۔غوط کا دلفریب سبزہ زارا ور دمشق کے بلندا ورشا ندار مکا نات سامنے تھے دل يراك فاص اثر مواعبرت ك لهمين ياتيت ميمي كُونَر كُول مِن جَنَاتٍ وعَبُونِ الْهِ يهرنا بغه كے چند حسرت الكيزاشعار پرهے -جابیین دریز کم قیام را اورمبت المقدس کامعا مرد تهی تبین لکھاگیا۔ و ان سے عىيا ئيون كوحصرت عمر كى آمد كى خبر <u>يىلە</u> يېنىچ ئىكى متى، چنا يخەرمئيان شهركا ايك گروه ا<del>ن س</del>ى النف ك لئ وشق كوروانه موا حضرت عمر فوج كے علقے من مجھے تضے كه وفعته كھي سوار نظر آئے جو کھورے اُٹرا تھے آھے تھے اور کمرمن نلوارین حیک رہی تقین مسلما نون نے فرا متارسنیمال کئے ۔ح<del>فزتء کے یوحیا خیرہے ؟ لوگون نے سوارون کی طرف اشارہ کیا</del> مفرت عرنے فراست سے سمھاکہ بت المقدس کے عبیائی ہیں ۔فرایا گھراؤنین میں وگ ا ن طلب کرنے آتے ہن-غرصٰ معا ہرہُ صلح لکیما حاکر ٹرے مزرضحا یہ کو تخطیح معا مرہ کی تھیل کے بعد معنرت عرفے میت المقدس کارا وہ کیا ۔ گھوڑا جوسواری مین تھا سکے سمجنس کربکارہو گئے تھے اور اُرک رک کر قدم رکھیا تھا۔حصرت عمریہ دمکھیکر اُتر بڑے لوگون

ك برى منى (٢٣٠٠) ك يركن كى دوايت ب بدندى درازدى كه لكما ب كرمنا بروسلى بيت المفدس الكهالما

سرما برك توامها من اس كاب ك دوست من بقل بها و دفعواس كماب كادور احتد مني (١٩٩١)

تری نسل کا ایک عمرہ فورًا عامنرکیا۔ گھوڑا شوخ اور جا لاک محا تصنرت محرسوار ہوئے تو اسیل کرنے لگا۔ فرایا کمبخت یے فور کی جال تونے کمان سکیمی۔ یہ کمراً ترجی اور بیا دہ باچلے بیت المقدس قریب آیا تو حضرت ابوعبیدہ اورسردارانِ فوج استقبال کوآئے۔ حضرت محرف کی بیت المقدس قریب آیا تو حضرت ابوعبیدہ اورسردارانِ فوج استقبال کوآئے۔ حضرت محرف کا بباس اورسردساہان جس ممولی جنتیت کا تھا۔ اسکود کھیکرسلما نون کوشرم آئی محتی کا عبائی ایشا۔ اسکود کھیکرسلما نون کوشرم آئی محتی کا عبائی ایشا۔ اسکود کھیکرسلما نون کوشرم آئی محتی کوئی کا بباس اور مرد مال کے جو بی نوٹوں نے جو کی گھوڑ اور عمد فیمتی بیشاک حاصر کی حضرت عرب فرایا کر در خدا اس مال سے بیت المقدس مین در جال موسے سب سے پہلے سے بین گئے موائی و خوائی کا جو ان کا اسی مبیت المقدس مین در جال موسے سب سے پہلے سے بین گئے موائی کے اور جارہ کی گرامین آئے اور کا در حدی ہے جد اور کوئی آئیت بڑھی اور بجدہ کیا۔ بھرعیا یکون کے گرامین آئے اور کا دھر کھیڑتے دہے۔

چونکر بیان اکترافسران فوج اور قال جمع ہوگئے تھے کئی دن کک قیام کیا اور فروی احکام جاری گئے۔ ایک دن بلال در سول احترائے موذن کے اکر شکایت کی کہ آمریکوں ہوئے موذن کے اکر شکایت کی کہ آمریکوں ہوئے موزن کے اکر شکایت کی کہ آمریکوں ہوئے ہوئے اسر بیز کا گوشت اور میدہ کی رو ثمان کھاتے ہیں لیکن عام ملی بون کوموں کی کہ اس مجمی نفسیب منین ۔ حفزت عمر فرنے او نسرون کی طرف دیکھا۔ انفون نے عوض کی کہ اس ملک مین تمام جنرین ارزان ہی حقزت عمر فرا استرون کومجبور نہ کر سے لیکن حکم و یہ باکا اس می تقریر کو گوشت اور میدہ متا ہے۔ حصفرت عمر فرا احتراف کومجبور نہ کر سے لیکن حکم و یہ باکا اللہ علی مقرد کر دیا جا سے۔ علاوہ۔ ہر سیا ہی کا کھانا بھی مقرد کر دیا جا سے۔ ایک دن نماز کے دقت بلال سے در خواست کی کہ تیج اذان دو بلال نے کہا بین فرم

کردکیا تھاکہ رسول التہ کے بعد کسی سکے لئے اڈان ندو گا۔ لیکن آج (اور صرف آج) ایکا اشاد بجالاً دکا۔ اُدان دین شروع کی تو تا مصحابہ کو رسول اللّہ کاعمد مبارک یا ڈاگیا اور قت طاری موئی۔ ابوعب بدہ ومعاذبن جبل روتے روتے بتیا ب مو گئے مصرت تم کی بحکی لگ گئی اور ویز کسایک اثر رہا۔

ایک دن سحباقصلے مین گئے اور کعب احبار کو بلایا اور اُسے بوجیا کہ ناز کمان بڑھی جا مسحبہ افتصلے مین ایک بھرے جوا نبیا ہے سابقین کی اید گارہے اسکو صخوہ کہتے ہیں اور ہوری اسکی اُسی طرح تعظیم کرتے ہیں جبطرح سلمان حجب اِسود کی ۔ حضرت عرفے حب قبلہ کی نسبت بھا تو کعب نے کہا کہ صخوہ کی طرف ۔ حضرت عمر نے وایا کہ تم مین اب کم یمودیت کا اثر باتی ہے اور اس کا اثر تھا کہ کتنے صخوہ کے باس اگر حبی اُ اردی اِس واقعہ سے حضرت عمر کا جوطرز عمل اِس فتم کی اید گارون کی نسبت بھا فیا ہر ہوا ہے۔ اِس موقع برہاری اِس کتاب جوطرز عمل اِس فتم کی اید گارون کی نسبت بھا فیا ہر ہوا ہے۔ اِس موقع برہاری اِس کتاب کے دور ہے جستے کے صفح ، ۲ و ۲۰۰۰ کر کھی فلا خلہ کرا چاہیے۔

## حمص رعبيا يُوكى د وباره كوشش سيك يرم

یہ عرکہ اس بحافات یادر کھنے کے قابل ہے کہ اس سے جزیرہ اور آرسینیہ کی فتوحات کا موقع پیدا موا-ایران اور روم کی متین جن اسباب سے بیش آمین وہ مم او پرلکھ آئے ہیں کین اسوقت کک آرسینیہ پرنشکر کشی کے لیے کوئی خاص سبب سین پیدا ہوا تھا۔ اسلامی فتوحات سلہ ایخ طبری سنمہ ۲۰۲۰ء۔

چۈ كدروز بروز وسیع بهوتی میاتی تقیین ا درحکومت اسلام كی حدو در ار رُرهتے ما نے تھے۔بمر ملطنتون کوخو د مخود خوت پیدا ہوا۔ کہ ایک دن ہماری باری بھی آتی ہے۔ خیانچہ جزرہ والو نے نیصر کولکھا کرنے سرسے ہمت کیجیج ہم ساتھ دینے کو موجو دہن بیچا کچہ قیصر نے ایک فوج کتے مص کوروانه کی-او هرسے جزیرہ والے ۳۰ ہزار کی بھیر بھانے سا تد تنام کی طرف بھے۔ الرعبيده في معى وهراوهرس نوجين حمع كرك حمص كے بالصفين حامين ساتوس حفرت عمر لوتمام حالا ﷺ اطلاع دئ حضرت عمر نے آٹھ بڑے بٹرے شہرون میں فوجی **جما**ؤنیا <sup>ت</sup>فائمُ ررکھی تھیں۔ اور مرحکمہ مار جار منزارگھوٹ فقط اس غرمن سے ہر ذفت متیار رہتے ہتھے ک لوئی اتفا میرموقع میش آعاے توفوراً **ہرگرے نومبین بیغا رکرکے موقع پرمنیج حا**بیئن-ابرعب کا خط آی**ا توم طرن قا صد دوارا دئے ۔ فتقاع بن عمر**کو جو <del>کوفہ</del>میں مقبی تھے لکھا کہ فوراً چار منزارہ ا ليكرحمص ببينج عامين يسهيل بن عدى كومكمبيجا كه حزيره منجكي حزيره والون كوحمش كي طرف شط وک دمین عبدانته بن عتبان کونفیمبین کی طرف روانه کیا - ولی دبن عقبه کو مامور بزر ہنچک<sub>اع</sub>ب کے ان قبائل کو تھا مرکھیں جو جزرہ میں آبا دیتھے۔حضرت عربے اِن تفاات رمی فاعت نه کی بلکخو د مرینه سے روانه برکردستن مین اُسلاحزرہ والوہ سے جب سُنا کہ خو دانکے کمک مین سلما نون کے قدم اَگئے تومص کامحا صرہ چھوڑ کر حررہ کوجاتے ہ ء ب کے قبائل جوعدییا بئون کی مرد کو آئے تھے وہ بھی بھیائے اور عنیہ خالد کو بیغا مہمجا کہ تھاری مرضی ہوتوہم اسبی وقت یاعین موقع پرعسائون سے الگ ہوجائین - خالہ نے لہلاہیا کا فسوس امین دومرے شخص را بوعبیدہ <sup>سکے با</sup>تھین ہون۔ اور وہ *جا* کرنا پسند

ممس برعسیا بئون کی دوبار و کوشش

انبین رّ با ور زمجه کومتمارے مشہرنے اور علیے جانے کی مطلق پروانٹوتی تنا ہم اُرتم یتجے ہو دوعا ہ مِيورُ رُكسي طرف كل عادُ-اده رفوج نے البرعبيدہ سے تقا صنا شروع كيا كہ حمار كرنے كى اجازت ہو- اعفون نے خالدے یوجیا خالد نے کہامیری حبراے ہے معلوم ہے عیسائی ہمیتہ کت<sup>یو</sup>ن کے بل برارشتے مین- اب کترت مجی منین رہی- پیرکس بات کا اندانیہ سے اسپر بھبی ا بوعبیدہ كا دامطين نه تعايمًا م فوج كو حميع كيا اور نهايت يُرزورا ورموتر تقرير كي كهسلما نوآج خرّاب عَمْم ره کیا و ماگرزنزه بجا تولمک و مال بات ایگا اور مارا گیا توشها دت کی دولت میگی- نین گوای وتيا مون داور يرجبوك بولنے كاموقع منين كرسول التصلى الشدعليه وسلون فرا ايكر تجف الدومشرك بوكرنه مُرك وه صرور حبّت من جائيكا "فوج سيك بيس حلد كرن ك ك سكة بقیرارهی- ابوعبیده کی تقررنے اور بعبی گرا دا اور دفعتهٔ سب نے متیا رسنهال سے ابوعبیده علب نوج اورخالدوعباس ممينه ورميره كوليكرشة تعقاع حركوفيت فيار نزار فوج ك مثل مرد کو آنے تھے مص سے چند سیل رراہ میں تھے کا س وا قعہ کی خبر شنی۔ فوج میور کر سوسوا ما کے ساتھ ابدعبیدہ سے اسلے۔سلمانون کے حلے کے ساتھ عرب کے قبائل رہیا کہ خالدسے ا قرار ہوجیکا تھا ) ابتری کے ساتھ بیچھے مٹلے انکے مٹنے سے عیسائیون کا بازوٹوٹ گیا۔ اور تعوری دیر أرُاس مرحواسی سے بھاگے کومرج الرساج تک انکے قدم نہجے۔ یوا خیرمورکہ تھا جبلی اتبارہ عبيا يؤن كي طرف م موئي ا ورجيك بعد أكمو يوريجي مشقد مي كا حوصله نبين موا-

حضرت خالد كامعسنرول مونا

شام کی فقوطات اور شبہ ہے کے واقعات میں حصرت خالد کا مغردل ہونا ایک ہم واقعہ ہے۔ عام مورضین کا بیان ہے کہ حضرت عرضے غیانِ خلافت ات میں لینے کے سائڈ سبلا جوحکم ویا وہ خال کی مغرولی میں۔ ابن الانتیروغیروسب میں گھتے آتے ہیں لیکن ٹیا کی خت غلطی ہے۔ افسوس ہے کہ مغرولی میں الانتیروغیروسب میں گھتے آتے ہیں لیکن ٹیا کی خت فالد کا مغرول ابن الانتیروغیروسب میں خالد کا مغرول میں النہ کے واقعات میں خالد کا مغرول میں النہ مغرولی کا الگ عنوان قائم کیا ہے اور فودن میں النہ مغرولی کا الگ عنوان قائم کیا ہے اور فودن میں۔ مبکولہ کی مغرولی کا الگ عنوان قائم کیا ہے اور فودن میں۔

حقیقت یہ ہے کو حفرت عمیر خوالد کی بعض ہے اعتدالیون کی دوسے مرّت سے ارافی ہے۔

ام م آغاز ملافت بن اُن سے کچہ تعرض کرنا نمیں جا یا لیکن جو کہ خالد ہی عادت تھی کہ دہ کا غذت حاب دربا بطافت کو نمین میسیتے تھے اس لیے آگو اکید کھی کہ آیندہ سے اسکا خیال رصین خوالد نے جواب میں کھا کہ من حضرت اور کم بنے زبانے خوالت میں کہا کہ میں دروہ بیت المال کی رقم میں کرسکتا ۔ حضرت میں کہو آئی یہ خو دختاری کی خراب دہائی تھی اور وہ بیت المال کی رقم کو اس طرح بدیہ یع کہ ذکر کہ ہے ، ت میں دسکتے تھے ۔ جنا پنہ خالد کو لکھا کہ تر اسی شرط بر بسیالار کہ اور اس طرح بدیہ یع کہ ذکر کہ مصارت کا صاب ہمنے بیستے رہو۔ خالد ہے اس شرط کونا منظور کہا اور اس بیا بروہ ہے سالاری کے عمد ہے موال کردیے گئے۔ جنانچ اس شرط کونا منظور کہا اور اس جنانے ہوئے کے ۔ جنانچ اس فراکونا منظور کہا اور اس جنانے ہوئے کہ جنانچ اس فراکونا منظور کہا اور اس جنانے ہوئے ۔ جنانچ اس واقعہ کو حافظ ابن تخور نے ۔

تاب الاصابمين معنرت فالدك مال من عفيل لكما ب-

إ ا بنهمهُ الكو بالكل مغرول نبين كيا لمكه الوعب يره كما تحت كرديا- ايسكه معدمت ثيرين بيوا تعه

میش آیا ک*چھنرت فالدننے ایک شاء کو دس ہزار رو بیے* انعام مین دیرہئے۔ پر **میز**ور سے اتسى وقت مفرت ع نز كورچه لكما حضرت عرض ابرمبيده كوخط لكما كه فالدَّفْ يرا نعام اين گر<del>اس</del> د یا تواسرات کیا اورمیت المال سے دیا توخیانت کی۔ دونون مورتون من دہ مزولی کے قابی ن فالدُّحبر كينيت سے موزول كئے گئے و مُتنفے كے قابل ہے۔ تا مدنے جو موزولى كاخلاليكم آیا ت**ما** محبع عام مین **خال**هٔ نسسے بوحیا کریرانعا مہتنے کہان سے دیا۔ خالدا گرانی خطا کا انساز ۔ رہیتے توحصرت عمر کا حکم تماکدان سے درگذر کیا ہے لکین وہ خلاکے اقرار کرنے پر رامنی نہتے مجبوراً فاصدنے معزولی کی علامت کے طور پرانکے سرسے ٹویی آبارلی اوراکمی سرایی کی سزا کے لئے اننی کے عامیت انکی گرون ابنرمی- یہ واقعہ کو کم حریت انگیز نبین کہ ایک ایسا اراسیالا حبكا نطيرتام اسلام مين كوئى تعفس موجود لنتماا وسكى لمواسف عراق وثنام كا فيصله كردايتما اسِ طرح ولیل کیا جار ہاہے اورطلق وَم نہین ارا۔اسِ دا تعدسے ایک طرف توخالد ِ مٰ کی نیکفنی ورحق پرستی کی *شها د*ت لمتی ہے ا ورد دسری طرف حضرت عمر ن<sup>ا</sup> کی سطوت د**م**لا ل کا ازازہ ہوا ہے<sup>۔</sup> فالدنے ممص بنجکراین معزولی کے متعلق اکمیہ تقرر کی۔ تقرر مین سیمبی کہاکرامیالونین تسعيره ندمم محمكو شام كا اضرتع ركيا ا درجب مُن نے تام شام كوزير كربيا توم محبكو مؤل ردیا - اس فقرے پر ایک سا ہی آٹھکٹرا ہوا اور کما کہ اے سروار جیک رہ اِ- ان ابو سے فتنہ پیدا ہوسکتا ہے " فالدنے کہا بان! سکن عسمہ منے ہوتے نتہ کاکیا اخلاست-

ك دكيركاب الزاج فامن الروسعة صفيره ، ورّايخ طرى صفر ٢٥٠٠-

عمواس کی ویا۔ سیشام

ك برى منع مع مريد سنة الد مقام كالم

یر نازل موئی تحتین اس کئے بیان سے بھاگ چلنا **جاہئے۔**معا ذشنے منا توممبر پر چڑھ کرخط پڑھ ا ورکماکہ بروبا-بلاننین ہے بلکہ خدا کی ثمیت ہے '' خطبہ کے بعد خمیہ میں آئے تو مبطے کو ہماریا یا۔ نہامیۃ ستقلال كسائدكماياات العقَّمة بربات الكون من المدُّن بين الموزند يوزاي و سے اوکوشہدین نرٹرنا، بیٹے نے جاب وباستجدن انشاء الله مین المتا برئین۔ امینی فدانے ما إ راب ممبکوما برایئ گے "- یککر اتقال کیا - معا و بیٹے کو د فاکر آئے تو فود بهاریشے -عربن العام کوخلیفہ تقریبا اوراس خیال سے کرزنر گی خدا کے قرب کا حاب اتمی۔ رہے املیان اور سترت کے ساتھ مان دی۔ نمب کانشہمی عجیب چنرہے۔ واکا وہ زورتھا اور ہزارون آدمی طعمُہ احل ہوتے جاتے ستے بیکن معاذ اسکوخدا کی رحمت سمجم اکئے اور سی متم کی کوئی تدبیر نزگی لیکن عمروبن العاص کور نشہ کم تھا۔ معاذکے مرنے کے ساتھ انفون نے محبع عام مین خطبہ پڑھا اور کہا کہ وباحب شروع ہوتی ہے تواگ کی طرح میں لتی جاتی ہے۔ اِس کسے تمام فوج کو بیان سے اٹھکرساڑون ر مارمنا ما مئے -ارحیانی را سے بعض معابر کو جرمعان کے ہمنیال مقے ایسندائی بیان ک ادا کے بزرگ نے علانیہ کما کہ توجیوٹ کتا ہے " اہم عمونے اپنی را سے برعل کیا فوج المصح حكم كم مطابق او هرا كه هر بها رون رئيم يل كئي اور و با كاخطره عا بارا ليكن ية ربيراسوتت على من أن كه ٥ م بزارسلمان موآ دمى دنياك نتح كرف كسك كافي موسكت سق ، موت ك

مهان مو عليے مقے - اپنین ابوعبیده مها ذہن آل- یزید بن ابی سفیان - مارث بن متام سیل

بن عمر عتبه بهيل مب ديم كوكر مق محرت عرفه كوان ما ممالات اطسلاع

ہُوتی رمتی تھتی ۔ اور مناسب احکام بھینے رہتے ہتھے۔ پرندین ابی سعنیان اور معا ذکے مرتبے ى خبراً ئى تومعا ويه كو دشق كا ا ورشر الكواردن كاحا كم تقريبا-ابس قیامت خیزوبا کی وحدسے فتوحاتِ اسلام کاسلاب د نعتدرگ گیا۔ فوج نجاب اسکے كُمْ فَا لَعْتُ بِيَ حَلَى كُرُوا بِنِي حَالَ مِن كُرْقا رَحِي- مِزارون الشِّكِيمِيم مِركَثَ مِزارون عور من موه بُنْ كُنين - حودوك مرے تھے انحا مال واساب مارا مارا عقرا تھا۔ حضرت عرشے اِن ما لات سے مطلع ہوکرشا م کا قصدکیا حضرت علیٰ کومرنیہ کی حکوست دی اورخود ایلیہ کوروانہ ہوئے۔ یرفاً انجا غلام ادرببت سے صحابہ سائھ تھے۔ المیسے قریب سنچے نوکسی صلحت سے اپنی سواری غلام کو وى أور حوْداً سكے اونٹ پرسوارمولئے -را ہین جولوگ دنگیتے تھے پوچھتے تھے کرا میرالمونتین کما ہیں؟ فراتے کہ تمقا رہے آگئے 'ا اسی حیثیت سے المیمین آئے اور بیان دروایک روز قیام کیا اگڑی کا گرتہ حوزیب مِدن تھا کیا دے کی رگز کھا کرتھے سے پیٹ گیا تھا۔ مرتت کے لئے ایا کے یا دری کوحوالدکیا<sup>،</sup> اُستے حزد اینے ہی مقرسے بریندلگائے۔ اوراُسکے ساتھ ایک نیا کُرتہ ملیار کرکے بیش کیا حضرت عرف نے ایناکر تہیں لیا اور کہا کہ ہمیں سینی خوب جذب ہوتا ہے -الم سے ومشق أسئ - اور شام ك اكتراصلاع مين وتودّو طير مايرون قيام كرك ناسب أتطا ات کئے۔ فدح کی نخواہن تقسیم کین - حوارگ و بامین ہلاک ہوے تھے اُنکے وُور وُنردیک کے وارتون كوبلاكر أنكي ميراث ولائي سرحدي مقا ات يرفوجي جياؤنيان فالركين جواساميان خالی مو نی تقین انپرنے عدہ وار مقرر کئے (ان ابتون کی بوری فصیل و ور سے حصے من انگی) طِلتے دقت لوگون **کوممبر کیا ، اور جرانتظا بات کئے تھے اُنکے تعلّی** تقرر کی۔

مله بوذری-

اِس سال وب مین سخت قعطیرا - اوراگر حضرت عرف نے نهایت مستعدی ہے اتبطام نہ کیا ہو اتو ہزار دن لاکمون آدمی بھوکون مرحاتے - اسی سال -مهاجرین اورا نغیاراور قبائل عرب الى تنوامين ادرروزيني مقرركئے - خِنا مخدان أتظامات كى فصيل دوسرے حصنے مين أمكى-

قيباريكي فتح شوال وليهم

تتریخ بتام کے ساحل پرواقع ہے او ولسطین کے منابع میں شارکیا جا اہے۔ آج ویرانا براہے کیکن اُس زمانے مین مبت بڑا شہرتھا اور بقول بلا ذری کے تین سومازاراً مادیتے ہے شہرراول اول مسام میں عمروین العاص نے چڑما نی کی اور مرت کے عما صرہ کئے یڑے رہے لیکن فتح ننوسکا۔ ابومبیدہ کی وفات کے بعد حصرت عربہ نے یزمرین ابی سفیان کوا کی مجمعہ مقررکیا تھا۔ اور حکم دیا تھا کہ قبیار یہ کی مهم رجابئن۔ وہ ، اہزار کی مبیت کے ساتھ روانہ ہوئے اور شهر کا ما صره کیا۔ لیکن سے لیج مین جب بیار ہوئے توامیر معاویہ اپنے بھائی کو انیا قائم مقام کر شق چلے آئے اور سین وفات یا ئی۔امیر معا ویہ نے بڑے سروسا مان سے محاصرہ کیا۔شہر کے كئى دنوة قلوسے كل كل كراشے لىكن ہرد فوشكت كھائى۔ اہم شهر رقبضه بنوسكا- ايب دن ا یک بیودی نے مباکا کا م پیسف تھا۔ امیرمعا دیے اِس اکرانگ ٹرنگ کا نشان دیا جوہتر کے اندرا ندر قلعہ کے دروازے کک گریمتی یہ خیائی جیند بہا درون نے اُسکی را ہ فلعہ کے اندر پنچکر ور وازه کھول دیا۔ ساتھ ہی تمام فوج توٹ پڑی ورکشتون کے کیٹنے لگا دیے۔ مورض کا بیان

مسے کم عیبایون کی اُسی نزار فوج می حبین بت کم زندہ کی۔ چز کہ بیا کیہ مشہور مقام تھا كى نتع سے كو إشام كامطلع صاف ہوگيا۔ جرزه ميايانيي مرائن کی فتےسے دفعتّہ تا معجر کی انکمین کھل کئیں عرب کو باتو و ہتھیر کی گا ہ سے دلیتے تھے یااب انکوءب کے نام سے ارزہ آیا تھا۔اسکا بیا ترہواکہ ہرمرصوبے نے بیاے حزوء ب کے مقابلے کی متیاریان شروع کین سب سے پہلے جرزہ نے ہتیا سبھالا کیؤنکہ سکی سرحد عراق سے إلكال ملى بهوئى هتى يسعد نعے حضرت عمركوان حالات سے اطلاع دى- و بان سے عبدالله بن كمعتم ما موربهوے اور ونكر حصنرت عمر كواس معركه كا خاص خيال ها اورا ورافسرون ومجي خود ہی نامز دکیا ۔ خِنا بخِه مقدمته کبیش پر رہبی بن الافکل سینیہ برحارت بن صان میسرہ بر فرات بن حیان - ساتورچانی بنیس ما مور ہوئے - عبدانتٰ میں ایخیزار کی معبی<sup>س</sup> تكريت كى طرف برهي المريته كامراه كامره كيا مين سي زياده زياده ما مردر بادوريه وفي کے ہوں۔ چوکھ مجمیون کے ساتھ عرب کے چند قبایل بینی ایا دیتفلب ۔ فزیمی مگر تقے عبدالترف خنیہ بام بمیا اور غیرت دلائی که تم عرب مور عمری غلامی کیون گوار ا ارہے ہو؟ اس کا یہ اتر ہوا کرسب نے اسلام قبول کیا اور کملا بھیجا کرتم تشریر جا کرد-ہم ك جزيره اس مقدة آبادي كانام م جود مله اور فرات كنريج بين إسلى مدود اربورين مفرب أرمينيه كالحير عند اورايتيا ي كومك مَنْ فَنَامِ مَنْ فَيْ وَاقْ مِنْ اللَّهِ مِنْ مِنْ عَلَيْهِ مِنْ مُنْ اللَّهِ مِنْ مُنْ اللَّهِ مِن اللَّهُ مُن اللَّهُ مِن اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِن اللَّهُ مِن اللَّهُ مِن اللَّهُ مِن اللَّهُ مِن اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِن اللَّالِي اللَّهُ مِن اللّ عد اوروس سے د دهار محد عربی جانب واقع ہے اوروس سے ۲ منرل برب ۱۰ عین موقع پر عجیون سے ٹوٹ کر مسے المین گئے۔ یہ بند وسبت ہوکر اینے میں بہمادا ہوا عجی مقابلے کو بکلے تو خود اکنے ساتھ کے عرون نے عقب سے انبیر طرکہ کیا عجمی دونوطن سے گھر کر اِلکل ایال ہوگئے۔

فورشتان

ما يجرى من غيروبن شعبه بعبرو كے حاكم تقريبوت اور چونكه فورستال كي مرا

ملے خوزشان اس مقد آبادی کانام ہے جو واق اور فارس کے درمیان واقع ہے اُمین ۱۱ بڑے شہر جرج بیریہ ج

تصروت ملی مونی ہے۔ ایخون نے خیال کیا کہ سکے فتح کے بغیر نفیرہ میں کا فی طورست امن وامان قائم نبین ہوسکتا جنا نی سیال بری کے مشروع میں اہوا زیرہ بکوارانی ہر مرجم کتے تھے حلہ کیا۔ بیان کے رمیس مے ایک مختصر ہی تِنم دے کرملے کر بی مِغیرہِ دِمرِی کِیجَے ا ہوازکے رئیں نے سالانہ رقم بندردی اورعلانیہ بغاوت کا افلیا رکیا مجبوراً ابرموسی نے نشاكشي كي- اورامواز كوما كهيرا- نتابي فوج جرميان رئتي مقي اسنے بري ايوري سے مقابل کیا لیکن آخرشکست کھائی اور شہر فتح ہوگیا غذیت کے ساتھ ہزارون آدمی کوزاری غلام نكرتقسيم كييكئ يلين حب حضرت عمركوا طلاع بوئي توانمون في كوكويا كرسب را اردیے جایئن خیائی و سب جوڑ دیے گئے۔ ابوسی نے ابوانے بعدمنا ذرکارخ کیا۔ یود ا كي محفز فامقام تعا - نتهروا يون نے بھي مهت اور ہتقلال سے حلے كور وكا- اس معركة من مُهاج بن زیاد حواکی مغرزا منسر محص شهیدم وسئے ۔ اور فلعہ والون نے انخاسر کا میں کررج کے کنگرہ رکیکا دیا ابوموسط نے مُا جرکے بعائی رمیع کو بیان جیورا اور خودسوس کوروانہ ہوسے بربیم سنے منا ذرکو متح کرایا اورا بوموسے نے سوس کا محاصرہ کرکے برطرف سے رسد بند کردی تعلیمہ این کمانے چنے کا سامان ہوجیکا تھا محبور اُرمیں شہرنے ہیں شرط مِٹنے کی ورخوہت کی کہستے ماندان کے ننوادمی زندہ حیور دیے جا مین - ابومسی نے منطور کیا - بیس ایک ایک آدمی کو ا **مزد کرنا جا تا تنا اورامسکو**امن دیریا جا ما تعاله نیمتی سے شارین رئیس نے خود انیا کام نیین ایا تھا۔ نیا بخدجب ننوی تعدادوری ہوگئ توابورسے نے میں کو فتارہ ا ہرتماقتل کراوا

سوس کے بعد را مہزر کا محاصرہ ہوا اورآ مٹیلا کھ سالا نہ پرسلے ہوگئ۔ یزد گروآس وتت فیمن مقیم ت**غا** اورخاندان شاہی کے تمام ارکان سائھ ستھے۔ ابوموسلی کی دست درازیون کی خبر بن اً سکوبرا برمیختی تمتین- مرفزان نے جوشیرویی کا ماون ا دربڑی قوّت وا قدار کا سردارتها میزدگرد ا کی خدمت مین حا صزموکرءوض کی کداگرا ہوار دوفارس میری مکرمت مین دیدہے جامین تومن ع<sup>کے</sup> سلاب کواگے برہنے ہو روک دون سیزوگرد شعے اسی وقت فرمان حکومت عطا کرکے ایم جمبی عظیم سا *مة كردى خوزستان كاصدرمقام شوسترتها* ادرشا بى عارات ورنوجى جيا وُنيان دو كَيُم تمیں سین تقین مہر فران نے وہاں پنچ والعد کی مرت کرائی۔ اورخندق اور رجون سے شکرکیا۔ اِسکے ساتم ہرداف نغیب اور مرکارے دوڑا دیے کہ دگون کوجویش دلاکرخبگ کیلیے آما د و کرین - اس تدبیرست قومی جوش جوا منسرد ه هوگیا تھا پھر نازه ہوگیا اور جندروزمین ایجیمیت اعلن فرایم بوگئ- ابوموسلے نے دربار خلافت کونا مراکھا اور مدد کی درخواست کی - وہان سے عاربن یاسرکے نام جوائس وقت کوفہ کے گورز تھے ،حکم آیا کونعان بن مقرن کو ہزارادی کے سائمة مد د کومبیجین لیکن غنیم نے حوسروسا مان کیا تھا اُسکے ساسنے یمبیت برکاریمتی- ابوموسلے نے دوبارہ لکھا حیں کے جواب میں عمل رکو حکم پنجا کہ عبدا بٹترین مسعود کوا رھی فوج کے ساتھ کوفه مین تیبورٌد دا ورباتی فوج سے کرخودا بوموسے کی مرد کوجاؤ ً اُ دھر <del>حربر ک</del>ی ایب بڑی فوج لیکر طولا بنجا ابرموسے نے اس سروسامان سے شوسترکام خ کیا اور شہرکے قرب بنجار درسے ڈائے۔ ہر مزان کثرتِ فوج کے بل ریفود شہرسے کل کرحلہ آور ہوا۔ ابوہوسے نے بڑی رمیب سے صعب آرائی کی۔ میمنہ برا رہن الک کو دیا۔ (میر حضرت انس رصحابی شہور) کے بھائی تھے)

میسره بربرارین عارب انفهاری کومقررکیا سوارون کارسا لیحضرت اس کی رکاب مین تھا۔ دونون فومین خوب جی تورکر لڑمن۔ برارین الک مارتے د حارثے شہرنا ہے۔ ماکٹ کے بینے گئے۔ اُدھ ہر مزان تنایت بها دری کے ساتھ فزج کو لڑار ہا تھا عین بھا کہ یرد دنون کاسا مناہوا۔ برا ر مارے گئے۔ ساتھ می بخراۃ بن تورث حرمینہ کوڑا ہے سمتے برھکر وارکیا۔لیکن ہرمزان شے انخابمی کام تام کردیا۔ اہم میدان سل نون کے ہا تورہا تعجمی ا كي مېرارتقتول اورغفيه سوزنره گرفيارېوك- مېرېزان نے قلعه بندېوكرازا يې ماري ركتي-ا کیب دن ستهرکا ایک آدمی حمیب کرا تو موسی کے پاس آیا اورکما کواگرمیرے جان د مال کومن وا جاسے تومین ستر رقیصند کرا دون - ابوموسی شنے منطور کیا - اسنے ایک عرب کوحر کا ام انسر تھا ساتھ لیا اور نہر جبل سے جو د حلبہ کی ایک تلخ ہے اور شوستر کے نیمے مبتی ہے یار ترکوا کی ته خانے کی راہ شہرمن د خل موا اورانسرس کے منعررجا درڈال کرکماکہ نوکر کی طرح میرے تیجیے جيميے علے أو - خياني تنهر کے گلی کوچون سے گذرتا ہوا خاص ہر فران کے محل من آیا · ہرفزان رمئیون اور در باریون کے ساتھ طبہ جائے مبٹیا ہوائتا۔ شہری نے اکموتام عارات کی سیہ کرائی اورمرقع کے نشیب و فراز د کھا کرا ہو موسی کی حذمت میں حاصر ہوا کرمین اپنا فرص ادا ار حکا اسمے متاری متا ورتقدرہے - انترس نے اسکے بان کی تصدیق کی اور کہاکروونلو ما نازىرے ساتھ ہون تونتہ فوراً فتع ہوجا سے - ابوہوسی نے فرح کی طرت د مکھا - دونتو، الماورون نے برمکرکماکر ضواکی راومین ہاری جان حاصرہ- اشرس اسی ترخانے کی را ہ ا شهرنایه کے دروازے پرمینی - اور میرودالون کوتر تین کرکے اندر کی طرف سے دروازے کھولد کے

ا دھرا توموسلے فوج کے ساتھ موقع پرموجود تھے۔ دروازہ کھلنے کے ساتھ تام نشار ہوٹ بڑا اور سترمن كرمل طريني- مرفران نے بھاك كر تطعين نياه لى مسلمان فلعد يہ يہني تو است بُرج بِرحِرْه كَرَكُما كُرمِيرِك تركنش مين اب بهي سُاوتير بهن اورجب مك اتني بي لاشير بها إيا ن تحبيجا مين مين گرفتارنيين برسكتا تا مم مين اس شرط پراترا تا مون كرتم محيكه هرمنير مونجاد م ا ورح کھیونصلہ وعمرے ہاتھ سے ہو'' ابوموسے نے منطؤ رکیا اور حصرت انس کو ما مورکیا کہتے کک اُسکے ساتھ جا بئن- مبر فران بڑی شان وشوکت سے روا زہوا۔ بڑے مرسے میزاور فاندان کے تام آدمی رکاب میں لیے۔ مربیہ کے قریب بینچاشا یا نہ تھا تھ سے آراستہ مہواتا ج مرضع حرافین کے نعتب سے شہورتھا سررر کھا۔ دیبالی قبازیب بدن کی۔اور شا ہا ن عمرے طریقے کے مواقت زیور سینے سکرسے مُرضع ملوار لگائی۔غرض شوکت وشان کی تعمیرا بْكُرِمِر بِنَيْمِينَ دَاهْلِ مِوا اور لوگون سے يوجها كراميرالمونيين كمان مِن ؟ وهمجيتا عا كوستحض کے دہربہ نے تام دنیا مین ملغلہ ڈال رکھاہے اسکا دربار ہی بڑے سروسامان کا ہوگا حصر اعمراسوقت مسى بين تشريعين ركفته عقبي اورفرين فال ركيشي موك عقيم-مرمزان عجمن داخل موا تو میکرون تما شانی سایته متعے جواسکے زرق برق بیاس اکوبا یہ بار دعیتے تنتے ، ویتحب کرتے تنتے ۔ لوگون کی آمٹ سے حضرت عمر کی اُنگو کھا وقعی أثنان وشوكت كامرتوع سامنے تتما- اورے نيچے نک دکھیا اورعا ضربن کی طرف مخاطب ہوکر فرما یاک<sup>ور</sup> بیردنیا سے دون کی دلفر پیبیان ہن ''۔ ایسکے بعد **برمزان کی طرت نخاطب** ا بهت اسونت مک شریم نین آیا تھا۔ مغیرہ بن شعبہ کھیرکھ فارسی سے آشنا تھے اسلیے

ا تغون نے ترجانی کی ۔حصنرت عرنے پہلے وطن پوجیا ۔مغیرہ، وطن کی فارسی نہیر جانتے سقے۔ اِس کیے کماکہ ازکدام ارصنی ؟ بھراور باتین شروع ہوئین -قادسیہ کے بعد ہوان نے کئی دفورسعد سے ملے کی متی اور مہینہ است رارسسے میر میر دیا تا تھا۔ ستوستر کے معرکے مین و ورشے مسلمان اسراسکے باتیس مارے گئے تھے ۔حفرت عمرکوان تو کا اس قدر بنج تماکه انفون نے ہر فران کے قتل کا پورا اراد و کرلیا تھا۔ اہم اتام حجبت کے طور پرع صن معروص کی ا حازت دی- اسنے کها کرتم! حب یک خدا ہا ہے ساتہ تھا تر مار علام تھے اب خدا تمعارے سا توہے اور مرتمعا رہے غلام ہن - یہ کہ کرنینے کا یانی ما گا۔یانی یا اتوبیاید التم مین سے کر درخواست کی کرجب تک یانی ندیی لون مارانجاؤن حصرت عمرنے منطوركيا-اسنے يالد إت سے ركھ را وركماكمين انى نبين متيا اوراس سے شرطك موا فق، تم محکومتل نبین کرسکتے۔ حضرت عمراس مغالطے پرحیران رنگئے۔ ہرمزان نے کا پڑوجید ارها اور کہاکمین سیلے ہی اسلام لاجیکا تھا لیکن یہ دبیراس سے کی کولوگ یہ نکسین کہ مین نے آلوارکے ڈرسے اسلام قبول کیا۔حصرت عمر نہایت خوش موے »اور فاص مرمنی میں بنے ای اجازت دی؛ اسکے ساتھ دومزارسا لا نہ روز مینہ مقرّرکردیا۔ حصزت عزفا رہی دعنی<sup>و</sup> کی نہا<sup>ہ</sup> مین اکثراس سے مشورہ لیا کرتے تھے۔

شوسترکے بعرجندی سابور برجلہ ہوا جوشوسترسے ہم ہمیل ہے۔ کئ دن کم محاصرہ رہا۔
ایک دن شہروا ہون نے خود شہر نیا ہ کے در وازے کھول دیئے اور نہایت اطمیان کے سمتا ملہ ان دافات کومری نے نمایت نفیل کھا ہے «سکل مقدا مذریہ بن عبدرہ باب المکیدۃ فی الحرب»

تمام لوگ اینے کاروبارمین مصرو ف ہوئے مسلمانون کوانکھےاطمنیان ریتمب ہوا اوراسکاسس در **ا نت کیا۔ شہروالون نے کمائم ہمکوحر میری شرط**یرامن دے تھے۔اب کیا حجار ارا۔ سب کو حیرت متی کدامن کس نے دیا جھیق سے معلوم ہوا کہ ایک غلام نے لوگون سے جھیا کرامن کا رقعه لکمدیا ہے- ابوموسی نے کہا ایک غلام کی خودرائی عبّت نمین ہوگتی۔ شہروا ہے کہتے تے کہم آزاد اور غلام ہنین مانتے - آخر حصرت عمر کو خط لکھا گیا- اسمون نے جواب من کھا لەسلمانون كاغلام سېمىلمان ہے اور حبكواً سنے امان ديدى تمام مسلمان امان ديجكے- اس شهر کی فتح نے تمام خورشان مین اسلام کاسکہ مٹیا دیا ور فنومات کی فہرست میں ایک فیر نيا لمك اصنا فدموكيا-

عراق عجب - سباب بهری

جلولاکے بعد مبیاکہ م بیلے لکو آئے ہیں یزدگرد، آرمی جلاگیا۔ لیکن بیان کے رسی آبان ما و دیہ نے بیوفائی کی۔ اس کئے ہے سے عل کر اصفہان اورکرمان ہوناہوا خراسان مینجا ىيان پنچا**ھرو**مين قامت كى تائش يارسى سائىرىتى اسكے ليئے آنشكدہ تيا ركزايا اوطبير بنج مولطنت ومکومت کے میا تھ لگاد ہے میں خبراگی ک*ی و ب*ن نے عواق کے ساتہ فزرتان مبی نمتح کرنیا ۱ ورمرمزان وسلطنت کا زور بازویمها زنده گرفتار موگیا- به **مالات** سکرنهایت ك سرزين واق داد صمرون يرمنتهم مزي سيركوواق وبكتيم بن ا ورشرني ميت كرعوات عجرة عواق عجم كى مدودارمب يربن كم نشال من به برنان مبزب مین شرز دستر قرمی خورسان «در مزجن شرم افرواق به مهرونت اسکه برس شرامغمان مران ورزمی مجمع ب تے۔،برتت رقی باعل دیوان ہوگیا، ورا سیکے قریب طران آبد ہوگیا ہے جرشا باب قامار کا دار سلطنت ہے،

طيش من آيا-اُڙج پيلطنت کي شيت سے اسکا وہ بيلارعب وداب با قي نبين را تھا اہم من ا برس كا خاندا نى اثرد فعةً نهين مِٹ *سكتا ت*ھا- ايراني اسوقت ك*ك يتمجھے تھے ك*روب كى اندم ہرو مقا ات مک پنچکرژک جا مگی-اس سئے اکواپنی خاص سلطنت کی طرف سے اطبیّان تعالیکین خوزشان کے واقعیت اکی انکھیں کھلیں۔ساتم ہی شنشاہ کے فرامین اور تعیب ہنچے اس ونعَيْطِبرِسَان، جرحان، د ما وند، رہے، اصفهان، ہدان سے گذر کرخواسان-ادر بنتیک لاظم ا بیج گیا - ۱ ورویژه لا که کالیزیمی دُل فرمین اکرهه ا<mark>- یزدگرد ن</mark>ے مرد ان شاه کو رسرمز کا فزرند تعالیم مقرر کرسکے ننا وندی طرف روانہ کیا۔ اس معرکہ میں درفیق کا ویاتی حبکو عمم فال ظفر شخصتے سکھے مبارک فالی کے لما کاسے نکالاگیا۔خیانچہ مردان شا ہ حب روانہ ہوا تو اس مبارک عَلَم کا تھر را أسيرسا يهكرما حا ماتها عمارين ياسترنے حوائس وقت كو قدكے گورز تقبے حصرت عمروا خات سے اطلاع دی مصنرت عمر عمار کا خط گئے ہوئے مسجد منوی مین آئے اور سب کومنا کے کہا لەگرد ەع ب! اِس مرتبه تما م ایران کمرمبته م و کرصلاہے کەسلما نون کو د نیاسے شا دے تم لوگوگی لیاراے ہے ؟ طلحہ بن عبیدا مٹیرنے اٹھکر کہا کہ امیرالموسنین! وا قعات نے ایکو بحریبر کا رنبا دماہے ہم ایکے سوا کچیئنین جانتے کہ آپ جومکم دین بجا لامین، حضرت عثمان نے کہا کہ دمیری <del>ہے</del> ہے کہتام میں مقبرہ کے افسرون کولکھا جاسے کابنی ابنی فومبین لیکوا ت کوروانہوں۔او اتپ حزد اہل حرم کو لیکرمرینہ سے اعلین- کو فہمین تمام نومین آیکے علم کے نیچے جمع ہون اور <u>یم رہا وَ نرکی طرف رُخ کیا جائے ، ، حضرت عمان کی اس راے کوسب نے پندکیا لیکن</u> صرت علی کیے متے حضرت عمر نے انکی طرت دیکھا وہ بوے کہ نتا م اور بعرہ سے فرمین

اسین توان مقا ات برسر مدکے بیشمنون کا قبصنه و جائیگا اوراپ نے مرینہ عبورا توءب مین اسین توان مقا مات برسر مدکے بیشمنون کا قبصنه و جائیگا اوراپ نے مدی را سے ہے کا ب میں است نہیں اور فتا م میں و نویوں بیان سے نہیں اور فتا م میں و نویوں بیان سے نہیں اور فتا م میں و نویوں بیان سے نہیں اور فتا م میں و نویوں بیان میں ایک فیم میں بیس الدر فیم کی کی میں را سے بھی کیکن میں تنا اسیان میں اسی میں میں بیا الدر فیم کا میں اسی میں میں بیا الدر فیم کی میں اسیالا رفتا کو ن جا بس کی کا اسی طرف خیال و برا اسے میں کی اس ورجہ کا کوئی شخص نفر میں بیا الدر فیم کی اسی میں مصردت ہے۔

مفس کے قابل و برا اسے وہ اور اور فتمات میں مصردت ہے۔

حضرت عرك مراتب كمال من يربات بمي وافل ہے كو أنفون نے ملك كے مالات سے اسی وافغیت ما مسل کی متی که قوم کے ایک ایک فرد کے اومیا دے انکی محا ومین ستے ۔خیا نخیر اس موقع يرما مزين نے مؤدكما كرا سكا فيعيار آپ سے بُرمكركون كرسكتا ہے ؟ معنزت عرف منان بن مقرن کواتناب کیا اورسب نے اسکی امّید کی۔ نعان- تمین سزار کی مبت ہے کہ اکوفہ سے روانہ ہوے۔ اس فوج میں بڑے مرسے صحابہ شامل تنے حبیر ، سے مدینہ برالیان مبدالنَّدينع حربرعلي - مغيروبن تعبه عمرومعدي *ربّ - ز*ا دومشورمن - نغان نعار بي عاسون وم بوکر حلوم کیا کرنیا و ندتک مات مها ن ہے ۔ خیا ی<sub>خہ</sub> نیا و ندتک برا پر معتے ملے گئے ۔ نیا و ند سے توميل دهراسيد بإن ايك مقام تما و إن ننجار الود الا ايك برى تدبير معنرت عمر في يركد نا <sub>تا</sub>س من جو اسلامی فرمبین مو**جو دمقین ا** کمولکه ما که ایرانی ائس طرف سے نیا وند کی طرف مبیضے ربایئن-اس مع وتمن ایک بهت بری مروت محروم روگیا-

عجرنے تغان کے اِس سفارت کے لئے بیغام بھیا جنا پیمونیرہ بن شعبہ جربیلے ہی اس کام ار انجام دیکیے سے سفیر نکر گئے۔ عجم نے بڑی شان سے در ودربار آراستہ کیا مردان شاہ کو اج بینا کرا تحنتِ زریر مجایا تحنت کے در مین این ملک ملک کے شاہرادے ، دیباے زرکش کی قبا میر ہے يرتاج زر، التقون من سونے كے كنگن، بينكر بينچے - أكے تيجيے دؤردؤ رنگ سياميون كي مفتون كم ہوین کی برہنہ تلوارون سے انھیں خیرو ہوئی جاتی تین - مترجہ کے ذریعے سے گفتگو شروع ہوئی۔ مردان نتاه نے کہا۔ ہل عرب! سب سے زما دہ برجنب ،سب سے زما دہ فا درست،سب سے زما یہ ہا یاک، حوزوم مرسکتی ہے تم ہو! یہ قدرا نداز حرمیرے تحنت کے گر دکھڑے ہیں انجمی تھا رافضا كرديت ليكن محبكور كوارانه تفاكه ابكے تير تمارے اليك خون مين الوده مون-اب بعبي اگرتم بيان سے جلے جا وُ تومُنُ تکومعا ف کردؤگا' مغیرہ نے کہا ان ہم ہوگ ایسے ہی دلیل وحقیر تھے لیکن اس کمک مین اکریکو دولت کا مزه ٹرگیا اور بیونے ہم سے اُسی دقت حیومٹین گے حب ہار گی ا اناک پز کھیرجا بئن'-غرص سفارت بحاصل گئی- اور دونون طرف *جنگ* کی متیا ریان شروع مگوئین نعمان نے سیمنا درمیسرہ مندینہ اورسویدبن مقرن کو دیا۔ مجرّدہ پر قبقاع کومقرر کیا۔ ساقہ پرمجاشے۔ متعین ہوئے۔ اُ دھرمینہ رِزردگ اورمسیرہ رِیمن تعایمیون نے میدان خبک میں ہیے۔ ہرطرف گو کھ در تھیا دیے تقے جبکی وجہے سلمانون کو آگے بڑمنا مشکل ہونا تھا ، ورعج جب چاہتے تھے شہرسنے کل کرملہ آور ہوتے تھے۔ نعان نے یہ حالت دکھیکرا نسرون کو ممبع کیا اورسب الگ الگ راسے لی جلیحین خالدا لاسدی کی راسے کے موافق فرمین آرا سنہ وکرشہرسے مندسا نتسیل کے فاصلہ ریکٹرین اور تعقاع کو تھوڑی سی فدج دیکھیے باکہ شریر جلدا ورمون

عجمی ڑے جوش سے مقالبہ کو تکے اوراس بندوست کے لیے کہ کوئی تحفی تعمیمے نہیئے یائے ص قدر راهة أت سعة يحي كوكر وكبيات آك سفة - قعقاع ن الن عيثر رامة تهتيمي بٹناشروع کیا مجمی را برزمتے چلے آئے۔ بیان کس کا کھروکی سرصدے کل آئے تنمان نے ادھر حوفوبین جارکھی متیں موقع کا انتظار کر رہی تقین۔ جون ہی تعجمی زوریا کے انتظا نے ملد کرنا جا یا۔ لیکن تعمل نعمان نے روکا عجمی حور ابرتیر رہا ہے تھے اُس سے سیکرون مرار سلمان كام أئے ليكن اضركى يا اطاعت عتى كار تم كھاتے تھے اور ہا تقرروكے كھرے ستے مغيرة باربار كهتے تھے كەفوج بكارموئى ماتى ہے اور موقع باتھ سے نحلا ماتا ہے ليكين نغاني خیال سے دو پیرکے ڈھلنے کا اُتطار کر رہے تھے کر سول التہ حب دشمن پر طمہ کرتے تھے تواہی و ارہے تھے۔غوض دویہروهلی، تونعان نے دستو سکے موا فق تین نفرے مارے۔ سیلے نوه پروزج سروسا مان سے درست موگئی۔ د وسرے پر لوگون نے ملوارین توللین - تبہترے پر دنعتہ حلہ کیا اور اِس بے مگری سے توٹ رُڑے کر کشتون کے میشتے لگ مکئے - میدان با اس قدرخون بها که طورون کے یا نون بیسیل مبیل جانے ستھے ۔ خیا بی تعمان کا گھوٹرا تعیبل کرگرا ساتھ ہی خود بھی گرے اور زخمون سے چور مو گئے۔ انکا امتیازی لباس سے وہ معرکے مین ہیانے جاتے تھے ملاہ اور سفید قبائھی۔جون ہی وہ گھوڑے سے کرے تغیم بن قرن انکے معانی سے علم کو تعبیث رتھام میا اور انکی کلاہ اور قبابین کرانکے گھوتے بر سوار ہو گئے۔ اس مربیرے فعان کے مرنے کا حال سی کومعلوم بنواا وراڑائی مبت و قائمُ رہی۔ اِس مبارک زمانے مین سلمانون کو خدانے جوصبط و استقلال دیا تھا اُسکا المزہ ذیل کے واقعہ سے ہوسکتا ہے تنمان جس وقت رخمی ہوگر ہے تھے اعلان کر دیا تھاکہ بئن ا مرجمی جاوئن توکوئی شخص اڑائی کو چیوٹر کرمیری طرف متو قبہ نہو۔ اتفاق سے ایک سیاہی انکے یاس سے نماہ دکھیا تو کھیسائن باقی ہے اور دم توٹریہ ہیں۔ گھوٹ سے آرکر انکے ایس شخیا جا اگرانکا حکم ایرائیا۔ اسی طرح جیوٹر کر ملاگیا۔ فتح کے بعد ایک شخص بسرمانے گیا۔ انفون نے انجمیس کھوٹین اور پر جیاکہ کیا انجام ہوا؟ اسنے کہا سلمانوں کو فتح ہوئی ،، مندا کا تسکر اداکر کے کماکہ فور اعلی کو اطلاع دو۔

رات ہوتے ہوتے جمیون کے بافون اکھرگئے اور بھاگ تھے مسلمانون نے ہمان کہ تعاقب کا-

 کهوکذیج کرفوج کونفتیم کردین بینا نجدیج و امرات جار کرور دریم کوفروخت موسئے۔ اس لڑائی مین قریباً تیست مرارعجی لڑکر وارسے گئے ۔اِس موکدکے بعد مجر نے بھرکھی زور نہین کیڑا۔ چنا نچرعرب نے اِس متع کا نام فتح الفتوح رکھافیرو زھبکے اِستہ رجھنرت اُردِق کی شہادت لکھی تھی اِسی لڑائی مین گزفتار ہوا تھا۔

# عام التكركستي إيبي

سیکن ایرانیون کوکسی طرح مین نمین آ اتھا۔ وہ ہیشہ نئی فومین تیا رکرکے مقابلے یا تے سے اور جو مالک مسلما نون کے قبضے مین آ تھا۔ وہ ہیشہ نئی فومین تیا رکرکے مقابلے یا تھے اور جو مالک مسلما نون کے قبضے مین آ چکے ہتے و ہان غدر کروا دیا کرتے ہتے۔ نما وند کے موکے سے حصرت عمرکواسیر خیال ہوا اور اکا برصحابہ کو بلاکر دو حیا کرمالک مفتو و میں آبابہ بند کر میں میں ہو ماتی ہے ہوگون نے کہا جب کک یزدگر دایران کی حدود سے کل نجائے یہ فتنہ فرد نین ہو سکماکیونکر جب کک ایرانیون کو یہ خیال رم گاکا تحت کیا ن کا وارث موجود کا

أسوقت بك أكمي اميد برمنقطع ننين بوسكتين -اِس بنا پرحضرت عرف مام نشاکشی کا را ده کیا- اینے ؛ ترسے متعدد عکم تیا رکئے اور مداجدا مالک کے امسے امزد کرکے مشہورا منسرون کے اس سے میان فرا سان کا حنف بن قبيس كو، سابور وارد شيركا مجاشع بن سعو د كوم على كا - غمان بن ابعاص لتقفي كو، ف اکا-ساریین ریم الکنانی کو-کران کا سهیل بن عدی کوسیتان کا عاصم بن عمرکو-کران کا م بن عمیرانغلبی کو- آ ذربیجان کا عتبه کوغهایت کیا مساعمهٔ مین به افسیرایخ اینے متعینه لا کی طرف روا نیموئے۔ خیا بخہ مم انکوالگ الگ ترتیب کے ساتھ لکھتے ہیں۔ فتوحات کے اس سلیلے مین سب سے میلے صفہان کا تمبرے مراسمہ من عبدالندین عبدا متینے اس صوبہ برحرمانی کی۔ بیان کے رمئیں نے حبکا ام سندارتھا استمان کے نواحي مين برى مبيت فراہم كى تتى - حبكے مراد ل يرشهرراز حادويا اكب يرا الجربه كا راهنه تقا وونون فومبین مقابل ہوئین توجا دویا نے میدان میں اکر کاراکھ جبکو دعومے ہوتنا مرسے مقابلے کو آئے عبدالتہ خود مقاملے کو تکلے۔ جا دو ہیا راگیا-اورسا تھ ہی ٹرائی کا بھی خاتمہ ہوگیا-استندار نے معمولی شرابط میں کے کرائی عبد النّرنے آمے بڑھکر ہے بینی خاص اصفہ آن کا می ا کیا۔ فا ذوسفان میان کے رمئیں نے بینجا مجیجا کہ دوسرون کی دانین کیون صابع ہون، ہم تم ا الروخود فیصله کرلین- دونون حرافیت میدان مین آئے - فا ذوسفان نے کموار کا وارکیا -عبدالتّد انعاس ایمردی سے اُسکے حاد کا مقا بارکیا کہ فا ذوسفان کے مُناسب با فتیارا وسندین کلی اوركساكيين ترسي أنامنين جابها- بلكه شراس شرط يروا لركامون كها بشندون مين سي

جومیائے جزید دیکر شہرمین رہے اور جو جاہے کل جائے۔ عبدا مترات یہ شرط منطور کی اور حایرہُ مسلم لکھیدا۔

اسى أننا من خبراكى كهمدان مين غدر موكيا حفرت عمر في مقرن كوا وهرروا ذكيا ا غون مع ارہ ہرار کی مبیت سے ہمان بنی کرما مرہ کے سامان کئے لیکن جب محاصرہ مین ويرفكي تواصلاع مين مرطرت نومبين تمييلا دين- بيان كمكه مهران ميموز كرا قي تام مقال فتح ہوگئے۔ یہ مالت دکھیکرمحصورون نے بھی بہّت ہردی اور مسلح کرلی۔ ہدان فتح ہوگیاین ولم نے رکئے وا وربیان وغیوسے ائر دیام کرکے ایک بڑی فزج فراہم کی۔ ایک وات شے فرخان کا اِپ رہنبدی جورے کا رمیں تھا ابنوہ کثیرے کرآیا۔ دوسری طرف آذیجان سے اسفنوا رسم کا ممائی سنا۔ وادی رو دمین بوزمبین ممع ہومین۔ ادراس نور کاران را كالوگون كوننا ونركا موركها داكيا- آخر وملي نے شكست كھائي۔ عروہ جروا تعدّ حبيم من مصرت عمرے یا س شکت کی خبر دیکر گئے تھے اس مع کا بیام نے کرگئے کہ اس دن کی ملانی ہو مائے منرت عمر- دلم کی تیار مان سنکرنیایت ترو دمین تلقے۔اورا مراد کا سامان کررہے تلقے - کہ دفعتً عروه بینچے ۔حفیرت عمروخیال ہوا کہ ننگون اُ تھا منین - بے ساختہ زبان سے آٹا لیّاہ نکل عروہ ف كماآب كمبرمين منين منداف سلمانون كومع دى-

مفرت عرف تغیم کونا مراکھ کا کہ ہموان برکسی کوانیا قائم مقام کرکے رَسے کو روا نہوں ہوئے۔ کا حاکم اس دقت ساؤش تقا جر برام جر برین کا یو تا تقا۔ اسے و نیا وزر طبرستان۔ قوس جر جا کے رئیسون سے مرد طالب کی۔ اور بر حکم بہے امرادی نوجین آئین۔ سیکن زمنیہ جی کوسیاوش

مبيا كرم ميلے لكيه آئے مين حضرت عمر<u>نے آذريان كا علم عتبہ (بن فرقد) اور كمبير كومبيا تما</u> ا ورأنکے برمنے کی متین بھی تعین کردی تعین - کمیرا جرمیدان مین پننچے تواسفندا برکاسا نیا ہوا -اسفند! من اسفند بایر کا بهائی اورزنره گرفتارم دگیا- دوسری طرف اسفند بار کا بهائی ، بهرام عمر كاستراه موا ييكن وه بحن تكت كها كريماً كريا - انفند بآرنے بهائي كي تكت كي خبرشني تو کمبیرے کما کراب اڑائی کی اگر کھو گئی۔ اور مین جزیہ ریم سے صلح کرلتیا ہون۔ جزیکہ آ ذریجان ابھی دونون بھایئون کے قبضے مین تھا۔عتبہ نے اسفند آرکواس سٹرط پرر ہاکر دیا کو وہ اُدیجان **ك** نقشه ديكيف سه أذ بيجان كايترا به مره لك گاكه شرتبر نزيجاً سكاصد رمغام مجينا عاجيه رسابق مين شهرمرا خه دارا بعيد رها) بردها دراردسل اسي موبين أبادين - أفريان كي ووشيدين دوروتين بن اكب يركر ديدا درارف الك أشكرونا إلى تقا حبكانام افراً اوكان تعا- دوسرى روايت يهي كهنته بيلوى بن ذركه من تشرك ببن اور إيكان كيه معنى بن محافظ ميني نگاہ دارندہ آتش مؤیکہ اس صوبین آنشکہ دن کی کثرت متی اس وہ سے ہی، م برگیا جکوع رون نے بنی زبان مین آدر بيان كرسا ... کا رمیس ر کرحزبیا داگرارم بموترخ باذری کا بیان ہے کہ ادبیان کا علم خدیفی بن یان طلا تھا۔ دو نها دندسے جل کرار دبیل پینچ جرآ ذبیجان کا پایتخت تھا۔ بیان کے رسیس نے اجروان میمند۔ سرآہ۔ سبز میرائج وغیرہ سے ایک ابنوہ کشیر حمیع کرکے مقا بلہ کیا اور کست کھائی بیر شمالا کھے سالا نہملے ہوگئی۔ خدیفہ نے اسکے بعد موقان وجبلاتی برحل کیا اور نقے کے بھر رہے اڑائے۔ اسی آنار مین در بارخلانت سے خدیفہ کی موز لی کا فران بینچا اور عقبہ بن فرقد آئی جگہر پر نقر ہوے ۔ عنبہ کے بینچے بہنچے آفر بیجان کے تام اطراب میں بغاوت بھیل مکی تھی جنا بخیہ عتبہ نے دوبارہ ان مقا ات کو نقتے کیا۔

#### طبرتان سيبية

ہم اوبرلکو آئے ہین کہ فعیم نے جب رَسے نتح کرلیا توا تکے بھائی سویہ۔ تونس پر جبھے اور یہ
وسیع صوبہ بغیر خبگ جدل کے قبضہ میں اگیا۔ یہان سے جرحان جوطبر سان کا مشہور ضلع ہے
نمایت قریب ہے۔ سوید نے وہان کے رمیس روز این سے نامد دبیا م کیا۔ اُسنے جزیر جبلے کرلی
اور معا ہرہ صلح میں مصیح لکھ دیا گیا کہ سلمان جرحان اور دہشان وعیر و کے امن کے ذروا رہی اور
مکک والون میں جولوگ بیرونی حلون کے روکنے بین سلمانون کا ساتھ دینگے دو جزیر سے بری ہی ترمان کی حبر سالم طرح اس شرطیر صلح کرلی کریا تھا کہ درم اس کی حبر سنکو طرب ان کے رمیس نے بھی جو سیمدار کہ لا انتحاب سی مقرور ملح کرلی کریا تھا کہ درم ملک نیز میں نامی ہو بیا دورت نیز میں ایک مددور رہ ہیں۔ سنرورت بڑا سائ

سالانه د يا كرگا- ا ورسل نون كو أنبر ما أكموسلما نون بر كُيمة حق نهوگا-

ارث ل

بگیر حواً ذریجان کی مربه امور موئے تھے آ ذریجان فتح کرکے باب کے تصل بہنج گئے تھے ار حصرت عرف ایک نئی فوج تیآر کرکے انکی مرد کوئیجی- اِب کا رمیس حبکا م مشهر راز تھا مجسی تھا۔ اوسلطنتِ ایران کا انحت تھا۔ سلما نون کی آ م شکرخردحا صربود ا ورکہا کو محبکو آ مینید سے کمیندون سے کیم ہرروی سنین ہے۔ مَن ایران کی نساسے ہون اورجب خودایران فتح ہو دیا تو مَن تھی تمارامطیع ہون لیکن میری درخو است ہے کہ مجسے عزیہ زیبا جائے بلاب مفردت میں آئے وفوج ا مرا دلیجائے چوکر حزبہ در حقیقت صرب محافظت کامعا د صنہ ہے ہیں لیے بیشرواسطور کر لگر کہ اس ا فانع ہوکزومین آگے شرمین عبدالرمن بن رسبیہ لمبنجر کی طرف جوملکت خرر کا یا ی تحت تھا روانہ اروئ - شهر رازسا تعرتها أسن تعب سے كها كوكيا اراده ہے :- بهلوگ اپنے عهد من اسى كوئنيت سمعت متے کرد دلوگ بمیر طرید کرنہ آمین عبدالرحمٰن نے کمالیکن مَنْ حب مک اسکے مگر مزاجی جا ب ازنسن سکتا بنا پذیر **میا** نتح کیا تعا که خلافتِ فارونی کا زانه تام موگیا - او هر کمبین خاکی حبا سے اران کی سرصد شرع ہوتی ہے فتح کرکے اسلام کی الطنت میں ملالیا مبیب بن مسلمة ا در خدیغه نے تغلیس ا ور حبال اللان کارنج کیا۔ لیکن قبل اسکے کو د ان اسلام کا بھر راہو تا مله مورة سنيه كولادا رين مي كفيرين جواشيا ي كرعيه كالك مقب سنال ين تواسرد ، مزب بين كري درموا ي مترود كم جلاكيا بيض من گوستان اور مزربین طاوروم دانع مین جز کمته مربه خلاخت خمانی مین کاش نتم جواتما ارسینیه نقشهن فاردنی زنگ سے مبا ہے، حفزت عمر کی خلافت کا زانه موجیا جنا پندیز اتام مهآت حفرت عمان کے عمد میں انجام کوئی ہیں۔

#### فارس سيروه

· فارس پراگرچهاول اول سناه مین حله هوالیکن جو که حضرت عمر کی ا**جازت سے نه تما** اور نه است چندان کامیابی ہوئی ہنے اُس زمانے کے واقعات کے ساتھ اسکولکھنا مناسب ہیمجیا- عراق اورا ہواز جوء ب کے ہمیا یہ تحقے نتح موجکے تو حضرت عمراکٹر ذوا یا کرتے تھے ک<sup>ور</sup> ہمارے ادر فارس کے بیج می<sup>ان</sup> تین بيارهايل متواتو أيضًا تفائيكين فارس سے ايك أ**نفاتي طور پرخبگ جيرگئي-علار بن الحفرمي شا**يع من برین کے عامل مقربہ کے ۔ وہ بری بہت اور و ملاکے آدمی منے اور فی کیسعد وقا مس معض اساب کی دحبسے رقابت تمی ہرمیدان مین اُن سے مرهکر قدم ازلواہتے تھے - سورت حب قادسیکی ازائی مبتی توعلا رکوسخت رشک موا- بیان ک*ک درباب* خلانت سے ا**مارت تک نملی** اور **زم**ین طبیا رکرکے دریا کی را ہ فارس پر حرمها نی کردی <u>خلیدین منذر سرنشکر س</u>ے اور <del>جار و دیرانمعالی</del> ، ورسواربن ہمام کے انحت الگ الگ ومبین تمین مسطی بنچکر جازنے ننگر کیا ا در فومبین کنارے پر ترین- میان کاها کم ایک بهره بتها- وه ایک ابنو وکشیر مکرمینجا ا در دریا اُترکزاس مایسغین قایم کمین کم ملمان حباز کم بیعینے نہا مین- اگر میسلمانون کی مبیت نمایت کم بھی اور جباز بھی گوما و تمن کے قبعندمین *آگئے تقے لیکن سی*سالارِنوج کی ٹابت قدمی مین فرق نرآیا۔ بڑے جہش کے ساتو تعالمب ك مال كے عزانيد مين وات كى مدود كمثا كرفارس كى مدود ثرما دىكىئ بين گرينے جبوت كانقىنە دياہے اُس وقت فارىر كے مدود ميتے شال من معنان ، جزب من جزار من مشرق من كوان و رمزب من واق وباليما سب سے برا ، ورشهور شهر شراز اس م کورم ہے اور فوج کو لاکا راکہ سلما نوا بدل ننوا - وشمن نے ہارے جازون کے سلمان کے ساتھ۔ وشن کا ملک بھی ہاراہے۔

تعلیدا در مباره د بری جا نبازی سے رجز بڑھ بڑھ کرامی اور ہزاردن کو تہ تینے کیا۔ خلید کا رجزیے تھا۔

قد حفل كلامل اد بالجراع بحسن ضرب القوم بالقطاع ياال عبد العيس للنن اع وكلهم في سُن المصاع

اُدھر بھی راہیں بند متیں ۔ ایرانیون نے بیلے سے ہرطرف ناکے روک رکھتے تھے اورجا با ہو ہیں اسعیتن کردی تعین ۔

صفرت عمر فارس کے ملکا حال علوم ہوا تو نیایت برم ہوئے ۔ علا آکو نیایت شدید کا نام الکھا۔ ساتھ ہی عتبہ بن غزوان کو لکھا کہ سلما نون کے بجائے کے لیے نوراً نشکرتا آرہوا درفارس پر برحی اور سلمان جان جا سے ۔ جنا بخہ ابرہ ہزار فوج جبکے سیدسا لا را بوسبرہ سکھے طیار ہوکر فارس پر برجی اور سلمان جان ایک ابنوہ کئیرے متعے وہان بنج کی وریسے ڈاکھ می اسلام اور نون وربعین دل تو کر کروٹے بالا فرا بو سبرہ ایک ابنوہ کئیر میکا سرشکر شہرکی تھا اکھٹا کر لیا تھا۔ دو نون وربعین دل تو کر کروٹے بالا فرا بو سبرہ اسے نتے حاصل کی لیکن جزیکہ آگے بڑھنے کا حکم نتھا تھرہ وابیں جائے۔ واقعہ نیا وزیکے جبد کا حب حقارت عمر نے ماصل کی لیکن جزیکہ آگے بڑھنے کا حکم نتھا تھرہ وابیں جائے۔ واقعہ نیا وزیک عبد کا حب حقارت عمر نے ماصل کی لیکن جزیکہ آگے بڑھنے کا حکم نتھا تھرہ وابیں جائے۔ واقعہ نیا وزیک عبد کا حب حقارت عمر نے ماصل کی لیکن جزیکہ آگے بڑھنے کا حکم نتھا تھرہ وابیں جائے۔ واقعہ نیا وزیک عبد کا حب حقارت عمر نے ماصل کی لیکن جزیکہ آگے بڑھنے کا حکم نتھا تھرہ وابیں جائے۔ واقعہ نیا وزیک عبد کا حب حقارت عمر نے ماصل کی لیکن جو بکہ تا کہ بڑھنے کا حکم نتھا تھرہ وابس جائے۔ واقعہ نیا وزیک تھیا تھی وابس جائے۔ واقعہ نیا وزیک دوبیا کی سالم کی کی کیا کے میں مواب نو بیا تھیا گیا کہ کا کھی کیا کہ کا کہ کا کھیا کہ کا کھیا کی کیا کہ کا کھی کیا کہ کیا کہ کا کہ کیا کہ کا کھیا کہ کا کھی کی کی کو کہ کیا کہ کا کھی کے کہ کی کے کہ کے کہ کا کھی کی کے کہ کے کہ کے کہ کے کہ کی کے کہ کو کے کہ کو کہ کے کہ کیا کہ کی کے کہ کی کے کہ کی کی کے کہ کی کہ کی کے کہ کی کہ کی کھی کو کو کہ کی کے کہ کو کہ کر کے کہ کی کہ کی کی کے کہ کی کے کہ کی کی کے کہ کہ کے کہ کی کے کہ کے کہ کی کے کہ کی کے کہ کو کہ کی کہ کی کے کہ کے کہ کی کے کہ کے کہ کی کے کہ کی کہ کے کہ کے کہ کی کے کہ کی کے کہ کی کے کہ کو کہ کی کہ کی کہ کی کے کہ کے کہ کے کہ کے کہ کی کے کہ کی کے کہ کے کہ کی کے کہ کے کہ کی کہ کی کے کہ کی کہ کی کے کہ کی کے کہ کی

ق حقية اوّل

فتح فارس

- بارسیون نے قوج کوصدرمقام قرار دکر بیان بڑا سامان کیا تھا۔ لیکن حب سامی ذوین المعت معنی مقامات مین میں گئین تواکلو می منتشر موابڑا اور یہ اکلی تک کا دیا جہ تھا جنا نجہ سابر وارتی می میں میں گئین تواکلو می منتشر موابڑا اور یہ اکلی تک کا دیا جہ تھا جنا نجہ سابر وارتی میں حب عمان مقرب باری باری نام مقرب موٹ تو شہرک نے جو فارس کا مرزبان تھا بغاوت کی در این انعاص بجرین کے عال مقرب موٹ تو شہرک نے جو فارس کا مرزبان تھا بغاوت کی در اس مقوم مقامات ہاتھ سے کل گئے۔ تقمان نے اپنے بھائی مگا کوالے جبعیت کئی کے ساتھ اس مقرب مورکیا یکم حزیرہ ایرکا وال فتح کرکے تو ج بر بڑھے اور اسکو فتح کرکے وہن جھاؤی ا

ہت سے جعتے دباہے۔ تہرک یہ دبیھارنایت طیش میں آیا اورا کی فوج عظیم مجا کرے توج ہے۔

برها سراستہ سبنیا بقالا د مرسے حکم خودائے برهکرتقابل ہوئے۔ تہرک نے نمایت ترقیب
سے صعب آرائ کی۔ ایک دستہ سب سے بیجے رکھالکوئی سابی بیجے باؤن ہٹائے تو دبین
قمل کردیا جائے۔ غوص خبک شروع ہوئی اور دیر تک موکر رہا۔ یا رسیون کوشکست ہوئی
اور شہرک جان سے دراگیا۔ اسکے بعد عنمان نے ہرطرت فوجین سیج بین اس مورکست تام
فارس میں مو هاک پڑگئی۔ عثمان نے جس طرت زیم کیا ملک کے ملک فتح ہوت سیطے
فارس میں مو هاک پڑگئی۔ عثمان نے جس طرت زیم کیا ملک کے ملک فتح ہوت سیطے
مین خود عنمان کے بات سے فتح ہوئے۔ قیا۔ دارا بجرد دعنیو برفوجین گئیس اور
میں خود عنمان کے بات سے فتح ہوئے۔ قیا۔ دارا بجرد دعنیو برفوجین گئیس اور

ا فراطست بدا مراب - رقبه ٥٠٠ ٥ وميل مربع ب ١٠

### كرمان - سستاريم

### عيسان سيرة

یه ملک عاصم بن عمرے یا تقریب نتی موا۔ با شذب سرحد بربرات نام گرر کا گئے۔

برابر برجتے چلے گئے بیان کک کر زبر تج کا جسیستان کا دوسرا نام ہے محاصر ہ کیا۔

رون نے چندر وزر کے بعدارس شرط پرصلے کی درخو است کی گرائی تام اراضی حملی

رعافریم نام کانیہ عدود اربدیوین۔ ٹال بن کوہتان ، جزب بن کو قان ، مٹر ق بن سیتان او یزبین فارس - دائ

ہا بیکا والمعدر کوانی تردید سروا تعامی مگر اب جرفت آباد ہے ، سک سیتان کوعرب سمبتان کہتے ہیں۔ حدود اربویو

ی جائے۔ سل نون نے یہ شرط منفور کرلی اوراس طرح و فاکی کرمب مزر دعات کی طرف اللہ سے تو ملک کے تبعظ اللہ سے تو ملک کے تبعظ اللہ سے گزر جاتے سے کرزراعت تھے تاکمی فیج کی اللہ سے آئی فیج کی اللہ سے اللہ سے اللہ سے اللہ سے آئی فیج کی اللہ سے اللہ سے اللہ سے اللہ سے آئی فیج کی اللہ سے ال

مران يستروه

كران برحكم بن عمر و انغلبي مامه من المرات الم

کے ما تو جند اسمی بھی جو لوط مین اکے تقے دربار خلافت مین سے ۔ معارعبد کی جو اسے ما تو جند اسمی بھی جو لوط مین اکے تقے دربار خلافت مین سے ۔ معارعبد کی جو اسمی می جو لوط مین اکے تقے دربار خلافت مین سے ۔ معارعبد کی جو اسمی معتبر کے کہا اس میں معملہ اجبل و واج ہا و شل و خلی و اللہ اس میں اسمیلہ اجبل و واج ہا و شل و خلی و اللہ اسمیلہ کے واکدت اور اللہ اللہ میں اللہ اللہ و شرک کا میں۔ اکنون نے کہا میک و افتی حالات بیان کر انہوں ۔ صفرت عمر نے لکھ میجا کہ فرمین جا ان کہ تابیخ میکی ہیں و میں رک ما میک خیا ہے فتو ما میں خیا ہے فتو مات فاروتی کی احمر میں کر انہوں کے اسمالہ کی احمر میں کر انہوں کر انہوں کے انہوں کے انہوں کے انہوں کے انہوں کے انہوں کہ میں و میں رک ما میک خیا ہے فتو مات فاروتی کی احمر میں کر انہوں کہ انہوں کر انہوں کہ میں و میں کر انہوں کر انہوں کہ میں دور کی مدر دروی ہے انہوں کہ مدر دروی ہے انہوں کہ مدر دروی ہے انہوں کر انہوں کہ مدر دروی ہے انہوں کہ مدر دروی ہے انہوں کہ مدر دروی ہے انہوں کر انہوں کہ مدر دروی ہے انہوں کہ مدر دروی ہے انہوں کہ مدر دروی ہے دروی کر دروی ہے انہوں کر دروی ہونے میں خوان کے دروی کی مدر دروی ہے انہوں کر دروی ہونے دروی کر دروی ہے انہوں کر دروی ہے انہوں کر دروی ہونے دروی کر دروی ہونے دروی کر دروی ہونے دروی ہ

من بیطبری کا بیان ہے۔ موترخ بلا ذری کی روایت ہے کہ دیمل کے نشیبی حبتہ اور تھا نگر فریدی اُمین - اگر مصیح ہے تو حصرت عمر کے عہد مین اسلام کا قدم سندھ ہند ہی اُجیا تھا۔ ا

## مناسان کی نقع اور زدگرد کی مزید

، و بریم لکوه آئے مین کر حضرت عمر نے جن جن اسٹردن کو ملک گیری کے عَلَم بھیج بھے اپنین مُنْ بن نتیس نجی تصےاورا کموخراسان کا مَکْرُعنا بت ہوا تھا احنت نے مستلہ میں خراسان کا ﴿ ﴾ منسین ہوکر مرات بینچے اوراً سکونتع کرکے مروشاہمان پر شعے بیزوگر دشاہشاؤاس نیم تھا۔ انکی آمُسُکروہ مرورو و ملاگیا اور خاقان عین اور دیگرسلاطین کواستداد کے - <u>بزوگرو بیا</u>ن سے بھی بھا گا اور سیدھ<del>ا گنج</del> سنیا۔ اس اُ نامِین کوفیسے اما دی فومین ے جیکے مینہ ومیسرہ وغیرہ کے اصر علقمین انضری - رہی بن عامراتیمی عبدالتّدین ابی و المعنى - ابن ام غوال المداني - عقر وحفت نه ما زه دم فوج ليكر بلخ پرحد كيا - يزدگر د ﷺ ست کھائی اور دریا کرخاقان کی حکومت مین جلاگیا۔ احفت نے میدان خالی اکر طرط بهبیدین اورمثیای**وی مغارسان** یک نتح کرلیا- **مرور و د** کونتگاه قرار دیگرهام کیا-اور الى درورغيرو تضع بنين سے يھيلي رواب إنكل ديران بن ١٠

مضرت عمر کونا مراکھا کہ حزاسا ن اسلام کے قبضہ میں اگیا۔ *حضرت عمر کونا*ت کی دسعت کومیان میند منین کرتے مقے خطر پڑھکر فرا یا کہ ہارے اور خراسان کے بیج میں اگ کا دریا حایل ہوتا تو خوب ہوتا۔ احنف کے مردانہ حصلون کی اگرچیرٹری توریف کی اور فرمایا کو احتف شرقیوں کا سراج ہے ا الم حواب مین حزنا مدلکھا اُسین لکھاکہ جہان کب بینج چکے ہود ہا*ن سے آگے ز*یرھنا۔ اُو **ھرزوگر ف**را فاقان کے پاس گیا تواسے بڑی وقت وتوفیری ا درایک فوج کثیر ہمراہ لیکرزوگرد کے ساتھ ساتھ فراسان کور وانہ موا- احنت چوہیں ہزار فوج کے ساتھ بلغ مین عتم تھے خاقان کی آرسنکر مرورو دکورونا ہوسے اور وہا ن بنجکر مقام کیا۔ خاتا ان بنج ہوا ہوا مرورود مبنجا۔ یزوگرو خاتان سے الگ ہوکر مرو أثنا بهمان تى طرف برما - احفت شص كلط ميدان من مقا لمهرُ إمناسب سمعبا- نهرُ تركرا كي يدان مین حکی نشبت پر بیاد تما معت ارائی کی- دونون فرمبین مّرت کک اُسنے سامنے مفین جماستے یر می رمین هیمی صبح ا ورشام ساز دسا مان سے آراسته هو کرمیدان خبگ مین ماتے تھے ا ور**ی**ز کمه ا دھرسے کیرُحوا بنین دیا جا یا تھا بغیر*اٹ بھڑے دہیں آمانے تھے۔ ترکون کا عا*م دستور کا کرسیلے تین مبا درمیدان فبگ مین ابری ابری طبل ود ا مرکے سائ**د جاتے ہیں ب**یرسارالشام بیب مین آب- ایک دن احنف خود میدان فبک مین مکئے۔ اُدھرسے ممول کے موافق ایک ترک المبل وعَلَمْ كے ساتھ كا - احف نے حلكيا اور ديرتك رة وبدل رہى أخر احنف نے اير جي اری - ترک زمین برگرکر مرکبا - منت نے بوش مین اکرکها -ان على كل سُوس معيك ان يخضب الصعدة اوتينقا

ما عدے کے موافق دواور مبادر ترکی سیدان مین آئے۔ اور اصف کے اسے ارے گئے۔

خا قان حب خودمیدان مین آیا تواپنے بها درون کی لاشین میدان میں ٹریمی دکھیں۔ چونکہ . تنگون ّرا تھا- نهایت پیج و ماب کھا یا اور فوج سے کہا کہم سفیا مُرہ ، پرا یا جمگر اکیون موال میں خ م اسی وقت کوح کا حکم دیدیا۔ يروكرد-مروشابهان كامحاصره كئے يواتها كه جربنجي-فتح سے اور دور ازاد جوام خا سائة ليا اورتركتان كا قصدكيا- درباريون نے يه دکھيكر كەلمك كى دولت بائة سے كلى ماتى ا رُ وكا اورحب أسنے نما اتوربسرِ مقا لمباكرتام ال اوراساب ايك ايك كركے هين ليا-يزدگرد ہے سروسا مان خ**اق**ان کے اِس ہنچا اور صنرت عمر کی اخیر خلافت کک فرغانہ میں جو**خا**مان كا دار السلطنة تعامقيم را- احف نع مصرت عمر كونت كانامه لكما- قاصد مدمنيه بنيا توحفرت عم نے تمام آ دمیون کو ممغ کرکے فرو و فتح سنایا اورایک پُراٹر تقریر کی۔ آخر مین فرایا کہ آج بوسیوں ا کی سلطنت بر با دِمونَنی اوراب وه اسلام کوکسی طرح صر رنبین بنجا سکتے لیکن اگرتم بھی رہت کرداریا پڑا ہت قدم زہے تو خدائم سے بھی مکوست میسن کردوسرون کے اسمین دیدگا ہو۔

مصركي فتح -سبع

مصری فتح اگرچہ فار وقعی کا زامون مین داخل ہے لیکن اسکے بانی مبانی عمو بن تعاس سفتے۔ وہ اسلام سے بہلے تجارت کا بیٹہ کرتے سمتے اور مصراً کی تجارت کا جولا گا و تھا۔ اُس زانے مین مصرکی نسبت گواہر قتم کا خیال بھی انکے دل مین ناگزرا ہوگا لیکن اُسکی زخیزی اور شا وابی کی تصویر مہیشہ اکمی نظرین بجربی مہی حضرت عرض نے شام کا جوا خیرسفرکی آئیین

یه اُن سے معے اور مصر کی نسبت گفتگو کی - حفزت عمر ننے پہلے۔ ا متیاط کے لحاف سے انکار کیا میلن آخرانکے اصرا ریرراصنی ہوگئے اور مار نہار فوج سائڈ کردی ،اسپر بھی آنکا دامطمئن نہ تھا۔ <del>عرق</del> كهاكه فداكا ام ليكرر دانه ويكين مقرميني سيد اكرميرا خليبنج حاسئة وأسط بيرا الموسي تھے کہ حفرت عرزہ کا خطبینجا۔ اگر حب<sub>ال</sub>مین آگے ٹرھنے سے رد کا تھالیکن حیز کمہ شرطبیہ مکم تھا <del>عرابے</del> کهاکداب توسم مقرکی فدمین آھیے۔ نوص وبیش سے عَلِ رَزاتینیے - یہ نتر کرر وم کے کنایے پرواقع ہے اور گواب ویران ٹراسیم لیکن اُس زانے مین آباد تھا اور جالینوس کی زیار تھاد ہونے کی وجسے ایک مماز شہرُنا جا آ تها- بيان سركاري في رمتي متى - أن شهرت كل كرمقا لمركيا اوراكي بيينة تك معركة كارزارگرم را -الاً خرروميون نے تنگست کھائی۔ عمرو- فراسے جُل كبيس - اور اُمّ دينن كو فتح كرتے موئے فسطا وسينے منطاط-ائس زمانے مین کفنِ دست میدان تقساد رئیس قطعهٔ زمین کا ام تما جود ریاسے نیل ا و ر مبار مقلم کے بیج مین واقع ہے اور جہان اس وقت زراعت کے کھیت یا چرا گا ہ کے تختے تھے لیکین جونكرميان سركارى فلعدتما اور روى لللنت كئے حكام جو مقرمین پہتے تھے بيين را کرتے تھے اِسکے علاوه خيكه درياسے نيل پرواقع تھا اور حبازات وکشتيان فلعه کے دروازے پراکزگتی متين ان وحجرہ الم مقرزي دغيره من لكماب واصد مقام بغي من عروس الدا كفون نداس خيال سي دائم شرصف من كما بركافا صدست خط انین ایا در کها د ملدی کیاہے منزل رینجا کے واقع - ومیش کے قرب سنے توخلا لیار کمولاا در پڑھکر کہا کا مراز ونین نے لکی ہے کا معزیسی مرور کرما اسکن م تومعر کی مدمن ملی «لیکن عروبن العاص کی نسبت ایسی مله ازی کے اتمام کی کیا فرورت ہے - آواؤ تو ملاد می تصنفي كب دغوا كموعيش من ملا ليكن نج من الاموت بمي كؤمر عنين كيوكر فج وزومعرمن وافل ہے- مرکاری صرورتون کے بیے نهایت مناسب مقام تھا۔ عمرونے اوّل اسی کوّا کا ۔اورمحا صرہ کی طیّاریان شروع کین-

مقونش حومصر كافزوا اورقتصر كالج جرزارتها عردبن العاص سيسيكي فلعدين بنيج حيكا تفااور الرائي كابند دنسبت كرم القاتباعه كي عنبيطي اور نوج كي قلّت دكي كرونے حضرت عمر نه كوخط لكهما او أعا طلب کی-ایخون نے دس منزار فوج اور میآرا منترسیجے اور خطومین لکھا کہ اِن احسرون میں ایک کی نہار بزارسواركے برابہے۔ یہ افسرز سربرن انعوام۔ عبادہ بن انھاست۔مقداد بن عرسلم بن مخلّہ تھے۔ رسم کا ا جورتبہ تھا اُسکے کا فاسے عمرونے انکوا منسرنیا کی ورما صرہ وعیرہ کے انتظامات انکے ہاتھ مین دیدہے ، انخون نے گھڑے پرسوار ہو کرخندق کے جارون طرت حکرنگایا ورجہان حبان مناسب تمایمنا تعدادكے سائة سواراور بیادے شعبین کیئے اسکے ساتھ نجینیقون سے تیمر رسانے مشروع کیے۔ سیر یورے سائت نہینے گذر گئے اور فتح وتکست کا کھونصا پنوا۔ زببرنے ایک دن منگ اکرکھا کر آج بین مسلما بون پرفندا ہوں۔ یہ کمکزنگی ملوار ہا تقدمین لیا درسٹیرعی لگاکر قلعہ کی فسیل پر ٹرچھگئے ، چند ورصی بنے ان سائن دیا فصیل بینچکرس نے ایک سائھ کمبیرکے نورے لمبندکئے ،ساتھ ہی کا فوج نے نعرہ اراکر قلعہ کی زمین دہا کھی۔عیبا نئی سیمھیکر کڈسلمان قلور کے اندائیس آئے۔ بدحوی موكر معبائك إدهر زمبر يتصيل سے أثر كر قلعه كا دروازه كھول دیا۔ اور تمام فوج اندرگھس آئی يفول نے یہ دیکی کمسلم کی درخواست کی اورائسی وقت سب کوامان دیدی گئے۔

ایک دن معیبا یئون نے عمروین انعاص ا دراور انسان ثوج کی ٹری د موم د هام سے دعو<del>ت</del> میں اور آب کی سابقہ نے اور اور انسان ٹیکے ۔

الع عروبن العامس نے قبول کیا اور سلیقہ شعار لوگون کوسا تدہے گئے۔

دوبسرے دن عمرونے اُن لوگون کی دعوت کی۔ رومی بنے ترک واحتام سے اُسٹے اور مملی اُسٹے اور مملی اُسٹے اور میا کی وجوت کی۔ رومی بنے سے حکم دیدا تھا۔ سادہ عرب باس میں بنے اور جدیا کی جا نامجی سادہ بعنی معمولی عرب باس میں بھتے اور و بی اندازا ورعادت کے موافق کھانے پر بلیٹے۔ کھانامجی سادہ بعنی معمولی اگوشت اور روفی معتی ہوبون نے کھانا شروع کیا تو گوشت کی بوٹیان ٹور بے بی فراس زور سے واند قون سے نوجے سے کہ نور ہر کی جینیٹین اور روسون کے کیٹون برٹر تی تین ۔ کھانے کے بعد رومیون نے کیٹون راز تی تین ۔ کھانے کے بعد رومیون نے کیٹون برٹر تی تین ۔ کھانے کے بعد رومیون نے کیٹون اور بیسا بھی مین شرکی سے بعنی دہ ایسے گنوا اور بیسا بھی مین ۔

مومیون نے کہان نور الل الرای منتے اور بیسیا ہی ہین ۔

مقوقتی بنی اگریتهام مصرکے سے معاہد اصلی لکھوا یا تھالیکن ہر قبل کو حب خبر ہوئی تواسنے زائیت الاصنی ظاہری اور لکو تعبیا کہ قبلی اگر عوب کا مقا لم بنین کرسکتے تقے تو رومیون کی تعداد کیا اُکھی اُسرفٹ ایک غلمی الشان فرج روائد کی کہ اسکندر بینچکی سلمانون کے مقابلے کیلیے ملیا رہو۔

## المكريم كي فتح يسرام هم

و خلاط کی فتے سابھ بور بجر و الیے جزیر وزنک بیان قیام کیا اور بین سے حصارت محکوفط لکھا کوٹ طاط فتے ہو جیا۔ اجازت ہوتو اسکندر پر پوجین بڑھائی جائیں۔ وہان سے منطوری آئی۔ عمرو کوچ کا حکم دیا۔ آفا ق سے عمرو کے خیمہ زن ایک کو ترث کھونسلا لگا لیا تھا۔ میڈا کھاڑا مبائے لگا توعمو کی تکا و بڑی۔ حکم دیا کو اسکو بیمین رہنے دو کہ جارے مہمان کو تکیفٹ ہونے یاسے ۔ چوکھ بحربی بی خود شہر کو صفاط کہتے ہیں اور عمرد نے اسکندریہ سے وابس اکراسی جند کے قریب شہر نبایا ہی سے خود شہر

بھی منطاط کے نام سے مشہور وگیا اور آج کے بین نام لیا جاتا ہے۔ بہرمال سام میں عمرد کے اسكندرية كأرخ كيا- اسكندرية ورضطاطك درميان من روميون كي حراً باديان تقين أنمون نے سدّراہ ہوا جا اچا بنا کے ایک جاعت عظیم جبین ہزار د تبطی بھی نتا مل تھے منطاط کی طرف غر<u>ه</u>ے کەسلمانون کودہین روئے لین مقام کریون میں دو**نون حریفون کا سامنا ہوا مسلمانون** نے نمایت ملیش میں اکر خبگ کی اور منبیار عبیائی ارہے گئے۔ پھر س نے روک ہوک کی جرأت ته کی- ادر عرون اسکندر بیننجار مرایا جموش جزیه دیکرصلح کزاچا بتا تھا۔ لیکن رومیون کے فوا سے منین کرسکتا تھا۔ تاہم یہ درخو است کی کوایک مّت مِعین کے گئے صلح ہوجائے۔ عمرو ہے انکا کیا۔ مقوش نے سلمانون کے مرعوب کرنے کے لئے تنہرکے تام آ دمیون کو حکم دیا کہ متیارلگا کر شہر نیا ہ کی فعیل پرسلمانون کے اپنے سامنے صف جا کر کھڑے ہون ۔ عور مین تھی اس حکم مین ومن حتین اوراس غرمن سے کہ ہوانی ز حاسکین اُنھون نے شہر کی طرف مخرکریا تھا عمر و نے کہلا بھیجا کریم تھا رامطلب سبھے <sup>لیا</sup>یت مکومعلوم نہیں کہ شمنے اب کہ حجر ملک فتح کیے کثر تب فوج کے بل رہنین کیے۔ تمارا او زیباہ سرقل حس سروسا ہان سے ہمارے معاہلے کوآیا تکو معلوم ہے ور فرمتیم ہوا وہ مجمع فی ہنیں''، ۔ مقونس نے کہائیج ہے یہی عرب ہن خبون نے ہا رے اتباہ وتسطنطينيه نيا كرمورا "- إسير ومي سردار نهايت غضنباك بوك - معوفس كوبب ترا مجلاكها ا *وراڑا ئی کی ملیّا راین شروع کین-*مقوتس کی مرضی جز کم جنگ کی زیمتی- است عروسے اوار سے بیاتھا کر جز کرمین روسون

سك متوح البلدان صغير ١٢٠٠-

الك مون-اس وجه سے ميري قوم (معنى قطيي) كولمقا رے القرسے صرر زينجے الئے " قبطيون نے صرف میں نبین کیا کہ اس مورکہ مین دونون سے الگ رہے۔ ملکہ سلما نون کوست کچے مرد دی منطاط سے اسکندریہ یک فوج کے آگے آگے گیون کی مرتب کرتے اور مرکس نباتے گئے خود اسكندرية كے محا صره مين بھي رسدوغيره كا نتظام ابھي كي بدولت ہوسكا-رومي بھي كھي قلعيت یا مزکل کل کراڑتے تھے۔ایک دن نہایت سخت مورکہ ہوا۔ نیرو فدنگ سے گذر کر آموار کی نوت آئی۔ ایک رومی نے صن سے نکل کرکہا کر حبکو دعوے ہو تنہا میرے مقابلے کو آئے مسلم بن خالدنے گھوڑا بڑھایا۔رومی نے اکموزمین بروے ٹیکا۔ و رُحبک کرلموارا را عابتا تھاکہ ایک سوار نے ارمان بحایی ۔ عمر دکوا سیراس قد زغصّہ ایار تمانت ایک طرف مسلّہ کے رتبہ کا بھی ایس نیار کے کماکہ «زنخون کومیدان خبک مین آنے کی کیا صرورت ہے ، بسلمہ کو ننایت 'اگوار مواہیکن مصلحت کے لیا فاسے کچھر نہ کہا۔

رُّائی کا زورائسی طرح قائم تھا آخر سلما نون نے اِس طرح دل تو کورکواکیا کاردمیون کو دبات ہوست قلعیے اندائشس گئے۔ ویز کک قلعہ کے شخص مین عرکد رہا آخر میں رومیون نے سنجعل کر ایک ساتھ حلکیا اور سلما نون کو قلوہ اِسرنجال کروروازے بندکردیے۔ آنفاق یا کو تحروبہا میں اور آخراور دو شخص اورا ندرہ و کئے۔ رومیون نے اِن لوگون کوزندہ گرفتار کرنا چا ہالیکن جب ان لوگون نے مردا ند مان دینی جا ہی تو انخون نے کہا دونون طرف سے ایک ایک آدمی قلب نونکھے۔ اگر ہم را آدمی کا راگیا۔ تو ہم مکو تھوڑ دیگئے کے قلع سے خل جاؤ۔ اور تھا را آدمی مارا ما اسے تو می سب ہمتیار وال دو تحروبی ایما می نے نمایت خوشی سے منظور کیا اور تو د مقالبے کے سیے

تخلنا چا ہا۔ سلمینے رُوکا کرتم نوج کے سردار ہو۔ تم یہ آنج آئی توا تنا م مین خلل ہوگا۔ یہ کمار گھوڑا برها یا-رومی همی متیار سنهال حکاتها- در یک دارموت رہے- الافرسلین ایک ایم اراک ر ومی و مین و هیرموکرر گیا-رومیون کو میمعلوم نه تھاکر اینین کوئی سردا رہے - انفون نے اقرار کے موافق قلعه کا دروازه کھول دیا اورب صیح سلاست با ہرکل آئے۔عمرونےسلمے این برگسانی الی معانی نامگی وراً تفون نے نهایت صاف دل سے معاف کردیا۔ محاصره مبن فدرطول كمنيتيا جآيا تعاحضرت عمركو زياده يرثباني موتي تمتى وينائخه عمرو كوخط الكما كه شايدتم بوگ د بان رېموسيائيون كى طرح عيش پرست بن گئے۔ ورز نتح مين اس قدر دير ننوتی جس دن میرا خط پینچے تمام فوج کو ممبر کرکے جہا دیرخطبہ د وا در محیرا س طرح حمار کرو کوخبکو ایمن نے افسر کر کے بھیجاتھا فوج کے آگے ہون اور تمام فوج ایک د فعہ دشمن ریوٹ پرسے۔ عروت تام فوج كوكم كاكركے خطبہ رِّيها اور ايك رُّرا تُرتقرر كى كَجُفِي موے جوش ازه ہو گئے ۔ عبا دو بن صامت کو دو رسون رسول النّه کی محبت مین رہے تھے بُلا کرکہا کہ اپنا نیز و محبکو دمجیے خودسے علمہ آبارا اورنیزہ برنگا کرا کوحوالہ کیا کہ سیالار کا عَلْم ہے اور آج آپ سیسالار ہیں۔ نر بیرین انعوام اورسله بن مخلد کو نوج کا مراول کیاغ ص اس سروسا مان سے قلعہ یردها واموا ا و رہیلے ہی حلم مین شهر نقع ہوگیا عمرو نے اسی دقت معا دیبین فلیے کو ملاکرکہا کرجس قدر تیزماسکو عا وُا ورامیرالموسنین کومِرد وُنتع سَا وُ- معادیه ومنی رسوار موت اور دومنز ارسه منزله کرتے ہوئے

مینه پینچ - جز کمه شیک و دبیر کا ونت تما اس خیال سے که بازام کا وقت ہے ارکا و ملانت بن

سله مقرري صفيه ١٦ وه ١١ طبداول-

سیدهے سجد نبوی کارخ کیا۔ اتفاق سے حصزت عمر کی لونڈی اُ دھرانکی اورا ککومسافر کی پئیت مین دیکھ کوچھا کہ کون مو اور کہان سے اتنے مو؟ انفون نے کہا۔ اسکندریسے عسے اسے اس وقت حار خبر کی اورسا تمری و ایس آئی که حلیو نکوامیرالمونین ٔ بلاتے ہیں۔حضرت عمرا تمانجی انتطار نین کرسکتے تھے خود چلنے کے لئے طیا رہوئے اور جا درسنبھال رہے تھے کہ معا دیہ نیجگئے۔ 'م**ع کاحال سکرزمین پرگرے اور بحد ہُ نشک**را دا کیا ۔'انمحکرمسجدمین آئے اور منا دی کرا دی کالمصلاقی جَامِعَة مُنتَّى بِي مَامِ مِنْهِ أَمنُدُ آيا-مواوية ني سب كے سامنے نتح كے حالات بيان كئے · وہاں سے اٹھکر حفرت عمر کے ساتھ انکے گھریگئے ۔حفرت عمرت و نڈی سے یوجھا کچھ کھانے کوہے۔ وہ روٹی اورروعن زینون لائی۔مہان کے آگے رکھا اورکہا کہ آنے کے سائترمیرے ایس کیون نبین ملے آئے ؟ انھون نے کہا مین نے خیال کیا کہ یہ آرا م کافوت ہے۔ نتا بدآپ سوتے ہون! فرایا که ضوس! تمارا۔ میری نسبت یو خیال ہے بین دن کو مُسووَن كُل توفلانت كا باركون سنها ليكا-

عرد اسکندر یک نتیج کے بعد صطاط کو دابس گئے اوروہان شہر سبانا جا ہا۔الگ الگ تطعی متعیقن کئے اور داغ مبل دال کرعرب کی سادہ وضع کی عارتمین طببار کرامین تعفیل اسکی موسرے بھنے مین ائیگی۔

اسکندریا و رفسطا و کے بعداگرجیر با برکاکوئی حربین نبین یا تھا تا ہم جی کدھ سرکے تام مہنائے میں رومی بیسلیے ہوئ سے تقع ہر طرف تعزی تعزی تو میں روانہ کین کہ آنید وکسی خطرے کا احتمال سلے یہ ناز خبیل مقرری ہے وائی ہے ،،

ندر ہجائے۔ جنا پخہ خارج بن خدا فہ اس وی نیوم - اٹمومین جہیم انتہودات میں واکسے تام مضافات میں چکر نگا آئے اور مرحکی لوگون نے خوشی سے جزیرہ نیا تبول کیا ۔اسی طرح عمیر بن دہب ہجی نے سینس - دمیاط ، تو نہ و دمیرہ ۔ شطا - و تہا ۔ بو سیر کر ستخ کیا ۔مقب بن عامر ہمبنی نے مصر کے تیام نیم جھے فتح کئے ۔

میخو کمہ ان گرائمون میں نہایت کثرت سنے طبی و رروی گرفتا بہوے تھے۔ عرونے و یا زهان كولكماك كي ننبت كياكيا ما يصرت عرف حواب كهاك بالكرك وكالكواف المارك و موحا مين ما پنے نرمب پر قائم بمبن-اسلام تبول کرنیگے توانکورہ تام حقوق حاصل و بگے جوالمالوگو حاصل مین- در نه جزء دینا موکاح ترام و نیور ، سے بیا جا باہے ۔ غردنے تا مرتبدی جوتعدا دمین مزارون *سے زیادہ تھے۔ ایک جا حمع کیے ۔ عیسا نی سردارون کو تھی طلب کیا اوسامان عیسانی* الك الك تزيب سے اسے سامنے مبنے بيتى من تبديون كاگرود تھا۔ فران خلافت إِما گيا تواب تيديون نے مرسلمانون من كراسلام كے ووق سے أثنا موسّے عقد اسلام تبول كيا اوربہ ابنے مرہب پر قائمرہے۔جب کوئی شخص اسلام کا احمار آیا تھا تو تیام سلمان الله اکبر كا نعره بلندكرا عقى - اورخوشى سے بچھے جانے تھے - اورجب كوئى شخف سيائيت كا ا تواركا تعا توتمام عيها ينون من مباركباد كأغل ميا تعامه وزسلمان إس قد غروه موت ِ سکتے کہ مبتون کے آنسوغل رُنے گئے۔ در یہ کک بی*سلسلہ جاری ر*ہا ورو دنون فریق ایے اپنے عقبهٔ رسدی میصوافق کامیاب آئے ہے۔

ملك نترى البلدان مغرّ ۱۰ - مسكه طبري منوّ ۱۸۸۷ و ۱۸۸۰

## حضرت عمرًكى شهادت ٢٦ - ذوالحجيست مطابق سيساته مطابق سيساته

رکل مترتِ فلافت ١٠ برس ٢ مبينه ميار د ن

مرنیهٔ منوّره مین فیرو زنام ایک پارسی غلام تعاصبکینیت ابولولوتقی- آینے ایک و ن حضرت عرسے اکر تبکایت کی کرمیرے آقا مغیرہ ابن شعبہ نے مجھیرست ہماری معسول مقررکیا ے آپ کم کرا دیجیے۔ مصرت عربے تعدا دیوجمی۔ آسنے کھار دزانہ د کو درمم د قریباً سات آنے ہوتر عرفے یوجیا توکون سامیتیہ کراہے "بولاکہ دنجاری-نقاشی-آہنگری'۔ فرمایاکہ ابضنتون کے مقالم مين به رقم كيُربت نبين ہے ، - فيروز دل من سخت ناراص مور طلا أيا -دوسرے دن حضرت عرصبع کی نا زکے لیے سکلے تو فیروز خنو لیکن سیدمن آیا حضرت عمرکے مکرسے اوگ اس کام ریتقر رمتے کہ جب جاعت کوری ہو وصفین درست کریں حرصیفیں بیھی ہوکتی تھیں ، وحفا ع تشریعتِ لائے تھے اورا مات کرتے تھے۔اُس دن تھی مسب عمول صفین درست ہو کھین نو *حنرت ع*را مات کے لئے بڑمے اور عون ہی نماز شروع کی۔ <u>فروز ن</u>ے دفعتہ گھات مین سے عل کر حملیہ وارکئے جن مین سے ایک ان کے نیچے یوا حضرت عرائے فرراعبدا ارحمٰن بن عوف کا ات كوكراني ملِّه كغراكرديا وروز زنم كے صدمت كريت-عبدالرحمن بن عرف نے اس مالت مین نمازیر مانی کرحفرت عرسامنے مبل میس تے۔ فیروزنے اور بوگون کو بمی زمنی کیا لیکن اِلّا فر کر کیا گیا اور ساتھ ی کتنے فردکشی کرلی۔ حصرت عرکولوگ أغار گھرلائے۔سب سے پہلے اسنون سے پوھیا کہ دمیرا قال کو ہما

الوگون نے کما۔ فیروز۔ فرما یا کور الحمر متبدکہ مین ایسے خف کے بات سے منین ما را گیا جو سلام کا دعو کے رکھتا تھا'' لوگون کوخیال تھا که زخم حیندان کا ری نبین ہے۔غالباً شفاہ وجائے عِنا بِخه ایک ملبیب ً ملایاگیا اُسے نبیدا ور دو د هملایا ور دونون حیزین رخم کی را د! بنرکل آئیئن-آسوقت لوگون کوبقین ہوگیا کہ وہ اس رخمسے جا نبر نبین ہوسکتے۔ چنانچہ لوگو ن نے ائن سے کماکہ داب آپ ایا ولی عمد متخب رحائے '۔ حضرت عرنے عبدالتراہی فرزند کو کا کرکہا کرد عائتہ کے اِس جاؤا ورکہ وکو توات ا حازت طلب كرَّا بِ كرسول النَّرك بيلومين دفن كيا جائے ..عبدالتَّد حِصْرت عائشه کے یاس آئے۔ وہ رُوری مقین-حفزت عرکا سلام کہا اور منعام سنجایا۔حضرت عائشتہ کما کرد اس جگه کومین سینے گئے محفوظ رکھنا جاہتی ہی۔ سکین آج مین عمرکواپنے آپ برترجیح و ذکی، عبداللہ واپس آئے۔ لوگون نے حصرت عمرکو خبرکی۔ بہتے کی طرف نحاطب ہوئے ا وركماك كيا خبرلائك؛ - أكفون نے كما كيجو آپ چاہتے گئے " فرايا كه ديبي سے بڑي رزوهي ا ائس وقت اسلام کے حق مین حرسب سے اہم کام تھا وہ ایک خلیفہ کا تنحاب کرنا تھا،تمام صما ہ باربا حصرت عرسے درخی ست رہے سے کواس مہم کواپ سے رجائے۔حضرت عمر نے خلافت کے معالمے پُرمَتون غورکیا تھا اوراکٹرا سکومو ماکتے سکتے۔ باربار ہوگون نے أنكواس مالت مين ديكها كرسب سے الگ تنفكر معظے مين اور كيوسُوج رہے مين- دريافت کیا تومعلوم ہوا کہ فلافت کے باب مین غلطان بیان ہیں۔ مّت کے عورو فکرریمی کئے اتناب کی نفرنسی تحص رحمتی ناعتی۔ بار ہا ایکے مُنوسسے

بعیافت او مخل گئی کرد افنوس اس بارگران کاکوئی انتخاف والا فطربین آما " تما م صحابه بمن اسوقت چید خفس سختے جنبرا تخاب کی گاہ بڑسکتی علی علی علی انتخاب کی بات محتی است والا فطربی است و محتی از محتی از محتی است و محتی است و محتی از محتی از محتی است و محتی و محتی است و محتی و محتی است و م

حصرت عمريون عبدالله بن عباس على عارب سائدكون نين شرك موك ؟-

عبدالترابن عباس بين بين التا

حصرت عمر متعایب اب رسول الله کے جا اور تم رسول اللہ کے مجبیب عبائی ہو۔ بھرتھا ری توم انتساری طرفه ارکیون نین ہوتی ؟-

عبدالتدابن عياس ين نين مانا-

حصرت عربیکن بن ما نابه دن تماری قدم جمارا سردار بزما گوارانسن کرتی تمی عبدا تشرابن عباس کیون ؟- ف مختلف مو فتون پر افها مجې كرديا تغا ، خيائخ طبرى وغيره مين انكے ريارك تفصيل مركور مېن مٰرکورہ کا لا بزرگون میں وہ حصرت علی کوسب سے بہتر مانتے سکتے لیکن تعض اساب سے متعلقة رصغير ٢٠٨٧) حصرت عمر وه ينيين ايند كرت هي كالك مي خاندان مين نبَّوت اورخلانت دونون أحايين نّا مِيمْ يِكُوكُ كُرْحِفْرَتِ ابْوِكْرِنْ مَكُوفلافت سے محود م كرديا ليكن فدا كئتم ۽ اِت نبين ابو كمِنْ و دكيا حبرے زادہ منا ب كُوبُ إت نبين موسكتي متى -اگروه كلوخلانت دينا بھي جاہتے تواكا ايبا كرنا تھا ہے جن مين كيم بحي مفيد ته وائ و وسرام کا لمدارے زیادہ مفعل ہے کھیے ابتین تووہی مین جربیلے مکا لمدمن گذرین کھیزئ میں۔ اوروہ بیمین -حصرت عمر کیمون عبدانتداین عباس!مقاری نسبت کمین بعض بین سنا کرانتا ایکن کمین نصاب خیال ست عبدا لتداين عباس وريا ابن بن :-حصرت عمرين في مناب كرم كتم مولاولون في مارس فانران سه فلانت معداً وفلا أحين في-ع**ىبىدا مىراس عبا** سى يىلاكىنىپ توين نين كەسكتا-ئيونكە يەبات ئىي رىفى بنين بىكىن سىدا-تواسكانىج. ئا المبيس فعادم يرحسدكيا اور علوگ أوم بي كي اولاد من - يومسود مون توكيا مغرب ب ؟-حصرت عمر انسوس فافران بي إثم كادون ميران رخ ادركيفي ز مايئن ك ـ عيدا تداين عباس - ايسي ات زكيئ - رسول الترصلومي الثي بي مضر حضرت عمر- اس تزاره كومان دو-

عبدا متراس عياس ببت ساب دركيرايغ مبرى منور ٢٠٠١ تا ٢٠٠٠) ان مكالات سے علاوہ اصل وا قوك - تراس إتكامي الدارہ كرسكوئے كر معزت عركے مبارك عمد من اوكر كس لري أكى نسبت بمقطعي فيصانبين كرسكتے تقے

غرمن وفات کے وقت حب ہوگون نے اصرار کیا تو فرایا کوردان جیشی خصون میں جبکی سنبت کثرت رائے ہوئی فات کے دون میں جبکی سنبت کثرت رائے ہون فلیفنہ تنخب کررہا مائے ،، -

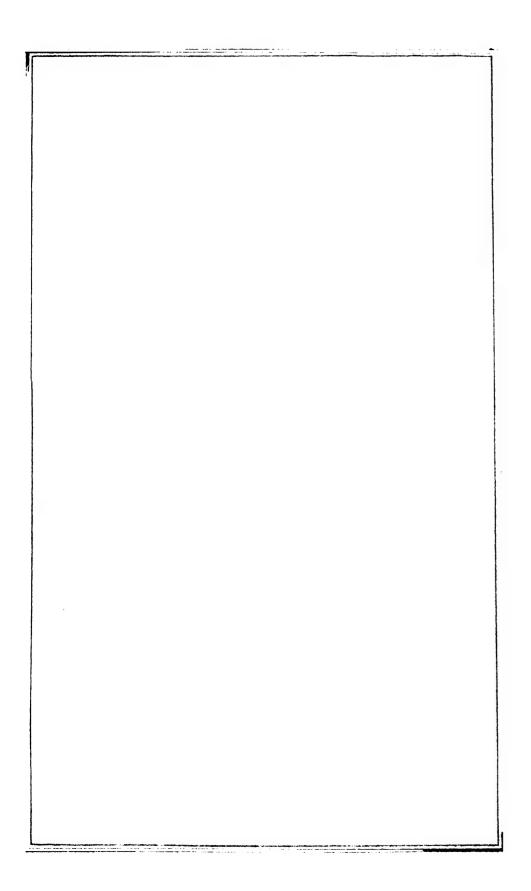
حصرت قرکوقوم اور المک کی مبروی کا جوخیال تھا اُسکا اندازہ اس سے ہوسکتا ہے کوعین ارب وکلیف کی حالت بین جہان کمک آئی وقت اور حواس نے یاری دی اسی دُهن بیر بھرو ارب وکلیف کی حالت بین جہان کہ اُئی وقت اور حواس نے یاری دی اسی دُهن بھرون کہ ایج نے اور جو اسکو مُین وصیت کرنا ہون کہ ایج فرقون کے حقوق کا نمایت خیال رکھے۔ مما تحرین - اُنفار - اعزاً ب - وَ اہل عرب جوا و مہا اور شہرون مین جا کرا او موگئے ہین - اہل دُمّة بعنی میسائی - بیودی - بارسی جو اسلام کی مایا اور شہرون مین جا اُنا اور موگئے ہین - اہل دُمّة بعنی میسائی - بیودی - بارسی جو اسلام کی مایا مینی بھر سرائی کے حقوق کی تفیی کی جبائج اہل دَمّة کی دور اور الله کے دہ دور ایکا کا فار انگے ماین کو دوسیت کرنا ہوان کہ وہ فیدائی دُمّة داری اور سول اللہ کی دَمرداری کا کافار اُنگی ماین اُنہ کی دُمّون سے اُراجا ہے اور کی حالے کے اُنگی دُمّون سے اُراجا ہے اور کی حالے کے اُنگی دُمّون سے اُراجا ہے اور کی حالے کے اُنگی دُمّون سے اُراجا ہے اور کی حالے کے اُنگی دُمّون سے اُراجا ہے اور کی کی جائے گا

قرم کے کامت فراغت ہو حکی تواہینے ذاتی مطالب پر توخہ کی عبدالتہ اپنے ہیٹے کو ملاکر کماکر در مجمبرکس قدر قرص ہے ؟ معلوم ہوا کہ حیبیا شئی ہزار درہم ، فرایا کرمیرے متر دکھے اوا ہوسکے حاشیم شعاق صفی (ہم مل) اور بیابی ہے اپنے نیالات کا نعا کرتے ہے۔ اور یا اور مربی دھیے تحال صنت کارفود آزادی اور جن کوئ کو قرم بین بمیلانا میانے ہے۔

سله مبری منی ۲۰۰۰

تو ہتسر درنہ ناندان عدمی درخواست کرناا وراگرہ ہمی درا دکرسکین وکل **قریش** سے بیکر زیش کے علاوہ اورون کو تکایت نہ دنیا' یہ صحیح نجاری کی روایت ہے رد کمیو کا بالما تب باب معشہ لبیقہ والآنفات على غلان ؛ ليكن عمر بن شبَّر نه كتاب لمديني من بندميم وروايت ي م كزا فغ جو حضرت عمر کے غلام سمتے کہتے تھے کروعر برقرض کو کروسکاتھا؟ مالاکا ایک دارث نے اپنے حقية وراثت كواكب لا كهريجا تعآك حقیقت یا ایک کرهفرت عمر دیمیانشی مزار کا قرعن ضرورتما سیکن ده اس طرح اداکیا گیا که اکاسکونه مكان يح والأكي حبكواميرمعاوين حزيرا-يه كان باب التلام ورباب الرحمة كيج من واقع تھا اوراس مناسبت سے کو اُس سے قرص اواکیا گیا ایک مّت کم وارا العضا کے ام كم مسيم مشهور المعيني في المحالين المعالية الموار المصطفع من واقعة عنسيل مركوب المسطفع حضرت عمر نے میں دن کے بعدا تقال کیا اور محرم کی میلی ماریخ ہفتہ کے دن مدنون ہوے نمازخبارہ صبیب نے یرمائی۔حفنرت عبدالرحمل -حفزت علی۔حفزت غمان طلع سد ذواس عبدالرحمن بن عوف نے قبرین آبارا۔اوروہ فقاب عالمیاب خاک میں حمیب کیا کہ۔

ك دكية نتا الاي المبرئة معرطية منواس و مسك وكيوكاب مكورمليوة معرمنور ١٠١ و ١٠١-



نامورانِ اسلا**•** تعنی خضر کے صلی لاء مفضل سوائے کی کا حصمه و ومم جسین آول صنرت عرکے تام ملکی، مالی اور وجی انتظامات کی نفیس ہو کھی ایک داتی اخلاق عادات وعلى كالات كانزكره بوا وزصوصاً كك محتبدانكا زامو كمونهايت شرح وببط سالكها، شبلي نعاني ناملىنىڭ كامۇرىدىنى ئومىن

## جست برایک جان گاه فوحات برایک جان گاه

پہلے حصے مین کم فتوحات کی تفصیل پڑھ آئے ہو، اُس سے متعارے ول پر اُس عمد کے مسلما نون کے جوش بہت، عزم، و استقلال ، کا قوی ا تربیدا ہوا ہوگا لیکن اسلاف کی واستان سننے مین کم نے اسکی پروانہ کی ہوگی کہ واقعات کو فلسفہ ہا پری کی کا وسے دکھیا جائے۔

لیکن ایک کمتہ بنج موزخ کے ول مین فوراً پسوالات بیدا ہو نگے کو خیر محراثینوں اسے کیو کر فارس و رقم کا وفتراً لٹ دیا ؟ کیا یہ این عالم کا کوئی سنتنے واقعہ ہے؟ آحز اسکے اسباب کیا تھے ؟ کیا ان واقعات کو سکندر و چنگیز کی فتوعات سے نشبیہ نہیں و کیا سکتی ؟ جو کمچہ جوا اسمین فرما زوا سے فلافت کا کتنا حصتہ تھا ؟ ہم اس متوقع پر اپنمی سوالات کا جواب و نیا چاہئے جین سکین نہایت اجال کے ساتھ پیلے یہ تباویا ضرور کے کو فتوحات فی وسعت اور اسکے صدود اربعہ کیا سکتے ؟

حضرت عركے مقبوصنه مالک كاكل رقبه ١٠٥٠ ٥ ١٠ ماسل مرتع ليني كمر معظميت

لقرها **تافاوت** لی وست فتح کے اسا یورم مور خون کی رائے کے

نثال کی جانب ۱۰۳۹ مشرق کی جانب ۱۰۸۰ جنوب کی جانب ۳ مهمیل تعام نت**خ** ی مانب چزکه مرف جدّه یک مترمکومت تقی اس کئے وہ قابل دکنہیں۔ اسمين ثنام مصرعواق خربيره نبحزرشان عراق عجرة رمينيية آوز بايمان مارس كوان جرايا وُركَران حِبِين لَمُوحِيتان كالحجي كجوحِقة آجا باہبے شامل تھا۔ ایشیا می کوچک برحبکواہل عرب روم كتيم من سناية من حله مهوا تفاليكن وه فتؤحات كي فهرت مين نيما يهونيكية فابانيدين یمام نتوحات خاص حصرت عمر کی فتوحات بین ا و راسکی تمام مّرت- دمنل برس سے کچرہی زما <sub>د</sub>ہے -بہلے سوال کا حواب یوروبین مورخون نے یہ دیا ہے کا سوقت فارس و روم و د نون سلطنتین اوج اقبال سے گر حکی تقین- فارس مین حنسرو پرویز کے بعدنظام سلطنت بالكل درمهم و رمم موگياتف كيؤ كدكوئي لائت شخص جو حكوست كو سبنهال سکتا موجود نه تھا۔ در بارکے عائد وارکان مین سازشین شروع ہوگئی تقین اورانمی سازشون کی برولت تخت نشینون مین اُولُ مِرل مِوّا رہمّا تھا خِنانِچةَمِن ہی مار برس کے عصے بین عنا ن حکومت چھہ سات فرماز دا وُن کے بات مین آئی ا وز کل گئی۔ ایک در وجہ یہ موٹی ک*ر نوشیر*وان سے کچھ *پہلے مزد کیہ فرقہ کا بہت زور ہوگیا تھا جوا کاد و زنر قہ کیوا<sup>ن</sup>* مائل تھا۔نوشیروان نے گو لموارکے ذریعے سے اس مرہب کو دبادیالیکن اِلکل مٹا نہ سکا۔ ا سلام کا قدم جب فارس مین پہنچا تواس فرتے کے لوگون نے سلمانون کواجی ہے۔ ا پنا نینت ویناه همجها که و ه کسی کے مزہب اور عقائد سے تعرض نہیں کرتے تھے۔عیسا یون مین مستورین فرقه حبکوا وکسی حکومت مین نیا و نهین ملتی بحتی- و ویمی اسلام کے سایمین آگر

مخالفون کے ظلم وستم سے بچ گیا اسطرح مسلمانون کو داد بڑے فرقہ کی ہمدردی اوراعانت ہفت میں بات آگئی۔

روم کی ملطنت خود کمزور مرح کی تھی۔ ایکے ساتھ عیائیت کے باہمی اختلافات اُن د نون زورون پرسکتے اور چونکه اسوقت یک ندمهب کو نظام حکومت مین دخل تھا ا<u>سلئے آ</u>ل أخلات كا انزمهبي خيالات كم محدود نه تعالمكه اسكى وجسے خودسلطنت كمزور موئى ماتى عتى-یہ حواب گو و ہتیت سے خالی نبین لیکن حس قدر و ہتیت ہے اس سے زیادہ طرز استدلال کی کمنع سازی ہے جو تورپ کا خاص انداز ہے۔ بے شبراً سوقت فارس وروم كىلطنتين اصلىءوج برنبين رى مغين كين اسكاصرف اس قدرنتيجه بوسكتا تصاكه وأيزرة قوی سلطنت کا مقا بذکر سکتین - نه به کیوب جیسی بید مسروسالان وم سے کر اکرین ایزرے موطاتین - روم و فارس گوکسی حالت مین مخلے اہم فون جنگ مین ما ہر سختے ۔ نوان مِن خاص مواعد حرب برجو کتا بین کلمی گئی تقیین اورجوا ب یک موجو دہین رومیون میں کیا مرت ك الكاعلى رواج را - اسكے ساته رسدكى فراواني، سروسامان كى ئبتات، ألات فباكتے تَمَنُّوعُ، مَوْجِون کی کثرت ،مین کمی نبین آئی تھی ا ورسب سے بڑھکر ہے کہ کسی ملک پرٹر پھکر جانا نه تها للكها پنے لمك بين ، اپنے قلعون مين ، اپنے مورحون مين ، ركر ملك كى حفاظت كرني متى مسلما نون کے علے سے ذرا ہی پہلے جنسر دیرویز کے عمد مین جرایران کی شوکت و ثنان کا عین شباب تھا۔ فیصرروم نے ایران پرحله کیا اور مرمترورم پرفتوحات حاصل کراہا اصعنان كي بنج گيا- شام كے صوبے جوار انيون تے ميين ليئے سمتے وابس كے اور

یورمپڑنے نون کی راسے کی غلط

من مرسے نظم وسن قائم کیا۔

آیران مین حضرور و زنگ توعمو اسلامی کیا کاسلطنت کونهایت جاه د جلال عالی خالی اسلامی کیا کاسلطنت کونهایت جاه د جلال عالی خالی خاسرو بروزی و فات سے -اسلامی کیا تک مرت بین چاربرس کی مرت بے شنے تھڑ ہے اور میں ایسی قوی اور و دیم سلطنت کہان کہ کر در رہوسکتی بھتی ! البتہ تحت نشینوں کی دال میسے نظام میں فرق آگیا تھا۔لیکن جو نکہ سلطنت کے اجزا بعینی فزاند - فوج اور می اصل کی اسلامی کیا کیا گئی نمین آئی بھی -اس کے جب یزدگر دیمت نشین موا اور درباریون نے اصلاح کیا اسلامی کیا توجہ کی تو فور آئے سرمے و ہی مٹھا ٹھر قاعم ہوگئے - مزد آید فرقد بھوا یان میں موجود بھت اور جی تا میں موجود بھت ایک میکونیام تا ریخ مین ائن سے کسی فتم کی مرد ملنے کا حال معلوم نمین ہوتا - اس طرح فرق کی مین میکونیام تا ریخ مین ائن سے کسی فتم کی مرد ملنے کا حال معلوم نمین ہوتا - اس طرح فرق کی سندوریوں مقروفوں نے کمین نمین تبایا -

اب عرب کی حالت دکھیو! تمام نوجین جومصروایران وروم کی خبگ بین مفرو تعیین انمی نموعی تعداد کمبری ایک لاکه تک بھی نہیجی۔ فنون جنگ سے واقفینت کا بیحال کریرموک بیلامعرکہ ہے جسین عرب نے تعیبیہ کے طرز پرصف آرائی کی۔ خود-زرہ۔ چلتہ جوشن - بکتر جا را بنہ تا نہنی و شانے - جہلی نوزے ۔ جو ہرارانی سیاہی کا لازمی کمبوس جنگ شخصا۔ اسین سے عودن کے یاس صرف زرہ تھی اوروہ بھی اکثر تحیرے کی ہوئی تی ا رکاب ہو ہے کے بجا ہے لکوی کی بھتی۔ آلات خبگ مین سے گرزو کمندسے عرب بالکائ شنا

ك ابن متية نه وخارا موال من لكمان كرين برسامي كوستمال كرني برتي متين ا

انهين أسكتاب

نه تقے - تیر سفتے لیکن ایسے جھوٹے اور کم جیٹنیت کہ قا دسیہ کے مورکہ میں ایرانیون نے حب بہلی ہبل انکور کھا تو سمھا کہ کلے ہیں -

ہمارے نزدیک اس سوال کا اصلی جواب صوف اس قدرہے کہ سلما نون مین استونت بانی اسلام کی برولت جو جوس ، غرم ، استقلال ، ہمت، - بلنہ دوسلگی ، دلیری پیدا ہوگئ تھی اور جبکو حضرت عرفے اور زیادہ توی اور تیز کر دیا تھا روم و فارسس کی سلمنتین مین عووج کے زمانے میں بھی اُسکی گرنیین اٹھا سکتی تھیں ۔ البتہ اسکے ساتھ اور بھی چیزین بل گئی تھیں حفون نے فتو حات میں نہیں بلکہ قیام حکومت میں مرددی ہیں اور جبی چیزین بل گئی تھیں حفون نے فتو حات میں نہیں بلکہ قیام حکومت میں مرددی ہیں مسب سے مقدم چیز سلما نون کی راستبازی اور دیا نت داری تھی ۔ جو ملک فتح ہو حابا اُن کے اور کی سلمانون کی راستبازی کے اس قدرگرو میرہ ہوجاتے مقے کہ باوجو د اُن کے لوگ سلمانون کی راستبازی کے اس قدرگرو میرہ ہوجاتے میں کہ باوجو د اُن کے لوگ سلمانون کی راستبازی کے اس قدرگرو میرہ ہوجاتے میں کہ باوجو د اُن کے لوگ سلمانون کی راستبازی کے اس قدرگرو میرہ ہوجاتے کئے کہ موکے بین بلمان

روبیون کی حکومت جوشآم ومقرمن بھی وہ بالکل جابرا نربھی اس کئے رومیون کے مسلانون کا جومتھا بار کئے ساتھ نربھی۔ مسلانون کا جومقا بلدکیا و وسلطنت اور فوج کے زورسے کیا۔ رعایا انکے ساتھ نربھی۔ مسلما نون نے حب سلطنت کازور توڑ دیا تو آ گے مطلع صاف تھا یعنی رعایا کی طرف سے کستی قسم کی فرائمت نہوئی۔ البتہ آیران کی حالت اس سے نتمالف بھی، وہان سلطنت کے

حب شام کے ، صلاع سے تکلے تو تام عیسانی رعایائے بکاراکہ خدا تکو بھراس ملک بین

لائے ۱۰۰ و رہیو دیون - نے توریت ہا تھ میں لیکر کہا کہ ہارے جیتے حی قبیصراب بیان

نترمائے ملی ساب سیجے بہت سے بڑے بڑے رمیس تھنے جو بڑے بڑے اصلاع اور صوبون کے مالک تھے؛
وہ سلطنت کے لئے نہیں بلکہ خو داپنی ذاتی حکومت کی حفاظت کے لئے لڑتے تھے ، یہی
وجہ تھی کہ با ی تحنت کے نوخ کر لینے برتھی فارس میں ہر قدم پرسلما نون کو فراحمتین پیش آئیئں۔لیکن عام رعایا وہان تھی مسلمانون کی گرویدہ ہوتی جاتی تھی اور اس لئے فتح سے بعد بقالے سے محرمت میں اُن سے بہت مرد ملتی تھی۔

ایک اور بڑاسب یہ تھاکہ مسلما نون کا اقرال اقرال حکم شام و عواق برمہوا ان ذون مقامات مین کثرت سے عوب آباد تھے۔ شام مین دمشق کا حاکم غنآنی خاندان تھا جربہ ام فیصر کا حکم غنآنی خاندان تھا جربہ ام فیصر کا حکم عنائی خاندان تھا جربہ کی طور بر کچے درست کہ عیسائی موگئے تھے اوال ول کی طور بر کچے درستے کھیسائی موگئے تھے اوال ول مسلمانون کا مقابلہ کیا۔ لیکن قومی اتحاد کا جذبہ را یکان نہین جاسکتا تھا۔ عواق کے بروہ سلمانون کے مشیس سبت حلد مسلمان مہو گئے اور سلمان مہوجانے بروہ سلمانون کے بروہ سلمانون کے مسلمانون کے مشیس سبت حلد مسلمان موگئے اور سلمان مہوجانے بروہ سلمانون کے دست و باز دبن گئے۔ شام مین بھی آخر عوبن نے اسلام قبول کرلیا اور رو بیون کی حکومت سے آزاد مہو گئے۔

سکندر اور خیگیر وغیرہ کا نام لینایمان بالکالبے موقع ہے بے شہراِن وزن نے بڑی بڑی فتو حات حاصل کین لیکن کیونکر ؟ قهر ظلم ، ورقتل عام ، کی برولت جنگیز کا حال توسب کومعلوم ہے۔ سکندر کی پرکیفیت ہے کرجب اُسنے شام کیطرن

مل است المحمد الله موقع برم في النك المعمى تفقيل سن الكهيم بن ١٧

شهر صور کو فتح کیا توجونکه و با ان کے لوگ دیر تک جم کرائے گئے اس سے قتل عام کا حکم دیا اورا کیے بنار مشہر لوین کے سر شہر بنا ہ کی دیوار پر ٹسکا دھئے ۔ اسکے ساتھ ، ۱۷ فہرار ابنندون کو لوئڈی غلام بناکزیج ڈالا جولوگ قدیم باشند سے اورازا دی سیند سکتے اُنین ایک شخص کو بھی زندہ ندھیوڑا ۔ اِسی طرح قارش مین حب اسطخ کو فتح کیا تو تام مردون کو قتل کرا دیا ہوئے کی اور بھی سبے رحمیان اُسکے کا زامون مین فرکور ہیں۔

عام طور برشهور ب کرظا اور تتم سے سلطنت برباد ہوجاتی ہے ، یہ اس کافاسے هیج ہے کہ خطام کو بقاندین جنا بخد سکندر اور خیکنیز کی سلطنتین بھی دیر با نہو مئین - لیکن نوری موجات کے لئے اس فتم کی شقا کبیان کا رگڑا بت ہوئی مین ، انکی وجہ سے کلک کمک ملک مرعوب ہوجا تا ہے اور چونکہ رعا یا کا بڑاگروہ ہلاک ہوجا تا ہے اسلئے بغیا وت و فنا دکا اند شیم باتی نہیں وجہ ہے کر خیگنیز بجنت نصر تیمور نیا در جینے بڑے بڑے فاتح گذرے ہیں سب کے سب سقاک بھی ہے ۔

کیرج فنرت عمری فتوحات بین مجھی سرموقانون انصاف سے تجاوز نبین ہوسکتاتھا۔
اور سون کا قتل عام ایک طرف و زختون کے کا ٹنے تک کی اجازت نہ تھی ۔ بجڑن اور
بوڑ مون سے اِنکل تعرُّض نبین کیا جا سکتا تھا ۔ بجزعین معرکہ کارزار کے کوئی شخفی قتل انہیں کیا جا سکتا تھا۔ وثمن سے کبھی کسی موقع پر مجھدی یا فریب وہی نہیں کہا سکتا تھا۔ وثمن سے کبھی کسی موقع پر مجھدی یا فریب وہی نہیں کہا سکتا ہو اور ایک کھی اور اور کھنٹلول و اسٹرون کو اکیدی احکام جائے سے کہ فان قائلو کھونلانقہ نروا والد بھنٹلول و اسٹرون کو اکیدی احکام جائے سے کرفان قائلو کھونلانقہ نروا کی اگ

& C.

کان نه کا نوئسی نیچے کوفتل نکرو-

جولوگ مطیع ہوکر باغنی ہو مباتے تھے اُن سے د وبارہ آ فرارلیکر' درگذر کی جاتی تھی۔ یہانتک کرجب عربسوس والے تمین تمین و فعیشوا ترا قرار کرکے پھر گئے توصرف اِس قدر کیا کہ اُنکو وہا ہے علاوطن کردیا لیکن ایکے ساتھ انکی کل جا کداد مقبوضہ کی قیمت اداکردی نیج برکے بیو دیون کو سازش وربغاوت کے جرم مین کا لا تو اُن کی مقبوصنه اراضیات کامعاد صدریریا ا دراضلاع کے مُحکآم کواحکام بھیج دیے کہ حبد ھرسے اُن بوگون کا گذر ہو اُنکو مرطرح کی اعانت دیجا۔ اور حب يكسى شهرمن فيام اختياركرين تواكب سال تك أن سے جزير نه ليا جائے۔ جولوگ فتوحات **فاروقی** کی حیرت انگیزی کا پیرجاب دیتے ہین کردنیا مین ارتبی ایسے فائح گذرہے ہیں ، اکمویہ د کھا نا چاہیے کہ اِس احتیاط، ۔ اِس فید، ۔ اِس یا بندی ا اس درگذر کے ساتھ دنیا مین کس حکموان سے ایک جینہ پھرزمین بھی فتح کی ہے۔

اسك علاوه -سكندر- اورخيكيزوغيره خود مزوقع اورمرخبك مين شرك رمت متح ا ورحوٰ د سیہسالا رنبکر فوج کو اٹراتے تھے۔اسکی وجہسے علاو ہ ایسکے کہ فوج کو ایک اہم سپہ سالار ہات آتا تھا فوج کے دل قوی رہتے تھے اوران مین بالطبع اپنے آقا پرفدا مروحانے کا جوس پیدا ہوا تھا-

حضرت عمرتام مرّت خلافت مین ایک د فعه نمی کسی خباک مین مشرکی نهین موے، فرجین ہر مگر کام کر رہی تعین البتہ انکی باگ حضرت عمرے اسمین رہتی تھی-ایک اورصر محی فرق بیہ کوسکندروعیرہ کی فتوحات گذرنے والے باول سطیح

تقین کهایک د فعه زورسے آیا ا ورکل گیا - ان لوگون نے جومالک فتح کئے و ہان کوئی نظم حکومت ننین قایم کیا ، برخلاف اسکے فتوحات فاروقی مین یہ استواری تھی کہ جو ممالک اُسوقت محتج ہوے ۔ تیرہ سوبرس گذرنے پرآج بھی اَسلام کے فیضے بین ہن۔ ا ورخو دحضرت عمرکے عہدمین ہرشم کے ملکی انتظامات وہان قائم ہو گئے تھے۔ انجيرسوال كاجواب عام راسے كے موافق يہے كەفتوحات مين خليفهُ وقت كينيان تعیم نه گتی- اسونت کے جوہن اور عزم کی حوجالت بھی وہ خود تمام فتوحات کی کفیل<sup>ت</sup> ۔ بیکن ہمارے نزدیک میں چی نہیں ۔ حضرت <del>عَمْمان</del>ُ اور حضرت علیٰ کے زمانے من بھی بوآخر دی مسلمان تھے۔لیکن کیانیتجہ ہوا ؟ جوسش اور اثر ہے شبہ برقی قوت ہیں ا الیکن میہ توت اُسی وقت کام دسکتی ہے جب کام لینے والانجی اُسی زور وقوّت کا ہو' آقیاس اورا سندلال کی ضرورت نهین - وا قعات حوداسکا فیصله *کرسکتے م*ن ، فتو**حا**ت کے تفصیلی حالات پڑھکرصا ف معلوم ہو اہے کہ تام فوج تبلی کی طرح حضرت عرشکے ا شاردن پرحرکت کرتی بهتی ۱ ورفوج کا جونظم ونسق تھا وہ خاص انکی سیاست وتدبیر کی مرولت تھا۔ اس کی ب مین آگے جل کرجب کم مفصل طور پر پڑھو گے کہ حضرت عمر نے فوج کی ترقیب ، فوجی شقین ، بارکون کی تمیر ، گھوٹرون کی برداخت ، فلعون کی حفاظت ، -جاڑے اور گرمی کے لحا فاسے حلون کی تعیین ، فوج کی نقل وحرکت، پرچه نومینی کا انتظام <sup>۱</sup>-افسران **نوجی کا انتخاب ، قلوشکن آلات کا استعال ، - ب**یا واس ا متم کے امور کے متعلق کیا کیا انتظام حود ایجاد کئے اور انکوس عجیب وعریب زورو قوت

نتومات من حفزت عرکا ختصاص کے ساتھ قائم رکھا توہم خود نیصلہ کرلوگے کہ حصارت عمرے بغیر بیگان طلق کام نہیں بہتی کی ساتھ قائم رکھا توہم خود نیصلہ کرلوگے کہ حصارت عمرے ورجی سے سالاری کا کام کیا تھا۔ نوج حب مریتے سے روانہ ہوئی توایک ایک منزل بلکہ راستہ تک خود معین کر دیا تھا اور اسکے موافق مخرری احکام بھیج رہتے سے۔ فوج ، قاد سیہ کے توبیب پہنچی توموقع کا نقشہ منگوا بھیجا اوراسکے لحافاسے فوج کی ترقیب ، اورصف آرائی کے متعلق ہمائیں با تھیں جس قدر احتر جن جن کا مون پر ما مور مہر سے کتھے انگے فاص حکم سے موافق ، بھیجین حس قدر احتر جن کا مون پر ما مور مہر سے کتھے انگے فاص حکم سے موافق ، مامور ہو سے سے ۔

تا ریخ طبری مین عراق کے واقعات کو تفصیل سے دکھیوتوصات نظراتا ہے کرایک بڑا سیہ سالار، دُورسے تام فوجون کو اڑار ہاہے اور حوکچھ ہترا ہے اُس کے انتارون برہترا ہے۔

ان تمام الوایئون مین جودس برس کی مرت مین پیش آیئن سب سسے زیادہ خطر ناک در موقعے سنتے ایک نماوند کا موکہ جب ایرانیون نے فارس کے صوبجات مین ہر حکمہ نعتیب درڑا کرتام ملک مین آگ لگا دی بھتی اور لاکھون فوج میئا کرکے سلما نون کی طرف راسھے سکتے۔

دوسرے جب فیقرروم نے جزیرہ والون کی اعانت سے دوبارہ ممس برڈھا کی تی۔ ان دونون موکون مین صرف حضرت عمر کی شکن تدبیر بھی جسنے ایک طرف ایک اُسطتے ہوئے طوفان کو دبادیا اور دوسری طرف ایک کوہ گران کے پرنچے اُڑا دے پخالخ مم إن واقعات كي تفصيل بيلي حصيم بين لكه آئي بن-

ان تام دا قعات کی تفصیل کے بعد یہ دعویٰ صاف تا بت ہوجا تا ہے کہ حب

دنیائی اینخ معلوم ہے تب یک کوئی شخص **فاروق اعظم کے برا برن**سامج اور .

المشورشان نبين گذرا-

كظام حكوست

اسلام مین فلافت یا حکومت کی بنیا داگر چه حفرت ابو کم رکے عہد مین بڑی کی دوسالہ
نظام حکومت کا دور حضرت عمرے عہدسے شروع ہوتا ہے۔ حصرت ابو کم کی دوسالہ
فلافت میں اگر چه بڑے بڑے مہات کا فیصلہ ہوا یعنی عرب کے مرتدون کا فائمہ ہوگیا
اور سیرونی فتوحات شروع ہوئین ، تاہم حکومت کا کوئی خاص نظام نہیں قائم ہوا اور نہ
انامنت مرز اندائیے لئے کا فی ہوسکتا تھا، حصرت عمرت ایک طرف تو فتوحات کو پیوت
دی کہ قبیصر و کسری کی وسیم سلطنتین ٹوٹ کرغرب مین مل گئین، دوسری طرف حکومت کو وسلطنت کا نظام تھا کم کیا اور اُسکواس قدر ترقی دی کہ انکی وفات کک حکومت کے
وسلطنت کا نظام قائم کیا اور اُسکواس قدر ترقی دی کہ انکی وفات کک حکومت کے
جس قدر مختلف شعبے ہین سب وجود میں آھے۔ سختے،

لیکن قبل ایسکے کہم حکومت کے قواعد وائین کی تفصیل تبایئن پہلے یہ تبانا چاہئے کہ اُس حکومت کی ترکیب اور ساخت کیا تھی ؟ مینی تفقی تھی ؟ یا تمہوری ؟ - اگر جواسوت عوب کا تدکن حسن حد تک بیوی تھا اسکے لیا فوسے حصارت عمر کی خلافت پر ہمہور تی یا شخصی دونون میں سے کسی ایک کا بھی اطلاق نہیں ہوسکتا لیکن ایسے مترفع پر صرف

اس بات کایته لگانا کا نی ہے کہ حکومت کا جو اندازتھا وہ مجہورتت سے ملتا تھی یا تحضیت سے انعنی سلطنت کا مبلان واتی افتیارات پرتھا یا عام راہے پر-جمہوری اوشخصی طریق حکومت میں جرچیرسب سے بر حکوابالا تمیازے وہ عوال جموری در کی مراحلت ا ورعدم مراخلت ہے ، بعنی حکومت مین حسب قدر رعایا کو ذخل دینے کا بادہ ا حق حاصل ہوگا 'اسی قدر اسمین تمہورتت کاعنصر زیادہ ہوگا ۔یہان تک کسلطنتِ جہوری کی اخیر صدیہ ہے کہ منڈشین حکومت کے ذاتی اختیارات بالکل فنا ہوجا میں اور وہ جاعت کا رکن کا صرف ایک ممبر رہجاہئے - برخلات اِسکے شخصی سلطنت میں عام داروا صرف ایک شخص پر ہتو ہاہے۔ اِس نبایر شخصی سلطنت سے خوا ہ مخوا ہ ترایج ذیل پیام وزین (۱) بجاے ایکے کہ ملک کے تمام قابل انتحاص کی قابلیتین کام میں آمین صرف خید ارکان سلطنت کی عقل و تدبیریریام حلیا ہے ، ۲۰) چۈنکە بخرچنىدىمەرە دارون كے اورلوگون كوملكى نتىغا مات سے يجھ سرو كانبىن ہوّا۔اسِ کئے قوم کے اکثرا فرا دسے اُنتظا می قوّت اور قا بلیت رفیۃ رفتہ معدوم ہونے لگتی ہے ، رہ) مختلف فرقون اورجاعتون کے خاص خاص عوت کی اہیمی طرح حفاطنت نهين ہوتی کیونکہ جن لوگون کو اُن حقوق سے غرص سے انکو اُتطا م سلطنت دخل نہیں ہوتا اور جن لوگوں کو دخل ہوتا ہے اُنکو عنیرون کے حقوق سے اِس قید ر ہمدر دی نہیں ہوسکتی حتیٰ خود ارباب حقوق کو ہوسکتی ہے۔

چزنکہ بجز خیدار کان سلطنت کے کوئی شخص ملکی اور تومی کامون مین دخل دینے کا مجاز نہیں ہوتا۔ایس لئے توم مین ذاتی اغراص کے سوا قومی کامون کا نداق معدوم ہوجا تا ہے۔

یہ تا بی شخصی سلطنت کے اوازم ہین اور میں اس سے جدانہیں ہوسکتے۔ برطلان اسكے تمہوری سلطنت میں اسکے رعکس تابح ہونگے ۔اس نبارجس سلطنت کی شبت مبہوری ویونسی کی بحبث مواسکی نوعیت کا اندازہ تنابح سے بھی کیا جا سکتا ہے۔ ینہین خیال کڑا چاہئے کہمہورتت کاطریقیہ عرب کا فطری مذاق تھا ا وراس کئے عرب مین جوحکومت قائم ہوتی وہ خواہ مخواہ حمبوری ہوتی ۔عرب مین مدّت سے میرج سیم حكومتين موجود تقين ليحني حميري -غسَّاني لين ريب شيخصي تقين، قبائل كے مدوا البتة ممبوري اصول يرأتنا ب كئے جاتے مقے نسكين الكوكسي قتم كي ملكي حكومت حاصل نه *هتی*، بلکه انکی میثیت سیه سا لارون یا قاضیبون کی موتی تھتی ۔حصرت ابو بگر کی خلافت سنے بھی اس بحبث کا کھر فیصلہ نبین کیا کیونکہ گو-اُنکا اتنحاب کشرت راسے پر مواتھا لیکن ہ ایک فوری کارروائی کتی چا پخه خود حضرت عرف فرایا- فلا یع ترت اهر عمان ا يغول إنماكان بيعة ابى بكرفلتة وتمت ألاوانها فككانت كذلك لكن الله وقي شرعاً

حصرت عرکے گرد ومین جوسلطنتین تقین وہ بمی تمہوری نرتقین- ایران من توسیخ

ملك دئبوميح نجاري مغبوع مطبع احمدي ميرغمر باردوم صفرفن الم

معزت عمرکی عکافت مین مجلدشوری دکونس

مبئس خوری کے مکان اور اسکے انعقا د کاطر ہمیتہ

بھی یہ مذاق ہی نہیں پیا ہوا۔ **روم** البتہ کسی زمانے مین اِس شرف سے ممتاز تھا۔ لیکن حصرت ع کے زمانے سے بہت پہلے و ہا نشخصی حکومت قاہم ہوحکی تھی اور حضرت عَمْرِكِ زِمانے مین تووہ بالکل ایک جا برانہ خود فحیّا رسلطنت رمگئی تقی۔ غرص حضرت <u>عمرت</u>ے بغیرسی مثال اور منونے کے حمہوری حکومت کی بنیا دوا لی اوراگرجہ ونت کے اقتضارے اُسکے تمام اصول و فروع مرتب ہنوسکے تا ہم جو چیزین حکومت مہوری کی ر وح ہین سب وجود مین اگئین- اِنین سب کے اصل الاصول محکسر شوریٰ کا انتقا<sup>ر</sup> تھا مینی حب کوئی انتظام بیش آیا تھا توہمیتیا رباب شورے کی محلیس منعقد ہوتی تھی ا ورکونی امربغیم شوره اورکترت راے کے علی مین منین آسکتا تھا۔ تام جاعت ا سلام مین اُسونت دُوگروہ تھے جوکل قوم کے بیٹیوا تھے اور حنبکوتما م عرب نے گویا اینا قائمُ مقام سلیمرکرنیا تھا یعنی مهاجرین - وانصا ریحکبس شوری مین ہمیشہلازی طوم یران دونون گروه کے ارکان شریک ہوتے تھے۔ انصار مبی دروقبیلون مین نعتسم سخفے ا ویں وخرج جنا نخدان د ونون خاندان کامحلیں شوری مین شریب ہونا مزورتھا محلس شوری کے تمام ارکان کے نام اگرچیم نہیں تباکتے تا ہما سقد رمعلوم ہے پر حضرت عثمان- حضرت علی- عبدالرحمٰن- بن عوف -معا ذبن حبل- ابی بن *ع*عب زبیربن نابت اسین شامل مفتحے - محلس کے انتقاد کا بیطریقیہ تھا کہ پہلے ایک منا دی علان كرّا تماكه الصلوة جامعة عنى سب لوك نا زك سئ حمع موجا مين-جب كنزالعًال كجالة طبقات ابن سعد- جلده صفحت المطبوعة حيدر آباد-

لوگ حمع ہوجا تے سختے توحضرت عرمسجد نبوی مین جاکر دور کعت نیا زیڑھتے سختے، نیا ز

واحل کاحد کو ولسن ارباد ان تلتبعول هال الذی هوای سالت مرکمیون نے اس سروسال کے میاری کی کا میں مروسال کے میاری کی کہ دوئی کا اس میں کہ دوئی کا اس میں پرجانا صروری تعیرا تو مہت کا اس میں پرجانا صروری تعیرا تو مہت

اس سے منصب خلافت کی حقیقت اورخلیفهٔ وقت کے افتیا رات کا اندازہ ہوتا ہے.

انىلوازع كوالهلان تشركوا في امانتي بماحلت من اموركوفاني

یں بران میں اور این ہے اور این ہے

يرى محلس شورى منعقد مونئ -مصنرت غثمان ، فلحه بن عبدالنيد · زبيرين العدام ،علدان بن عوت ، و غیرہ نے با ری باری کھڑے موکرتقر پرین کمین اورکہا کہ آیکا خود موقع خبگ ار جا<sup>ن</sup>ا ننا سب نہیں۔ پھر *حضرت علی گھڑے ہوئے اور*ان لوگون کی تا ئیدمن تقریر کی۔ غرصٰ کثرت راے سے بھی فیصلہ ہوا کہ وحصرت عرموقع جنگ پریہ جا میں بہطرح فوج کی تخواہ - دفتر کی ترمیب عمّال کا تقرر- عیرومون کوتجا رہت کی ا واوی اورانیر محصول کی متنجیص آس تسم کے بہت سے معاملات ہیں <sup>ب</sup>نظر<sup>ن</sup> ہ [ المریغون مین تبصریج مذکوین کمحلیس شوری مین میش موکر طبے یائے۔ان امور کے میش ہونیکے وقت ارکا بحلب نے جولقرین کین وہ بھی یا ریخون مین مٰدکو ہیں۔ محلِس شوری کا انعقا د اورا بل الراہے کی مشورت ہتحسان و نبر ع کے طور پر نہ تھی ملکہ حضرت عمرنے مختلف موقعون پر صاف صاف فرما دیا تھا کہ شورے کے بغیر فلا فت *سرے سے جا*ئز ہی نتین اُنکے خاص الفاظ یہ ہیں کے خلافہ اُلا ع<mark>م شور گا</mark> مجلس شورط کا احلاس اکثر خاص خاص صرور تون کے میش آنے کے وقت مقوما تھا۔ لیکن اسکے علاوہ ایک اوم علب<sub>ار ب</sub>ھتی جہان روزانه انتظامات اورصروریات بر نفتگوم**و بی هتی-میحل**سر م**هنی**مسی نمبوی مین منعقد موتی هتی ا درصرت مهاجرین صحابه اس مین شركك بهوت متع مصوبجات اور إصلاع كى روزا نه خبرين جو درما برخلافت مين مهونخي متين ا حضرت عمرانکواس محلس مین بیان کرتے تھے اورکوئی نجٹ طلب امرموّا تھا تُواسین مله كزالهال مجوالة مصنف بن بي شيبة - طهد مع معفوسا -

نوگون سے استصواب کیا جا آتھا مجوسیون پرجزیم مقررکرسنے کامسکا اقل اسی محکس میں ببیش ہوا تھا۔ مورّخ بلاذر می سنے اس محلس کا حال ایک منی تذکر سے میں ابن الفاظ مین کوما ہے۔

كان للمهاجري علس في المسم كفان عمر جلس معهم فيه وي المعماما بنهمي البهمن اعركافات فقال يوماما ادبري كبيعناصنع بالمجوس مجلس شوریٰ کے ارکان کے علاوہ ،عام رعا یا کو انتظامی امورمین مر اخلت عال علی ،صوبجات اوراضلاع کے ماکم اکثر رعایا کی مرضی سے مقرر کئے جائے معتے- بلکه مبن وقات بالکل آنجاب کاطریقه عمل مین آیا تھا-کوفہ-تصرف- اورشام مین الجبُ عَالَ حَرَاجِ مَقْرَرِكُ عَالَے بَائِے تُوحفزت عَمِرِنِ اِن مِينون صوبون مين احكام انتصبح کرو ہان کے لوگ اپنی اپنی بیندسے ایک ایک بحض اتنجاب کرکے بیجین حوامجے نز دیک تمام لوگون سے زیا دہ دیانت دارا ورقابل ہو، خیا بخہ کو فرسے غثما ن بن فرقعہ تصره سے حجاج بن علاط شام سے معن بن یز میر کولوگون سنے منتخب کر کے بھیجا اور حضرت عمرت عاضين لوگون كوان مقامات كاجا كم مقرّركيا- تعاصني ابويوسف صاحب سف اس وا فقد كوحن الفاظمين باين كيام يبين-

كتب عمر بن الخطاب الى اهل الكوفة يبغنون البه مرجلامن اخيرهم والمحمم والى اهل البصرة كذلك والى اهل الشاهركذ لك فالفعث البه اهل الكوفة عمان بن فرقل ولعث البه اهل الشام معن بن بنريب ف

عام رعا یا کی م<sup>خل</sup>ت بعث لبد إهل لبصن المجاجرين علاط كله وسلبتون قال فاستعل كل وجدٍ منه وعلى خراج ارضه "

سعدبن ابی وقاص بہت بڑے رہے کے صحابی اور نوشیروانی یای تخت کے فائے تھتے ۔ حصنرت عمرے ان کو کوف کا گور نرمقرر کیا تھا لیکن حب لوگون نے انکی شکایت کی تومعزول کردیا۔

مکومت جمبوری کا ایک بہت بڑا اصول یہ ہے کہ بڑعض کو اسپنے حقوق اول غراص کی حفاظت کا پوراا نتیا را ور موقع دیا جائے۔ حصرت عمر کی حکومت میں ہڑعض کو نہا یت از ادی کے ساتھ یہ موقع حاصل تھا اور لوگ علانیہ اینے حقوق کا اظہا رکرتے تھے۔ اضلاع سے قریباً ہرسال سفا زمین آتی تھیں خبکو وفحد کہتے تھے اس سفارت کا حن یہ مقصد ہوتا تھا کو دربا فیلافت کو ہرشتم کے حالات او زیر کا یات سے مطلع کیا جائے اور یہ مقصد ہوتا تھا کہ دربا فیلافت کو ہرشتم کے حالات او زیر کا یات سے مطلع کیا جائے اور داور سی جاہی جائے۔ فراون میں جائے گا جائے اور داور سی جاہی جائے گا مین خطبہ رٹیھا۔ فرانون میں تقیر کے کی اور ایک و نفہ تا م عالان کیا ایک کے جمع عام میں خطبہ رٹیھا۔ فرانون میں تقیر کے کی اور ایک و نفہ تا م عالان سلطنت کو جج کے جمع عام میں طلب کرکے اسکا اعلان کیا ، جنا نجہ المی یہ توری تفصیل عمالون سکے بیان میں آئیگی۔

حکوت عمبوری کا اسلی زیوریہ کہ اِ د شاہ ہوشتم کے حقوق مین ، عام آ دمیون کے ساتھ برا بری رکھتا ہو یعنی کسی قانون کے اثر سے شننے نہو ، ملک کی آمدنی مین سسے کے اثر سے شننے نہو ، ملک کی آمدنی مین سسے کے کا برا بری رکھتا ہوئیں ہوں کے اثر سے شنانے اللہ الحراج صفیہ ۲

خلیفه کاعام حقوق مین کے ساتھ سیاہ کی منوا

صروریات زنرگی سے زیادہ نہ ہے سکے ، عام معاشرت مین اُسکی حاکما نہ حیثیت کا کھٹھ لحاظ ندکیا جاہے ،آکے احتیارات محدود ہون ، مترخص کو اُسیز مکتہ چینی کا حق حاصل ہو،۔ يه تام الموجعفزت عمر کی خلافت مین اس درج کت پہنچے سکتے که اُسے زاد ہمکن عیتے ا ورجو کچھے ہوا تھا خود حصرت عمرے طریق عمل کی مبرولت ہوا تھا۔اُ تھون نے متعبّرو مو تعرن برطا ہر کردیا تھا کہ حکومت کے لحاظ سے آنکی کیا جیٹیت ہے ۔ اوران کے کیا اختیارات ہیں؟ ایک موقع پراُ تفون نے اسکے متعلق جوتقر برکی تھی اُسکے بعض تعفن فقرے اس موقع پر لکھنے کے قابل من-

إنما اناوما لكوكولي البيتمون ستغنيت المهكرة الماريني مبتوالمال بن سقد حقب جننا استعففت وان افتقن ككلت بالمعرج ف اليتم عرب ويتيم الهين الرين وبتنابؤ كاتوكيو ويوكاء لكوعلى إيها الناس خصال فخذوني اومزرت برئي تودسوي وان كان كمات كم عن وكايما مرا

بهاً لكوعلى أن لا اجنبي شيماً مِن الرساورة ورُون كم متعدد عقوق بن مبا تكومموت خولج كورك مماافاء الله عليكو الهن أواخذه كزا فإبئ يديد مك كاخرج اور الغنيت ويجدولك على اذا وقع في بدى أن الما يجاطورت ومع كيابك المدير وروب المرين الما من يخرج مني الافي حقه و لكوعلى ان ونينت ال تربيا الريب مرن نوك إله الياية ان اس بي في اعطبيانكوراس نغوركمة المن مقارب وزيغ بُرهاؤن ويسرمدون يومفو فريكون ولكه على ان الفيكر في لمهالك ايدية تكوفون من و داون-

سلية والمواتات انخراج صغوره

ایک موتع پرایک تحف نے کئی بار صفرت عمر کوخاطب کرے کہاکہ الق الله بیاعمی ایک موتع پرایک تحف نے اسکوروکا اور کہا کہ برمت ایک تحف سے اسکوروکا اور کہا کہ برمت ایک تحف سے اسکوروکا اور کہا کہ برمت موا حضرت عمر سے ایک تحف سے اسکوروکا اور کہا کہ برمت موا حضرت عمر سے دو اگر پر یوگ برکیوں تو یہ ہے مصرت باور علوگ فیانت اور حکومت سے اضیا یات اور حدودتام افران پر ظاہر مورکئے سکھے ۔ اور حفی شوکت اور آفتدار کا تعدور دون سے جاتا ہے ایک موان پر ظاہر مورکئے سکھے ۔ اور حفی شوکت اور آفتدار کا تعدور دون سے جاتا ہے جاتا ہے ۔ معاور بن جبل نے روسیوں کی سفارت میں حضرت عمر کی خلافت کے مقامت میں حقیقت آئی محمی دو دو توقیقت حکومت نمبوری کی حقیقت آئی محمی اس سے واضح تر اور میجے تر نہیں بیان کئے جاسکتی ۔ مورک کے نظام حکومت کی طرف اسکا ہے۔ اور عکومت نمبوری کی طرف بھی اس سے واضح تر اور میجے تر نہیں بیان کئے جاسکتی ۔

' نوعیت حکومت بتانے کے بعدم حضرت عمرے نظام حکومت کی طرف متو تبہ ہوستے ہیں۔

عکومت کے نعلم وسن میں جو چیز سب سے مقدّم ہے یہ ہے کہ انتظام کے تمام مختلف صینے ایک دوسرے سے ممتازا ورالگ الگ ہون اور ہی ترقی تمرّن کی سے بڑی دلیل ہے یہ سطرح تمرّن کی ابتدائی حالت میں مکانات کی یقطع ہوتی ہے کہ ایک ہئ حجرہ تمام صزور تون کے لئے کا بی ہوتا ہے ، پھر جس قدر تمرّن بڑمتا جاتا ہے کھانے ، سونے ، ملاقات کرنے ، لکھنے ، بڑھنے ، اور دیگر صزور ایت کے لئے جدا جد ا کمرے نبتے جائے ہیں ۔ بہی مالت بالکل سلطنت کی ہے ، ابتدا ی تریّن نمیل نتظام

مله كتاب الخزان صفح ، -

کے تمام نتیغے ہے 'جلے رہتے ہیں، جوسخص صوبہ کا گورنر ہوتا ہے وہی اڑائی کے ونت سید سالاربن جا آ ہے، مقدمات کے انفضال کے قاحت وہی قاصی کا کام دتیاہے، جرائم کی تعزرین وی پولیس کی حیثیت رکھا ہے ،جس قدر تدن ترقی کرا جا آ ہے الگ الگ صینے قائمُ ہوتے جا تے ہین ا ور**ہر صینے کا الگ ا**فسر ہو اہیے - انگرز*ی حکومت* لو ۱۰۰ برس ہوسئے لیکن جوڑ نشل اور ایکز کٹیو-اختیارات اب ک ملے تیلے ہین ، بعنی کلکطِ ضلع مالگزا ری بھی وصول کر ہاہے۔ اور مقدمات بھی فیصل کر اہے۔ اور عنیر آمینی ا صلاع میں توہبت زیادہ خلط مبحث ہے۔حضرت عمرکے محبید عزمیب کا زامون مین ایک برتھی ہے کہ اِ دحردا سکے کہ اسوقت عرب کا تدّن نہایت ابتدا بی حالت میں تھا اورسلسلہ حکومت کے آغاز کو صرف چند برس گذرے تھے تا ہم اُنھون سے ببت سے شعبے جو مخلوط تقے الگ کرکے جدا گا نہ محکمے قا م کئے۔ خیا نجہ اَن تمام شعبان

عہین۔ ملک کی مفت بیم صوبجات اور جنلاع

عهده داران کمکی

نظام حکومت کا بندائی سلساج سیرتمام انتظا ات متفرع بین کک کانتمان عمل مین بعتیم ہونا ہے جنکوصوبہ، صلع ، اور پرگنہ ، سے تعبیر کیا جا آ ہے اسلام مین حصزت عمر بہنچ شخص مین جینے اسکی ابتدا کی اوراس زیائے کے موافق نمایت موزونی اور حفرت عمر کے مقورکردہ صوبے

ناسب سے اسکے حدوو قا مُ کئے۔ تام موّرضین سنے اسکی تقیریح کی ہے کہ انفوا سے مالك مقبوصنه كو ^ صوبون يربقت مركياً مكه- مرينية - نتام - جزيره - ت<u>صره - كو فه مص</u>ر -سطین مورخ تعقوبی نے م کے بجا ہے عصوبے لکھے ہیں-اورلکھا ہے کہ یہ تظام حصزت عرفے منتہ میں کیا تھا" مؤرضین کا یہ بیان اگر حید دحقیقت صحیح مسکین سمین ایک اجال ہے حبکی تفصیل تبا دین صرویہے - فاروقی فتوحات کوج<sub>و</sub> وسعت حاصل کھی اُسکے لھا فاسنے صرف یہ مصوبے کا فی نہیں ہو سکتے تھے۔ فا یس خورتان رمان - وغیرہ بھی آخرصو ہے ہی کی حیث<del>یت رکھتے گئے ۔</del> اصل بیہ کہ جومالک فتح ہوئے انکی جونفشیم پہلے سے بھتی اور جومقامات صوبے اِضلعے سکتے اکٹر مگر چھنر<del>ت عمر</del>نے اُسی طرح رہنے دیے ،اس کئے مورضین نے اُنحا نام نہین لیا۔البتہ حوصوبے حود حصر<del>ت عمر ن</del>ے قائم کئے اُنکا ذکرصر درتھا।وروہ ہی آٹھ تھے <del>،</del> لیکن بیا مرتھی ملجاظ اعلب صحیح ہے ورنہ اریخی تصریحات سے نابت ہو تاہے کہ حضرت عمرنے بحیلی تعتیم ملکی مین بھی تصرفات کئے تھے بلسطین سیلے ایک صوبہ تمارکیا جاتا تھا-ا در اسمین اضلعے شامل سکتے بھامیر مین حب حضرت عمرنے خود فلسطیر . جا کہ معاہرة امن لکھا تو اس صوبے کے دوجھتے کردئے۔ ایک کاصدر مقام المیآ اور دوستے كارلمه قرار ديا ،او علقمة بن حكيم وعلقمة بن مجزز كوالگ الگ د فون صوبوئين شعية يه كيا-ك طبرى صفير سروم و و ١٨٠٠ - صل عبارت يب وفعار ديم عشركور فطسفين تعدل شام كلها 4 + + و نرق فلسطين على طبين + فنزل كل واحد منها في عمله م.

مصرتی سنبت ہمکومعلوم نبین کہ فتح سے سیلے اسکی کیا مالت نمتی لیکن حضرت عمر نے مسکو د وصوبون من نفتیم کیا- بالا بی حصّه حبکوء بی مین صعید کهتے ہین اور جبین ۴۸ سفلعے شامل سفتے ایک الگ صوبة فرار دیکر عبداللّٰہ بن سعدین ابی سرح کو و بان کا حاکم مقرّرکیا اور نشيبي حصه جبين واضلعے شامل تھے اسپرایک دوسرا انسرتعینات کیا۔عروین اعال بلورگورنرجنرل کے تھے۔

نوشهروا نيحهم

فارس وغیره مین یو کد مفرت عمرفے قریباً تام نوشیروانی انتظامات بحال منے اسے تھے۔ ایسلئے صرف یہ تبادینا کا فی ہے کہ نوشیروان کے عہدمین یہ مالک کتنے حِصْتُون من منعشم تقيم -

موڑخے تیعقونی نے لکھاہے کہ نوشیردان کی سلطنت عواق کے علاوہ مین رہے مرے صوبون میں منفسم بھی۔

محرا سان-مین مفعلهٔ ذیل اصلاع ثنا مل تقعه نیشا پور- هرات - مرو- مرو رود غا <sub>- يا</sub> ب- طالقان- بلخ- نجارا- با زعيس- با ورد- *غرشتان- طوس- حر*س- حرجان-آ ذربا بحان- امین مفصلهٔ زیل اصلاع شامل مقے -طبرتیان- رہے۔ تر وین-ز غان - قم- اصعنهان - مهران - نها ونه - دينور - علوان - ماسبندان - مهرمان قدزت -شهرزور- صامغان- آذرسجان-

' فارس-اہین مفعلۂ ذیل اصلاع نتا مل تھے۔ مطخز۔ نتیراز۔ نوبندمان۔ جور۔

مله "اریخ «یوبی معنی ۲۰۱ و ۲۰۲ مبلداول

كازرون- منآ- دارا بجرد-ارد شيرخره-سابور- امواز- جندبيا بور-سوس-ننرتيري منا ذر تشتر ایزج - رام مرمز-

صوبون من مفصّلهٔ ذیل برے برے عمدہ دار رہتے تھے۔ والی بینی حاکم سور کے كاتنب بينى ميزنشي- كاتب ديوان بيني د فتروزج كاميزمنشي-صاحب لخراج بعني *للكير-صاحب احداث بينيا ونيه يوليس-صاحب ببيت المال ييني افسرخرانه* قاصني ميني صدرالصدورومنصف - خيائخ في كوفه من عارين ياسروالي غنان بن منيت كلكثر عبدالتدين مسود النسرخزانه -شربيح قاصني عبدالتدين خلف الخزاعي کا تب ویوان سھے کے

> مرصوبے مین ایک فوجی ا منتر مجی ہوتا تھا لیکن اکثر مالتون مین صوب کا عال ہی اسِ خدمت پر تھی ا مور ہو تا تھا - پولٹس کامحکم بھی جہا ن کب ہمکومعلوم ہے ہر حگید الگ نہ تھا۔اکٹر کلکٹر یا عامل اِس خدمت کو تھی انجام دیا تھا مشلاً عاربن باسرحبوقت کونے کے حاکم تھے پولیس کا کام بھی انہی کے سیرد تھا ہجرت مین قدامته بن منظعون صاحب الحزاج سختے اور پولیس کا کام بھی کرتے تھے۔والی كااشات وسيع اورستقل اشات هوما تها ورأسكي مسرحود وربا رخلافت كي طرت سے امور ہونے مختے۔ عار کوجب مصزت عمر نے کوفہ کا حاکم مقرر کرکے بھیجا تو وسن معززاً دمي المكه الله اصاب من والحيم عن الميت فرط خزرجي تعبي سطة عنه

ك مبرى ٢٩٨٠-وابن ملكان صغير ١٥٠- على اسدانفاية تذكرهُ قرف ١٠

میرمنتی قابل اور تقریرا و یخریمین کمیا ہوا تھا۔ ابوموسی اشعری جوبصرہ کے گورز سفتے ان کا میرمنتی نہا دبن سمید تھا جبکی فصاحت و بلاعنت پر جود حضرت عمر حیران رہ گئے سفتے اور عمروبن العاص کہا کرتے سفتے کہ اگر مینوجوان توبیش کی سنل سسے ہوا تو تام عرب اِسکے عَلم کے نیمجے آجا آ۔

اضلاع مین تمبی عامل ، افسرخزانه ، او رقاعنی ، وغیرہ ہوتے تھے اوریسب اگور زصوبہ کے اسحت اوراً سکے زیرحکومت کام کرتے تھے۔ پرگنون مین غالباً صرف سحصیلدا رہتے تھے اوراً سکے ساتھ اُسکاعلہ ہوتا تھا۔

صوبحات اور اصلاع کی تعتییر کے بعد سب سے مقدم حوجیز تھی ملکی عمدہ دا دِن کا اتنجاب ا درانکی کارروائی کا دستورامل بنا ناتھا، کوئی فرما زواکنیا ہی بیدا رمغزا ور کوئی قانون کتنا ہی کمل ہولیکن حب مک حکومت کے اعصنا وجواح بینی عہدہ داران مکی قابل الأق ، رہتباز ، اور تمدین نہون اوران سے نہایت بدار نغری کے سائقة كام ندليا جائے، ملك كوكىجى ترقى نبين موسكتى، حصرت عرف اس باب مين حبس : کمته رسی اور تربیروسیاست سے کام لیا الفهاف بیہے که تایخ عالم کے ہزارون ورت أنك كرنجي اسكي نظر نبين لمتي، اس مرحله بين اس بات سے بُري مرد لي كه انكي البيت شروع سے جوہر شناس واقع ہوئی تھی یعنی سیخض میں میں متم کی قابلیت ہوتی تھی وہ اُسکی تدکوہ بینج والے سکتے ۔اسکے سائقاً کفون نے ملک کے تمام قابل آ دمیو ہے وآ فعینت بهم بپنیانی تقی، بهی ابت تعتی که اکفون نے حبس شخص کو حوکام دیا اس سکے

مفرت کم کرمبر شناسی

انجام دینے کے لئے اُس سے بڑھکرا دی نہیں مل سکتا تھا، عرب میں جا شخفہ ہے جن كودّها قرا لعرب كها جا تا تعاليني جونن سياست وتدبيرين إيناجوا بنهين رسليتے تحقے -امیزعا ویت<sub>ه</sub> عمروبن العاص م<u>غیرة بن شبیته زیاد بن سمی</u>ته حصرت عمر<u>نے زا</u>د کے سوا ، منیون کو ٹرے ٹرے ملکی عہدے دسئے -اور یو کمدیر لوگ صاحب او عامبی سفتے ا سِ لئے اسِ طرح اُن رِیا ہور کھا کہ عبی سی شم کی حذد سری کمرنے یا ہے ، زیاد انکے نیا مین شا زده ساله نوحوان تعا اس کسئے اُ سکوکوئی ٹراعہد دہنین دیا لیکن اُسکی فالمیت اور استعدا دکی بنابرا بوموسی اشعری کولکماکه کاروبار حکومت مین اسکوشیرکارنیا مین - فن حرب من عمرومعدی کرب و طلیحة بن خالد نهایت ممتاز سخته لیکن مربروسیاست من انکو دخل نریحا حصنرت عمر نے ان دونون کو <mark>نعان بن مقرن</mark> کی ایحتی میں عوات کی فتوحات پر مامورکیا لیکن نغان کولکه بهیجا که انگوکسی صیعنے کی ا منسری نه دینا کیونگیرش صِرف اینا فن غوب جانتا ہے ۔عبدالکترین ارتم ایک معززص<sub>حا</sub> بی کتھے۔ایک دفغ*ب* رسول المنصلم كي إس كمين سے ايك جواب طلب تحرية في ، أي نے فرا إيك ارسكا حواب کون بھھے گا؟ عبداللہ بن ارقم نے عرض کی کر دمین، یہ کہ کرخو داپن طبیعت سے جواب لکھکرلائے ، <del>انخفرت کے س</del>نا تو نہا یت بیند فرا یا حضرت عربھی موجود سکتے۔ أنكى اس فابليت يراكر فاص خيال بوا اوجبيا كمامين الأثير وغيرد سي لكما ب يه اترانك ول من بميشة قائم را يهان لك كرجب خليفه بوئ توانكوميرمنشي مقرركيا ، سله اسدانا ترتز تر مغيوبن شعبر المسله استيعاب قامني بن عبدالبروطبري منعيه ٢٦١٠-

ما وند کی عظیم الشان مهم کے گئے جب محلس شور مار کا عام اجلاس ہوا اور حصرت عمر نے ا اے طلب کی کواس مہم برکون بھیا جائے ؟ تو تمام مجمع نے باتفا ق کما کہ آ کیور و انتیت ب اورآپ نے ایک ایک کی فالمیت کاحس طرح اندازہ کیا ہے کسی سے ننین کیا، خِنالِخِها حضرت عمرنے نعان بن مقرن کا نام لیا اورسب نے کیز این ہوکرکہا کہ یہ اتخاب الکا بجاہے عاربن ایسر پیسے رہیے کے صحابی سکتے اور زہر و نقد تس میں بے نظیر بھتے لیکن سیاست ہ تر بیرے اُ شنا نہ تھتے ، قبولیتِ عام اور معفن مصلحتون کے لحاظ سے حصرت عمرے اُلمو کو **فر** کا حاکم تقرر کیا لیکن حیندروز کے بعد جب اُن سے کام حیل نہ سکا تومعزول کردیا، ورا نکے طرفدار ون کو د کھا دیاکہ وہ اس کا م کے لئے موزون نہ تھتے ، اسِ فتم کی سیارُن شالین ا مین جنا ہتقصا بنین *کیا جاسکتا کسی شخص کوشوق ہو*تورجال کی کتابون سے عرب کے تمام لایق آ دمیون کا پتہ لگائے اور پھر دیجیے کہ حضرت عمر کنے اِن بُرزون کو پحومت کی کُلِّ مین کیسے مناسب مونقون پر لگایا تھا-تا ہم آنا براکام مرف ایشخص کی ذمّہ داری پرحیورٌ انبین جاسکتا تھا- اِس کئے عفرت <del>عمرت</del>ے م<del>جاس شور کی</del> منعقد کی اورصحا بہسے خطاب کرکے کہاک<sup>ر د</sup>اگرائپ لوگ میری مردنکرنیگے توکون کر گیا ؟ - معنرت ابو مرزه سن کها کیم آ یکو مرد دینگے، لیکن اسوتت مُلَى أنطام مین حصِته لیزا زہرا ورلقدّس کے خلات سمجا جاتا تھا چنا پخہ حصرت ابوعبیدہ سک مله كتاب الخزية صفية ٥٠- مس عبارت يه ان عمر بن الحفظاب دعا اصعاب رسول الله فقال اذالم تعينى الن فن بعينى الزء

فزوا کہ اسے عمرتم رسول اللہ کے اصحاب کو دنیا مین آلودہ کرتے ہو۔ حضرت عمرت کے کہا مین ان بزرگون سے مرد نہ لون توکس سے لون '' ابوعبیدہ سے کہا اگرا سیا ہی ہے تونخوا ہن بین قرار تقر کروکه لوگ خیانت کی طرف مائل منوسے پایٹن -غرمن حصرت عرفے لوگون کی را می ومشورت سے نہایت دیانت دا را ور قابل لوگ اتنحاب کئے اورا کواکی متین سپروکسین- زیاد و اہم خدات کے لئے محلس شوری کے عام اجلاس مین اتنجاب ہوا تھا۔ اور وتخص تمام ارکان محلیس کی طرف سے اتنجاب کیا جا تا تھا وہ اُس خدمت پر ا مور ہو ما تھا نِنا پَنِه عْمَانِ بِنِ حِنيعِت كا تقرّراسِي طريقة يرمبوا تقا-يعفِن اوقات صوب يا <u>ضلعے كے لوگون</u>ا وحكم بهيمة سخة كه حرِّم خص تمام لوگون سے زيادہ ديا نت داراو زمابل ہو، أسكوا تناب كرك بهيجوجنا يخه آنني منتخب بوگون كوولان كاعامل مقرّ ركرت تحقّے غنان بن فرقد معن بن مريا حجاج بن غلاط اسی قاعدے کے موافق مقرر کئے گئے تھے۔ خیا یخہم اسکی تفصیل اور لكمدائث بين-

ایک وِقت میر مقی که لوگ اکسی فدمت کے معا وضع مین نخوا و لینا بیند نمین کرتے محقے اورا سکوزہر ڈفٹڈس کے فلات سمجھتے تھے بعینہ اسطیح حب طرح احجل کے مقدّس واعظون کواگرکها مائےکو هاقا عده اپنی خدمتون کوانجام دین ا ورمشاهره لین تُواکمونهاتِ ناکوارموگا ، لیکن نذرونیازکے نام سے جو فتین لمتی ہین اسسے انکواحتراز نہین ہونا۔ تضرت عمرکے زمانے مین بھی بہت سے لوگ اس علمی مین مبتلا تھے لیکن ہے امریمترن اور ا سله کتاب الخراج منعصته

اصول انتظام کے خلاف تھا ،اس کئے حصرت عمر نے بڑی کوٹ میں سے اس علعی کو ر فغ کیا او تنخوابین مقرّ کیین، ایک موقع پرحضرت ابوعبیده سنے جوشهو رصحابی اورسلیلار تحقے میں ایزمت لینے سے انجا رکیا توحصرت عمر سے ٹری شعک سے انکو راضی کیا ۔ حکیم ہن حزام نے حضرت عمرے بار بارا صرار رمعی کمبھی روز منہ یا وظیفہ لینا گوارا نہ کیا۔ - چرشخص عال مقرّر مبوّا تھا اُسکوایک فرمان عطا ہوّا تھا جس مین اُسکی تقرّری اور اختیارات اورفرانفن کا ذکرموّا تھا۔ اسکے ساتھ بہت سے مهاجرین اورانصارگری تبت مونی متی ، عامل حس مقام پر جا تا تھا تام بوگون کو جمع کرکے یہ فران پڑھتا تھا ، حبكي و حبست لوگ أسكے اختيارات اور فرائفن سے واقعت موجاتے تھے ، اور حبیب اک اختیا رات کی مدسے آگے قدم رکھتا تھا تولوگون کو اُسپر گرفت کا موقع ملتا تھا ، <u>حصنرت عمرکواس بات کاسخت اہتمام تھا کہ عالمون کے جو فرائفن مین ایک ایک اس سے</u> وآقف موجائے جنایخہ اِر اِنحلف مقامات اومختلف موقعون پراُسکے متعلق محطبے ریے ایک عطبے میں جرمجیع عام میں دیا تھا عاملون کو نماطب کرکے یہ الفاظ فرائے۔ اله وإنى لموالعِنكواهاع ولاجبارين ولكن إدركورمين نع تم يورون واميرا وسِمَت يُرمِن كم سيزميما ابعثت كراية الهدى عبتدى بكرفادس والمهام باربياب كورتهارى تليدرن تموك ملك لمبرى صفى ١٥٥٠ سك كزالمال ملد ١٣ صفى ١٣٢٠ - منك طبرى صفى ١٢٥٠ - أسدالغابة ( تزكره حذافة بن اليان) = جى اللي تقديق مرق م أسك الغاف عين كان عمل اذا استعمل عامل كنت عمل و فل بعثن فلانا وامن ته تبكذا و مولما قدم الملاين استغبله الدماقين فلم افرع عهده الخوم،

ء مون کے فرمین تین ایکے فرمون کی تعلید سليو حفو فهم وكانضروه وفتن المم سلان كمعقوق داكره أكورد وكوب شرد، كده ديل مون

ولا يحتب وهم فنفتنوه وكالعنلفق أنى يجا توبين كروك غللى ين يرين - أن كم يسمَا ب دروار الابواب دونهم فياكل فوهي ضعيفهم أنه بنديموك زبرست كردره ن كماجاين الشكس بال ولانتنافروا عليه وفتظلوه و ا باب وربي نورديان برهم زام -

سامنے اُسکو فزمان تقرّری عنایت کرتے تھے اوران صحابہ کو گواہ مقررکرتے تھے جبر سے يه مقصد بتھا کہ خوشخص مقرر کہا جا تاہے اُسکی لیا قت اور نوالفن کا اعلان ہوجا ئے۔ برعام سے عمدلیا جا تا تھاکہ ترکی گھوٹ پرسوار نہوگا۔ آریک کیٹ نہینے گا۔ چَینا ہوآٹا نہ کھائیگا۔ وَرُوازے پر در بان نررکھے گا۔ آبُل عاجت کے لئے دروازہمشیہ

كُلُا رِكِمْ كُا- يه شرطين اكثر سروا مُ تقررى مين درج كي جاتي تقين اوراً بكومجمع عام مين إير هكرئسا يا جا اتھا-

حب کوئی شخص کمین کا عامل مقرر کیا جا تا تھا توجھٹرت عمر صحابہ کے ایک گروہ کے

الهواسية.

عاملون

مِن ا تون

كاعمدينا مآ الحقأ

> حبس وتت کوئی عامل تقرّر ہوا تھا اُسکے اِس حبن قدر مال اور اسباب ہو ما تھا اُسکی فصل فہرست طیّا رکرا کرمحفوظ رکھتی جاتی تھتی ا درعا مل کی مالی حالت مین ا غير ممولى ترقى ہوتى تھتى توائس سے موا خذہ كيا جا اتحاً - ايك د فعه اكثر عال س لامين أ

ك تناب الزاج معرَّد و من م كان عرل اذاستعلى رجلا الشهد عليه وهطا مر كالمضائر

ك كتاب الخراج معنى ٢٦- سل فترح البلدان مفيه ٢٥ من م كان عمرين الحنظاب يكتب موال عالمه

اذاولاهموشريقاسمهوماتل دعل داك

بتلا ہوئے فالد بن صعق نے اشعار کے ذریعے سے حصرت عمر کو اسکی اطلاع دی حضرت عمر کو اسکی اطلاع دی حضرت عمر نے سب کی موجودات کا جائزہ لیکر آدھا آدھا مال ٹبالیا اور مبت المال میں داخل کردیا۔ اشعارین سے جند شعر تی ہیں۔ رسمین اُن عاملون کے نام جبنی ہیں۔ رسمین اُن عاملون کے نام جبنی ہیں۔ سے بتنائے ہیں۔

فانت المين الله في الما المالام بسبغور مال الله في الاد عرالوفر وارسل لي جرع وارسل الما بنتي ولا ابن غلاب من سراة بني ضر وذاك اللذى في الموق مولى بي فقد كان في المل لرسايت ذاذكي فائي له عروفر م ولسنا اولى وفي مزالسك را حضي مفارقهم وجري ابلغ امير المؤمنين دسالة فلات المناه المالي المرسانية والعرب فلات المرسانية والعرب فالمرسانية والمرسل المالي النافعين كليه ما وماعام منها بصغى عياب وشبلا فسله المال وابن عمق نووب اذا ابواونغن واذا عن والمناحل المال دى جاء بغارة اذا لتاجل لا دى جاء بغارة

تام عال كومكم تفاكر مرسال تج كزما سنين عاصر بون ، ج كى تقريب سے
تام اطراف ك بوگ موجود بوت تق حصرت تم كھڑے موكر با علان كت تقريب سے
كسى كوكسى عامل سے كِم شكايت بومين كرت - جنائي فررا وراسى شكايتين بيتن بوتي تين الله الله الله على مال سے كِم شكايت موسيرته ان يا خدن عالمه بموافاة الج فى كل سنة
للسياسة وليج هـورن لك عن المجية وليكون فتكاة الرعية و تقاو غاية بينمونما فيه البيه س

زا نُرْجِ مِن کام حللون کامسیکی

ر تحقیقات موکرا کیا خارک کیا جا آ تھا۔ ایک و فعہ حضرت عمرے بہت بڑا محبع کرکیے خطبه دیا اور کها کهصاحبوا عَمال حوِمقرَ رکزے بیسجے جائے ہیں اس سے نہین میجو جائے ا مكوطائح ارين يا تمعا را مان هيين لين ، بلكه من الكواس سنح بييمتا مون كه رسول التعر صلعم كاطريقية سكھا يَن سُواگر سي عالى نے اسكے فلات كيا بو تو مُجَبِ بيان كرو آكمين اُسکا اُتقام لون ''غروبن العاص نے جومصر کے گورز مختے اُٹھا کہا کہ رواگر کوئی عامل اوب دینے کے لئے کسی کو ا ریگات بھی آپ اسکوسٹرا دیگے ؟ حضرت عم نے کہا اُس خدا

کی متر جیکے ات مین میری جان ہے صرو مین منرا د ذکا کیڈ کڈین نے خود رسول متر كواليباكرت ويكماب خبردا رُسلما نون كونه ما راكر دورنه وه دُسل موحا يَمنُك ، أسبكم حقوق لف نكرو درنه وه كفران نمت يزمبور توگه عليه ا

ايك دفعةسب ممول تمامً عَمَالَ حاضر سختے ايشخص آلما اورکها که آيکے عالی نے مجھکو بے قصور سوکوڑے ا رہے ہیں ، حضرت عمرنے ستنیت کو حکم دیا کہ وہن مجمع عام مین عامل کونٹاوکوڑے لگائے ، عمرو بن العاص نے کھیے ہوکرکہا کہ یا مُرَعّال رگزان ہوگا ، حضرت عربے فرمایا «لیکن ینہین ہوسکتا کمین ملزم سے اتتقام نہ لون "ع<u> و</u> بن العاص نے منت کر کے متعیت کواس شرط پر راضی کیا کہ ایک کیت از اینے کے عوض مین دنو درُوا شرقی لیکراینے حق سے بازائے "۔

وَقَانُوْمَا عَالِ كَي جِنْ كَاتِينِ مِينَ مِنْ وَيَهْمِينِ الْكَرْتِحْقِيقًا تَ كَے لِئے الكظاص

ك تاب الزاج منفي ١٠- على كتاب الخراج سفي ٢٠-

عهده قائم کیاجسپرمحمرین سلمة الضاری امور تقی بیبزرگ اکا برصحاییمن سے تحقے تما غزوات مین رسول ایندیکے ہمرکاب رہے تنفے۔ایک دفعہ رسول اینتراکی مهم ریشرلین ے گئے توان کورینے میں اینا مائے مقرر کرتے گئے ،ان وجوہ سے حضرت عمر نے ایسے بڑے کام کے لئے انہی کواتنیا ب کیا ،حب کسی عامل کی شکایت آتی تھی تو پیچھی تھات پر مامور ہوتے تھتے اور موقع پر جاکر محامع عامّہ مین لوگون کا اخلار لیتے تھے سے ساتھ میں سعد و قاص ٔ جفون سنے قا دسیہ کی مهم سر کی متی اور کوفہ سے گور نرستھے ان کی نتبت لوگون نے حضرت <del>قر</del>کے یاس جاکر شکایت کی <sup>،</sup> یہ وہ وقت تھاکرا پرانیون نے بڑے زور شورے اڑا ئی کی طیّا راین کی تقین اورلاکھ ڈیڑھ لا کھ فوج لیگر نہا وندکے قریب آپینچے سمتے مسلما نون کوسخت ترو دتھا اوراً کے مقابلے کے لئے کوفہ سے نومین روا نہ ہوری تقیین ،عین اسی عالت بن به لوگ بهنچ. حضرت عمر نے فرما یا که اگرچیه به نهایت نگ ور نیخطروقت ہے اہم يترو دمجهكو سعدوقاص كي تحقيقات سينين روك سكتا- اسي وقت محدبن سلمه كوكو فه روانه لیا اُمغون سے **کوفہ کی ایک ایک سبح**رین جا کر لوگون کے ا**نلیا ر**یئے او <del>رسورین و قاص ک</del>م سائق ليكر مرسيني من آئے بيان مفرت عرفے خود أكا افها ركياً -

مله اسدانها برزاره محرب المين بروهوكان صاحب العال الماه عمر كان عمر إذا الشكل لميد عاطل سل الكيشف المحال وهوا لذى الميل عمل على الماضل الماضل المعال وهوا لذى الميل عمل على الماضل المعال وهوا لذى الميل عمل على الماضل المعالم المعا

كميش

تبعن اوقات كميشن كے طور رحینداً دمی تحقیقات کے لئے بھیجے جاتے تنفی خیالخ إس فتم کے متعد دوا قعات اریخون مین نرکو رہیں۔ بعض اوقات ابتدائے عامل کو مریثیہ مين ُ بلاكررا ه رست تحقيقات كرتے مصے اور بيا كثراً سونت ہوّا تھا حب عامل، صوبم کا حاکم یامعززا فسرہوتا تھا جنانچہ ابوموسی اشعری جو بصرہ کے گورزیتھے انکی سبت حب نسكايت گذري توحفرت عرف سيغث كابيان خوداني بات سے فلمبند كيااؤ ا بوموسیٰ کواپنے حضورمین کبواکر تحقیقات کی- الزامات پیسکتے کوانوموسیٰ نے اسراخیک مین سے ۶۰ رمئیں زاد سے چھا نٹ کراینے سئے رکھے ہیں ، آنکی ایک نونڈی ہے جبکو و ونون وقت نهایت عمرہ غذا ہم *ہینیا نئ جاتی ہے حالا نک*وا س مشم کی غذا عام سلمانو<sup>ن</sup> لومتیرندین اسکتی-کارّ و بارحکومت ، ز**باد بن سمیته** کوسیرد کررکها ہے ۱ و روہی سا<sub>ی</sub>ہ وسیبید کا الک ہے ، تحقیقات سے بیلاا لزام غلط ثابت ہوا ، ٹیسرے الزام کا ابوموسی نے یہ حواب ویاکہ زباد سیاست و تدہیرکا آ دمی ہے اس نئے مین نے اُسکوانیامشیرنارکھا ہے ، حضرت عمرنے زیاد کوطلب کیا اورامتمان پیا توحقیقت میں قابل آدمی تھا اِس لئے خود بصرہ کے مُحکّم کو ہرایت کی کہ زیاد کومشیر کا رنبا مین، دوسرا ازام مین ہوا تواہو ہوگا کے حواب نہ دے سکے بنا یخہ لونٹری اُن سے حمیین لی گئے۔ عاہلون کی خطا وُن پر مخت گرفت کی جاتی تھتی خصوصاً این باتون پرحین سے تر قنع اور امتيازيا منود و مخزنا بت هوّا تفاسخت مواخذه كيا جا التفايس عامل كي نسبت البت تواتع

کر بماری عیا دت منین کرا یا کمزوراً سکے دربامین بارنبین یا اوہ نوراً موقوت کروپاچا اتھا '' ایک د فغہ حصرت عمر بازار مین بھررہے تھے ایک طرف سے آوازاً ٹی کہ عمر اکیا عالمون کے لئے چند قوا عدکے مقرر کرنے سے تم عذا بِ اکبی سنے بج جا دُگے ، تکویہ خبرہے کہ عیا من بن عنم جرمصر کا عامل ہے، باریک کیرے بہنتا ہے اور اُسکے دروازے پر دربان مقررہے، ح<del>فزت عر</del>نے محدین سلم کو بلایا اور کہا کہ عیامت کومیں عالت میں باؤساتھ لوالاؤمحمر من سلمهنے وہان بینچا د کھھا تو واقعی در وا بیے پر دربان تھا ا و عیاص <sup>آ</sup> با یک کیرے کا کرتہ بہنے میٹے تھے اسی ہلیت اور لباس مین ساتھ کے کرمرینے آئے حضرت عمرف وه كرته اترواكر بالون كاكرته مينا إاور مكربوين كاليك كله منگوا كرحكم و يا كفيگل مين ایجاکر جرا ؤ ، عیافت کوا کا رکی تومبال نامتی گرایا رکتے تھے کو سے مرط استرہے' حضرت عرنے فرا یا تجھکواس سے مارکیون ہے تیرے باپ کا ام عمراسی وجہسے ایرا تماکه ده کر این جرا ما تھا۔ نومن عیاص نے دل سے تو بکی اور جب تک زنمہ ہ رہے اپنے فرانفن نہایت خربی سے انجام دیتے رہے۔ مصرت سعد وقاص نے کو فہ مین اینے لئے ایک محل بنوایا تھاجسیر دبورھی بھی بھی، حصرت عمرف اس خیال سے کواس سے اہل ماجت کور کا ؤ ہوگا محمد من لمہ کو ا مورکیا کہ جا کرڈیوڑھی مین اگ اگا دین جنا بخیراس حکم کی بوری تقبیل ہوئی ا وسعد وَّفَاصْ يُسِكِّيهِ دِكُوما كُرُّ-

ك كتاب الخزاج معنية ٢٦ - على كتاب الحزاج معفور ٢٠ -

اس متم کی باتمین اگرچه بغلامرفا بل اعتراص مین کیونکه لوگون کے طرز معا شرت واتی افغال سے تعر*فن کرنا اصول آزادی کے خلا*ت ہے، لیکن حقیقت یہ ہے کہ حضرت عمر<sup>ہ</sup> تمام ملک مین مساوات او ترمبورت کی جوروح بھونکتی جا ہتے تھتے و مبغیراسکے مکن نہھی که و ه خود ا درانکے دست و با زونعنی ارکان سلطنت اس رنگ مین ڈوبے نظراً پئن ،عام آ دمیون کوامتیا ہے جوچاہین کرین، انکے افغال کا اثریھی انہی تک محدود رہیگا، لیکر جولوگ ملطنت کے ارکان میں <sup>ا</sup> ایکے طرز معاشرت کا متبا زہونا لوگون سکے دلون میں اپنی خفارت کاخیال پیدا کرتاہے اور رفتہ رفتہ اسِ فتم کی باتون سے سلطنت شخصی کی وه تا محضوصیتین سپدا ہوجا تی ہن جسکے میعنی ہن کہ اکتشخص آقا اور ابتی تام لوگ غلام ہین ، اِسکے علا وہ جوشخص <del>عرب</del> کی فطرت سے دا قعت ہے وہ بآسانی سم *سکاہے* اراس قتم کی اجمین ، پولٹیکل مصالح سے خالی زنھین ، مساواتوا ورعدم ترجیح حبکوا حجل کی اصطلاح مین سوشیارم کتے ہین عرب کا اصلی مزاق ہے اور عرب میں جبلطنت اس اصول پرتا مُرَّہوگی وہ یقیناً برنسبت اور پرشم کی سلطنت کے زیادہ کامیاب ہوگی، یهی دجہ کے بیا حکام زیادہ ترعب کی آبادیون میں محدود تھے۔ ورز-امیرمعاویہ ، ا شام مین بڑے سروسا مان سے رہنتے تھتے اور حضرت عُمران سے کھھ تعرُّفن نسر کرتے سعق شام کے سفرمین صفرت عرف انکے ضدم وحتم کو دکھیکر استعدر کہااکسرہ اپنے ایمنی به نوشیروانی جاه و ملال کسیا ؟ گرجب انفون سنے جواب دیا کہ بہان رومیون سے سابعة رہتاہے اورانکی نظیمن بغیرائے سلطنت کا رعب وداب نبین قائم رہ سکتا تو

مضرت عرفے بیر تعرض منین کیا۔

عال کی دیانت اور استبازی کے قائم رکھنے کے لئے نهایت عمدہ اصول یہ اختیار کیا تھا کہ نخواہین بیش قرار تقرر کی تقیین - پورپ کئے مرتون کے بجر ہے کے بعدیہ اصول کیا تھا کہ نخواہین بیش قرار تقرر کی تقیین - پورپ کئے مرتون کے بجر ہے کے بعدیہ اصول کیکھا ہے اورا بشیائی سلطنتین تواب تک اس را زکوندین جمعیں جیبکی وجہ سے رشوت اور غبن ایشائی سلطنتون کا خاصہ ہوگیا ہے ، حصرت عمر کے زمانے مین اگر حبر معاشرت نہاتے ارزان اور روبیہ گران تھا تا ہم نخواہین علی قدر مراتب عمر تا بیش قرار تقیین صوبہ دارون کی خخوا ہ پہنچ بزار تک ہوتی تھی او خنمیت کی تقسیم سے جو بلتا تھا وہ الگ خیا بخدا میموادیم

اب ہم تمالان فاروتی کی ایک اجالی فہرست درج کرتے ہیں جسسے اندازہ ہوگا کہ عضرت تھرنے حکومت کی کل مین کس فتھر کے مُرزے استعمال کئے متھے۔

ابر عبیدہ شام امرات عدرہ کی اور عبیدہ شام امرات عدرہ اللہ مشہورہ میں داخل ہیں۔
ابر عبیدہ شام والی مشہورہ بین داخل ہیں۔
ایر دین ابی سفیان سے اس میں ابی وقائل کو فد اس میں اس میں اس میں اس میں ابی وقائل کو فد اس میں اس میں ابی وقائل کو فد اس میں اس

ك استيماب قامني بن عبدالبراورازالة الخفار علد دوم صفير اله-

كى نخوا ە ښراردىيار اېموارىينى يا بخ ښرار روپيے تقى -

الفاروق حقيروم مقام مامت عهب ده عتبه بن عزوان مهاجرین مین سے مین - بصرہ انھی نے آباد کرایا۔ بصره الدموسي استعرى مشهور طبيل القدر صحابي بين-كمعطمه المحفزتُ نے اکو کمۃ مغطمہ کا عامل مقرر کیا تھا۔ عاب بن سيد أفغ برعبدالحارث ففنلاي صحابه مين سيه بين-ابوتهل کے هیتھے اور مغزر شخص کتے۔ خالدين العاس أتخضرت كوميرب زراد يجيلا توطالف كوركؤ نكوابفي إعقاما عمان برايي العاس طالعت صحاببن سيستقياه زنياتني من شهرت عام ركھتے تقے۔ الميمن تعلی بن امی**ب** رِّب صاحب رمعت الخفرتُ نے اِلْمُوسِي كا عام حركِ اتعا علاربن لحضري تغسسان مراين اصاحب نواح عَمَّان بنِينِينَ المُلْاعِ فِراتُ الْمُسْتِرِبُودِ: حسابُ كَمَا بِ وربِايينِ كَحَ كام مِنِهَا بِينَا هريق والى جزيره المنى كن فتح كيا-0/7. عياصن بن عنم حضرت عمرانکی نهایت غزت کرتے تھے۔ ممص مسبرت عسد مشهور معابی اور آنفنرت کے راز دار تھے۔ مذيفيتر بناليان مراين برس فانران کے آدمی تقے۔ تانغ بنء بدالحاث خالدین حرث بهانی | صغهان | استرزانه ا کا برصحا بیمن مین۔ سمرة بن مندب اسوق الأماوز

نراج کا طریقیہ ،ب مین حضرت مین حضرت

مقام ماميوت صحابين سصاقل انمي كوورانت كامال للا-ميان نعان بن عدی موسل اکشنرالگزای موصل مین اتھی نے فوجی چھا وُنی بنوائی۔ عرفخه بن مراثه صيغة محاصل خراج كانظم ونسق، عرب كى ماردىخ تدّن مين ايك نيا اصّا فه تما ، اسلام سے بيلے اگرچہ عرب کے مختلف فا ندان، ای وتحنت کے مالک بوئے جنمون نے سلطنت کے تمام کاروبار قائم کردیئے تھے،لیکن محاصل کا باقا عدہ انتظام بالکل موجود نہ تھا۔اسلام کے آغاز میں اس قدر ہوا کہ جب حبیبر منتج ہوا تو تہو دیون نے درخواست کی کہ زراعت کا کام ہم اچھا جانتے بین ایسلئے زمین مارے ہی ضفے مین حیوٹر دی جائے ۔ جناب رسول اسٹرنے آئمی درخو است منظور کرلی اور ٹبائی برمعالمہ ہوگیا۔ اِسکے سوا۔ جن مقا مات کے اِنسندے ىپەسلمان بوڭئے تھے اُنکی زمین پرنگشر نفرّر کرد ایجرا یک شیم کی زکواہ تھی۔حضرت ابو مکر کے عہدمین عراق کے کھُرحِقتے فتح ہوئے لیکن خراج وغیرد کاکچھ انتظام نہوا بلکہ سرسری طور پر کچھ رقم مقرر کردی گئے۔ <u> مصرت عمر کو حب جنگی منهات کی طرف سے فی انجله اطینیان موا یعنی سلستهٔ مین او حر</u> عراق عرب پر بورا بتضنه ہوگیا او رائس مارف یرموک کی نمتے سنے رومیونکی نوت کا ہتھال اردیا۔ تو <u>حصرت عر</u>نے خراج کے نظم ونسق کی **مرت** توجہ کی -اس مر<u>صلے می</u>ن ہلی نٹیکا پیش

آئی که امراے فوج نے اصرا رکیا کہ تام مفتو حد مقالات صلهٔ فتح کے طور پرا کی جا گیرمین عنایت کئے جابیّن ، اور باشندون کُوانکی غلامی مین دیدیا جائے <del>صرت عمرت ع</del>را ق کے نتج کے ساتھ سعد بن وقاص کو وہان کی مردم شاری کے لئے نکر دیا تھا۔ سعدتے نہا جا بنج کے سائقہ مردم شماری کا کا غذمرتب رہے بھیجا۔ کل باشنہ ون اور رہل فوج کی تعدا د کا موازنہ کیا گیا توا یک ایک سلمان کے حصنے مین میں تین آ دمی پڑتے تھے۔ اُسی وقت حضرت عمرکی را سے قائم ہومکی تھتی کزرمین باشندون کے قبضے مین رہنے دمی دبائے اور أنكوم طرح برآزا وحيورويا عائب الكن اكا برصحابه مين سے عبدالرحمن بن عوف وغيرہ ال فوج کے ہمزان تھے۔حضرت بلال نے اس قدر کد کی کہ حضرت عویمنے وق ہو کر فرما ال اللهيَّ وَاكْفَنَى بِالْأَكُمْ مِينَى اسے خدام مجاو ملال سے نجات دے "حضرت عمر ما تالل بہین کرتے ہے ک*و اگر مالک مفتوحہ، فزج کو تقییم کر دیے جا* مین تواً یندہ افواج کی طیاری ا بیرونی حلون کی حفاظت، - کمک کے امن وامان، قائم رکھنے کے مصارت کمان سے آئینگے ؟ عبدالرممٰن بن عوت کہتے تھے ک<sup>و د جن</sup>کی ملوارون نے ملک کو فتح کیاہے اُتمنی کو تبضے کا بھی حق ہے۔آینہ وسلین مُغت کیونکر اِسکتی ہین ،۔ چونکہ حضرت عمر کی حکومت کا طریقه قمهوری تعانینی حوفصله مو با تعاکثرت راے پر ہوا تھا، اِس کئے ایک عام احلال ہواجسین تام قدمارمها برین اورا نصارمین سے پانچ قبیلهٔ اوس اور پانچ قبیله نزریج کے سردار ، وکیل کے طور پرشر کی ہوئے ۔ حضرت علی -حضرت غمان- اور طلحہ نے حضر ك طيري ١٧٩٦ ونتوح البلدان صفح ٢٩٦٩ وكتاب الخاج صفيرا ١٠ عل كتاب الخاج صفحية

عمر کی راے سے اتفاق کیا گاہم کوئی فیصلہ نہوسکا کئی دن تک یہ مرحلہ راہ -حضرت عمر لو د**نعتہ قرآنِ مجید کی ایک آیت یا** دائی جواس محبت کے لئے نفس فاطع تھی یعنی لیفتراً آ<del>ج</del> الذِّينَ أَخِرُجُوا مِن دَبَارِهِ وَوَآمُوالِهِ وَالْحِرَالِ اللَّهِ مِن مِن مَن مَن اللَّهِ مِن النَّانِينَ تِجَافُوْامِنْ بَعَالِعُ صلى من عرف يرا سترلال كيا كوفتوحات مِن أينده نسلون كالجميق ہے بیکن اگر فائتین تونسیم کردیا جائے تواسنے والی نسلون کے لئے کچھ اِ تی نہیں رہا، حصنرت عمرنے کھڑے ہوکر نہایت ئرزور تقریر کی اوراس آیت کوا شدلال مین میش کیا تنام ہوگ بُول اُسٹھے کہ ہے شبرآپ کی راہ بالکل صبیح ہے ''-اِس استدلال کی نبایر ہو امسول قائم ہوگیا کہ حومالک فتح کئے جامیئن وہ فوج کے ملک نبین ہین لمکہ مکومت کے مِلَك قرار بالمُنكَّ اورِ تحطیح قابضین كوبیدخل نبین كیا جائمگا اس اُصول کے قرار باسنے کے بعد معزت عمر نے مالک مفتوحہ کے بند وسبت پر توجہ کی-عواق میز کم عرب سے نهایت قریب اور عوبون کے آباد ہو جانے کی وجہ سے ءب

> مان کا ہندوست

عواق منظم کی علی میں سے بہلے اس سے سروری کے آباد ہوجائے کی وجہ سے عوب اور عوبی سے ستر ویج کیا۔ حضرت عمر کا ایک معوبہ بن گیا تھا، سب سے بہلے اس سے ستر ویج کیا۔ حضرت عمر کا ایک بیجی اصول تھا کہ ہر طک کے انتظام میں وہاں کے قدیم رسم وروائ سے وہ بینت ماسل کرتے تھے اوراکٹر حالتوں میں کسی قدراصلاح کے ساتھ قدیم انتظامات کو بحال رکھتے تھے۔ عواق میں استوقت الگراری کا جوطراقیہ جاری تھا یہ تھا کہ ہر شتم کی مزروعہ پر ایک خاص شرح کے لگان مقرر سے جو میں موان میں اوا کئے جاتے تھے۔ یہ طریقہ سب سے بہلے شرح کے لگان مقرر سے جو میں تا وا کئے جاتے تھے۔ یہ طریقہ سب سے بہلے مشرح کے لگان مقرر سے جو میں اوا کے میں کی مقی۔ نوشیواں تک تعین لگان گان

ميغةماصل

مین به اصول ملحوظ رہتا تھا کہ اس پیدا وارکے نصف سے زیادہ نہونے یا نے دیرک<del>ی جسرو</del> رویزت اُسپراضا فه کیا اور**یز درُّرُد**کے زمانے مین اور تعبی مبدلمیان مومکن<sup>۔</sup> -هنر<del>ت عر</del>ُمُّ نے مزیر تحقیقات کے لحاظ سے ہما بیش کا حکم دیا،اس کام کے لئے چونکہ دیانت کے ساته فن مساقة سے داقف ہونا صرورتھا اور عربین اس متم کے فنون اسوقت نك رائج نه تقيم، اس لئے فی الجلہ دِ قت مِین آئی، آخر دو تخص اتناب کئے گئے، عُمان بن صنیف اور صدیفیة بن الیمان، مه دونون بزرگ اکا برصحابیمین سے تھے اورعواق من زا دہ تر رہنے سے اس متم کے کا مون سے دا قعت ہو گئے محقے ،خصوصاً عَمَان بن، صنیعت کواس فن مین پوری مهارت حاصل بھی۔ **قاص**ی ابوپوسف **ص**احب نے *تا* انخراج میں لکھا ہے کہ کھون نے اِس تحقیق ا ورمحت کے ساتھ بیا بیش کی حبر طرح میمتی کیٹرانا یا جا آہے۔حضرت عمرنے پیانیش کا بیا نہ حزد اپنے دستِ مبارک سے طیّار کرکے دیا ،کئی مینے کک بڑے اہمام او جانج کے ساتھ بمایش کا کام جاری را اکّل تیر طول مین ۵ ۴ ۴ میل ا و رعرض مین ۴۰ مونینی کل ۰۰۰۰ سومیل کمتیر تطییرا -ا و رمیار مصحرا او ینهرون کو محیور کرقابل زراعت زمین مین کرورسا طرلا که حربیب کلهری شخاندان شاہی کی جاگیر۔ اُمشکدون کے اوقات - لآَوار تُون - مُفرورون - اور آَعِنون کی حاِ مُاد-و ہنیین جوسٹرکون کی طیاری اور درئتی اور ڈاک کے مصارف کے لئے مخصوص تھین <sup>ہ</sup> ذَريا براور د-خبال - إن تهام زميون كوحفرت عرف خالصة قرار ديكرانكي آمرني حبكي

مك كما بالادايل ذكراول من غيرسنة ساسان وذكرادل من ومنع الخزاج مه

ءوا ق کا کو جب

| اسلامی کوسٹسٹون کے صلے بین جاگیرعطا کی جاتی تھتی توابھٹی زمینون سے کی جاتی تھتی<br>لیکن یہ جاگیہ بن کسی حال بین خراج یا تحشر سے شٹنی نہیں ہوتی تھیں۔ باقی تام زمین<br>قدیم فیضد دارون کو دیدی گئی اور سب زیل لگان مقرر کیا گیا۔<br>گیمون ن جرب بینی پون ب گھیے نیت<br>مور ا درہم سال  | صيغرماس   |                          | العارون حقيه دوس |  |
|---|---|--------------------------|------------------|--|
| سکن به جاگیزن کسی حال بین حزاج یا تحشرسے شنی نهین ہوتی تفین - باتی تام زمین قدیم قبضه دارون کو دیدی گئی اور حسب زبل لگان مقرر کیا گیا - گئیون فن جریب بعنی پون بسی گھنجنب ۲ دریم سال جو بریم سال جو بریم سال دریم سال بیری بریم بریم سال بیری بریم بریم سال بیری بریم سال بیری بریم بریم بریم بریم بریم بریم بریم | تعدا دسالا نہ سٹرلا کھ تھی رفاہ عام کے کامون کے لئے مخصوص کردی کیمجی کھی کسٹی فس کو |                          |                  |  |
| قدیم قبضه داردن کو دیدی گئی اور سب زبل نگان مقرر کیا گیا-<br>گیهون ن جرب بینی پون بب گھیخنت<br>بیمون ن جرب بینی پون بب گھیخنت<br>بیمون اور جم سال<br>بیمون اور جم سال   | ا سلامی کوسششون کے صلے بین جاگیرعطا کی جاتی تھی توابھی زمینون سے کی جاتی تھی ا      |                          |                  |  |
| گيهون ن جرب بيني پون ببي گھنېت ۲ درېم سال<br>جو ۳ درېم سال  | الیکن به جاگیرین کسی حال مین خراج یا تحشر سے شٹنی نہیں ہوتی تھیں۔ باقی تام زمین     |                          |                  |  |
| . وريم سال<br>  | قدیم قبضه دا رون کو دیدی گئی ا ورحسب ِ ذیل نگان مقرّر کیا گیا-                      |                          |                  |  |
| /• -  | ۱ د رنم سال   | ن جرب بین پون بسیاه مخبت | گيهون            |  |
| 1   | ا دریم سال  | "                        | چو.              |  |
| يشكر " ورتم سال   | ۹ درېم سال  | "                        | میشکر            |  |
| رونئ پر مال   | ه درممهال   | "                        | ر و بئ           |  |
| انگور " ادریم سال   | ١٠ د يم سال   | "                        | انگور            |  |
| مخلستان "   | "   | *                        | نخلستان          |  |
| تِن مريم سال  | م و رمم سال   | "                        | -بى<br>-         |  |
| ترکاری مال  | ۴ درېم سال  |                          | ترکاری           |  |

نگان کی مشہیع

معن بعبن بعبن جگرزمین کی بیاقت کے اعتبارے اس شرح مین نفاوت بھی ہوا
مینی گیہون پر نی جریب مہ درم اور جو پر ۲ درم مقرر ہوئے ، اقعا دہ مین پر مشرطه کی قابل
خرراعت ہو در جریب پر ایک درم مقرر ہوا۔ اس طرح کل عواق کا خراج مرکور سائٹر
لاکھ دریم تفیرا۔ چونکہ بیا بیش کے متم متملف لیافت کے متم اس سنے تشخیص جمع میں
بھی فرق رہا تا ہم جان جس قدر جمع مقرر کی گئی اس سے زیادہ مالکان اراصی کے لئے

عسال كاحت داج زمیندار اولطقدار چیور دیاگیا - حفرت عمر کو ذمی رعایا کا اس قدر خیال تھاکد دونون افسرون کو بلا کرکھا کہ ملے سنے تنفیض حمیع میں ختی تونیین کی ؟ غمان نے کہا کہ نبین - بلدا بھی استقدرا در گرنجا نین " کہا تھی است خریو گرنجا نین اور جو لوگ قدیم سے زمیندارا و زبعلقہ دار سے اور جن کو ایرانی زبان میں مرزبان اور دمقان کہتے تھے حضرت عمر نے اکمی حالت اُسی طرح قائم رہنے دی ، اور اُن کے جوا ختیارات اور حقوق تھے سب بجال رکھے ۔

جس خوبی سے بند وسب کیا گیا تھا اُسکا یہ بیتی ہوا کہا وجود ایسکے کہ گان کئیں اور خوبی سے بند وسب کی بیٹوا میں ترقی ہوگئی۔ جنا پخہ بند وسب کے ووسک اہا دہوگئیں اور دفعتہ زراعت کی بیٹوا میں ترقی ہوگئی۔ جنا پخہ بند وسب کے ووسک ہی سال بخراج کی مقداراً کھ کرورسے ، دس کروربیس ہزار درہم کمک پنجگئی۔ سالیا مابعی کہ مرسال حب مابعہ بین اور بھی اضافہ ہوتا گیا ، اسپر بھی حصرت عمر کو یہ احتیا ماممی کہ ہرسال حب عواق کا خراج آتا تھا تو دین تھہ اور معتدا شخاص کو قہ سسے اور اسی قدر بھر آلی عالم الکے اللہ کئے جائے گئے اور حصرت عمر انکوجار دفعہ شرعی قتم دلاتے سے کہ یہ الگزاری کہی ذبی یا میل ان پر ظلم کرکے تو نہیں لی گئی ہیئے۔

الگزاری کہی ذبی یا میل ان پر ظلم کرکے تو نہیں لی گئی ہیئے۔

یعجیب بات ہے کہ حصرت عمر نے اگر حیر نیایت زمی سے خراج مقرر کیا تھا لیکن سے عبیب بات ہے کہ حصرت عمر نے اگر حیر نیایت زمی سے خراج مقرر کیا تھا لیکن سے عبیب بات ہے کہ حصرت عمر نے اگر حیر نیایت نرمی سے خراج مقرر کیا تھا لیکن

برسال گفرای کی نسبت عایا کا افلس ار یا جا ا

أتمرني مين

ك تما بخرد منور ۱۱ - ك آيخ بيتوب منوس ا - ك ترابخ بع منوه و اصر بارت يه - ان عمل لخطاب كان يجبى لعل قد كل المخرج الميه عشرة من اهل الكوفة وعشرة من اهل المبعرة بيشه من المبعرة بيشه من المبعث المدادات بالله انه من طيب ما فيد ظلوسلم و كامعاهل ۱۲

رصول موا زا زُا ابدرُن محمد نعد معاول

حفرت عربن عبدالعزيز فراياكت سفة كدر حجاج يرخدالعنت كرك كبخت كونددن ا کی ایا قت بھی نہ دنیا کی ، عمر بن الخطاب نے عواق کی مالگزاری ۱۰ کورم ۲ لاکھ درم م اولسول لی، زیادت والرور ۱ الاله اور حجاج سے ناوبر دبیر ورمنزاک عرب ، مرکز مر م لا کھر وصول کئے'' امون ارشید کا زا نه عدل وانعیا ت کے لئے مشہورہے لیکن اسکے عهدمین تعبی عواق کے خراج کی تعدا د ہ کرور مہم لاکھ دیم سے تھبی نبین بڑھی۔ جہان کے ہمکومعلوم ہے 'عراق کے سوا حضرت عمر سنے اورکسی صوبے کی بیالیش نبین کرائی بلکه جہان حس متم کا بندونست تھا اور بند ونست کے جو کا غذات پہلے سے طیا رسطے اُنکواسی طرح فائم رکھا، یہان کک کہ دفتری زبان کے نبین میل بعنی سرطرح سلام سے سیلے عواق وایران کا دفتر فارسی مین ، نتام کا رومی مین مصر کا تعلی مین ، تھا حضرت عمرکے عہدمین بھی اُسی طرح رہا۔ خراج کے محکمے مین حس طرح قدیم سے آپی آیونا نی او مطبی الزم من برستور بال رہے۔ ام حضرت عرفے قدیم طریقیاً نظام مین ہمان جو کھی نلطی دکمی اسکی اصلاح کردی جنائے اسکی تفضیل آگے آتی ہے۔ مقترمین فرعون کے زمانے مین جربندونسبت ہواتھا ،ٹالومنیر ربطالمہ ) نے بوتی ہی أَقَائُمُ رَكُمًا اوررومن اميايرمين بهي وي عاري را - فرعون سنع تمام ارامني كي يماييش رائی کقی اورشنیس ممع اور طریقیا واکے مقدم اصول یا قرار دیے ستے۔ سله معمرا ابندان وكرسوا دما

فرای کا دفتر نارسی اور رومی زبان مین محت مصرمین فزعون کے زمانے کے قواعداگذاری

(۱) خراج نقدا ورصل میدا وار دونون طریقے سے وصول کیا جائے۔
 (۲) چندسالون کی پیدا وار کا اوسط نخال کر اُسکے لخافات حمیم شخیص کی جائے۔
 (۳) بند دبست چار سالہ ہو۔

رومیون کا کا امنا فه رومیون نے اپنے عمد حکومت مین اور تمام قاعدے بحال رکھے لیکن یہ نیا وستور مقرّر کیا کہ ہرسال خواج کے علاوہ ،مصر سے نعلّے کی ایک بقدارکتیرای تخت ہے۔ وروا نہ کی جاتی بھی ا و سلطنت کے ہرعموسے مین فوج کی رسدکے لئے بہیں سے غلّہ جا اتھ وِخراج مِن محسوب نبین ہو اتھا۔حفرت عرفے یہ دونون جارانہ قاعدے موقو ف کر دیئے۔ مورب کے مورخون نے لکھا ہے ک<del>ر حضرت عرکے عمدین بھی یہ رہم جاری رہی، جنا بخوقط</del> کے سال مصریعے مرینۂ ننوڑ ہ کوجونما بھیجاگیا اسی اصول کے موافق بھیجاگیا ،، لیکن ماکی نت غلطی اور قیاس بازی ہے ، ہے شبہ عام انقط مین مصر سے غلّہ آیا اور تھریہ ا کمپ رسم قائمُ ہو کر مرتون کک جاری رہی ،لیکن یہ وہی غلّہ تھا جوخر آج سے وصول ہو ا تھا، کوئی نیا خراج باکس نہ تھا چنانچہ علامہ بلا ذری نے فتوح البلدان مین صافت صاف تعیریح کر دی ہے۔ اِس اِت کا بڑا ننبوت یہے کرجب خراج مین صرف نقدی ک ك يرد مني FAVAN BERCHEM ن ايك تا بديخ دان من الاون ك قا دون الكراري بركليمي من والآ من بي كاب سے الله بين الكي إس قاب ك والے الله اس كا بكا يورانام يا PROPRIE TE IMPOT FONCIER LES SONS

PREMIERS CALIFES

حفرت عرنے تدیم طریقے ک اصلاح کی اصلاح طریقہ رہ گیا تو حرمین کے لئے جز علّہ بھیجا جا آ تھا خرید کرکے بھیجا جا تا تھا ، چنا پنجہ اسر مواجہ آ کے عہد حکومت کی نسبت علاً مہ تقرنری نے صاف اسکی تقریح کی ہے۔ حضرت عمرت مرصوب میں فوج کی رسد کے لئے نعلے کے گھٹون کا بھی انتظام کیا تھا لیکن ہجی وہی خراج کا غلہ تھا۔

حضرت عمرنے الگزاری کے وصول کا طریقہ تھی نہایت زم کردیا اور اس لحافات د و نون کمک کے قدیم قاعدون مین فی الجلة رسم کردی مصرایک ایسا کمک ہے جبکی لیدا دار کا مداؤ در ایسے نیل کی طغیا نی ہے اور چونکہ اُسکی طغیا نی کے مدارج میں نہایت اتفا وت ہوتا رہتاہے اس کئے پیدا وار کا کوئی خاص اندازہ ننین ہوسکتا، چندسا بون کے اوسط کا حساب اس مئے مفید ہنین کہ جابل کا شدکا رائے مصارف کی تقسیم اسبی إقاعده نبين كركيت كزختك سالى مين اوسط حساب كے لحاظ سے ٱنحا كام حل سكے۔ ہرطال حضرت عرکے زمانے مین الگزاری کے وصول کا بیطریقیہ تھا کہ حبب الگزاری کی شیطین کھکتی تھیں تو تام برگنہ مات سے رمئیں ٔ اور زمیندار ، اور َوَا ف ،طلب کئے جانے تھتے اور وہ پیدا وار حال کے لحاظ سے کل کلک کے خراج کا ایک تخذیذ ہیش ارتے تھے، ایکے بعد اسی طرح ہر مرضلع اور مرمر ریگنے کا تمنینہ مرتب کیا جا تا تھا جسین مقامی زمیندا ۔ اور کھیا شرکب ہوتے سے - یتخینی رقم ان لوگون کے مشورے سے

مرسرگا نون پر بھیلا دی جاتی۔ پیدا وارجو ہوتی تھتی اسمین سے اوّل کڑھاؤن اور خامون

سله مقریزی ملیدا وّل مفت ۹۰-

مصر فیجیول مالگڑاری کا حریفت مصارت اورسلمانون کی مهانی کاخرج جمال لیاجاً اتھا، باتی جربجیّاتھا اسین سے جمع مُشخصّدادا کی جاتی تھی، ہرگانون پر جو جمبع شخص ہوتی تھی پڑتے سے اسکا ایک جسّدگانون کے بیشندورون سے بھی وصول کیاجاً اٹھا۔

اس طربعت بن اگرچہ ٹری زمت تھی اورگو یا ہرسال نیا بندوست کرنا پڑتا تھا لیکن مصر کے حالات کے لحافلہ سے عدل اورانصا ف کا یہی تعتضا تھا اور مصرتین پیطت بعتبہ تھوڑی سی تبدیلی کے ساتھ ایک مّرت سے معمول تھی تھا۔

لگان کی شرح نی جریب ایک دنیا را و زمین ار دب علّه قرار دی گئی-ا و ربیمع به ه الکھ دیا گیا که اس مقدار رکیمبی اضا فه نهین کیا جائیگا -

اس عدل وانعما ف کے ساتھ مضرت عمرکے زمانے میں جوخواج وسول موتا تھا اُسکی تعدا داکرور ۲۰ لاکھ دینا رکھی جبکے تقریباً باپنج کرور جنیہ لاکھ رئے ہوتے ہیں اُسکی تعدا داکرور کے میصرف جنسے کی رقم بھتی ،خراج اِسکے علاوہ تھا، ابوول علامۂ مقرزی سنے لکھا ہے کہ میصرف جنسے کی رقم بھتی ،خراج اِسکے علاوہ تھا، ابوول

سن کہ سے طربیں سے عِلیا ہے مایا سرت برطیب کی رہی ہوتی ہے کہ طربی ہوتے کما وہ ھا، ابووں بغدا دی سنے بھی اپنے جغرافیے مین قاصنی ابوحازم کاجر قول نقل کیا ہے وہ اسی

کے مطابق ہے، لیکن میرہے نزد کی دونون نے غلطی کی ہے، خود علاّ مُرَمقر نزی

نے لکھا ہے کوروب العاص سے بہلی سال ایک کروردینا روصول کئے

توحفرت عمرنے اس حیال سے کہ تفوقش نے انجی تجھلے سال ۲۰ کرور وصول کئے تھے۔

مل مقرزی نے یہ بوری تعقیل نقل کی ہے دکمیو کاب مزکور صفی ۱۶، علائہ بتاری کی کاب جزافیصنی ۲، ۱۳

سے بھی ایکی تقدیق ہوتی ہے ا

معكاكل

عروبن العاص سے بازیرس کی"۔ یہ سلم ہے کہ مقوفت کے عہدمین جزیمے کا دستور : تقا اس كئے عمروبن العاص كى يرتم الرّحزبيمتى تو مقومش كى رقم سے اسكا تعاليم ارنا بالکل بےمعنی تھا۔ اِکے علاوہ تام مورّ منین نے اور خود مقریزی نے جہانج لج ی حیثیت سے اسلام کے اتعبل اور ابعد زانون کا مقابلہ کیاہے اسی تعداد کا نام ریاہے۔ ببرطال حصزت عمرکے عہدمین حزاج کی مقدار حبان تک پینجی ز مانۂ ما بعد مین تعبی اس حدیک نہیں ہنچی- بنوامیہ اور بنوالعباس کے زمانے مین میں لاکھ ویارسے زیادہ وصول نبین ہوئی۔ ہشام بن عبدالملک نے حب براے ہمام تمام ملک کی اراضیات کی پمیا بیش کرائی جوتمین کرد رفتدان تقیری ، تو ۳۰ لا کھرسے ۴۰ لا کو ہو گئے۔ البتہ حضرت عثمان کے زمانے مین عبداللہ بن سعد گورز مصرف ا کرور بم لا كد دنيار وصول كئ من من الكن حب حضرت عمان نے فخرید عمرین العاص المها كه اب تو أدمنني نے زيادہ و و دھ ديا ، توعمروبن العاص سنے آزا دا مذكه اكدر إن كين يحة بمُوكُا راك اميرمعاويكا زمانه سرقهم كى دنياوى ترقىمين يادگارب إنك عهدمين مصرکے خراج کی تعدا و ۹۰ لا کھ دینا رحقتی۔ فاطمئین کے عہدمین خلیفہ المعزلدین اللہ کے گورنرنے! وجو دیکہ لگان کی مشرح دوگنی کردی تا ہم ۳۴ لا کھ دنیا رہے زمایدہ شام مین اسلام کے عمد تک وہ قانون جاری تھاجوا کی یونانی باوشا ہ سے ہینے

كه دكيونغرزي منورً ٩ مبداول - ملي مجالبان ذكرمعر- مثله ابن وقل ذكرمعر١٠

معرکا فراج بنوامیّہ اور غبا سیسکے زمانسے میں

فنام

تام مالک مِ عَبُوصَدُین قائم کیا تھا، اس سے پیدا دارکے اخلاف کے کا فاسے زبین اسے مُعَلَّف مارج قرارد سے سے اور ہرتسم کی زمین پر جداگا درخرے کے لگان تقریکے سکتے، بہ قافون هیڑی صدی عیسوی کے آغاز میں بینانی زبان سے نتامی زبان مین ترجم کی ایک یا گیا اورا سلام کی فتو مات تک وہی ان تمام مالک مین جاری تھا۔ قراین اوقیا یا سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت عرفے مصر کی طبح بھان بھی وہی قدیم قانون جاری شیخ ویا، حضرت عمر کے مصر کی طبح بھان بھی وہی قدیم قانون جاری شیخ ویا، حضرت عمر کے رائے میں۔ نتام سے جو خراج وصول ہوتا تھا اُسکی کُل مقدا د

عواق، مصرا ورشام کے سوا اور مالک مفتوصینی فارس، کران، آزمینیہ، وعیرہ کے بند وسبت اور شام کے سوا اور مالک مفتوصینی فارس، کران، آزمینیہ، وعیرہ کے بند وسبت اور شخیص حزاج کے حالات ہم بہت کم معلوم کرسکے۔ مقرضین اس کلکون کے حالات متح مین صرف اس قدر تکھتے ہین کہ وہان کے لوگون پر جزیہ اوز برن پر جزاج مقررکیا گیا۔ کمیں کمیں کسی خاص رقم پر جاہدہ ہوگیا ہے تو اُسکی تعداد لکھندی ہے۔ ہوتی اور شیم کی خزئی تعفیلوں سے مہم کی خزئی تعفیلوں سے کہر ہوتی ہا کہ متعلق نبین اِسلئے ہم بھی اُسکی خیدان پر وانہیں کرتے۔

ابستهالیک مقتل کی نگاه اس ابت پر بڑسکتی ہے کہ اِس صبغے میں فوتھات فاروتی کی خاص

ایجادات اور اصلامین کیا ہین اورہم اسی خاص ہیلو پرنگاہ ڈانا چاہتے ہیں۔ سب

طرا انقلاب جو حصرت عمرے اس منیف مین کیا اور مبلی وجہسے رعایا کی بہبودی اور خالی

مل و بجور دنسر رخم فرانیسی کی تماب انون کے قانون الگاری برا

قانون گُرایی من صفت عمر کی مهلامات

ونغتهٔ تنهایت تر فی گرگئی، په تھا که زمینداری اور ملکتت زمین کا جو قدیم فا نون تھا اور بالکل جابرا نه تقامينا ديا روميون سنح بب شام او مصرر قبضه كيا توتام اراضيات الى ابندوا سے جیسن کر کھیے امنسران فوج اور کچیوا را کمین دربارکو دیدین ، کچھ شاہی جاگیر قرار یا مین ، کو کلیسا اور چرچ پر وقف کردی گئین - اصلی اشندون کے بات مین ایک چیہ زمین نجی نہیں ہی۔ وہ صرف کا تنکاری کاحق رکھتے تھے اوراگرالک زمین اُلی کا تنکاری کی ازمین کوکسی کے ہات نتقل کر اتھا توزمین کے ساتھ کا ستکاریمی مقل ہوجائے تھے اخیر اخیرتن با شندون کونمی کمیر زمینداریان ملنے لگین لیکن زمنیداری کی حفاظت او آس متمتع مونے کے گئے ، رومی زمیندارون سے اعانت لینی پڑتی تھی، اس بہانے سے زمیندار مزداس زمین پرمتصرف ہو جاتے محتے اوروہ غریب کا شندکا رکا کا شنکار بجاباتھا؛ یہ طریقیہ کمیے رومی سلطنت کے ساتھ مخصوص نہ تھا بلکہ جہان تک ہمکومعلوم ہے تمام دنیا مین قریب قرمیب بهی طریقیه جاری تھا کزمین کا بہت بڑا جھند،ا فنسران فوج اارکا البت إِي مِا كَيرِينِ ديرِ إِيما التعا-

حفرت عمرے ملک پر نتھنہ کرنے کے ساتھ ، اس ظالمانہ قانون کو مٹا دیا، روی وَاکٹر ملک کے مفتوح ہوتے ہی کل گئے اور جورہ گئے اُسکے تبضے سے بھی زمین کال ای ٹئی۔ حضرت عمرے اُن تمام ارامنیات کوجو شاہی جاگیر تعین یا جن پر رومی افسر قابعن سمتے، باشند کا ن ملک کے حوامے کردین ، اور بجاب اسکے کہ وہ سلمان شرون یا نوجی سردارون کو عنایت کی جاتین قاعدہ نہا دیا کہ سلمان کسی حالت بین این رمینون برقالعن نبین ہوسکتے، بینی الکانِ اراضی کومتریت دے کرخریزا چا مین توخر کیم نبین بکتے اور اللہ بین بروسکتے، بینی الکانِ اراضی کومتریت دے کرخریزا چا مین توخر کیم نبین بیتے ہوتا عدہ ایک مزت تک جاری را جنا کنچہ لیٹ بن سعد نے مصری کچھ زمین مول کی تحق قوبڑے برٹ بیعی نبیتوایا نِ خرہب مثلاً امام مالک ، نافع بن یزید ، بن بیعی نے اُن بیخت اسی براکتفا نبین کیا بلکہ المی جب کوجُوان مالک مین بیسیل گئے تھے زراعت کی ما نعت کردی ، جنا بخی ام فوجی اضرون کے نام احکام بیسیج دیے کہ 'دوگون کے روزیئے مقرر کردیے گئے مین اس سئے کوئی تخص نے مصرمین کچھ بیسیج دیے کہ 'دوگون کے روزیئے مقرر کردیے گئے مین اس سئے کوئی تخص نے مصرمین کچھ کررائے ہوئے اس قدر تنگی سے دیا گیا کہ شرکی خطفی ایک شخص نے مصرمین کچھ کررائے تا کوئیا کو شرکی خطفی ایک شخص نے مصرمین کچھ کررائے تا کوئیا کو سخت کرلی تو مصر تنگی تحقی اور فرما یا کرمین تحقیکو اسی سزا دو فرما یا کرمین تحقیکو اسی سزا دو فرما یا کرمین تحقیکو اسی سزا دو فرما یا کرمین تحقیکو اسی سزا

ان قاعدون سے ایک طرف تو حضرت عمرے اُس عدل دانفہا ن کا مؤنۃ قائم کیا جبکی نظرونیا میں کمیں میں دوجود زختی کیو نکد کسی فائخ قوم نے مفتوحین کے ساتھ کہمی ایسی، عابت منیون برتی بھتی ، دوسری طرف زراعت اور آبادی کواس سے نمایت ترقی ہوئی اسکے کہ اصلی با شند سے جومزت سے اِن کا مون میں جمارت رکھتے تھے عوب کے فا ذہروش کر اُن برا بری نمیون کرسکتے ہتے ، سب سے بڑ حکریے کا بس تمریر نے فتوحات کی وست بر حکریے کا بس تمریر نے فتوحات کی وست میں بڑا کام دیا ، فزا نس کے ایک نمایت لایق مصنف نے کھا ہے کہ اِن بات آلم ہے کہ اسلام کی فتو حات میں خراج اور مالگزاری کے معالمے کو بہت دخل ہے ، روس بیان کا سلام کی فتو حات میں خراج اور مالگزاری کے معالمے کو بہت دخل ہے ، روس بیانت اللہ مذیزی صفرہ وہ وہ میں الحام دمفرہ ہو۔

مین باشندگان ملک کو حوسخت خراج ادا کرنا تیرتا تھا اُسنے مسلما نون کی فتوحا ت کو

نہایت تیزی سے بڑھا یا،مسلما نون کے حلون کا جومقا بلہ کیا گیا وہ اہل ملک کی طاف سے نہ تھا بلکھکومت کی طرن سے تھا <del>،مصمی</del>ن خو<del>ر قنطی</del> کا شتکا رون نے یوا نیون کے برخلات مسلما بون کومدد دی، دشق ، او حمص مین ، عبیبا دی یا شندون مے <del>مرول</del> ائی فوج کے مقابلے میں شہر بنا ہ کے وروازے بند کردیے اور سلما نون سے کہدیا کہ ہم مقاری حکومت کو متبا باء ہے جم رومیون کے بہت را وہ بیند کرتے ہیں '۔ ینمین خیال کرنا چاہئے کہ حضرت عرفے غیر قومون کے ساتھ انصاف کرنے میں اپنی ا اقوم کی حق بلفنی کی بینی انکوز راعت او زفلاحت سے روک دیا ، دخیقت اس سے حصنرت عمر کی بڑی انجام بنی کا نبوت مآہے۔عرب کے صلی جوہربینی دلیری ، بہا دری ،جفاکشی ، ہمت ، عزم ، اسی ق<sup>ومت</sup> کک قائم رہنے جب تک وہ کا تنکا ری ا ورزمینداری سے الگ سے جبن ن مفون سے زمین کو ہاتھ لگایا، اُسی ون تیمام اوصات بھی اُن سے خصت ہوگئے،-اس معاملے مین ایک اور نهایت انصافا نه اصول جوحصرت عمر سے برّایتھا كه بند وبست اورأسك متعلق تمام إمورمين ومتى رعايات جوبايسي إعيساني عتى المهيشة راس طلب كرت سفتے اوران كى معرونيات پر كاظ فراتے تھتے - وا ت كا جب بندواست کرنا جا؛ توہیلے عال کولکھا کہ عاب کے داور مئیون کوہا رہے یاس میمو خیکے ساتھ متر جم بھی ہون ۔ بمالین کا کام داری ہوجکا تو بھردین بڑے ك دىميومقرزى طهداول صفيرم، وه، -

ندوست اگزاری پن زنیون سے ا۔ یہ لیزا

ر میندار عواق سے مبلوائے اور ایکے اطہار میں اس طرح مصر کے انتظام کے وقت وہان کے گورنر کولکھا کہ مقومت سے (جو سیلے مصر کا حاکم تھا) خراج کے · عاملے مین اے لو، إسپرندستی مونی توایک واقعت کا قطبی کورینے مین طلب کیاا و را سکا اظهار کیا ، پیطرتقہ س طرح عدل دانصاف كانهايت على نونه تما إسى طرح أتيفام كي ميثيت سي معي مفيد تما-اِن با تون کے ساتھ اُن اصلاحات کو نمبی شامل کزاچاہنے حسکا بیان جس بندوببت كيمشروع مين كرآئے بين-

بندولست کے ساتھ حصنرت عرفے زمین کی آبادی اورزراعت کی ترقی کی اطر**ت توخبری، عام حکم دیریا که تمام لمک مین ج**هان جهان ا<mark>قیا ده زمینین بین ح</mark>تیخص اِنگوآباد کرے اسکی ملک ہوجائینگی۔لیکن اگر کو ہی شخص اس مشم کی زمین کو آباد کرنے کی عرض اپنے قبضے مین لائے اورمین برس کے اندراً یا د زکرنے توزمین کے قبضے سے کلمائی ا اس طریقے سے اقبا وہ زمینیین نہایت جلد آباد موگئین، حلے کے وقت جہان جہان کی رعایا گھر تھیوٹرکز کل گئی تھی اُنکے لئے اُستہا ردیدیا کہ و اُس اَجا ہے اوراینی رمنون پروامن ہوجاہے ،زراعت کی حفاظت اورترتی کا حضرت عمر کو حوخیال تھا اُسکا اندازہ اِس سے ہوسکتا ہے کہ ایک دفعہ ایشخص نے ان سے اکر شکایت کی کر شام مین سیری کچے زرعت متی- آپ کی فوج اُدُھرسے گذری اوراً سکوبر با دکردیا، حضرت عمرنے اُسی ق<sup>و</sup>ت اُسکو

سله كتاب الخراج منفر ه٧-

مستشقه مغرزي ملدا دل صغرهٔ ۲۰۱۷ و ۵۰۰

د سنل منزار دریم معاو**صنے می**ن دِلوا النے ، تمام ممالک ِمفتوصمین ښرین جاری کین- اور <sub>ا</sub> عُلِيَّاتِي البند إنرهن ، الاب طيّار كراف ، إنى كَ تقسيم كرف ك و إف بناف ، نهرون ك شعبے کا نئے ، اِس متم کے کا مون کا ایک بڑاممکمۃ فائم کیا ، علاَم مقر مزینی نے لکھا ہے كرخاص مقرمين الاكه ٢٠ مزار مزدور روزانه سال عجراس كام مين لگے رہتے تتے اور ية تمام مصارت مبت المال سے اوا کئے مائے تھے۔ خوزشان اور اہوازکے اضلاع امین حزر بن معاویٰہ نے حضرت عمر کی اجازت سے بہت سی بنرین کھُد د<sub>ا</sub>مین خبکی و حبر سے سبت سی اقیا وہ زمینیین آباد موکئین - سی طرح اورسکیڑون نہرین طیار ہومئن خبکا ایته حبته حبته تا ریون مین مآہے۔

خر*ا* جی اور

نوعیت ِ قبعنہ کے لیا ظرسے زمین کی ایک اور تقسیم کی بینی خراجی اور ُعشری خراجی کا بیان اور گذر حکا مُعشری اس زمین کا ام تھا جوسلما نون کے نتینے میں ہوتی تھیں اور

اجبكے ا ضام حسب دیل تھے۔

١١ عرب كي زمين مبك قابضية فالوايل سلام مين سلمان موسّع عقد مثلاً مرنيه منوره وغيره-رہ) جزرمین کسی ومّی کے تبیضے سنے *حل کوسلما نون کے قبصنے مین کی ہمتی مثلاً و*ولا وا**ٹ** مركها الم مفرور بوگيا الا بغاوت كي المتعنا ديريا -

۳۰) جوانقا وہ زمین کسی حیثیت سے کسی کی ملک منیین موتی تعتی ا وراً سکو کوئی مسلما ل اوا

اكرلتها تتما-

مله تهاب الوان سفر ١٠٠ سف مقرزي منور ١٠ جلداول-

ان اقسام کی تمام زمینین عشری کهلاتی تعین اور یونکه سلمانون سے جو کھوایا جا تا تھا وہ زکوٰۃ کی مرمین د اخل تھا'اس لیے اِن زمینون پریجاے خراج کے زکوٰۃ ، تقرر تھی حسكي مقدا را الما يدا واركا، وننوان حصّه موّا تحسّا، به شرح خو و خباب سول الله صلىم ك مقرّر فرما ئی بھی اور دہی حضرت عمر کے عہدمین بھی قائم رہی ، حضرت عمر نے آنا کیا کہ آیران وعیرہ اُی جوزمینین سلما نون کے نبینے مین آمین اگروہ۔ نومیون کی قدم ہنرون پاکنو وُن سے اسیراب موتی تقین، تواکن برخراج تفررکردیا، چنایخداس تنم کی زمینین، عبدالتدین سعو د و الحباب وغيردكي فبضح مين تغيين اورائن سيخراج لياحا آاتحا-اوراگرخوذسلمان نبئ نهرانيلا النوان كفُود كراً سكى أبياشي كرت تقع تواسير رعايٌّ عُشر مقرّ ركيا ما آما تها-سلما نون کے سائمۃ عَشْر کی تفصیص اگر حیو مبلا ہرا کمیصتم کی ناانصافی! قومی جیح معلم بھٹی ہے ایکن فی الواقع ایساندین ہے اولا توسلمانون کوئتا بلہ ذمیون کے بہت سی را نُدَ فِمِينِ اداكُرْنِي يُرِتَى تَقْدِينِ شَلاَ مُوسِنْتِي يرز كُوِّ وَلِمُورُونِ يرز كُوَّ - رُبِي رِز رُوَّ - حا الانكمة اُذِمی ان محصولون سے بالکامتینے تھے ماس **نبا پرخاص زمین کےمعاملے می**ں جونہا یت اقل قلیل سلمانون کے قبضے میناً ئی تھی،ا بہ شیم کی رعایت بالکل تفقیای نصاب تھی د وسرے یہ رُءُ شراکیا ہیں رقم تھی جکسی حالت مین کم یامعا ن نبین ہو کتی تھی، یہان ک المخود فليفه يا با د نتاه معا ف كزا عام تومعات نهين كرسكتا تعا ، بخلات اسكے خراج بن تخفيف ورمعاني دونون جا زعمي، اور وقياً فرقياً اسيرعملد آمريمين ہوا تھا، إسكے علاوہ مله كاب الزاع منفره ١٥ ومنفي ٢٠خراج سال مین صرف ایک دفعه لیا جا ّا تھا بخلاف اسکے تُعشر کا یہ حال تھا کہ سال مین مِتنی فضلین ہوتی تھین سب کی پیدا وارسے الگ الگ <del>ٹیمنٹ</del>روصول کیا ج<mark>ا یا تھا۔</mark> ا ورفتتمر کی آمرنیان

خراج وُعشرکے سوا آمدنی کے جوا ورا قسام تھے وہسب دہل تھے -زکڑہ مُحشواً جزیہ، ال عنیت کامنس - رکوہ مسلمانون کے ساتھ مخصوص بھی اورسلمانون کسی فتهم کی جایدًا دیا آمدنی اس سے شننے ندھی بہان کک کہ بھیڑ، کمری، اونٹ سیمبی پزرگوۃ ىقى، زكوٰ ة كے متعلق تمام احكام، خود جناب رسول اللّٰہ كے عهد من مرتب ہو حكم تقى -کھڑن<sup>ون ب</sup> ح**صنرت عمرکے عہدمین جوا صنا فہ ہوا ؟ یہ تھا کہ تجا رت کے گھوڑون پر رکوہ مقرر ہوئی حالانگھ** التخضريُّ نے گھوڑون کو کو ہے شتنے فرایا تھا۔لیکن اس سے عیا ڈا باللہ یہ نہیں خیال کزا چاہئے کہ حضرت عمر ﷺ نے جناب <sub>سول ا</sub> متد کی مخالفت کی۔ <del>آنحفزت س</del>ے جوا نفا ظ فرمائے تھے ، اُس سے نظام رسواری کے گھوٹیے مغہوم ہوتے ہین اور حضرت عمرنے اسی عنوم کو قائم رکھا ، انحضرت کے وقت مین تجارت کے گھڑے وجو دندیں کھتے تھے۔اس کئے اُنکے زکوٰ قسیمتنٹے مونے کی کوئی وجہنمین تھی، ببرحال زکوٰق کی مر ا مین یہ ایک نئی آمدنی بھی اوراول <del>حصرت عمر بنی کے عہد مین شروع ہوئی بخشور ،</del> خاص حضرت تمركی ایجا دہے جبکی ابتدا یون ہوئی کہ سلمان جوغیر ملکون میں تجارت

کے سے جاتے ملتے اُن سے وال ن کے دستورکے موافق ال تجارت پر فی صدی

١٠ رويئيكس ليا جايًا تقا- ابوموسيٰ اشعرى نے حضرت عمركواس وا فقه سے اطلاع ديُ

<u>حصزت عرفے حکر دیا</u> کہ اِن ملکون کے تاجر جو جارے ملک میں آمین اُن سے جی تقدر محصول لیا جائے مبنیج کے علیہا یئون نے جواس وقت تک اسلام کے محکوم نہیں ا موے مقے خو د حضرت عرکے یا س تحریری د زخواست بیجی کے مکوعشرا داکرنے کی شرط یرعرب مین تجارت کرنے کی اجازت دی جائے ، حصفرت عرفے منظور کرایا ا و بھیزومیو ا ورسلم**ا نون پریمی به قا عده جاری کردیا گیا-البته تعدا دمین نفا دت ربایعین عرب**ون سے فی صدی ۱۰ و تیون سے ویسلانون سے ڈھائی۔ لیا جا اتھا ، نتہ زنتہ حفرت عرفے اتمام مالک مفتوحہ میں یہ قاعدہ جاری کرکے ایکا ایک خاص محکم قائم کردیا ہے ہت بڑی آمدنی ہوگئی' یمحصول خاص تجارت کے مال پرلیاجا آیا تھا اوراسکی درآمد برآمد کی میعا دسال بعرفتی، بعنی نا جرا کیسال حبان جهان چاہے مال بیجائے اُسے دربارہ محصول نبین بیا جآیا تھا، یعبی فاعدہ تھا کہ دوسّو درہم سے کمقیت مال برکو نہین بیا جآیا تھا حفرت عرف محصِلون کو بہی ناکیدردی تھی کو کھیلی ہوئی چیزون سے عُشر کیا جا ہے یغنی کی اسباب تلاشی نرکی جائے جزیر کے شعلق پوری تفصیل آگے آئی۔

## صيغهٔ عدالت

یه صنعه بمی اسلام مین، حضرت عمری بردات وجود مین آیا ترقی تمژُن کا ببلادیا به سب که صنعهٔ عدالت ، اتفامی صنع سے علیٰ وقائم کیا جاسئے ، دنیا مین حبان حبان مکومت وسلطنت کے سلسلے قائم ہوئے کر تون کے بعدان دونون صیغون میں نفریق موئی کیکن حضرت عمرنے خلافت کے جندی روز بعدا بس مسنعے کوالگ کردیا ، حضرت ابوکر

کے زمانے کے خودخلیفۂ وقت اورا دنسران ملکی قضا کا کام مجی کرتے تھے۔ حصرت عمرا نے بھی ابتدامین یہ رواج قائم رکھا اورا پیا کرنا صرورتھا۔ حکومت کا نظرونسق حیت ک ا کامل نهین ہولتیا۔ برصفے کا اجرا رُعب ودا ب کامتماج رتباہے۔ اس کی فصل قضایا کا کام وتبحض انجام نهین دے سکتا جبکوفصل مضایا کے سوا اورکوئی اختیار نہویہی وحیا تقی کہ حنبت عمرنے ابوموسی اشعری کولکھا کہ چیخص بااثرا و ماحب فِطمت نہو، قاضی انم تقرر کیاجائے ، ملکاسی نبایر عبد الله ین مسعود کوفصل فضایا سے روک دیا۔ يكن جب أتظام كاسكة احتى طرح ثم كيا توحضرت عمرنے قضا كاصيغه إلكل الگ أرد يا و زمام ، صلاع مين عدالتين قائم كين ، اور قاصني مقرر كيُّ ارسك ساته قضاك العول وآمين برايك فرمان لكها جوا بوموسى اشعرى گورنر كوفدك نام تها اوجس مين صیغه عدالت کے تام اصولی احکام درج تھے۔ہم اُسکوبعینہ اس مقام پرتقل کرتے ا بین ۔ رونون امیا پرکے دوازو ہ گانہ تواعد جو رومیون کے برسے مفاخر خیال کہ جاتے ہن سلمه أنبا إلقمااة محدين غلت الوكمع

سکه اس فرمان و ملامه ابوانحق شیرازی شه مبتعات الفقها چین او رعلهٔ مه جیقی و ماوروی و جاحظ و دین مبدریه ا دورجت سے تحدیثین و موزمنین شد فقل کیا ہے ۔

سل سفی تبارسی برزن امبایر نے بیزان مین سفرا میں کو ان قانون کی تعلیم ما مس کرکے آئین او بلانت کے گئے اللہ منت کے گئے اور وان سے واپس اکرا کیا دستورا معل ملیا رکیا جسین اُڑو، مورا تعلا می پر البیات واپس اکرا کیا دستورا معل ملیا رکیا جسین اُڑو، مورا تعلا می پر البیات واپس اگرا کیا ۔ دومن امبا کرکا وہی شاہی تعانون اُ

اوجنگی منبت سیسرو، وقم کامشهو لکچرا لکعتا ہے کہ یتوانین، تام فلا سفرون کی تعینفات سے طرحکر مین وہ بھی ہما ہے سامنے ہیں، اِن دونون کا مواز نہ کرکے شخص فیصا، کرسکتا ہے کردونون مین سے تمزن کے وہنے اصول کاکس مین زیادہ پتد لگتا ہے۔

رومن میار کے توب عدالت القيّمة حالمتيه صفيّة (و ٩) انين عيغة نقفاك متفلّق جواحكام عقّه ره مب ذيل بن -

﴿ ١ م بب تم ملاستنين هاب كنے جاؤتو فوراً فریق مقدر سے ساتھ عاصر ہو۔

- ( ١١٠ ) أردما عليه الخارزية توقركوا ونيش كرو آكه وه جبرا حا حزكها عاست
  - (معل) مرعا عليه جا كنا ما ب توقع ملكو يُرْسكت مو-
- (۱۴) دعریانی اوبرها بوتوم اسکوسواری دو درنه تسییما منری کیلیت جبرنبین کیا جا سکتا -
  - ( ١٥ ) هرما عليه منا من نبشي كرسته توتم اسكومعوره و-
    - ( 🔫 ) دولتمند كا منامن ولتمند ببونا جائشے -
  - ( 🗲 ) بني يُو دَنقِين كِ آنفاق سے فيليارُ ، جا ہيئے .
    - الم الم الم المنتاك وبية بك تقرمات كا-
  - ( 🍎 ) فیصله ۱ و پیرک بعد فرتیس کی ما حزی مین ہوگا -
    - (۱۰) مغرب کے بعد عدالت بندرہے گی۔
  - ( ١١) فربقين الزَّاك بيش كرَّا فإبن تراُّ كومنا من : يَا عِيتُ -
- (١٦) جينفص لو ونيين جيني كرسكتا- مرعا عليدك دروانيت برو عوب كوم كاركزك -

ية قواعد مين حبكوا دِ كرك يورب ، رومن اجباريز، زكرانه -

## صرت عرکا فران بعبارتها ذیل مین درج ہے۔

امابعل فات الفضاء فربصة عَكمة وسنة مناك تربيك بديو فعثا ايك مزدري زمز ب وري المراج منبعة اس بان الناس في والجماك و الخصورين، الخيس بن، الخالف من برابر كمو عبلسك وعد لك حتى لا بالسرالضيعة ألكم فرد، الفات ويوس نو، اورودار كونتمارى من عدلك ولا يطمع التنريف فحيفك أردرعات ك أميد نهيدا مو، تبتنص دعرت أسير البنية على من ادعى واليميين على الكل إرتبرت و ادر جر تفض سُكر بواسس رِفَتَمر-والصلح جابزًا لاصلح الحل حراما اوحم التي ما يزب بشريكه أس عرام، ملال- اورمال مرام حلالا كالمنعك قضاء فضية بالامس انون إن كُلُ الرم ن كون فيداكيا تواج عورك بدأس فراجعت فيه نفنسك ان ترجع إلى لحن- إروع ربئة و حبن سله من شهد بوا وروان ومديث من سكا الفه إلفهم فيم ايختلج في صدرك ممالم اذرة بوتواسر فور زوا وريم فركرو- ادراس ي يبلغا في الكتاب السنة واعرف الامثال منابن ورنغرون برخال كرد، بهرتياس لكا و- تبر والانشاه نعرقس كامورعندذلك والتغس ببش رزا عاب أسكك ايد ميعاد تقرر اجعل فن ادعى ببنية امل اينهي الميه الروس آروه ثبرت وت تراسكا من ولاؤر ورزيقة بم فان احضربينية أخلات له بخفه وكلا أنابع-ملمان سبنة بن إستثنا عان انتفام وجمت القضاء عليه- والسيلون على ول الع من كومدى سزامن رراع اللات كات كان مون-مض معلى بعض كالمعين وافي حياوي العنون نے مبوق اوا من دى بور يا ولا اور وراثت

في شهادة دويرا وطنيافي ولاهم اووراتة - اين شرك مون-

قوا عدعدا كے متعلق مغرت ممرک

اس فران مین قعناکے متعلق جو قانونی احکام مرکور ہین حسب زیل ہیں۔ (۱) قامنی کوعدالتا نہ حیثت سے تام لوگون کے ساتھ یکسان بڑا ڈکڑا چاہئے۔

( ۴ ) بازموت عمواً مدعی رہے۔

(۳۰) معاعلیداگسی شم کا نبوت یا شها دت نبین رکها تواسسے مشم بیجا نگلی۔

(۱۲) فریقین برطالت مین صلح کرسکتے ہین لیکن جوا مرخلا نب قا نون بئے ہیں صلح نبین بڑی ہے۔

( ٥ ) قاضى فروايني مرصني سے مقدر كے نصيل كرنيكے بعد اسين نفرتاني كرسكتا ہے-

( ٩ ) مقدمه کی بیثی کی ایک تا ریخ معیّن ہونی چاہئے۔

( ٤ ) آیخ معینه براگرمه عاعلیه ندحا ضرموتو مقدمه کیطرفه نیصل کیا جا نیگا-

( ~ ) ہزسلمان قابلِ دای شہادت ہے لیکن حَبْحض سزایا فتہ ہوا جسکا جعوثی گوہی .

دنیا ٔ ابت ہورہ قابلِ شہارت نہیں۔

صیغهٔ تصنا کی عمر گی مینی فضلِ خصومات مین پورا عدل وانضاف تین با تون بر و تون ہے۔

١) عروا وركمل قانون حبك مطابق فيصلي عل من أينن-

(٢) قابل اورمتديّن حكام كا اتنجاب-

ر۱۳) وه اصول ا وراً مینن خبکی و جهسے محکام رشوت اورویگرنا جائز وسائل سے سبب

معضل خصوات من رُورعایت نکرنے پامین-

رہم) آبا وی کے لحاظ سے قصا قرکی بقدا دکا کا فی ہونا آباکہ مقدمات کے انفیصال میں

امرح نہ ہونے یائے۔

المخيرًالك-

حضرت غمرنے اِن تمام اُمور کا اِس خوبی سے انتظام کیا کہ اسسے بڑھ کرندین ہوسکتا تھا۔ قانون کے بنانے کی توکوئی صرورت نہتی ، اسلام کاملی قانون فرال تا موجود تقا، البته جونكه المبينُ خرِئيات كا إحاطه نبين اس لئے فَدَيثِ وأجاع وَ"يا س ے مرد لینے کی صرورت متی <u>- صنرت عرف تصا</u>قہ کو خاص طور پراسکی مرایت لکھی ا | |افاصنی شریح کوایک فرمان مین لکھا کہ مقدمات مین اول قرآن مجید سے مطابق فیصلہ ارو ّ قرآن مین و هصورت ندکور نه مبوه تومدیث ا ورمدیث نهوتوا جاع (کیژت رای) كےمطابق اوكہين يته نه لكے توخود اجتها دكرو -

تحضرت عمرنے اسی پراکنفانہین کیا، بلکہ مہینہ وقتاً فوقاً محکام عدالت کونشکل وا مهرمسائل كے تعلق فتا وے لکھ لکھا بھیتے رہتے تھے۔ آج اگراُ ککو ترتبیب دیا جائے ملے نہ البال منفی میں املد موسمندلاری میں بھی یر فران تقریب سے اخلات کے سائم فرادر ہے، مِنَا يَوْ أَسُلُى اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَن شَرِيجِ إِن عَم بِن الْخِطَّابِ كُنْبِ اللَّهِ النَّا عَلَى الْخ تناب الله فاقض به فان جاء كماليس في كتاب الله فانظر سنة رسول الله فافض بما فان جاءك ماليس في كتاب الله ولويكن في سنة رسول لله ولم يتكلمونه احد قبلك فاختراى الهمرين شيئت ان شيئت ان يختمد برايك شوتقده وقتقدم وان شيئت تتاخل فتأخر والااسى التأخر

ترایک مختصرمجبوعهٔ قانون بن سکتا ہے لیکن نم اس موقع پران کا استقصا نہین کرسکتے ، اگر کوئی چاہے توکنزالعال اورازا تہ انحفا وغیرہ سے کرسکتا ہے۔اجبا را لقضا قرمین بنج عدد نتا وی مٰدکور بین۔

تعنا ذکا انخا ب تحصّا قد کے انخاب میں جواحتیا ط اور کمتہ سنجی کی گئی اُسکا اندازہ اِس سے ہوسکتا ہجا کر حولوگ اتنجاب کئے گئے وہ اس حیثیت سے تمام عرب مین اتنجاب تھے۔ یا ی شخنت یعنی مربنے منوّرہ کے قاضیؔ زمرین ٹابت صحتے جو سول امٹیرکے زیانے مین کاتب وحی رہے تھے۔ وہ سر لینی اورغرانی زبان کے ماسر تھے او بملوم فقہہ یہن سے فرائفن ا کے فن مین تمام عرب مین ان کاجواب نہ تھا۔ کعب بن سورالا ردی جو تصرہ کے قاضی تھے بہت بڑے معاملہ ہنم اور کمتہ ثنا س تھے۔ امام بن سیر بن نے ان کے بہت *سے نیصلے* اورا حکام نفت کی سکتے می<sup>ن ن</sup>فلسطین کے قاصنی عبا دوہ ناصامت تقے جومنجلہ اُن یابخ شخصون کے ہیں تبغون نے رسول اللہ کے عہدمین تمام وان حفظ کیا تھا ا وراسی وجہ سے انخصرت سنے انکوا ہل صُفّہ کی تعلیم سیرد کی تھی۔حصرت عمراً بكا اس قدرا حترام كرتے تھے كہ جب اميرمعاً ديہ نے ا ن كے ساتھ ايك موقع بر نخالفت کی توحفزت عمرنے انکو امیرمعاویہ کی ماتحتی سے الگ کر لیا۔

مل انبارالقفها من انعم استمل زيداً على القفار وفرض لدرزة ا

من و کمیوا سدانماته نی احوال العماته- وستیمات قامنی بن عبدالبر زکره کعب بن سورا لازدی

مسك استيعاب قامني بن عبدا ببر

معزت عمر کے زانے کے مکام ملا

کوفذک قاصی عبدالند بن سعود تقے خبکا نصل دکال مماح بیان نہیں . فقی حنی کے مورث اوّل وہی ہیں عبداللہ بن مسعود کے بعد سالہ یہ بین قاصی شرح مقرر مہوئے وہ اگر جبھا بین سے ذکھے لیکن اِس قدر وہین اور بعا ملہ فنم سے کرتام عربین انکا جواب نہ تھا، چنا بنجہ انکا ام آج تک مثال کے طور پرلیا جاتا ہے خفت علی اُن برگون کے سوا جمیل بن عمر آنجی ابوم کی العرب کما کرتے تھے ، ان بزرگون کے سوا جمیل بن عمر آنجی ابوم کی العرب کما کرتے تھے ، ان بزرگون کے سوا جمیل بن عمر آنجی ابوم کی اور حضرت فرکے زمانے کے تفاق مین ۔ انکی خطرت و جلالت شان روال کی تمان و جواب نہ میں ہوئے ہے۔ حسان کرمال کی تمان میں میں بروی و جواب کی تمان کی تابون میں میں میں ہوئے ہے۔ ان عمر مہرکتی ہے۔

تفاسی اگر جواکم صوبہ یا عاکم ضلع کا انحت ہوتا تھا اوران لوگون کو تضاق کے تقریبار عاصل تھا تا ہم حضرت کھڑنیا و واحتیا طرکے کیا ظریب اکتر خودلوگون کو اتنجاب کر جینج سے نہ تنا ب کے لئے اگر جینجود امید وارون کی شہرت کانی تھی الیکن حضرت عمر اسپراکتفا نہین کرتے تھے بلکدا کثر عملی امتحان اور ذاتی تجربہ کے الیکن حضرت عمر اسپراکتفا نہین کرتے تھے بلکدا کثر عملی امتحان اور ذاتی تجربہ کے الیکن حضرت عمر اسپراکتفا نہیں کرتے تھے بلکدا کثر عملی امتحان اور ذاتی تجربہ کے الیکن حضرت عمر اسپراکتفا نہیں کرتے تھے۔

نف ہوائی کے بدیقہ زوا

تاصنی شریح کی تقری کا یہ واقعہ کے کہ حفرت عرب ایشخص سے ببندگی شرط پرایک کھڑا خرمرا اورا متمان کے لئے ایک سوارکودیا۔ گھڑا سواری مین حیٹ کھا کر واعنی ہوگیا حضرت عربے اسکو دا بس کرنا جاہا۔ گھڑرے کے الک نے اِنجا رکیا ، اسپرنزاع ہوئی اور شریح یا لٹ مقرر کئے گئے۔ انھون نے بیفصلہ کیا کا اگھڑا کے مالک سے اجازت لیکرسواری لی گئی تھی تو گھوٹرا واپیں کیا جاسکتا ہے، ورندین ا حضرت عمرنے کہا کہ حق میں ہے اوراسی وقت شریح کو قد کا قاصلی مقرر کردیا۔ کعب بن

سورا لازدی کے ساتھ کھی اسی متم کا وا متعالمہ ا-

نا جایز وسایل آمرنی کے روکنے کے لئے بہت سی بنرشین کیں۔

را) تنخواهین مبیش قرار تفتر کین که بالائی رفم کی صرورت نه موریتماهٔ <del>سلمان رمی</del>ته اور<del>قاعنی</del> شیرے کی تنخوا ہ بان بان سودرتم ما ہوا رحقی - اور یہ تعدا دائیں رمانے کے حالات کے الحافاس بالكل كافي تحتي-

 ۲۷) قاعدہ مقرّرایا کہ حقیمض دولتمن او زغرز نہو قائنی مقرّر نہونے یائے۔ ابوموسی شعری ۔ گورنرکوفه کو**جو فرمان لکھا اِس میں اِس قاعدے کی د**جہ بیکھی کدور دولتمند رشوت کی طرف

راعنب نہوگا او میغززآ دمی پر فیصلہ کرنے مین کسی کے رعب و داب کا اثر نہوگا ··

اِن باتون کے ساتھ کسی قاصنی کوتجا رت اور خرمد و فرو حنت کرنے کی آجازت نہ تھی اور یہ وہ اصول ہے جُومِّرتون کے بجربے کے بعد ترتی یا فتۃ مالک میں افتیار

عدالت وانصاف كاايك برالا زمه عام مها وات كالحاظ سے بینی ایوان عدلت ميرمهاءبت

مین شاه وگدا ، امیروغویب ، شریف ور زیل ،سب ہم رب سمجھے جامیئن ۔حضرت عمر کو

ا س کا اِس قدرا ہتا م تھا کہ اسکے تجربہ! ورامتحا ن کے لیے متعدد وفعہ خود عدالت

المان الدوال بالباساب وكرا لقفاة والمستن نق القدر ماشية مرايطبه مسفوده والمعلى اخبار القفاة الحرين طعن الوكيع

بمغذظ يكين کے وسائل

مین فریقِ مقدمه بَن کرگئے۔ ایک دفعہ ان میں اور اَتی بن کعب میں کیونزاع می ۔ اِتی نے فرید بن نابت کے ہاں مقدمہ دایر کیا۔ حفزت عمر معاعلیہ کی حیثیت سے حاصر ہوئے۔ زید نے تعظیم دی ۔ حصفرت عمر نے دفعا اور مفارت عمر کو دعوے سے اکار کے باس کوئی ثبوت نہ تھا اور مفارت عمر کو دعوے سے اکار تھا۔ اُتی نے تعا عدے کے موافق حفزت عمر سے فتم لینی جاہی۔ لیکن زید نے اُنکے تھا۔ اُتی نے تعا عدے کہ موافق حفزت عمر سے فتم لینی جاہی۔ لیکن زید نے اُنکے زید کی طرف مخاطب ہو کر کھا کہ حب تک عمر اور عمر و نون برابر نہ مون تم منصب مفالے تھا ہے۔ نزد کی طرف مخاطب ہو کر کھا کہ حب تک تعا ہے۔ نزد کی طرف مخاطب ہو کر کھا کہ حب تک تعا ہے۔ نزد کی طرف مخاطب ہو کر کھا کہ حب تک تعا ہے۔ نزد کی طرف مخاطب ہو کر کھا کہ حب تک تعا ہے۔ نزد کی طرف مخاطب ہو کہ کہا کہ حب تک تعا ہے۔ نزد کی سے مون تم منصب قضا کے تعا ہے۔ نزد کی سے مون تم منصب قضا کے تعا ہے۔ نزد کی سے مون تم منصب قضا کے تعا ہے۔ نزد کی سے مون تعرب منصل کے تعا ہے۔ نزد کی سے مون تر منصب قضا ہے۔ نزد کی مون تم منصب قضا ہے۔ نزد کی میں تعرب میں تعرب میں تاریخ میں تر میا ہو تاریخ میں تاریخ میں تاریخ میں تاریخ میں تر میں تاریخ میں

تعنا آه اوراً کی کارروایئون کے تعلق حفرت عمر نے جس نتیم کے اصول ختیا رکئے اُسکا نیمتی ہموا کہ اُسکے عمد فِلافت میں بلکہ بنوا میسہ کے دورتک عموماً قصا قاطلہ و ناانصا نی کے الزام سے پاک رہے۔ علامہ ابو ہلال عسکری نے کتاب الاوائل میں لکھا ہے کہ کواسلام میں سب سے پہلے جس قاضی نے خلاف انصاف عمل کیا دہ بلال بن آبی ہم کے دین نوامتیہ کے زمانے میں تھے )۔

آبادی کے لحافات قصاقہ کی تعداد کا نی تھی کیونکہ کو نی ضلع، قاضی سے حنالی منیس تھا اور چونکہ فی ضعیر منہ والون کواجازت تھی کہ آپس کے مقدمات سلوزود نصیل کرلیا کرین اس سئے اسلامی عدالتوں مین اُن کے مقدمات کم آتے تھے اور اس

آبادی کے نماؤسے تعنا کی تعساد کا کا فی ہونا بناير مرضلع من ايك قاصني كالبونا ببرحال كاني تقا-

صیغهٔ تفناً اورخصوصاً اصول شها دت کے تعلّق <u>حضرت عمر نے ج</u>زاد آپی ایجا دکین ا و رحن کابیان اُنکے اجتمادات کے ذکرمین ایکا ، ان مین ایک ہرجن ا كى شها دت تفتى معينى حوامركسى خاص فن سے تعلق ركھتاتھا إسيين خاص ائس من کے ماہر کا اطہار لیا جاتا تھا۔ مثلا خطیہ نے زیرتان بن بدر کی ہجومیں ایک شعر لهاجس سے صاف طور پرہمجونہین ظاہر موقی تھی، زبر قان نے حضرت عمر کے اِں مقدمه رجوع كيا چزكمة يشعروشاءي كامعالمه تقااورشاءا نيصطبلاصين اورطرزا داعام بول چال سے الگ ہین۔ حضرت عمر نے منیان بن ابت کو جوبہت بڑے شاء سقے بلاكر بوجيا اورأنكي راسے كے مطابق فيصله كيا سيطح اشتبا وسنب كي صورت ميں حانينا سون کے اظہار لئے۔ خِنا پِنہ کنزا امال باب القذت میں اس متم کے بت سے مقدّات مْر كورنين-

فصل خصومات کے تعلّق اگر حیر صفرت عمر نے بہت سے آیئن و اصول مقر کے بیکن ب وہیں تک تھا جات تک انصاف کی ارزانی اورآسانی میں کو ئی خلل نہیں ٹرسکتہ تقا، درنىسب سے مقدّم انكوس چنير كالحاظ تھا د ہ انصا ب كارزان ا وراَسان بناتھا آج کل مُهذّب کمکون نے انعمان اور دا درسی کو انسی نتو دمیں حکر دیاہے کہ دا دخوا ہوں کو دعوے سے بازا آا اسکی بسنبت زیادہ آسان ہے۔لیکن حصرت عمرکے اصول اور اُیئن اِس قدرسل ورآسان سے کوانصات کے ماصل کرنے میں ذرابھی وقت

انهیں ہوسکی تقی اور حفرت عرکو خاص اس بات کا ہمیشہ کی افر بہا تھا یہی صلمت تھی کو عدالت کے خاص عارتین خدی نبوائن بلکہ سجدوں براکفا کیا کیونکہ مسجد کے عدالت کے داخل کے خاص عارتین خوائن بلکہ سجدوں براکفا کیا کیونکہ مسجد کے مقدات مفہوم میں جو تقیم اوراجازت عام عتی وہ اورکسی عارت ہیں بیدیا نہیں ہوسکتی تقی مقدات کے دروازے براکسی سے برعی کو نہا تھا ، عدالت کے دروازے براکسی سے مقدمہ کا فراق نبرکو کہ نوگ و ترائم قفنا ہ کو اکید عتی کہ حب کوئی غریب اور برتبذل شخص مقدمہ کا فراق نبرکو آئے تو اس سے نرمی اورکشا وہ روئی سے بین آئی تاکہ اظهار معامین اسپرطلق خوف کا اثر نہوں

## افنت

عدالت کے تعلق یہ ایک نهایت صروری عیدنہ ہے واغالِ سلام میں قائم ہوا
اور سکی شال، اسلام کے سواا در کہیں یا تی نہیں جاتی۔ قانون کے جومقدم اصول ہیں
ان میں ایک یہ بھی ہے کہ ہر خص کی نئبت یہ فرص کرنا جاہئے کہ قانون سے واقف ہے،
ایمنی شلاا گرکوئی شخص کوئی جُرم کرے تواسکا یہ عذر کا م نہیں آسکتا کہ دہ اس فعل کا جُرم
ہونا نہیں جاتا تھا۔ یہ قاعدہ تمام دنیا مین سلّم ہو اور حال کے ترقی یا فتہ ملکوں سنے
اسپرزیا دہ زور دیا ہے۔ بے شہدیہ قاعدہ جیمے ہے لیکن معجب یہ کہ اور قومون سنے
اسپرزیا دہ زور دیا ہے۔ بے شہدیہ قاعدہ جیمے ہے لیکن معجب یہ کہ اور قومون سنے
اسپرزیا دہ زور دیا ہے۔ بے شہدیہ قاعدہ جیمے ہے لیکن معجب یہ کہ اور قومون سنے
اسپرزیا دہ نور دیا ہے۔ بے شہدیہ قاعدہ جیمے ہے لیکن میں موجلی ہے لیکن
اسپر درجے کوئی سی اور نہینے سکتی ہوئی خیم تا فون دان بن جائے۔ کوئی جاہل
شخص قانون کا کوئی مسلہ جاننا چاہے تواسکے لئے کوئی تدبیز مین سیار آسلام میں اسکا

حزیت تر کے زہائے کے مفت

بك خاص محكر تماحيكانام محكهٔ اقتا تها- اسكا پيطريقيه تصاكه نهايت لايق قا يزن دان معنی فقها سرحگ<sub>ه</sub> وجود ستے تھے اور <del>ق</del>ریض کو نی مسله دریافت کرنا جا ہتا تھا ان سے درافیت رسکتا تھا ،اُن زیر صن تھاکہ نہایت تحقیق کے سابھ اُن مسائل کو تیا بین ۔ اس صورت بین ویا شرخص حب چاہے قانون کے مسائل سے واقت ہوسکتا تھاا دراس سے کوئی نحض یہ عذر نہیں کرسکتا تھا کہ وہ قانون کے نیلےسے نا واقف تھا۔ یہ طریقہ آغاز سلام مین حود بخود بیدا مواا و را ب تک قا کم ہے۔لیکن حصرت عمرے عہدمن حس یا بندی ساتھ اسپرعمل رہا زمانۂ ما بعد ملکا اُن سے پہلے حضرت ابو مکرکے عہد میں بہتن ہا اس طریقے کے لئےسب سے صروری امریہ ہے کہ عام ا جازت نہو ملکہ خاصمامی قابل لوگ اَقِيا کے لئے نا مزوکرو نے جامین <sup>ت</sup>ا کہ مرکس وناکس غلط مسائل } *ترویخ کوسکے۔* منرت عمر منے استخصیص کو میں المحاد کھا جن لوگون کوالخون سے اِقالی اجازت دی مثلاً منرت على - حفزت غنان - مُعانَّوْ بن حبل عبدالرحمان بن عوف - إلى بن كعب - زير .ن بت۔ابومررتہ-ابودردار۔ وغیرہ وغیرہ ان کے سواا ورلوگ فتوسے دینے کے مجا ز يمقے ، نتاہ ولی اللہ صاحب اُزالۃ الخفامین لکھتے ہن ‹ وسابق وعظ و فتوے موقوت بود ے خلیفہ- مرون ا مرخلیفہ و غطانمی گفتنہ و فتوے تنی دا دند و آخر بغیر توقف بررا سے خلیفا دغ**ط می گفتند و فتوس**ط می در دنیه <sup>۱</sup>، تاریخون مین اسکی بهت سی مثمالین موجود بین ک<sup>ر</sup>ین بوگو<sup>ن</sup> ونتوے کی امازت ن<sup>م</sup>حی اُ عنون نے فتوے دیئے تو<del>صفرت عر</del>نے اِنکومنع کردیا خیائی۔ سل كناب ذكورمغي ١٣٠٠

ا کیب د فعہ عبیدا سندبن سعو د کے ساتھ بجی یہ وا فعہ گذراً - بلکہ انکو پیان تک احتیا ماتھی کہ تقرشورہ مفتیون کی بھی جانخ کرتے رہتے تھے حصرت ابوہررہ سے ارا یو بھاکہ تم نے اس مسلے مین کیا فتوسے دیا ۱۶ و رحب اسمون نے اپنا جراب بیان کیا تو فزایا کداگرتم اس مسلے کا ا و رکھے حواب دیتے تو آیند دلم کمبی فتوے کے مجاز ننوتے "-د وسراا مرحوا س طریقے کے لئے صرورہے یہ ہے کمفتیون کے نام کا اعلان کردیاجا اُسوقت گزٹ ا ورا خبا رتو نہ تھتے لیکن مجالس عا مہین جن سے بڑھکرا علان عام کاکوئی ذربعہ نہ تھا <del>حضرت عمرنے</del> بار ہا اِسکا اعلان کیا **شام** کے سفیمن تھام جا بہتے۔ ہے شما ر ا ومیوں کے سامنے حومشہو رخطبہ رمِ ها اسین یہ الفاظ بھی فرا گئے۔ من ارا دالقل فليات ابباً ومن الله ابن وشنس ترزن يمنا عاب تر أبَي بركب كياس اور ان ببال الفرابض فلباك نوب اوس فرائض كتمان كير يومينا واب ترزير كياس اورنقد ك ارادان بسال عز الفقة فليات معاد اسل بميناه به ترسان كإس مائد قوجداري اوربوسس جمان کے بم حقیق کرسکے ، مقدمات فوہداری ، کے لئے <del>حضرت عمرت</del>ے کوئی جد امحکمہ نہین قائم کیا، معض صمے مقدمات مثلاً زنا، اور مرقبہ - قضاقیے بان فعیل ہوتے تھے، اورا تبدا ئى نتىم كى تام كارروائيان يولىس ھے متعلق ئىيں، يولىس كا صيونے تقل طور يرقائمُ بوگيا تقا اوراُسوقت اسكانام أنه **ث** تقاينا پخدا منسروليس كو <del>مها حيا لامدنها</del> آ سك مند دارم وازالة الخنام بسغمه ١٣٠٠ -

جينخانے کی ايجاد اس عینے بن صفرت عمر کی ایک ایجادیہ ہے کے جبلی کے بنوائے ورندان سے
پہلے عرب میں جیلی نے کا نام و نشان نہ تھا ا ورہی دجہ تی کسنزامین خت دیجا ہی تین وراسکو
حضرت عمر نے اول کم معظمہ میں صفوان بن امیہ کا مکان چار ہزار درہم بریخرمیرا اوراسکو
جیلی نہ بنا آیا۔ بھرا ور اصلاع میں بھی جیلی نے بنوائے علامہ بلا ذر تی کی بقیری سے معلوم
ہونا ہے کہ کو فہ کا جیلی نہ زمل سے بنا تھا، اسوقت تک صرف مجرم قید خاسے مین رکھے
جو اسے سے لین دور خلافت کے بعد قاصی سندر کے مدیونون کو بھی قید کی سنرا دیتے
جاتے سے لین دور خلافت کے بعد قاصی سندر کے مدیونون کو بھی قید کی سنرا دیتے
سے اور جیلی اسے مین بھجواتے سے۔

ك مفرزى عبد دوم صفى ١٨٠ - كل فتوح البلدان سفى ١٦٣٨ -

جیلنا نه خمیر ہونے کے بعد بعض معنی سزا وَن میں بھی تبدیلی ہوئی مثلاً ابو بھی تعنی بار بارشراب ہیئے کے جرم میں اخوذ ہوسے تو اخیر دونو حضرت عونے اُن کو صد کی بجا سے تید کی سزادی -

جلا وطنی کی سزاتھی حصرت عمر کی ایجا د ہے جنا پخہ ابو محجن کو حضرت عمرنے یہ سزا بھی دی عتی اورایک جزیرہ میں بھیجدیا تھا۔

ببيت المال ديا، حنت رانه

یسیغه بمی حضرت عمر کی ذات سے وجود میں آیا۔ آن حضرت کے زمانے میں سب ا اخیر حجرت نم وصول ہوئی وہ مجرس کا خراج تھا جبکی تعدا و آنٹھ لاکھ دیم بھی لیکن انخصر سے ا یوکل تم ایک ہی حلسہ یں تعتبہ کر دی حضرت ابو کمر نے بھی اپنی خلافت میں کوئی خزا نہیں تا کھ

ہے، ابن سعد کی ایک دوسری روایت ہے کہ صنرت ا**بو مگرن**ے ایک کان مبیت لمال کے سے اور میں ایک کان مبیت لمال کے سے خاص کرلیا تھا سکن و وہمیتہ بندیڑا رہتا تھا کیونکہ حوکمیر آتا ائسی وقت تعتبر کرداجا ا

تعااد راسکی نوبت سنین ہنچتی تھی کرخزانے مین کچیرد اخل کیا جاہے۔ وفات کے وقت

ميت المال كا جايزه ليا كيا توصرت ايك دريم كلا-

تقريباً مط شين حضرت ابو ہررہ كوحضرت عمر نے بحرين كا عامل مقرركيا وہالمام

ك اسدالفاتة ذكرا لوتمن المتني-

طو دامن کی سندا

بیت کمال میلے دیما بتِ المال كس ندين قائمَ ہوا

میں پانخ لاکھ کی رقم اپنے ساتھ لائے ،حضرت عمرنے محلب شوہے کا اجلاس عام کرکے کہا را یک رقم کتیر بجرین سے آئی ہے ، آپ لوگون کی کیا مرنی ہے ، حصرت علی نے راے دی ر حور قم اتسے وہ سال کی سال تعتیم کردیا ہے ، و خزا نے مین حمیع نر رکھتی جائے ۔ حصنرت غُمان سے اسکے ملات راہے دی، ولیدین ہشام نے کہا میں نے سلاطین شام کوار ديكهائ كه خزانه اورد فتركا جداحه إمحامة فالمرشبي ٠٠-آج كل كا زمانه موّا توغيزومب والون كي نام سه اجتناب كيا جا ماليكر . حضرت عمر سنے اس راے کوئیندکیا اور مبت المال کی مبیا دوال سب سے پہلے دا رائخلا فہ تعین مرینه منوره مین مبت برا خرانه قائم کیا ۱ و رحیز کداسکی نگرانی ۱ و رساب کتاب کے کئے نبایت آقابل اور دیانت واراً دمی کی صرورت تھی عبدا بیڈین ارنم کوجو نہایت مغزز سمایی تھے ورنگھنے پڑھنے میں کمال رکھتے تھے، خزا نہ کا انسر تقرر کیا۔اسکے ساتھ اوراہ تُق لوگ نگے ا نخت مقرر کئے جن مین سے عبدالرحان بن مبیداتعا ری ا و معیقب بھی تھے میعیب و بہ شرت ماصل تقا کہ وہ رسول اللہ کے انگشتری بردار سفتے اوراس وحبہ ان کی د یا نت ا درا مانت **ب**رطرح ترفطعی ا ومسلم الثبوت تقی-دا رالخلا فتہ کے علاوہ تمام صوبجات ٰا ورصدر تقا مات میں بت المال قائم کئے اور اگرحہ وہان کے اعلیٰ حکام کوانکے تعلق ہوتھ کے اختیارات حاصل تھے لیکن متیا لمال كامحكه بالكل الگ ہتوا تھا اورا کے امنسرحدا گا نہ ہوتے سکتے ، شلاً اصعنہان میں خالہن ش ك نتيج البلدان ازصفية ٢ م ما ١١ ٧ م - على كتب رجال من ميقب كالذكره وكموره

60

بیتالال کے افتہر

میتالمال *ی مارتی*ں

ا در کوفرمیں عبد التّدین سو دہغا مس خزا نہ کے اضبر سے ۔حضرت عمر مُا اگر دیتمیر کے باب میں نہایت ألفايت شعاري كرت متح ليكن مبت المال كي عارتين ستحكم ورشا ندار بنوامين ، كوفه مير م تيالمال کے لئے اوّل ایک محل تقمیر ہوا جبکوروز ہرا کیے شہور محرسی معارینے بنا یا تھا ا در حبکا معیا تحہ خسروان فارس کی عارت سے آیا تھا۔لیکن جب اسین نقب کے ذریعے سے چوری ہوئی ا تر <u>حعزت عمر</u>نے سعدو قامس کولکھا کہ سعید کی عارت ، <del>بیت المال س</del>ے ملا دی عا*ب کیو* نکمہ سجدنا زیوں کی وحرسے ہمیتہ آباد رہے گی اور سروقت لوگون کامجمع رہے گا '' خیالیے سندقانس کے مکرسے روز برنے بت المال کی عارت کواس قدر وسع کیا کرسجدسے مل گئی۔ اوراسطیح ۔ ایوری وغیرہ کی طرف سے اطینان ہوگیا ً۔۔ معلوم بتواسے که زمانه ما بعد بین زیاده احتیاط کے لحافات خزانے پرسیا بیون کا پهره بھی رہنے لگا تھا۔ بلاذری نے لکما ہے کرمبطلحہ و زہرحضرت علیؓ سے باعنی ہوکر بصرہ بن آئے و زخرا نے پر قبصنہ کرنا چا ہا تو سائج کے ، ہم ساہی خزا نہ کے پیرے پرتعین تھتے اوراُ کھون کے طلحہ و زبیرکے ارا دے کی مزاحمت کی۔ سیانجہ کی نسبت اسی موزخ نے تقبیح کی ہے کہ وہ سندم سے گرفتا رہوکرائنے سمتے اورایرانیون کی فوج میں واخل سمتے، حفزت عمرکے زمانے مین حب ایران نمتح نوا تویی نوم مسلمان موگئ اورا بوموسے نے انکوبھرہ میں آباد کرایا" مریات ا وراضلاع مین جزخرانے سفتے انجابیا نتظام تقاکر جس قدر رتم و بان کے ہرستم کے معیارت کے لئے صروری ہوتی تھتی رکھ لی جاتی تھتی اِ تی سال کے فتم ہونیکے بعد ملے یا ام تغییل تا عظری وکراً إدى كوندين ب - سك نوت البدان ادمغر ١٣٠١ ١٣٠٠ - صدر خزانریمی مرنیهٔ منوره کے بیت المال مین جیجبری جاتی محق بنیا بخه اسکے متعلق عمال کے نام حصرت عرب کا کیدی احکام استے رہتے گئے۔ یہ دریا نت کرنا مشکل ہے کہ ہر عکبیہ کے خزا سے میں کو مرد کام استے رہتے گئے۔ یہ دریا نت کرنا مشکل ہے کہ ہر عکبیہ کے خزا سے میں کس قدر رقم محفوظ رہتی تھی ، در ترخ لیفقو بی کی تصربی سے اس قدر علوم ہے کردا لیا اللہ تھی۔ کے خزا سے سے خوا سے نامس دارالخلاقہ کے باشندون کو جرنخوا ہیں اوروفا لئن وغیرہ مقر سے اسکے قدار تو ہمی تعدار تو ہمی کردرسالانہ تھی۔

ہرتم دالفاتی کے خواشدیں رستی تھی

> بیت المال کی مفاطنت اورنگرانی مین حضرت نمر کو جوابتهام تھا اُسکے تعلق ایخون مین بہت سے دلجیپ واقعات بین خبکی تفصیل بم نظرانداز کرتے ہیں۔ مملک و رک یا نظا رست افغہ

> یا صیخه مستقل میشت سے زمازُ مال کی ایجا دسے اور رہی وجہ کے کو بی زبان بن اسکے لئے کوئی اصطلاحی تفط نہیں مصروشام مین اسکا ترجمبہ نظارت نا فعہ کیا گیا ہے۔ اب سینے مین مفصلہ نویل چنر مین داخل مین سرکاری عارات - نهر بن - طرکییں بل شفا خات خ حضرت عمر کے زمانے مین اسکے لئے کوئی متقل صیبی نہیں تا انکم ہوا تھا۔ لیکن شفا خاتون کے سوااس صینے کے متعلق اور متبی چنر میں میں سب موجود تھیبن اور نہا بہت متعلم اور وسیع طور رہتھیں۔

زراعت کی ترقی کے لئے۔حضرت عرفے جس قدر نہرین طیار کرائین آنجا مخصوال

مل تمروین انعاص گورز مفرکوجو فران کلما تعارسیں یا نفاذ سنتے فاقراحعل الیک دهمبته اخرجت على لہلین د ایمتاج الیب الماللمبرشتم انفر خایضل مبد ذلک فاحله الله (کنز انعال مجاله این سعد مبله ما صفحه ۱۹۳۰ ہم صیغهٔ محاصل کے بیان میں لکھا گئے میں- یہان آن ننرون کا ذکر کرستے میں جوز راعت کے صیغہ سے مخصوص نرکتیں-

تهرا بی موسیٰ- یہ نهروسیل کی لمبی تھی جبکی طبّا ری کی تا ریخ یہے کہایک د فعہ-بصرہ کے وگ ڈیوٹمین کے طور پر حضرت عرکے پاس حاصر ہوئے ، حضرت عمر نے معمول کے موا فق ایک ایک سے مالات یو تحفیے - ائیں منیف بن قبیس بھی تھتے -ا تھون نے نہا ایُرا ترتقر رمین دو کتا بون مین با نفاظها منقول ہے اِس بات کی شکایت کی کہ تعبیب رہ اہل شورتیان ہے اور اپنی امیل سے لانامیرتاہے۔حصرت عمرنے اُسی دقت ابوموسی ا شعری کے نام اس صنمون کا تحربری حکم بعیجا کہ بھرہ کے بوگون کے بنئے نہر کھیدوا دی جائے جاتے د جلہے ہ بیل مبی ننرکاٹ کربصرہ میں لائی گئی جیکے ذریعے سے گھر گھرمانی کی ازا طرکبی <del>'</del> نهز مقل ميرايك شهور بنرب حبكي نببت وربي من يثل مشهوب اداجاء نهل لله بطل نه ونفعل به نهر بمبی د جارے کا طاکرلا نی گئ متی اور چز که اسکی طیباری کا متبا<del>م مقل</del> بن بیارکوسپردکیا گیا تھا جوایک مقدّس صحابی تھے اس کئے انتفی کے ام سے شہورموّلئی۔ منرسعداس منرك سئ انبار والون نے يہلے شمنشاه فارس سے در حق ست یهتی-اسلام کا زانه آیا توان لوگون نے سعدوقا من (گورنزکوفه) سےخوامش ظامبرکی ا تعدیے تعدبن عمرکو ما مورکیا انفوں نے بڑے اہمام سے کام لگایا لیکن کیئر دور کمی نیکر ایک بیما زنیج من اگیا اور وہیں جیوروی گئی۔ پھر حجاج سے اینے زما نے میں بیار کا طاکر سلك نتى البدائيفوده وده ويما بكا ما أتغييل كمام وجزافيد بارى من مي اسكا ذري ور

حغرت عمر نے ج نہرین طبیّ رکرائمن

تذمقص

منهرسعد

بقید کام پوراکیا آئم ننرسودی کے نام سے مشہور مونی -

سب سے بڑی اور فائرہ رسان ہنر و <u>صنرت عرکے فاص مکرسے</u> بی وہ ہنریتی <del>وہ ہر</del>

امیرالمونین کے نام سے مشہورہے اور حیکے ذریعے سے دریا ہے نمیل کو کر فلزم سے ملادیا المریونین

إكياتها اسكم مخقراريخ يهب كرسشاه مين جبتهام عرب مين قطايرا توحصرت عمرن تمام ضلاع

کے حکام کولکھا کہ مرحکہ سے کثرت کے ساتھ غلّہ اور ناج روا نہ کیا جاہے۔ اگر حیاس حکم کی

نوراً تقمیل ہوئی کیکن شام ا<u>ورمصرت خ</u>شکی کا چورا سته تھا بہت دور دراز تھا-اس کئے نملّہ

کے بھیجنیں بریمبی درلگی۔ حصرت عمرنے اِن قنون برخیال کرکے ،عمر وہن العاص ﴿ گُورِز

مصر کولکھا کہ صرکے باشندون کی ایک جاعت ساتھ لیکر دارالخلاقۃ من حا صربر جب ہ

ئے تو فرمایا کہ دریا سے نیل اگر سمنہ ہے ملادیا جائے توعب مین قط وگرانی کا کہیں اندائے۔

منوگا- ورنه ختکی کی را ہ غلہ کا آنا دقت سے خالی نبین <u>- عمو</u>نے واپس جا کر کام شروع کردیا

ر پشطاطے (جوقا ہرہ سے دش اڑہ میاہے) مجرفازم کک منرطیا رکرائی۔اس ذریعے

سے درایے نیل ہر فنطاط کے نیچے بتاہے <del>بحرقلزم مین م</del>ل گیا۔جمازات ،نیل سے *بل*کہ

فلزم میں آتے تھے اور بیان سے جارہنچارنگر کرتے تھے جومریئہ متررہ کا بندرگا ہ تھا ۔ یہ

مرَّمِرِياْ ٩ ٩ ميل لمبي متى اورتعب يە*پ كەچىنە مىيىنے يىن نېڭرطيا ر*ېوگئى، چنايخە يېلى بىيال

۲۰ برے برے جہازمین سائد ہزارار دب غلہ بحرا ہوا تھا اس نہر کے ذریعے سے

مرنیہ منور و کے نبدر گا ومیں آئے ؛ یہ نہر رتون کک جاری رہی ا دراسکے ذریعے ہے مصر

لی تجارت کو نهایت ترقی مولی عمرین عبد العزیزیکے بعد یعالوں نے بے یروائی کی اور م

جابجا سے اُٹ گئی بہان کک کہ مقام ذنبالہت اے تک اگر بالکل بند ہوگئی۔ شنبا <del>میں مقولی ہ</del> نے ایک واتی صلحت سے اُسکو نبد کردیا لیکن بعد کو پیرطاری ہوگئی اور مدتون کہ طاری ٹی ا اكم عجيب وغريب إت يهد كاعم وبن العاص كنع بحرروم وتحرفانم كوبرا وراست اللادينے كا ارا ده كيا تھا خيا ئخدا ہے سئے موقع اور حكھ كى تجو نزيجى كر لى تھى اور جا باتھا كەفرما کے یاس سے جمان سے بحرروم و برقارم میں مرت ، سیل کا فاصلہ رہ جا اہے نہز کا ل کر وونو دریاؤن کوملا دیا جائے ، لیکر ، <del>حصرت ع</del>مر کوحب انکے ارا دے سے اطلاع ہوئی تو نارصامندی ظاہر کی اورلکھ بھیےاکہ اگرا ہیا ہوا تو یونا نی جہار و ں میں اکرطاجیو کماڑا ہےا مُنگِکہ ا رُعمروبن العاص كوا جازت ملى موتى تو نغرسونزكى ايجا دكا فخر درتفيقت عرب كے حصّے مين آما-عارات جوحضرت عرف تعميركرامين تمين شتم كي تغيين (1) نرمبی-جیسے ساجد وغیرہ-انجا بیان تفصیل کے ساتھ ندہبی صیغے میں آئیگا۔ بیان استعد لنا كا في ہے كەبقول صاحب روضته الاحباب چار مېزارسىجدىن ، تعمير ہومئن -ُرم) فوجي- جيسے قلعے، چھا ؤنیا ن- بارکین، انجابیان فوجی انتظامات کے بیان میں انتگا-(۱۳) ملکی-شلاً دارالاماره وغیره-اس قتم کی عارتون کے تفصیلی حالات معلوم نهیر سکیل نکی القيام کي تفعيل جب ذيل ہے۔

> مفرت ویف جوها زمیلبار کرائین

ك يَنفعيبل حسن الما هذةِ سيرطى صغوبه ٩ وهه ومقرزي طبدا ول صغيراء - وجلدووم صفحه ٩ ٦ تا ١٢ هم ١ ميں ہے -

(۱) **دارالامارته** یعنی صوبجات اور امنلاع کے ُحکَّام جہان قیام رکھتے تھے اور جہاں اُنکا وفتر

مل تقويم البلدان ابوالفدارصفير ١٠٠-

رمتنا تھا ، کوفہ وبصرہ کے دارالامارۃ کا حال طبری وبلا ذری سنے کسی قدر تفصیر ہے ساتہ

۲) و ایوان - معین جهان و فترکے کاغذات رہتے تھے۔ فوج کا د فتر بھی اسی مکان

مین رہتا تھا۔

رسر) میت المال مین خزانے کا مکان- یہ عارت مصنبوط اور شکر ہوتی تھی۔ کو فہ کے میت المال کا ذکر مبت المال کے مال میں گذر دیا۔

رمم) فتبدخان من میزمنوره کے قیار خانے کا مال میغهٔ پولیس کے بیان مین گذر کیا۔

بصرومین جوقیدخانه تھا وہ دارالامارۃ کی عارت میں شامل تھا۔

(٥) مهان خان - يرمكانات إس ك تميرك ك ك ك ك بامرواك جود وياردور

ے گئے شہر بین آ جاتے تھے وہ اِن مکانات میں تغیرائے جاتے تھے ۔ کو فیرین جومان ا

بناسكی *نبیت علامه بلاذری نے لکھاہے* احرصمان پیخلائیں یہ من لا فاق داساً

تكابنوا بنزلونها مبنيهنوره كامعان خانه سئليهمين تمير مواجنا يخدابن حبان نے كيا۔ اتقات بن اسكانذكره كياب-

اِس موقع پریه تبا دنیا صرورہے کہ عارتون کی منبت پنین خیال ک<sup>ن</sup>ا چاہئے کہڑئ<sup>ا</sup>ن

وشوكت كى ہوتى عتين اسلام ئفنول ئلفات كى اجازت نيين دتيا- زانهُ ما بعد من جولجم

مهوا هوالیکن امس وقت یک اسلام بالکل اینی سا ره ا ور اصلی صورت مین تھا اورخت

المع فتوح البلدان مفي المست مقت البلدان صفي ٢٥٠٠-

عَرِكُونِهَا بِتِ ابْتَامِ تَفَاكُهِ بِيسَادِ كُي جَائِے نَهْ إِلْتُ -اسِكَ عَلَاوہ اسوقت مُک مِتِ المال پرحا کم وقت کو آزا دانه اختیا رات حاصل نه<u>ط</u>ح <mark>حبت المال ت</mark>ما م قوم کا سرایه مجها جا اتحا ا ورلوگ اُسکا صلی مصرف یہ سمجھتے تھے کہ جونہ تبھر کے بجا سے زیادہ ترا دمبون سکے **کا م**ہے۔ یہ خیا ل مرتون ک*ک رہا* ا وراسی کا اثر تھا کہ جب <del>ولیدین عیدالملک نے دمشق</del> کی حامیحیا برایک رقم کشیرصرت کردی توعام نا راضی بھیل گئی اور لوگون سے علانیہ کہاکہ مبت المال کے رویبہ کا یہ مصرف ننین ہے۔ بہرحال حضرت عرکے زمانے میں جوعا تین نبین و ہ عموماً امنت اورگارے کی تقین- بصرہ کا ایوان حکومت بھی اسِی تثبیت کا تھا ،البتہ فوجی عارتمین نهایت مضبوط اوستحکم بوتی تقیین-سنرکون اور گیون کا انتظام اگرحه نهایت عده تقالیکن براه راست حکوت کے اہتمام میں بندین تھا ۔مفتوحہ قومون سسے جومعا ہدہ ہوتا تھا اسین بیر شرط بھی ہوتی تھی کہ وہ<mark>ا</mark> سٹرک اوریل وغیرہ اپنے اہتمام اوراپنے **صرف سے** بنوائیگی۔حضرت ابوعبیدہ سے شام فتح كيا توشرا ئط صلح من بيا مرجمي داخل تقا-مكنَّ معظمه الرُّحيه مَرتون سے قبله كاه خلائق تھا ليكن اسكے راستے بالكل ديران اور بے آب بھے ۔ مفنرت عمر مثلہ همین حب مکر مفلم کئے توانکی اجازت سے مرینہ سے

لیگر کمی که هرم رمنزل برجوکیان اورسرامئن اورحشم طیار بهوشئے۔ شاہ ولی الٹرمهاحب

ك فتى البلان مؤربه - كل كتاب يزي مغرب من وعلى العليهم ارشاد الصال وبناء القناطر على الغا

ل موالهة والنج عبرى واقعات سليع صفح علم عين سرك وريل ونون كا ذكري التلك عبرى منو ٢٥٢٩ وطاورى صفيه س

ع کو ان کا انھل م

الم مغارسة بين منوره الله عني عركميان اورمرامين ازالة الخفارمين لكفته بين موازان جاراً نكه ساك بقصد عمره به كم محترمة تو خبر فرمود وزد يك محرب الرالة الخفار مين لكفته بين حرمين واقع انرسايها و بنا بهما سازند و برط به يكانيا نشده با الندوم وابه يكانيا نشده باكنند وصاف نايند و درمنازل كم آب جابهما راكنند تا برح باج باسراحت تمام قطع مراحل ميترستود "

شهرون کا آیا د کرنا

حضرت عمرکے زمانے میں جوج شہر آباد ہوے وہ جن صرور تون سے آباد ہوے اور جو خصوبیت میں اُن میں پیدا گی گئیں اُن کے لیا فات سر شہر آباریخ اسلام کا ایک شفہ کہا جاسکتا ہے۔
امنین سے بصرہ وکو فہ آیک مترت تک اسلامی آبار کے مُنظر رہے۔ عوبی بحق کی بنیا دیمین بڑی ا مخوکے صلی دارا بعلوم ہی در شہر سے جنفی فقہ جو آج تمام دنیا میں کچیلی موئی ہے اس کا شکر بنیاد کو فرجی میں رکھا گیا۔ اِن اسباب سے اِن شہروں کی بنیا د اور آبادی کا حافیل سے لکھنانا موزوں نہوگا۔

اس کتاب کے بیلے حِصّے بین ہم لکھ آئے بین کہ فارس اور مہند کے بحری حلون سے مطمئن رہنے کے سئے حضرت عرفے سیالے میں عتبہ بن غزوان کو شعیتن کیا کہ نبدرگاہ اللّٰہ کے قریب جمان بجرفارس کے فلیج کے ذریعے سے ہندوسان وفارس کے جمازات لنگر کرتے سے ایک شہر بسائین، زمین کاموقع اور منظر خود حضرت عربے نیا ویا تھا، عتبہ آگار شوگر کے میان اب بھرہ آباد ہے۔ بیان سیلے اور میں میں اسے جمان اب بھرہ آباد ہے۔ بیان سیلے کافدست میدان بڑا ہوا تھا اور جو کہ زمین کنگر کی تھی اور آئس بابس بانی اور عیارہ کاسامان

بسره

بقرہ سے دریا ہے وجلہ دین میں بہے اس کئے حفرت عرفے کا دیا کہ وجلہ سے
امیرہ کک منہ کاط کرلائی جائے جنا بخدا سکا حال کسی قد تعفییل کے ساتھ ببلک ورک کے بیان
مین گذر جکا - بصرہ کی آبا دی منایت جلد ترقی کرگئی بیان تک کرزیا و بن ابی سفیا آس کوزا بھاؤت میں گذر جکا - بصرہ کی آبا رہی منایت بلکتے بین کر بھری ذین کوئے بین اور بیاں کی زیرن اس متم کی تم کی بی بی مرا بلدان میں ایک بوری نامش کا جو قول نقل کیا ہے وہ زیادہ قرین تیا س ہے - ایسکے زدیکہ میں مین ہفذ بس راہ تھا جسک منی فارسی میں دو ہمت سے راستون "کے میں جو نکہ میان بیبت سی را بین ہرطرت کو مقین ایس سے اہلی جم اسکو ایس نام سے موسوم کرتے ہتے ۔ اسکی تصدیق زیادہ تراس سے ہرتی ہے کہ ایسکے آس بیس - شا بان عرب نے جمارتین طیب ارکرا بین مقین آئ کے نام بھی درامس فارسی در کھے سے شاؤ فور فی جودرا میل فور کاہ ہے دور معل فارسی در کھے سے شاؤ فور فی جودرا میل فور کاہ ہے دور معل فارسی در کھے سے شاؤ فور فی جودرا میل فور کاہ ہے دور معل فارسی در کھے سے شاؤ فور فی جودرا میل فور کاہ ہے دور معل فارسی در کھے سے شاؤ فور فی جودرا میل فور کاہ ہے دور معل فارسی در کھے سے شاؤ فور فی جودرا میل فور کاہ ہے دور معل فارسی در کھے سے شاؤ فور فی جودرا میل فور کاہ ہے دور میں فور کاہ ہے دور میں فور کاہ کے دور کاہ کہ در معل فارسی در کھے سے شاؤ فور فی جودرا میل فور کاہ کہ در معل فارسی در کھے سے شاؤ فور فی جودرا میل فور کاہ ہے دور میں در کھی سے موسوم کرتے ہے۔

مین، صرف آن لوگون کی تعدا د جنگے نام فوجی رحبطرمین د برجہ تھے ۰۰ ہزارا ور اُنکی آل اولاد ایک لا کھ ۲۰ ہزار تھی۔

یمان کی فاک کوعلم فضل سے جومنا سبت بھتی اُسکا اندازہ اِس سے کڑا چاہئے کرعاوم عربت کی بنیا رہیدن بڑی، ونیا مین سب سے بہلی کتاب جوعربی علم لغت میں لکھی گئی سیب سے بہلی کتاب جوعربی علم تعوم تقلقی کی بھی ہیں ا نام کتاب العیس ہے اور جو تعلیل بقبری کی تصنیف ہے۔ عربی علم عوومن اور موسیقی کی بھی ہیں ا سے ابتدا ہوئی۔ علم تخو کا سب بہلامعنف سیبو میر ہیں کا تعلیم یافتہ تھا۔ ایر بھی تبدین ہیں سے مسن بعبری ہیدن کی خاک ہے بہدا ہوئے۔

دوسرا شہر حوبصبی نے دوسرا شہر حوبصبی نے ہوئے۔ وارین دغیرہ حب فتح ہو بیکے توسعہ اوقاص نے صفرت عمر کوخلاکھا کہ بیان رکرا ہل عرب کا رنگ روپ بالکل بدل گیا۔
حضرت عمر نے جواب بین کلھا کہ اہل حوب کو وہان کی آب دہوا راس نہیں ہکتی۔ اسی جگھ تلاس کی زین ہوا راس نہیں ہکتی۔ اسی جگھ تلاس کی زین رتبلی اورکنگریا تھا اسی حتم کے کا مون پر مامور کھے۔ کو قرآئی زمین اتخاب کی ، بیان کی زمین رتبلی اورکنگریا تھی اور اسی وجہسے اِسکانام کو قرر کھا گیا۔ اسلام سے بہلے نعمان بن منذرکا خا خران جوات عرب کا فرمان رواتھا انجا باسے خت بھی مقام تھا اورا کی مشہور عاتر مین خورتی اور سدیرو فیرا اسی کے آس باس دائع باسے خت بھی مقام کو قدر النا کی خوات سے صرب ڈیڑھ والو اسی کے آس باس دائع جواب اِس مقام کو قدر النا تعرب النا میں خورتی عارض مجبوب کہتے ہے۔ کیونکہ ورفعہ میں کا فاصلہ تھا۔ اہل عوب اِس مقام کو قدر النفر آر مینی عارض مجبوب کہتے ہے۔ کیونکہ ورفعہ اسی کا فاصلہ تھا۔ اہل عوب اِس مقام کو قدر النفر آر مینی عارض مجبوب کہتے ہے۔ کیونکہ ورفعہ اسی عمرہ میں میں خوات سے صرب کرتے ہی تھی تالی کو خورتی النفر آر مینی عارض مجبوب کے عربی بھولوں مثلاً المحوات ۔ شقایق ۔ قیصوم ۔ خرا می ۔ کا جین زارتھا۔ ورفعہ تھی میں میں میں میان کا فاصلہ تھا۔ اہل عوب اِس مقام کو قدر ایس مقام کو قراب سے تعموم ۔ خرا می ۔ کا جین زارتھا۔ ورفعہ تعمی میں میں جوبی بھولوں مثلاً المحوات ۔ شقایق ۔ قیصوم ۔ خرا می ۔ کا جین زارتھا۔

کو ند

غرصن سئلہ ہمیں اسکی بنیا دستروع ہوئیا ور**مبیاکہ <del>حفرت عمر</del>نے تقیریج کے** ساتھ لکھاتھا ، ہم ہزارآ دمیون کی آبادی کے قابل مکانات بنائے گئے۔ <del>ہیاج بن الک</del>ے اہتمام سے ء ب کے صُدا حدا قبیلے جدا جدا مُحلّون میں آباد ہوئے۔ مثہر کی دعنع اور ساخت کے متعلّق خوا <u> صزت عمر کا حرری حکم آیا تھا کشاع با</u>ے عام ، ہم - ، ہم بات اورائس سے گھٹ کز ۳- ہم ہات ۱ ور ۲۰-۰۰ ہات چوٹری رکھی جامین اورگلیا ن ۲- ۶ ہات چوٹری ہون ،جامع مسج<sub>و</sub> کی عایت جوایک مربع لمبند نیوتره دے کرنیا ہی گئی تھی۔ اس قدر دسیع تھی کہ ہمین ،ہم ہزار آ د می السكتے تھے۔ ایسكے میر دیار طرف دور دو زبك زمین كھلی چیوڑ دی گئی تھتے -عارتین اوّل گھا نس پیونس کی نبین نیکن جب اگ لگنے کا واقعہ پین آیا توحفرت عم انے اجازت دی اورا مینط گارے کی عارتین طیّا رہومین۔جامع سبی رکے آگے ایک سیع المائبان بناياگيا جودوُسو إت لمباتها اورسنگ ُرخام كےستونون يز فائمُ كيا گيا تھا جونوشيرانی عارات سے نخال کرلائے گئے تھے۔ اِس موقع پر ہوبات یا درکھنے کے قابل ہے کہ با وجود ہے اُکہ در صائ نوشیروانی عارت کا کوئی دارٹ نہ تھا اورا صول سلطنت کے لیا نوسے اگر کوئی وارث موسکتا تھا توخلیفۂ وقت ہوا۔لیکن حضرت عمر کا یہ عدل دانصاف تھا کرمجوسی رعایا کو ا ن ستونون کیمیت ا دا کی گئی بعینی انکی تحنین حوقتیت تظیری و ه آنکے جزیبر می**ن محرا دی گئی مسج**سے دوسوات کے فاصلے پرایوان حکومت تقمیر ہواجسین مبت المال بعنی خزامے کامکان بھی شا م تھا-ایک مہان مانے مام بھی تعمیر کیا گیاجین با ہرکے آئے ہوئے مسافر قیام کرتے القے اورانکومت المال سے کھانا تما تھا۔

چند روزکے بعد مبت المال میں چوری ہوگئی ا درجو نکہ حصرت عمرکو ہرمبر حزیئی واقعہ کی خبرہنچی محق تخون نے سعد کولکھا کہ ایوان حکومت سجرسے ملا دیا جا سے چنا بچہ روز بیزنام ایک بارسی معارنے جومشهوراً شاوتفا اور تعمیرات کے کام رہا مورتھا نہایت خوبی ادرموزونی سے ایوان حکومت کی عارت کو برها کرمسی سے ملادیا۔ سعد نے روز مرکومع اور کا ریگرون سکے اس صلے مین دربار خلافت کو روانہ کیا ،حصرت عرف ایکی طربی قدر دانی کی اور بہتیہ کے گئے ر وزمینہ مقرر کر دیا ، جامع سی رکے سوا ہر میر فیبلے کے لئے جدا جدامسجدین تعمیہ موئین- جوفیبلے ا با دکئے گئے اندین تمین کے بارہ ہزارا و رزارے آٹھ ہزارا دمی تھے۔ا ورقب اُل حِآبا دکتے كَنْ أَنْكُ نَام حسب ويل من يسليم- تُقيّف- بهدان- تجيلة- نيم اللات. تغلب - بنو اسد-غنع وكنذة - أزد- مزينيه يميم ومحارب- اسدوعا مربجالة - جدمكية واخلاط - جبينية - نرجج - موازك وغيره وعنب ره-

یہ شہر حصرت عمری کے زمانے میں اس عظمت وشان کو بہنجا کہ حضرت عمرا سکو آسکا م فراستے سے اور در تقیقت وہ عوب کی طاقت کا اصلی مرکز ، بن گیا تھا۔ زمانہ ما بعدین اسکی آبادی برابر ترتی کرتی گئی کین نیم حصوصیت قائم رہی کہ آباد ہونے والے عمر ما عرب کی نسا ہے ہوتے سے مثالہ تا ہمین مردم شماری ہوئی تو ، ہم ہزار گھر خاص قبیلۂ رہیجۃ ومصرت اور ہم ہم ہزار اور قبائل کے تھے۔ اہل تمین کے ۲ ہزار گھر انکے علاوہ سے۔ زمانہ ما مبد کی تعیرات اور ترقیون نے آگر جی قدیم آثارات کو قائم نمین رکھا تا ہم یہ کچھ کم

تعبب کی **بات نبین ک**دمعض معص عمارات کے نشا نا**ت زمانۂ وراز تک قائم رہے۔** ہن طو<del>ل</del>

جسنے آکھوین صدی میں اس مقدّس مقام کو دکھیا تھا اپنے <del>سفزنا مہ</del>مین لکھتا ہے ک سعدبن وتعاص نے جوابوان حکومت بنایا تھا اُسکی بنیا داب بھی قا کم ہے '' اس ستہر کی ملمی حیثیت بیہے کہ فن تحو کی ابتدا سین ہوئی یعینی ابوالاسو دُویلی نے اوّل اوّل کونے قوا عد ہیں مبٹے کرمنصنبط کئے۔ فقہ حقیٰ کی بنیا دہیین پڑی۔ اہا م ابومنیقنہ صاحب نے قاصیٰ ابویوسٹ وغیرہ کی شرکت سے فقہ کی جومحلس قائم کی و پہین قائم اکی۔ حدمیث و فقہ- اور علوم عربت کے بڑے بڑے ایمۂ فن جوبیا ن بیدا ہوئے ان بین ابرام يخفي- حا د- امام ا بوحديفه- اما م شعبي يا دگارزمانه سقطه فنطاط عمزن العاص سخب اسكندرية نتح كرايا توبيناني وكثرت سے وہاں آباد تقے عموہًا شہر تھویے کر کئل گئے ، آنکے مکانات خالی دکھیک<del>ر عرد بن العاص</del> نے ارادہ کیا کہ ہی کوا مٹنقر حکومت بنا مین۔ جایخہ دربا بہ خلافت سے اجازت طلب کی <sup>، حصزت ع</sup>ر، دریا کے حائل ہونے سے بہت ڈرتے تھے۔ بھرہ و کوفہ کی آبادی کے وقت بھی امنیروں کولکھا تھا کہ شہر جہان بیایا جاسے وہان سے مرینہ تک کوئی دریا را ومین نہ اسٹے جو کہ اسکندریہ کی راه مین دریاے نیل پ<sup>و</sup>تا تھا اس کئے اُسکوستقربایت بنا نا <del>حفزت ع</del>ریفے ناپیندکیا۔ عمروین العاص-اسکندربیسے چل کرمقراتشمع مین آئے ، یہان آنجا وہ خیمہ اب مک اسی مالت سے کھڑا تھا جسکووہ اسکندریہ کے حلے کے وقت فالی چیوڑ سکتے سے ، جنا بخیراسی خیمے میں *اُترے اور وہن نئی آباد ی کی مبنیا دوا*لی۔ ہرمر ویسلے کے گئے مل كونروىمره كے حالات طبرى - بلا ذرى - اور عجم البلدان سے لئے محتے ہين -

لگ الگ احاطے کھینچے اورمعا ویہ بن خدیج - منٹر کمپ بن سمی - عمروبن محزم - حیویل بن اشرۃ ومنعين كياكهب فيبليه كوحها ن مزاسب مجيين آبا دكرين يحس قدر محكِّه اُسوقت عقراور بوقبائل اَن مِن آباد ہوئے اُنکے ام علامتہ مقریزی نے تفقیل سے لکھے ہیں۔ <u>جامع مسجہ</u> خاص اہتام سے بنی۔ عام *روا*بت ہوکہ ، مصحا یہ نے حمیع ہوکرایسکے قبلہ کی سمت متعین کی ، اِن صما برمن زبیر-مفدا د-عبا و ق-ابو در دار-ا وربرس برسے اکا برصما به شربک سختے؛ میسبجد**، ۵** گزلمبی اور ۳۰ گز حویری تنتی متن طرف در وازیسے تحقیحت میں سے ایک ک*ارمت* لے مقابل تھا اور دونون عارتون مین سائت گز کا فاصلہ تھا -عروبن العاص نے ایک مکان ، فاص حفرت عمرے لئے تغمیر کرا یا تھا لیکن جب حفرت نے لکھیے اکہ میرسے کس کا م کاہے تو وہان بازارآباد کرا باگیا۔ چونکہ اس شہری آبادی تھیگاہ شروع مونى مى اس كئے إسكانام فشط اطرار اجتك منى عربى بين حنيد كے بين-آبادى كا سَن ۲۱ ہجری ہے۔

منطاط کی وستآبادی ونطاط نے نهایت جلد تی کی اور اسکندریہ کے بیاے مقرکا صدر مقام بن گیا۔ امیر معا ویہ کے زمانے میں ۴۰ مزارا ہی عب کے نام وقترین قلمبند سکتے۔ موترخ قضاعی کابیان ہے کہایک زمانے میں بیان اسم سجرین ۶۰ مزار طرکس ۱۱ تام سے۔ رسکی وسعت اور مرضم کے سوسالان کی کٹرت کو مقرزی نے کئی صفر میں تفصیل سے لکھا ہے۔ مت تک پیٹمرسلاطین مصرکو با پی شنت اور شدّن و ترقی کامرکزر ہا۔ علامۂ بشاری جینے چو معتی صدی میں دنیا کا سفرکیا تھا اِس سٹمر کی سبت اپنے جغرافیہ میں لکھتا ہے تا سنے بغیل ادم فنے کا حسلام ۔ خیل ندا المغرب۔ البس فی الاسلام آلابر عجالدس سے معه و کا احسن جملامن اهله و کا البس فی الاسلام آلابر عجالدس سے معام و کا ناسخ مغرب کا خزانه اورا سلام کا فخر ہے الکن حرک میں بیان سے زیا دو کسی جامع سجو میں علمی علمی بین ہوتین - نریمان سے زیادہ کسی شہر کے سامل پر جہازات لنگر ٹوالئے ،،
میں شہر کے سامل پر جہازات لنگر ٹوالئے ،،

موصل یه تفام اسلام سے پیلے بھی موجود تفالیکن اُسوّت اِسکی عالت یمتی کوایک افلاء وراُسکے پاس عیمایئون کے چندمبدھے ، صفرت عرکے عہد بین شہر کی حیثیت سے الماد ہوا ، ہر نمہ بن عوفی آباد کئی افر موا بالی بنیادر کئی اور قبائل عوب کے تعدد مین شہر کی ایفاص المام سے بھی کرائی۔ ملکی حیثیت سے پیشہرا کیک خاص حیثیت رکھتا ہے بینی اسکے افر یعے سے مشرق اور مغرب کا ڈوانڈ الماہ ہے اور شایدا ہی مناسبت سے اسکانام موسل در کھا گیا۔ یا قوت مموی نے کھا ہے کہ پیشہورہے کو دنیا کے بڑے شہر تین ہین ، نیشا پور حومشرق کا دروازہ ہے ، اور وحشرق ومغرب کا دروازہ ہے ، اور روس جومشرق ومغرب کا گذرگاہ ہے ، بعنی آدمی کسی طرف جانا جا ہے تو اسکو بیان سے صرورگذر زائر تاہے ، اور میں موسل اس شہرتے بھی رفتہ رفتہ نما بیت ترقی کی چنا بخد اپکی وسعت اور ظفت کے حالات

معجمالبلدان اور عبزا فیهٔ نشاری وغیرہ میں تفصیل سے ملتے ہیں۔ جینرق یہ ایک جیوٹا ساشہرہے جو دریا سے نیل کے عزبی جانب منطاط کے مقابل واقع ہے۔ عمروین العاص - اسکندریہ کی فتح کے بعدجب منطاط مین آئے تواس غرص کے سکتے

سك فتوح البلوان ازمسخة ١٩٣٣ س-

توسسل

ونره

کر رومی، دریا کے طرف سے نبیر هائین، تقوری سی فوج اس مقام مین تعین کردی جسین حمیراورازد وہمدان کے قبیلے کے لوگ تھے۔ ضطاط کی آبادی کے بعد <del>ع</del>سم بن العاص نے ان لوگون کو بلالینا چا یا لیکن انکودریا کامنظرامییا بیندآیا تقاکده یها سے ہٹنا نہیں چاہتے تھے اور حبّت میں پن کی کہم حبا دکے گئے بیان آئے تھے اور کسیے ہرہ مقصد کو حیوٹر کرا ورکہیں نہیں جاسکتے ۔عمروین العانس نے اِن حالات کی اطلاع حنرت عمر کو دی، وہ اگرچه دریا کے نام سے گھبراتے تھے لیکن مصلحت دکھیکراجازت دی اور ساتھ ہی یہ کم بھیجا کہ اُنکی حفاظت کے لئے ایک قلعہ تمیر کیا جائے خیا بخدائے میں فلعہ کی مناور ٹری ورستناهمين بكرطيار بواسيات إدركهنك قابل بك كدب فلعه نبنا شروع موا توقبيله ران نے کہا کہ ہم نا مر دون کی طرح قلعہ کی نیا دمین بنین رمہنا جا ہتے ، ہما راقلع ہماری لنوارہے ، چنائخہ یہ تعبیلہ اورانکے ساتھ تعبض اور تعبیلیون نے قلعہ سے با ہر گھکے میدان امین دیرے <sup>ط</sup>والے اور مہشیہ وہین رہے۔

حضرت عمر کی برکت سے یہ حیوٹا سا مقام بھی علمی حیثیت سے خالی نہیں را جنا بخبہ بڑے بڑے محدث یہان بیدا ہوئے اپنین سے تعبض کے نا م معجمالبلدان مین کورہی<sup>ہی</sup>۔

اسلام سے پہلے دنیا میں اگر حیہ بڑی بڑی عظیم انشان لطنتیں گذر کی تھیں جنگی ہیتا یاد گارین خود اسلام کے عمد می*ن بھی موجو دھین لیکن فوجی مسٹم ج*ہاں جہا

ا جنیرہ کے متعلق مقرزی نے نهایت تفصیل سے کام لیا ہے 11

اصول سیاست کے خلاف تھا۔روم تبیرین حبکی سلطنت کسی زمانے میں تمام وسیب چھا گئی تھی فرج کے انتظام کا یہ طریقیہ تھا کہ لک بین جو لوگ نام ومنو دکے ہوتھے تھے اور سپه گړی دسپه سالاري کا جومهر رکھتے تھے انکوٹري بڑي جا گيرين ديجا تي تھين ا وربيعمد ا یا جا تا تھا کہ خبگی مہآت کے وقت ۔ اِس قدر فوج لیکرچا صربرونگے ، یہ لوگ تما م ملک ہیں جھیلے ہوئے ہوتے تھے اورخاص فاص تعداد کی فوجین رکھتے تھے، لیکن اِن فوجون کالعلّق ابراهِ راست سلطنت سے منبین ہوتا تھا۔ اوراسِ وجہسے اگر پیلوگ بھی عَلَمِ بغا وت بلندکر<del>۔</del> تحقے توانکی فوج انکے ساتھ ہوکرخود سلطنت کا مقابلہ کرتی تھی۔ایس طریقے کا مام نیوڈ ک تم تھا اور بیفوجی افسر ہیر ن کہلاتے تھے ، اس طریقے بنے یہ وسعت حاصل کی کہیر<sup>ن</sup> او بھی اپنے نیچے اس متم کے جاگیردارا ورعلاقہ دارر کھتے تھے اورسلسلہ سبالہ ہبت۔ طبقے قائم ہوگئے تھتے ، آیران مین تھی قریب فریب ہی دستورتھا ، فارسی مین کیومزان اور دہقان کہتے ہیں وہ اسِ متم کے جاگیردا را ورزمیندار تھے ، اس طریقے نے روم کی لطنت كودر صل برباد كرديا تقا اوراج توعام طورير سلمب كديه نهايت براطر بقيا تقا-لِ جا یا تھا دہی قرعہ دال کرتفتیم کردیا جا تا تھا ،اس زانے کے بعد کھے ترقی ہوئی تو دہی وم کا فیوڈ اسٹم قائم ہوگیا جنا بنہ اسلام کے بعیرات یم کا فیوڈ اسٹم قائم ہوگیا جنا کنہ اسلام عرب مین شأ ہانِ ہیں وغیرہ کے ہاں فیج کا کوئی نتیفر بند وسیت نتین تھا۔ اسلام کے أغازتك إسكى صنرورت ہى نبين مبيش آئى ، حصرت ابو مكر كے عمد بين صرف اس قدر بہو

فزمی نظام رومرامیایر مین

نرجی نظام فارس مین

فرجی نظام فرامش می

الغنیت سے حیں قدر بحا وہ سب لوگون پر ۱۰-۱۰ روپیے ۔ سے تعتبیم کردیا گیا، دوسرے سال آمدنی زیادہ ہوبی توبہ تعیاد بنل سے منتو کھ بينج گئی ،ليکن نه فوج کی کچيرنخاه مقرر موئی، نه اېل وج کا کوئی رحبطرنیا، ـ نه کوئی محکمهٔ خباکسه ما نم ہوا<sup>، حضرت ع</sup>مر کی ا و ائلِ خلافت تک بھی ہی حال ر ہا لیکن *مشلبہ ہی می*ن <del>حصرت ع</del> نے اِس صیغے کو اِس قدرمتظم اور ما قاعدہ کردیا کراستونت کے لیا ط سے نتیب ہوتا ہے ۔ حضرت عمرکے توجہ کرنے کے مختلف اسباب بیان کئے مختے ہیں۔عام روایت یہ ہے کہ ھنرت ابوم رزہ جو تجرین کے حاکم مقرّ رکئے گئے سکتے پانخ لاکھ دریم لیکرمر بنیمیں اسنے اور حفرت عمر کو اسکی ا طلاع دی ، پانخ لا کھ کی رقم ائس وقت اس قدر اعجو بہجیزیتنی کہ حضرت عمر مے فرما فیرہے! - کہتے کیا ہو؟ اُکھون نے بھر ایخ لاکھ کہا ، حضرت عمر نے فرمایا تکوُنٹی بھی آتی ہے؟ بوم رزه نے کہا ہاں، یہ کہکرانج و فولاکھ لاکھ کہا۔حضرت عمرکویقین آیا تو محلے ستورک نعقد کی ا ورراے پوچھی کها<sub>ی</sub>س قدر *زر کشیر کین کر صرف* کیا جائے ؟ حضرت علی<sup>، حضرت عمّان</sup> ور دیگرصیا بہ نے مختلف بخویزین مپین کمین ، ولیدین ہشام نے کہا کوئن نے شام کے والیان ملک کو دمکیھا ہے کہ اُنکے ہان فزج کا دفترا و رمبطر مترتب رتباہے ، حصرت عمر کو یہ ے بیسنداً بی ا درفوج کی ہم نویسی اور ترتیب دفتر کا خیال بیدا ہوا ؓ-ایک اور روایت وہندہ نے سلاطین عجم کا حوالہ دیا اور یہی روایت قرمن قیاس ہے بونکه حب د نترمزب موا تواسکانام دیوان رکها گیا ادر به فارسی نفظههی، - دبشان- دبیر

ك مقرزى مفيرً ٩٠- اورفتوح البلدان مفيرً ٩٧م٠-

ر فتر۔ ویوان سب ایک ما دّہ کے الفاظ ہین حبکامشترک ما دّہ **دب**ا یک ہیلوی لفظ۔ حیکے مین گاہ رکھنے کے ہیں۔

ببرحال مصليهمين حفرت عرف فوج كاايك متعقل محكمة فائم كزما جاباءاس باب المهلك امن أن كى سب سے زیاد ہ قابلِ لحاظ جو بچویز تھتی وہ تمام ملک كا فوج بنا ناتھا۔ انھون نے اِس مُئلے کو کہ ہرمسلمان ، فوج اسلام کا ایک سیاہی ہے ، اِ قاعدہ طورسے علمین لانا چا الیکن چنکه ابتدار مین اسی تغییم کمن نه هی اول قرنس اور انصار سے ستروع کیا۔ مرنیۂ منوّرہ مین اُسوّفت تین شخص مبت بڑے نشّا ب اور حساب کتا ب کے من من أشا ديقے - مخزمته بن نوفل مجبيرين طعم، عقيل بن ابي طالب علم الانشاب عرب کامور وزنی من تھا۔ اور خاصکر یہ تبینو کئی بزرگ اِس من کے لحاظ سے تمام عرب مین متا زیخے ، حفزت عربے اکو گلاکریہ خدمت سپر دکی کرتمام فرلین اور انصار کا ایک و خترطیار کرین حس مین مشخف کانام ونسب مفصلاً درج بوزان لوگون سے ایک نقشه مناكر بين كياحس مين سب سے پہلے بنو ہاشم ھے حصرت ابو مكر كا خاندان پھر حضرت عمر کا تعبیا بھا ، یہ ترتیب اُن لوگون نے خلافت وحکومت کے لحاظ سے واردی تھی لیکن اُگر وہ قائم رہتی توخلافت ۔خودغرصنی کا اکہ بن جاتی۔حضرت عمرے فر مایا کہ دریون نہیں ملکہ آنحفزت کے قرابت دارون سے شروع کروا ور درجہ بدرجہ جولوگ میں قدر آنحفزت سے ك جا خطنے كتاب البيان والتين د عبدو دم صفحة ، ٣ مطبوعهٔ معربين لكما ہے كه تام قريش مين عابر شفص اشعار عرب ١ و ر ا سناب واخبار کے ما نظ مقے مخرمتر بن نوفل ا ابوالحجم ، حواطيب بن عبدالعزى ، عقيل بن ابى طالب ١١

| وور ہوتے گئے ہیں اِسی ترتب سے آنکے نام آخرمین تکھتے جا ؤربیان تک کرحب میرے                                      |  |
|---|--|
| قبیلے یک نومت آئے تومیرانا م بھی لکھو''- اِس موقع پریہ یا در کھنا جا ہے کہ خلفاے اربعمین                        |  |
| سے حفزت عمر کا تنب سے اخیرمن جاکرا تخفرت سے لما ہے، غوض اس برایت کے   |  |
| موافق رحبطرتيا رمهوا اورحسب ذيل تنحوا بين مقرر مهومينك  |  |
| تفتيم مراتب   |  |
| جولوگ خبگ بدر مین شریک تھے۔   |  |
| مهاجرین مسِش اور شرکا ہے جنگ مِن مد-  |  |
| فع مکہ کے پہلے بن لوگون نے ہجرت کی۔   |  |
| جولوگ فتح مكرمين ايمان لاك-   |  |
| جولوگ خبگقا دسیا در برموک مین شریک تھے ۔  |  |
| ا ہل بین-   |  |
| قادسیه اور برموک کے بعد کے مجا بدین-  |  |
| بلا اتبيا زِ مراتب-   |  |
| جن لوگون کے نام درج و نقر ہوئے اُنلی بیوی بجو ن کی تخواہین بھی مقرّ ہو میکن                                     |  |
| چنا پخد میگا جرمین اورانصار کی بیوبین کی تخواه ۱۰۰۰سے ۲۰۰۰ ورم کک اورا بل بررکی                                 |  |
| مله تخابون كي تفييل مي خلف رويتين بين يين الدان الخراج منفيه، ومقرزي طدا ول صفي ١٠ وطا ذرى صفي ٢٠٨ وليقو في صفح |  |
| ٥ ١٠ وطرى سفر ١١٣٦ كيميانت كونتى الامكان مطابق كرك فكها ب م،  |  |
|   |  |

حبس قدرآومی ویچ ِ رمبطرموئے اگر دبیب درحقیقت نوج کی مثیت رکھتے تھے لیکن اُن کی د'وشین ترار دیگئین-

مل اس من براک امر منایت توقیک قابل م و ، یہ کا رست سے ظا ہر بنون کا خال ہے کہ حفرت برنے تام عرب کی جرتنواہین تقرم کین اُسکونو بھینے سے جندان مِلْتی نیین بلکریر فامِ عام کی فوض سے مقا ، لیکن یہ نایت غلافیا ل ہے ، اواً توجیان موزون نے اس واتعکا خانِ زول بیان کیا ہے لکھا ہے کہ دلید بن ہ م نے صفرت عمرسے کہا قال جیت النشام فراست ملو کھا قال دو نوا دیوانا و جین اُ اجنگا قلد قون دیوانا و جین کی جند لفا خذ بفول مین مین نے شام کے ادشا ہوں کود کھا ہے کوہ دفترا ور نوج رکھتے ہیں آب بمی فتر

دوسرے یک و بن او گون سے جگی مذبت نئین ایمانی متی اور قدیم جنگی مذبت ان کا استحاق بھی بنین رکھتے تھے صفرت عرائی تخوا ا منین مقرر کرتے تھے اسی بنا پر کئے کے لوگون کو نخوز ، نیس لمی متی ۔ نتوج البلدان بین ہے ان عمد کال کا بعظی العسل می کئے اللہ میں مقرر نے موانشین کرون نے موزت البر مبدر ہو سے نخوا ہوں کی در فوا سے مطاع اللہ موجہ کے اور می کی در فوا سے مقام میں رہنے والوں کی نخوا ہیں مقرر نہر ما بین محوانشین کی در زئر اللہ موجہ کے اور میں رہنے والوں کی نخوا ہیں مقرر نہر ما بین محوانشینوں کار در نئر نئین بھر مہد کی اللہ موجہ کے در مرسل میں اور بھی مبت سی تم کے وگ شامل محق شلاً جولوگ قران مجمد حفظ کر لئیے گئے البت اس میں نئے نئین کا قبل اور جو کے در مرسل میں اور جو میں میں من میں صاحب کمال متھے ، لیکن استقرار سے معلوم ہوتا ہے کے در فتہ رفتہ یہ خاط محت جو مبذورت اختیار کیا گیا تھا مِنتا گیا جانجہ ا

一つ なっかっかっ

اسی معنون میں آگے ایک جب اُ تی ہے ،۱

١) جو ہرو تت خبگی مهات میں مفرف رہتے تھے۔ گویا یہ فوج نفام نعنی اتناعدہ فوج تھی۔ (٧) جومعمولاً اینے گھرون ریر رہتے تھے لیکن صرورت کے وقت طلب کئے جاسکتے تھے انکو عوبی مین مطوعه کتے ہیں اور آج کل کی اصطلاح میں اس متنم کی فوج کو والنشیر کہا جا تا ہے التبه آنا فرق ہے کہ آج کل، والنٹیر ننوا ہنیں ایسے۔ فوجى نظم دنسق كايه بيلاديبا جيرتفا اوراس وجهسے سين بعض بے ترتيبان تھي تقين-، سے بڑا خلط مجت یہ تھاکہ فومی تنخوا ہون کے ساتھ دیلیگل نخوا ہیں بھی شامل تھیں و د ونون کا ایک ہی رحبطرتھا لیکن رفتہ رفتہ تینی *سالت می*ن <u>حضرت عمرنے</u> ا<sub>یس صینفے کواہر قام</sub> مرّب ا و**ر**نتظر کردیا کرخالباً اِس عهد تک کمین ا و رکیمی نبین ہوا تھا۔ جنا بخہم ایک ایک مجز بی ا تظام کواس موقع برنهایت تفعیل سے لکھتے ہیں جس سے معلوم ہوگاکہ عرب کے ابتداے تترّن مین انتظامات نوجی کی اِس قدر شاخین قائم کر نی ا ورا یک ایک شاخ کا اِس مدّ بک نرتب اورباتا عد وكرنا أسى تحض كاكام تفاجز فا روق اعطم كالعتب ركها تفا-اس صیغے مین سب سے مقدم اوراصولی انتظام کمک کا خبگی حثیت سے محتلف حقتون ن بقیهم کزنا تھا جضرت عمر نے سنتھ میں نوجی اور ملک جنیت سے ملک کی تربعتبیر کیں **ملک**ی اور **فوجی** مل*ی کا حال دیو*انی انتظامات کے ذکرمیں گذر حکا **فوجی حیثیت سے بند بڑے بڑے فوجی** رکز قرار دیے جنگانام تجنبررکھا اور ہی اصطلاح آج تک فائم ہے 'آنکی تفضیل ہے ہے **کے مبدی تین کیلئے دکمیوفترح البلدان صفح ۱۳۳۶ س**ترخ میقوبی نے واقعات مسئلہ میں لکھا ہے کواس سال حفرت عرفے فرمی صدر م ئىكىن بوزخ خۇرنى مردىلىملىن - جزىرە - مۇس - ادرىتسىرىن كانام كىھاب، يېم يىخىلىلى ب-

ۆمىمىدر نقامات

مَرْینه- کوّفه- لَعِبَرُه-موملَ- منطأً طمعه- وَشُقّ جمعنَ - ارد أَن فِلسطین - مفرت عمرکے زانے مین فتو مات کی حد، اگر حیہ بلوحیتان کے ڈاندشے سے مِل کُئی تھتی لیکن حومالک آئینی مالک کھے جاسکتے تھے وہ صرف تواق مصرحتریہ واور شآم تھے، جنا بخداسی اصول پر نوجی صرفوالت بمی اہمنی مالک مین قائم کئے گئے ۔موسل جزرہ کا صدرمقام تھا۔شام کی وسعت کے الحافات وان متعدد صدر مقام كرنے منرور محت إس كئے ومثن فلسطير جميس اردن چارصدرمقام قراروئ ونطاط كى دوبس جواب قامره سى بدلگياب يتمام مصررا فرزا تما العبو کوفہ یہ دُر شہرفارس اورخوزسان اورتام مشرق کی فقوطات کے دروازے تھے۔ ان صدرمقامات مین جوانتفامات فوج کے لئے تقے حسب ذیل تھے۔ را) فوحون کے رہنے کے لئے اِرکین تقین-کوفہ- تعبرہ - ضطاط- یتنیون شہرتو درہال فوج کے قیام اوربود وباش کے لئے آبا دہی گئے گئے گئے۔ موصل می عجمیون کے زمانے کا ایک قلعہ اور جیند گرے اور عمولی مکانات تھے۔ <del>ہرنمہ بنء ف</del>خۃ ازدی ڈگورزموصل نے حضرت عمرتی ہدایت کے بوحب داغ بیل ڈال کراُسکوشہر کی صورت میں آباد کیا اور عرب کے خملف التبلون كے لئے جدا جدا محلے بسائے۔ (م) ہرجگہ بڑے بڑے مطبل فانے تھے جن مین مارجار مزار گھوڑے ہرو قت

(۲) ہرجد برف بہت اسب مانے سے بن بین جارجار ہرار ھورہ ہر و سے سا زوسا مان کے ساتھ ملیّا ررہتے تھے۔یہ صرف اِس غرمن سے مہیّا رکھے جاتے تھے کد ذفتۂ منرورت ببیش آجا ئے تر ۳۲ مہزار سوارون کا رسالہ فزراَ ملیّار ہو حاسطے۔ سے اعمین

كة اين فرى موريده مري كان لعراريدة المدن فرس عملة لكون ان كان في يتحافي قبلة قصراً لكونة ومالكونة والمن مني مخو منها و يعليها فرع بن معاوية وفي كاع صور كالمصاوالة انتها في قدم فا فا التمولية بستوم والان ويستعمل لناس ١٢

فومی اکین

ا گمورونکی بردا

جزیره والون نے ذفقہ بغاوت کی توہی تدبیر کلین طِفر مُقیری-ان گھوڑو نکی ریز اخت اور رسبت میں نہا ہا اہمام کیا جاتا تھا۔ مرینہ منورہ کا اتطا<del>م حضرت عمر نے</del> خود اینے اہمام میں رکھا تھا۔ شہر<u>سے جا</u>ڑا منرل برایب جرانگاه طیار کرائی تنی اورخوداین غلام کوحبکانا مهنمی تھا اسکی خفاظت اوزگرانی کے لئے مقرر کیا تھا۔ اِن گھور ذکی رانون پر داع کے در بعے سے یہ الفاظ لکھے جاتے تھے جیس فی سبیل اسه کوفه مین اسکا اہمام سلمان بن رمیقه الباہلی کے تعلق تھا جو گھوڑون کی شناخت اور پرداخت من کمال رکھتے تھے بیان کک کوآ تکے امین نیصوسیت دخل ہوگئی ہی وی<sup>رائن</sup> كة ام سے پارے جاتے تھے۔ جاڑون مین پر گھوڑے طبل خانے مین رکھے جاتے تھے۔ خیا بخیر چوکقی صدی مک پیمگر آرتی کے نام سے مشہور کھی جیکے معنی اطبل نما نہ کے بین اور اپنی کھا فاسے عمی اِسکوآخرشاہ جہان کہتے تھے۔ بہارمین میگھڑے ساحلِ فرات پرعاقول کے قریب شاداب چرا گاہون میں جرائے جاتے تھے سلمان ہمیتہ گھوڑون کی رمبت میں نمایت کوش رہے گتے ، اورمہشیرسال مین ایک د فعد گھوڑ دوٹر بھی کرا تے سکتے۔ خا صکرعہ ہنسا کے گھوٹر ون کو اعنون نے نهایت ترقی دی،اس سے سیلے اہل وب،نسل م<sup>ا</sup>بان کی روہنین کرتے تھے ،سب سے میلے سلمان نے بیا تمیاز قائم کیا چنا پنیجس گھوٹیے کی ان وہی نمين بوتى نقى أسكو دُوغلاقرار دكير تقتيم نيتميت مين سوار كوهيتے سے جو وم كرديتے تقتے۔ 4 ھزت ورنے کھوڑون اورا وخون کی پرویین ورپرداخت کے لیے وب مین متعدد جوا گاہین ملیا رکزائی تھیں۔ سے بڑی جرا کا ومتعام رمغرہ میں تھی جور زَرَنةِ رہ سے جاڑرنزل کے فاصلے برخد کے ضلع میں داقع ہے۔ یہ ج<sub>ا</sub>گاہ- ، امیا لم بی ا دراسی قدر جوٹری گئی۔ زدسری مقام **ضرحہ م**یں تھی جو مکتر منظر سے سأت منزل رہے۔ ہلی وست ہورون سے چند میٹی ایتی ہمین قریراً جالینی خرا و تمٹ پر ورش باتے تھے۔ اِن حراکا ہون کی رر زینفیسل ملاصته الوفا إخباردا المصطفع مطبيعة مصرفتين و ووه ويسيم والكه كنزاهال عليه صفي اسس- من كتب جال من سلمان بن ربيم كا تذكره و كيموه

نبع کا ونتر رسد کاغلّه

فرم تصارنا

فصره كا ابتام جزر بن معاوية كم تعلّق تقاج صورية ابهوازك كور نرره حكي عقر-رمع ) نوج کے تعلق ہرستم کے کا غذات اور دفتر انہی مقامات میں رہتا تھا۔ رہم) رسد کے لئے جوغلّہ اورا جناس مہیّا کی جاتی تقیین وہ انہی مقامات میں رکھی جاتی تقیین اورہیین سے اور مقامات کوجیجی *جا*تی تقیین-ان صدر مقامات کے علا وہ حضرت عمر نے پڑے بڑے شہرون اور مناسب مقامات مین منایت کثرت سے فوجی چھا ؤنیان قائم کین- ا در بوب کوتمام مالک مفتوحہ پر بھیلادیا الرّحيه يدانخا عام صول تعا كرجو شهر فتح هوتا تقا اسى وقت ايك مناسب تعدا دكى فوج وہان متعیتن کردی جاتی تقی جو و ہان سے گلتی نه تقی۔ جنا پنہ حضرت ابوعبیدہ نے حب شام فتح کیا ومرضلع مین ایک عامل مقرر کیا جیکے ساتھ ایک معتد یہ فوج رہتی ہتی ،لیکن امن وامان قائم المونے بر همی كوئى براضلع يا شهراسيا نه تھا جمان فوجي سلسارة الم نهين كيا گيا-مخلية من حضرت عمر نے حب شام كا سفركيا تو أن مقامات مين جمان ملك كي منز و ختمن کے ملک سے ملتی تھی بعنی دلوک بہنیج ، رعیان، قورس، نیزین، انطاکیہ وعنیہ ہ د عربی مین انکو فر وج یا تغور کهتے ہیں ) ایک ایک شهر کا دورہ کیا اور **مرشم کا فوجی ط**م ونسق *او* مناسب نتطامات کئے۔جومقامات دریا کے کنا رہے پرواقع سکتے اور ملاد ساحلیہ کملا تو کھتے كمه نت البدان سؤرم وامين ب كان المسلمة كلم افتحام ل بنة طاهرة ال عند سلول سبوافها قل

من بيناج لهااليه من المسلين فان حدث في شي منها حدث من فل لعدوسرب البهاكل مداد ارمني اما

ين عود ولي ابق عبيدة كل كورة فقها عاملاوضم البيب اعتمل المين وشين النواحي المعن ف

ربینی عسقلان با فای قیداری ارسون عمل صور بیروت اطرسوس صیدا ایاس افرقیا چونکه رومیون کی بجری طاقت کی زوپر صقر اس سئے اسکا ستقل جداگا نه انتظام کیا اور اسکا افتر کل عبد اللہ بن قبیس کو مقر کیا ۔ بانس چونکہ غوبی فرات کے ساحل پرتھا اور عواق سسے ہم سرحد تھا ، وہان فوجی انتظام کے ساتھ اس قدراو رافنا فدکیا کہ شامی عرب جواسلام قبول کر میچے تھے آباد کئے سولٹ مین حب بزیہ بن ابی سفیان کا انتقال ہوا توانکے بھائی معاویہ نے حضرت عمر کواطلاع دی کہ سواحل شام پرزیادہ طیاری کی صرورت ہے جمشرت عمر نے ہی ہوئی وقت حکم بھیجا کہ تام قلعون کی نئے سرسے مرّمت کرائی جائے اورائ میں فوجین مرتب کیا بین اسکے ساتھ تام دریائی منظر گاہون پر بیرہ والے قعینات کئے جائین اوراگ روشن رہنے کا انتظام کیا جائے۔

----اسکندر میمن به انتظام تھاکئ وین ابعاص کی انسری بین جس فدر فوجین تقیین اسکی

المن الدين كانوا بالشاع فاسلى ابعدة من والمسلمة والشام والعراق والمعابية وست فرج الشام و المسالح المن المعارف و المعارف

عد نترة البلدان صفي ١٢٠ من من التحمين العمرين الخطاب بعد مون اخيد يزيار المعاللة بنائي المعاللة بنائي المعادة المحمس المعادة المعادة

ایک چوتھائی اسکندر میرے کئے مخصوص تھی۔ ایک چوتھائی ساحل کے مقامات میں رہتے گئی ا باقی آدھی فوج خود عروبن العاص کے ساتھ فسطاط میں آقامت رکھتی تھی۔ یہ فوجین بڑے بڑسے وسیع ایوا نون میں رہتی تھیں۔ اور ہرایوان میں انکے ساتھ ایک عراقیت رہتا تھا جو آنکے قبیلہ کا سردار ہوتا تھا اور حبکی معرفت انکو تنخوا ہیں تھیں ہوتی تھیں۔ ایوا نون کے آگے صحن کے طور پر وسیع افتا وہ زمین ہوتی تھی۔

سلامة من حب مرقل في درمايي راه سي مصر رجله كرنا چا با تو حفزت عمر في مام وال پرفرجی جِعا ونیان قایم کردین بیان تک که عمروبن العاص کی مانختی مین حس قدرفوج هتی اسکی ایک چوتھائی اپنی مقامات کے لئے مضوص کردئ عیسسراق میں بصرہ وکوفہ اگرجیہ غود محفوظ مقام تحقّ - خِيا يخه خاص كوفه مين چاليس منزارسا ہى بميثه موجود رہتے تھے اورانتظام يتقاكه ان مين سے ١٠ ہزار- بيروني متمات مين مصروف ركھے جائين - تامم ان اضلاع مين عجمون کی جو**فوجی جھا ونیان پیلےسے** موجود تھین از سرِنوتعمیرکرکے فوجی قوّت سے مصنبوط کوئین خرىيەاورزا بوقەمىن سأت چيونى چيونى چيا ؤنيان تقيين وەسنىپے سرسے نتميه كردى كئيتى-صوبۂ خوزستان، مین نهایت کثرت سے نوجی چیا ونیان قایم کی کئین جیایخ ہنرتیری، منا ذرہ ك مقرزى مداول مغير، ١٦٠ بين م وكان كل عربيت فض بانن ل فيه بمن معه من اصحابه والمخذوا هذه اخابلة الله وكموطري من ١٦٥ ومقرني معن ١٦٠ - سل ايغ طرى معنده ١٨٠ من عكان بالكوفة اذ ذاك اربعب ن المقدمقاتل وكان بغن وهذين التغرب واى لرى واذربيجان م عرعشري الأحد ف كاسته ككان الح ليصيبه فكل اربع سنين غرفة ١٢ كل فتوح البلدان معر ٥٠٠٠

لك طيري صفح ٥٠ ٢٩-١١

سوق الاہواز-سرق مرمزان سوس، بنیان، جندی سابور-مهروانقدق، یتام تفاات وجون سے ممور پڑگئے۔ رَسے اور آ ڈر با بجان کی جِماونیون مین ہینیہ: اہزار نوجین موجود رئتی تقییں، -

اسى طرح اور سيكرون جيا وُنيان جا بجاقا يم كُنين حنكِي تفضيل كي حيْدان صرورت بنين لبتهاس موقع يربه بات لحافاك قابل ہے كەاس سلسلے كواس قدر دسعت كيون دكم ي تى ورفوجي مقامات كے اتنجاب مين كيا اصول لمحوظ تھے ؟ اصل بيہے كداسوقت مك اسلام کی نوجی قوّت نے اگر دیبہت رد را و روسعت عاصل کر لی تھتی لیکن بجری طاقت کا کچھ مامان نه تقا، اُدُ هربونیانیُ مَرّت سے اِس فن مین مثبّا ق ہوتے آتے تھے اِس دجہ سے شام ومصرمين اگرحيكسى اندرونى بغاوت كالجحُرا نديشة نتها كيونكه اېل ملك با وجود اختلاب نرہب کے مسلمانون کو عیسا یئون سے زیا دہ بینندکرتے تھے ۔ لیکن رومیون کے بجری حلون كاممينيه كه كارمتاتها، اسك سائة اينيات كومك ابحى تك روميون كے فيضي من تقا وروبان اُنکی قوّت کوکوئی صدر بنین بنیا تھا۔ان وجوہ سے صرور تھاکہ سرمدی تھا مات وربندرگا ہون کو نها بیت مشحکر رکھا ماہے۔ یہی وجہمقی کہ حضرت عرنے جس قدر فوج محانیان فائم کین ابنی مقامات مین کمین جویا ساحل بروا تع تقے یا ایشیا سے کو حیک کے 'ما کے پر تھے۔ عواق کی حالت اِس سے ختلف تھی کیونکہ و ہان سلطنت کے سوا ، ملک کے بڑے برئے رمئیں جومرزبان کملاتے تھے اپنی بقاے رماست کے لئے ارائے رہتے تھے

فوج مجادتیا کیماصول پر قائم کافتین ا در دَب كرمطيع بهى بهوجات سفة توانكى اطاعت پراطينان نبين بوسكتا تھا، اس كے ان مالك بن ہرمگیر، فوجی سلسله كا قايم ركھنا ضرورتھا كه ترعیا نِ ریاست بغا وت كاخواب نه ديجھنے یا مین -

حضرت عمرنے اِس سلسلے کے ساتھ اُتطامات کے اورصیغون پریھی توجہ کی اورایک ایک صینے کواس قد زمتنظم کردیا کواس وقت کے تمرین کے لیاظ سے ایک مجزہ سامعلوم ہوتا ہے ، فوجون کی بھرتی کا وفر حبکی ابتدار مهاجرین اورانف ارسے ہوئی بھی وسیع ہوتے ہوتے قريباً تام <del>ءب ك</del>ومحيط ہوگيا- مربنہ سے عسفان تاك جو كم بعظ سے دومنزل اِ دھرہے جس قدر قبائل آباد تھے ایک ایک کی مردم شماری ہوکر رصبطر بنے - بحرین جوعرب کا انتہا ئی صوبہ ہے بلکہ عرب کے جنرا فیہ نویس اسکوءاق کے اصلاع مین نتمار کرتے ہیں وہان کے تمام قبائل کا دفتر طيّاركيا گيا كونه، تصبره، موسل، فسطاط، جيزه، وغيره مين حس قد رعب آبادم و گئے تقے سب ر حبطرُم ٓ تِب ہوئے۔ اِس مبشما رگروہ کی علیٰ قدر مراتب تنخواہین مقرر کی گئین ا ورا گرحیا اِب مجا مجموعی شمارتا ریخون سے معلوم نبین ہوتا تا ہم قراین سے معلوم ہوتا ہے کہ کمسے کم اُٹھردلس لکھ ہتیار بندا دمی سکتے۔ ابن سعد کی روایت ہے کہ سال میں تہزار نئی فوج فترعات ربھیج مابی تھتے کو فہ کی نسبت علامہ طبری نے تقیریح کی ہے کہ وہان ایک لاکھ آدمی ارشنے کے تسابل مبلئے گئے،جنمین سے مہم ہزار با قاعدہ فزج تھتی بینی اُنکواری ماری سے ہمینیہ <del>رسک</del>ے اور أذربا يجإن كحفهمآت مين حاصر رمبنا حزورتها-

سلے کنزالعال جلد اصفی اسوس-امام مالک نے موطامین · سر سرارے بجاے · سر بزار کی تعدا دبیان کی ہے -

فوحی دفترکی دسعیت

ہرال یہ نہار نئ منبع ملیار روز بھی

كم متوح البلدان صفحه ۲۸۰-

يهى نظام تقاحبكى برولت ايك مّرت يك تام دنيا پروب كارعب و داب قائم را اورفتوحات کاسیلاب برابرطه هناگیا<sup>، حِ</sup>س قدرا سِ نظام مین کمی موتی گئی عرب کی <del>مات</del> یں فعت آباگیا۔ سب سے پہلے امیرمعا ویائے اسمین تبدیلی کی بینی شیرخوار کون کی نخوا ہ بندکر دی عبدالملک بن مروان نے اور بھی اسکو گھٹا یا اور تصمر بایٹ نے سرے سے فوجی دفترمین سے عرب سکے نام کال دیئے۔اوراسی دن 'درختیت' مکومتا ہمی سلمانون کے بات سے کا گئی۔ یہ ایک اتفا قیہ جلہ بیح میں اگیا تھا، ہم پیر حضرت عمر کے فوجی نغام کی مرت واپس ات ہیں۔ حصرت عمرنے فرجی د فترکو رہان کب وسعت دی کرا<del>ہل مجر</del>ھی اُس من دمل لئے گئے۔ یز د گر د شاہنشا ہ فارس نے دلیم کی قوم سے ایک منتخب دستہ لیا رکیا تحت نیکی تعدا دکیا رمبزار مقی ا و <del>رئجند شامنشا ه</del> مینی فوج فاصه کهلا تا تھا۔ یہ فوج فا دسیمین ئ معرکون کے بعدارانیون سے علیٰدہ ہوکر اسلام کے طلقے میں الگئی ، سعدین ایی وقاص درنر کو فہنے اِن کو فوج مین د اخل کرایا اور کوفیمین آیا دکرکے اگی تخواہین تقرر کردیں۔ مِنا یخه اسلامی فتوحات مین انکا نام بھی جا با آمار یخون مین آماہے۔ بِرُوجِرد کی فرج ہراول اسردارایک بڑا نا می ا نسرتھا جومسیا ہ کے لقب سے نیارا ما یا تھا یمٹا جومین زوگرد <u> عنمان کوروا نہ ہوا توسا</u> ہ کوتمین سوسوارون *کے سائند*جین مین *نشر ٹریسے بیسے* نامی لوان تقے اصطخری طرف بھیاکہ ہر مہر شہرسے جیدہ بہا دمنت کرکے ایک دستہ ملیا رکرے

روی هندی ادر میروی مجی دامل محت

ا بورسی اشوی نے حب سنگ مین سوس کامیا صره کیا تو یزدگرد نے بسیا ہ کوحکم دیا گیار جیدہ رسالے کے ساتھ ابوموسی کے مقابلے کوجائے ، سوس کی فتح کے بعد سیا ہ نے مع تمام سردارون کے ابوموسلی سے چند شرا نطاکے ساتھامن کی درخو است كى ابوموسے گو.اُن مشرا كطرير راضى نه تھے ليكن كيفيت وا قعه*سے حضرت ع*ركواطلاع دی حضرت عمرنے لکھ بھیا کہ تمام شرا نُطامنظور کرلئے جا بیئن جنا بخہروہ سب کے سب ں میں آباد کئے گئے اور وجی ٰد فتر مین نام لکھا جا گرا نکی تنواہین مقربہو گئین کنین سے چفہا نسرون کی دخیکے بینام تھے سیاہ ، حسرو ، شہرمایہ ، شیرو بی<sup>ہ ،</sup> افزو دین د*هائی ڈھائی ہزارا و رسّوبہا دردن کی دُو دُو ہزارتخوا ہ مقربہوئی۔ تسترکے معرکہ می*ن سآه ېې کې تربيرسے فتح حاصل مو تي-با ذا ن-نوشیروان کی طرن سے مین کا گورنرتھا ''سکی رکاب مین جوایرانی فوج ممتی أتمين سے اکثرمسلمان ہوگئے تھے انکانام بھی د فتر فوج مین رکھا گیا۔ بقیت ہے کہ فاروقی نشکر ہندوستان کے بہاور ون سے بھی خالی نہ تھا۔ سندھ کے جاٹ جنگواہل عرب رُظ کہتے تھے ، یزدگر دکے نشکرمن شامل تھے۔ سوس کے معرکہ کے بعدوہ اسلام کے ملقه مگوس موسئ ا ورفوج مين مجرتي موكر بعره مين أياد كيئ كيئ-یونانی اور رومی بها در بھی فوج مین شامل تھے۔چنایخہ فتح مصرمن اپنین سے یانسو أوى شركب جنگ عفى- اورجب عمروين العاص نے فنطاط آبادكيا تو يه مدا كا ذعكمين ك بيرى دا نعا ته شايد ذكر فتح سوس ذفتوج البلدان ازمنغيُّ ٢٠٥٣ ما ١٣٠٥ - كلُّك فتوح البلدان صفير ٥٠٥٠ -

کئے گئے۔ بیو دیون سے بھی میسلسلہ فالی نہ تھا ، چنا بخدمصر کی فتح میں اپنین۔ ایک ہزاراومی اسلامی فوج مین شرکی سکتے۔ · غوصٰ حصٰرت عربے صیغۂ خباگ کوحږوسعت د می متی اُسکے لئے کسی قوم ا ورکسی للك كَتْحْفِيص نرتقي- بها ن مك كه نرمب وملت كي يمي كجير قبيدنه تقي، والينشر فو ج مین تو ہزارون مجوسی شامل تھے خبکومسلمانون کے برابرمشا ہرے ملتے تھے۔ نیج نظام مین بھی مجوسیون کاپتہ ماتا ہے جنائجہ <sub>ا</sub>سکی تفصیل غیر قومون کے حقو ق کے ذکرمین آئیگی لیکن به با د رکهنا چاہئے کەمىيغۇ خېگ کی په وسعت جسین نام قومون کو د خل کرلیا گیا تھا مر<sup>ون</sup> اسلام کی ایک فیا صنی بھتی ورنہ فتر حات ملکی کے لئے عرب کو اپنی کموار کے سوا او سیکا کبھی ممنون ہونا نہنین بڑا- البتہ اس سے بھی انکارنہیں ہوسکتا کہ جن قومون سسے مقا باعقا أننى كے مم ومون كوائن سے (انا فن جُلك كابرااصول تھا-كِنْرُكُوشِ مِرِرْرا بِيَ تَسْكُفْت سَكِ ٱن ولايت تواندُرُفْت مِيها كهم اورِلكِمِ آفِين - ابتداك أتظام بين فرجي مينفه صاف صاف جداگا نه فيتيت تنين ركعتا تعانيني حولوگ ورا ورحتيت ستے نخوا ہن ماتے تھے اُنكے نا مهمي فزجی رحسٹرمن <sup>درج</sup> تھے اوراسوقت ہی صلحت **متی حضرت عرشنے** اب میررد وہمی اٹھا بن<mark>ا</mark> ۔ شروع شروع میں نخوا ہ کی کمی میٹی مین قرآن خوانی کے وصف کا بھی لیا ظہر اتھا لیکن چزکدا سکوفوجی امورسے کو تعلق نہ تھا <u>حصرت عمرت</u> اسکوصیغ تعلیم سے تعلق کرکے الم مقرزي منعرُ ١٩٠ من إن سب مالات كسى قدر تفعيو س المعيمن -

اِس و فترسے الگ كرديا - فيا بخه سعد بن قاص كويد الفاظ لكم الله يصح كه كا لفظ على القران احداً

تنوامون *ين* ترتی

اسکے بعد تخواہون کی ترتی کی طرف توحبہ کی، جونکہ و ہ فرج کو زراعت علی اسکے بعد تخواہون کی ترتی کی طرف توحبہ کی، جونکہ و ہ فرج کو زراعت علی اسلام مزور مایت کا م اشغال سے بزور بازر کھتے تھے اس کئے مزور تھا گہائی اتمام منرور مایت کی کفالت کی جائے ، اس لحاف سے نخواہوں میں کا فی اضافہ کیا۔ اون کے سے او فی شرح جر ۲۰۰۰ سالا مذتھی۔ ۲۰۰۰ کر دی ۔ اونسرون کی تخواہ سائت نہراہیں لیکروش ہزارتک بڑھا دی ، بچی تن کی تخواہ دو د حجوظر نے کے دن سے تقرر ہوتی تھی اب حکم دیدیا کہ بیدیا ہوئے کے دن سے تقرر ہوتی تھی اب حکم دیدیا کہ بیدیا ہوئے کے دن سے مقرر کر دی جائے۔

رسكا إمظام

رساد کا بندوست بیلے صرف اس قدر تھاکہ نوجین مثلاً قا دسیدین نوجین تو اس باس باس کے دیمات پر حلہ کرکے جنس اور غلّہ بوٹ لایئن، البتہ گوشت کا بند بوبت وارانخلا فقہ سے تھا یعنی حضرت عمر مرینہ منورہ سے بھیا کرتے تھے۔ پھریوا تظام ہوا کہ مفتوحہ قومون سے جزیہ کے ساتھ فی کس ۲۰ آ ارغلہ لیا جا تا تھا اوروہ رسد کے کام مین اتا تھا مصرف غلہ کی ساتھ و وغربی تیون شہد، اورسر کہ بھی دصول کیا جا تا تھا جو سابہ یو کے لئے سالن کا کام و تیا تھا۔ جزیرہ میں بھی ہی انتظام تھا لیکن اسیمن رعا یا تو میں ہوتی تھی چنا بی جھنے من تا تھا۔ جزیرہ میں بی انتظام تھا لیکن اسیمن رعا یا تو میں ہوتی تھی چنا بی جھنے منا و تھی مقرر کردئی حبکو رعا یا ہے اور سے مقالی کی جبکو رعا یا ہے اور سے مقالی کی تعرب کو رعا یا ہے اور سے مقالی کی در مقرر کردئی حبکو رعا یا ہے میں مقرر کردئی حبکو رعا یا ہے اور سے معالی میں مقرر کردئی حبکو رعا یا ہے میں مقرب کا میں مقرب کردئی مقرر کردئی حبکو رہا ہوں میں مقرر کردئی حبکو بنا اور میں مقرر کردئی حبکو رہا ہوں دیا ہوں کی حبکو رہا ہوں دیا تھا ہو سابھ کی مقرب کردئی مقرر کردئی حبکو بنا اور میں کا معام کے میں مقرب کی مقرب کردئی مقرب کردئی مقرب کے دیا ہوں کردئی مقرب کو میں کردئی کردئی کے دو کردئی ہوں کردئی کے دیا ہوں کے دور کردئی کے دور کردئی کی کردئی کر

ك متى البلدا صِعْرَه ٥ م صلى بارت ، إفاذا حناجي الى العلق والطعام اخرج المحولان الب فاغارت

على اسفل الفرات وكان عربيعبث اليهمون المرينه الغنم والجزيرة الله نتى البران مفر مه و٢١٧-

رسد کاستقل محکمه

ہنایت خوشی سے قبول کیا ۔ رفتہ رفتہ <del>حضرت عمرت</del>ے رسید کا ایکٹ تقل محکمہ قائم کیا جبکا نام ا مرار تقاینا کی شام مین عمروبن عبیته اس محکیک افستقرموئ -امرار مری ی حمیع ہے۔ مهری ایک یونانی نفظ ہے حبکے عنی گود م کے بین ، چز نکدر سیکے مکما حمیم سے و ہان ستے نقیسم ہونے کا یہ طریقہ نونا نیون سے لیا گیا تھا اِس کئے نام من تھی ہی <u>وِنانی</u> نفظ قائمُ رہا، تمام عبنس اورغلّه ایک دسیع گود ام مین جیع ہوّا تھا اور <del>قبینے</del> کی ہیلی ا أريخ في سيا مي امن . أنا رك حساب ستيفتيهم و التفا ، اسك سائقه في كس و أنا ر روغنن زبتيون اورمواثا رسركه تمعي ملتا تها. إسكے بعدا وربھی ترقی موئی بعنی خشک صنبر سے یا سے پکا پکا ایکھا'ا لما تھا جنا پنہ مورخ بیقو ہی نے <del>حصرت ع</del>رکے سفر<del>ِ شا</del>م کے ذرکہ مین اسکی تقریح کی ہے تینخوا ہ اورخوراک کے علاوہ کیڑائمبی دربارخِلافت سے ملتا تھا جسکی تفصیل <del>در دی کے وکرم</del>ین ائلگی-ان تمام با تون کے سائھ بھتہ بھی مقر تھاجبکو ع بی مین معونة کتے ہیں، سواری کا گھوڑا سوار ون کوا نیے اہمام سے مہیّا کرنا ہوا تھا مین جرشخص کم ایه ہوتا تھا اوراُسکی تخوا ہ بھی نا کا فی ہوتی تھی اُسکوحکومت کی طرفتے مورا ملتا تھا چنا بخہ خاص اِس عون کے گئے حصرت عمرے حکم سے خود وارا نخلاقہ مِن عار ہزارگھوٹے ہروتت موجود رہتے <del>گت</del>ے۔ اوكان عناجا اعطاه الغرس

بهنة وتنحواه وغيره كى تقسيم كه اوقات مختلف تلف سنروع مُحرّم مين تنحواه ومفسل مهارين تنزاه كانيم المجشّه اويضل كشيرك وقت خاص خاكرونكي المدنى تقسيم موتى تقي - تنحوا مى تقسيم كايه طریقیہ تھاکہ ہرقبیلیے کے ساتھ ایک عرفیت بعنی مقدّم یا رمیس ہوتا تھا ، فوجی ا ضبر حوکم سے

٠٠-١٠ سياً مهيون يرافسر موت تق اورجوا مرار الاعشار كهلات تقطيخوا والكودياتي تقى، وهء بين كوحواله كرت عقير اورء بين اين اين قبيل كے سيا ہيون كوحواله كرتے تحقة ايك ايك عربيث كم متعلق ايك ايك لا كه دريم كن مقسيم حتى بنيا نجير كوفه وبصره مين سوعية تھے۔جنگے ذریعہ سے ایک کرور کی رقم تعتیم ہوتی تھی۔اس انتظام مین نہایت احتیاط اور خبرگیری سے کام بیا جا تا تھا ، عواق مین انگراے اعشارنے تنخوا ہون کی تقسیم ین لاعمالیا لی توحضرت عربے عرب کے بڑے بڑے نتاب اورا بل الراسے مثلاً سعیدین عمران ، علە بربغىم، وغيره كوئلاكراسكى جانح يرمقرركيا چنابخه ان لوگون نے ووباره نهايت نحقیق اور حت کے ساتھ لوگون کے عہدے اور روزینے مقرر کئے اور دنل دین کے بیاے سائت سائت سیا ہی پر ایک ایک اونے مقرر کیا۔ عربیت کا تقریمی فا روتی ایجا دات سے تھا جبکی تعلید مرتون تک کی گئی-کنزانعال باب الجماومین ہیقی کی ہوتا ب اقلمن دون الدوابن وعرف العرقاء عمر بن الخطاب -

تنخواه كي ترقي

يغيردس جلعبارت يب وإحلهويمعا ونهرفي الربيعمن كلسسنة وباعطياته وفحا كمحرج منكل نة وبفيت عنى طلوع الشوى في كل نة وذلك عند ادر الع الغلات ١٠ - كم

''نخوا ہون مین قدامت اور کارکرد گی کے لحاظ سے قرقیاً فرقیاً اضافہ ہوتا رہاتھا۔

اخلامناس کے ٹیافیسے فرج کی مشیم

قاً دسیمین زہرہ ،عصمتہ مُنتی، دغیرہ نے بڑے مردانہ کام کئے تھے اِس کئے اگر ہوان د کو در در در در در میانی در هانی مزار برگئین مقرره رفتون کے علا و پنیمت سے و قباً قرقباً جوبات آنها ۱ وعلی قدرمِرات فیع ربیشیم پرتاها اُسکی کیم انتها زمتنی خیا بخه **جلولا** می<sup>ن</sup> وزونرار نها ونرمین خیره خیر مزار درم ایک ایک سوار کے حصے میں اسے تھے۔ صحت اورتندرستی قائم رکھنے کے لئے حسب ذیل قاعدے مقربہ تھے۔ ر ا ) جارسے اور گرمی کے لحاظ سے لڑائی کی جہتین نتعیّن کردی تعین ہوں ڈملک تھے ان پر گرمیون مین ورگرم ملکون بر جاڑون مین نوجبین صیبی جاتی تقیین-اس تعتیم کا نام <del>شاتیه اورصانیته رک</del>ها اور سی اصطلاح آج نک قائم ہے ، بیمان تک کرہارے مونین *غربی مہات اورف*قومات *کو صرف صوالیٹ کے لفظ سے تعبیر کرتے ہیں۔ ی*ہا نتظام مزت عرف مولي ما علام المرى لكهة بن وسمى الشواني والصوالف وسمى ذلك فى كل كورة -

إكاجين سربيع في اطبب ارضيه عريزب مركوصفي ١٨٨٦-

بهار کے رائے مین فوجون کا قیام عروبن العاص گور زِمصر موسم بهارک آن کے ساتھ فوج کو باہر بھیج بنے تھے اور جکم اسے مقتے کہ سیرونسکار بین بسرکرین اور گھوٹرون کو بڑاکر اور فریہ بناکرلائین۔
رسم ) بارکون کی تعمیر اور جھا ونیون کے بنانے بین بہنے عمدہ آب وہوا کا لحاظ کیا جاتا تھا اور مکانات کے آگے گئے ہوئے خوش فضاصحی جھوڑے جاتے تھے۔ فرجون کے لئے جوشہ آبا دکئے گئے مثلاً کو فقہ بھر و خوش فضاصحی جھوڑے اور کھا ان مثلاً کو فقہ بھر و خطا ما وغیرہ ان بین اصول صحت کے لا فلسط کسن اور کوسے اور گلیا ان نمایت وسیع ہوتی تھین حضر ست تھر کو ہیں اس قدرا ہمام تھا کہ اور کوسے اور ور میں بہتی خود کھا کہ بیشہ جمعی کے دن مقام کرے اور پورے کہ اس فیر ورکوبے اور پورے کہ اس فیر کے تاکہ لوگ دم لیان اور بہتیا رون اور کیڑون کو درست کلین اور بہتیا رون اور کیڑون کو درست کلین اور بڑاؤ و بہن ایمی تاکید تھی کہ ہمرروز اُسی قدر مسافت طے کرین جس سے تھکنے نہا بیئن اور بڑاؤ و بہن ایمی تاکید تھی کہ ہمرروز اُسی قدر مسافت طے کرین جس سے تھکنے نہا بیئن اور بڑاؤ و بہن ایمی تاکید تھی کہ ہمرروز اُسی قدر مسافت طے کرین جس سے تھکنے نہا بیئن اور بڑاؤ و بہن ایمی تاکہ دیستہ تھکنے نہا بیئن اور بڑاؤ و بہن ایمی تاکہ دیشہ تھی تھی کہ ہمرروز اُسی قدر مسافت طے کرین جس سے تھکنے نہا بیئن اور بڑاؤ و بہن ایمی تاکہ دیستہ تھکنے نہا بیئن اور بڑاؤ و بہن ایمی تاکید تھی کہ ہمرروز اُسی قدر مسافت طے کرین جس سے تھکنے نہا بیئن اور بڑاؤ و بہن ایمی تاکھوں کے مقالے کھی تاکہ کو کو کہ تاکہ کو کہ کے کہ کو کھوٹر کیا گھوٹر کے کھوٹر کیا کے کہ کو کھوٹر کیا گھوٹر کیا کہ کو کھوٹر کو کھوٹر کو کھوٹر کے کھوٹر کے کھوٹر کو کھوٹر کیا گھوٹر کیا گھوٹر کیا کھوٹر کے کھوٹر کیا کو کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کے کھوٹر کیا کھوٹر کے کھوٹر کو کھوٹر کیا کھوٹر کیا کھوٹر کے کھوٹر کیوٹر کے کھوٹر کو کھوٹر کو کھوٹر کے کھوٹر کیا کھوٹر کو کھوٹر کو کھوٹر کیا کھوٹر کیا کھوٹر کو کھوٹر کو کھوٹر کو کھوٹر کیا کھوٹر کو کھوٹر کو کھوٹر کو کھوٹر کو کھوٹر کی کھوٹر کو کھوٹر کو کھوٹر کے کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کیا کھوٹر کے کھوٹر کو کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کو کھوٹر کو کھوٹر کے کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کیا کہ کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کے کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کے کھوٹر کھوٹر کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کھوٹر کو کھوٹر کھوٹر کھوٹ

کینے کی ط مین فزی کی آلام کا دن

آب ومواکل

رضت کے فاعب

رخست کانجی با قاعده انتظام تھا۔جو فوجین دور دراز مقا مات پر ما مورتھیں آگو سال مین ایک دفعه ورنه دو دوفه رخصت کمتی ملکه ایک موقع برحسب انفون سنے ایک عورت کو اپنے شوم کر کی جدائی مین در دناک اشعار بڑھتے سُنا تو اونسرؤکروا حکام سلے عدا مزیمبدادل منه ۲۶ من یا زمان بعینہ منقول ہے ،،

أيها ما سے جمان مرضتم كى صروريات ميتا ہون جيا ئي سعد بن و قاص كوجو فرمان، فوجى

ہرا یتون کے تعلق لکھا اِسین اوراہم با تون کے ساتھ اِن تمام جزییات کی فصیل

جھیج دیئے کہ کوئی شخص تیار میں ہے زیادہ با ہررہنے پر مجبور نہ کیا جائے۔
سکین یہ تمام آسانیان اُسی مدلک تقین جہان تک ضرورت کا تقاصا تھا، وزر ارام طلبی، کا ہی، عیش رستی، سے بچنے کے لئے سخت بند شین کی تقین ۔ نہایت اکید مقی کہ اہل فرح رکاب کے سمارے سے سوار نہون ، نرم کیوے نہیں یہ دھوب کھا نا خصور میں ، تمامون میں نہ نہا میں ، ۔

مع كاماس

تاریخون سے یہ بتہ نمین علیا کہ حضرت عمر نے فوج کے لئے کوئی خاص اہاس حبکو و رہے گئے ہیں انہیں صرف اس قدر اور دی گئے ہیں قرار دیا تھا۔ فوج کے نام اُسکے جواحکام منقول ہیں اُنمین صرف اس قدر اے کہ لوگ عمری ابنا س نہیندین لیکن معلوم ہوتا ہے کہ ایس عکم کی تعمیل پر جنبدان زور نمین دیا گیا کیونکہ ملائٹ میں جب مصرمین ذرتیون پر جزیہ تقریموا تو فوج کے کیڑے ہیں دیا گیا کیونکہ ملائٹ میں جب مصرمین ذرتیون پر جزیہ تقریموا تو فوج کے کیڑے ہمی اور وہ یہ تھے۔ اون کا حبّہ لیمی تو پی یا عامہ - یا جا مہ - موڑہ حالا تکا قرار اول یا جامہ اور موزہ کو حضرت عمرے منع کیا تھا۔

فوج مین فزایخی و محاسب مترسیسم فوج کے متعلق حضرت عمری اوربہت سی ایجا دین ہیں جن کا عرب ہیں کہمی وجود نہ تھا۔ نملاً ہر فوج کے ساتھ ایک افسرِ خزانہ ، ایک مُحاسب ، ایک قامنی ، اور متعد در ترجم ہوت سے ہے ہائی علاوہ متعد د طبیب اور قراح ہوت سے می ، خبا بخہ خبگ قا د سی مین عبد الرحمٰن بن رمبعیة قامنی ، زیا د بن ابی سفیان مُحاسب ، ہلال ہجری مترجم کھے۔ فوج میں میں محکمہ علالت ، سر رشته مساب ، مترجمی ، اور واکھری کی ابتدا بھی اِسی زمانے سے ہے۔ میں محکمہ علالت ، سر رشته مساب ، مترجمی ، اور واکھری کی ابتدا بھی اِسی زمانے سے ہے۔ ملے فنوج البدان صفرہ ما ۔ ملے طری واقعات سی معلم معنوز ۲۲۲۲۔

فوجي قواعد كى نسبت بمكوصرت اس فديمعام م كم حضرت عمر فوجي ا فسردن كوجوا حكام صحيح تھے اُن میں ٹیا چیزو ن کے سکھنے کی تاکید بہونی تھی تئیزنا ،گھوٹے دوٹرا نا، تیرلگا نا ،ننگے یا نواجائیا۔ ا کے سوا ہکوعلوم نہیں کہ فوج کوکسی شم کی قواعد سکھلا ئی جاتی تھی۔ اہم این شبینین کہ حضرت نونكين العرك عهدمين سابق كي نسبت فن خبك نصبت رقى كي عوب من خبك كاييك يرطريقه تقاكه دونون طرف کے غول بے زنیب کھڑے ہوجاتے تقے۔ پیرد دنون طرف سے ایک ایک اہم کا کر رُّاتِها اور اِقَى تام فوج جُپ كَفِرى رَبِّى تقى-اخيرىن عام حله برّاتها-اسلام كـ اغا زمين بزيا كاطريقة جارى ہوا، اور فوج كے مختلف جصتے قرار إيئے مثلاً ميمنه، ميسرہ، وغيروليكن ہرجمتهُ ابطور خود الرتائقا - يعنى تام فوج كسى ايك سيدسالا ركح نيچے ره كرنيين الرقى متى يہ بيلے شاہ میں رموک کے مورک میں حضرت خالد کی مرولت تعب پیر کی طرز پر خباک ہوئی مینی کل فوج حبکی بقدا دبه ہزارکے قربیب بھی ۲ ماصفون میں بھتیم ہو کر حضرت خالد کی ماتحتی مین کام کرتی تمتى اوروه تمام فوج كوتنها لراتے تھے۔ حفرت عركے زا نے مین فرج کے جس قدر حقبے اور شعبے تقے حب زبل ہن۔ أقلب سيهسالاراسي حصيته مين ربتاتها-قلب کے آگے کھ فاصلے پر ہوتا تھا۔ تلب کے وائن احت پررہا تھا۔

ك علامين فلدون نع مقدمة ارغ مين ضلط في المحروب كعنوان سعوب اورفارس وروم ك طريقير حبّك يرا كم عفقل مضمون المعام آسین لکھا ہے کو نتبیہ کاماریقہ ادل اول مردان بن الحکم نے قام کیا " لیکن یا ملط ہے طبری اور دیگر ترمین نے بھرج لکھا ہے کہ برموک کے مركمين أول قالرنا تعبيد كي طرز برصف أرا أيكي-

260

ن<sub>وح</sub> کے فمالت مصتے میسو بایمن بات پرساقه سب سے تیجھے۔
طلیعه گشت کی فرج جو دشمن کی فوجون کی دکھ بھال رکھتی تھی
رور جوساقہ سے تیمھے رہتی تھی تاکہ دشمن عقب سے حله نکرسکے۔
را مُد جوفوج کے چارہ اور بابنی کی لماش کرتی تھی۔
را مُد شرسوار۔
درسان سوار
رابل بیادہ۔

برسیا ہی کوجو ضروری نیزی سانند کھنی کرتی مقین

قلعیشکن آلات ہرسا ہی کو جنگ کی صرورت کی تمام چنرین اپنے ساتھ رکھنی پڑتی تھیں انتیالیا ا بین لکھا ہے کہ کثیر بن شہاب (حضرت عرکے ایک فوجی اصریق) کی فوج کا ہرا ہی ا اشیا سے دیل صرورا پنے ساتھ رکھتا تھا۔ سُوئیان ، سُوًا ، ڈورا ، فینجی ، سوالی ، توراہ ملِنی ا تعلمون پر حلہ کرنے کے لئے مُنین تھا کہ استعال اگر نیم خود انخفرت کے زمانے میں شروع ہو چکا تھا ، جنا پخہ سب سے پہلے مشہمین طالعت کے محاصرے میں اِس سے کام لیا گیا لیکن جھنرت عمرکے زمانے میں اِسکو ہبت ترقی ہوئی اور بڑے بڑے قلعے اِسکے ا فررسی سے مح ہوئے ، شالا سلام میں بہرسیر کے محاصرے میں ، مُنجنی قین استعال

سله متوح البلدان صغور ۱۳۱۸

تيرا نداز-

کی گئین۔محاصرے کے لئے ایک اورآلہ تھا جبکو دُیّا یہ کہتے تھے۔ یہ ایک لکڑی کا بڑرج مِوّا تعاجبين ا دير تلے کئي درج ہوتے تھے ا درنيچے يُنے لگے ہوتے تھے۔ سنگ ندازن<sup>ا</sup> ا ورنقب زنون اورتسراندازون كواسك اندريتها ديا مانا تقا، ا ورأسكور لمن بوست أتحكے بڑھاتے ملتے تھے، اسطرخ فلعہ كى ٹرمن بہنج جاتے تھے اور فلعہ كى ديوارون كوالا کے ذریعے سے تورویتے تھے۔ تھرسیر کے محاصرہ مین یہ الدیمی ہتمال کیا گیا تھا۔ راسته صاف کزا، سرک نبانا ویل با زهنا ،مینی جوکام آج کل سفر بیناکی فوج سے لياجا تا ہے اسکا نتظام تھی نہایت معقول تھا ا دریہ کام خاصکر مفتوحہ قومون سسے بياجا آتفا - عروبن العاص نے حبب منطاط فتح كيا تو مقومت والى مصرنے بي شرط منطور کی که فوج اسلام جده رُرخ کرے گی سفرمینا کی حذرمتون کومصری انجام دینگے جیٹا بخہ عمروبن العاص حب رومیون کے مقابے کے لئے اسکندریہ کی طرف بڑھے توخود مصری منزل بنزل میں اِندھتے اسٹرک بنائے اور ازار لگائے گئے ، علامہ مقرزی نے لکھا ہے کہ چونکہ سلما نون کے سلوک نے تام ملک کو گردیدہ کرایا تھا اسوا سطے تنجی خود بری خوشی سے ان خدمتون کو انجام دیتے ستے۔ جاسوسی اور خبررساتی کا انتظام منایت خوبی سے کیا گیا تھا اورا یکے لئے قدرتی سامان بات أسكَّ عقر، شام وعراق مين كثرت سے عرب آباد عقر اورائين سے ك مقرزى معنى ١٦٢ مين ب فخرج عرف ماللسلين 4 وخرج معدجاً عنه من روساً والقبط وقد اصلحو لهموالطرت واقاموالحما لجسي والاسورانء

سفرمينا

۔گروہ کثیرنے اسلام قبول کرایا تھا۔ یہ لوگ جو نکہ مّت سے اِن ممالک بین رہتے آھے منتے اس کئے کوئی وا قعداُن سے چھپ نتین سکتیا تھا۔ان ہوگون کو ا جازت تھی را بنا اسلام بوگون بیزطا سرنه کرین اورجونکه به بوگ ظا مرد فنع قطع سے <u>باری</u> یا عیسانی لوم ہوتے تھے اِس کئے دشمن کی فرح<sub>و</sub>ن مین جہان چاہتے تھے چلے جا سے تھے یرموک ، قادسیہ کریت مین اتفی جاسوسون کی برولت بڑے بڑے کا مرکاتے -شام مین ہرستہرکے رمئیون نے خو داین طرف سے اوراین خوشی سے جا س**ور** لگار کھے تھے جوفتصر کی فوجی طیا ریون ا درنقل وحرکت کی خبرین بینجائے سمنے مانیا بويوست ماحب كاب الخراج من لكهتين فلما ملى المل الذمة وفاء المسلبن لعم وحسل لسيرة فيهموماس واالتداءعلى على والسلبين وعونا المسلين على مفعت اهلكل مدينة ممنجرى الصلح سيهمويين المسلبين ريكلامن فالاخبارس الرمم وعن ملكهم وماس ببرون ان بصنعوا رون اور طبین کے اضلاع مین ہیو دیون کا ایک فرقہ رہتا تھا جرسامرہ کہلا اتھا ، پرلوگ ماص جا سوسی اور خبررسانی کے کا م کے لئے مقرر کئے گئے اوراسکے صلے مین اُکی تعیین بنین اکومعانی مین دیدی گئی<sup>تی</sup>- اسی طرح <del>جراحمهٔ کی قوم اس خدمت پرما مورم دی اور</del> ويحيتواسلامهم ويانوا باخباره و١١- ٢ كان بدكومنور ١٠٠ منك نوح البلدان مغرم ١٥٠

الكويمي خراج معات كرديا گيا-

نوجی اتظام کے سلسلے میں جوچنر سب سے بڑھکر حرت انگزے بیہے کہ یا وجود مکیہ اس قدر مشیار زومبن تقیین اور محلف ملک، مختلف قیائل، مختلف طبارئع، کے لوگ اس سلسلے مین واحل تھے ،اسکے ساتھ وہ نہایت وور درا زمقا مات مک بھیلی ہوئی تھین جمان سے دارالخلافة بكت سيكرون بزارون كوس كا فاصله تفا يا بهم تام فوج اس طرح عضرت عرکے قبضهٔ قدرت مین تھی کو یا وہ حو دہر مگیہ نوج کے ساتھ مرحود ہیں۔ اس کا عام سبب توحضرت عمر کی سطوت اورانخا عب و داب تقالیکن ایک براسب پیما برجنوسی<sup>ن</sup> اگر<del>حصزت عمر ن</del>ے ہر فوج کے ساتھ برجیہ نوٹس لگار کھے تھے اور فوج کی ایک ایک کا نتائا بات كي الكوخبرينيتي رتبي تقي- علامهٔ طبري ايك نمني موقع يرلكيت بين وكانت تكون لعم العيون فى كل جيش فكتب الى عسم بماكان فى ثلاث الغزل لا وبابغه الذي فال عنبة اير اورموقع يرلكف من وكان عري يخفى عليه شي في عله-اس انتظام سے حصزت عمر بیر کام لیتے تھے کہ جہان نوج مین کسی شخفہ سے کسی تم کی براعتدالی ہوجاتی متی فوراً اسکا تدارک کردیتے تھے جسسے اورون کو بھی عبرت ہوجاتی تحتی- ایران کی فتوحات مین عمر ومعد کمیب نے ایک د فعہانیے انسر کی شان مرگتا خانہ کلمہ کمدیا تھا ، فوراً حصرت عمر کوخبر مولی اوراُسی قانت اُنھون نے عمروم عدمکرب کو تخربر کے ذریعے سے ایسی حیثم نا ٹئ کی کہ بھیرا نکو کبھی ایسی جرأت نہیں ہو ٹئ اس حتم کی سیرون ک میری صفیر ۲۲۰۸ - که بیری صفیر ۲۵۲۷ -

مثالين بين خبكا استقصا رمنين موسكتا-

صيغر بعكيم

حفرت عمرے اگر حیہ تعلیم کو نہایت ترقی وی تھی۔ تمام ممالک مفتوبہ بین ابتدائی مکاتب قائم کئے تھے جن مین قرآن مجید اخلائی اشعار، اورامتال عرب کی تعلیم کی تعلیم موتی تھی۔ بڑے بڑے علما سے عیما بہ اصلاع مین حدیث و فقہ کی تعلیم کے سائے ما مورکئے تھے۔ مرسین اور علمین کی ننوا ہیں تھی مقرر کی تھیں۔ لیکن چونکہ تعلیم نے امروکئے تھے۔ مرسین اور علمین کی ننوا ہیں تھی مقرر کی تھیں۔ لیکن چونکہ تعلیم زیادہ ترفر ہی تھی اس لئے اسکا ذکر، تعفیل کے سائھ دوصین نام نرہ ہی ، سکے بیان میں آئے گا۔

صبغة مراسي

فلانت کی تثبیت سے حضرت عمر کا جواصلی کا م تھا دہ ندہب کی تعلیم و گئیں۔
مقی اور درصقیت حضرت عمر کے کا زامون کا طغرا بھی ہے۔ لیکن مذہب کی روحانی تعلیم
یعنی توجّہ الی اللّه استغراق فی العبادہ - صفاے قلب ، قطع علائق ، خضوع وُشوع اللّه می می توجّہ الی اللّه استغراق فی العبادہ - صفاے تحت میں نبید ن اسکتین - اسلیے نظام مکوت میں نبید ن اسکتین - اسلیم اسکا ذکر شعن کر صفرت عمر کے ذاتی حالات میں ایکالیہ اسکا عب اسلام ، تعلیم فرآن وحد میں ، احکام مذہبی کا اجرار اس متم کے کام انتظام اسکتے ہیں چھنرت عمر نے اسکو تھی اسکتے ہیں چھنرت عمر نے اسکو تھی اسکتے ہیں چھنرت عمر نے اسکو تھی اسکتے ہیں چھنرت عمر نے اسکو تعلق جم کے کیا اُسکی تفصیل میم اس موقع بین ۔

ریکھتے ہیں ۔

ریکھتے ہیں ۔

ریکھتے ہیں۔

اِثَامَتْ إِلَّا كاطستِية

ایں مینے کاسب سے بڑا کام ا شاعت اسلام تھا۔ اشاعت اسلام کے یہ تعنی نہیں کہ لوگون کو ملوارکے زورسے سلمان بنایا جاہے ۔ حضرت عمراس طریعتے کے بالکل خلات تھے اور جیخص قرآن مجید کی اِس آیت پر کھاکھ کھ الدین بلآ اول عمل کرنا چاہتا ہے وہ صروراسکے فلا ت ہوگا ، حصرت عمرنے حزو داکپ موقع پریعنی حب انخا غلام با وجو دہرایت و ترغیب کے اسلام نالا یا توفرا ماکہ کا ایسی فی الدین اشاعت اسلام کے بیعنی ہین کہ تمام دنیا کو اسلام کی دعوت دیجا سے اور لوگون كواسلامك اصول اورسائل سجعاكر اسلام كى طرف راغب كيا ماب-حصرت عرص ملك برنومين سيعية عقة اكيدكرات عقر كيل أن لوكون كو ا سلام کی ترغیب دلائی جاہے اور اسلام کے اصول وعقائد سمجھائے جائم جنا بختے فاتح ايران بسعدوقاص كوحوخط لكهاأسين بيالفاظ مقعه وقالكنت احمانك أن تدعومن لقيت الح الاسلام قبل القناك <del>قاصي الويرسف</del> صاحب مع كمهاب لأتحصنرت عمركامعمول تقاكرحب أنكحه ياس كوبئ فوج مهتيا هوتي تنتي توانيراسيا افنسر مفرّر كرمت مختے جوصا حب علم ا ورصاحب ِ نقه ہوّ یا تھا ﷺ نے ظا ہرہے كەنوحي ا دنسون ٍ کے لینے علم و فقہ کی عزورت اِسی بلیغ اسلام کی صرورت سے بھی ، شام وعواق کی فتوحات مین تمنے پڑھا ہوگاکہ ایرانیون ا ورعبیا کیون کے پاس جو اسسلامی ك يروايت طبقات بن سعد مين موجود مي جو نهايت معتبركتاب عيه ؛ د كليوكنز العمال طبينم صغري ٩ مه مطبوع يه ميدرآ إد- ملك كتاب الخراج صفت ١٢٠سفارتمین گئین اُنھون سنے کسِ خوبی اورصفائی سے اسلام کے اصول وعقائداً نگے سامنے بیان کئے۔

اشاعت اسلام کی سب سے بڑی تدبیر بیسے کوغیر قومون کو اسلام کا جو منونہ وکھلایا جائے وہ ایسا ہوکہ خود بجود لوگون کے ول اسلام کی طرف کھنج آیکن۔ <u>حفنرت عمر کے عہدمین نهایت کثرت سے اسلام پھیلاا وراسکی بڑی وجہ ہی تھی کہ </u> أئفون نے اپنی ترمبت اورارشا دسے تمام مسلما نون کو آسلام کا اصلی مونه ښا د ما تھا اسلامی فوجین حس ملک مین جاتی تقین لوگون کوخوا همخوا ه آنکے دیکھنے کا شوق بیدا ہوتا تھا، کیونکہ جند ما دینشینون کا دنیا کی شخیرکوا ٹھنا حیرت اور استعجاب سے خالی نہھا اِس طرح حب لوگون كوانكے ديجينے اورائن سے ملنے تبلنے كا تفاق ہونا تھا تواكيك يك سلمان سیائی-سادگی، ایکیزگی؛ حوبش وراخلاص ، کی تصویر نظراً تا تھا- پیچنرین خود بخو دلوگون کے دل کھینچتی تقین اور اسلام اُنمین گھرکرتا جا یا تھا۔ شام کے واقعا مِن مُمّ نے بڑھا ہو گا کہ ومیون کا سفیر ماجے ، ابوسبیہ ہ کی فوج مین طاکس اثرے مّا ژبهوا ۱ ورکس طرح د نعتهٔ قوم ا ورخا ندان سے ال*گ ہوکرمسل*ان ہوگیا۔ <del>شط</del>ا جومصر کی حکومت کا ایک بڑا رمیس تھا-مسلما نون کے حالات ہی مشکر اسلام کا گرویدہ ہوا اورآخرد وبزارآ دمیون کے ساتھ مسلمان ہوگیا۔

ك ايخ مقرزي مغر ٢٢٦ من ب فن ج شطاق الغين من اصحابه ولحق بالمسلين وقد كان مبل ذلك يحد المغير ويميل اسلام ١٢

ا سلامی فترحات کی بولعجی نے بھی اس خیال کو قرّت دی، یہ وا قعہ کڑیپن صحرانشنیون کے آگے بڑی بڑی قدیم اور ُیرزور قومون کا قدم اُکھڑا جا تا ہے۔ خوش عقاد إِنَّا مَيِّهِم الْوَمُونِ كَ وَلَ مِن وَ دَبُورِيهُ فِي اللِّيدِ الرَّا تَفَاكُواسِ رُّوهِ كَ سَاتَهُ مَا يَدْإِسما نِي شامل ہے۔ یزدگرد شہنشا وِ فارس سے حب <u>خاقان مین</u> کے پاس استداد کی غوض سے سفارت بھیجی، تو <del>خاتیان</del> نے اسلامی فوج کے حالات دریا فت کئے اور حالات سنگر ہیکہا کہ ایسی قوم سے مقابلہ کرنا بیفائرہ ہے ''۔ فارس کے معرکین حب یا رسیون کا ایک مشہور بہا در بھاگ نکلاا ورسردار فوج نے اسکو گرفتار کرکے بھاگنے کی سزا دینی جا ہی ، توائسنے ایک بڑے بیقر کو تیرسے توم کرکھا کہ میر تیریھی جن لوگون پرا تزنهین کرتے خدا اُنکے ساتھ ہے اور اُن سے لڑنا بریکا رہے ۔ ابور جانفاری کے دا داکا بیان ہے 'کورتوا دسیہ کی اڑائی مین ئمن عاصرتھا اورائسوقت تک مین محوسی تھا۔ عرب نے حب تیراندازی مشروع کی توہمنے تیرون کو د کھھا کہا کہ ر. تکلے بین ، نیکن انهی تکلون نے ہما ری لطنت بربا دِکردی ،، مصر برجب حله بوا تواسکندر ہیے بشپ سے قبطیون کولکھا ک<del>ر ومیون</del> کی سلطنت ہو حکی اب مسلمان سے بل جاؤ۔

اِن باتون کے سائذ اورا سباب بھی اسلام کے بھیلنے کاسبب ہوئے ۔عرب کے قبائل جوعوات اورشام مین آباد تھے اور عیسائی ہوگئے تھے نطرۃ حبس قدارُ کا وله طبری وا قعات خبگ فارس - سل مقرنری مبدا دل صفح ۲۸۹-

میلان ایک نبی عربی کی طرف ہوسکتا تھا غیر قوم کی طرف نہین ہوسکتا تھا ، خِنائخِه صِ قدرز ما نہ گذرتا گیا وہ ا<del>سلام کے طبقے</del> مین آتے گئے ،یپی بات ہے کا سِ عہد کے نوسل جس قدر تاب سکتے اور تومین نیمتین - ایک وجہ بیم پیمی کا معض برے بڑے بیشوای مزہبی مسلمان ہو گئے تھے مثلاً دمشق حب فتح ہوا تو وہان کالبشپ حبیکانام ادر کون تھا حضرت خالہ کے بات پر اسلام لایا۔ ایک میشوای مدہب کے سلمان ہونے سے اُسکے بیروؤن کوخواہ مخواہ اسلام کی طرف عُنِت ہوئی ہوگی ' ان محلف اسباب سے نمایت کثرت کے سائھ لوگ اسلام لائے۔افسوس کہ ہمارے موّرِ خیین نے کسی موقع براس واقعہ کومشقل عنوان سے نہین لکھا حبکی وجهسه بم تعدا و کا اندازه نهین تباسکتے۔ اہم منی نذکرون۔سے کسی قدر تبیالگ سکتا ہے چنا پینم المواس موقع برباین کرتے ہیں۔ سكام ك اخرمين جب حلولار متح ہوا توبرش برسك رؤسا اور نواب ان ووا ے مسلمان ہو گئے - ان مین سے جوزبا دہ صاحب اختیارا ورنامور بھتے اُ تھے ہے ام بین جمیل بن صبهری سطام بن رسے - رفیل فیروز - ان رسیون کے ل ان ہوجانے سے اُنگی رعا یا مین خود بحز<del>د سالام</del> کوشیوع ہوا-تادسیہ کے مورکے بعد چار ہزار دیلم کی فوج، جو خسرور پوز کی ترببت یا فت متی ورا سیبیرس گار دنین شاہی رسالکہلاتی تھی مک کی کل سلمان ہوگئی۔

كمع البلان وكرفظ وسنان- سك فترح البلدان سفير ١٩٥٠ مسك فتوح البلدان صفير ٢٠٠٠

صرت م کے زانے مین مولوگ اسلام لانے

یزدگر دے مقدتہ لجیش کا ا منسرایک شهور بہادرتھاجیکا مام سیاہ تھا-یز دگر دسی اصفهان كوروانه مهوا تواسخ سيآه كوكلاكرتمن تتوطب برس رميس ادر ميلوان سائق کئے اور اصطح کورواندکیا ، میری حکم دیا کہ را ہین ہرمرشہرسے عمدہ سیا ہی اتنیا ب کرکے ساتھ لیتا جاہے ، اسلامی فوجین حب تسترئینیون، توسیا ہ اپنے سردارون کے ساتھ ان اطلات میں مقیم تھا ، ایک دن اُسنے تا م ہمراہیوں کو جبع کرکے کہا کہ ہلوگ جو سیلے کماکرتے تھے کہ بول (عرب) ہارے ملک پر غالب آجا بین گے، اسکی درروز تصدیق ہوتی جاتی ہے ،اس کیئے بہترہ ہے کہ ہلوگ خود اسلام قبول کرلین، خیا بخیہ اسی وقت سب کے سب سلمان ہوگئے، یہ لوگ اسا ور ہ کملائے سے -کوفر من بھے نام سے تنراسا ورة مشهورہ - انکے اسلام لانے پرسیا بجہ - زط- اندغار تھی سلمان ہوگئے۔ یونیون تومین ال مین سندھ کی رہنے والی تقین جو حضرو رویز کے عہدمی گرفتا ہوکرائی تھین اور فوج مین داعل کی گئی تھیں-مقرمن بھی اسلام، کثرت سے بھیلا ، غروبن العاص نے جب مقرکے بعض قعبات کے لوگون کواس نبایر کہ وہ سلمانون سے لرمنے تھے گرفتار کرے لوٹری علام بنا یا اوروه فروخت موکرتما م عب مین عیل گئے ، توحفرت عرف بری فرن کے ساتھ ہر حکیہ سے انکو واپس نے کر مصر تھیے یا اور لکھ بھیے اکرانکو اختیار ہے خواہ <del>سلام</del> لایئن خواہ اپنے ندہب پر قائم رہین۔ جنابخہ ان من سے قصبۂ <del>بہیب</del> کے ك فتوح البلدان منفئ ١٧٤٧رہنے والے کل کے گل اپنی خواہ ش سے مسلمان ہوگئے۔ دمیا طائی فتح کے بعرجب اسلامی فوجین آگے برجب اسلامی فوجین آگے برجین تو بقارة اورورادة آسے میکر عسقلان کک جوشام میرج بل ہے ہر حکم اسلام بھیل گیا۔

شطا مفرکا ایک مشہور شہرہے جہان کے کیراے مشہور ہیں۔ بیان کا رمئیں مسلما نون کے حالات مشکر کیا ہے ہیں۔ سالای مسلما نون سے حالات مشکر کیا ہے ہی سے اسلام کی طرف مائل تھا ہے اپنے حب اسلامی فوجین دمیاط میں ہینچین تورزو ہزار آ دمیون کے ساتھ شطا سے نکل کرمسلما نون سے اسلا اورمسلمان ہوگیا ہے۔

ك اليغ مقرري مفير ١٦٦ طبرول - كم مقرزي صغير ١٨٨ مين عنه و لما افتح المسلمون الفرس بدر ما افتح على المون المرادة و المنتقى حميا طون نيس ساس و المى بقادة فاسلوس بها و سار و امنها الى الورادة فله خل

اهلها في الإسلام وماحولها العسقلان، ك مقرزي طداول صفي ٢٠٠٠-

ر کھتے تھے، بیمرسلمان ہوکر عروبن العاص کے ساتھ مصر طبح اسے تھے، یہ ایک بہت بڑا ہیو دی خاندان تھا ،مصر کی فتح مین ہزاراً دمی اِس خاندان کے شام بھتے یہ

ضطاط مین ایک اور حمّله تھا جہان صرف نوسل<mark>م بحب</mark>سی آباد کرائے گئے محقے چنا بخہ یہ مخلہ ابھنی کے نام سریا رسیون کا محلہ کہلاتا تھا۔ یہ لوگ اصل میں با ذان کی فزج کے اُ دمی تقے جو نوشیروان کی طرف سے <del>بین</del> کاعا مل تھا۔حب اسلام کا قدم ، نتام مین بینیا تو بیادگ مسلمان ہوگئے او<del>ر عروین انعاص کے ساتھ مص</del>رائے۔ اسی طرح ا درمبته مبته مقا مات سه بیته ملیا*ے که مرحکو ک*ثرت سے <del>امسالام</del> یصیل گیا تھا ، مورخ بلا ذری نے بانس کے ذکرمن لکھا ہے کہ حضرت ابوعبیدہ نے یہان وہ عرب آباد کرائے جو شام مین سکونت رکھتے تھے اور سلمان ہوگئے تھے کہ موتن<sup>ح</sup> ارذی جنگ <del>یرموک کے حالات مین لکسا ہے ک<sup>ور</sup> جب رومیو</del>ن کی فرمبین برموک مین اُترین تو دہ لوگ جاسوس بنا کربھیجے جانے تھے جو دہین کے رہنے والے تھے ، اورسلمان ہوگئے تھے۔ ان لوگون کو تاکید بھی کواینا ا<del>سلام</del> ظا ہرنہ کرمن تا کہ رُومی اُن سے برگمان نہوئے یا مین <sup>،،</sup>۔ موترخ طبری نے سیامی کے دا قعات میں لکھا ہے کواس ارائی میں بہت سے اہل تحریف سلما نون کومرد وی جن مین سے کچھ لڑائی سے پہلے ہی مسلمان ہوگئے تھے اور کچھ لڑائی سے بعد مل الكيتمنت بوري تفيل مقرزي مني ١٩٠ علما ول بين ٢٠٠ ملك بلاوري منعير ١٥٠-

سلام لالعنے -

سله طبری صفح ۲۲۹۱-

اِن دا تعات سے صاف اندازہ ہوتا ہے ک<del>ہ حضرت عمرکے مبارک عہدمن اللم</del> لثرت سے بھیلا اور الواسے نہین بلکا ہے فیص ورکت ہے۔

ا شاعتِ آسلام کے بعداُ صول نرمہب اوراعال نرمہی کی تر ویج بھتی بینی ب چنیرون پراسلام کامرارہے اکا محفوظ رکھنا'ا ورانکی اشاعت'ا درتر ویج کرنی'ہں سلسلے مین سب سے مقدم، قرآن مجید کی حفاظت، اوراُسکی تعلیم و ترویج تھی۔ <u>حضرت عمرنے ایسکے متعلق ہوکوششین کین انکی سبت شاہ ولی امتار صاحب نے </u> نهایت صیح لکھاک<sup>د.</sup> ا مروز هرکه <del>قرائن</del> می خواندازطوا بینِسلمین ،مِنّتِ فارو واقعظم **د**رگردن اوست»۔

يمسلم ب كداسلام كالصل الاصول قرآن مجيد به وراس سے بھي انخار نهین ہوسکتا کہ قران مجید کا حمع کرنا-ترتیب دنیا ، صحیح نسخه لکھوا کر محفوظ رکھنا، تام مالک مین اسکی تعلیم کورواج دیا<sup>، جو کچه</sup> موا<del>حضرت عمرک</del>ے انتمام ا ورتو خب*ت موا*ا نغضيل اسكي بيب كأخناب رسول التدك عهدتك قرآن مجيدهم تتب نهين بواتها، رق اجزا رمتعد دمتحاً بہکے باس تھے وہ بھی کھ ہڑیون پر کھی کھجورکے بیّون پر کھھ تقري تختيون پر اوگون کو په راخغلایا دعبی نه سخت کسی کو کو نئ سورته یا د محتی کسی کو کو نئ-منرت ابو برکے عہدمن حب میلم کذاب سے لڑائی ہوئی توسیکرون صحابتہ پر ہو

من و کوشت

جن من ببت سے کھنا فاقرآن سکتے۔ لڑائی کے بعد <del>حصرت عمرت حصرت ابو مکر</del>کے ياس جاكركماكة الراسي طرح محفّاظ قرآن أسفت كن توقرآن حآمارم كا" اس كي ايمي ے اُسکی جمع و ترتیب کی فکرکر نی جاہئے ''حنرت ابو کمبرنے فرایا جو درکا م <del>رسو آل م</del>نٹر نے نبین کیا مین کیونکرکرون <sup>،، حضرت ع</sup>مرنے بار ارابراسکی صلحت اور صرورت بیان کی میا الك كرحفرت الوكرائلي راك سيمتفق بوك معلى مل من سع وحي ك كلف كاكام زیادہ زیرین ابت نے کیا تھا جنا بخہوہ طلب کئے گئے اوراس خدمت پر امور موٹ کہان جہان سے قرآن کی مورمین یا آتین استان کیا کی مامین -حفزت عمرے مجمع عام مین اعلان کیا کر حسبنے قرآن کا کوئی حصدر سول انتگرسے سیکھا ہو میرے یا ليكراتك اس بات كا النزام كياكيا كه جوشخص كوئى ايت بيين كرماتها أسيرة وتخفون کی ا در شہا دت بی جاتی متی کہم نے اِسکو انخفرت کے عہد میں فلمیند دیکھا تھا۔ نوش اِس طرح حب تام سورمین حمع ہوگئین توحیٰدا ومی ا مورہوسنے کوا کی نگرانی مین پورا قرآن ایک مجموعیزن لکھا جاہے، سعیدین العاص تباہتے جائے تھے اور زیرین آت لکھتے جائے تھتے ،'گران لوگون کوحکم تھا کہسی تفظ سکتے ملقظ ولہجمین اختلاف پیدا ہوتو قبیلہ مفرکے نہیے مطابق لکھا مائے -کیز کم<del>رقران مج</del>یدِ مفری کی فاص زبان من اتراب،

اس ودت وآنِ مجید کی حفاظت اور مخت کے لئے چندامور نمایت حزوری سفتے۔

مل كرا معال علدا ول صفية ٢٠٩ اوراتمان ١١-

قرات محدكي مفانمت دور واعوائب کی تربيرين

آول یہ کرننایت وسعت کے سائتراسکی تعلیمتنائع کی جاے اورسیٹرون ہزارون أدمى حا فطِ قرآن بنا دلئے جا میئن اکر تخرافیت و تعنیرکا اختال نرہے۔ و وسیرے پیراءاب اورا نفا ظاکی سخت نهایت ایتام کے ساتھ محفوظ رکھی داے تیمیٹرے پر کر<del>زان مجب</del> رکی ہت سی تقلین ہوکر ملک مین کثرت سے شائع ہو جا مین حضرت ع<sub>م</sub>نے ا<sub>ی</sub>ت مینون امور کو اس کمال کے ساتھ انجام دیا کا ہی سے ٹرحکرمکن نہ تھا۔

برون كوجري

تام مالک مقوح مین ہر گلیہ قرآن تحبید کا درس جاری کیا اور مقارق فاری مقرر کرکے ا ''کی نخواہین مقررکین ' خِنائجہ بیا مرجمی حضرت عمرے اولیا ت میں شمارکیا ما یا ہے کہ تھون نے مُعِلّمون کی ننحواہین مقررکمین - ننخواہین اُسوقت کے حالات کے لیا ط سے کم نر عقين مثلاً خاص مريئه منوره مين حيو في جهو سطيحون كي تعليم ك التي جوكمت عقد أمك مُعلّمون کی نخواہین ۱۵- ۱۵ درہم ما موارتقبین- خانر مروش مروون کے کئے <del>قرآن مج</del>ید کی تعلیم جبری طور رِقائم کی، خیا بخہ ایک شخص کو حبیکا نام <sup>آبو س</sup>نیات تھا چندآ دمیون کے ساتھ مامور ہا کہ قبایل مین بھر بھرکر شخص کا امتا ن سے اور سبکو قرآن مجبید کا کوئی حقتہ یا د منواسکو

مُكاتب مِن لكمنا بمي سِكهلا يا جا ما تقاء عام طورية مام اضلاع مين احكام بمبيوب عُسفَ ك پُون کوشسواری اورکتابت کی تعلیم دی **جائے** -ابوعا **مر**یکم **جور**وا تو حدیث مین بین انگی اغاتی مزرد (صفی م ۵- اصات فی احوال اعلی بین بھی ، وا تد شقول ہے ، ا زبانی روایت ہے کہ بن میں گرفتا رہو کرمہ بنہ مین آیا۔ یہان مجبکو کمتب مین بھا یا گیائیلم مجھ سے حب میم لکھو آیا تھا اور بن اچھی طرح نہین لکھ سکتا تھا تو کہتا تھا کہ گول لکھو حبر طرح کا ہے کی اکھین ہوتی ہیں۔

صحابین سے ہ زرگ محقے حبفون نے قرآن مجبد کوائف تری کے دانے می ورات اور تقا ،معاذ برجيل عبادة بن الصامت - ابي بربكعب - الوالوب - الوالد دِار ينمين عاصكراني ركعب سيّدا لقرار سقة ورخود وكففرت في اس إب مين انكي مرح كي تقي حصرت عم سفان ب کو الا کرکھا 'ڈنتا م کے سلما نون کو صرورت ہے آپ ہوگ جا کرقرآن کی تعلیم دشیجئے'' ابوا پر ب منعیف ا دراُ بی بن کعب بهار بینے ، اس کئے جا نیسکے - باقی تین صاحبون نے ختی سے منطور کیا۔ حصرت عمرے ہوایت کی کہ <del>سیاتے م</del>ص کوجا مئیں۔ وہا ن کچے دنون قیام کر کے جب تعلیم میں جائے توا کی شخف کو دہیں محیر رہیں باقی ذواً دمیون میں سے ایک حاجب دمشق اورایک صاحب فلسطین جامیّن بنیایخه میسب لو*گ پیلے ممص کئے۔*وہا جب اچقی طرح بندونست ہوگیا توعبا دہ نے وہین قیام کیا اورا بودردائر دشق-اورمعا د بن جبل <sup>جما</sup> مسطی<sub>ن کوروا نہ ہوئے۔</sub>معا ذین جبل نے طاعون عمواس مین وفات یا تی لیکن ا**بودر دار حفرت غنان کی اخیرخلافت تک زنره اور دمشق مین مقیم رہے**۔ ك معم الباران ينت طامنه معم بين اس روايت كومفنرت الوكمرك عهد كانسبت كلمعا بي ليكن فودها حب معم نے أسيريه متراص كياب كهاب وقت كم يه نقالت نتح منين بدئ تق - ملك بهنام تفصيل كترالعال عبدا واصفياره ین ہے اور مل روایت فبقات بن سعد کی ہے ۱۲

قرآرمحابه کا تعلیم تراکن کے کیے دور دراز تفایات برمجیمیٹ۔ تعیر قرآن کا مرتفیت مرتفیت ابو دردا رکی تعلیم کا طریقہ جیسا کہ علائمہ ذہبی نے طبقات القرآر مین لکھا ہے یہ تھا کہ مجمع کی نماز پڑھکر حابی سجرمین بیٹھ جائے سے گرد قرآن بڑھے دابون کا بجوم ہو تا ہیں۔
ابو دردار دیار دیل اومیون کی الگ الگ جاعت کردیتے سے اور ہرجاعت پرایک قاری کو نقرر کرتے سے اور پڑھنے وابون برکان قاری کو نقرر کرتے سے گا کہ قرآن بڑھائے ، خود ٹیلتے جائے تھے اور پڑھنے وابون برکان لگائے سے ہے جب کوئی طالب الجام ورآقرآن باد کرلتیا تھا تو ابو دردا بوخود اسکوانی تا گری مین لیتے سے ایک دن آبودردا تر مردار تر ایور درکار کے حافہ درک میں موجود کتے۔
مین موجود کتے۔

رمنتی کی عبر مین طلبة قرآن می مقدرا د

، نشاعت درد که دریوائی

مانفرن کا ایکن از کو قرآن کی تعلیم کے لئے جا بجا بھیجون، توسعدو قاص نے جراب میں لکھا کہ صرف ميري فزج من مين تنوما فطامو جود بين، " يبتلزا مريغي صحتِ اعراب وصحت للقط ، اسكے لئے بھی نهایت اہمام کیا اور دخفیت يهب سے مقدم تھا۔ قرآن مجید حب مرتب و مرون ہوا تھا توا عواب کے ساتھ نہين ہوا تھا۔ اِس کئے صرف وان مجبید کا نتائع ہزا کھ مفید نہ تھا اگر سخت ا واب ولقط کا ابتهام ندکیا جا آا-حفزت عرف اسکے لئے مختلف تدبیرین ا فتیارکین-سب سے اوّل یہ کہ ہر حگیم تاکیدی احکام تھیجے کہ قرآن مجبدیکے ساتھ صحت الفاظ و صحّتِ اعراب کی بھی تعلیم دی جاہے۔ اُنکے خاص الفاظ حسب روایت بن الا نباری يهبن تعلَّوُ اعْمَل بالغُلانِ كَمَا تَعَلَّى تَعِينَ حِفْظ ورسندوار مي مين يوالعن الاين تَعَلَّوُ الْفُرَا بِضَ واللِّينَ والسُّننَ كَأَنْعَلَمُ الْقُلْ نَ

روَّسِ سے میرکة قرآن کی تعلیم کے ساتھ- ا دب اور عزمتیت کی تعلیم بھی لازمی کردی اً كُ لُوكُ خُودًا عُرَابِ كُي تَحْتُ وَلَالِي كُي تَمْيِرُ رُسِكِينٍ-تميترے مي حكم ديا كه كوئي شخص حوكعت كاعالم منو قرائ نديرهانے يا كئے۔ تراً ن مجید کے بعد ، حدیث کا درجہ ہے ۔حضرت عرفے اگر حی*صدیث کی تر*وج میں بت کوشش کی لیکن ا حتیاط کولمحرفار کھا ، اور میرانکی دقیقہ بنجی کی سبب سے بڑی دلیل ہے ، وہ بجزمحفسوص محاببركے عام طور پر ہوگون كوروايت صديث كى امازت نبين وسيتے تھے۔ ك كترالول طبراول ٢١٠- ملك كترالول بلداول منر ٢٢٨مدن کی تعسیم شاه ولی النّد صاحب سخریر فرمات بین پیخانکه فار د قِ اعظم عبدالنّد بن سعو درا باجمع بکوفهٔ فرستاد وعبدالنّد بن فقل وعمران بن صیبین را به بصره و عباده بن صامت و ابو در دار را بشام و به معاویه بن ابی سفیان کامیر شام بود قدعن بلیغ نوشت کدانه محدیث ایشان تجا وز کمنه و حقیقت به ب کرحفنرت عَمرین دوایت مدیث که متعلّق حواصول قائم کی کنته بی کابهت برا کا زامه به بیکن انگی تفصیل کابه موقع مین - آنی داتی حالات مین ایک نمیشنی کابهت برا کا را مهان دکرانیگایم اسکه مقلّق نهایت نمایت مین - آنی داتی حالات مین ایک مقتل دکال کابهان دکرانیگایم اسکه مقلّق نهایت مین سال مین

نعت

سائرض ك<sub>ا</sub>شامَت مرین کے بیرنقہ کا رتبہ ہے اور چزکہ مسائلِ فقیہ سے ہٹرخص کو ہرروز کا م پر تاہے اس سے مصنرت عمر نے اسکو اس قدر انناعت دی کراتے با دجو د بہت سے نئے وسائل بدلا ہر جانے کے ، یہ نشر وا شاعت مکن نہیں ، مسائلِ فقیہ یہ کی ترویج کے لئے جو تد بیرین افتیار کین حسب ذیل ہیں۔

(۱) جمان تک وقت اور فرصت مشاعدت کرسکتی تھی، خود بالمشا فندا حکام بذہبی کی تعلیم کرتے سقے ، حجم دیکے دن جو خطبہ بڑھتے سخے آسین تمام صروری احکام اور سائل بان کرتے سفے ۔ ج کے خطبہ میں ج کے مثا سک اوراحکام بیان فرمائے سخے ۔ موطا الم محمد میں ہے کہ حضرت عمر نے عرفا ت میں خطبہ بڑھا اور ج کے تمام مسائل تعلیم کئے ۔ میلی میں شام و مبت المقدس وغیرہ کے سفرین و قانو قانا جومشہ وراور ترا تر خطبے بڑھے انہیں سال میں اللہ ازالة الغار جزر درم معن ۲- سلے موطا الم محمد معن ۲۰۰

کے تام متمات ا صول اورا رکان بیان کئے اور چونکدان موقعون برہے انتہا محج بہ ہواتھا اس کئے اُن مسائل کا اِس قدرا علان ہوجا آتھا کدا دکیسی تدبیرے مکن نہ تھا۔ وشق نن مبقام جاب جوبشنہور خطبہ طرچھا فقہانے اُسکوسبت سے مسائل فقتہ یہ کے حرالے بین جابجا فقل کیا ہے۔

(م) دِّنتاً فوقتاً عال اوراد نسرون کوزمبی احکام ا ورسائل کاه لکھا بھیا کرتے تھے، شلاً نا زیمگا نه کی اوتات کے تعلق جسکی تعبین میں مجتہ دین آج کے محملف ہیں تام عمّال کو ایک مفتل مرایت نامه بهیا، چنا نخه امام مالک نے اپنی کتاب مُوطّا بین بعینه اُسکی عبارت نقل کی ہے۔ اِسی نسّلے سے تعلق ابوموسیٰ اشعری کو جو تخریجیجی اُسکو بھی امامالک نے بانفاظهانقل کیا ہے، - دُونا زون کے جمبارنے کی سنبت تمام مالک مفتوحہین تحریری اطلاع بیجی که نا جائز ہے۔ سلامین حب نماز ترا ویجے ، جماعت کے ساتھ سجد بوی مین قائم کی توتام اصلاع کے اصرون کولکھا کہ مرحکید ایکے مطابق عمل کیا جائے۔ زکوٰۃ کے تعلق تمام احکام مفصل لکھکر <del>ابوموسیٰ اشعری</del> اور دیگرا **ونسران ملکی** کے باس تھیج-اس تحریر کا عنوان جبیاکہ شاہ ولی اللّہ صاحب نے امام مالکت کے قصنا اورشهادت كے تعلق ابوموسى اشعرى كوجو بحتر جيجي تھى اُسكوم اوپرلكھ اُسكة ہیں۔مہات مسائل کے علاوہ فقہ کے مسائل جزئیہ بھی عُمَّال کولکھ لکھ کر کھیجا کرتے سکتے،

<u> ضرت ابو عبیده کوایک د فغه لکها که زمین نے شاہے کہ سلما ن عورمن خامون میں حاکم</u> عبیائی عورتون کے سامنے بے یردہ نہاتی مین ،لیکن سلمان عورت کوسی غیزر مطالح رت کے ساننے بے پر دہ ہونا جائز بنین ، - روزہ کے متعلّق تام عال کو تخرری کم بھیجا کہ کا نگونوامِنَ المسوفین لیفظ کھٹر زمین وہب کا بیان ہے کہ حضرت عس فران م ہوگوں کے ماس آیا کہ اتّا المعَ لا كَتْصُوعُ نَطْقُ عَاٰ الآبادٰ نَرَدِ جِمَا - ابووالِ وايت ب كر حصرت عرف مم لوكون كولكهاكه إنّ ألاهلّة بعض الكب مير بعض س طرح کی اوربہت سی ہے شار مثالین ہیں۔ یہ بات بھی لحاظ کے قابل ہے کہ جونفتی احکام، حضرت عمر، ذ شایع کرتے تھتے چونکہ نتا ہی دستور تعل کی مثبت رکھتے تھے ، اس کئے یہ احتیاط ہش لمحوظ رہتی تھی کہ وہ مسائل، اجاعی ا ومتیفق علیہ ہون ، چنا بخہبت سے مسائل جنین ا ی ہوا ہے کا اختلات تھا اُنکو مجمع صحابہ میں بیش کرکے پہلے طے کرالیا ، مثلاً چور کی زامبكي سبت قاضي ابويوست كماب الخراج من لكصة بن اتَّ عمر الشيّناد في لسَّارِ مِنْ قَالْجُمْعُ فَمَا أَلَحْ مُنْ عِنْهِ جِنَا بِتَ كَي نسبت حب اختلاف ہوا تو نم اجب بن اورانضا رکو جمع کیا اور پیشار پیش کرکے سب سے رابے طلب کی ، فِي مُعْمَلُون رامِين دين، أس وفت من رما يا منتراحُكا كب سكرير ى قىل خىلفى تۇنىن بىكى كۇلىنىڭ اختارى قى مىسى تىپ تىپ بوگ اصماب بىر مىر مى كىلىمىن كم كتاب مزكورصيخ ١٠٦-

م ونعتب سال عتب من حائ

مخلف الرام بين توآينده آنے والى نسلون مين اور حنت اختلاف ہوگا، حيث آيم ا زواج مُطّهرات سے بیمئلہ دریا فت کیا گیا اوراً نکی راسے قطعی قرار اکٹرنیاں کیگئی۔ خِازه کی مکبیرمین نهایت اختلا*ت تما ، حعزت عرفے صحابہ کو حم*ع کیا اورایک منقح <del>آ</del> طے ہوگئ مین چار کمبیر راتفاق ہوگیا۔ (مع) اصلاع کے عال اورا مسرح بقرر کرتے تھے ان میں بیمیتیت بھی لمحوظ ار کھتے تھے کہ عالم اور فقیہ ہون جنا پنے بہت سے مختلف موقعون براسکا اعلان کردیا تها ايك وفعه مجيع عام مين خطبه وياحس مين بدا نفاظ محتے إلى النها كو تعلى اهراء الامتصاد ان لو ابعنه علا لفقه على النّاس في ح بينه حرا يني من م الرّد الله المنصاد ال کڑا ہون کہ مین سے اسٹرون کواس گئے بھیجا ہے کہ لوگون کومسائل اوراحکام تبامیُ<sup>ن کے</sup> يه التروام كمكي منسرون مك محدود نه تها بلكه نوجي امنسرون مين بجي اسكالحاظ كيا جا يا تها ، قاصى ابويوسف صاحب مكت بين إنَّ عَرُبِ الخطَّابُ كَانَ اذا الْجَنَّمَ اللهِ حَبِينَ الْ مِن اهل لا بماكِ بَعَانِ عَلَيْهِ مِرْجُهُلا مِنَ آهَلُ الْفَقَةِ وَالْعَلَمِ سِي مُكَمَّة ہے كَمَ <u>حصرت عمرکے عمد کے نوجی اور ملکی امنسرون مین ہم حضرت ابوعبیدہ -سلمان فاریئ -</u> بوموسیٰ استعری،معا ذہن حبل، وغیرہ کا نام پاتے ہیں جوملی اور فوجی فابلیت کے ساتھ علم ونعنل مين بعي ممتاز تحقيرا ورحديث وفقه مين اكثرا كانا م أيا ب-(مهم) تمام ممالک محروسیم ن فقها ا ورُمعلِم متعین کئے کاوگون کو مزہبی احکام کی سل الاوالفارمني ٥٠٠ - سل كاب الخراج صفير ١٧٠ -

مسائل نقبیه مین!ماع

صيغه نممي

فقد*ی تعلیم* انتختام

ولیم دین ، مورضین سے اگرچ اس ا مرکوکسی خاص عنوان کے سیمے نبین لکھا اوراس سے اِن علمون کی صحیح تعداد علوم نتین موسکتی *ناہم \* بند تصریحات*. مہر ہر شہرین متعدّد فقہا اس کام پر مامور تھے۔ نتلاً عبدان منفل کے عال می**ن ما**حب مدالغا بب لے لکھا ہے کہ پینجلدان دئل بزرگون کے بین خبکو حصرت عمر نے بصرہ ین بھیجا تھا کہ فقہ کی تعلیم دی<sup>لہ</sup>، عمران بن تحصین جوہت ب*رہے ر*تبہ کے صحابی سمتے كى سنبت علاَّمُهُ رَبِّبي ملتِّفات الحقّاظ مين تكھتے ہين قاكات مِين كِعَنْهُ مُومِعُ معسميًّا بْنُ المفطايب الى اهل البَصَرَة ليفقه عن مِين مِهُ أَن لُوكُون مِن مِن جَلُوحفزت عَمَّ بھرہ میں فقہ کی تعلیم دینے کے لئے بھیجا تھا۔ عبدا ارتمن بنعتم کے حال مطبقا آل ہوا مین لکھاہے کہ حفزت عمرنے انکو تعلیم فقہ کے لئے شام بھیجاتھا ،اورصاحب للفا نے انہی کے حالات میں لکھاہے ک<sup>و ر</sup>ئیمی *د تیخص ہی*ن جغون نے <del>شام م</del>ین مت ں بعی<sub>ین</sub> کو نقعہ سکھلائی ، عبا دہ بن تعبا مت کے حال مین لکھا ہے ک<sup>ے</sup> جب شام ُنتح ہوا تو<u>حضرت عمر</u>نے انکو ا د<u>رمعا ذین ب</u>ل ا ور ابو در دار کوشام مین بمبیا تا کہ بوگون وقرآن مجيد طِها ميُن اور نقه سِكها مين- عِلال الدين سيوملي نبي حسن المحاصرة في جنا رمصروانقا ہرق بین حبان بن ابی جبلة کی نسبت لکما ہے کور حصرت عرف انکو تصرمین فقه کی تعلیم پر ما مورکیا تھا'' اِن فعتما کے درس کا یہ طریقہ تھا کہ سا جہ کے صحن میں ایک عرف میے ماتے تھے المس مبات يه كان احلالعشرة الذين تعتف عمل لى البكر لا ينقه في الناس م

ورشايقين علم نهايت كترت سي أبك كرد حلقه كي صورت مين حجع موكر فعتى مسائل پوچھتے جاتے تھے اور وہ جواب دیتے جاتے تھے ، ابومسلر خولانی کا بیان ہے کئن سے نص کی مسجد مین د افل ہوا تود کیھا کہ مع بڑے بڑے صحابہ وہان تشریب رکھتے تھے اور مائل *برگفتگو کرتے بھتے ، لیکن جب ا*ُنکوکسی سئے مین **شک پ**ر اُنھا توایک نوحوات خص ،طرف رجرع کرتے تھے، بین نے لوگون سے اُس نوجوان کا نام بوجھا، تومعلوم ہوا مربلی، - لیث بن سعد کا بیان ہے کہ ابو در دار حب مبیر میں استے تھے میران حیات ترائے ساتھ لوگون کا اِس قدر بحوم ہو اتھا جینے 'اوسا والے ایکھیے اُری جے اے بیرا ہو ہو اوگر ن سے سائل دریافت کرتے سے

نفهائي نخوب

ابن جوزی کی تقریح سے معلوم ہرتا ہے کہ حضرت عمر نے ان فقہا کی نخوا بین بوثقر يمتين اورد رقيقت تعليم كامرتب اوزمتطنم سلسله بغيراسكة فايم نهين بوسكما تقا-يه بات خاص طور پر ذکر کے قابل ہے کہ حصنرت عمر نے جن لوگون کو تعلیم نقہ کے لئے أتنى بياتيا شلأمعا ذبن جبل- ابودر دارعبا دة بن الصامت عبدالرمن بن ران برجعیین عبدا متٰد بن فل تمام جاعتِ اسلام بین اتنجاب تنظے، اِسکی تصدیق ولئے أسدانغا تبرا وراصا تبروغيرومين ان لوگون كے حالات دعھنے جا ہئين-ايك بات ا و ربحی لحاظ کے قابل ہے کہ <del>صنرت عرب</del>ے اس بات کی بٹری احتیاط کی کہ عمواً متحرفر تغریفتان کام در منال کام از نهویسائل می فاصکرد و تعلیم دیے جاتے محصے بنیں صحابر کا آنفاتی آرا کام در در منا ل تذكرة الحفاظ ذكر معاذبن جبل- كل تذكرة المغاط ذكرا بور دار ١٢

ہو چکا تھا ! جو تحجیع صحاً برمین بیش موکوطے کرنئے جاتے بختے ، چنا یخہ اسکی پوری تفصیل <u>شاہ ولی اللہ صاحب نے نہایت خوبی سے لکھی ہے۔ یم اُسکے حبتہ حبتہ فقرے جو</u> ہاری بیث سے تعلق ہیں اس مقام پزقل کرتے ہیں۔ إ بعدع م غليفه برحيرے مجال مخالفت نبود- درجميع اين امورت زو نذر مين ومدون استطلاع راسي خليفه كارك رانصم يمني سأختند لهذا دربن عصرا ختلاف نداب وتشتت آرا واقع نشد- ہمہ ہریک نرمہ بتفق وبریک راہ محتمع ، حیون ایام خلافت فاطّه بالكّيه منقرص شدوخلافت عامة ظهورمنود، عُلما درم بلدِے مشغول با فادہ شنو ابن عباس درمگه فتوسے می دہر ، وعایشہ صدیقیہ وعبدا مٹدین ع در مربنہ صدیق را ر دایت می نمایند+ و ابوم رمزه ا و قات خو درا براکثار روایت <del>مدمت</del> مصرون میسازد<sup>،</sup> بالجله درین ایم اختلاب قتا وی پیداشد- یکے رابرراے ویگرے اطلاع نہ واگر اطلاع شده مُذاکره واتعع نه واگر مذاکره بمیان آمدازاحت شبهه وخروج ازمفینق اختلا*ت* بفصناے آنفاق میشرنه ، اگرنتیع کنی روایت علما ے صحابہ کرمیش ازا نقراص خلات فا صّه ا زعا لم گزشته اند بغایت کم یا بی ، وجمعے که بعدایا م خلافت مانده اند مرح<sub>ی</sub>ه روایت اروه اندىبداياً م خلافتِ خاصدر دايت كرده اند- هرحند جميع صحابه عد ول اندور و <sub>ا</sub>يت ایشان مقبول وعمل بموحب ایخد بروایت صدوق از نتیان تابت ستو دلازم- اُ مّا ورميان ايخداز صديث ونقه درزمن فاروق أغلم بود وايخد بعدوس عادث شده فرق بابين السلوات والارمن ست"،،-

Carlo Carlo

یہ تمام امور خبکا اوپر ذکر ہوا علمی سلسلے سے علق سلے علی صیغہ بریمی حضرت عمر نے نهایت توجہ کی اور مرمتم کے صروری انتظامات قایم کئے ، مرشہرو قصبہ مین

امام ومؤذن مقرر كئے اور مبت المال سے انگی نخواہین مقرر کین علاّمہ بن الجوزی

سيرة العربين من لكفته بين التي عمر بن الخطاف عُمان بن عَفَا ن كَانَا بَهُ فَاللَّهُ وَذِنِينَ

سے خاص اُتناص مقرر مختے - جے کے زمانے مین اِس کام پر بوگ امور ہوتے تھے کہ ا عاجیون کو مقام منامین عقبہ کے یا رئینیا آئین - یواس عوض سے کواکٹر بوگ نا وَمِعَنْت

سے عقبہ کے اِسی طرف تشیر وائے تقے حالا کہ رہان تشیرنا ننا سک جج میں محسوب نہ تھا

چونکه عهد خلافت مین متصل ۱ جج کئے اس کئے میرحاج ، مهنشه خود موتے کتے اور

حَبَاج کی خبرگیری کی خدمت خو دانجام دیتے تھے۔

تام مالك مفتوحدين نايت كثرت سيمسجدين ميًّا ركرامين ابورسي شعري كوحوكوفه كح حاكم سق

الکها اکسبره مین ایک جامع سجه و اور باقی م توبیلیا کے لئے الگ لگ سجدین تعمیر کیجا بین "سورقال

او عروین انعاص کوبھی ہی تھے۔ تکام بھیج۔ شام کے تمام عُمال کولکھا کہر ہرشہ میں ایک میں تندی سے زارز میں میں آدی جہام دع میں کزار سرمشد میں ماکہ اُکی صل وات

المسبحة تمريحيات بيناني يتسبدين أجهي حوامع عمري كنام سيمشهورين يُواكي على عار

اب آقینین ری ہے۔ایک جامع عرمی میں جو بیروت مین واقع ہے راقم کو بھی منازا داکرنے

كالشرف حاصل مواهب محدث جمال الدين في روضة الاحباب مين لكهاب

ك سرما الا محرية في ١٧٠ - تك موطاالم محرة في ٢٠٩ - تك ما يخ مقرزي ملدد وم صفحة ٢٧١ -

على بتغام

اما مون ادر موزنون کا تعقر

ماجیون کی "ما فلیسالاری

سا مِدِی میر

دم محترم کی وست

<u> ، حضرت عمر کے عهد مین جا رہزار سجدین تعمیہ ہومین " یہ خاص تعدا د گوقطعی نہولیار و</u> فرشهه نبین کرمسا جدفار وقی کاشار مزار ون سے کم نر تھا-حرم محترم کی عمارت کو وسعت دی اوراً سکی زیب وزمنیت پر تو تبه کی- اساتی فعیل یہ ہے کہ اسلام کو جور وزا فرون وسعت ہوتی جاتی تھتی اُسکے لحا**مٰ**اسے حرم محترم کی عام کا فی نہ تھتی اِس لیئے سٹایٹہ مین کرد وہیش کے مکانات مول لیکرڈھا دیئے اور انکی مین حرم کے صحن میں شامل کرد ی ،اس زمانے تک حرم کے گرد کوئی دیوار نہتی اوراس سے ائسکی حد، عام مکانات سے متماز نہ تھی۔ حصزت عمرنے احاطہ کی دیوا کھینے انی اورائس سے ایمی کام بیا که ائیررات کوحراع جلائے جاتے تھے۔ کعبہ برغلات اگر حدیم شہرے جرمایا جا ما تعا بنا بخه جا ہیت میں تھی تطع کا غلاف چڑھا تے تھے دیک<del>ن حصرت عرف قباطی</del> کا بنوایا جو نهایت عده قسم کا کیرا ہوتا ہے اور مقرمین بنا جاتا ہے حرم کی حدود سے (جوکسی طرف سے تین میل اورکسی طرف سے عاور میل بہن) چوکہ بہت سے شرعی احکام متعلّق ہیں جنا پنداسی عرص سے ہرطرف تی **قرکھرے کردئے گئے تھے** جوا نصاب *جرم ک*ملاتے تھے اِس کئے حصرت عمرنے سئاتھ مین نمایت اہتمام اور ایا سے اسکی تحدید کی مصابر مین سے جولوگ فکرو دِحرم کے پورے واقفا رعقے مینی مخرمة بن نوفل، از ہرین عبدِعوت ، حولطیب بن عبدالعزی سیسد بن تربوع لوام کام پر امورکیا اور نبایت جایج کے ساتھ بیھے بیف کئے۔ ك الاحكام السلطانية للي وردى مره وفتيح البلدان صفير ومه وسك فتوح البلدان صفير ٤٨٠ -

مسجدنوی کیم<sup>زمت</sup> اورسعت

مسجد نبوی کوتھی نہایت وسعت اوررونق دمی آنخصرت کے عہدمین جوعارہ طیار مہوئی تھی وہ ائس عمد کے لئے کافی تھی لیکن مرمینہ کی آیا دی روز بروز ترقی کرتی جاتی تمتی اوراس وجہسے نما زیون کی بقدا دیڑھتی جاتی تھی ہمئلے میں حضرت عمرینے امکو وسیع کرنا چا ہا۔ گردومیش کے تمام مکا ات قیمت دے کرلئے لیکن حضرت عباس اینے مکان کے بیچنے سے انکارکیا - حفرت عمرکا فی معا و صددیتے تھے ا ورحضرت عباس ی طرح راضی نہوتے تھے ، آخر مقدّمہ اپی بن کعب کے یاس گیا۔اُنھون نے فیصلہ لیا کہ حضرت عمر کو بجیر حزید نے کا کو ئی حق نہیں حصرت عبا س سنے فرمایا کہ ‹‹ اپ میں بلائمیت عامه سلمین کے لئے دیرتیا ہون "غوض ارزواج مطرّات کے مکانات کو حیور کر، باقی جس قدرعاتین تقین ڈھاکرسی کووست دی گئی۔ پیلے طول اگر تھا انھون نے بہاکڑا لرديا اسى طرح عرص مين تعبي ٢٠ گز كا اصنا فه مواليكن عارت مين كيمي تلف نبين كيا كيا تخفيجا عمد مین حس طرح سنون وغیرہ لکڑی کے تھے۔اب بھی لکردی کے رہے، حضرت عم سجد کی تجدید کے ساتھ ایک گوشتہ میں ایک چیوٹر ہھبی بنوا یا اور لوگون سے کہاکہ حبا ات منت كرنى، إستعرر منا بواسك سئ يرمكه با

حضرت عرسے بیلے مسجد مین روشنی کا کچھ سا مان منین تھا ، اِسکی ابتدا بھی خفتہ عرکے عمد مین ہوئی، مینی آئی ا جازت سے تمتیم داری نے مسجد مین جراغ جلائے ۔ حصنرت عرف مسجد مین خوشبو اور بخور کا انتظام بھی کیا ،حبکی ابتدایون ہوئی کہائیے۔

كمله ملامتدادفا باخاردا المصطفرا مطبوعَهُ معرصفيُ ١٣٢ و٣١١ -

مسجدمین فرنش اور روفنی کا انتلان م الظینمت مین عود کا ایک بندل آیا حضرت عرسی انون کوتفتیم کرا جا ایکون کا فی استان حکم دیا کہ مسجد مین صرف کیا جا سے گرتام سلما نون کے کام آسے جنا بخرگوزن کو حوالہ کیا ، وہ بہتے حجم یہ کے دن انگیٹھی مین جلا کرنما زیون کے سامنے کھرنا تھا اور اُسکے کیا گیا ہے ۔ وی انگیٹھی مین جلا کرنما زیون کے سامنے کھرنا تھا اور اُسکے کیوٹ کیا لیکن یہ کوئی پُرِتحکف کیوٹ بستا تا تھا ۔ ویش کا انتظام بھی اوّل حضرت عمری نے کیالیکن یہ کوئی پُرِتحکف قالیم تھی تعنی جُبائی کا ویش مقامی متعارف کے کیوٹ گرد و خاک مین نوالودہ ہون ۔ متعارف انتظام اسلام کے کیوٹ گرد و خاک مین نوالودہ ہون ۔ متعارف انتظا است

حکومت کے تعلّق ، بڑے بڑے انتظامی صیغون کا حال ، او برگذر حیا ، لیکن ا مکھے علاوہ ، اور بہت سے جزئیات ہین جنگے لئے جدا حداعنوان نبین قائم کیے جاسکتے اِس لئے انکو کم کے لکمنا زیادہ موزون ہوگا۔

انین سے ایک دفتر اور کاغذات کی ترتبیب ، اورائسکی صزورت سے سُنُ اورائل کا قایم کرنا ہے۔ حصرت عمر سے بہلے اِن چیزون کا وجود زرتھا ، عام واقعات سے یا د رکھنے کے لئے جاہلیت مین بعض بعنی واقعات سے سُن کا حساب کرتے تھے ، شلا ایک زمانے تک تحب بن توی کی وفات سے سال کا شار ہوتا تھا ، پیرعام امنیل قایم ہوئی جس سال آبرہۃ الاشرم سے کعبہ پر حلم کیا تھا بھرعام الغجاراوراً سکے بعدا ورخملف سُن قایم ہوئے ۔ حصرت عمر نے ایک مستقل مُن قایم کیا جو آج تک جاری ہے۔

سلم خلامته ابوفاصفحه ۱۷-

سنهری مغرد کرنا

اسکی ابتدا یون ہوئی ک<del>رمال</del>انہ می<del>ن حفزت عمرک</del>ے سامنے ایک میک بیش ہوئی جب صرف شغبان کا نفط لکھا تھا ،حضرت عرفے کہا یوکیونکرمعلوم ہو گذشتہ شعبان کا مہین مرا دہے یا موجودہ-اسی وقت محلیس شورے منعقد کی، تام بر*ے برے معا* ہ<sup>م</sup>مع ہو<sup>ک</sup> ا وربیہ سئلہ بیش کیا گیا۔اکثرون نے راہے دی کرفارسیون کی تقلید کی ماہے۔ جنا بخہ هرمزان جوخوزشان كابا وشاه تها ا دراسلام لاكرمد سيمنتوره مين تيم تعاطلب كيا كيا ، اسنے کہاکہ ہمارے بان حرصاب ہے اُسکو <mark>ما و روز کہتے ہی</mark>ں اور اسمین مهیندا درایخ دونو کا ذکرمز 🚾 ، آسے بعد پیجٹ پیدا ہوئے کرسنہ کی اسلاب سے قرار دی جانب علی نے ہجرت نبوی کی راے وی اوراسی ریسب کا آنفاق ہوگیا ۔ انخفترت سے رم**ی الارل مین بجرت فرانی متی مینی سال مین** در مهینے آٹیدون گذر <u>حکے ت</u>ھے ،اِس کا **آا** سے بہتے الاول سے آغاز ہونا چاہئے تھالیکن جزیکہ عربین سال محرم سے شروع ہوتاہ اس کئے دومینے آٹھ دن تھے ہٹ کر شرع سال سے سنہ قایم کیا۔ ع الرحية ويم مع ملعن يرهن كاني الجله رواح تما ، خِلا بخدب اسلام كاز ما ذا يا تومرن ایک تربیق کے قبیلین ، اشخص لکمنا پرهنا جانتے تھے ، 🖁 · 🚾 🗗 📆 🦳 عمواً لو السبب بهره من بهان ك كحب سئلة من أيله نتح مواتوتا م فوج من ايك فنخس اتما جبكوهاب كتاب أابوا وجوال غنيت كوفاعدك ستعتبركها يجبونا لوگون م**ا** ایک مهر ساله رهمکے مینی زیا دہن ابی سفیان کی طرت رجوع کیا اوراس صلے کے مفرزی ملداول معفد ہ

مین اسکی نخواه دروریم بومیه تقرر کی - یا توبه حالت متی یا حضرت عمر کی برولت نهایت جنی سے ہوئتم کے مفعمل کا فذات اور نقشے طیار ہوئے -

سب سے شکل اور برجی، روزینہ دارون کا حساب تھا جواہل عطا کہ التے تھے
اوج نین ہوتھ کی نوجین بھی شامل تھین، انکی تعدا دلا کھون سے متجا وز بھی از ختلف
گروہون کو مختلف تثنینتون سے تخواہ لمتی تھی، مثلاً بہا دری کے لیا فاسے، شرافت کے
لیا فاسے، بھیلی کارگذاریون کے لیا فاسے، ایسکے ساتھ قبایل کی تفزیق بھی کمخوا تھی یعنی
ہر توبسلیکا عبدا جدا رحبطر تھا، اوران میں بھی مختلف وجوہ کے لیا فاسے ترتمیب قایم کھی
جاتی تھی، اس صینے کے حساب دکتا ب کی درستی کے لئے حصرت تحریف براسے،
جاتی تھی، اس صینے کے حساب دکتا ب کی درستی کے لئے حصرت تحریف براسے،
قابل لوگون کو امور کیا مثلاً دارا نحافظ تحرین تعقیل بن ابی طالب، مخرمتہ بن نوفل، جبیرین

نملعنتم کے دمبئر

د فتر

میتالمال کے کاغذانکلسنا امع کو ، بھرہ مین مغیرہ بن شعبہ کو ، کو فہ مین عبد اللّٰہ بن خلف کو ، -خراج کا تمام دفتر جیسا کہ ہم اوپرلکھ آئے ہین ، فارسی ، شامی ، قبطی زبان مین را

بونکه <del>وب</del> مین اِس فن کواس قدرتر تی منین ہوئی مقی که بیرد فترع بی زبان میز متبقل ہوسکتا۔ ------

میت المال کاحساب نهایت صحت سے مرتب رہتا تھا ، زکوۃ وصد قرمین جرمونیی

ائے مقے میت المال سے معلق محے جنا بندانکے رجی ٹرک ننایت تعفیا سے مرتب تھے

جا بوزون کا حلیه، رنگ ۱ دوع ترک لکمِی جاتی تھی ۱ ورمفِرو تت خود حفرت عراینے ہات سے - بند

ھتے گئے۔

ك طبرى منى ٢٣٨٨ - ك طبرى ٢٣١٧ -

حضرتِ خالدکی ہیلے مغرولی اسی بنا پر ہوئی تھی کہ وہ کا غداتِ حساب کے بھیجنے کی دہمہداری

مصارن ِ جُنگ و رال غنیمت کا حساب، ہمینیہ ا فسیرن سے طلب کیا جا آئتھا،خیا نجیما

مصارون قبگ کے کا غذات

> ردم شاری کے کا غذات

نیین قبول کرتے تھے۔ مبلولاً کی نتے مین جرستا مدھ مین واقع ہوئی تھتی زیا دہن ابی سفیا ن حساب کے کاغذات کے کر مربنی مین اکئے تھے اور حفزت عمر کو ملاحظہ کرایا تھا۔ ' رکزۃ اور جزید کی شخیص کی عزورت سے ہر تقام کی مردم شاری کرائی گئی تھی اوراہ سکے کاغذات نمایت اہمام سے محفوظ تھے ، چنا بخد مقروع اق کی مردم شاری کا حال ، مقرزی کو کے طبری نے تفصیل سے لکھا ہے۔

خاص خاص صفتون کے لحافہ سے بھی نقتے طیتاً رکرائے گئے تھے، مثلاً سعد و قاص کو حکم بھیجا تھا کہ جس قدراً دمی قرآن بڑھ کتے ہیں انکی فہرست طیبار کی جاسے شاعرون کی فہرست بھی طلب کی بھتی جیا نے اُسکا ذکر کسی اورمو تع پڑائیگا۔

مفتوحه مالک کی قومون یا در بوگون سے جس قدر تحربری معاہرے ہوتے تھے۔ دہ منایت حفاظت سے ایک صند دق مین رکھنے جائے ہے۔ منایت حفاظت سے ایک صند دق مین رکھنے جائے ہے۔ اس موقع پر بر برتا دینا بھی صنرورہ کو اس وقت تک حساب کتاب کے لکھنے کا برطریقہ تفاکہ متعلیل کا غذیر لکھتے تھے اورا سکولیبیٹ کرر کھتے تھے، بعینہ اس طرح جس طرح ہمارے الکہ مین مما جنون کی بہیان ہوتی ہیں۔ کتاب اور رحبطر کا طریقے، خلیفہ سفاح کے رواضین اسکے وزیر خالد بر مکی نے ایجا دکیا۔

ك اصابه في احوال معي بتركره خالد بن اوليد كل طبري في ١٣٨٥ - مثل مقرزي ملدا وال منفي ١٩٥٠ -

کاغذات مِناً کے مکھنے کا طریقیت سِکَدی نبت اگردیام مورخون نے لکھا ہے کہ عرب مین سب سے پیلے جنے سکھاری کیا وہ عبدالملک بن مروان ہے، لیکن علائہ مقرزی کی تخریت ابت ہترا ہے کا بسکے مر مدیمی عرفاروق ہی ہیں، جنا بخداس موقع پر ہم علائہ موصوت کی عبارت کا تفظی رحمہ کرتے ہیں۔

رحب البرالمونين عمر خليفه موسع اور خدان ابح بات برمصرو ثنام وعراق فتح کیا ' توا بخون نے سکہ کے معالمہ مین کچئر ذخل نہین دیا ، لکڈیرا نے سکے حوجاری تھے بحال رہنے دیئے۔ مثلہ مین حب مخلف مقاات سے۔ سفارتین ایئن توبعیرہ سے بھی مُفزاِ آئے جن میں احنت بن میس تھی شامل تھے ، احنت نے باشندگان تعبرہ کی صرورات ا ور حاجتین بیا ن کمین ، <del>حصرت ع</del>رف انکی درخواست پر متقل بن سیار کو بھیجا، حبھو اسے تصره مین ایک نهرطیّا رکرائی، حبکانام نهر مقل می، اور کی نسبت یه فقره شهوب إِذَا جَاعَنهُ كُلَّهُ بَطِلَ مَعْ مَعْفِيل، حضرت عمر في زماني ين يه انتظام كياكتمفر ك ك ايك جرب غلما ور دو دريم ما مهوا رمقرركية - أسى زمان مين حضرت عرف ني سِكَّه ك دريم جاري كئے ، جو نوشيرواني سِكَّه ك شاب تقى البته آنا فرق تھا كرحفرت عمرك سكون يرالح رُتنه وربعض سكون رينتخ رَصَّرَ الله الله ووص بريا الله الله وَحُكُ لکھا ہوتا تھا ،حفنرت عمرکے اخیرزانے مین دہن درہم کامجموعی وزن چینشقال سے برابر ہوّا کھیا۔

ك دكيولًا ب النقودالاسلامة للمقرزي مطبوع مطبع حرائب موالم هصفي مه وه-

یہ مقربزی کی فاص روایت ہے لیکن اِس قدر عمو ماً مسلّم ہے ک<del>ہ حصرتِ عمر ن</del>ے سکّمین ترميم واصلاح كى علامه ما وردى نے الاحكام السلطانية مين لكھا كرايران مين تائي فيتم كے جم تھے، بغلی آٹھ وانگ کا-طبری عاردانگ کا-مغربی تین وانگ کا- <del>حضرت عرنے ح</del>کم داک بغلی ا ورطبری چذکه زیاده چلتے ہین اس سئے دونون کوملاکرانجا نفعف، اِسلامی درہم قرار دیا جائے، جنا بخدا سلامی درہم جینہ دالگ کا قراریا آیا۔ ق<sup>و</sup>می رعایا کے حقوق حضرت عمرنے ذِمّی رعایا کو حوحقو ت دئے، اُسکا مقابلہا گرائٹرنی انے کی اوسلطنتون کیا ہا '' توکسه طرحکانا سب نهو گاحضت عرکے بمسایین جلطنتین تقین وه روم اور فارس تقین، ادج ون سلطنتون مین غیر قومون کے حقوق، غلامون سے بھی برتر سکتے، شام کے عیسائی ہا دہ کی رومیون کے ہم مزمب سکتے ۔ اہمُ الکواپنی مقبوضہ زمینون رکسی مشم کا مالکا نہ حق حاصل نہین تھا، بلکہ وہ خود ایک متم کی جائداد خیال کئے جاتے تھے، چنا پخہ زمین کے اتقال کے ساتو پھی نمتقل ہوجا تے تھے ، ا در مالک ِسابق کو اُن برجہا لکا خاضتیا رات حاصل تھے وہ<sup>م</sup>ا بغر<del>جا</del>ل لوحاصل ہوجاتے تھے، میو دیون کا حال اور برتر تھا ملکداس قابل نہ تھا کہ کسی *ختیت* ائن بررعایا کا اطلاق ہوسکتا ،کیونکہ رعایا آخر کھیے نہ کھیوت رکھتی ہے ، اوروہ حت کے نام سے بھی محروم محقے - فارس مین جوعبیائی محقے انکی حالت اور بھی رحم کے قابل محق -ملے الا حکام السلطانیة للما وردی صغیری اس - سک ذِمّی سے ووقو مین مرا دہین جرمسلمان یکتین کی کاک اسلام مین سکونت رکھتی تھیں ۱۲

بارسیون او میبائیون کا بڑا دُغیرقومون کے ساتھ

حضرت عمرے حب اِن ممالک کوزیزگمین کیا تو دفعتهٔ وه حالت بدل گئی، چھوق أنكو دیے گئے اُسکے لحافہ سے گویا وہ رعایا نہیں رہے ، ملکا س فتیم کا تعلق ر وگیا حبیبا دُوبرام کےمعا ہرہ کرننے والون میں ہو اہے ۔ مختلف ممالک کی فتح کے وقت جرمعا ہیے لکھے گئے ا ہم آنکواس مقام پربعبنہ نقل کرتے ہین ،حب سے اِس دعوے کی تصدیق ہوگی اور آبی س بات کے موازنہ کا موقع ملیگاکہ تورب نے بااینمہ دعوی تمذیب، اِس ستم کے حقوق لبھی غیرقوم کوکمین دسئے ہین ؟-

یہ با در کھنا چاہئے کہ ا ریخون مین جرم*تعا برے منقول ہن انتین بعیفر منف*قل ا در اقی مجل ہن، کیونکہ فعتل شرائط کا بار ارا عا وہ کرنا تطویل تمل کا باعث تھا اس سے اکٹر تھا ہران مین کسی مفصتل معاہدے کا حوالہ دیدیا گیا ہے ، مبت المقدس کا مُعاہدہ جوخود حصرت عمری وجول مین اورانکے الفاظمین لکھا گیا حسب ذیل ہے۔

کا معاہدہ

یه ره امان سے جو خدا کے فلام امیر المومنین عمر نے بلیل والفسيهم وكمواله فيمولكينايسهم وصليم تذرت بيار، ورائعتام زب واون كيه، وَسَفِيهِ هَا وَ سَرَيْهَا وسايره ليَّفِ النَّهُ ﴾ اسطح ريرُ أنك رُّما وُن بن رسكون كيائيكي، زوه رُها ك نظيم نهُ أَكُو لِي أَنْكِ ا ماسط كو كيه نقصان مبنيا يا عاستُ كا ۂ اُن کی صلیبون اور اُن کے مال مین کیمہ کمی المرتشع من المحالف و كالبلطوع التيفيم الى مائك، منه كے ارسے من أن ير

مَذَامَا اعْطَ عَبْ اللهِ عُرامِيْلِ وَمِنْينَ اهْلَ إِبلِيا من الأمان اعْطَاهُوامَانًا يُسْكُنُ كَنَا يسُهُمُ وَلا لَهْ مَامُ وَلا بَيْتَقَض منهاولامن حبيه هاو لامز صلبهم و

مَعَهِ حُواحِكُم البهورة - وعلى اهل الباع البيارين أنك سائق يبودي زرج يائينك ، ايبيار داون اَن كَعِيطُوا كَبِيزِين كَمَا لِعَطِيحًا هُلُ الْمَكَامِين فَي الريه زمن به كه ادر شهرون كي طرح جزير دين اوريزانيون كو عليهم النجنع بجرامنها المرصم واللصوت انوادين إن يزانين سي جوشرس كايكا أكى عان وال بمن خریج مینچه م فقه کالین علی نفسه و مالحتی کورمن ہے۔ آنکہ وہ جا ہے بنا دمین بینج جام۔ اوجا عَلَيْهِ مِنْلِ أَهْلِ لِيكِ الْجِنْدِيرِ وَمُزاحِبِ مِن اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ مِنْ ببجه مروضله وجنى ببلغوا ما متهمور وعلى كده ابني مات نياه تك بيني ما بئن اور جر كهراس خرير مَا فِي هٰذَا لَكُنَّا بِعَهُ كُلَّ لِلَّهِ وَفِي مَهُ مِنْ وَلَهُ وَ إِينَ ہِيءَ سِرِ مُداكا، سُولِ مُداكا، مُلفاكا، سلانونكا بن الوكري وعرب العاص عجيل الكانب اورعبدالرمن بن عوف اور معاوته بن ابي سفيان

وكالضا والمكان المالياء المراكا بالكان الباع المراكا بالكان المناسك سي كونقعان بنوا والكاء الببلغني ما منه موص افا منهم فه وأمريه واليايين رنا التيارك وأسكوم اس اوراك وراك وراكور اهل المباءات بيس فيسه وماله مع الروم في الريكرية انون كسائة ملاما ناعات وأن كواور ببعث وصلية فرفا فه عاميون على في وعلى انك كرماون كو ادرصيبون كو امن سے بيان ك ذمة الخُلفاء وخ منه المؤمنين اذا اعطالك انتها وترسك وبنرسك ورك جزير مقرّه واكرت بهن عليه من البرنية شهر على خلاف خال اس تحرير يربُواه بين خالد بن الوليدا درعروبن العاص عَوْنَ وَمَعَاوِنِ بِن الْإِسْفِيا فِي كُنْفِحَضْ اللهِ اللهِ الرسُامِ مِن لَكُما لِيا-

ا مِن فرمان میں مات تصریح ہے کو عیسا بئون کے جان مال اور ندمہ ، ہرطرح سے

ابنائه وکمیواری ابوحیفرم برطری افتح بیت المقدس ا-

محفوظ رہنگا اور بینطا مرہے کڈسی فوم کوجس قدر حقوق تعلّق رکھتے ہین <u>۔ گرم</u>ے اور چرچ کی نسبت تیفصیل ہے کہ نہ وہ توڑی جا مُنگے۔ نُہ انکی عمارت کو تسي طرح كانقصان بينيا يا جائيگا، نهُ انك احاطون مين دست اندازي كي جائيگي، مذہبي ازا دی کی منبت د وبارہ تقریح ہے کہ کا بیگڑھ ہی تنظیمہ بنجے ہو'۔ عیسا یُون کے خیال میں جونکہ حصرت عیسیٰ کو نہو دیون نےصلیب دے کرقتل کیا تھا اور یہ واقعہ فاص مبت المقدس من یمیش آیا تھا اِسلیے اکی خاطرسے پیشرط منطور کی کرمپودی مبت المقدس میں نہ رہنے یا میں گئے **ابونا نی- با وجود اسکے ک**وسلما نون *سے ارٹ تھے* اور درحقیقت وہی سلمانون کے صلی عدو کتے ، تا ہم اُنکے لئے یہ رعاتین ملحوظ رکھین ، کہبت المقدس مین رہنا چا ہین تورہ *سکتے* ہین ' و زکل جانا چا ہین تو نخل جا سکتے ہیں، دونون حالتون من أنکوامن حاصل ہوگا اوراً نکھے رط وَن اورْعبدون سے کچھ تعرض نہ کیا جائیگا ، سب سے ٹرھکر ہی کہ مبت المقدس کے عیسائی اگر مہ جا ہین کہ وطن سے کلکرر ومیون سے جالمین تو ہیربھی آن سے کچھ تعرّض نرکیا جائیگا، بلكه أنكے گرج وغيرہ جومبت المقدس مين ہين سب محفوظ رمنگئے <sup>ب</sup> کيا کوئی قوم ،مفتوح مل*ا*کے سائقدا سے بڑھکرا نضا فانہ برّا وَکرسکتی ہے و۔ سب سے مقدم ا مربیہ ہے کہ ذمتیون کی جان و ہال کو،مسلما بون کی جان و مال کے ہرابر قرار دیا، کوئی مسلمان اگرکسی ذمی کو قتل کرڈا آیا تھا ت<del>و صرت ع</del>ر، فوراً اُسکے برہے ،مسلمان کو قتل کرادیے تھے ، امام ثنا تنی نے روایت کی ہے کہ قبیلہ کمرین وایل کے ایک شخف سنے حیرۃ کے ایک عبیبا نی کو مارڈا لا حضرت عمرنے لکھ بھیجا کہ قاتل ،مقتول کے وارٹون کو دیرایا

چانچر و این اورات و ارث و ارث و این از این این از الای این اوراسنے اُسکوش کردالا مال اورجا بُدا دکے تنعلّق اُنگے حقوق کی حفاظت ایس سے ٹرھکرکیا ہوسکتی ہے ؟ ک<sup>و</sup>س قدر بمینین اُکے قبضے میں تقین اُسی تنبیت سے بال رکھی گئیں <sup>می</sup>ر بنیت سے فتر سے پہلے الكے قبضے مین تقیین ، یہان تک کہ سلما نون کوائن زمینون کا خربدنا بھی نا جائز قرار دیا گیا ، چنانجیا اس بحث کوئم تفصیل کے ساتھ محاصل ملکی کے بیان میں لکھ آئے ہیں۔ مالگذاری خوشخف کی گئی وه نهایت زم ا ورملکی تمتی اسپرنجی حضرت عمرکو بهیشه بیخیال متبا تھا کہ کبین اِن بیختی تونہین کی گئی جنابیٰہ مرتبے مرتبے بھی بیخیال نگیا۔ ہرسال بیعمول تھا کا حب عراق کا خراج آما تھا تو اشخص کوخه آور اشخص <u>تھرہ سے طلب کئے جاتے تھے</u> ا ور حصرت ع<sub>مر</sub>، اُن سے چا<sup>ا</sup>ر دفعہ تباکید متم لیتے تھے کہا لگذاری کے وصول کرنے مین کچھ سختی نومین کی گئی ہے ۔ وفات سے و'و تین ون بہلے کا وا قعہ ہے کا منسران بندونست کو کلایا اور تحفی جمع ك تعلق ان سے گفتگو كى اور بار مار بوچھتے رہے كرم سخت تونىين مقرر كى كمي -ا کیب بڑاحت جورعایا کو حاصل ہوسکتا ہے ، یہے کا تنظامات ملکی میں انکو حقید دیا جاہے ، مرت عسم رہنیہ آن انتظامات مین جنا تعلق ذمیون سے ہوماتھا ذمیون کے مشورہ ور استصواب کے بغیر کام منین کرتے تھے۔ عواق کا بند دنست حب میش تھا تو عجی رئسونکا ك الدراتة في تخريح الهداتيه طبوعه دهملي بصغوره ٣ - ك كتاب الخراج صفوه ١ كلك كتاب الخراج صفيرا ٧ يين سهيخال ننسفتن عمرب الخطاب قبلان يصاب بثلاث اماريع واقفاعل حذيفة بن اليمان وعثمان بن حنيف وهو يقول لهمالعكماحلتما الاحض ملانطيقء

بندوسبت الگذاری بن زمیون کا خال

زمیوت کمی انتفاءتین مشوره مرینه مین کبلا کر الگذاری کی ما لات در افیت کی مصری جو انتظام کیا آمین تقوقس سے اکثر را سے بی -

جان و مال و <del>جائرا د کے تعلق ح</del>رحقوق ذرتیون کو دیئے گئے تھے وہ **صرت زمانی تھے** لکہ نہایت مفبوطی کے ساتھ اُٹکی ایندی کی جاتی تھی ، شام کے ایک کا تنکا رہے تکایت کی که ایل فوج نے اُسکی زراعت کو مایال کردیا ، <del>حصرت عمر</del>نے مبت المال سے · ام زار دیم اسكومعا وحذمين د لوائے ً اضلاع كے حكام كواكيدى فران سينجے تھے كرة ميون كريسى طرح کی زیادتی نبونے یائے، خور بالمشا فیدرگون کو اسکی اکیدکرتے رہتے تھے۔ قامنی کو ہوت نے کتاب الخراج اب الجزیمین روایت کی ہے کر حضرت عرجب شام سے وایس آرہے تھے توحنیدآ دمیون کو دیکیھا که دهوب مین کھڑے ہیں ا درائکے سرتیلی ڈالاجار ہاہے ،لوگون سے پوچھا کہ کیا ما جراہے ؟ معلوم ہوا کوان لوگون نے جزیرتیین اواکیا ہے اس لئے انکوسنرا دیجاتی ہے، حضرت عرفے دریافت کیا کہ آخرا بخاعذر کیا ہے ؟ بوگون نے کہا کہ دنا داری " فرما ياكر روجيور و و و و اورانكو تليف نه دو- مَين نے رسول استر سام سے سنا ہے كر الله الله فاتَّ الذَّبْنَ بَعِنَّ بُونَ الناسَ في الرَّمْنِ الْعُنْرِيهِ مُوَّالله بوم الفيّا مَرَّرِ مِنِي *الخفرتُ سن* فرمایا ہے کہ توگون کو تکلیف نہ د و، جولوگ دنیا مین لوگون کو عذاب بہنیا تھے ہیں خلاقیامت مین ان كوعذاب بينيائيًا" معزت ابوعبيده كوشام كفتح ك بعدجو فران لكها أسمين يه الفاظ يقير

زمیون کی شرائطکا ایفا

مل مقرزی جلداول منفیریه ع-مسک کتاب الخراج منفیریره-

وامنع المسلين من طله وكالم ضرار بهور السما نؤنوس كزا كزسون يغلز كرنه إيئن والمونعتان بيؤنه أما أكل امواله والهجلها وَوَقِي له خَرَجْهِم الرَائا ال برِم كمانيا بين ورِس قدر تزمين تمك أسَّے الذى شرطت له في جميع ما اعطينه عن كرور

حفزت عمرنے وفات کے قریب ، خلیفہ ہونے والے شخف کے لئے ایک مفقل وصیّت فرمانی تھی، اس وصیت نا مہ کوامام نجاری ،ابو بکربہ بقی، حاِحظَ، اوربہت سے موّرخین سنے نقل کیاہے اُسکا اخیر فقرہ بیہے۔

وأوصيه بنامة الله ودمة سرصتو لهات الينين أن ورئدت مين وست كرابون خكو خدا اورسول كاوتم 

يو في له وجهر هو ول ن يقاتل من و را بيه هم الاياب رمني ذي اكر تف جوعدت وه يورا كيامات او زائري اليا

اس سے زیارہ کیا ہوسکتا ہے کو صرت عرب مرتبے وقت بھی ذمیون کو نہ بھولے،-غرفه ایک صحابی سفتے۔ اُنکے سامنے ایک عیساً بی نے جَباب رسول اللہ صلعم کو گالی دی، غرفت اسک ایس ای از اسکی ادا ، عیائی نے عمروین العاص کے یاس ماکشکایت کی ، اً تفون نے عز فہ کو کلابھیجا اور بازیرس کی عزفہ نے دا قعہ بیان کیا 'عمرین العاص نے کہا ‹‹ زمیّون سے امن کامعابرہ ہوجیاہے ، ، غرفہ نے کہا ‹ نعوذ با منّد انکویہ اجازت ہرگز ننین دی گئی ہے کہ سول اللّٰہ کوعلانیہ گالیان دین-ان سے بیمعاہرہ ہواہے کہ اپنے گرماؤن مین جو کھیہ جا ہین کرین ، اوراگرائن برکوئی رشمن چڑھ آئے تو ہم اُنکی طرف سے سینہ سیرموکراڑین اور ك ل بالزاج صغير ٨٠ - ك ميريد م

نرېجامورين آزا د ی

ات يركوني ايسا بارنه دالا ماس حبك ومتحل نهون اعروبن العاص شك كها بان سيم بيط اِس واقعہ سےمعلوم ہوسکتاہے کہ ذتیون کے حفظ مقوق کا کس قدرخیال رکھا جا تا تھا۔ نرہبی ا مورمین ذمیّون کو بوری ازادی ما مسل تھی۔ وہ ہرستم کے رسوم ندہبی اد اکرتے ستھے علاینہ نا قوس بجاتے تھے صلیب کالتے تھے مرتتم کے میلے کھیلے کرتے تھے ، ایکے میٹیوایا نی ہی پوه مذہبی اختیا رات حاصل تھے اِلکل برقرار رکھے گئے تھے <u>، صرین اسکندر آ</u> کا <u>میٹرای</u>ک **بنمامن ت**مرہ برس تک رومیون کے ڈرسے اِ دھراُ دھرارا ارا<u>پراغرد اِلعاس نے جب م</u>قرفتے کیا توست ہیں اسکو تخریری امان کلمکز بیمجی و ه نهایت ممنون بهوراً یا ۱ و رمیشر مارک کی کرسی د دیاره اُسکونسیب مهوزُ خیانج علاّمهٔ مقریزی نے اپنی کتاب (منفحهٔ ۲ و ۲ معلدا ول بمین اِس دا قعه کی پوری فنعبیل کھیہے- اور معاہدات مین اورامورکے سائھ منرہی آزادی کامن النزام کے ساتھ درج کیا جا آتھا ۔ خیابحہٰ تعض معا ہوات کے <sub>ا</sub>صلی الفا فامم اس موقع پرنقل کرتے ہیں۔ <del>حذیفہ بن ایمان نے او دینا ،</del> والون كوحو تخريكمي تتمين يرانفا فأحقه الغبير و ن عن علة و كاليني البينة في التي العقام الإنهام الإنها العراكية المراكم منه الرين كيرستا مان كما ماكي جرحان کی نتے کے دقت میں معاہرہ لکھا گیا۔ الهمالامان الفسهموامولهموملهموق شرايعهم ولانغين شيء من ذلك كسي شي من تغير ذكيا والمكا-آذربای ان کے معاہدہ مین میں تقریح تھی۔ مل اسانیا تذ خره غوف- سل طری منی ۲۹۳۳ - سل طری صفر ۲۰ -

المهمان على فنسه واموله فرماله وفلا العهم المان مرب اور شرب كراهان -**موَّ فا ن کے**معا ہرومین یوالفا فلے تھے۔ الهمأن على اموالهم وانفسهم وملتهم وزيعهم البان، ال، نهب در شرعت كرا، نب-عنرت عزاسلام کی اشاعت کی اگرمیزمایت کومشیش کرتے تھے ا ورمضب خلافت کے ناماسے آگا، فرض تھا ،لیکن دہین تک جہات مک وعظا ورمنیدکے ذریعے سے مکن تھا، ورنہ بیخیال *مہ*یثے طل ہرکرد یا کرتے تھے ، کہ نرمب کے قبول کرنے پر کوئی شخص مجدیز نبین کیا جاسکتا سہتت انکا ایک عیسائی غلام تھا ،اسکومہیتہ مذہب اِسلام کے قبول کرنے کی ترعنیب دلاتے تھے لیکن جب أسنهُ الخاركيا توفرايا كالآن|كافي الآن يعني مرمب من زبروستي ننين بتط-حمیقت پی*پ ک*دوا قعات سے جزمتیجہ استنباط کیا جا سکتا ہے ، وہ پرہے ک<del>رحصزت عم</del> على مقتوت كے لحاظ سے ذمتيون اورسلما بون مين كوئى تمينىين ركھى تقى ، كوئى سلمان اگر وَتَى كُوْتُلِ رَا مُقَا تُوسِيرِ بِيغِ السِّكِ فَصَاصِ بِنَ قُتَلِ كُرُدِيا جَا يَا مُقَاءُ سَلِما نِ الرُّوْمِي سَتَخَتَّكُامِي رتے تھے تو ما داس کے ستحق ہوتے تھے ، دمیون سے جزیرا ورعشور کے سواکستی مکا محسو منین بیا جا تا تھا۔ اِسکے مقاملے مین سلما نون سے زکوٰۃ وصول کی جاتی تھی حبکی مقدار دونون سے زیادہ متی ، ایسکے سواعشور بمسلما نون سے بھی وصول کیا جا آیا البتہ اُسکی شرح بتفالیّۃ مینا کے کم تھی، مبت المال سے والنشیرون کو گھڑمطیے حونخوا ہیں لمتی تقین ذمی تھی اسین بارکے تْىرىك تىخے ، سبسے بڑھكرىيلاور درحقىقت *ھرف*اسى ايك تنال سے اِس كې**ت كا فيص**ل ك طبرى ٢٧٦٦ - كك كنزا لعال تحوالة طبقات ابن سعد - طبعة في مفحر ٩٧٨ -

مسلمانون <sup>۱۰</sup> زمیون کیمس<sup>ی</sup>

ہوسکتا ہے)کہ پیروقا عدہ تھاکہ دہسلمان ایا ہج اومنعیت ہوماتا تھا اورمحنت ومزد دری۔ ماش منین پیداکرسکتا تھا بیت المال سے اُسکا وظیفہ تقریبوما تا تھا۔ ا<sub>س</sub>ی تم کی ملکاس<sup>سے</sup> زیا د ہ قیاصانہ رمایت دمیون کے ساتھ بھی مرعی تمتی۔ اوّل اوّل بیرقاعدہ مصرت ابر مکرک عهديين مقرّر مواچنا يخه خالدين الوليدك حيرة كي فتح مين جرموا بده لكهما اسمين بيالفاظ تقيه وجعلت لهورايما بشيغ ضععت عن العمل ارمين نه أكوية مترديا وأركوني بررها شفس ومرز يسموزر اواصابه افتحِمز كل فاس الكات غنيًا مروائه الريون أنت آئ ، ايد وتمندتها بوزيبرك فافنغس صاراهل دبنه ينصد فوعلية ادراس وبسأتكهم زب أسكوفيرت ديني لكي-تواسكاج لرجنت جزبنه وعبل من سبت مالله المين موتون كروا عائكا اورأسكو اوائسكي ادلاد كومسلمانون ك وَعَبَالُهُ مَا اقاً مِهِ بِلَهِ الْجِينَةِ قَ دَارِكُهُ شِيلام اللهِ الله سَتِ نفقدهِ وَأَبِيَّا مِبْكُ وَمُسلافِن كُمُ لَمُدَين فأن خرجوا المغيره المفجرة وحرائركه سلاهليس رب يئين ارُوه عنرمك بين حلامات توسلما نون براشكا ا نفقة واجب سوگا-

عطاسلين النفقة على عيالها

ية قا عده حفرت عرك عهدمين تعبى قا يمر باللك حفرت عرف اسكو قرآن مجبير كي أيت ست تتندكرد یا بعنی میت المال کے داروعذکو بیلکھ بھیجا کہ قرآن میبید کی آیت میتا المال کے داروعذکو بیلکھ بھیجا کہ قرآن میبیدی آیت لِلفَقَرَاءِ قَالَمُسَرَاكِينَ (صدقه اورخيرات، فقيرون اورسكينون كه سينها) أسين تقرأ علفظ سے مسلمان اورسکیس کے لفظ سے اہل کتاب ہیودی اور میسائی مراوی نے اس دا تعه کی فضیل بہے کہ ایک و فع مصرت عمرنے ایک میرکہن سال کو بمبیک مانگتے و کھیا ، پوھیے اُل له كتاب الخاج معن ٥٠-

زئیون کی عزّت کا خیال

ومتيون كى غزت وابروكا ائسى قدراستحفاظ تقاحب قدرسلمان كى غزت وناموس كالمجل نسبت كسى تتم كى تحقير كالفط ستعال كزائهايت ايسنديده خيال كيا جآيا تھا يحمير بيس وقيص کے حاکم تھتے اور زبر و تقدیس و ترک دنیامین تمام عهدہ دارا بن خلافت میں کوئی انخامہسر فرتها ایک د فعدا نکے منوسے ایک و حمی کی شان میں یہ نفظ عل کیا احراک الله مینی غدا . تحمه کورسوا کرے - اِسپرُانکواسِ قدرندامت اور ناشف ہوا ک<del>ر صفرت عمری</del> خدمت میں طاخر مورنوری سے ستعفادیدیا، اور کماکداس نوکری کی برولت مجرسے برحرکت صادر بوتی-ایک خاص بات جرسب سے برمکر بیا ذکے قابل ہے یہ ہے کہ ذمیون سے اگر کھیلی این ا بغاوت كى تب بمى أنكے ساتم مراعات كولمحوظ ركھا - اجل جن حكومتون كوتهذيب وترقى کا دعو ہے ہے رعایا کے ساتھ انکی تمام عنایت اسی وقت تک ہے جب تک انکی طرت سے کوئی پولٹیکل شہد نرپدا ہو، ورنہ وفقہ وہ تمام مہرا بی عفنب اور قہرسے مرلجاتی ہے ا ورابیها خونخوا را و رَبِغیلا انتقام لیا ما تا ہے کہ وحثی قومین نمی اسے کھرزاد ونہیں کرکتیں ا ك تاب الخراج مفوراء - على وكميوازاته المفارصفير ٢٠٣-

سازش در بناوت کی مالت مین فریتبون کے ساتھ لملوک

برخلات اسِکے معنرت عرکا قدم کسی حالت مین جا دوّ انفیات سے ذرانہیں ہٹا ، شاھ کے آخری سرحد برایب شهرتھا حبکا نام عرب وس تھا اور مبکی دو سری سرحداتیاہے و حیک سے ملی مونی تقی مشام جب فتح ہوا تو بیشہ رہی فتح ہواا و صلح کا معا ہدہ ہوگیا ، لیکر بہان کے لوگ دریدہ رومیون سے سازیش رکھتے تھے اور ادِ ھرکی حنرین انکو پینچا تے رہتے تھے۔ الميرن سعدو ہان كے حاكم نے حصرت عركوا طلاع دى احمرت عرف انكى اس كفيلت کا جوانتقام لیا ، وه به تقاله عمیرین سعد کولکوه بهیجا ک<sup>و</sup>ب قدرانکی جائد در - زمین ، دبیشی ، ۱ واسا ہے ب شمارکرکے ایک ایک چنیرکی د وحیٰ دخمیت دیدو، اورائن سے کہوکہ اورکمین طبے جا مئن،اگر سپررامنی نهون تواکموا کیب رس کی مهلت دو٬ اوراسکے بعد حلا ولمن کرد د٬ چنایخ حب و و اپنی شارت بازنہ آئے تواس حکم کی ممیل کی گئی۔ کیا آج کل کوئی قوم اس درگذرا ورعفو ومسانحت ک*ی کو*ئی نظیرد کھلاسکتی ہے ؟۔

نوئیون کے ساتھ جو بطف و مراعات کی گئی تھی اُسکا ایک بڑا تبوت یہ ہے کہ ؤیتیون کے ہمرتع برخود اپنے ہم مذہب سلطنتوں کے مقابے مین مسلما نون کا ساتھ دیا۔ فرقم ہی تقے جوسلما نون کے لیے رسد ہم کہنچا ہے تھے ، نشکرگا و مین مینا بازار لگاتے تھے۔ اپنے اہتما م اور صرف سے سطرک اور بیل ملیّار کراتے تھے ، اور سب سے بڑھکر ہے کہ جاسوسی اور خبر رسانی کرتے تھے۔ یعنی وشمنون کے ہرفتم کے رازسلما نون سے اکر کہتے تھے۔ حالا کہ یہ وشمن اُتھی کے ہم ذہب عیسائی با بارسی تھے۔ ذوتیوں کوسلما نون کے حسنِ سلوک کی وجہ سے جوا خلاص بیدا ہوگیا تھا اُسکا امرازہ بارسی تھے۔ ذوتیوں کوسلما نون کے حسنِ سلوک کی وجہ سے جوا خلاص بیدا ہوگیا تھا اُسکا امرازہ

ك فتوح البلدان بلا ذرى صفيرً ١٥١٠

اس سے ہوسکتاہے کے خبگ پرموک کے بیش آنے کے وقت حب سلمان شہرمص سے نکلے تو آيير ديون نے توريت إت مين ليكركها كرجب مك بم زنده بين كيمي **رومي** بيان نه آنے يائينگے ،، عیسا یئون نے منابت حسرت سے کماکود خداکی شم تم رومیون کے بنسبت کمین بڑھکر مکوجموعی ا اخيرمن مكوأن واقعات كي تقيقت بعي تبانا صرور ب جنكي وجهس يوگون كوية غلط حيال یدا ہواہے یا ہوسکتاہے ، کر حفزت عرفے ملکہ خود اسلام نے ذمیون کے ساتھ نا اضافانا سلوک کئے۔

اس مسئلے کو مخالف اس طرح بیان کرسکتا ہے کو حضرت عمر نے ذبیون کے حق میں میکم و ما كه وَ وَمَنع اور آباس وغيرو مين كسي طرح مسلما نون كأفشيّه ندكرنے يا بيّن ، كمرين زّنار باندهين ، لَبَى تُوسِان بنِين ، گھوڑون پر کاتھی کسین ، نئی عباو تگاہین نہ نباہین ، نشراب اورسور نیجیہن ، نا قوس

يجابيَّن مليب نه خالين ، بتز نغلب كوييم حكم تعاكما بني اولاد كوصطباغ نه دينے يا ميُن ، إن ب باتون ین شنراد که حضرت عمرنے عرب کی دسیع آبادی مین ایک بیو دی یا عیسانی کونه رہنے دیا در طرب طرب

قديم خاندان حوسيكرون برس سے عرب مين آباد تھے، حلاوطن كرد ہئے،-

بے شبہ یا عمراضات نهایت توجہ کے قابل مین اوریم انکے جواب دینے مین کسی ت تفعیل سے کام لین گے، کیونکہ ایک زما زُمتر کے تعتب اورتقلید نے واقعیت کے جہرے یر۔ بہت سے پر دے ڈال دینے ہین ۔ یہ بیج ہے ک<del>ہ حضرت عر</del>سلما نون کوغیر قومون کی شاہت ا درغیر تومون کوسلمانون کی شاہت سے روکتے تھے، لیکن اس سے فقط توجی خصوصیتون کوقائم رکھنا مقصود تھا <sup>،</sup> لباس کی بجٹ مین تحقیق طلب بیرامرہے ک<del>رحصرت عر</del>نے ذِمّیون کوجس

محالعت کی

بیاس کی بایندی کی اکید کی متی،آیا دی دمتیون اقدیم لیاس تھا۔ یا حصزت عرنے کوئی نیا لياس بطورعلامت تحقير كے تجوز كيا تھا جس شخص نے عجم كی قديم آپيخ بڑھی ہے وہ يعتين جان سکتاہے، کہ جس نباس کا بہان دکرہے وہ عجم کا قدیم نباس تھا، حصرت عمر کا معاہرہ کو نزانعال وغیره مین نقل کیا ہے اگر حیر راویون نے اسکو مبت کچه کم دبیش کر دیا ہے تاہم حیان د میون کی طرف سے یہ اقرار ند کورہے کہم فلان فلان الباس نرمینین سے وہان ب<sub>ی</sub>انفاظ می مین وآن نلزم سرتبنا حیث ماکنا مینیم وہی باس مینین م جومہنی سے بینتے آئے تھے " اِس سے صاف تاہت ہوتاہے کرحس لباس ک<del>ا حصرت ع</del>رینے حکودیا تھا وہ عجر کا قدیم ابال<sup>کھا</sup> ' رُنا رہیا ذکر حفزت عمرکے فرمان میں ہے ُ سکی *نسبت ہا ہے نق*مانے اکثر غلطیا ن ای ہیں ، انخا خیال ہے کہ وہ نگل برابر ہوٹا ایک متم کا <del>جنسی</del>وہو تا تھا اوراس سے دمیون کی تقم مقصو دمقی، لیکن سیخت غلطی ہے زنا رکے معنی پیٹی کے ہین ا در <del>وب</del> مین بر لفظ آج کل بھی اسی معنی مین ستعل ہے ؛ میٹی کوعربی مین منطقہ تھی کہتے ہیں اور اِس لحا فاسے زنارا و <del>رمنطقہ</del> مرادت الفاظرمين، ان و ونون الفاظر كا مراوت مهز ماكت مديث سے ّايت ہے، كُراتعال مین بیقی و غیروسے روایت منقول ہے ، کو حفرت عمرنے سرداران فوج کو بی تخریری حکم بھیجا وبلن والمناطق بيني النانير سي زناركوكيتي مي كتف عقد يناني مامع صغروغره مین بجائے زتّا رکے کیتیج ہی لکھاہے، اور غالب بیہ کہ یہ لفظ عجم ہے۔ ہرحال ہل عجم قریم سے بیٹی لگاتے ہے۔ علامۂ مسعودی نے کتا بالتنبیوالانتراف میں لکھاہے، کہ عجم ك كتراسال ملددوم معزر ١٠٠٠ - ملك كتراسال ملدوم مغير ١٠٠٠ - معلى كتاب فركور معزر ١٠٠٠ -

کی اس قدیم عاوت کی وجہمین نے کتاب مروج الذہب میں لکھی ہے'۔ ایک قطعی دلیا لیس ہا کی کہ بربیاس دمتیون کا قدیم لباس تھا ، یہ ہے کہ خلیفہ منصور نے اپنے دربار کے لیئے جو لباس قرار د یا تها وه قریب قریب میی نباس تها، لمبی توبیان جوزسل کی ، و تی تقین، و می عجم کی توبیان تھین ،حسکا نمونہ بارسیون کے سرون پرآج تھی موجو دہنے ، اس درباری لبا س میں میٹی تعبی د افل بھتی، اور بیو و ہی زنآر، ما منطقہ، یا کیتیج، ہے جوعجم کی قدیم وضع بھتی، منصور کے اس مجوزه لباس کی نسبت تام موزنین عرب نے تقریح کی ہے ، کوغم کی تقلید کھی ،اب یہ شخف سموسکتا ہے کہ جولیا س، حضرت عربے ذمیون کے لئے قرار دیا تھا، وہ اگر کوئی حبرید لیا س تھا اورانکی تحقیر کے لئے ایجا دکیا گیا تھا توخلیفہ نصور آسکوا نیا اورا سے دربار کا نباس کیونکر قرار دسکیا تھا۔ · دِمَیون کونئ عبا و گاہین بنانے ، شراب یحنے ، صلین بکے بنے ، نا قوس بیونجنے ، ع**امل**اغ ویے سے ، رُوکنا ہے شبہ فرہبی دست انداز می ہے لیکن مین بیبا کا نہ اِس راز کی روہ دری ملی<sup>ن ا</sup>ترا کرنا ہون 'کربیا حکام جن قیدون کے ساتھ حفزت ابو بکر وحفزت عمر نے جاری کئے تھے وہ اہل مناسب مقے الیکن زمانہ ابورکے مور خون نے اُن قیدون کا ذکر حمیور دیا، اوراس وحبس أثام دنیا مین ایک عالماً غلطی عیل گئے۔ مليب كى نسبت معابر بين جرالفاظ مق آسين بي قيريمي ديرين فعوافى نادعاهل الاحساره صلبالعيني مسلما نون كى مجلس من صايب مركالين، ا قرس كى سبت يتصريح متى يضر بؤانو افيسهم في اي ساعنة شار امن يل **سك ك**تاب الخزاج صغير ٨٠ -

**له** كما سالخراج منخروم -

ا منه ایر کالا فی اف فات الصّلی مین وقعی رات دن مین سر وقت بیا بین اقوس مجامین بجز نا زکے اوقات کے "سُور کی سُبت یہ الفا فرستے کا کا پیخ جواجون برامن منازل ہو الے اَفْدَ اللّٰہ اللّٰہ

اِن تقریحات کے بعد کسِکوشبہ روسکتا ہے کصلیب بکا نیا۔ یا ناقوس بانا ،عمرة منع نه تها لمكه خاص حالات مين ما نعت تمقى ، ا وران خاص حالات مين أج تهيي ايسي مما نعست خلانِ انفیات نبین کہی ماسکتی۔سب سے زمایرہ قابل لحاظ امرینی تغلب عیسا یئون کے ا ولا ذکا صطباغ نه دینا ہے ، عبیها ئیون مین دستورہے کہ وہ اپنی اولاد کو ملیزع سے پیلے ملیاغ ومدیتے ہیں ،اوریگویا اِس بات کی حفاظت ہے کہ آیندہ وہ کوئی اور مزمب قبول کرنے پاکھا بعینه اس طرح حس طرح ہم سلما نون مین بحوّن کا منتنہ کیا جا آ ہے ، بے شبہ چھنرت محرکو عام ا طور براس رسم کے روکنے کا کچیرحق نہ تھا ،لیکن اس زمانے میں ایک نیاسوال بیدا ہوا تھا ا یعنی میرکدا گرکسی عدیبیا نئ خاندان مین سے کوئی شخص سلمان ہوجائے اور ناما بغ اولا دعبیو ژکر مرے ، تو اُسکی اولا دکسِ نرمب کے موا فق پر ورسن یا ئنگی ؟ مینی و مسلمان سمجھی جائے گی إُ أنك خانران وابون كوجرعسائي مزمب ركھتے ہيں بيرحق حاصل ہوگا كواسكو صعباغ کیرعبیائی نبالین ۔حفرت عربے اِس صورتِ خاص کے لئے بیر قرار دیا کہ خا ندان والے اسکو اصطباع نه دمین ۱ ورعدییا بی نه نبا مین ۱۰ وربیه مکم با نکل قرین انفیا ت ہے۔کیؤکمہ حب

ِ سكاباتٍ مسلمان موكيا عقا تواُسكي نا ابغ ا ولا دمجي بيفا مرسلمان قراريائيگي- علاَّمُ طبري نے

وسكنيا

جهان بنونلب کے واقعہ کا ذکر کیا ہے شرا کو صلیمین یوا تفاظ نقل کئے ہین علی ان کہ جہنے ہیں ا کلیدیگا جمن اسلم الماء ہو تعنی بنو تعلب کو بیا ختیا رہنو گا کہ بنے باب سلمان ہو چکے انکی اولاد کو عیسائی بناسکین - ایک (وربوقع پریوا تفاظ ہوئ اٹ کہ بینے مرح وا او کہ لاھ محوا دا اسلم اباق ہم میسائی بناسکین - ایک (وربوقع پریوا تفاظ ہوئ اٹ کہ بینے مورت قائم کر کے معاہدہ کو کیون سخت کیا لیکن جواب یوہے کہ بیزومنی صورت نہ تھی بلکہ بنز نغلب ہین بہت سے لوگ اصلام قبول کر بطے تھے ، اس لئے آنکی خاص حالت کے لحاظ سے اس صورت کا ذکر صرورتھا ، بلکہ ا علا مُطہری نے صاحت تھی کئے تھے ۔ علا مُطہری نے میا من تقریح کی ہے کہ فعلب مین سے جولوگ اسلام لاچکے تھے خودا مفی نے معاہرہ کے یہ شرا بط ہیش کئے تھے ۔

اب میرخص انفعا ف کرسکتا ہے کوامن عام، بین خلل نہ واقع ہونیکے گئے، عیسا بئون کو اگر بیم کا دیا جاسے کہ وہ سلما نون کی خلبسون میں حلیب اور سُور نہ لا بئن، خاص نما زکے وقت افتوس نہ بیا بئن، - نوسل عیسا بئون کی اولاد کو اصطباغ نہ دین، توکیا کوئی شخص اسکوتفسٹ ہبی اسے تبدیر کرسکتا ہے لیکن اضوس اوسخت اضوس بیہ ہے، کہ ہما رب بچھلے موز خون نے الے تکا کی قیدون او خصوصیتون کو ارادیا - بلکہ قدامین بھی جوتف بہ امیر طبیبیت رکھتے تھے، روایت میں ان خصوصیتون کو ارادیا - بلکہ قدامین بھی جوتف بہ امیر طبیبیت رکھتے تھے، روایت میں ان خصوصیتون کو عراجاتے تھے، یہ غلطیان اگر جہ نها یت بحت نتا بح بدوارتی تعین ، میں ان خصوصیتون کو حیور جاتے تھے ، یہ غلطیان اگر جہ نها یت بحت نتا بح بدوارتی تعین ، نوایت سے علی ان اور میں نوایا اس سے مور دہ گئی ۔ فقہ آجو کہ تا رہے اسے غلطیان اس قدر جہیل گئین کرعوبی زبان سرنا یا اس سے مور دہ گئی ۔ فقہ آجو کہ تا رہے اسے غلطیان اس قدر جہیل گئین کرعوبی زبان سرنا یا اس سے مور دہ گئی ۔ فقہ آجو کہ تا رہے اسے غلطیان اس قدر جہیل گئین کرعوبی زبان سرنا یا اس سے مور دہ گئی۔ فقہ آجو کہ تا رہے اسکا کے مور بارگئی ۔ فقہ آجو کہ تا رہے اسکا کے میں اس قدر جہیل گئین کرعوبی زبان سرنا یا اس سے مور دہ گئی۔ فقہ آجو کہ تا رہے اسکا کے مور ہوگئی۔ فقہ آجو کہ تا رہے اسکا کے مور ہوگئی۔ فقہ آجو کہ تا رہے دیا ہوں ۔ میں دور ہوگئی۔ فقہ آجو کہ تا ہے کہ سب

بہت کم وَهِنیت رکھتے تھتے انغون نے بے کلّف انہی فلط روایتون کوفتول کرایا ا وران ریے فقد کے مسائل تفریع کرلئے۔

الغاردق حقئة دوم

عیسا میُون ا ورہپودیون کے حلاوملن کرنے کامعا ملہ اسکی تقیقت بیہ کہ ہیودی ئسی زمانے مین مسلما نون کی م*ات سے صاف ننین ہوئے ۔ خیمبرجب فتح ہوا توان سسے* لہ دیاگیا تھاک<sup>ے</sup> میں وقت مناسب ہوگاتم کو ہیان سے کال دیا جائیگا ،حفزت عمر کے زمانے مین اکی شرارتین زیاده ظاهرمومین عبدا تندین عمرکوایک دفعه بالاخان سے وحکیل دیا فس سے انکے ہات مین زم کا امجبو <del>راصرت عر</del>نے عام مجبع مین کھڑے ہو گرا کی شرا رمین ہیا ن کمین اور پیمرا نکوء ب سے بحال د<sup>ی</sup>ا بینا پذھیمے نجاری ، کتاب الشروط مین یہ واقع کہسی *قدر* تفضیل کے ساتھ مذکورہے۔

تجران کے عیسانی بین اور اسکی اطراف مین رہتے تھے اور اُن سے کیے تعرّف نید ک تھا، میکن انھون سنے ٹیکے ٹیکے دبگی طیار این شروع کمین ، اور بہت سے گھوٹے ، ورمتہا رمہیا كئے مصرت عمرت مرت اس عزورت سے انکو حکم دیا کہ من جیوار کرواق حلے جا میں۔ غوض ميا مرتمام ماريخي شها د تون سے قطعاً أبت ہے، كوئيسائی اور بيودي بولسگاخ روز كو کی دجہسے جلاوملن کئے گئے اوراس وجہسے یہا مرسی طرح اعترا عز خابل نہیں ہوسکتا 'البتہ لحاظ کے قابل بیہے کریں حالت میں بھی کسِ متم کی رعایت انکے سائھ طوظ رکھی گئی۔ فی رک کے بیری ا حب كالے كئے توحفرت عرفے ايك وا قعن كاشخف كو بھيجا كُوائى زمين اور باغون كى تميت كا

مل نور البلوان بافرى صفوره وكتاب لخزاج ٢٥ - كل كتاب خزاج صفيوس -

تخیدنه کرے ، جنا بخہ جو تمیت متعیق ہوئی حصرت عمر نے انکوبت المال سے دلوادی۔ اسی طرح عجاز کے ہیودیون کو بھی 'انکی زمین کی قیمت دلوا گئے۔

بخران کے عیسائیون کوجب عرب کی آبادی سے کال کرشام و عواق مین آباد کیا، تو کنے ساتھ منایت فیاصنا نہ رعایتین کیین، انکواسن کا جو پروانہ دیا، اس مین بیشر طبیر نکھیں۔
عزاق یا شام، حبان یہ لوگ جامین، وہان کے افسر انکی آبادی اور زراعت کے لئے انکوز مین دین ۔ حبّر مسلمان کے پاس یہ کوئی فراد لیجا مین و و انکی مرد کرے ۔ ہمّ المینے کسا ان سے مطلقاً جزیہ نہ لیا جا ہے۔

اِس معاہرے پرا حتیا طاو تاکید کے لحاظ سے بڑے بڑے صحابہ کے وشخط ثبت کرائے۔ چنا پخہ قاصنی ابو ہوست صاحب نے کتا ب الحزاج مین اِس معاہرہ کو بالفاضا نقل کیا ہے۔ ایک ایسی فوج ،حبکی نسبت بغاوت اور سازش کے ثبوت موجود ہون۔ اُسکے ساتھ اِس سے بڑھکراور کیا رعایت کی جاسکتی ہے۔

اب صرف جزید کامعا مله ربجا آہے ہم نے اِس بجٹ پراگر جدا کیٹ تقل رسالولکھا ہے اور دو تین زبانون (اُرَدو-انگرزی، عربی) مین چیپکر شایع ہو چیکا ہے تا ہم مختصر طور ربیان تھی لکھنا صرورہے۔

جزیر کا رومندع اور مقصد اگر حیبشر وع اسلام ہی مین ظا ہر کردیا گیا تھا کہ وہ حفاطت کا معا وصنہ ہے ، لیکن حصنرت عرکے عمد مین بیر سئلہ ایسا صاف ہو گیا کہ احتال کی بھی گنجا یس ف

ك نترح صفي ٢٩- ك نتوح صفي ٢٩- كك كتاب نركوم في ١٧١-

بزید کی مجت جزید یک مجت

منین رہی، اولاً توانمون نے <del>نوشیروان کی طرح حزبہ کی مختلف شرحین</del> قائمکین، اوراسِ طریقےسے گویاصات تبادیا کہ ہر کوئی نئی چیز نہیں ملکہ دہمی نوشیروا نی محصول ہے،ایسکے علاوہ موقع برمو تع علی طورسے اِس <sup>با</sup>ت کو**ظا ہرکیا کہ وہ صرت حفا ظت کا**معا وصنہ ہے ، اِسر*تتا* ب لے پہلے جیتے مین تم رام آئے ہوکہ جب بر موک کے یہ خطر موکہ کے میش آنے کی د دیسے سالی نومبن شام کے مغربی معتون سے ہط ایئن اور انکویتین ہوگیا کہ حن ستہرون سے وہ جربہ دمول کرھکے تقے بیخ ممع<del>ں، مِشق</del>، وغیرہ و ہا ن کے باشند ون کی حفاظت کا اب د<mark>ھ</mark> ومّه منین اُ تھا سکتے ، توحز بیے سے جس قدر رقم ومیول ہوئی تھتی،سب واپس کردی،او*رہا* ت ل*عد یا کہ اس وقت ہم ہمتھا رہے جان و*مال کی حفاظت کے ذمّہ دارنبین ہوسکتے ، اِس سے بزمیرلینے کا بھی ہمکوکوئی میں نہیں ہے ،اس سے بھی زیاد قطعی شہا دت بیہے کہ جن لوگون سے کیمی کسی نتم کی فوجی خدمت لی گئی اُن کو با وجوداُن کے ندہب پر قائم رہنے کے جزمیر معا ٹ کردیا ، حضرت عمر نے غود سمایتہ مین عواق کے افسرون کولکے بھیجا کہ تنعینها بمن احناً جی االیہ من کا مساور لا اسی نومی سورون بن سے میں سے مردینے کی مزورت ہواس فَيَنْعُقُ عَنْهُ مُ الْجَنَاءُ اللهِ الْجَنَاءُ اللهِ اللهُ اللهُ

یمان کر کراگرسی قوم نے مرن ایک د فعن المانون کے سائن شرکت کی توائس سال کا جزیر ایک سئے موا تو اہلِ شہر سرکو جزیر ایک سئے سئے سئے معاف کردیا گیا۔ سئٹ ثین جب آ ذر با بجان فتح ہوا تو اہلِ شہر سرکو یہ نزان لکھید با گیا۔

ك طرى مفر ، ٩ م ٢ ك طرى صفحه ٢٠١-

ومن حشرة منهو في سنة وضع عنة جن اء الين مرادك كس سال في كساته كام دنيكي أس سال فيزي ان سے منین لیا مانگا' انلك السند-

اسی سال آرمینیے کے رمئیں شہر را زسے جومعا ہدہ ہوا اُسین یہ الفاظ سے۔ وعلى قل آرمينية آن ينف واكرعارة وينفذ واكل مُناب الله وينك الآالوا أكلاحًاعلى ان توضع الجزاء

اسى سىنەمىن حرجان نتح ہوا اور فرمان مىن بىر عبارت لكهمى گئى-

اتَّكُكُوُ النَّمةِ وَعَلَينا المنعقَ على انْعلبُكُو فِي مِن مِرْمِقا رَى مَا مُت ہے اِس شرط رِرُمْ مُورِسِال مِنَ الْجِزَاءِ فِي كُلِّ سَنَّهُ هَلَىٰ فَلْ مِرَهَا قَنْكُو الْمِدْرِمَا تَتْ جَزِيهِ ادا كُونَا مِرْكًا - اورائرة سے امات ومن استعناً به منكوفل جن اء وفي الين سكرتواس امانت كر برك بزير موان

معونة عوضًا عن جزالية

غوض حفزت عرب اتوال سے، معا ہرون سے، طرزعل سے، روزروشن کی طمع ظا مرموگیا تھاکہ جزید کا موضوع کیا ہے اور دوکس غرمن سے مقرر کیا گیا '۔ جزیر کا معرف ، فوجی مصارف پرمحدود تھا ، یعنی اس رقمسے مرف الل فنج کے کئے خوراک ، بیاس ، اور دیگر ضروریات میتا کی جاتی تعیین ، چنا پ<u>ن</u>ے حفرت عمر نے جہان جهان جزمیقرکمیااو سکے ساتھ نس درغلہ بھی شامل کیا ، مقرمن نیکس جزیہ کی تعداد در مہل ا میار دنیا رمتی بسکین دّونقندا در ابتی کے عوص گیرن ، روعن زیتون ، شهد، سرکه ، بیا جآما تھا المله طری منحد ۲۶۲۵ - سک طبری ۹۵ ۲۷ –

منفور ١٦ ١١ طردوم - منك نتقى الاخبارلابن تيتية

فلاى كارواح كمثانا ا ورمین الل فوج کی خوراک بھی البتہ آگے جل کرجب رسد کا انتظام مستقل طور پر ہوگ اتو کُلُ حزیہ کی مقدار نقدی کردی گئی اور درونیا رکے بیاے ماکرونیا رائے جانے لگے ا غلامي كارواج كمركزنا حفرت عمرف اگر حیه غلامی کومعدوم نهین کیا ، اور شایدا گرکز ایجی جاستے ، تونهين كركت عقعه يبكن اسمين شههنين كأكفون نصفحتكف طريقين سيابيكي رواجكو م کردیا ، اورس قدر قائم رکھا اِس خوبی *سے رکھا کہ غ*لامی غلامی منین ، بلکہ یرادری و*رس*ی رہ کئی یوب مین نوائفون نے سرے سے اُسکا ہتیصال کردیا اور ہمین اُنکواس مِت ہتمام تھاکرعنا بن ملافت ہے تمین لینے کے ساتھ' پیلا کام جوکیا وہ یہ تھا ک<del>ر حضرت ابو ہ</del> اللے تر ا نے بین قبائل مرتدہ میں سے جولوگ بونڈی علام بنائے گئے تقصب آزاد کرہے اسكے ساتھ يوا صول قائم كرديا كوال عرب كم كم كام منين موسكتے، الخا قول ہے كه كايت ف عرف مینی عرب کا کوئی ا دمی نملام نبین ہوسکیا ۔اگر حیربت سے مجتمدین اورا مُرفن نے ایکے ا صول كوتسليمنين كيا ١١م احمنل كا قول ميكه كا اذهب الي فول عُيل عن ڪيٽه يعني مَين عمر کي په راڪ نهين ها نتا که اهل عرب غلام نهين هو سکتے ، پيون اهِ مسلم ريسينه بکا بنین بیان *عرف پرب*ان کرناہے ک<del>روب</del> کے شعلق حضرت عمرکا فیصلہ یہ تھا۔ غير قومون كى نسبت وه كونى قاعده عام ننين قائم كرسك ، جب كوئى ملك فتح بتواتها تها تو ۲- كا كترالعال مين الم م شامني كى روايت سے ية قول منقول سے و كھوكاب فركو

اہل فوج ہمیشہ ا صرٰرکرتے تھے کہ کمک کے ساتھ تمام رعا یا آنکی غلامی مین وید بیائے۔ ملک کی نقسیم مین ترجیبا ک<sub>ی</sub>م اور لک<sub>ھ</sub>ائئے میں <del>،حصرت عرفے قرآن مجی</del>دیکے اشدلال سے لوگون کی اب بندی لیکن غلامی کے لیے کوئی ایسا استدلال موجود نہ تھا ، اس کسے وہ تما م اہل فیج کے خلا ٹ نبین کرسکتے تھتے ، اہم آنا کیا کہ علا غلامی کو ننایت کم کردیا ، حب قدر مالک ایکے زمانے مین فتح ہوے اسکی وسعت کئی ہزار میل تھی جبین کردرون آدمی نستے تنتے لیکن غلامی کا حیان جہا ن بتہ حلتا ہے وہ نہا بت محدودا و گنتی کے مقا مات تھے ۱۰ ور وہا ن تھی صرف وہ لوگ غلام إِنَّا سُهُ سُكُنَے جومولِهُ خِبُّ مِين متركب تقے ،عواق اورمصربین جوبجائے خودستقل ملكتین ہن با دجود فوج کے احرار کے ایک شخف بھی غلام ننین بنایا گیا ،یمان مک کرجب مصر کے بعیض د ہا ہے اُدی دوسلما نون سے ارمیے تھے غلام نبا *کرعرب* مین نمبیجہ کئے <del>۔ توحفزت عمر ن</del>ے سب کو جا بجاسے جمع کرکے مصر کو واپس مبید ما کہ انکوغلام نبانا جائز نہ تھا ، پنا پنے مورخ مقرزی نے ائن دِہات کے نام اوراس واقعہ کوتفصیل سے لکھا ہے۔ شام کے متہرون میں سے بھیری فغل طبر ہے ، دشق جمعی جماتہ ،عبقلان انطاکیہ وغیرہ جہان عیسائی بڑے زورشورسے رہے،غلامی کابہت کم یتہ حلتا ہے۔شایر شام ہن عرت میباریه ایک مگوہ ، جمان اسیران خبگ غلام نبائے گئے ، فارس ، خوزشان کوان ا جزیرہ، وغیرہ مین خودمعا ہر ٔ صلح مین بیرانفاظ لکھ ہئے گئے تھے کہ لوگون کے جان دمال ہے تعرّض نهوگا ، صامغان ، حبندی سابور ، شیراز دغیره مین اس سے زادہ صاف انفاظ کھے المله مقرزي صفحهٔ ۱۶۱ ملداول- كركيب بوامين وولوگ رُقار موكراوندى غلام زبنائے مائينگے "-

بعیجا که کوئی کاشتگار یا بیشیه و رغلام نه بنایا جائے۔

حفنرت عمرنے ایک اورطریقیہ سے اِس رواج کو گھٹا یا بعنی ہے قاعدہ قرار دیا کہ حس لونٹری سے اولاد ہو**جائے ، وہ خریری اور بیجی نہی**ن جاسکتی۔حسکا حاصل ہیہے کہ و ہ ىزىرى نىين رىتى، يە قا عد**ە خاص حضرت غ**ركى ايجا دىبے، ان سے پہلے اِس قسم كوندان کی بھی را برخرمد و فروخت ہوتی تھی، خیانچہ مورمنین اور تحدثبن نے جہاں حصرت عرکے ا ولیات لکھے ہیں اس فا عدے کونمبی لکھا ہے۔ غلامون کی آزادی کا ایک اورطریقیتھا حبکومکا تبتہ کہتے ہیں بعنی غلام ایک معاہدہ لکھدے کرمین آنمی مرّت میں اِس قدرر ویے ا دا کرد دنگا ، حب وہ زرمعتینها داکردتیا ہے توبالکل آزاد ہوجا آ ہے ، یہ قاعدہ خود قرآن مجید مين موجوده كانبق اهمُوان علتهُ فيه حرجَيرًا ليكن فُتها اس مكر كورجوبي نبين وارجيًا یعنی آقا کوا ختیا رہے معاہرہ کوقبول کرے یا نمارے لیکن حضرت عمرنے اس حکم کو وجوبی قرار دیا صیم نیاری کتاب المکاتب مین ہے کہ حضرت انس کے غلام ،سیرین نے مکاتب کی درخواست کی، انس نے انکارکیا۔ سیرین حفزت عمرکے پاس ما عزبوا حفزت عمرنے انس لورُرت لگائے اور مرکورہ الاایت سندمین میش کی، اُخرانس کومحبوراً ما ننایرا -

ك نتوح البلوان صغير عصو - كل كنز العال صغر ١١١٠ عليددوم-

معنرت تهايو كا تعب ب

اِس موقع برحضرت شهر با ذ کا قصته جوغلط طور پیشهور موگیا ہے اسکا ذکر کرا صروبے عام طور بیمشورہے ک<sup>ے جب</sup> فارس نعتے ہوا تو زوگر دشتنشا ہ فارس کی بیٹیان گرفتا رہوکرمدینیمین آئین،حفر<del>ت</del> عمرنے عام دیڑیوں کی طرح بازارمین آ کے بینے کا حکم دیا،لیکن حضرت علی نے منع کیا کرفاندان شاہی کے ساتھ ایسا سلوک جائز نہیں اِن لُرکسیون کی قیمت کا اندازہ کرایا جا ہے بھر بیڈرکیا ن کسی کے تہام اورسیرو گی مین دی جامئن اورأس سے انکی تمیت اعلیٰ سے اعلیٰ سترح برلی جاہے۔ خیابخہ حضرت علی نے خوداً نکو اپنے اہتمام مین لیا ، اورایک امام حبین کوامک محمد بن ابی کمرکوا کی عبیدالشدین عم لوعنایت کی- اِس غلط مصنه کی حقیقت یا ہے کہ <del>زنخشری ن</del>ے جبکوفن اریخ سے کچھ و اسطہ نہیں ' ربیع الابرارمین اسکولکھی اوراین حلکان نے امام زین العابدین کے حال مین بیروایت اُسکے حوا رہے نقل کردی، لیکن میحض غلط ہے ، اولاً تو <del>بخشری کے سواطبری ، ابن اللاثیر ، بیقوتی ، الادی</del> بن قتيبه وغيره کسي نے اِس واقعه کوہنین لکھا ،اوزرخشري کافن اربخ مين جواپر ہے دہ ظاہر ہے' ا کے علا وہ تا ریخی قراین ایکے بالکل خلات ہیں ، صنرت عرکے عہدمین نید گرد ا ورخا ندان شاہی پر سلما نون کومطلق قا بونہیں حاصل ہوا<sup>'</sup> مراین کے موکے مین بزدگرد مع تمام ہل دعیال کے واسطنہ سے کلاا ورحلوان بینیا ،حب مسلمان حلوان بر شریعے تو وہ صفہان بھاگ گیا اور <u>پھرکوان</u> وغیومین رُّرَةً بِهِرا › مردمين بينيكرنت مِن جِرحفرت عَمَّان كَي خلا فت كازا نه ہے اراكیا ، اسكى آل اولا دا اگر فيار ہوئے ہونگے تواسی دقت اُزقا رہوے ہونگے ، محباوشبہ ہے کز مخشری کوبیم معلوم تھا یا منین کرزمگرد الاقتل كس عهدمين واقع مهوا-اسك علاوه حس وقت كايه وا قعم بإن كيا جا اسب أسوقت مفرت الم مين عليه اسلام

مك مقرزي طبدا ول صغور ۱۸ م

۱۷ برس کی تھی۔کیونکہ خیاب مروح ہجرت کے پایخوین سال بیدا ہوسے ا<del>ور فارس سئام</del>یمین فتح ہوا ، اس سئے یہ امریجی کسی قدرُستیعہ ہے کہ حضرت علی نے اکمی ا بالغی میں اُنیراس فتم کی عنایت کی ہوگی، ا سکے علا وہ ایک شهنشا ہ کی ادلاد کی قتیت نهایت گران قراریا ئی ہوگی، ا<del>ور حفزت علی</del> نهایت زاہداندا در 'قعیرا نه زنرگی بسرکرتے تھے۔ غرف کسی نتیت سے اس واقعہ ک*ی بحت برگ*مان نہیں ہوسکتا ، حصرت عمركی اینخ مین اس صنم کا واقعه دوسآم طور ریّابت ہے اُسمین و ہی برّیا وکیا گیا جوته زیبے اِنسانیت کا تقضا تھا اور چو آج بھی تام مہذب ملکون میں جاری ہے ،عمرین العاص سے جب مصر ریج پھائی کی توا قران بنیس برحمله ہواسخت لڑائی کے بعدُسلما نون کو فتح ہوئی اوٹین شرارعیہائی گزفتا رہوئے آغاق سے مقومت ا دنتا ومصرکی بیٹی حبکا نام ارا نوسہ تھا ہیں مقیم تھی، د ہجی گزفتا رہوئی ، عمور ابعاس نے اُسکو نہایت عَزت وحرمت سے مقونس کے ایس بھیجد یا'ا ور فریدا حتیا طاکے لئے اپنے ایک ردار کوهب کا نام فیسن بن ابی العاص تهی تها سائل کردیا که حفاظت کے سائلہ بینیا آئے۔ یہ تو وہ کار نامے تقے جو حضرت عربے غلامی کے روکنے کے لئے گئے،لیکن جولوگ غلام نیا کئے تھے انکے حق مین وہ مراعاتین قائم کین کہ غلامی مہسری کے درجے تک پینچ گئی، فوجی تنظامات ا بیان مین م نے بڑھا ہوگا ، کہ حضرت عرف برر وغیرہ کے تما ہدین کی حب بنخواہین تقریکییں ہوئے غلامون کی می ایمنی کے براتر نخوا و مقرر کی، بعد کی تمام کارروائیون مین بھی اعفون نے یہ اصول لمحوظر ركما ، اصلاع كے جوعمال متے الى نسبت دوا ورا ور بابون كے ساتھ مهيشہ يونعي دريا فت رتے رہتے تنے کہ غلاموں کے ساتھ آسکا برتا وکسیا ہے ، خیانچہ اگر بیمعلوم ہوّا تھا کہ و فعلامون کی

شاہی خاران کے ایران جگ کے ساتھ زباد

عام غلامون کے ساتھ مراعا

عِيا دت كونىين ماتّا ، توصرف اِسى حُرِم رِاسكومعزول وموقون كرديتے تَقَطُّ-اكثرغلامون كومُلإكر ا التحكها نا كھلا يا كرتے تھے اور حاصر بن كوشنا كركہتے تھے كر ' خدا اُن لوگون بريغت كرے خبكوغلامون کے ساتھ کھانے سے عارہے" سرداران فرح کولکو بھیجا کہ تھا راکوئی غلام کسی قوم کوامان دے، تووہ اُ امان تمام سلمانون كى طرف سے تمجىي جائے گى، اور فوج كوائسكا يا بند ہونا ہوگا، خيانچەا كىي سردا ركوبىل الفافرنكيم التاعب لالمسلين مركالمسلين فاذمنه في في منه م يعود امانة غلامو کے لئے جورمی کلیف کی اب عتی ، یمتی کہوہ اپنے عزیز واقارب سے جدام وجاتے کے نلامريج نيا باب سے حكيث جاتا تھا ، بيٹي مان سے تھير جاتي تھي، آج جولوگ غلامي كي رايئون ريمف امين الکھتے ہیں، وہ اسی واقعہ کو دروا گیزصورت مین دکھاتے ہیں، حصرت عرفے یہ قاعدہ مقرر کیا ،کاوئی غلام اینے غزیروا قارب سے جدا نہونے بائے ، بینی بینین ہوسکتا تھا ، کہ بٹیاکسی کے ہاتھ آئے اور باپکسی ورکی غلامی میں رہے ، باپ بیٹے ، بھائی ہین ، مان بیٹیان ، کبتی حتین توسائقہ کم بی حتین ورخبي نلامي مين رمتي تقين اسا تدريق تقين إس باب مِنَ الْحُيجواحكام مِنْ الْمُؤكِّر العَّالَ مِن تدرك ماكى مبقى مصنف بن إلى شيب وغيرو كي حواليس نقل كيا ب اوروه يمين-كايُفرَق بَين اخرَين ادابياً. این جب و بعائی نیم جائن تواکم ورس سے جدانہ بیا ماس-كانفرفوابين الأام وق لدَهَا یعنی بحیان سے الگ زکیا جاہے۔ حضرت عمرنے اس باب مین تمام مهاجرین اورانعمار کوجیع کرکے قرآن مجبید کی اس آیت پر

ك لرى صفيره ٢٠٠٥- كك كتاب الواج صفير ١٢٧-

تدلال کیا و کا تفظعوار کے اگر اور کہا کہ اس سے بڑھکر قطع رقم کیا ہوسکتا ہے ، بینا پخہ اس واقع کو تفقیب کے ساتھ حاکم اور پھٹی نے نقل کیا ہے۔ حضرت عرفے حب سمطابن اسودا کیسا و شرکو شام کی مہات پر بھیجا ، اوراً نکے بیٹے تنزیل

بوفه مین کسی کام پرا مورکیا ، توانفون نے حصرت عمرسے شکایت کی کهای حب غلام کو

مع خونزون سے جدانہیں ہونے دیتے، تو تو کو کو ن بیٹے سے دور پھینیک دیا ہے۔ معزت عرفے غلامو کا جورتبہ قائم کیا اور تمام عرب کو حو بمونے دکھلائے اُسکا بیا تر ہواکہ غلابہ کے گردہ میں بڑے برے صاحب کمال بیدیہو گئے خبکی تام ملک عزّت و توقیر کر تا تھا عکومہ جوائمہ حدیث میں تما رکئے جاتے ہیں، اور خبکہ حصنہ ت عبداد تدین عباس سے فتوسے کی

جازت دی هتی، ما فغ جوا مام مالک کے استاد کھے اور خبکی روایت کے سلسلے کوئی ڈبیر سبلہ آلا آلاز ا

یعنی سونے کی رنجیر سے تعبیر کرتھے ہیں، یدونون نررگ غلام تھے اور اسی عهد کے ترمیت یا فتہ

سکتے ، علامہ ابن خلکان نے حضرت امام زین ابعا برئین کے حال مین لکھا ہے کہ

« مدینهٔ منوّره مین لوگ کنیزون اور کنیززا دون کوحقیر شبحصے تھے، لیکن جب قاسب

رحفرت ابو کرکے پوتے) اور سالم دھنرت عرکے پوتے)اورامام زین العابرتن بن ذیر مذہب

ر شرکو سینے اور علم فضل مین مام مرینہ وا بون سے بڑھکئے توخیا لات بدل گئے اور اور مقال ن کی قدر طرحگئی ہیکوں ہارے نزد کیا س تعول ورغت کا صلی سب حضرت عرکاطریق عل تھا

ی مدر برسی بین برف مردیت بن بن رودی ۱۰ بی جب سرف مروسی کی است بے شبہہ قاسم و سالم در مام زین انعابرین کا نام اس سلسلے مین کسیامین ہے ، دبی خیال

ك كترانعال ملد ويع ١٣٦٠ - ك نترح البلدان صغير ١٣٠-

آزاہون *کے فضاف ک*ال نے اس مسلے پراٹز کیا ،لیکو ،اگ<del>ر حفرت عمر نے</del> اقتمات ولاد کا وہ رتبه نه قائم كيا برّا توان بزرگون كوففنل وكمال حاصل كرنے كاموقع كيونكر إت آيا-إن سب إتون كے ساتھ اس موقع يربي بتا دينا حزديك كر صفرت عمرنے يركوئى نيام تنيين ايجا دكيا تقا اورنه خدانخواسته أنكوبيرق تقا مغلامي كالحيثانا اورغلامون كسحسا عدمسا والأ برّا وُكُرْا حُود باني اسلام كامقصدتها اورمفنرت عمرنے جركيدكيا، وه اسى مقصدكى تميل متى، الم م نجاري نے كتاب المفن ومين غلامون كے شعلق، انخفزت كے جوا فعال وارتوال لکھے ہین اُن سے اِس دعوے کی کا فی تقدیق ہوتی ہے۔ سیاست و تدبیر، عدل دانصاف ، خلافت فی رو قی بسیط عالم مین کهان سے کہان کے بھیلی ہے ، اور کسِ فرخیلف ملك فجلف مراب المختلف ومن اكسك دائرے من داخل من الكي اس سے اس الكرك امبرطرف امن وامان ا درسکوت واطینان حیایا مواہے - دنیا مین ا دریمی ایسے صفحب حاہ <sup>و</sup> علال گذرہے ہیں ،خبکی حکومت میں کو ئی شخص سرنہیں اُٹھا سکتا تھا بسکین اُٹکویہ ایت اُس سیاست کی مرولت حاصل ہوئی تقی حبکے اصول میر تنقے کہ بغا وت کے ذراسے احمال بروفعتًا ا نضا ت كا قا نون بالكل ٱلله ديا ماب، ايتضف كح جُرم مين تمام خا ندان كمرا جائے ا وا تعات کے نبوت میں بقین کے باہے۔ صرف قیاس سے کام لیا جاہے، وحشا نہ منامین دى ما مين الديان جلاكر ربا دكردي عامين ميراصول قديم زماني كم محدود نه تقياب بمي ا پورپ کوبا وجوداس قدرتمرن وتهذیب کے اِنعنی قاعدون سے کام لینامیر تا ہے۔

عام سلاھین اور معنرت محر کے وہتی سا<sup>ت</sup> من بہت و ت لیکن خلافت فاروتی مین کیمی بال برابراندان سے تجاوز نبین برسکا تھا، عربوس والور بختاری را براختی کی نوا کلوطلا وطن کیالیکن، اسطرح که آکی جا نداد، مان اسب، کی خصل فهرست طیار کراکر سالک چنر کی دوگئی تیمت اواکردی بیخران کے عیسا بئون نے خود فحاری اور سرکتنی کی بیابان کی میزادادی بهم بنیا سے کو کردور سے کال کردور سے مالک مین آباد کرایا گراس ما یہ کی کا کتہ کہ آنام کے میسائن کی جا نداد وغیرہ کی تیمت دیدی اور عاملون کو لکم بیجیا کدرا ومین جده انجا گذر موائک آرام کے سامان بهم بینچائے جائین، اور حب بیکی شقل تیام اختیار کرلیز تی پیک سینے تک ان سے سامان بهم بینچائے جائین، اور حب بیکی شقل تیام اختیار کرلیز تی پیک سینے تک ان سے جزیم نمایا جائے۔

شا یرتم کوخیال ہوکو مصرت عمر کو رعایا ایسی ات آئی تھی جہین زیادہ تراطاعت والقیا دکا اور اس کئے آئکو جا برا نہ سیاست کی صرورت ہی بیش نہیں آئی لیکن بیخیال صیح نہیں۔ حضرت عمر کو سے بوجھو تو در حقیقت دونون طح کی شکلات کا سامنا تھا ،غیر تو مین جو طقهٔ اطاعت میں آئی گئیس یا بیسی یا عیسائی تھیں جو مرت تک شاہنشا ہی کے لقب سے ممتاز رہی تھیں اور اس کئے آئکو رعیت بناشکل سے گوا را ہوسکتا تھا ، اندرونی حالت بیعتی کی توبیدی بین بہت سے صاحب وا اگو و تیت بناشکل سے گوا را ہوسکتا تھا ، اندرونی حالت بیعتی کی توبیدی بین بہت سے صاحب وا کہتے ہے جو صفرت عمر کی خلافت کورشک کی کا مسے دیجھتے سے ، ختلا ایک مولفہ القلوب کا گردہ تھا جو کھا خت ہو باتھا کہ خوا بنا تھا کہ موبیدی بین بین عروبی العاص جو حرات کے گور زر سے ، ایک دفعہ حضرت عرفے انکو خراج کے معالے مین نگ کو از وانھوں نے نہا یت سے کہا کہ دفعہ حضرت عرف از جا ہمیت میں ، میرا باب جب کمنواب کی قبا زیب بران گراتما

ملے ان وا تعات کوم ذریوں کے معتوق کے بیان میں اوپر لکھوائے ہیں امروہاں کتابون کا حوال مجی دیاہے ا

حنرت وکی شکلات

توخطا ب رحضرت عمرکے والد) سرریکٹری کا گھھ لا دے پھرتے تھے، اُج اُسی خطاب کا مثما مجھ مكومت تبار اہے " بنو ہشم بہیتہ ہتعباب كئ كا ہ سے دنجیتے تھے كەنگے موتے تمیمی اورعدوی فلا یر کیونکر قبضہ کزمیٹے ہن، حضرت ابو کمرکے زمانے مین توعلانی نقص خلافت کے مشورے م و تے ہے جگا شاه ولی اینه صاحب ارالهٔ الخفارمین کفتے ہیں ' زنبیر دقمیع از بنو ہاشم ور**خا**ئہ حفنت فاملہ حمیم شدہ دیا ب انقصٰ خلافت مشور ؛ ب*کار می بردند*"-<u>حضرت عمری سطوت نے بنو ہاشم کے اِدّ عاکوا گرمہ دیا دیالیکن بالکل ٹباکیوزکرسکتی پھی ایسکے </u> علاده عرب کا فطرتی مزاق آزادی اورخودسری تھا، اور میں وجہہے کہ و کیمبری سی فرما زوا کی حکوت کے نیچے بنین ائے حفزت عمر اگر امیرمعا دیہ کی طرح اس آزادی اورخو دسری کو مٹاکہ حکومت کا رعب و داب قائم رکھتے توجیندا نتحب نہ تھا۔ سیکن و <del>ہوپ ک</del>ے اِس جو مبرکوکسی طرح مثاناتین عِ ہنے تھتے بلکہ اور میکا تے تھے، بار ہمجامع عام مین لوگ اُنپر نهایت آزادانہ بلکگتا خانہ کلتہ جنبیا ن کرتے تھے اورو ہ گوا راکرتے تھے ، شام کے سفرمین حب انھون نے محمع عام میں ، حصرت خالد کی و ای کی د حدا و راینی برأت بیان کی ، توایی شخف نے وہین اُٹھار کہا۔ والله كاعكن باعمر لفند ننهت عاملا استغل يني ب وانته تون الفاد نين يا تون وزا الله المانين يا تون رئول لتريك ماس ترصول الله وعن سَسَبِفًا سَلَيْسُ و الله الله المراية الله والمائد والمائد الله والمائد المائد المائد وَلَقَكَ فَطَعُتَ الرَّحِم وَحَسَدت ابنَ الْعَيِّم الْوَيْمِ الْمِنَا الْعَيْمِ اللهِ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينَ الْمُعَالِينِ الْمُعَالِينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَالِينَ الْمُعَالِينَ الْمُعَالِينَ الْمُعَالِينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِينَ الْمُعَالِينَ الْمُعَلِينَ الْمُعَالِينَ الْمُعَالِينَ الْمُعَالِينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَالِينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِينَ الْمُعَلِينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعِلِينَ الْمُعَلِينَ الْمُعَلِينَ الْمُعَلِّينَ الْمُعَلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعَلِينَ الْمُعِلَّينِ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينَ الْمُعِلْمِ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينِ الْمُعِلْمِينَ الْمُعِلِينِ الْمُعِلَّى الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلْمِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلْمِينَ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينَ الْمُعِلِينِ عِلْمِينَ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ الْمُعِلِينِ

معزت عرف يسب سنكومرف ياكماكتم كوافي بعائى كى عايت مين عضه أكيا-"

ك الالا الخفار معز دوم منور وي - كل اسدالغاته تذكره احرب بغض المخروى -

ان حالات کے ساتھ ہیر رعب دواپ تھا کہ عشرت خالد کو عین اُسوقت جب تا مرعاق و ثنام مین بوگ انخا کلمیٹیھنے لگے تھے معزول کردیا توکسی نے دم نہا را اور خود حضرت فا لوکسی شم کا خیال دل مین نملاسکے 'امیرموا ویہ وغروبن انعاص کی ثبان دشوکت محماج بیان نہیں ۔لیکن جھز عرکے نام سے اکولرزہ آیا تھا،عمردین العاص کے بیٹے عبداللّٰہ نے ایک شخص کو بے وجہ ارا تھا،حضرت عجب عردین العاص کے سامنے انکواسی مصروب کے بات سے کوٹے پٹوائے اور باپ بیٹے دونوعبت کا مات وكهاكئ سعدوقاص فانخ اران كومعمولي شكايت رجوابري من طلب كيا تو أنكوب عذرها صرمونايلا-<sub>اِن</sub> واقع**ا**ت سے بٹرغی انرازہ کر *سکتا ہے ک<sup>و حفزت عمرکوسیا ست د تدبیر کے ف*ن میں وہکال</sup> ما من تما کسی مرترا و رفره نرواکے مالات مین اسکی نطیر نیس ملیکتی -اکلی حکومت کی سے خصوصیت یکھی کہ آمین حکومت مین شاہ وگدا، شریف، و زیل غزز و رکایز ،سب کا ایک رتبه تھا،-جبلہ بن الاہم خسانی، شام کا مشہور مئیں بلکہ اِ دشاہ تھا اورسلمان ہوگیا تھا۔ کوبیکے الموا ن مین اسلی ما در کا گوشه ایت تف کے یا نون کے نیچے آگیا۔ حبلہ نے اسکے منھ پرتھ پڑھینے ال سے بھی برابر کاجواب دیا ، حبائہ غضے سے بتیاب ہوگیا ، اور حفرت عرکے ایس کیا ، حفرت عرف أَسكى شكايت منكركها كروم نع جو كحيركيا أسكى سزايائي" أسكوسخت حيرت موائي اوركهاكرم اس رتبہ کے دوگر میں کدکوئی تعض مارے ساتھ تا حی سے مین آئے توقت کا مستحق ہزاہے ، حضرت عم نے وا یا عالمیت مین ایسائی تھا لیکن اسلام نے بیت ولمبدکوایک کردیا "- آسنے کما کاگر ملام ایسانرہب ہے جبین شریف و دلیل کی کھیر تمیزیین، تومین اسلام سے بازا آماہوك

حزت عرک مکوت ک مغمویتین

ا صول وا

غُرَض و چُھُب کر شطنطنیہ ملاکیا لیکن <del>حفرت عرف</del>ے اُسکی خاطرسے قانون انصاف کو مرانا نیر جاہا ایک دفعه تام عهده داران ملکی <del>کوچ ک</del>ے زما نے مین طلب کیا ، ادر مجمع عام مین کھڑے ہو کر کہا کہ ب نسی کوان لوگون سے شکایت ہو ہین کرے -اس مجبع من عمروین اعاص گور زرمصرا و رہرے بڑے رتب کے حکام اور عال ہوجو دیتنے ،ایک شخص نے اٹھا کہ اکہ فلان عامل نے بیو چر جمجاز شود ہے ایسے ہین حضرت عربے فرایا «اُٹھا درانیا بدلالے» <u>عمروین انعاص سے کہا امیرالمونین</u>! اِس طری<sup>ی ع</sup>لاسے م عَالَ بِدِلِ بِهِ جَامَنِكُ ، <del>حَمَرت عَرِ نَ</del> فرايا "مام ايبا عزور موگا" يه کمکونم تنغيث کی طرف متوجه بوئے که "منا کام ک<sup>ر، ا</sup>خر<u>عروین العاص مصتنیت کواسبات پر را</u>صنی کیا کرده دونمو دیناری اوراینے دعوے سے **ب**ارائے۔ ایک دفعہ سرداران ویش اکی ملاقات کوائے ، اتفاق سے صبیب ، بلال ، عاروغیر می موجود تقین سے اکثر آزاد شدہ غلام تقے، اور دنیا دی تثبیت سے معمولی درجہ کے لوگ سبمهرجاتے تھے۔حصرت عمرنے اوّل انھی ہوگون کو نکا یا ا درسرداران فرنش ا ہزیمھے ہے۔ ایونعیا جوز ما زُجالمیت مین تمام <del>قریق ک</del>ے سردار رہے تھے اُنکو بیام سخت ناگوارگذراا ورسائیمیون سے جنا ب کرکے کما کردکی حذا کی قدرت ہے ، غلامون کو دربارمین جانے کی اجازت متی ہے اور ہارگ اِ ہربیٹیے انتظارکررہے ہیں<sup>، ا</sup> ابرسفیان کی یرسرت اگرمیہ اُنکے اقران کے مذاق کے مناسب تھی تاہم اُن میں کچرحق شناس تھی تھتے ایک نے کہا ''بھائیو''ایپچ بیہے کہ<del>مکو عمر کی</del> منیں ملکہ اپنی شکایت کرنی چاہئے - اسلام نے سب کوا یک اُوازسے بگایا لیکن حواینی شامت سے تی<u>ھے</u> يسنح أج بھي وه يحير رہنے كے ستحق ہرتے،۔ ك كتاب الخراج مفي ١٦٠ - على اسدا فاتر تذكر سيل بن عرورا

**تا دسیہ کے بعد حب تام قبائل وب اور صحابہ کی نخواہین مقرکین تو مرے زشاک منبات** کا مقطع میش آیا، سردارا <del>ن قرنیش</del> ا ورمغزز قبایل کے لوگ جوم**ر ق**طع پرا متیاز وا غراز کے خوگر سکتے برے دعدے کے ساتھ نتظر ہے ،کتنخواہ کے تقریمین حفظ مراتب کا خیال کیا جا میگا ،اور فہرت مِنُ الْحُنَام، سب سے بیلے نظراً مُنیکے ،لیکن صرت عربے اٹکے تمام خیالات غلط کر دیے، تخون نے دولت وجاہ ، زور وقوت ، ناموری وشهرت ، اغ ازوا تبیاز ، کی تمام خصوصیتون کو بطا کر؛ صرف اسلامی خصوصیت قایم کی اوراسی اعتبارستے نخواہین بیش وکم مقرّر کییں، جولوگ اقرل اسلام لائے تھے ، یا جہادمین کار ہاہے نمایان کئے تھے ، ی<mark>ا انحضرت</mark> کے ساتھ تھیوت ر کھتے تھے۔ انکوغیرون پر ترجیح دی،جوان حصوصیتون میں برا پر درھے پر کھے انکی تخواہین برا برمقررکین <sup>،</sup> بیان کک کرغلام اور آقامین کچه فزق نهٔ رکها <sup>،</sup> حالاً که عر<del>ب</del>مین غلام سے برهکر لوئی گروہ خوار و دلیل نرتھا۔ اسی موقع پر اسامتہ بن زیر کی تخواہ حب اپنے بیٹے عبد التّٰد سے زیا دہ مقرّر کی، توائمفون نے عذر کیا کہ والٹہ اُسامتہ کسی موقع پر مجھُسے آگے نہین رہے۔ حضرت ورنے فرا یاکور بان بیکن رسول انٹرصلی انٹرعلیہ وسلّرا سامتہ کو تحصیصے زیادہ غرز رکھتے تھے '۔ اہل عوب کا شعار تھا کہ اور ایکون میں فخرانیا نے قبیلہ کی بنے پکارتے تھے۔ اِس فخر کے مِٹا نے کے لئے تمام فوجی ا منسرون کولکو بھیجا کے جولوگ ایسا کرین اُلموسخت سنرادی جاسے"ایکے د فغہ ایک شخص نے جوضبّہ کے قبیلہ سے تھا ، اڑائی مین یا آ<u>ل ض</u>بتہ کا نغرہ مارا ، <del>صنرت عمرکو خبر</del> ہوئی توسال پھرکے لئے اُسکی نخوا ہ بندکردی-اس فتیم کے اورببت سے واقعات ما ریخون ك نترح البلدان صفوا ههر

مین کمتے ہیں۔

أمرائصاقة

اسی اصول مساوات کی بنا پروه کستی خص کے گئے کسی سم کا آمیا زیبند نهین کرتے سکتے عروبن عاص نے مقرکی حاب مسیح مین منبر بنا یا تولکہ بھیجا گدکیا تم یہ سبند کرتے ہوکہ اوسلمان میج بمیٹے ہون اور تم اور بمٹیو، عُمال کو ہشیہ تاکیدی احکام بھیج رہتے تھے کسی طرح کی تمیا را اور مؤد، اختیار نہ کرین،

ایک دفعه آبی بن کعب سے کچھ نزاع ہوئی زیربن نابت کے ہان مقدمہ بیش ہوا تھ نظر انکے پاس گئے توا تفون نے تعظیم کے لئے جگھ خالی کردی ،حضرت عمر نے کہا ور پہلی الفعانی ایک جو ہم نے اس مقدمہ میں کی ، یہ کہا اپنے فریق کے برابر ہمٹھ گئے بہی تھبید تھا کہ طرز معا نترت منا بہت سا دوا و رغو بیا نہ رکھا تھا۔سفر وحضر میں ، جلوت و خلوت میں ، مکان او رباز اربین کوئی اضحض اُنکوکسی علامت سے بہا ن نہیں سکتا تھا کہ یہ خلیفہ وقت ہیں تھے کو کسری کے المح بی خبری میں اگر ڈھوٹر ھے تھے کہ شمنشا و اسلام کہاں ہے ، حالا نکہ شا ہنشا ہ، وہیں۔ بیوند لگے کی بیٹ بیٹ کسی گوشے میں جمٹھا ہو تا نھا۔ انکے عالی انکواسی برابری کے القاب سے خطر کھتے تھے حبطرے وہ مخال کو لکھا کرتے تھے۔

اِس اصول الفعاف سے اگر جیفا ص فاص آدمی نبکی اِدّ عائی ثنان کوصدر کہنی تا تھا ول مین مکذر ہوتے تھے الیکن جونکہ بیغ رب کا صلی مذات تھا اِس سے عام ملک پراسکا نہا تہ عدہ اثر ہوا اور تھو ڈے ہی ونون مین تمام عوب گرویدہ ہوگیا۔ خواص مین بھی جوحی ثنا س تھے

ك كنزالعال ملده منني ١٩٤٠-

ده روزبروزسترن ہوتے گئے۔ اور جو بالکل خو دبرِست سفتے وہ تھی میلانِ عام کے مقابلے میں اپنی خورانی کے اظہار کی جوائت کرسکے۔

اسِ اصول کے عمل مین لانے سے بہت بڑا فائرہ یہ ہواکہ قبائلِ عِب، جوابھی ہیود مفاخر کی بنا پر، امیں مین ٹرتے رہتے تھے اور حبکی وجہسے عرب کا سارا خطّہ، ایک میدانِ کارزار بَن گیاتھا، اُٹکی اِممی رقابت اور مفاخرت کا زور اِلکل گھٹ گیا۔

اس موقع پر ہے تنا دنیا صرورہ کہ حفرت عمر نے اکسولِ مسا وات کے ساتھ اپنے سیئے
امیر المونیین کا ٹیزفخر لفت کیون ایجاد کیا۔ جسل بیسے کہ اس زمانے کک بیفت بنیون محرف ایک بیست میں بیار کی بیست میں بیار کی بیست میں بیار ہوا تھا، اضراب فوج عمراً امیر کم بنیون محمد بنا بیر بیار ہے ہوئے ہوئے اربیر کا خصارت کو امیر کمۃ کہا کرتے تھے، کہا رعوب انحضرت کو امیر کمۃ کہا کرتے تھے، سعد بن و قاص کم عاق میں لوگون نے امیر المونیون کہنا مشروع کردیا تھا۔

امیرلمومنین مقب کیون اختیار کیا ؟

ایک کوتا ه نظر کویینیال ہو ک<del>ر حفیرت عمر</del> کوخلافت سے اگرکسی متم کا جاہ واغ از مقصود نہ تھا تو ایھون سے خلافت اختیاری کیون کی ؟ بیغیرمنی کا بیا قتلها تھا کہ وہ اس خوان ممت کو ہات ہی نہ لگاتے، اليكن ميرخيال محفن عاميا نه خيال محفرت عمر بي شبه، خلافت سے بات أنھاليتے ليكن دوسرا كون شخف تفا جراسكوسبنهال لتيا ؟حضرت عم قعلعي طورسے جانتے تھے كہ يہ بارگران، أنكے سو ا نسی سے اُکٹرنبین سکتا!کیا ایسے وقت مین انگی رہتبا زی کا پرتقا صاتھا کہ وہ دمیرۂ ود استہ لوگون کی برگرانی کے حیال سے ، خلاقت سے دست بردار ہوجاتے۔اگروہ ایسا کرتے توخداکو كيا حِواب ديتے ؟ انفون نے پيلے ہي دن خطبومين كه ديا بھاكہ-و کار کیا بنگان اکھ کن جبر کھ لک موقوا فو اکھو این اگر مجکویہ اسد منوق کرمین تم رکون کے لئے سب سے زارہ عَلَيْكُ وَالشُّكُو الضَّطَا لِمُعَا بِمَا بِنُوبِ مِنْ الأَرْدِ سِ بَادِهُ وَى ادِمَاتِ الرَكِيعَ ب سے زادہ وَی اِزما هُمُ قَامِكُم مِانِق لَبِنُ إِذِ لَكَ مِنْكُورُ الْهُونُ تُرِينُ اِسْ مُعْبِ وَقَبِلَ الرَّا-

اس سے زیادہ ما ف دوالفاظ ہیں جوا ام محمر تے موطامین روایت کئے ہیں۔

لوعلت انتا حَدًا افوى على هذا لا هري الدين الرب الأكاري تغول الم دخلات كيئ كيس الدورة ترت كما الم

حفرت عرکے اِن الفاظ پرغور کروا در دکھیو کہ اِسکا ایک حرث بھی محت و قرمیت سے ہٹا ہوا ہ

حفرت عربسیاست کے اُصول سے خوب دا قف عقے ، اور یہ وہ خصوصیّت ہے جبین دہ تا ا اور صما بہت علانیہ ممتاز ہین، جومالک، دایرۂ خلافت مین د امل تھے آئی مهلی میں سیریجین ت

ك الناب الانتراف بلاذرى - سك كاب مركويطبوع مصطفائ صغير ٥٠٠٠

ساست

عرب، ایران، شام ومصر، اس کئے ہرا کی کی حالت کے مناسب، الگ الگ تدسر راج بین عواق و ایران مین چونکیتر میشند مرزبان اور و متفان حلیه آتے تھے اورا سلام کی فتح کے بعبر ] بھی انخار ورا ورا قدار قائم تھا اس سئے انکی لیٹیل تنخواہین تقرر کردین حس سے وہ انگل رام ہوگئے چنا پخدرؤساے واق مین سے ابن النخرمان، سبطام بن رسی، فیل، خالومبل ، كے معقول روزینے مقرّر کر دیئے۔ شام و مقبین رومیون سے ملی باشندون کوصاحباِ بُرا د نہیں جھے طرا تھا، اِس کئے انکی طرف سے چندان اندیشہ نہ تھا، وہ رو<del>می حکومت</del> کے بجاسے ا کی عا دل ورنصف گو بزنٹ جا ہتے تھے ، حنرت عب مرنے انکے ساتھ وہ مراعاتین کمین کم کراُ تھو ن نے بار ہاکہاکہ جمکوسلمان، رومیون کی پنسبت زیادہ محبوب ہیں'' - غیرقوموں کے ساتھ' اگرچُّا نکا برّ ماؤعمومًا نهايت فياصانه تھا چنا پخه اسِکى تحبث دمّيون ڪے حقوق مين گذر ڇکی۔ لیکن زیا دفجقوسے معلوم ہرتاہے کہ تتام ومصر کی رعایا برخاص توجیبندول بھی۔مصر مین متعوش مصر کا باشندہ اوررومیون کی طرف سے نائب حکوست تھا ، اُسکے ساتھ سفر وع سے ایسے برا وکئے کروہ ناحر مدید غلام بن گیا اور اسکی دجیسے تمام مصری رعایا داسے حلقہ گوٹی اطاعت ہوگئی۔ اِن ماِ تون ریھیٰ کتقا نہین کیا بلکہ تا مرحبگی مقامات بر<del>عرب ک</del>ے خا نرا<sup>ل ہ</sup>اد دِ سے یا فوجی چھا ونیان قائم کردین خبکی وحب*سے سیکڑو* ن میل مک تر پہنچیا تھا اورکسی کونغا <del>و</del>ا کی جرائت منین ہوسکتی تھی، کوفہ وتقبرہ جوعرب کی طاقت کا مرکز نبگیا تھا، خاص اِسی غوش<sup>سے</sup> ا دکرایا گیا تھا <sup>، شام</sup> اور مصر میں تام سواحل بر فوجی جھا وُنیان اِسی صرورت سے قایم لى كىم رئىڭلىرە. كى كىم رئىقلىرە.

خا ص عرب مین اُن کومتلف پولٹیکو تدبیرون سے کام لینایرًا ، بیودیون وعیاییون کو جزیرہ عرب سے بالک کال دیا، برے برے ملکی اضرون کو ہمتیہ برلتے رہتے تھے، خیا پ<u>ی عمرہ</u> بن العاص کے سواکوئی ایساگورنرمقر رہنین ہوا جرختلف صوبجات مین برتیا نر ہا ہولکا فنسرون مین سے مبلی سنبت زیادہ زور ہا جانے کا خیال ہوتا تھا اُسکو بلٹے ہوکردیتے تھے، جولوگ زیادہ ماحب اٹر تھے اُنکواکٹر وارالخلافتہ ہے ہم ہنین مانے دیتے تھے ،خیانچہ ایک دفعہ اُن اوگون نے جہا دیرمانے کی امازت طلب کی تو فرما یا ک<sup>ور</sup> ایپ لوگ یہ دولت بہت جمب*ع کرھکے پہ*ن۔ پھر فرالي كالتخريجُ فنستلك على بيسيّاً في يماكم الكيدونعه عبدا رحمن بن عوت نع يوجها كرأي ملوّل ا کو ہم موانے سے کیون روکتے ہیں'' فرایا مراس سوال کا جواب نہ دینا جواب دینے سے تبہتر ہے'' ۔ اپنے قبیلہ کے بوگون کومبی ملکی عمدے نہین دئے ، صر<sup>ن</sup> نعان بن عدی کوضلع کا حاکم کیا تھا، پھرا کیہ معقول دجہسے مو**قو**ن کرویا - <del>بنو ہاشم</del> کو بھی ملکی عُمدہے منین دیے اور اسمین زبا ده تريئ علمت طحوظ تقي-

اسرقت تام عبر مین مین مین شخص سقے جوشهورُ مربرا ورصاحب اِ دَعالی ایم اویه عمر د بن العاص ، مغیرہ بن شعر بوخ کد محات طلی کے انجام دینے کے لئے اِن لوگون سے بڑھکرتمام عب مین کوئی شخص بات بنین اسکتا تھا اِس سئے سب کو بڑے بڑے عمدے دئے ،لیکن ہمیشہ اِس بات کا خیال رکھتے تھے اوراسکی تدبیرین کرتے رہتے تھے کہ وہ قابوسے با ہرزہونے یا مین - اُن کی وفات کے بعب، کوئی ایساشخص نراع جو انکود باسکتا ، چنا پخہ حصنت تھا آئے سل آئے میزی صفور ۱۸۰ سے ایخ لیقوی صفی نرکور۔ اور حفرت علی کے زیا نے مین جو منہ گامے بر یا ہوا کئے سب ایمنی لوگون کی برولت تھے۔

سیاست اور یالٹیکس، حکومت اور بلطنت کا لاز مرہے لیکن حفزت عمرکواس باب بین

تام دنیا پر جوا متیا زماصل ہے، وہ یہ ہے کہ اور بارشامون نے یالٹیکس کی عزورت سے جوا
کام کئے انکا وہ قمی نام - خدع، کر، فریب، ظاہر داری، اور نفاق، تھا۔ بارشا ہون بیہ موقوت منین، بڑے رف رفار مراس شائم سے خالی بنین ہوتے لیکن حصرت عمرکی کسی کا رروائی پر جوزیب، او حکمت علی کا تقام ہون کو تھا وہ جو کھے کرتے سے علا نیہ کرتے سے ، اور لوگون کو صا

فریب، او حکمت علی کا تقام بنین ہوتا تھا وہ جو کھے کرتے سے علا نیہ کرتے سے ، اور لوگون کو صا

ضاف اُسکی صلحت سے وا تھن کر دیتے سے، حضرت خالہ کو مغرول کیا تو تام اضلاع مین فران بھیجہ یا کہ۔

فران بھیجہ یا کہ۔

إني كُوْ اعْرَالْ حَالِمًا عَنْ مِعْطَانِةِ وَ لَهُ هُمْ يَا نِيْ عَالِدُوا اِمْنَ اِنْانَ كَرِمِ مِنْ يَرَوْنَ كِيا بِكَارِمِ مِنْ الْوَلِيَّا الْمِنْ الْوَلْمُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّلْحَالَاللَّاللَّاللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّا

وَلَكُنَّ المناسَ فَلتوابه فَغفتُ ن يوكو الليَّه المُر وزور وَتَرَو تع بيمِن ورا دُا يُرووس زرس

دین حفرت عبدالله بن عباس صاف اُسکی وجه باین کردی چنا پخدا یک دوسرے مناسع فقا پراسکی تفصیل اَئیگی-

حضرت عمر کی شن سیاست کا ایک برا کا رنا مہ، اوراً نکی خلافت کی کا میابی کا بہت برا، یہ ہے کہ انفون نے حکومت وانتظام کی کُل مین نہا مت موز ون مُرزے ہتعمال کئے تھے۔

ك طبري نوك ١٥٢٨ ك طبرى منفي ١٩٥٧ -

یا عمواً سلّ کے حو ہزنناسی کی صفت انین سب سے بڑھکر تھی، اِس ذریعہ اَعون نے تمام عرب کے وابل آدمیون اورانکی مختلف فالمبیتون سے داففیت بیدائی تھی ،اورانھ فالم بیوا کے بحافاسے اکمومناسب عمدیرے و لئے تھے، سیاست وانتظام کے فن مین تام عرب مین جار غُف اینانظیر منین رکھتے تھے ،ا میرمعاویہ ،عموین العام ،مغیرو بن شعبہ، زیادین میہ، چنا بجٹ ب کو بڑی بڑی ملکی فیرشین سپر وکنین ، اور درخقیقت ، ان لوگون کے سوا ، شام و مصر د کوفه يرا در كونى تخف قابونىين ركوسكتا تھا ،-جنگی متمات کے لئے عیاص برغیم، سعد د قاص، خالد، ننمان بن مقرن، وغیرہ کو اتنحاب کیا، عرمور کمرب، اوطلیوبن خالد، اگر حربیلوانی اورسپه گری مین اینا جواب نین رکھتے تھے لیکن خوج کو الراہنین سکتے تھے ایس لئے اِن دونون کی سبت حکم دیریا کا اکموکسی حقیّہ فوج کی ا فسری بریاب ز مدِ بنْ ما بت ، وعبدا متَّد بن ارْقم ، انشار تحریزین مستنتیخ سقے ، انکومیرسنتی مقرر کیا ، قاضی شریح مجب بن سور، سلمان بن رمبية - عبدالله بربسعود، نصل قضا يا مين متازيحے أكمو تضاكى خدمت دئ فرص حبکوس کام پرمقرر کیا وہ گویا اُسی کے لئے بیدا ہوا تھا، اِس امرکا اعترات غیرقومون کے مز زخون نے بھی کیا ہے ، ایک عبیائی شہور و ترخ لکھتا ہے کرد عرفے فوج کے سردارون ورگورٹرون کا

أتخاب بلار ورعايت كيا اورمغيره وعمار كوحيور كرابتى سب كاتقر رنهايت مناسب ا ورموزون مهوا"-

ا نکے بخت احکام کو بھی گوا را کرلیتے تھے ، پیھتی کُرانکا عدل وا نصاف میشہ بے لاگ ر اجبین دست

ویتمن کی کورتیز نزیمتی مِمکن تھا کہ لوگ، اِس! ت سے 'ارامن ہوتے کہ وہ جرایم کی باداش مین کسی کی

سب سے بڑی چنرجس نے أنكى حكومت كومقبول عام بنا ديا اور سكى و مبسے، اہل عرب

عه فردا العلينت كاعمده أتناب

> بے ل*اگھ*دل انعاصت

عظمت وشان کامطلق پاس بنین رہے ییکن جب وہ بوگ ہے دکھتے تھے کہ خاص بنی آل واولاہ ورغونروا قارب کے ساتھ بھی اُنکا یہی بڑا وہے تو ہوگون کوصبرآجا ّ ماتھا۔ اُنکے بیٹے ا**یو تحمہ بے**جب شراب بی توخود اینے ہات سے انکو ، مکوٹ ، ارب ، اور اسی صدمہسے وہ بیجارے مفا کرکئے۔ قدم بن منطعون جوانکے ساملے اور بڑے رتبہ کے سی بی تھے ، حبب اسی جرم مین اخوذ ہوسے توعلانیہ

انتظامات سے وا تعنیت پیدارے تھے اوراننی جی چیزین سینہ کے قابل ہوتی تھیں اُسکوا ختیا رکرے تھے، خراج عشور- و فتر-رسد کا غذات ِحساب اِن مام اتبطا مات مین ایمون نے ،

ایران اور شام کے قدیم قوا عدرعل کیا- البتہ حبان کوئی نقش یا یا شکی اصلاح کردی ۔ عراق کے بندوببت كاحب اراوه كيا توخديفة اورغهان برجنيف كنام كابھيجا كهواق كے ذرئيسك بيندارو

حضرت عمری سیاست کا ایک بڑا اصول میر تھا کہ وہ قدیم سلطنتون اور حکم انون کے تواعدوم

ومیرے باس بھیجد وخیائی میزمیدار مع مترحم کے انکے باس آئے او را تھون نے اُل سے در ایت ارا

علاطمینِ عجم کے بان مالگذاری تی شخیص کا کیا طریقیہ نظائے۔ جزمیر طالا کدیفیا ہرزمبی لگاؤرکھیا تھا ماہم

اسكي شخيص مين ومي اصول محوظ ركقے جو نوشيروان نے اپني حكومت مين عايم كئے سينيو على امرابو حفر

مربن جریرطبری نے جهان **نوشیروان** کے اُتطا ات اورالجفہ و<del>س جزیہ</del> کا ذکرکیا ہے وہان لکھا ہے۔

ق مح الوضائع النحل قدى على بها عمر المخط الين يردي قاعد مين ومفرت عمر ن ب فارس كالمك تح كيا

ک ابیتریک نیفتے مین دا مغون نے بڑی زمگ میزان کی بین لیکن اس قدر صبح سے کرحفزت عمر اُنے اُنگو شرعی مزادی ادراسی صد<del>رت</del> تحفون شعاشقال كيا (دكيمومعارت بن مثيبة وكراولاد يمرًى كلُّك كما ب الخراج صفير ٢١ -

تواکی اقتداکی-مين افتضر لاد الفس اِسے زیا وہ صاف اور مُصِیّح ، علامه این مسه نه می**ی** نے اِس صنمون کولکھاہے ، علّامهُ و<del>من</del> ئے جوکیم اورلسفی اورشنج دعلی سینا کامعاصروم پایہ تھا <mark>، اینخ می</mark>ن ایک کتاب کھی ہے جبکا ام<sup>تحابال</sup> ا ہے۔ اُسین حبان حضرت عرکے انتظامات ملکی کا ذکر کیا ہے لکھا ہے کہ وكان عمر كبيز الخالف بققهم كلفس يغرض علية الينيء فاس كيندارمون ومحت فاص من كقيق بوار اكورتام كا بباسان الملوك ولاسبها ملوك العجار لفضالاء أئي كوت رُحرُنا يار تع نصومات انع رُرَني مي مام رُوتيران ع وسيماً انونئس مان فانه كا معجبا بهاكمنبركا في الله المي *الله وان كاين بت بيند تع* اوردوانك مبتهر*وي كرته تق* علامهٔ موصوت کے بیان کی قصدیق اس سے بھی ہوتی ہے کہ عموماً مورخون نے کھا ہے کرجب فارس کا رئیس مرمزان اسلام لایا تو حضرت غرف اسکواینے خاص درباریون مین ا دخل کیا اورانتظا ات کمکی کے تتعلق اُس سے اکثر مشورہ لیتے گئے ۔ حضرت عمر کی ٹرمی کوشش اس بات پرمبذول رہتی تھی کہ الک کا کوئی واقعہ اُن سے محفی زہمنے لیائے، اُنھون نے انتظاماتِ ملی کے ہرمرصنعہ ریرچہ نوٹس اور واقعہ گا رنفرر کرر کھے جبکی وجیسے للك كالك الك جزئي واقعه أن كه ينتي التقاء الم طبري للصفي بن-كان عمر لا بخفي عليه فسي في على كنت البيد من الين عربون التنين في نين من من واق من مربوك الفي فريدا وا ك ارخ كيرطبرى منفي ٢٦٥٠ - كل يكل بالسطنطينيك كتب فا نُرسجرا إصوفيا ين موجود م اورمين نصاشي نسخه سے نقل کیاہے۔ سل طبری سفیہ ۲۹ ۲۹۔

ت والفیت مالا کے کئے جونوں اورواتو کار

ع اق کے ایک مورکہ میں میرد ارلتاکرنے عمر ومعد بکرب کو دوہرا حضہ منیوں دیا ،عس عدیکرب نے وجہ بوچھی 'اُنھون نے کہا تھارا گھوڑا دوغلاہے 'اس کئے اسکا حصّہ کم ہوگیا ، معد کمیرب کواپنی پیلوانی کاغ ورتھا۔ بوے کہ ہان دوغلامی ووغلے کو پیچان کی جگ ہے، حضرت عمر کوفوراً خبر ہوئی ، عمر ومق کیرب کوسخت تنبیہ کی جبکی وحبہ سے اگرا نیدہ میرایسی شاخی کی جرائت بنین ہوئی <sup>،</sup> نغان بن مدی <del>میسان کے حاکم تقے دولت دیفت</del> کے <del>شر</del>ے من ٹرکرائفون نے اپنی بی بی کوایک خط لکھاجسین بیشعر بھی تھا۔

عَالِماً الرالموسنيو ، كوخر سنج كى توده برا مانين ك 

لعَلَّ المِيْرَا لِمُعْمِيْنَ لِيَسْفُءُ وَلَا

ٔ حصنتِ عمر کونوراً خبر مونی ا ورانکوموزول کرکے لکھا کہ با ن محصکو بھیا ہی چرکت ما گوا ہودی<sup>کی</sup> صحا برمین خدیفیة بن ایمان ایک بزرگ تقے خبکواکٹر محفی با تون کایتہ لگتا تھا ،عہد بنویت من وہ انحفزت کے محرم راز تھے اور اسی وجہت صاحبُ السّركملات تھے ،حفزت عم نے ایک دن ان سے پر میا کور منا فقین کا جوگروہ ہے انین سے کو بی تعض میرے عمّا لون ا ورعهده دارون مين تهي سبع ،، الخون نے کها ‹ ابن ايشخفر مع ،، حضرت عرف ام بوجها لیکن اُ مفون نے رازداری کے لیا طسے ام نبین تبایا، خدیفیت کا بیان ہے کہ «اس دا تعری بعد <del>۔ حصرت عر</del>نے اُسکوموزول کردیا، جس سے مین نے تیا*س کیاکا ب*فون نے حزو بیت لگالیا<sup>ی</sup> <sub>اس</sub>یفخص اور مبدار مغزی کا اثر تھا کہ *تا ما*فسہ ك اسدامات ذكر نوان بن عدى - ك اسدا نا به ذكر مذ نفية بن اليان -

اورعمّال انکے مشورہ کے بغیرکوئی کام نہیں کرسکتے تھے۔ علامُہ طبری کھتے ہن وكانوالا أبل عُدِنَ سَجِنًا ولا بالنون لا وامع نفي إلى واردن لام أن بنيرديان من نيس رف تق-بیت المال مین خزا ناکا بہت خیال رکھتے تھے۔ اور سی متم کی رقم کواسکی احاطہ سے إ برنين مجقفي تقيم - فانكعبان مرّت كا يرهما واحبع تها اسكي سنبت فرماً ماكم-لَفَكَ هَمْ مُنْ اللَّهُ الدَّعَ فِيهِا صَفْلِعَ فَكَ اللَّهِ مِن اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللّ بيضاء الافتية سپ بوگوان کوتقتیم کروون ، ا یک و فوی<sup>غن</sup>یت کا مال آیا<del>حضرت حفقته (حضرت عمرکی ب</del>ی ورپیول امتدکی زوجه، مطرو<sub>د)</sub> کو خبر مونی - وه حصرت عمر کے مایس آیئن اور کہا کہ وا میرالمونین ! امین سے میرا حق محکومنات الميميخ كيونكمين ذوى القربي مين سيمون، حضرت عمرنے کما حاب میر ابتیرا حق میرے خاص مال میں ہے، بیکن تیمنیت کا ال م ، أون اسي الي اورهوكا ديا جا ان دو بياري ففيف موراً المراسكة شام کی نفخ کے بعد؛ قیصرروم سے دوشا نہ مراسم ہوگئے تھے اور خط کتا بت رہتی تھی ، ایب د مغہ ام کلنٹوم دحضرت عمری زوجہ) نے ،قیصری حرم کے پاس تنفہ کی طور پرحیت شیشیان میمین اسے اسکے جواب مین شنیدون کو جاہرات سے بھر کر بھیجا ، حضرت عسمہ يه حال معلوم براتوفرا يا كو عطرتها را تفاليكن قاصد جوليا گيا وهسركاري تقا اورأسك مصارت معلم اتمرنی مین سے ا داکئے گئے ۔غرصٰ وہ جوا ہرات سے کرمبت المال مرفی آجل ك طري صفير ١٠٠٨ من الله يمح باري بالكورة الكوية ١١ كل منداما ما محتسل-

بية المال كوحت ال

اروك ورانكو كيومعا وصه ويداية

ایک دخوبمباریب ، لوگون نے علاج مین شهر تخویز کیا ۔ بت المال مین شهر موجود تھا کین المال مین شهر موجود تھا کین المال مین شهر تخویز کیا ۔ بت المال مین تومیت لمال الراپ اجازت دین تومیت لمال الراپ اجازت کے سوا ، یہ ظا ہر کرنا تھا کہ خرائہ عام ہر پر طیفہ قوت کو آنیا اختیا بھی نہیں ۔

خلافت سے پہلے وہ تجارت کے ذریوسے بسر کرتے تھے ،خلافت کے مہات میں تیعٹ ا قائم بنین رہ سکتا تھا جھا بکو جمع کرکے اپنی صرورت بیان کی او کہا کیبیت الما آسے ، بین کے قدر پینے ہارن کے لیئے لے سکتا ہون ؟ لوگون نے محتلف المئین دین ،حضرت علی *جیب تھے ،حضرت ع*م نے اکی طرف دکیما اُتھون نے کہا ، صرف مولی دید کی خوراک اورلیاس ، چنا کیرا کے اوراکی بی بی بچُون کے لئے مبت المال سے کھانا اور کیڑا مقربہ گیا ۔ فوجی روز پند دارون میں جب جرینین (وہجام جو خباگ مررمین تشریک تھے) کے لئے تنواہین مقر بہوئین توادر روگون کے ساتھ یانی ہزار دیم سال اُنکیے بھی مقر ہوگئے، کرورون روپے کی آمدنی مین سے فیا روق عظم کوسال معرمین جو متنا تھا ہی تعاقبی الكى معاشرت كے مالات مين آگے ميل كر تم ريھو كے كدوہ اكثر بيھنے كبرات بينتے متھے، زمين پر سُو رہتے ہے، مهینون گیهون کا (اگھ من نین کمیا تھا، اسکی دجہ کچُرمبا نیت اور درگی نی تھا بكەرچقىقت بىرسى*تە ز*ا دە أكوڭك كى مەنى مىن خىيب نىيىن مۇا تقا كىجى كىجى اتفافيە كوئى ئرى سىم ائماتی هی تووه به در بنخریم به کرت محقی نباید حضرت ام کلتوم سے جب نیاح موا توانکے شرف اور ك كترالغال مليده صفوته وسر- ك ايز طرى دا تعات مصليه-

فاندان نتبت كے تعلق كى دوبسے مهم بزار درىم مهر با بندھا اورائسى وقت اوابھى كرديا۔ <del>بنو ہاشم کو ح</del>بلکی عمد سے نمین دئے اسکی ایک بڑی دحبہ یعتی کہ اُنکونون تھا کہ <del>مز ہاشم ہو یکم</del>سر من اینا حقیهٔ ایک شرعی دن سمجنته مین اس کئے او حود دولتمندی کے مسر میں سے اپنا حِتہ کے لینگے طالا کا چھنرت عرکے نردیکے تمس کے معارف امام وقت کی راے پُرخصر ہن۔ جنا پی<sub>را</sub> کی کویٹ مفقل اسکے ائیگی، انھون نے بنوہشم کی نبت اپنی اس برگمانی کا اطہار تھی کردیا تھا جمص کا عامل حبب مركيا توحضت عبدالله بن عباس كومقر ركزا جا إلى ليكن جونكه أبكي طرب سي طمئن نه تقعي اس سئ للاكر ائن سے کہا کہ فینفنسٹی مِینک شبی میں دل میں متھاری طرف سے ذرا کھیا ہے، اُنھون نے یوجھا إكيون ؟ فرايا-

الخَيْشِيْتُ عَلِيهُ أَنَا لَيْ عَلَا لِفِلْ لَيْنِي هُوالِيَّ مِنْ مُجِكُورٌ بِهِ مَعْ مِاسٍ مِلْ يَقِرَن مُرو-

یم صرف سوزملن نرتھا بلکرو توع میں بھی <sup>ا</sup>یا، حصرت علی نمے اپنے عہد خطافت میں جب حصرت

عبدا لٹارکو عامل متفررکیا توا تفون نے مبت المال مین سے بہت سی رقم ہے ہی، اور جب حضرت علی ہے ا زیرس کی تولکھ جیا کو اہمی مین نے اپنا پورا حق منین لیا۔

یہ ادر کھنا تیا ہئے کر حصرت عمرنے مبت المال کے بارہ میں جو کفایت شعاری اور منگ دزری برتی وه خلانت ِ فار وقی کی میابی کابت براسب بھی <del>حصرت غ</del>مان کی خلانت مین لوگون سنے خبر

مین در شور شدین کین اسکی ایک بری وجه به بهوئی کرمناب موصوف نے میت المال کے متعلق فیاصا ا برا در کیا یعنی اسینے غزر واقارب کو دوی انقرنی کی بنا پر ترمی ٹری قمین عطالین ،-

ك كتاب الخراج قاصى ابويوسف صغورمه وده -

تام کامون) وقت پائا یا

ا كي عجبيب بات بيرم كداكر حيه الكولي انتها كام ورمين ريت تقيم ورا لخلافة ت سيكرون مزار و ن میل کمفومبین بھیلی ہوئی تھیں جنگی ایک ایک حرکت 'انکے اشارون پر ہو توٹ تھی کا تعالیا فكوت كمختلف شاخون كاذكرتم اوريرييه أتئيموه فقة كى ترمتيب ورافقا جواكيت عقل ورببت برا كام تمعا الك مقا ہے ذاتی اشغال جدامتے آناہم ہرکام وقت پرانجام یا اتھا اورکسی کام میں کبھی مرح ننین ہوتا فيا ، نها وند كاسخت معركة سبين تمام ايران ٌمنڈ آياتھا ،مين تھا -کومين اُسی زمانے مِن سعود فام كُورز ِ فَهِ كَيْ شَكَايِت گُذري بَصَرَ<del>ت عَرِثُ</del> فر ما يكواگرجه بريبت ننگ وقت ہے اب<u>م سع</u>د كی تحقیقات نىين *رُكسكتى- خيا ئخە كوفىدسے فوج*ىن كىروزىگى كانتظام تىجى بېرتار لاروساتىرى برى كدوكارش سے سور کی تحقیقات بھی ہوئی۔جزریہ وا بون نے قیصر سے ملکرجب شام برحلکرنے کا رادہ کیاتوں ت سے تمام اصلاع سے فوجین کھے جین کہ خررہ کے تمام ناکے روک دیئے ،اوراہل خریرہ قیص ک بینج بھی زسکے،۔ زيادين مدريا عواق من - وه يكي كحقبيل رياموريقي ، أنفون ف ايك عيسائي ك كموشك كي قيت ببيل مزارقراردب كرمحصول طلب كياء أسني كها كمولاآب ركة نبميا وروا مزارمحكووا استبحي دوباره ده عیسائی اُنگی سرصدے گذرا ، تواس سے پیم محصول مانگا - وه مکر منظر بینیا او<del>ر حفزت عم</del> سے شکایت کی ، حضرت عرف صرف اِس قدر کھا کہم طمئن رہو، عیبا ئی زباد بن صدیب کے اسوالیں آیا اور دل مین ارا ده کرمکا تفاکه ایک نهارا ورد مگر گوشت کووایس سے بیان حضرت عرکا فرمان سیلے ابنیج چکا تھاکہ﴿سال بعرمن دُورفوا کی۔ جنرکامحصول نبین لیا ماسکتا ٬٬۔ایک ورعبیا ئی کواسِی فشم كاوا قدميش أياء ومين أسوقت جعنرت عركي إس سنجاجب وهرم من خطبه أيه يب تخفيه

سى مالت من كسنے نشكا يت ميش كى، فرايا ينهين- دُوا برمصوا نهين پياجا سكتا-عيسا ئى چندروز مكه یمن قیم را - ایک دن <del>حضرت عر</del>کے پاس **ما کرکه اکر**ومین و ہی نصرانی ہون جینے محصول<del>ے کے متعلق ن</del>یکایت کی تھی، حضرت عرف فرایا ہان میں وہم منیفی دسلمان ہون حینے تھا را کا م انجا م کردیا ، عیسائی نے درایت کیا توحفرت عربیایی دن زا دکومکم بھیج چکے تھے۔

اسِ بات کاسخت اہتمام کیا کہ مالک مِحروسیمین کوئی شخص فقروفا قدمین مبتلا نہونے یائے ج عام حكم تنا اورامِ كى بهيناتقميل بوتى تحتى كەلك مين حسب قدرايا بېچ ،صنعيف ، از كار رفته بمفلوج ، وغيره ہون سب کی ننخواہین مبت المال سے مقرر کردی جابین الاکھون سے متجا وزاد می فوجی د قترمان ل مقيه، جن كوكه زميفي خوراك ملتى كتى- دول به أنتظام شروع كيا تو كم ديا كه ايك جُرْب ٱلْايكا يا جائے يُكر طتیا رموا تو ۰ سه آدمیون کو *بلا کو*کھا یا نشام کو بھرائسی قدرا ایکوایا ۱ و رائسی قدرا و میون کو کھلا یا<sup>ر</sup> دنوا ناه مام 🚽 وقت کے لئے یہ مقدار کا نی تھہری تو فرما یا کہ ایک اُ دمی کوشینے بھر کی خوراک کے لئے و وجر یہ آپائی اُن ہے پیروکر دیا کہ شرخص کے لئے اِس قدر الله مقرّر کردیا جا سے اعلانِ عام کے لئے منبر رج ہے اور میانہ ات میں لیکرکما کو مین نے تم لوگون کے لئے ہی قدر خوراک تقرر کردی ہے۔ جی تحض ہے کو المُشائيكا أس سے خدا سمجھ كا ايك روايت مين ہے كيمانہ ات بن كر وايفاظ فرائے-

الى فَكُ فَرَضِتُ لِكِلَافِينِ مُسْلِقٍ فِي تَنْهِيرًا مِنْ بن كَهِرسلان كَ لِحَافَى او دورً لَيون اور دؤ قبط سركەمقىركيا -

مُرى حِنظةِ وَقَيْمَظَحْ لِ

ك يه دونون روايتين كتاب الخزاج صفحر ٨٠ و٩ ، مين من

مل قریاره سیرا سوام-

اسپراکیشخص نے کہا کہ کیا غلام کے لئے بھی، فرایا ان غلام کے لئے بھی عوا درساکین ا کے لئے باتفصیص مزمب حکم تھاکہ بت المال سے آنکے روزینے مقرر کرد نئے جامین جیائی دہیںا ا

کہ ہم اور زمتیون کے حقوق مین لکھ اُستے ہیں) مبت المال کے عامل کولکھ بھیجا کہ خدا کے ابتر ل

ك الما الما الصَّا الفُفَر اع والمسَاكِين فقرت ملمان ورساكين الريام المان المرساكين

كفرشهرون مين مهان فانے تمير كرائے جهان مسافرون كومتِ المال كى طرف سے كھا أالما

تھا، چنا پخہ کو فہ کے مہان فانے کا ذکرتم کو فرکی آبا دی کے ذکر میں لکھ آئے ہیں۔ مرینہ نتورہ ین

جرانگرخانه تقا اکثرونان خود جاکرانے اہتمام سے کھا اکھلواتے تھے۔

اولاد لقط بعني كمنام نيج جنكوانكي ما يئن شاهراه وغيره يردال حاني تقين، أنكحه بيع مثلثها الاواله الله

من یا نتظام کیا کہ جہان اس متم کا کوئی تجہ ملے اُسکے دورھ مایا نے اور دیگر مصارت کا ہمظام آلیال

سے کیا جائے ، خِنا پخدان مصارف کے سئے اول ۱۰۰ درم سالا ندمقرر ہوتے تھے پھرسال سال

ترتی ہوتی جاتی تھی ﷺ پیرون کی رپروریش ،ا دراگرانگی جائدا دہوتی تھی تو اُسکی حفاظت کا نہایت

اہتمام کرتے تھے۔اوراکٹرتجارت کے ذریوسے اُسکوترتی دیتے رہتے تھے۔ایک نظر برا بالاہا

سے کما کرمیرے پاس متیون کا جومال حمیع ہے وہ زکواۃ نخاہنے کی وجیسے گھٹتا جا تاہے تم اسکو

تجارت مین نگا دُ اور دِنفع ہو واپس دو ، چنا بخہ دنتل منرار کی رقم حوالہ کی ا وروہ بڑھتے ٹرھتے لاکھ

ك يەلىرى تىفقىل فىتىج البلدان مىغۇ، 4 مەيىن ب اورتام ايۇن مىن بىي دا ذراسے اخلات كے سابقە يەرواپت مەكوپ كىل بلاز جى غىر

١٥٥ ومقوبي فليرد وم صفحة ١١ -

مثلهٔ همین حب عرب مین محطیرا توعجیب دعزیب سرگرمی ظاهر کی،اول <del>مبت</del> المال کا تمام تملكانظام النقد وغلّه صرف كيا بهرتمام صوبون كے احسرون كولكھا كەمرىگەسے غلّه روا نەكيا جائے، چيا بخه حصر ا ہو عبیدہ نے جار مزارا ونٹ غلّب لدے ہوئے بھیج، عروین العاص نے بحرّفازم کی راہ سے مبین جمازروانہ کتے جئین سے ایک ایک میں میں میں بزارا ردب نقلہ تھا ،حصرت عمران حہازون کے الم خط کے لئے خود بندرگاہ کک گئے جسکانام جا رتھا اور جومزنی منورہ سے تین منز لہے ، بندرگاہ مین درو برسے برسے مکان بنوائے، اور زیر بن ایت کو حکم دیا کہ تحط زدون کامفصل نقشہ نبایتن چنا بخد بقبید نام ا و رمقدا رغله رحبط طبیا ربوا انتخص کو جیک تقسیم کی گئی جبکے مطابق اُسکور درا ناخله ملیا عمّا ٠ ميك برحصرت عمر كي متربت موتى عقي اسكے علاوہ مرر وزرو اون فوداين امتام سے فرج اراتے تھے اور تھا زوون کو کھا نا پکوا کر کھیلاتے تھے۔ اس موقع پریہ بات فام طور پرجبا دینے کے قابل ہے کہ حضرت عمر کو اگرچہ ملک کی بر ورش اور پر داخت کا آنیا کچھ اہتمام تھا ،لیکن اُنکی یہ نیامنی ایشیا بی قشم کی فیامنی نه تفی حبیکا نمیجه کابلی اورمنت خواری کا رواج دینا ہو اے ۔ ایشیا میں سلامین مرامکی فیامنیون کا ذکرعمواً بڑے ذوق سے کیا جا تاہے بیکن بوگ اس اِت کا خیال نہیں کرتے ۔اس سے جمان ایک بادشاہ کی مرخ کلتی ہے، ووسری طرف توم کا دربوزہ گرمونا ا ورا نعام شیش پرلولگائے رہنا ّابت مواہے ۔ یہی ایشیا ئی فیا ضیان تھیں جینے آج ہماری قوم میں لاکھوں آدمی كم يغيل بيقوبي منعهُ ١٠٠ من ٢٠- اخِرك نقرت يرمن نع أَحَرَز بِينَ أَاسِيِّ انْ تَبَكِمنْتِ السَّأَسَ مَنَاذِلهِ وَمِولَمَنَ انْ بَكِنتَبَ لَهُ مَصِيَّاكُا مَنْ فَالْحَيْسَ ثُم يُغِنَّمَ اسَّا فِلْهَ ٱلْخَاتَا قَلَ مَرْضَكَ حَتْم اسْفَلُ المصِّكَاكِ اروب كم دين درن كابواب-

۔فاہ عام کے

ا پیے بیدا کروسئے مین 'جوخو د ہات یا نون ہلا انہین *چاہتے اور نذرنیا زوغیرہ پرا*قوات *بسرکرتے* من-لیکن حضرت عراس سے بخبرنہ تھے، دواس اِت کسخت کوشش کرتے تھے کہ ہوگون مین کالمی اور مفت خوری کا او ه نرمیدا هونے یا ئے ، جن لوگون کی تنواہین اورخوراک مقرر کی تقین ، وه - صرف وه لوگ تھے جن سے *کبھی نکھ*ی فوجی فدمت کی تو تع موسکتی تھی۔ یا جنھون نے پیلے کوئی ٹایان فدمت کی تقی ، یا وه جومنعف اور برایری کی و درسے خودکسب معاش نبین کرسکتے تقے۔ اِن ا شام کے علاوہ و کھی اس قسم کی قیا تنبی کوروانہین رکھتے تھے۔عمّرت ابن جزری نے سیرۃ العمرین کی کھاہے کہ د فعدا کی سائل حضرت عمرکے پیس آیا حصرت عمرے دکھیا تواسکی جمو لی اٹےسے بھری موٹی تھی تا اونٹون کے آگے ڈال دی اور ذبایا کاب جوما گنا ہوناگ، علامہ ماوروی نے احکام اسلطانیة مین لکھاہے کہ جعشب کا فرعن ہے کہ ایسے لوگون کو حوکھا نے کمانے کے قابل من اور ہا وجو د اسکے معدقدا ورخیرات لیتے ہوت بنیہ و ّا دیب کرئے اِسکے بعد علامہ موصوف نے اسکی سندیں حصرت عرکے فعل سے استدلال كمام اور لكما م وقد كفة كريم فينل ذلك بفوم من اهل لصَّا لَقَاتُ -معمول تقاكرب كستنخف كوظا مرمن حوشمال دنجيتے تو دریا نت فراتے که بیکوئی میٹیا بھی آراہے وجب بوگ کہتے کہ دہنین ، تو فرما نے کو میتحف میرے انکوسے گرگیا ، َانجامقولہ تھا کھکسے ہُڈ فیھے ﴿ دِنَاءَةً - نَجْرِجُ مِنْ مَسَالَةِ النَّاسِ ﴿ مِعِنْ وَلِيلِ مِثْنِيهِ مِي لُوكُون سِي سُوال كُرْف ك يُسِبت أقیجاہے "مفنت خوری کا موقع زیادہ ترغکما وصوفیہ کوملتا ہے ، ایکے زمانے کے صوفیہ تومیسرا نهیں *پوٹ تقے لیکن علما رکو انھون نے علانہ مخاطب کرکے کما تھا کا لانکونڈ* عَبَالا عَلَیٰ مُسیّل ہِنَ ك الاحكام اسلمانية مطبوع بمص فحدّ ٢٣٥-

يعنى مسلما نون براينا بارنه والو

حضرت عمری این نیوٹ کی من ایک عجب بات ہے کواگر جہ اکم مہتے ہے ہے اگر حہ اکم مہتے ہے اہم امورسے سابقہ
اہم نمایت بیوٹ میموٹ کے میموٹ کام مجی وہ خودا نجام دیتے تھے، اور اسکے لئے اُنکو وقت اور
خوصت کی نگی نمین ہم تی تھی۔ ان مین ایسے کام مجی ہوتے تھے جنکا اختیا رکزیا بغیا ہر ثنا خیلا فت
کے خلاف تقالیکن اُنکوکسی کام سے عار نہ تھا، روز بنہ دارون کے جوروز سنے مقرر تھے، اکثر خود جاکہ
مقسیم کرتے تھے۔ تورید اور عنفان مرینے کئی نزل کے فاصلے پرو وقصیے ہمن جہان جہان خوا تا ہمین
اوگ آباد تھے۔ اِن دونوں مقامون میں خود تشریب کے جاتے تھے۔ روز بنہ دارون کا دفتر ہات ہین
ہوتا تھا۔ اُنکو دکھیکر تھوٹے برے بسب گھروں سے کل اُنے تھے، اور حضرت عمر خود اپنے ہات سیکھیم
اور کہ اُنا کے حالے اور ایک ایک وضلے کے باس کھڑے ہموکہ
اُنے جاتے میں کھڑے اگر الیا ہوتا کہ دارا تھید تو مین جاتے اور ایک ایک وضلے کے باس کھڑے ہموکہ
اُنے دانت گنتے اور اُنکا جلی قبلین کرتے۔

محب طبری نے ابو خدنینہ کے حوالہ سے لکھا ہے کہ 'داکا معمول تھا کہ مجا ہمین کے گھرون پر جاتے اور عور تون سے کہتے کہ مکو کھی ازار سے منگوا نا ہم تومین لا دون ، وہ لونڈ یان ساتھ کرد تین خطر کھر خود چنرین خرمیت اور ایکے حوالہ کرتے ۔ مقام خبگ سے حاصد آ اور اہل فیج کے خطوط لا آتوخود ایکے گھرون پر بینیا آتے ، اور کیتے کہ فلات ایریخ کا فلام کی ایم جواب لکھوار کھوکا سوقت ک روا نہوم اِسے ، کا غذہ فلی دوات ، خود ممیا کردیتے ، اور جبکے گھرمین کو فی حرف شناس نو اخود جو

الم سيرة العرب لاين الحورى - سك فتوح البلدان منفر وه به -

رعايا كيمان

خبرگری

اً 'کی *سب سے ز*اد ہ توجّه اِس بات پرمبذ دل رہتی تھی که رعایا کی کو نیشکایت 'اُن کینچنو<del>۔</del> ے ، نیمول رکھا تھا کہ مرنمارنے بعرج مسجد میں مٹیرجا تے ، اور مبکوحہ کچے اُن سے ٔ ، کوئی نهوّا ، تو تصوّری دیراتنظا رکرے اسٹرجا تے'۔ راتون کو دورہ کیا کرتے ، سفرمی<sup>ں ا</sup> چلی<sup>ن</sup> ات یو چیتے ، بیرونی اصلاع سے جو سرکاری فاصدائے اُن سے تبرسم کی رُیس دجو کرتے۔ اکر آژاعده طریقه در یا فتِ حالات کایه تھاکتمام اصلاع سے ہرسال سفارتین آتین اور در تها ما ی<sup>ن کشی</sup>قتن مرسم کی صروری آمین میش کرتمین ایس سفارت کو **و فد** کهتے تھے اور یہ وب کا قدیم دستورتھا ،لیکن حصزت عمرنے اپنے زانے مین ایس سے وہ کام لیا جوآج کل حمبوری لمطنتون مین رعایا کے قایم مقام ممبرانجام دیتے ہین، حضرت عمرکے زمانے مین مختلف ضلاع ے جوسفا رتمین آیئر ٰن او حس طرح اُنھون نے اپنی مقامی صرورتین میش کییں، اسکا حال عقد انفریم وغيره من تبغيل لمّا 🕰 اِن تمام با تون پراڑ کوسلی نمتی۔ فرائے کو عال، رعایا کی پروائنین کرتے اور شخص تھا بهنی نندن سکتا<sup>، د</sup>اس نبایرا <sup>ا</sup> ده کیا ت**عاکه شام، جزیره، کوفه، نصره، کا دوره کرین اور هر حکه** زوده کھیرین لیکن موت نے فرصہ ہے ندی تاہم خیرد فدحب شام کاسفرکیا توایک ایک ضلعین ٹھیکر لوگون کی شکایتین سین ور داورسی کی-اس سفرین ایک بُرعبرت وا قعه بیش آیا- دارالحلافتر لودانس آرہے تھے کدراہ میں ایک جمہ د مکھا ،بسواری سے اُترکر خمیر کے قریب گئے ، ایک بڑھیا عرت نظراً بی - اسسے پوچیا کہ علی کھ حال کہ علوم ہے؟ اُسٹے کہا ان ، شام سے روانہ ہو حکا ، لیکن خدا ك كزالهال جلد دوم صفير ٢٠٠٠-

المكوغا رت كرے مرّبع كك مجعك اُسكے إن سے ایک ځته نمبی نبین ملا ، <u>حضرت عَمِن ک</u>ما اثنی دور ما ل عَمْرُوكِيوْ مُرْمِعَلُوم ہوسكتا ہے ''-بولى دَاُسكورِ عالى كا ما ل معلوم نبيت بوخلا نت كيون كرّات سابقہ معنرت عركو عنت رقت موئى اورب اختيار رويرك-ہم اس موقع برمتعد د محلا تیس اورر واتین نقل **کرتنے** میں جس سے اندازہ ہوگا ک<sup>ی</sup> اینا فت ارًام واسایش اور خبرگیری من انکوکس قدر سرگرمی ا در مهرردی تقی-ایک و خواکک قافلہ منی منورہ میں آیا اور شہر کے اِبرا زا-اسکی خرکری اور فی افلت کے لئے اخور تشریف سے گئے بیرہ دیتے بیرت سے کا کی طرف سے رونے کی اُوارا کی اُوھر موجہ ہو و کھا توایک شیرخوار بین ان کی گو دمین ته در باسے، مان کو اکید کی کہنتے کو بہلا ہو نے ۔ تھوٹری دیرمے بعد يواده رسك كذرك تونيخ كورة ايا ياغيظ من اكرفوايا -كرد توطري بريم مايا ن م، است كماكم تمکوم احقیقت معلوم نین خواه محفراه محبکود ق کرتے ہو، اِت یہ ہے کو عرف کا مریامے کو نیتے جب تک دوده وجيورين مبت المال سے انحا وظیفہ تقررنہ کیا جائے میں اس پتے سے عرص اسکا دو دھ چھراتی مون اوربیاس وجیسے رو ماہے "حضرت عرکورقت موئی اورکھاک، السے عمر اِتونے کتنے بیون کا خون کیا ہوگا ''اتنی دن مُنا دی کرادی کرنیج حس دن پیراہو اِن اُسی اینخے سے اُک کے اروزینے مقرّر کردھنے جامین۔ اسلم دصرت عرکاغلامتما) کا بیان ہے کہ ایک دفع صفرت کی گئے۔ مینه سے بین میل پر صار ایک مقام ہے ، وہاں پینچے تود کمی اگا ایک عورت کچھ کیار ہی ہے اور دویا مَيِّے رُورہے ہیں۔ اِس جا رُحقیقتِ مال دریا نت کی، آسنے کہا کہ کئی وقتون سے بخیّان کو کھا ما

'' <sub>، للا</sub>ہے ، انکے مبلانے کے لئے خالی ہانڈی مین بانی ڈال کرچڑھا دی ہے۔حصرت عج . كُوِقت أَسَطُ - مدينة مين أكرميت المال سے أما ، كوشت ، كھي ، اور مجورين لين اور سلم سے كه ، پیچر پررکند در اسامنے کها مین گئے جاتا ہون- فرایا- ان لیکن قیامت بین میرا بارتم اری چڑھا ئی،حفن<sup>ت ع</sup>مز و د جولھا پھو بحتے جاتے تھے ۔ کھانا طیبار ہو**ا و موَّن نے خوب** سیر موک ما یا اوراً چھلنے کو دنے لگے حضرت عمر د بھتے تنقے اور خوش ہوتے تنقے اعورت نے کہا حدّا کوخرا تح ہے سے یہ سے کرامیرالمؤنین ہونے کے قابل تم ہونے۔ آیب دنعه رات کوگشت کررہے تھے۔ایب بڑوا پنے خمیہ سے با ہزیمین پر مبیٹھا ہوا تھا، یا ماکزمنطے اوراد هراُ ده کی اِتمین شروع کمین، دنعةً خیری*ب ردنے کی اُوازاً بی-حضرت عمر*سنے و چھا کون روہا ہے؟ اُسنے کہا میری بی بی در دزہ مین مبلاہے ۔حضرت عمر گھر بریائے، اوارم کلٹوم رحصزت عمر کی زوحبھین کوسا تھ لیا۔ برّوے اجازت لے کرا م کلٹوم کوخمیرمن بھیجا، تھوری ایرکے بعد بخیر سیا ہوا، ام کلٹوم نے حصرت عمر کوئیا را کوامیرالمومنین! اینے دوست کومبارکباد ریجیے، امیرالمومنین کا نفط منگر مرّوحیز مک ٹرا، اور مورّب ہوبہ ٹھا۔حضرت عربے فرما یا کرد نہیں کھے خيال زكرو، كلّ ميرے پاس أنا مين أس بيتے كى تنوا ه مقر تركرد ذكا "-عبدالرا المن بن عوف كابيان ہے كه ايك دفعة حضرت عمرا رات كوميرے مكان يرآئے، مَيْنُ نے کما آپ سنے کیون کلیف کی مجھا کو لالیا ہوا ، فرمایا کر ابھی محصکوم ہوا کہ شہرسے یا ہم يك قا فلارًا اب - لوگ تفكے ما ندے ہونگے ، او ہم تم حل كرميرہ دين ، خيا بخد دونون صاحب ملخ

اوررات بھرا میرہ دیتے رہے۔

حبس سال عرب مین قحطیراً انکی عجب حالت ہوئی حب تک قحط رہا گوشت ، گھی مجھی ، غرض کوئی لذیہ چیز کھائی۔ نہایت خضوع سے دعا مین انگتے تھے ، کواسے خدا اِمحر کی امّت کومری شامتِ اعمال سے تباہ نرزا ہم الم انکے غلام کا بیان ہے کو مقط کے زمانے میں حصرت عمر کو خوکر وتر ددرہتا تھا ، اِس سے قیاس کیا جاتا تھا ، کواگر قبط رفع نہوگا تو وہ اِسی غمر مین تباہ ہوجائینگے ۔

قط کا جوانتظام حضرت عمرنے کیا تھا اُسکوم اور لکھ اُنے مین ۔ قط کا جوانتظام حضرت عمر نے کیا تھا اُسکوم اور لکھ اُنے مین ۔

ایک دفعدایک بتروُانکے پاس آیا ۱۰ ور میراشعار رٹیھے۔

باعث مر الحت برخ جبل لجب نه اسعرا بعن اگرے توجت كا معن ب

اکس جُنیّا کینے قا الهت کے ا

افنت حوالله لنفعلنَّه مذاكى متم بحم ي كنا سوكا

تصنرت عمر سنے فزایا اور مین متھا را کہنا نہ کرون تو کیا ہوگا۔ برّو۔ سنے کہا۔

نَكْوُنُ عَنَ حَالَى لْنَسْبِلِنَّهُ الْجَمْرِ عِنْ مِن مِن مِن سَبِت سوال ہوگا

وَالْعَاقِعُ الْمُسْتُولِينِ عِمَتُ نَهُ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْ رَهُ فَا سَعُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّا اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّ

امّاً اليناير تق إمّا لَجَّتُه يم ي روزن ي مون ي سنت كي طون جانا بركا

حصرت عمراس قدرروئ که وافرهی تر مولکئ بیرغلام سے کما کدمیرا یا کرته اسکو دیدے اس قت اسکے سواا در کوئی چنرمیرے پاس نہیں ہے۔

ك يتمام ويتين كنزالعال طبد منعوًه ٢٠٠ ين ستندوالون سيمنعول من سك سيروالعرب وأراته الخفاء

## 7.0 انفادوق حيبهٔ دوم يات وتربر عدل دالعاف اكب دفعه رات كونشت كرب عقم الك عورت اين الافائ يم يمي بدا شعار كارسي هي-نظاول من الميل ولن ورجانب رات الا به اور بي بوني باق ب وليس الح جنبي خليب ل الاعبه اورميت بيلومن ارنين مس سے نوش نعلى كرون اِس عورت کا شومبرحباد برگیا تھا' ا وروہ اُسکے فراق مین یہ درداُگمیزاشفارٹرھ ری مخی حضرت ۔ الرکوسخت قلق ہوا اور کہا کہ شینے زنان عرب پر بڑا فلم کیا حضرت حفضہ کے مایس آئے اور دوھا عورت کتنے ون مردکے بغیر سبرکر سکتی ہے ؟اُنھون نے کہا جا رہینے ۔صبح ہوگے سرمگر جا کھو ر کوئی ساہی جا رمینے سے زیادہ با سرنہ رہنے اے۔ سعیدین پربوع ایک صحابی تختے ، نبکی انکھین جاتی رہی تقین ، حضرت عرنے اُن سے کہا کہ ئی ممبومین کیون نہین آتے ۔ انھون نے کہا''میرے اس اُدمی نہین کرمجھکو اِستہائے'' -خصر رف ایک اُدمی مقرر کردیا در مشه انکے ساتھ ساتھ رہما تھا۔ ا کیب د فعہ لوگون کو کھا نا کھلاہیے تھے۔ ایک شخص کو د کھیا کہ ابئی بات سے کھا آ ہے

! س جا کرکماک<sup>ور</sup> داہنے !ت سے کھا وُ'' ائس نے کہا جنگ موتہ من میرا دا !ن !ت جاما !<sup>!</sup> منت عمرکو رفت ہوئی، اُسکے برا رمٹھ گئے ا ورروکر کینے لگے کدا ضوس ککو وضو کو ن کرآ امرگا؟ مركو نُن دُهلا مَا مِوكُا ؟ كيرِّك كُونُ بِينَا مَا مِوكًا ؟ ، بعيرامك نوكر مقرر كرويا اوراسك لئ مّا م خردي چنرین خود نمتیا کردین-

ك اسران تر تذكره سيدين يربوع-

## امامت اوراجتهاو

امت کامنصب و رحقیقت ، نبوّت کا ایک شایبه به اورا مام کی فطرت ، قریب قریب است کا منصب در قلیت ، قریب قریب بینمبر کی فطرت کے واقع ہوتی ہے۔ شا د ولی الله صاحب کلصتے ہیں در وازمیا نِ است جمعے مستند کہ جو ہر نفس ایشان قریب بجر ہر اِنبیا مخلوق شدہ واین جاعد در مهل فطرت ، خلفا سے نبیا اندر رُامّت ؟،

منهبى عقائدا وراحكام اگرچە يغا هرسا ده اورصا ٺ هين ، كينونكەصانع عالم كا اعتقاد - اسكى منقا اگمال کااعتراف، سزا دَجْرا کایقین، زېږوعبادت،محاسنِ اخلاق بیم چنرین تمام مزاېب کې الی الصول ورحكام من اوربيسب بغلا هرسا ده اورصاف باتين بين ، ليكن إن مسائل مين احتبا اوط ابهام اس قدرہ کا گرنهایت مکته بنی اور دقیقہ رسی سے کا م ندلیا جاسے تواُن کی حقیقت بال ا برل جاتی ہے ، یبی وجہ ہے کہ اوجود اسکے کہ یہ سائل قریباً تام مذا ہب مین شترک تھے ، تاہم کم دبیش سب مین غلطیان واقع ہومئن ' اسلام اتھی غلطیون کے مثانے کے لئے آیا اور آ نهایت اہمام اور ناکید کے ساتھ اُن پر توقبہ دلا نی لیکن جذکہ عام طبائع نکتہ سنج نبین ہومین اِس سے ہزر اسے مین اکثر ہوگ جہل حقیقت سے دُور ہوجاتے سکتے اوراسی سے ایمہ اور مجد دین کی صرورت باقی رہی کوان اسرار پریردہ نریوٹے بائے۔ مثلًا اسلام نے شرک کوکس ور شورسے بٹایالیکن عورسے دکھوتو قبرون اور مزارون کے ساتھ عوام ایک طرف، خواص کاج طرزعِل ہے اسین اب بھی کس قدر شرک کامخفی اثر موجہ دہے ،گو استفا دوعن القبورُ اور صول ب مله ازار الخفا رطبادل منفر ۹کرمبت سے تخذمین نے جمان حضرت عرکا یہ وان تاک کیا ہے وہان بیر دایت بھی اضافہ کی ہے۔

اکر دو اُسی وقت حضرت علی نے اکٹولو کا اور اُبت کیا کہ حجراسود فائڈ وارنفصان دولو اپنجابیکیا
ہے کیونکہ وہ قیاست میں لوگون کی نتبت کی شہادت دیگا ، لیکن بیاضافہ محض علطاوز اوط
ہے جیانخ نا قدین فن نے اسکی تصریح کی ہے۔

ایک فعد انفات نے ایک درخت کے نیچے لوگون سے جہا در بیعب لی بھی- اِس بنا برخیز ا متبرک مجھا جانے لگا تھا ، اورلوگ اُسکی زیارت کو آئے تھے جھنرت عمر نے یہ دیکھ کا اُسکو حبر اُ

ایک دفعه مفرج سے وابس کرے تھے۔ راست مین ایک سجر تھی ، جس مین ایک دفعہ آنحفرت نے نا زمیر ہی تھی۔ اس خیال سے لوگ کہ کی طرف دوٹرے محفرت عمر نے لوگون کو فواللب کرکے فرایا کہ اہل کیا ب، ابھی ہاتون کے برولت تباہ ہوئے کہ انفون نے اپنے بینمیرون کی یا دگارون کوعبا ڈیکا ہ نیا لیا۔

المتباتين س والدكوب نميج روايت كياب - كل والالفاحد وم مور ١١-

بى كے اوالہ افعال كما تك مند نيج تشك نعلق ريكھتے ہين کے کافاسے ہوتے ہیں تشریعی اور زہبی نمیں ہوتے۔ اس سکے کوس قدر حفرت و نے صا اور واضح کردیائسی نے نمین کیا۔ خراج گی شخص ، جزیری تعیین ، ام ولد کی خرد وزوخت وغیرہ وغیرہ اسالا کے متعلق ام شاقنی نے ابنی کی بون میں نمایت ادعا کے سابقہ احا ویٹ سے ہتدلال کیا ہے۔ اور ان مسائل میں جہان حفرت عمر کا طراق عمل محملف ہے ، بڑی دلیری سے اُن بے اقوج کی ہے۔ لیکن ام شافعی نے یہ کمتہ نظر افراز کیا کہ یہ امور مضب نبتوت سے تعلق نمین رکھتے۔ اس لیے ان سائل میں خود شائع علیہ السلام کی طرف سے بشخص کو اجتما دکی اجازت ہے۔ اس لیے ان سائل میں خود شائع علیہ السلام کی طرف سے بشخص کو اجتما دکی اجازت ہے۔ اپنے اس کیے ان سائل میں خود شائع علیہ السلام کی طرف سے بشخص کو اجتما دکی اجازت ہے۔ جانچہ اس کے تابیہ کے تابیہ کے تابیہ کے۔

. شریعیت کے احکام کے تعلق بہت بڑا اصول حوصرت عربے قایم کیا یہ تھا کہ تعربی

کے تمام احکام مصالح عقلی رمینی ہیں۔

خربی احکام کے تعلق ، شرع سے دُوخیال ہے اسے بین ایک یوکدان مین عقل کودل انہیں ، دوسرا یدکد اسکے تمام احکام ، اصواعقلی بینی بین - بین دوسراخیال ، علم اسرارالدین کی بنیا دہے ۔ یعلم گرجیاب ایک ستقل فن بن گیا ہے اور شاہ دلی الشرصاحب کی شہور کتاب عجد الشرالب اختر خاص اسی فن مین ہے۔ اہم ہرزانے مین بہت کم لوگ اس اصول کو تسلیم کرتے ہے ، جبکی دھر کوید یعمی کریر دقیق فن ، عام طبائع کی دسترس سے باہرتھا ، اور کجی میکو تری اور محتر تین اور دلدادگی کی بعبل ہرشان ہی ہے کہ ہریات ، بغیر دین وجراکے مان لی جاسے اور راسے وعقل کرکھ دفل نہ دیا جا ۔

لیکن حفزت عمراسی دوسرے اصول کے قابل تقے اور وہ سب سے بیلے شخف میں

منة عرف المنظم المراليين كي كوبا بنيا دوالي، شاه ولي الترصاحب نے حجة التداليانية مين لكها ہے كر حضرت عمر احضرت على ازيربن ابت اعبدالله بن عباس احضرت عائشه ان إس علم انجث كى اوراسكے دجوہ ظاہركئے۔

شاہ صاحب شے جن ہوگون کا نام لیا اُ آن میں عبدا سٹرین عباس کی عمر آ بخضرت کی و فات کے وقت ۱۳ برس کی ھی جھزت علی کا سِن خباب رسول اسٹر کی بعثت کے قوت ونس گیارہ برس سے زیادہ نہ تھا۔ زِیدین آبت کا بن انحضرت کی ہمرت کے وقت ۱۱رس کا تھا۔حضرت عائشۃ انخضرت کی و فات کے وقت کل ^ا برس کی تقسیس ، اس سے آبت ہواہے کو کو سیب بزرگ اِس علم کے ترقی دینے والے ہونگے، لیکن اولیت تفعیب حفنرت عربی کو حاصل موگا-

حضرت عرامسائل شربعت کی نبت ہیشہ مصالح اور وجوہ پرعور کرتے تھے اورا کر ا خیال بین کوئی مسکه خلاف عقل مترا تھا تورسول اللہ صلام سے دریافت کرتھے تھے، سفرمین **جوتفسرِ نماز کا حکم دیا گیا تھا وہ اس نبایر تھا کہ اتبداے اسلام مین ر**استے محفوظ نہ تھے اور **کا فرام**ا كى طرف سے ہمیشہ خوف كاسا مناربتا تفاخیا بخہ قرآن مجید میں خود اِسكا اثنارہ ہے لیس عَلا کُنو مناح أك نقص وامن الصّالى ذائح فتم آئ يقتنكم الني ين كفرفه اليكر جبرت مامون ہوگئے تب بھی تقر کا حکم ہاتی رہا۔ حصرت عمرکو اِسپر استعجاب ہوا اور آنحفزت سے درافیت كياكداب سفرمين، قصركون كياجاً اب إلى المضرت في فرا ياكرويه منداكا انعام على "-ك عجة الترابالذمنعية ٧- ك ميمسل، اطادية فا در الم

ججکے ارکان من رمل ایک رکن ہے بعنی طوا *ت کرتے وقت، ہیلے مین دورو*ن مین اُ ہستہ ہستہ دورتے علیتے ہیں، اسکی اتبدایون ہوئی کہ رسول اللہ صلیم، حب مرمنہ سے گھین تشرلف لائے تو کا فرون نے مشہور کیا کہ سلما ن ایسے خیف ا ور کمزور مہو گئے کہ کو بہ کا طواف بھی نہیں *رسکتے ۔انخفرت نے بیٹ نکرم*ل کا حکود آ<sup>ئ</sup> اسکے بعد یفعل ممواس ہوگیا ،چنا نخ<sub>ا</sub> کیڈارتو السكوج كى ايك صروري سنت سمحقيمن اليكن حضرت عرف صاف كما مالنا والرسَّميل الْمَاتِّنَا لِمُالْنَسْكِيْنَ وَقَالُ الْمُلَاثِمُولِ لِللهِ عَنْ يَعْنِ الْمِهُورِ لِي سَاعِ عَلَى الرسس شرکون کورعب دلانا مقصود تھا ،'سُوا کموخدا نے ہلاک کردیا'' حضرت عمرنے جبیباکہ ثناہ دلیاث باحب نے حجہ الٹلالیانغ مین لکھا ہے - <del>رمل ک</del>ے ترک کا رادہ بھی کریسا تھا لیکن محیر انخفی<sup>ت</sup> کی بادگار محبکر رہنے دیا ، عبداللہ ب<u>ن عبا</u>س حب<del>ر صفرت عمر کے خاص ترمبت</del> یا فتہ تھے ، <del>آن</del> حب كها كيا كولوك رمل كوستت سمحقيمين، توكها كدر غلط سمحقيم بن،-حضرت عرف فقد کے سائل اس کثرت سے بیان کئے بین کدایک متنقل رم طیارہوسکتاہے،ان تام مسائل مین پنھوصیت صاف نظراتی ہے کہ وہ مصالح عقلی کے کے موافق ہیں ،اسِ سے براہتۂ نابت ہو ماہے کہ حضرت عمرامِ علم<اسرارالدین ، کے متب برسے اُشا دا در ما مرتھے۔

ا خلاق سلام کا محفظ رکضا او ترقی دست منعب بالمت کے لیاف سے ، حضرت عمرکاسب سے بڑا کا زامہ جو تھا یہ تھا کہ انخفرت کے دنیاکو سے متعالمی تعقیقا سے دنیاکو سے متعملے برگزیدہ اور باکیزہ اخلاق ، کی تعلیم دی تھی اور جرا کی بعثبت کا اصلی تعصر کی اسلام سے خاری ابدار مل میں ازاز انظار مفرد مواد تھیکہ دوم اد

جبيهاكه خودارشا دفوا يالفينك لامتعرم كأبرتم للاخلاق بمفرت عمركي فيفرست قوم من وه اخلاق محفوظ رہے اور نئی قومین جواسلام مین داخل ہوتی گئین اسی اثریت متأثر موتی گئین ،-حضرت عمر بخود اسلامي اخلاق كي مجتمر تصوير لتقط ، انكا فلوص ، انقطاع إلى الله ؛ لذأ مذرنيا سے احبنا ب،حفظ نسان،حق بیستی، راست گوئی، یہ اوصا ٹ خود بخود لوگون کے دلون میں اثرا ات جاتے سکتے ،ا در مترخص حَوا نکی محبت مین رہما تھا ، کم دبیش اس قالب میں دھل عآباتھا۔ سور**ین فخرمر کا** بیان ہے کہم اِس غوض سے حضرت عمرکے ساتھ رہتے تھے کر پر ہنرگا رکی <del>دی</del>قو سیکھ جا بئین" مورّخ مسودی نے حضرت عرکے حالات اِس جلے سے مشر وع کئے ہیں گُرانین ا جوا وصاف تھے وہ انکے تمام ا فنسرون ا ورعهدہ دارون مین تھیل گئے تھے " پور مونے کے طور پر حضرت سلمان فارسی، ابوعبیدہ سعیدین عامر دغیرہ کے نام اوراً نکے ارصاف لکھیں عرب مین جواخلاتِ زسمیه، جاہلیت کی اوگا رربکئے تقے، وہنب کافیزوغ ور،عیام لوگون کی تحقیر برجو دمبر گوئی ،عشق و ہوایرتی ، بادہ نوشی ا در می رستی تحتی ، حصرت ع<sub>ر</sub>مے اِن مام ا به بوده اخلاق کا ستیصال کردیا - جوجیزین فخروغرور کی علامت تقیین بالکل مثا دمین، ارا یئون مین قبائل اپنے قبیلون کی بجئے پگا راکڑے سکتے اُسکومکماً بندکردیا ُ۔اقا اور نوکر کی جومتیز مقی ا بالكل أتما دى ايك دفعه صفوان بن اميّه في حب ببت سے مؤرز روگون كے ساتھ اك كى وعوت کی ا در نوکرون کو کھانے پرمنین مٹبا یا ، تونہایت ا فروخته ہوکرکہا کرر خدا اُن سے سجھے ا نوکرون کو حقارت کی نفرسے دعمتے ہیں ،،۔

ایک دفورہت سے لوگ اِی بن کعب سے جوارے رتبہ کے صحابی تقے کھنے گئے جب وہ

*نۇرۇدىكا* استى*عا*ل

علبرسے آتھے توا دب اور سلیم کے لئے لوگ اُن کے ساتھ ساتھ بیا ، اتفاق سے حضرت عم وهرسے آننگے ، یہ حالت دیکھکر اُ تی کے ایک کوٹرانگایا۔ انکونهایت تعب موا اور کہا خیرہے! یہ آپ کیا کرتے ہیں ؛ فرایادما تزی فِقالینہوم وَمَلا اللّٰہ ال فتنه او رابع کے لئے ذلت ہے'۔

ہجوو مرگونی کا فرربعہ شعروشاءی تھا۔شعراجا بالوگون کی ہجوین لکھتے تھے اور عزیکہ عرب بین ہجری انت شعرکورواج عام حاصل تھا ،اِس کئے یہ بجوہین نہایت حاد مشتہر موجا تی تقیین اوراً ن سے سیکر ہو مفاسد میدا ہوتے تھے،حصرت عمرتے مجو کوایک تُرم قرار دیا وراسکے لئے منزامقرر کی، جنا پخدام <u> ہی حضرت عمری اولیات مین شمار کیا جاتا ہے ، تحطیّۃ اس زما نے کا شہورتیا ء تھا۔ ور</u> سودا کی طرح فن بجومن کمال رکھا تھا ، حضرت عربے اسکوطلب کرکے ایک تہ فاشعین قید کیا اوراس سفرط پر چیوٹراکہ پھر کہوں کی ہجوہنین لکھے گا۔ انحفزت کے زمانے میرفین نے حب اور تدبیرون سے عاجز ہو کر، مسلما نون کی، اور خور انخفرت کی ثنان من ہجوین لہنی *مٹر وع کمین تو انخفزت نے بُحّیان کو تر*کی بتر کی جواب دینے کی اجازت دی تقی شیا<sup>ہا</sup> قرنش کے اسلام لانے کے بعد مجبی متداول تھے، حضرت عمر نے اپنے عهد خلانت میں حکم دبدیا کروه پڑھے پڑھائے نہامین کیزکدان سے پُرانی رُختین ازه ہوتی ہیں۔

عشق وموايرستي كالمجمى شراذرىيه مهي شعروشاع مي تقا ، شعوا زايده تررندانه اوراواشانها اشعار لکھتے تھے اوران میں اپنے مشوقون کے نام تھریج کے ساتھ لیتے تھے۔ نراق کے عام سند دارمی ماسک و سداین به تذکره زبرقان ما سک آغانی تذکره حسان بن ایت ما

الفاروق حقيرّوهم

شراغواری کی روک

. نیاءی کی

ان سب باتون کا یزمتیجه مراکه با وجود ایسکے کواس زمانے مین دولت کی کثرت ، اور قوماً کی وجہ سے عیش وعشرت کے بے انتها سامان مُتیا ہوگئے تقے تاہم لوگئے نشر میں متبلا منونے یا ہے اور جس پاک اور تقدس زندگی کی بنیا وشاع علیہ استام نے ڈوالی محتی وہ اسی استواری کے ساتھ قائم رہی۔

آنادی و یخی کی کاتمایم رکھنا

اخلاق کی نیگی اوراستواری کام بلی مرخمید، آرادی اورخودواری ہے۔ اس کئے حصرت م نے اسپر بہت توجہ کی، اور یہ وہ خصوصیت ہے جوحفرت عمر کے سوا اور خلفا کی اربخ مین نمین لمتی - بنزامیّہ تو شروع ہی سے آزادی کے وشمن نکلے بیان کک کہ عبدالملک نے تطعی حکم دید یا کہ کوئی شخص اسکے احکام برزبان نہ کھو لنے یا ئے حضرت عثمان وحصرت علی نے البتہ آزادی سے تعرض نہیں کیا لیکن اسکے حظرات کی روک تھام کرسکے جسبکی برولت حضرت عثمان کی شہا دت کی نوبت بہنجی، اور جباب امیر کو جبل وصفین کے معرکے جھیلئے بڑھے، برخلاف اسکے حضرت عمر نے نمایت اعلی درج کی آزادی قائم رکھنے کے سا تھ

حکومت کے جبروت مین ذراکی ناآنے دی۔

مختلف موقعون برتقرر وتخریسے جبا دیا کہ شخص ان کے بیٹے سے آزاد پیدا ہوا ہے، اوا او نی سے اونی ادی بھی کسی کے آگے دلیل ہو کرنین رہ سکتا عموبن العاص کے مغزر فرزند نے حب ایک قطبی کو بے وجب مارا تو خود اس قبلی کے بات سے محمع عام مین سنرا دلوائی اور عمر و بن العاص اور انکے ہیٹے کی طرف مخاطب ہو کریدا لفاظ کیے۔

مُن كَونِعَبِّلَ نَعْ النَّاسَ فَيَ قَلَ كَلْ نَهِيمُ مِن وَتِمْ وَرُون نَهِ رَمِين رَفِلام كِسِ بَالِيا وَ أَلَى الوَنْ عَ

أهمانه وأحماراً

مرائ كوازاد خبامتعاءً

عرب مین جولوگ بهت مغرز موت محقے وہ اپنے قبیایہ کے سیّر مینی آقا کہ لات محقے ، اور ان سے کم رتبہ لوگ انکوان الفاظ سے مخاطب کرتے محقی یہ تجعلنی اللّٰه فاک اعَلَٰ "بابی " ول هی " بینی خلام کوان الفاظ سے مخاطب کرتے محق یہ تجعلنی اللّٰه فاک اعَلَٰ "بابی " ول هی " بینی خلام کو اور کار کے ان ایت ایت ایت کی خلام کون ا

یجونکدان الفاظسے غلامی اور محکومی کی بواتی بھی مختلف موقعون رُوانکی سنبت اراضی ظاہر کی-ایک شخص نے خود انکی شان مین کہا تھا کہ جعلنی الله فک آء کے تو فسنسر ایا کا ذاکہ بھیڈیا ہے اللہ صنعنی اگر خدا ایسا کر گیا تو تھ کھی ڈسیل کر تگا، - حضرت عمر کے اس طریق عمل نے لوگون کو حس قدر آزادی اور صاف کوئی بردلیر کردیا تھا اسکا صبح اندازہ ذیل کے واقعات سے ہوگا۔

اکی دخه انصون نے ممبرر پڑھاکہا ، صاحبو! اگرمین دنیا کے طرت مجھک جاؤن تو

ك كترا الآل مليده منورٌ ٥٥٥-

تم لوگ کیا کروگے ؟ ایک شخص وہین کھڑا ہوگیا اور تلوار میان سے کھینچا بولاکہ تھا را سرار دنگے؟ حضرت عرف اسکے آزمانے کوڈانٹ کرکہا کہ کیا تو میری شان میں بیلفظ کہتا ہے؟ اسٹے کہا دو ہوں شان میں ایسے لوگ موجود ہیں کہ دو ہاں ہاں متھا ری شان میں "حضرت عمرت کھرنٹ دوم میں ایسے لوگ موجود ہیں کہ میں کی موجود ہیں کہ میں کی موجود ہیں کہ میں گئے تو محجا کو سیدھا کردینگے "۔

عراق کی فتح کے بعداکٹر بزرگون نے عیسائی عورتون سے شا دیان کر ہیں تھیں۔ حقظ عربے خدیفۃ بن ایمان کو کھا کہ مین اسکونا پیند کرتا ہوں، اُکھون نے جواب مین لکھا کہ یہ حکم آئی ذاتی رائے ہے ایکوئی شرعی حکم ہے ؟ حضرت عمر نے کھا کہ میری ذاتی رائے ہے صدیفۃ نے لکھ جبجا کرا کی ذاتی رائے کی بابندی ہم لوگون برصرور بنین، جنا بخہ اوج دحفرت عمر کی ما نفت کے کثرت سے لوگو ن نے شادیان کین۔ معرّج میقو تی نے کلھا ہے۔ کواکی وفعہ جب حضرت عمر نے تمام عما لون کا مال واسب نیلام کرکے، آدھا بہت المال بین المال کریا تو ایک عالی میت المال بین المال میں دخل کریا تھا تو کل بہت المال میں دخل کرنا چا ہے۔ تمام اور ہمارا تھا تو اُس مین سے مکو لینے کا کیا حق تھا ؟

معنرت عمر کی تقلیدا ورانکی تعلیم و ترمت کاند اثر ہوا کہ جاعت اسلامی کا ہرمبر ما کینے و لفننی ا نیکنوئی ، حلم و تواضع ، جررت و آزادی ، حق بیتی ، ویے نیا زی کی تصویر بئن گیا ، ماریخ کے مرجع مین اُس وقت کی مجانس اور محافل کا نقشہ دکھیے تو شخص کے حلیمین بیخط و خال معاف

نظرات بين-

مدیث و نقه کافن، درحقیقت اتمام ترحضرت عمر کا ساخته ورپداخته ب محابه مین اور

بعثماد كينت معترث ونقيه موزا را) اما دیث بنوی کو الفاطه انقل کرکے اصلاء کے کگا مرکے باس بھیجے سے حبر سے انگی اعلم اشاعت ہوجاتی بھی ، یہ حدثین اکثر ، مسائل اورا حکام کے تعلق ہوتی بھیں ۔

رم ان اعامین جولوگ فن حدیث کے ارکان سے انکو مختلف ممالک میں حدیث کی تعلیم کے ایک بھیے ، شاہ ولی اسلم صاحب لکھتے ہیں ، « بنیا بخہ فاروق عظم عبدالند بن سعود را باجمع کو فرفر شاہ وقعل بن بیار وعبدالند بن خفل ، وعمران برجھیں را بدھم وعبادہ بن ما کی فرفر شاہ وقعل بن بیار وعبدالند بن خفل ، وعمران برجھیں را بدھم وعبادہ بن ما او ابد در دا آر، را بنام و بمعاوته بن ابی سفیان کو امیر شام بود قدعن بلیغ فوشت کو از صرمیث ایشان تجاوز کھند ۔

وا بودر دا آر، را بنام و بمعاوته بن ابی سفیان کو امیر شام بود قدعن بلیغ فوشت کو از صرمیث ایشان تجاوز کھند ۔

بک دمین کشه بک دمین

اس موقع برا کید دقیق کمترخیال رکھنے کے قابل ہے، وہ یک عام خیال یہ ہے کہ حفرت عرف حدیثین روایت کین عرف حدیثین روایت کین عرفی حدیثین روایت کین خیانچ کل وہ مرفوع احا دیث جران سے بروایت بھی مروی ہیں سترسے زیادہ نہیں، خیالی بظام صیحے ہے لیکن و تع میں بیان ایک غلط نمی ہے یحورتی کے نزد کی یہ صول سلم ہے کوئی آب میں مرک ایک غلط نمی ہے یحورتی کے نزد کی یہ صول سلم ہے کوئی آب میں مرک کا کاشنے رسول اُلٹ ہے سام کا نام خد لیکن طلب ہی ہوگا کا شنے رسول اُلٹ ہے سام کا نام خد لیکن طلب ہی ہوگا کا شنے رسول اُلٹ ہے سام کا کا مرد اور و قع مین یہ اصول یا لکا عقل کے مطابق ہے، حضرت عمر نے مشلاً تمام ممالک بین کھر جیجا کووز فلان فلان چیزون پر فرض ہے اور اس حساب سے فرص ہے ، تواس خال کا محل نہیں کہ حضرت عمر فرون ہے میں اور اپنی طرف سے احکام صادر کرتے ہیں 'لامحالا اسکے ہی می ہونگے کہ اُنحفت اللہ کا انتخار نام نام کا دارات خال کا می کوئی کی اُنحفت اللہ کا دارات خال کا نام کا دارات خال کا نام کا دارات خال کا نام کا دارات خال کا دارات کا می کا دارات خال کا دارات کا می کا دارات خال کا دارات کی می ہونگے کہ اُنحفت اللہ کا دارات خالے می کا دارات خال کا علی میں می ہونگے کہ اُنحفت اللہ کا دارات خال کا دارات خال کا دارات کی درور ہے ہیں اور اپنی طرف سے احکام صادر کرتے ہیں 'لامحالا اسکے ہی می ہونگے کہ اُنحفت اللہ کا دارات خال خال کا دارات کا دارات خال کا دارات کی کا دی کا دارات خال کا دارات خال کا دارات کی درور کی کا دارات کی کا دی کی کا دی کی کا دورات کی کا دی کی کا دورات کا دورات کی کی کا دورات کا دورات کی کا دورات کی کا دورات کی کا دورات کا دورات کی کا دورات ک

، زکوٰۃ کے تتعلق یہ احکام صا در فرائے تھے، زیادہ سے زیادہ اس حمال *کا مو*قع باقی متلا ہے کرحفرت عرفے حدیث کامطلب میم نبین سمجھا اوراس کئے مکن ہے کہرسول انتدابے ا مقدار کی تعدا دکوفرض نه کها ہو- بلکه حضرت ع<sub>م</sub>نے اُسکواینی فهم کےمطابت فرص سمجیا ہین یہ احمال خوداُن اما دیث میں بھی قائر رہتا ہے جن من صحابی نے علانیہ انحضرت کا امرایا ا س اصول کی نیایر و حضرت عمر نے خطیون میں ، تخریری ہوایتون میں ، فرامین میں نام روزه جِج-زکوته- وغیره کے تعلّق حواصولی سائل بیان کئے وہ دِقیقیت انحضرت کے ہیں گو۔ائفون نے انخصرت کا نام شلیا ہو-شاه ولى الله صاحب بخرر فرما تسيم بن "بهفتم الكمضمون احا د زماین تاصل احادیث بآن موقون خلیفه قوت یا بد، یا را نیکه نوریخ . بمسرسندورمندا که ورفعا غرت صديق صيحة نشد مگرنستل حديث، دا زفاروق اغطم مِبعّت نرسيد مُرَّريب مِفنتُ صریت ۱ بن را نمی منمند دیمنی داننه که حضرت فارو ق تمام علم صدیث را اجا لاً تقویت داده والله بخود مدیث کے تعنف وہتجو، اورا ثناعت و ترویج کے تعلق، حضرت عرف حوکھ کیا ،اگر حدوہ خود بجرمتم بانثان کا م تقے لیکن ایس باب بین ' اکی ضیبات کا املی کا رنا مداکب اور خیرہے حُرانھی کے ہے، احادیث کی طرف اسوقت حرمیلان عام تھا وہ خور مخود احادیث کی اشاعت ، تعالیکر <u>جضرت ع</u>رنے ہیں جز کمتہ سنجان کمین اور چوفرق مراتب پیدا کیا اُسیرسی کی کا وندین بڑی تھی۔ سب سے سیلے اسمون نے اسپیرلحاظ کیا کہ احادث میں زیادہ قابل انتظا کہ فتم سل ازاله الخفا رصندوم صفية ٧-

ا**ما**ریثین زق م<sup>رب</sup>

کی صرتیمین بن ؟ کیزنگاگو- رسول استرکامرتول وفعل عقیدت کیشون کے لئے گنجینهٔ مرا دہے لیکن بی ظاهرب كه الأهَوَّوُ أَلْهُ هُوَرُاس نباير حضرت عرض تما مترتوجه أن احا ديث كي روايت اوانتات يرمندول كى حن سے عبادات يا معاملات يا اخلاق كے مسائل سنبط موتے تھے، جو حديثين ان مضامین سے الگ تعین م انکی روامت کے ساتھ جندان اعتبار نبین کیا۔ اسمین ایک ٹرا نکتہ یہ تھا کہ انخضرتؑ کے وہ اتوال دا فعال دہنفب رسالت سے معتق رکھتے ہن ،اور دہ جو ىشېرى تىنىت سے ہیں، اېم نملط ننونے يامين- نتاه ولى النترصاحب لکھتے ہيں ‹د باشتقارما معلوم شدكه فاروق أتمظم نظروقيق درتفريق مياناها دميث كرتبليغ شرايع ومحميل فراد ستترقبكق ا دار د· ازغیران، مصروف می ساخت، لهذا احادیث بشائل *انخصرت صلعم و احا* دیث بسنن زواید درلباس وعا دات کمترر دایت می کرد- مدو وجه، کمی انکه اینها از علق کلیفیه و تشریب به نیست بخیل کردون اتهام مام بروایت آن بجار برند معضل نتیا را زسنن زواید رئیسن مری متنبه گرود-

حضرت عمرنے اُن حدیثون کی روایت کا بھی اہمام نہیں کیا جبھین الفاظ مخصوصہ کے سائدہ عائین نقول تخیین ، حالا کہ بہت سے بزرگون کی روایتون میں طرا دفتراسی شمر کی عدینون کا ہے۔ اسکی و جرمبیا کہ شاہ ولی اللہ صاحب کھاہے یہ ہے کہ دھنرت عجم ا س بات کو مانتے تھے کہ رو وعاکے قبول وعدم قبول کا مراز خلوص و تضرع برہے نہ الفاظائر -سب ہے ٹراکام جرحفزت عرنے اس من کے معلق کیا، وہ صدیثون کی تحقیق و مقید

ك اراز انفا بعد زوم صفحة ابه السك اراز الخفار حدّ دوم صفحة ابه ا-

اور من حرح وتعدل کاایجا دکرنا تھا۔

چھا ن بن

ُ احکل ملکہ ترت مدیرہے میرحالت معے کہ حوثیر انخضرت کی طرف منسوب کردیجاتی ہے گو صیح ہنو۔اَ سکوفوراً رواج اورقبول حاصل مو**حاً باہے، اسی نبایر بیو دیون کی تمام مرفر فا**ت جادا نہوی کے مجموعہ من شال پوکئین۔ تق تبر ۔ سے آنا کیا کہ حرح و تعدل کی روک ٹوک سے تیمہ کو روک د مالیکن حسیکسی راوی کی تعدیل انکیے نرویک نابت موجاتی مقی تو بھیرا کموزمایوه پروش نبین ہوتی تھی، ایکے ساتھ- قرن اقرل کی ننبت اُتھون نے بیاعام کلیہ فایم کرلیا کسی و من صنعت كا حمال نبين موسكمًا ليكن حضرت عمراس كمته سے واقف تھے كر حوضر يضاليس بشری ہن اُن سے کوئی زانہ تنتی نہیں ہوسکتا، اِس کئے وہ اوا دیث کی جیان میں میں تام وی احمالات لمحوظ رکھتے تھے جومی تمین سے زمائدہ ابعد میں سیدا کئے ۔ایک دفعہ ابوموسلے اشعری، اُن سے لمنے آئے اور مین د فعدا شیندا ن کی طور پر کہا کہ دوالسَّلام علیکم ابوموسیٰ ما منرب، حصرت عمراً س وقت کسی کام مین مصروف سکتے اس کئے متوجہ ہنو کیے کام سے فارغ موسے توفرا ایک ابوموسی کمان من ؟ وہ آئے توکما کتم کیون وابس سکمے ؟ مفون نے کہاکہ من نے رسول اسٹر صلیم سے شنا ہے کٹین و فعہ اون فاکو، اگرا سیر بھی م*لے، تو دلیں جاؤ۔حضرت ع<sub>ر</sub>نے ذالی ہیں دوایت کا نبوت دو*، ورندمین *کا* سنرا دونگا، ابوموسیٰ اشعری <u>صحای</u>کے یا س کئے اوتیقیت حال بیان کی منیا نجہ ابوسید نے آکر شہادت دی کومین نے رسول گٹارسے بیصد خیسئی ہے، حضرت ابی می کوسیا لها که عمرا بم رسول التدکے اصحاب کو عذاب دنیا جاہتے ہو ؟ فرما یا کہیں سے ایک وہ۔

شنى اورُ مكى تصديق كرنى جابى-

فقه كايه اليه مختلف فينه سُله سے كه صبى عورت كوطلاق إبين دى جائے أسكوعترت كے زما

تك نان ونفقه اورمكان مناجات يا ننين؟ قرآن مبدين بكراً الكنفيميَّ من حبُّ لا تكنيم

عب سے نابت ہواہے کہ مکان ملنا چاہئے اور مکان کے ساتھ نفقہ فودایک زمی جزیہے فاظمہ

بنت فیس ایم صحابی تین اکو انکے شوہرنے طلاق بائن دی، وہ انضرت کے یاسکنین

الم محکونان دنفقه کاحق ہے یانہیں 'انکا بیان ہے کہ انخضرت نے فواید رنبین 'فاطمہ نے میر محکونان دنفقہ کاحق ہے یانہیں 'انکا بیان ہے کہ انخضرت نے فواید رنبین 'فاطمہ نے میر

معربيكتے بمعلوم شين اسكوحديث مادر بهي- اينين'-محبورسكتے بمعلوم شين اسكوحدیث مادر بهی- اينين'-

سَقُط كامسًا ميش آيا توحفزت عرب صما بسه مشوره كيا مغيره ن اسك علق اك

مدیث روایت کی حضرت عرنے فرمایا اگرتم سیخے ہوتوا ورکونی گواہ لاؤ چنا کچرجب محمر بن سلمہ

صرف بیش کی گئی توحفرت عربے ایئدی شهادت طلب کی اور جب بہت سے لوگو ہے ا شہادت دی توحفرت عربے فرمایا کرمحبکو تھاری تنبت برگانی زئقی لیکن مین نے مدیث کی

مسبت اينااطينان كراحا بأو

ل يه واتوتفعيل كسائة متعدد طرق سي ميم مسلم باب الاستيذان مين فركورب ملك يدوون روتين فركرة الحفا فوين

حفزت عمر کے حال بین مٰرکور مین ۱۶

حضرت عمرکوچۈنکەاس بات کایقین موگیا تھا کەردایت مین خوا دمخوا د کمینیتی موجاتی ہے س لئے روایت کے بارے بین بخت امتیاط شروع کی اسکے تعلّق اُنھون نے جو بندشین لین-آج کل لوگون کو-اُن مِرْسکل سے بقین اسکتا ہے ،اس لئے مین اس موقع پرخود کھیر نرلکھونگا ملکہ بت بڑے بڑے می تون نے جو کھے لکھا ہے اسکونقل کرکے ، تعطیٰ ترجم پر دونگا علاَمَه وْمهِي حِن سے طِهارَ انکے بعد کوئی محدث نبین گذرا ، اور حِرِ ما فطین حجر، وسنجا وی وعزه کے شیخ اشیوخ میں ، نرکرہ الحفاظ میں حضرت عرکے حالات میں تکھتے ہیں۔

كزت روس

فَالَ لِمَا اَسَابَلَ مَا عَمْرِ لِلِيَ الْعِلْفِ مِشْوْمِعِنا كُربِ عَرَهُ نَهِ بِمُكُووا قِ بِرِروا فِي الوفودشايت بُوسِكِ عُمْرَ فَ قَالَ الْأَرْبُ وَ لَ لِمُسْلِيَعَتَكُمُ وَالْوَالْعَمُ اوركما كُلُومِلُوم مِن كيون تمار ما تما ترا المون؟ هَكَرَصَةٌ كُناَ- قال وَجَع خُدُ لِكَ فَالْكَحَتِّالنُّولِينَ | *بولون نصاما باري عِنت يُرِعانيكو، فرا يارُ بان بيكن عصا*لم الْهُلْ قَرَبِيزِ لَهُمُّهِ < وَيُ كُلِّ الْهُرُّ الْ كَرُوعَ الْمُؤْلِ لَكُونِ كَا مُوامَّا النحل فلا نتص في وهم وبالاها دنين فتشغل مم الشدى كمي كم قرآن راميني من رُخي من بي - تواكمومد تون ا جَرِّحُ والفرَّاكَ فَا قَلُولَ لِرْقِ ابْدَعِي رَبِيقُ لَ أَنْهِنَالِينَا ، قَرَانَ مِن ٱلْمِيْرِينَ كُروا وررسول الله عسكم رَوْآ

وَقَلَكَانَ عَمِن وجِله عُبْطَى الصَّمَاحبَعِلَى النَّيْ عَرْت عُراس دُرت كُرُص الْأَنْعَرْت سن روات كرك تَسِمُ فِي اللهِ - بَاهُم هُو اَنْ ثَبِف لَوالرق إن المراب المناعي كرن معابكوكم ديت تق كرسول الله سع كمروات عَنَ نَبَيْهِ عِنْ صَالِمُ لِلاَمِيتِينَا عَلَ بَالاَحالِةِ ثَبِينِ الرَينِ اورَ الاَلوَّلُ صَرَفِ مِن سُنُول موكر رَاك كَ إِدرُ فِ عَنْ حِفظِ القُرْلِي \* عَنْ فَرظةَ مِن هي است عافل بنوما مِن - زط بن كب سه روايت ب الله واناسنر تَكِيكُمُ فِلما قَيْمِ فرط- قالمَ \ أروادين قاراشرك برن برجة ولا وان سنج تو وكون نه كما

کتر الله می المال المن المورد الله المورد المور

منددارمی مین قرطة بن کعب کی روایت کونقل کرکے لکھا ہے کہ مصنت عمر کامیطلب علی از است کے متعلق کامیطلب علی کانتوات کے متعلق کی روایت کی جائے ، اس سے فرالین اور سنن مقصور بنین ، شاہ ولی الشرصا حب وارمی کے قول کونقل کرکے لکھتے ہین ، میرے نزدیک ، آنحضرت کے تمال اور عادات کی حدیثین مراد ہین کیونکہ ان سے کوئی غرضِ شرعی تعلق نبین یا وہ حدیثیر میں جنکے حفظ اورضط میں کافی اہتمام نبین کیا گیا ۔

ہارے نزد کی اِن اویلات کی صرورت نہیں ۔ صفرت عمرکا مقصد خو دُاتھی کی تھیر ہے۔ معلوم ہوسکتا ہے ، مورّخ بلا ذری تعے جو محدّبِ بھی ہیں ، انسا ب الانتراف میں روایت کی ہے۔ کردوگون نے اُن سے کوئی مسلد ہو جھا تو اُکھون نے فرطایا۔

ك ازالاً النما رمنفي ابه احدة دوم-

صات وکے کرروایت کرنے کی وب لیکن حفزت عمرکی احتیاط اور دیگر صحابه کی احتیاط بین فرق تھا ، اور صحابہ صرف لاکا کے نقہ دعدم نقہ ہوئے کا لحاظ رکھتے تھے ،لیکن حضرت عمر-راوی کے نقہ ہونے کے ساتھ ہمیاس نبایرامتیا ملموظ رکھتے تھے کہ راوی نے واقعہ کی پوری تنیقت عمیمی پائنین - حضرت ئتهُ مُنْ إِسِي بنا برحصزت ابو مررة برا كثرموا خذات كئے وزچھزت ابو ہررق كے لقہوك مین- انگو بھی کلام نہ تھا۔ حضرت عمركى روك ٹوك اورضبط واحتيا واسے اگرچه بنيتي بصرور ہوا كەحدىثين كم روہت کی کئین کین حس قدرر دایت کی گئین وہ ہرشم کے اخمالات سے بے داغ تعین 'انکے بعدا گرحیه احا دیث کوبهت وسعت موگئی کسکین اعتما د اور قو**ت کا ده یا بیر نه ر با- شاه ولی امترما** نے نمایت سیج لکھا کہ درمر حنیج میے صحابہ- عُدول اندور وایت مم مقبول، وعل موجب الجنم بروايت صَدوق ازنشان ببت شود ، لازم ، امّا درميان ايخداز حديث و فعت دزين **فاروق عظم بورد، والجذيبه رون حادث شده فرق مَا**لِينَ الشَّمَافِيةِ وَالأحن ستُّ-حصرت عمرنے احادیث کے تعلق احتیاط اور تشدّ د کاجوخیال میداکیا وہ اگرجیا رداج عام نه بإسكا، ليكن محققةن صحابه من يرخيال بعار زندين راء عبدالتدر ببسعود كي مبت عام شرت ہے اور سنددار می وغیرہ میں جا باتھ ہے ہے کراحا دیت کی روایت کے ذمت اً بکے حیرے کا زنگ بدل جاتا تھا اورجب انحفزت کے انفاظ بیان کرتے تھے توکیتے جاتے تھے ک*وانخصرت نے ی*ونفط فرا یا تھا یا نیا پراسکے مثیا یہ ، یا اسکے قریب ، یا اسکے مثل ، ابو دروار سله ارازالفا رمنغت اس-

محایمن ج دل کم روت کستے سکتے

اورحصنرت امنس وبهبت برسے صحابی تحقیرانخانجمی نہی حال تھا۔اہا متنعبی کا بیان ہے کرمن عبدا لتّٰدين عمركے سائقہ مال بجررہا۔اس مرت مین اُن سے صرف ایک مدیث منی تاہتا بن قطبتہ الانصاری کی روایت ہے ک*ے عبدا لٹدین عمر مہینہ بھرمن صرف ڈو*تین حدیث رو<sub>ال</sub>ا رہے تھے، سایب بن نرمد کا قول ہے کہ مین سعد د فاص کے ساتھ کمیسے مرینہ کگیا اور آیا۔ لیکن اُنھون نے اِس مُدّت میں ایک حدیث بھی روایت منین کی مینا کی می<sup>ت</sup>ا می میام دھا اور روتاین مجیح دارمی مین برسند تفعل منتول بهن-

سندا ورروایت کے متعلق حصرت عمر نے جومقدم اصول قائم کئے، اکو، اجالاً بون بان کا ماکتا ہے۔

را) روایت کا باللفظ ہونا صرورہے۔

۲۰) محض را وی کا تقرم زا- روایت کے اعماد کے گئے کا فی نمین -

ر**سر**) خبروا صدمین مائیدی شها دت کی حاجت ہے حبکومحد ثبین کی صطلاح مین تابع ا ور انتا مرکہتے ہیں۔

(مهم) خبروا حد مهينة قابل محتب نئين موتي-

دہ ) روایت کے اعتبار مین موقع اور مل کی خصوصیات کا لحاظ شرط ہے۔

فقة كافن تمامتر صنرت عمر كاساخة ويرداخته ب، اس من كمتعلق أكى قابيت العرضة ا ورا ففنلیت کا تمام صحابه کواعترات تقامسند دارمی مین مے که خدلفیة بن ایمان سنے

ك سندوارم طبوئ مطبع نفاى كاينورا زمني ٥٣٥ م٥٠

> فڈکے تمام ملسون کے مرح، مغرت عسسراتین

علآئه موصوف نے جس چیز کوفل افراز کیا ہم اُسکوکسی قدر بطیعیل کے ساتھ آگے جب لکر کھیں گئے لیکن پہلے یہ تبا اے کہ فقہ کے جس قدر بطیعے آج اسلام مین قائم ہیں، سبکا مرجع، حضرت عمر کی ذات با برکات ہے۔ بلا دِاسلام ہیں جرمقامات فقہ کے مرکز مانے جاتے ہیں وہ یہ ہیں۔ کَم مَعْ مَلَمَ اَسِ انستاب کی وجہ یہ کہ فقہ کے ہیں وہ یہ ہیں۔ کَم مَعْ مَلَمَ مَر اَسِ انستاب کی وجہ یہ کہ فقہ کے برطے بڑے بینی خوالے بھے۔ شلا۔ کَم مُعْ لَمَ کُن خِیل کے برائے بین والے بھے۔ شلا۔ کَم مُعْ لَم کُن خِیل کے برائے بین عباس بھے۔ مرئی مُورہ وکے زیر بن تا بت، وعبداللہ بن عرب کوفہ کے حصرت علی عبداللہ بن عباس عقد۔ مرئی مُورہ وکی زیر بن تا بت، وعبداللہ بن عرب ایمن (حصرت علی کے برائی بن عباس دعم ہی کے سوا) اگر نزرگ حصرت عربی کی سحب سے مستنفید ہوئے تھے ، اور فاصل عبداللہ بن عباس وعبداللہ بنا بن عباس و عباس و عبداللہ و ان اللہ و اللہ و ان میں وہداللہ و ان میں عباس وعبداللہ و ان میں عباس وعبداللہ و ان میں عباس و عبداللہ و ان میں عباس و ان میں میں میں و ان میں عباس و ان میں میں و ان میں میں و ان میں میں و ان میں و ان میں میں و ان میں و ان میں میں و ان میں و ان

بن عمر وعبدا دیند بن سود تو این ساخته و پرداخته سختے عبدا دیند بن سود کا قرل ہے کہ عرفی ساختا ایک ساعت کا بیٹینا مین سال بھر کی عبا دت سے بہتہ جانتا ہون ، عبدا دینہ بن عباس کو صفر ایک ساعت کا بیٹینا مین سال بھر کی عبا دت سے بہتہ جانتا ہون ، عبدا دینہ بن عباس کو صفر ایک کو گوا دینے دامن تربیت میں بالا تھا۔ یہاں تک کہ لوگون کو اسپر رشک ہوتا تھا میں بھر ایک ساتھ میں خود حصرت عرب کھی کو تیا سے میں خود حصرت عرب کو تیا تی ساتھ کہا کہ آپ اس نوعم کو مهارت عرب ساتھ کیون مشرک کے ساتھ بھوا یا کہ تھا یا کہ تھے ، اسپر معبن بزرگون نے کہا کہ آپ اس نوعم کو مهارے ساتھ کیون مشرک کے فرایا دور چھا اس کے معلوم ہے ، اسپر میں کو ان کو حوا ایک مہسر ہین کیون یہ موقع نمین دیتے ، حضرت عمر نے فرایا دور چھا کہ میں اور ہما رے لڑکون کو حوا ایک مہسر ہین کیون یہ موقع نمین دیتے ، حضرت عمر نے فرایا دور چھا کہ بھول کے دولیا یا دور چھا کہ کے تا میں کہ میں مواجع ہے ۔ ان کو حوا ایک مہسر ہین کیون یہ موقع نمین دیتے ، حضرت عمر نے فرایا یہ دولیا کہ خوا یا دور چھا کہ کے تا کہ کہ کہ کہ میں کو حوا کے دولیا کہ کو تا کہ کو تا کہ کہ کو تا کہ کے تا کہ کور کے تا کہ کو تا کہ کہ کہ کو کا کہ کہ کو تا کہ کہ کہ کہ کو تا کہ کہ کا کہ کہ کو کہ کی کو کہ کے تا کہ کو تا کہ کے تا کہ کہ کہ کہ کو کو کہ کی کو کہ کے تا کہ کہ کی کو کہ کہ کی کو کہ کے کہ کو کہ کے کہ کو کہ کہ کو کہ کو کہ کو کہ کے کہ کو کہ کے کہ کو کہ کے کہ کور کا کہ کہ کہ کہ کہ کہ کہ کو کو کہ کہ کہ کہ کو کہ کہ کو کہ کے کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کو کہ کے کہ کو کہ کے کہ کو کو کہ کور کو کہ کور کو کہ کور

مسائل سے ملائے توصاف نظرائیگاکہ دونون میں اُشاداور شاگرکا تنا سہے۔ عبداللّٰد بن تم حصزت عمر کے فرزند ہی تھے۔ زید بن ابت برسون حصزت عمر کی

صبحت مین فرریا کام کرتے رہے تھے۔ امام تغبی کا بیان ہے کوعر عبدالله بن سعود- اور بر

بن ابت ابم اید دورس سے انتفادہ کرتے تھے اور اسی وجسے انکے مائل اہم

ك ستيعات في من عبدالبوازاته الخفاص في ١٩ حصرًا ول- ملك ميم بخارى سفيه ١٥ ملبوع مطبع احمري ميرتم-

ملتے مخلتے ہوتے، یہ

محدثمين كاعام بيان ہے كهرسول اللّه كے اصحاب مين تميينخف تحقيمن مرعلمفت کا مدا ریخا عسم، علی ،عبدالله بن مسعود ، ایل بن کعب ، زمیر نظامت ، ابوموسے محابه مظنِر الشورى، الم محدث كتاب الأثار مين روايت كي ب سِينَهُ وَعَمَلَ الْعِيمَ الْمِيمَ اللهِ بِهِ اللهُ علية وَسَلَو يَتِنْ لَكُ وَنَ الْفِقَة بِينْهُم عِلَيْ بُنُ الْبِطَالِبِ قَ الْجُ وَابْقِ مُوسِى عَلَيْعِكَ إِذْ قَ عَرْضِ بِاللَّهِ وَابْرَقَ سَعُوجِي العِن اصحاب رسول اللَّذِين سَهِ عِيمَةُ عَلَى تَقْدِمِ باہم سائل نفتہی*ن یکبٹ و ندا کرہ کرتے تھے علی '*ابّی-ا ورا بوموسی اشتوری ایک ساتھ'ا ورحفتر <del>'</del> عر، زمد اورا بن سعود الك سائق، صفوان بن ليم كا قول مع - لع تكن كفن في خر صالبني <u>صَل</u>ى اللهُ عليه والمُ غبغُم وعلى مَعَاجِ وَالِيَّ مُوسَى مِينَ الْخَفْرَتُ كَ زمانے مِن *عرف* جَارُ شَخْصِ فَتُوتِ عَلَى عَلَى مَعَا ذَا الْجِمُوسِي " الْمَ شَعْبِي كَامْقُولِهِ عَلَى الْعَلْمَ يُوخَنعَن عن الصَّعَار الصَّعَار الصَّعَار الصَّعَار الصَّعَار الصَّعَام الله الله الله الله الله الماء -اگرچه په پختاید، بغا هرستبعد معلوم هوتی ہے، کیونکه مزارون صحابیمین صرف مه یا ہنتیان کی تعداد، خلافِ قیاس معلوم ہوتی ہے لیکن حقیقت پیہے کربہت سے مسائل لیسے ہین جن مین صرمیت صیحے، صاف اور صرح موجود ہے اور کوئی دوسری صدیث اُسکے معارض تعبی تنین ان ما کل کے لئے فقط احادیث کاجاننا کافی ہے۔ اینکے برخلاف مبت سے

مائل نیے ہیں۔ بلکے نبیت ، حدث میں کوئی حکم تبصیری موجود نہیں۔ بلکہ قوا عدا سنباط کے

ك نتم لمنية صنوا ١٣٠٠ - ك ذكرة الفاؤعلامذ ببي ذكرا ديموسي التعرى - كل نتم أخيث صنور ١٣٨١ -

بكه اما م تق

كم عن الدال لت مغر ١١٠٠-

ٔ حدیثِ اوجیندان اِقی ناندٌ ،عبدالتّد بن عود اورا بوموسی اشعری *حضرت عمرے خاص شاگر*دون من تھے ابوروسیٰ اشعری کوحفرت عمراکٹر تحریر کے ذریوسے حدیث وفقہ کے مسائل تعلیم کرتے رہتے تھے۔ زید بن مابت بھی دصل حضرت عمرے مقلّد بھے ، شاہ ولی انٹرصاحب لکھتے ہیں وزیدین کا بت نیز دراکٹر متبع اوست ان واقعات سے معلوم ہو گا کر صحابہ ین جن لوگونکی نقہ کار واج ہوا وہ سب حصرت عمر کے ترمبت يافته تقر حصنت عمرن عسائل فقيه من مبقد ذكرا و زوص كياتها صحابيمن سي سي سي نعين کیا تھا۔ اُتھون نے آغاز اسلام ہی سے نقہ کو طلم نظر نبالیا تھا۔ <del>قرآن مجب</del>رین جوسا مُافعة تدکورمین ائین حبان ابهام مؤتاتها وه -خود رسول انتصلیم<u>سے دریا</u>فت کر<u>لیتے ت</u>ھے -او**رمیب** مک پوری شاتی نبین ہوتی تھی میں بنین کرتے تھے ، یہ بات اور صحابہ کو حاصل زبھی کیزگرائے را برکوئی تخف رسول امتٰدی خدمت مین کتنے سُننے کی جرأت نبین رکھتا تھا ، کلا لیکے مسُلہ کو جوا یک دقیق اور نهایت مختلف فیه مسئله به ۱۰ نفون شنه انخفرت سے اس قدر بار بار درما کیا کوائی ق آگئے اور فرا یا کوسورہ سناری اخیرات تیرے سئے کافی ہوسکتی ہے۔ جومسائل زیا دختکل مہوتے اُ کنوبا دو <sub>ا</sub>شت کی طور پرلکھ لیتے اور مہیشہائن برعورکیا کرتے ' وقتًا فوقاً أنكي متعلق جورات قائم هوتي أكتولمبندا ورزياده غور وفكرس إمين تعبي محواتيات کیا کرتے ، بیونھی کی میراث کی نتبت جوما دوشت لکھی تقی اور آخرا سکوموکر دیا اسکا حال شکل امام محدثے موطامین لکھا ہے ۔ قسطلانی نے مترح نجاری مین مترحوا اسے نقل کیا ہے کہ ترجی ناری میں مترجوا ایسے نقل کیا ہے کہ دا دا کی میراث کے متعلق حضرت عرف نناونمتلف رایمن قایمکین، معفز معض سائل کے

المك الآلفاضي والمتعدي على الآالفا بنفي مرحدون على منداما حسن على مولاا الم محرسفي ١٦٠ -

دیّق سائل پین دَفّاً وَقا نومن وشک رہنا تتعلقُ الكومرت وم كم كا دين ربي وركو في قطعي راس نه قائمُ رَسِكِي، سندوا مِي مرب لہ وا دا کی میراث کے متعلق اُنھون نے ایک تحریر کھی تھتی لیکن مرنے کے قریب ا سکوننگو کر مٹا دیا اورکہا کاآپ لوگ خودا سِکا فیصلہ کیجیے گان اسی کیا ب مین بیروایت بھی ہے کہ ب حصرت عمرز تمی ہوے توصی یہ کو ملاکر کہا کہ مین نے دا داکی میراث کی نسبت راے قالمُ کی تقی <sup>،</sup> اگرا ّ**ب** لوگ چ**ا**مین تواُسکوقبول کرین <sup>، حصزت غیان نے کہا آیکی راے ہلوگ قبل</sup> ر بن بہی بہتر ہے لیکن ابو کمرکی راے مانین تووہ بڑے صاحب راے تھے ، اکثر کہا کرتے تھے کوکا میں رسول اسٹیمن سکون کے متعلق کوئی تحر ترفیمبند فرما ماتے کلا آ۔ واو ىمىرات- را كىعبن ا قسام ، - سائل فعقىيەكے تتعلق اُ كوچوكدو كا وين رمتى متى اُسكے اُراغ ارہے کے لئے ذیل کی شال کا فی ہوگی، ور نہ کے بیان مین مذانے ایک فتم کے وارث کو كلاله سے تعبیر کیا ہے نیکن جونکہ قرآن محبد مین اسکی تعرف مفصل ناکو بغیین اس کئے صحابہ بن اخلات تھا کہ کلالمین کون کون ورزر داخل میں۔ حضرت عرفے حزد انحضرت سے جندا روریا ایا - سیرسلی نبین مودئی توحضرت حفصه کوایک ! وداشت کههروی کرسول انتدسے ونت زا ، پھرا بنی خلافت کے زمانے مین تام صحا بہ کو حمع کرکے اس مسلے کومیش کیا۔لیکن اِن ٹام باتون يراكاركا في سلى نبين ہوئى ا ورفرا يا كرتے بقے كەرسول الناصلىما گرمتن چيزون كى عيقت تباجاً توتحفكو دنيا ا درا فيهاسے زايده عزيز موتى خلافت كلاله رابر جيا بخدان تمام واقعات كومحرت عا دالدین بن کثیرنے صحیح صرفون کے حوالسے اپنی تعنی قرآن میں نقل کیا ہے۔ چونکه آنکے زما نے مین متومات سایت تغری سے بڑھتی ماتی متین اور تر آن دربروزر تی رُناماً آ

معنرت عرنے جن مسائل کوصحا ہر ہے مجمع مین میش کرسکے مطے کیا آنگی نقدا دکھی کم نہیں اور

نىزمات كى ميابوا

ر کون حفیر کوک حفیر

ں ماوریٹ وَاٹا مِینَ انکی یوری تفضیل لمتی ہے ش<del>اہ بقی</del> نے روامیت کی ہے کوشل جنا ہت کی كي صورت خاص مين ربيقي نے الكي تقريح بھي كي ہے) محابيمين اختلاف تھا، صفرت عرف الله الله الله عكرد بإكرمها جرين اورالضارتم بعكئ جامين حيائي متفقه محلبس مين وه مسّله بيش موا تمام صحابه شب یک را سے پراتفاق کیالیکن حضرت علی اورمعاً ذمخالف رہے ،حضرت عمرے کہا جب آپ لوگ اصحابِ مِررمورمُختلف الراسے ہین توآگے عی*ل کرکیا حال ہوگا؛غرص* ارزواج مطهرات کے فی<u>صل</u>ے پر معالمه *آمھا رکھا گیا اورا کھون نے جوفیصلہ کیا حصزت عر*نے اسی کونا فدوحا ری کردیا۔ ہی طرح <u> بنازی کی کبیرگی کنیت صحا</u>به مین بهت اختلات تقا <u>حضرت عمر نے صحاب کی محلب من</u>قد کی مبین بر بله ہوا کہ انحفزت کے اخیر معول کا بتہ لگا یا جاہے چنا نچہ در افت سنے ابت ہوا کو خبازہ کیا خیا نما زخوا مخضرت فعے پڑھی آمین کیا رنگہ برین کمی تقین "اس طرح اور مبت سے مسائل ہیں بھی ت نفصی*ل کامحل بنین*،

· تقدیے حس قدرمسائل، حصرت عرسے بروایات صحیحہ منعول ہیں اُکی تعداد کئی ہزار کے پنچیے ہے، ائنین سے تقریباً ہزارسکے ایسے ہین جونقہ کے معدم اوراہم سائل بن اوران نام مسائل من کما وجا نے اکی تقلید کی ہے۔ نتاہ ولی انٹدصاحب تکھتے ہیں '' ہمجنیں جتبدین ، در روس سائل نقۃ ' البع نربب فاروى عظم ندواين فريب منزار مسئله باشة تميناً بيصنف بن ابن ثبيته وغيروين ميها أم قول مین اور شاه ولی الله صاحب نے زکمی مردسے فقہ فارق فی رایک مقال الکھ کارا آدانفار میں شامل کردیا، ية تمام تحبث ، تدوينِ سائل كي ثينيت سے تمتی ، ليكن فن نقه كي تعلق ، حضرت عمر كا صاكار ما ك ازالة الخفار فعدُ دوم صغيرهم ٠ا ورجیزے ، انفون نے صرف بینین کیا کہ جزئیات کی مردین کی ملکہ سائل کی تفریع دہنیا ما کے اصول اور فنوا بط قرار دیے مبکوآج کل اصول فقہ کے نام سے تعبیر کیا جا سکتا ہے۔

سب سے میلامرحلہ یہ تھاکہ انخفزت سے جواقوال دافعال ننعقول ہین دو کلیّہ، مسائل کا اخذا

موسكتے مين يائين كوئى تفريق ہے - شا مولى المدمماحب سے اس عبث يرحجة التدالبالغة مين

ایک نیایت مفیدمضنون لکھا ہے حبکا خلاصہ ہیں ہے۔ کا انحفرت سے جوا نعال اورا قوال مروی

مین، اکی دُوشین مین، ایک وه جزنصب نِبوت سے تعلق رکھتے ہیں، اگی سنبت خدا کا اُٹیا ہے

كُرُ مَا انْأَكُمُ الرَّسُوُلِ فَحِنْ وَهُ وَمَا نَهَا كُوْعَنْهُ فَانْنَهُ فِي السِينِ مِيْمِهِ وَجِيْرَ مُكُور بِ وولو،

اور جس چنر*سے ژ*و کے اُس سے باز ہو ۰۰ دو َسری وہ خبکو منصب رسالت سے تعلق منیر ج<u>ائی</u>

المصمعلق حزد انحفرت نے اشا د فرمایا۔

إِيَّا إِنَا الْبَنْقُ إِنَّا اهْزَكُمْ وَبِنْحَيِّمْ فَي جِبْبِكُو فِي أَيْلِهِمْ مِنْ مَن أَدِي مِون الطيَّة ب مِن دين كي ابت يُومُ أُدون ، تواسكو

وإذا أَ عَنْكُ ونِنْبِيعِ من رائ فالمناف المنظم الوروربين الاست كيركمون ترمين الميد آدمي بون -

اسكے بعدشاہ ولی ستماحب لکھتے مین كرا مخضرت تصحب كے متعلق حركميرا شاد فراليا يا حِوا مَالَ ، انخصرت سے عا دتَّه مها در بروے نه عبا دتَّه ، یا تفاقاً واقع موئے نقب رَّا، اج باتین انخفرت نے ، فرعوماتِ عرب کے موافق بیان کسن - شالاً ام زرع کی صدمیت اور خوافہ کی صدمیت ، یاجو ہاتین کسی حز نی معلمت کے موافق افتیا کیں۔ مثلاً نشا*کشی اورا س متم کے اور سبت ہے گا* ميب دوسري تشمين داخل بين،-

شاہ ولی الندمها حب نے احادیث کے مراتب میں حوفرق تبایا اور سے کوئی مهاحب نظرہ الخابنيين كرسكتا اس تفريق مراتبكي موجد و راصل حضر عيم بن كتب تبيرا ورا حادث مين تم ن اكثر ایرها ہوگا کہ بت سے ایسے موقع میش آئے کہ خباب رسول متصلی نے کوئی کام زیامیا با یا کوئی بات اثبا فرائی تو حفرت عمرنے اسکے خلاف راسے طامر کی مشلاً میم نجاری میں ہے کرمب انخفرت نے عبدہ بن ابی کے جنازے برنماز راهنی جائے تو حفرت عمرے کما کائی، سنافق کے جنازے برنماز راحتے ہن۔ قیدیان مبرکے معاطے میں انکی راسے الکل انخفرت کی تجوزیے الگ بھتی صلح مدیمبر میں انفون نے "انخصرت کی فدمت میں عرص کیا کواس طرح وب کرکسون ملح کی جائے "ان نام شالون سے تم خود اندازه كركت موكر حصرت عمر إن إتون كومضب مبّرت سے الگ مجتے تھے، ورزا اگرا دجرد اس امرے علم کے کروہ ہاتین منصبِ سالت سے معلق کھتی تھیں 'ان مین دخل دیتے تو زرگ اُ نیا درکنار' م مم اکمو، اسلام کے دائرے سے بھی با سرمحتے - اسی فرق مراتب کے اصول پرست سی باتون میں جزئرہ۔ سے تعلق نبین رکھتی تعین اپنی را یون رعمل کیا مثلاً حعنرت ابو بکرکے زمانے کک اُتھاتِ اولا د نعنی وم نونٹر ما ین حن سے اولا دہیدا ہوجا ہے، برا برخرمدی اوزیمی جاتی متین حضرت عربے اسکو با نکار <sup>می</sup>کا انحضرت نے جُنگ بتوک میں حر سر کی تعداد فوکس ایک دنیا رتقرر کی تھی، حضرت عمر نے محتلف الو میر بختلف شرمین مقرکین انخفزت کے عہدمین، شراب کی کو ئی خاص صر تقرر نہ تھی حضرت کڑ نے اسی کورے مقررکے۔

ین طاہرہ کدان معاملات مین "انخفرت کے اقوال وافعال اگرنشر میں تیت سے ہوتے توحصرت عمر کی کیا مجال بھی کدان مین کی میٹی کرسکتے ، اور خدانخو، ستہ دوکڑا ما ہے توصیا ہوگا گروہ ایک لحذے گئے بھی مندِخلافت پُراکا بیٹیناکب گوا اکرسکتا تھا،

تصرت عمرکواس اتمازمات کی جرأت، اسوجیت مونی گرا تحفرت کے متعدد اسکام مین

حب أتفون نے دخل دیا تو انتخفرت نے اُسپزائیندیدگی تنین ظاہر کی، بلکہ متعدد معاملات

مین حصزت عمر کی راے کو اختیار فرمایا اور بعبن موقعون پر توخود ، وحی اکہی نے حصرت عمر کی را

كى تائيدى- قيديانِ مدرهاب ازواحِ مطرات - نمازر حنازهٔ منافق ان تمام معاملات مين،

وحی جوآئی وه حضرت عرکی راے کے موافق آئی۔

اِس تفریق ِ درا متیازی وجسے ، فقہ کے مسائل ریبت اثر پڑا کیونکہ بن جیرون مین است نوخت کے درات دات ہفت برسالت کی جینیت سے نہ تھے ، انہن اس بات کا موقع اقبی کا

کرز انے اور حالات موجودہ کے لحافات نئے قوانین وصنع کئے جابین مینا پنے معاملات میں

حفزت عرفے زمانے اور حالات کی عزور تون سے، بہت نئے نئے قاعدے و صنع کئے جو آج

حفی فقه مین بکیژت موحود مین ، برخلات اِسکے امام شامنی کو میان مک کدہے کہ ترتیب فوج ،

تعیینِ شعارِ تشخیص محاصل وغیرہ کے تعلق بھی وہ انخفرت کے اتوال کو تشریعی واردیتے ہیں ،اور حفزت عمر کے افعال کی نسبت تکھتے ہیں کہ رسول اللّٰہ کے ساسنے کسی کے قول و

این ارز سرک مرک افغل کی کیم صل منین-

اس تحبث کے بعد دوسرا مرحل خبراحا و دنینی ده صدیث حبکارا دی ایک سے زیاده

ا صول صدیث مین میں حدیث کے را دی ایک سے زادہ لیکن شهرت یا توا کُرکی حدسے کم ہون وہ مجی خبرا حادمین داخل سے

لیکن بربعد کی معلاح ہے ، معنرت عرکے زمانے ک اسکا وجود نہ تھا۔

خبرتھاد کے 'وابل انتجاج مونیکی مبث

نهو، کی بثبیتِ انتجاج کا نما ،بهت سے اکابراس فتم کی صرفون کویہ درجہ دیتے ہیں کا نش<u>ے واتی جم</u> ، منصوصات پراٹر برینکتا ہے بینی قرآن مجید کا کوئی حکم عام مرتو خبرا حا دسے <sub>اس</sub>کی فسیص ہوسکتی ہے ملکائے فریعے سے قرآن مجید کا حکم بھی منوخ ہوسکتا ہے۔ امام شافعی کا میں فرمب ہے - مفرت وكي نزديك، خبراحا وسع مرمو تع يراحتجاج نبين موسكتا- اسى نباير فن ملاقات اتعا ونبين خرمایری کائیا بن بن عبدالمطلب بم ترجیاب ، کے مسلون میں انھون نے عمار میں ایسوالورسی . نعری،مغیره بن شعبته، <sup>ا</sup>بی بره کعب، کی روایتون کواُسوقت یک قابل محبّ بندین قرار دیاجیه کا درًا ئيرى شها دَمِين منين گذرين، خِنا نخة نذكرة الحفاظ مين إن واقعات كوَّفضياست لكهاميم. أي نا پروہ خبراما دسے، قرآن مجید کی منسخ اتحضیص کوجا ئزندین قرار دیتے تھے، فاطمینت قلین حب زن مطلقه کی سکونت اور نفقه کے متعلّق اپنی روایت سے ، انحضرت کی صریف بیان کی تو ونکہ حضرت عمر کے نزدیک وہ حکم ، قرآن محبدی نفر سکے منالف تھا۔ فرما یا کہ ایک عورت کی روایت سے قرآن کا حکم نبین برل سکتا۔ امام نتا فنی اورانکے بم خیالون کا یا سدلال ب کوخود حضرت عمر نے بہت سے واقعات مین خبارا حاد کو قبول کیا الیکن امام صاحب نے یہ نہ خیال کیا گا سے مفرت عمر کے اصوالان رق منین آیا- حضرت عمر کا به ندمهب ہے کہ خبراعا د قابل احتجاج نبین ' نبی*ا کہ کوئی خبراحا* دھال احتجاج منین-اِن دونون صورتون مین حرفرق ہے وہ ظا ہرہے، بہت سے واقعات ایسے ہو<sup>سے</sup> ہین کہ انبین تناا کیشخص کی شا دے کا فی ہوتی ہے ، جنا بخدر دزمرُہ کے کا مون میں شخص اسی برعل رًا ہے،لیکر بعض واقعات ایسے ہتم اور نا زک ہوتے ہین خبکی نسبت ایک زوشحض کی شهراد

اغاروق حقب ودم

کا فی منین ہوسکتی، بکہ براحمال رہتا ہے کہ آنھون نے ال**فا خ**رروایت ، یا واقعہ کی کیفیت سمجھنے من غلمی کی مواغر من مروا تعدا و رمرراوی کی حالت اور تبیت مختلف وتی ہے، اورا سوجہ سے كوئى عام قاعده بنين قرار باسكتا حضرت عمرن بي شبه بهت سف مو تعون يرا خبارا ما دس استدلال کیالیکن متعد دموقعون براسکے خلات مجی کیا-اِس طریق عل سے ظاہر برتا ہے کہ وہ ا خباراحاً دمين خصوصت ِ حالات كولمح وظ ركصتے تھے ، اخباراحا دكے شعلق فقهاً ومحذَّتين مين سخت اختلات آرار ہے اور بری بڑی طویا بحثین بیدا ہوگئی ہیں الیکن جہات کم ہمنے اِن مام عبون کو د کھیا ہے حصرت عمرکے ذرہب میں جز کمتہ عنی وروقیقہ رسی یا پئی جاتی ہے اسکی نظیر کہیں نہیں ملتی لیکن اس مقع بریمینبیه کردین صرورہے کداخبارا حا دکے قبول کرنے یا نگرنے میں جھزت عمر کا جواصول تھا اسکی نیا، صرف تحقیقِ حق بھی۔ اِس زمانے کے آزاد خیالون کی طرح نفس کی بیروی مقصود نامتی أكرمس حدثت كوجا بإصيح مان ليا اورمبكوها بإغلط كهدابه كاربا كان راقياس أزحود مگير سي گرحه ما نمر در نوشتن مشيروشير فقه کی توسیع اورتهام صروریات کے لئے اسکا کافی ہونا ، قیاس پر موقوف ہے ، یا ماہرہے لہ قرآ ن مجیدا ورا حادث میں ، تمام جزئیات ندکوزنین مین ،اس کئے **حزورہے ک**وان حزئیات کے فیصلہ کرنے کے لئے قیاس شرعی سے کام لیا جاسے، اِسی صرورت سے ایر اربوبینی امام ابوطنیف ا مام الک - امام شافنی - امام احرمنبل سب قیاس کے قائل ہوئے ہین اور اٹکے مسائل کا کہا الرا ما خدقیاس ہے ،لیکن قیاس کی بنیاداول حس نے والی ووحضرت عرفاروق مین،-عام ہوگون کا خیال ہے کر قیاس کے موجد معا ذین عبل ہین ان لوگون کا اشدلال بیہے

ق*يا*س

کومب آنمفزت نے معا ذکو کمین نیجا تو ان سے استعنار فرایا کوئی مسّار پیش ایگا تو کیا کوئے انگوا انگوا کے انگوا کے ماکہ قرآنِ مِید سے جواب و ذکا اورا کر نسسر آن و عدیت میں وہ صورت ذکور نموگی و احتماد کو ذکل ایکن اس سے بواستدلال نہیں ہوسکنا کہ انکی مراد قیاس سے بھی اجتماد و تیاس کی مستحصر نہیں ، ابن خرم و دا وُد ظاہری وغیرہ سرے سے تیاس کے قائل نہتے مالا کہ احتماد کا درجِ رکھتے تھے اور سائل شرعیہ میں اجتماد کوئے سے سندداری میں بہند ذکورہ کو کھڑت ابو کم کو معمول مقا کہ جب کوئی سئلہ پیش آتا تو قرآن مجبد کی طرف رجوع کرتے ، قرآن بن وہ صوت مکور نموتی ، قوم درتے ابو کم کور نموتی ، قوم درتے ابو کہ اورائے آنفا ق اراب سے جوام قرار آیا اسکے مطابق فیصلہ کرتے ، اس سے بھی ثابت ہوتا ہے کہ حضرت ابو کم کے رائے سے جوام قرار آیا اسکے مطابق فیصلہ کرتے ، اس سے بھی ثابت ہوتا ہے کہ حضرت ابو کم کے دواب بین قرآن مجبد ۔ صدیت ، اوراجاع سے کام بیا جاتا تھا۔ تیاس کا وجود نہ تھا۔

حفرت عمرنے ابوموسیٰ اشعری کوقضا کے متعلق جو تحریجیجی امین قیاس کی مها ف ہوات کی خیا پخد سکے یہ الفاظ ہیں'۔

الْفَهَ وَاللَّهُ الْفَهَ وَاللَّهُ الْمُعَ الْمُعَ الْمَدِينَا فَعَ الْمَدَّيْنَ الْمُعَ الْمَدَّيْنَ الْمُعَ الْمُدَّيِّةِ الْمُلَانَ اللَّهُ الْمُعَ الْمُعَ الْمُعَ الْمُلَانِينَ اللَّهُ اللْمُولِ الللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُلِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللْمُلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ

ك يرديد مندواري معبوعة نفاى معنيه ١٣ ين مركور به - ك مند داري منفير ١٣٠ - ك يروايت

وارقطني من فركورب وكميموا زاله الخفا رصفي ٢٨٠-

## ا صول نقه کی کتابون مین قیاس کی یہ تعریف لکھی ہے۔

تَقَرُقِ الْفَكَرِينَ لَا تَصْلِلْ لِلْفَرَعِ لِعِيلَةِ مِنْ عَلَيْ اللَّهِ عَلِيمَ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ عَلِيلًا اللَّهُ عَلِيمًا أَمُنَّ اللَّهُ عَلِيمًا اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلِيمًا اللَّهُ عَلِيمًا اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلْمُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلِيمًا عَلَيْهِ اللَّهُ عَلِيمُ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلِيمًا عِلْمُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَّهُ عَل

العون المعلى حرائه حرائه حرائي المواجع المواجع المواجعة المواجعة

قَاعَ فَ الاهتال قالاسْبَاء سُتَقِف المامور

 اسنيا : [6] کے اصول

نہیں تمجینا جا ہے کدان ایمیٹ صراحةً وہ اصول بیان کئے تھے، اما مثافعی نے بے شہرا کم رساله لكما ب حبين ان حيندامول مضبط كئي بن الكون الم ابوصنيفه والم مالك وغيره سے ایک قاعدہ تھی صراحةً منقول نہیں۔ بلکان زرگون نے سائل کوس طرح استنباط کیا یا سأئل کے متعلق حوِّلقرر کی اُس سنتے ابت ہواہے کہ انکا اسنبا طاخوا ہ مخواہ ان ا صول کی نیا ہ ب. شَلُّا اكِ الْمَمْ نُ قُرَّان كَى اسِ أَيت كَ إِذَا فَى عَى القِلْ نَ فَاسِيْمَعُولَ لِمُ وَالْصَنُولَ. استدلال كياكة عتدى كوالم كي يحيح قرأت فاتخه كمزاجا بيئ كسى نك أن سع كعاكه بيراً بت توخط بدك ا رسے بین اُتری تنی اُنفون نے کہا کر آیت کسی بارے مین اُتری بولین حکم عام ہے ، اِس صا ت معلوم ہوا كه وه اس اصول كے قائل تھے - العِبْرَة لعمْ عمالفند لا خَصْفِها التَّهَابِيّ يىنىسىب كاخاص ہونا - مكم كى بقيم ركھيرا ترمنين كرا-اصول فقیمین امام ابرحنیفه و فیره کے جواصول مرکور ہین، وہ اِسی ستم کی صور تون شے سنبط كئے سكے مين، ورندان بزرگون سے صراحةً ية قاعد كىيىن فقولنىن -حضرت عمر كي نسبت بهارايه دعوس كأنخون في استنباط مائل كے اصول قالم كي، اسی بنا پرہے اکثر مسائل حوا تغون سے مطے کئے <del>صما ب</del>رکے مجمع میں بحث و مناظرہ کے بعد طے گئے۔ اِن وَقُعُون رِائِمُون نب حِ تِقْرِرِين كَبِين ً انكِ استقصار سے بہت سے اصول قائم ہوتے ہیں۔ اکہ سأئل مین منامقن رواتیین یا افذا ستدلال موجود ہوتے تھے اس سے انکوفیسا کرنا ٹر اتھاکہ د و نون مین سے کسِکو تر جیح دیجاہے کِسکو اسنج تعمیرا یا جاہے کسکومشوخ ، کسِکوعام تطیرا یا <sup>ہے</sup> بسكوخاص،كسكوموقت ما فاجائ كسكوموتّر، إس طرح تشنخ تحضيص ، بطبيق وغيرو كي تعلي ب

اصوا مت ائم ہو گئے ،عام طور برِفتویٰ دینے کے وقت بھی اُنکی تقریبے اکٹرکسی اصول کی طرا اشارہ یا یاجا اتحا۔ شلا ایشخص ہے آن سے اکرکہاکہ سیرے غلام کے بات کا تنے کا حکم دیجئے کیونکہ أسنے میری بی بی کا ائینه بجرا یا حبکی قمیت ۶۰ در تم بختی٬٬ فرمایا کو تھارا غلام تھا اور متھاری ہی ہینے تحرائی، اسپرات بنین کا ما جاسکتاً ، - اسسے یہ اصول شنبط ہوا کرسترفہ کے گئے یہ صرورہے کسارت کومال مسروزورمین کسی طرح کا حق نهو-ایک اورخص نے بیت المال سے کیئر ٹیرا لیا تھا <u>حصزت عرف</u> اُسکومبی اسی بنا پرهیور و یا که مبت المال مین شخف کا کچونه کچیوی ہے۔ ایک د فغه، سفرمن ایک تا لاب کے قریب اُترے، عمروبن العاص بھی سا تقریقے، اُتفون نے لوگون سے پومیا کرمیان ورندے توبا نی ننین میتے و حضرت عربے او گون کور وکدیا کہ نہ تبا آاً ''۔ اِس سے دُواصول تابت بوس ايك يكاصل اشيا اباحة بها، ذؤسر يكظ برحالت المصحم توقف اوجستو برم م م م الله نایت ایک دفعه، رمضان مین، برلی کی وجرستے اقتاب کے حقیب جانے کا دھی ہوا، حضرت عمرنے روزہ کھول میا، تھوڑی دیرکے بعداً قباب عل آیا۔ بوگ مترد دہو*ے خصر* عرف فوايا الخطائيين وقلاقتهد ما معنى معالم مندان الممنين مم إين طوت س كوت ش رحكي عقي..

ايى اوربت سى مثالين بى ئى ئى خفى جائے توان سے اصولِ فقد كے بہت سے كليات منف بط كرسكتا ہے -

حفزت عرف ففت مح وسائل بيان كمئ نين اكثر السيد مين جنين اورضحاً بن يمي يح

سله مولا امام الك - سكه مولا الم عرصني ٢٦- سكه مولا المام عرصني ١٨ -

ساندا تفاق کیا ،اورا نیمجتبدین نے انگی تقلید کی <del>- شاہ دلی انٹدصاحب</del> اپنے <sub>ا</sub>ستقرار سے سِ متر کے مسائل کی تعدا دکم وہین ایک نظر تبات میں الیکن بہت سے ایسے مسائل تھی ہن خنین دیگر صحابت اُن سے اختلات کیا۔امنین سے بعض سائل میں جن صحب بدنے اخلا*ف کیا دہی حق رمین-* نتلاً نمیمّ خباب<sup>ی</sup>۔ منع تمتع جج • طلقات ِ لمث ، وغیرہ می*ن حفرت ع*م کے اجتما دسے، دیگر صحابہ کا اجتما وزیادہ ہی معلوم ہواہے سکین اکثر مسائل میں اورخصوصاً ائن مسائل میں حرموکہ الارا رہے ہن وخِیکو تمرّن اورامو ملکی مین دخل ہے ،عمواً حصّرت عمركااجتها دنهايت نكته سنجى اورةفت نظر رميني سبح اورائهني مسائل سيحصرت عرسكالا اجتها د کا اندازہ ہوتاہے۔

منين سي معن سائل كا ذكر عم إس مقع بركرت مين-ایک بڑا معرکہ الارا رمسّائمُس کا ہے ، قرآن مجید میں ایک آیت ہے۔

وَاعْلَوُا المّا عَنِيمُن مُرْضِ سَبِي فَاتَ لِلْهِ فِي مِنْ لَهُ أَحِرِكُونَهُ كُوجِارِي رَضِين القائك اسكا بإنوان حبته مذاكيك اورغرمون كيلياورسافرين كے ليئے-

فَطِلْقُ مُوْلِ وَلِينَ كُلُفُرُ فِي وَالْمِيَّةَ الْمِنْ الْمُلِينِ إِنْ اوْرِيْمِ كِلْيْهِ اوْرْتِية دارون كالنَّه اورتيمون كالنَّه ق أبن السبيل -

اس آیت سے نابت ہوتا ہے کہ تمس میں رسول اللہ کے رشتہ دارون کا بھی حقیہے حیا پی مصرت عبدالتٰدین عباس حوصیا بمین در درباے علم ، کملات تھے ، نهایت ورکساتھ اِس آیت سے ہمنس پراستدلال کرتے تھے، <del>حصارت علی نے</del> اگر جیصلحۃ بنو ہاشم کومنس می<del>ں</del> عصت بنین دیا ۔ لیکن را سے اُن کی بھی ہی تھی کر بنو <sup>ہا ش</sup>م واقعی حقدار مہ<sup>ی</sup>،

یہ صرف حضرت علی وعبداللہ بن عباس کی اے زعمی ، بلکہ تام آبل مبتی کا اس سُلہ پر آفغا ی تعا ایر محبتدین میں سے امام تنافقی اسی سُلاکے قائل سختے اور اپنی کتا بون میں بڑے زور شورکے ساتھ اسپراشدلال کیا ہے۔

حضرت عمركي منبت لوگون كابيان ہے كه وہ قرابت داران تيمير كومطاع أخمس كاحقدار نہیں مجھتے تھے جیانی کھون نے ال مبت کو تھی تس میں سے حقتہ نہیں دیا۔ ایر بحبتہ بن سے مام ابومنیفہ بھی دوی القربی کے تمس کے قابل نہ سکتے ، اکلی رای مقی کرمبر طرح التحضرت کے ابعدد الخصرت كاحصه جابار إ-اسى طرح الخضرت كے قرابت دارون كا حصه بھي جابار إ- اب مكو عورکے ساتھ دیکینا چاہئے کہ قرآن مجبدیت کیا حکم نکتا ہے ،اور رسول اللہ کاطریق عمل کیا تھا۔ قرآن مجبید کی عبارت سے صرف اس قدر تابت ہرماہے کم مجموعی طور پر ایج گروہ جمنس كے مصرف من الكين اس سے ينهين ابت ہواكہ فرواً فرداً مرارو مين نقيم كرنا فرص ہے-قرآن مجید مین حمان <del>زرکوٰۃ</del> کے مصارف بیان کئے ہین وہان بھی بعیندا سی تتم کے الفاظ ہین -إيماالم تناث للففراع والمستركد بن والعاملين عليها والمؤلفة فأويهم في الناب وَالْعَارِعِينَ وَفِي سَيِبِلُ اللهِ قَابِ السَّيِبِلُ المِين رَكُوة كم معارت الله كروة وارديم بن <u> فقیر ٔ سکین ، زکواۃ وصول کرنے وا</u>لے <u>-مونقۃ اتفاوب ، قیدی ، قرصندا ر، مسافر ، انہن سے جبکو</u> رُكُوة دياك ا دا موحائيگي بي صرورندين كذوا و مخوا ه الطون گروه بيداكئے حامين - الكون گروه موحود تھی ہون تب تھی میں کھا فاکیا مائیگا کہ کون فرقدا سوقت زیادہ مرد کا محاج ہے، کو رکم ا اوركون بالكل نبين- اوراسي اعتبار سے كسى كوزياد و دياجاً بيگا يكسى كوكم- اوركسى كوبالكل نبين،

یہ اتنزام الایزم صرف اما م شافغی نے اختراع کیا ہے کہ اٹھ برا برجصتے کئے جا مین اورا تھوں گروہ کو صرورت ہے صرورت ہے کم وہیش تقسیم کیا جا ہے ، اسی طرح حمس کے مصارت جوخدانے بائے ، ائس سے بیعنہوم ہوتا ہے کہمنس، اِن لوگون کے سوا ، اورکسی کوندویا جاہے، بینین کہ خوا ہ مخواہ اُسکے ہاٹنج برا برحصے کئے جا میئن اور ہابخون فرقے کو را بر دیا جائے۔ اب دیکھو <del>رسول اللہ کا طا</del>ئق عل کیا تھا؟ ا خاریت وروایات کے استقرارسے جو کھٹرا بت ہواہے یہ ہے۔ را) ذوى القربي مين سے آپ هرف <del>بنو ؟ شم و منوالمطلب كوحمته دیتے تھے ، منونوفل و منوعيمس</del> حالاً کمه ذ<del>وی انقر آ</del>یمین د خل تھے،لیکن آپ نے اکمو با وحرد طلب کرنے کے بھی کوپندین دیا خیا کیم اس واقعه کوع<u>لاً مه ابن الق</u>یم ن<u>ے زاد المعا</u> دمین کت<u>ب مدیث</u> سے تبفییل نقل کیا ہے۔

ر۴) <del>بنوباتم</del> وبنو<del>آمطلب</del> کوحوحصه دیتے تھے وہب کومسا دماینهنین دیتے تھے، علامین لقیم نے زاد اماد من لکھاہے۔

وَالْكُونِ الْمُولِكُونِ الْجَنْبِينِ مِنْ الْمُنْبِينِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللّ

دت تخے۔

اغتيانَ فَيْ وَفَقُولُ فَيْ مِنْ كَانَ يُعْلِيمَهُ فِيسْمَةً الله من مرات كا عدب سے تعلیم كرتے الكيران +++ كاكان بكيرة وفي في وحبسب الله على والمرارت ك موافق عطا الصُّلِحَة وَإِلْمَاجَة فَابْرُقَاجُ مِنْهُ مِ اعْزِيقِهُم أُواتِ سَعَ مِن كنوارون كي شادى كرت عَ،

وَلَقِصَى مِنْ أَعُن عَالِيهِ مِنْ مُ كَالِيمُ فِي مِنْ مُ الْمُرْمِنَ لَا قُرْمَنَا وَا فُرَاتُ عَلَى عُوْمِون كُونَدُرُما نقيره مركفاته

ك زادالمعا وجددوم صفى ١٢١- ك زادالمعاد جلراً في صفى ١٩٢-

إن وا قعات سے اولاً تویۃ مابت ہوا ک<u>زوی القربی کے لفظ میں ب</u>قبیم نین ہے، ورنہ بنونو فل اور منوع شمس کومی انحضرت ، صبّہ دیتے کیونکہ وہ الرک بھی انحضرت کے قرا متِ وارتھے۔ دوسرے یرکه ، بنواشم ور بنوالمطلب کی تمام افراد کورمساوی طورسے حصِد نبین ملتا تھا-حضرت عمر نے جہات کے صبح روانیون سے نابت ہے، بنو ہشم اور بنوسطلب کا ح بحال رکھا ليكن وه دروبا تون مين، أن سے مخالف تھے ۔ايك يد كروه يندين سمجھے تھے كھنس كاورا يانچوان عقبہ دوی انقرالی کا حق ہے، دؤسرے یہ کروہ مسلمت اور صرورت کے لحاظ سے کم وہنت تعتبیم کرنا، منسلیغهٔ ونت کاحق تبیمنے تھے۔ برخلات اسکےعبدا سندبن عباس وغیرہ کا یہ دعویٰ تقاکر مانچوات حصد پورے کا بورا خاص ذوی القرنی کاحت ہے اورکسی کو امین کسی متم کے تصرف کاحت مال نبین <del>- قاصنی ابویوست مهاحب نے کتاب الخراج مین اور نسانی ن</del>ے اپنی صیح مین عبدالندن عباس کا یہ قول نقل کیا ہے۔

عَنْ عَلْبُهُمَا عُمْرِينَ الْحَطَابِ النَّهُ مَنْ فِيجَ مِنَ أَعْرِنْ مُعَابِ عَدِياتَ مِرْزُكُ ما سَنْ بَالْ التخمس لى بيّناً كَلْفَنْصِنْ مِينْهُ عُنْ مَغرصناً فَأَبِيبًا لا براوَن *كَنْعَ اوربق*رمنون *كاداى ومن كه معارجه ياكرن*ي ا

الآن بيسله ننا قابي ذلك عليها المغيط تينين وقق رط رواتين ميام عن الكونفورذي -

اورروایتین بھی اسی کے موافق مین مرف کلبی کی ایک روایت ہے کے حصرت ابو بگروع رف ذوی انقر بی کاحق مطلقاً سا قط کردیا تھا۔ لیک<del>ن کم</del>ی نهایت صنعیعت الرواتیہ ہے ،اس کسے اسکی روا كا عتبارنين موسكتا-

سك كتاب الخزاج منفي ١١-

۔ والن تحبیر کے فوی اور انحضرت کے طریق عل کومطبق کرکے وکمیوتو صاف ابت ہوجا ہ ا حضرت عمر نے جو کھی کیا وہ ابعل قرآن و حدیث کے مطابق تھا۔ امام تیا ضی و عیرواس اِت کا کوئی تُبوت بنين ميثِ رَسِكَ لَهُ تَخفرت مِهِ مِيهِ رِدِرا بِالجِوان حصه ديتِ سَخَى، قرآن مجديت يتعبير في خيم بالكلُّ نابت سنين موسكتي- باقى ذوى القربي كاغيرمين حقّ تواس سے مقرّت عمركو برگزانخارنتا-اب اصواع قلی کے بیا طاسے اِس مئلے کو دیکھیو، تعنی تمس مین سے انتخفرت ، اور آنخفرت کے قرابت دارون كاحصة وارياناكس اصول كي نبايرتها - ميظا سرب كراتخضرت تبليغ احكام اورمهات رسالت کے انجام دینے کی دحبتے ،معاش کی مدا ہیدین شغول نبین موسکتے تھے ،ابلیے عذور تھا لہ لمک کی امر فی مین سے کوئی حقتہ آئیے لیے مخصوص کردیا جاہے ،۱ سوقت کا اُغنیت، کے اُنقال ابس میں 7 مرنیا بھین نیا بخدان سب مین سے ضرائے ایکا مصد مقرر کیا تھا جبکا ذکر <del>قرآن م</del>جبد کی نخلف آیتون مین ہے ، اسکی شال سے جسے إشاہ کے ذاتی مصارف کیلئے خاتصہ تعرر کردیاجا تا ہے۔ و وی القربی کاحق اس لیے قرار دیا گیا تھا کو اُن لوگون نے ابتداہے اسلام میں انحضرت کا سائھ دیا تھا جنا بخرگفآر کمرنے زیادہ مجبور کیا تو تام بنو ہتم نے مبین وہ لوگ بھی شامل ستھے جو سوقت مک اسلام نبین لائے تھے انخفرت کا سائد دیا اور ب انخفرت کرسے کل کرا کم پہا کے دریے مین نیاہ گزین ہوے توسب بنی اشم بھی سائھ گئے۔ اسِ نا پر انخفرت اور ذوی القربی کے لیے جو کھیر مقررتما ، وقتی صرورت او صلحت کے كا فاسے تقاليكن يہ قوار دينا كہ قيامت كت آپ كے قرابت دارون كے ليے ، اپنجوان حقيقہ ار دیا گیا ہے۔ اور گو انکی نسل مین کسی قدر ترقی ہو، اور گووہ کتنے ہی دو متمندا وغنی ہوجا می<sup>ن کا م</sup>را نک

یہ تھ ہمیننہ متی رمیگی، ایسا قاعدہ ہے جواصول تقریبے بالک خلات ہے کوشی نقین *رسکتا*، ی کہ ایک تیا ! نی شریعت، یہ قاعدہ نبائیگا کہ اُسکی تام اولاد کے لیے قیامت کک ایک عیّن رفع لتی ہے؛ اگرکوئی اِنی نشارمت ایسا کرے تو آسین اورخود نوص برمهنون مین کیا فرق ہوگا جھنرت علی وعبدالترین عِماس جِمنس کے مرعی تقے اُ کابھی مِقصد ہرگز ننین ہوسکتا تھاکہ میرت قیامت مک کے بیے ہے، بلا حوارگ انحضرت کے زمانے کے باقی رہ گئے تھے ' اہنی کی سبت اکوا یہا وعوے ہوگا'۔ ایک اورتم بانتان مسُله فی کا ہے ، بعنی وہ زمین یا جا مُرا دحبکوسلما ن نے فتح کیا ہو۔ یہ مسُلہ اس قدر معرکہ الاراہے کہ صحابہ کے عہدسے آج کک کوئی قطعی فیصلہ نبین ہوا باغ فیرک کی ظیار شان الجن میں اس مسلے کی ایک فرع ہے۔

ِ براخلط محت ہمین اس دجہ سے ہوا کہ نے کے قریب المعنی اور جوالفاظ **سے ب**ین نفل نینیمت ابنن اوگ تفرقه ناکر سیکے مسلم اس کت کونهایت تفصیل سے لکھتے ہیں۔ حقیقت یہ ہے کو اسلام سے پہلے وب مین دستور تھا کو اُن کی فتح مین جو کھر آتا تھا۔ تمام اُر نواون كوبرا تبقسيم كرديا جآما تتعا -سردار قببله كوالتبهسب سے زماد دہین چو تھ ملتا تھا۔ انحفزت مبعوث ہوئے تو ا بتدار مین حس طرح ا ورببت می قدیم سمین فایم رمین ، یہ فاعد و بھی کسی قدر تغیر صورت کے ساتھ قايم ١٠؛ خِنا يُهْ رَا يُ كَي فَتَع مِن حَرِكِيةً ٱ تَمَا مُعَا زيون رَيْقسيم مِوجاً التَما -چِوْ كَه قديم سيسي طرتعيجا ري تقا اور جناب رسول الشركے عهد من تھي قايم را اس سيے لوگون كو منيال موگياكه ال غنميت، غازيون کا ذاتی حق ہے اوروہ اُسکے یانے کا ہرحالت مین دعولے کرسکتے میں، بیان کہ کدایک دفعہ اسپومگرا اتھا۔ خبگ برمین جب فتح عاصل ہوجکی تو کھیے لوگ کفار کا تعاقب کرتے ہوئے دو رنگ جلے گئے ا

کھے لوگ انخصرے کی خدمت میں حا صریہے۔ تعا قب کرنے والے وہیں آئے توا تھون نے دعویٰ یا کفنیت ہمارا حق ہے کیونکہ ہم رحم سے اگر اسے ہیں، اُن لوگون نے کما کہ ہم رسول اللہ کے مما فط تھے،اس کیے ہم زیا دہ حدامین اسپر بدآیت نازل ہوئی۔

ا ور رسول کی فاک ہے۔

بَسِّلُونَكَ عَنَ لَا نَفَالِ- فَكُ لِلاَنْفَالُكِيْدِ الْجَرِّ وَلَى ، الْمِنْمِة فَيْ بِتِ يَوْتِيَة بِن تركيد - كروه فادا كالتيمول-

اِس آیت نے اِس اصول کومٹا دا کہ تمام مال غنیت ارشنے والون کا خاص حق ہے اور ىنىركواسمىن كى مى تىقىرى كا اختيارىنىن لىكن <sub>ا</sub>س آيت م<del>ن مَنْيَتُكُى</del> مصارف نېين بار كىم گئے تھے ، پھر بدآ بیت اُ تری،۔

اورسکینون کے لیے اورمسا فرون کے لیے۔

عَاعْلُوكُما الْمُمَا غِيمُنْ عُرِينَ عُنِيعَ كَانَ يَتَعِينُهُ عَلَيْ إِن وَلَوْ فَاحِيرِ مَنْ مِن السّاع عَل وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْفَرْدِحِ الْدِينَا فَقِي الْكَيَابِ الْسِيهِ الْوِينْدِيرِ بِهِ اورزَتْهَ دُرُ دِن ك بِي وَامْنِ السَّبِيلِ-

ابراً ہیتے بیقاعدہ قامیم مواکہ ال غنیمت کے اپنے حصتے کیے جامین۔ ٹیا رحصّے ، مجا ہرین کو نقسیر کیے جابیئن اور بابخوین جفتے کھی<sup>ا پنج</sup> حفتے ہوک<sup>ر،</sup> انحفیرت اور ذ<mark>دی انقربی</mark> اور مساکین <sup>و</sup>غیرا ع مصارف من أمين - ليكن بيمام احكام، نقد داسباب مصتعلق تقے، زمين ادر طابرا دے يے کوئی قاعدہ ننین قرار یا یا تھا۔ غروہ نبی نفنیسر مین جرسٹ ہمین واقع ہوا۔ سورہ حشر کی: آيت آڙي-

ك زاد المعاد ابن العيم ملداً في صفحه ٥ ا- كتب مديث مين مجي يرروايت المكوري -

مَاافِلوَ اللهُ عَلَىٰ **سُولِهِ مِنْ هُلِ لِفَرَىٰ فَللَّهِ وَلِلرَّسُو**كِ لِينَ مِزِينٍ بِإِمَارٍ، ؛ ت آسےُ، دو ندا وبيغيب و

وَلِيْهُ الْقُرْبِ وَالْبَيّا فِي السَّكِلِيقِ إِمِي السَّبِيثِلِ + + مِيمِن ، اورسكينون ، اورمها فرون ، اورفعت را ر اللِفَقَاءِ الْمُقَاجِرِينَ لِنَزِينَ الْحِيْجُ الْمِنْ بَالْيِصِمُ + + + مها برين ، اور أن سب بريُون ي ہے جو آينده ونيا والزين جافامين لبيميم مین آئین۔

اس ئے نیمتحہ کلاکہ حزرمین نتح ہو دہ تھ پیمین کیجائگی، بلکطور وقعت کے محفوظ میگی،ا واسکے منافع سے تام موجوده او رَانِده سلمان تتمتع مونگے، لیہ حقیقت نفل اور عنیمت اور فنے کی۔ ان احکام مین بوگون کو حیز منا تصلے بیش آئے۔سب سے سیلے میکہ بوگون نے غینمت اور ے کواکی سمجھا 'ایمیمتبدین مین سے <del>اما مثنا عن</del>ی کی تھی رہی راے ہے اوراً نکے ندمب کے موافق ا زمین مفتوحه اسی دقت مجابرین گونسیم کردین چاہیے۔ شام دعواق حب فتح موے تو لوگوں نے اسى بنا يحصرت عميس درخواست كى كه ما لك مِفتو حه الكونفسيم كرديے جامئن خيابخه عبدالرحمٰن بن عوف، زبیرین العوام، بلال بن رباح نے سخت اصرار کیا۔ لیکن حصرت عمر نے نمانا۔ اس کیا رجبیا که بم صیغه محاصل مین لکه آئے ہین) <sup>ب</sup>ہت بڑا محبع ہوا <sup>،</sup>اور کئی دن کمنے ثین رہن آخرا عصرت عرف ایت مذکورہ بالاسے استدلال کیا اور آیت کے یوا تفاظ وَاللَّذِینَ عَجَا وُالِّنِ تعرهم فرطه والكه

عَلَّمَانَ مِلْ اللهِ عَامَلَةُ لَمِن بَجَاءَمِن الريام أيده أنبوالون كرييه- اوراس نايريالك تام

عَمِيعًا فَكَبُعُ فَا نَفْقِتُمْ مُنْ لِهِ فَي لاء قضع القسير وون اوران لوثون كومودم كردون جوا ينده يدا ہونگے۔

مَنْ كُلُف تَعِلَكُ كُمُنُور

المام شافنی ورانکے مم حیا لون کا طرا استدلال یہ ہے کو انتخفرت نے خیبر کی زمین کو مجابدين ربقيم كردياتها لبكن ووينهين خيال كرت كه خيبرك مبعدا درمقا المتصمي تونع موسيها کک کا تحضرت کے اُتھا اسے پہلے تمام وب پر قبضہ ہوجیا تھا۔ لیکن انحضرت نے کمبین جیّہ بھرجھی

اسی سلسلےمین **باغ فیرک** امعاملہ بھی ہے جومزت کک معرکہ الآرامر اجسا کیک فرقہ کاخیا ہے کہ یاغ ، خاص انخضرت کی جا کراد متی کیو کدائسر حربھائی منین ہوئی متی ، للکہ و ہان کے لوگون نے حوٰد ٔ انخضرت کوسیرد کردیا تھا اورا ہی دجہ سے وہ اِس آیت کے بخت مین داخل ہے۔

وَمَا افَاء الله عَلَى رُسُولِهِ مِنْهُمْ وَمَا الْحَفِيمَ فِي مِنْ جِرَكِمِهِ خدان الله عَلَى رُسُولِهِ مِنْهُمْ وَمَمَا الْحَفِيمَ في مِنْ جِرَكِمِهِ خدان الله عَلَى رُسُولِهِ مِنْهُمْ وَمَا الْحَفِيمَ فَرَاكُ اللهِ

رئىسلەغلى مىن تېننا غۇراللەغلى كاڭ شىنى فارىب كىلىنىكى دارىدا برمىزىر قادىپ-

عَلَيْهِ مِنْ خِيلَ وَكُلْمَ اللهِ وَكُلْقَ اللهَ لَيسَلِّطُ اونت يا كُورْب دورُ اكرنين كُوسَة ، ليكن خواني ينمير كومب

ا ورحب وه انخصرت کی ملوکه خاص پر شری تو آسین وراثت کاعا م قاعده ،جو قرآن مجبیدین ندکورہے جاری ہوگا 'اورانحضرتؓ کے ورثہ اسکے ستی ہونگے ،لیکن حضرت عمرنے ، اوجود <u>۔حضرت</u> على كے طلب وتقاضا كے آل في كواس سے محروم ركھا ؛

يحبث ارديه وفين كي طبع آزايكون من مبت برهكي بالكن هيقت يه كه بات نهایت مخصر سمی، اوراب جبکه سیاست مرن کے اُصول، زیادہ صاف اورعام فهم ہوگئے ہین

ك كتابا نواج منور ها -اس موكركا بورا حال كتاب لواج كم صغور مها وه ابين فركور سيم ما

یہ مسئلہ اس قابل بھی منین را کو بحث کے دائرہ مین لایا جائے۔ مہل یہ ہے کہ بتی ایا آم آیا اوشا ہے۔ کے قبضہ مین جو مال یا جائدا دہوتی ہے ، اسکی دروشین بین ایک ملوکہ خاص جبکے حاصل ہونے مین نبوت اور امت و با د ثنا ہت کے مفعب کو کچھ دخل بنین ہو اشکا حضرت حاصل ہونے مین نبوت اور امت و با د ثنا ہمت کے مفعب کو کچھ دخل بنین ہو اشکا حضرت داؤد آنی دائی دائر درائے ہو میں مالوکہ حکومت شکا حضرت داؤد کے تعلیم مالوکہ حکومت شکا حضرت داؤد کے تعلیم مالوکہ حکومت شکا حضرت داؤد کے تعلیم مالوکہ حدومت سکیان کے قبضے میں ہے گئے۔

اِس دوسری سم من درانت نین جاری موتی ملکه و څخف پنمیری، یا امت، یا بادتیات کے تیبت سے جانشین مزاہے دمی اُسکا مالک اِمترتی مزاہے، یو مسلدان کل کے مزاق کے موافق اِلكل اكب مرسى اِت ہے، مثلاً سلطان عبد الحميد خان كے بعد الكے عالك تعبونا إَ ٱلْكُي جِاكِيرِ فَالصِهِ َّ الْكَهِ بِيضِي عِبَائِي، ان بهن، وغيره من تقسير نبين موگل- بلكه حرِّخت نشين موگا اُسپروا بعن ہوگا۔ زہبی حثیت سے ہمی سلمانون کے ہر فرقد میں ٰ۔ یہ فا عدہ مہینیہ سُلّمرہ اِ۔ مُثلًا جولوگ اغ فدك كو درجه مدرجه٬۱ يمُه أناعته كاحت مجصته بين وه نمبي اسمين دراتت كا قاعده منين جاري ارتے۔ نتلا حضرت علی اینے زمانے مین اُسکے الک موے توینین مواکرا کی وفات کے بعد-درانت کا قاعدہ جاری ہوتا اورسیئن، وعبا مئن۔ ومحد من حنفیۂ وزینٹ وغیرہ کو حوصزت علی کے وارث سختے اسکا کھ کھ حصہ سہام کے پڑتہ سے متا ، بلکہ صرف حضرت امام صن علیہ التلام کے قبضہ بن آیا کیونکہ المت کی حثیت سے دمی حضرت علی کے حانثین تھے غرصٰ بيعام ادُمُسَكَّر قاعده ہے كەحرِجا بُدا دِينَوّت ياامات يا يادِ شامت كےمنفس

عاصل ہوتی ہے وہ ملوکۂ خاص بنین ہرتی-اب صرت یہ دکھنا ہے ک<del>ہ اغ فدک کی</del>ونکر ماصل ہواتھ ا کی کیفیت یہ سے کہ انحضرت حب خیبر کی مستحسے بھرے، توجیصہ بن مسودا نصاری کو۔ فدکر والون کے پاس تبلیغ اسلام کے لیے بھیجا، فدک ، ہودیون کے قبصنہ میں تھا ا ورا کا سردار پر <del>شم</del> ین نون ام ایک همودی تھا۔ مهودیون نے صلح کا پنیام جیجا ا درمعا وضهٔ صلح مین اُدھی زمین دینی منظور کی - اُسوقت سے یہ باغ اسلام کے قبضے مین آیا-اب ہترض میم پرسکتا ہے کہ اسپی ما 'را د ، آنحفرت کی ملوکہ خاص کیز کر رسکتی ہے۔ فدک کی الکیت ِخاص کا دعوی اس منارکیا ما اہے کہ وہ فوج کے ذربعیہ سے فتح ننین ہوا لمکہ اس آیت کا *مصداق ہے* نماا ف تبغنہ علیٰہ ویہ نے پیل کا حرکا یب *الین کیا حومالک ہفلے کے ذریع* <u> قبضے مین آتے ہیں ووامام یا یادشاہ کی ملیّت خاص قرار یا تے ہیں ؟- عرب کے اور تھا ا</u> ت بھی اسطرح قبضہ بین آئے کہ اُن رحِرُها ئی نہیں کرنی ٹری ۔ کیا اُنکوکسی نے انحفرت کی ملک خاص سمجها ؟ البته ميرا مرغورطلب ہے کرجب اورمقا مات مفترحہ کی سنبت کسی نے اس قتم کالہجی خ**يال نهين کيا' ت**وندک مين کيا خصوستت تفتی جبکی دو بسے علط نهمی پيدا سوئی ؟ - اِپکچ هيقت <del>پيٽ</del> ا ورمفتوحذ مینین علانیہ و قفنِ عام رہین ، لیکن فدک کوانحفزت نے ایے مصارف کے بیے عقام اییا تھا۔ س سے اس خیال کا موقع ملاکہ وہ انحفرت کی جائداد خاص ہے۔ اس خیال ک<sup>ی</sup>ائیا ز مایده اس سے ہوئی کہ فدک پرنشکرکشی نبین ہوئی تھتی اوراس سے اسپراور روگون کوسی قسم کا حق نین حاصل تھا۔لیکن برخیال در صل صحیح نبین۔فرک کومے شبہ آنخفرت نے اپنے ذاتی **ك ن**ترح الباران بلافرى ر نوكر فدك -

## معارف کے بیے خاص کرایا تھا، لیکن کیونکر واسکے متعلق تفصیلی رواتین موجود مین۔

فكات يضعف فك في خاليطًا لرصو للالله الله الله الله الما وما ورك الله الله الله الله الله الما والمناسب

وكان يَصْرِف مَا يَانِيهِ مِنْهَا اللَّهِ الْعِلْمِينُ السَّا وَالسَّبِينُ السَّا وَوَن يُرَمِن رَفِي عَمْ-

## ایک اورر دایت مین ہے۔

ا نتا دی کرتے تھے ۔

اتَّ قَلَ لَكُكَا مَنَ لِلنبِي صَلْعُوكُا تَعْفِي أَي نِفِي لَا يَنْ نَدَلَ الْمَفْرِة كَا مَا - آبِ اسين سے فرح كرتے ہے - او مِنْهَا فَيَكُلُ وَلَعُودُ عَلَىٰ فَقُراءِ بَنِي هَاكِمُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّ فيزوج المهوط

. نحاری دغیره مین برتصریج نزکو ہے کہ انحضرت سال بھرکا بنا خرچ اسین سے لیتے سکتے۔ اقی عامسلمین کےمصالح مین دیدیتے تھے۔

ان روایتون سے ظامر تو باہے کہ فدک کا مملوکر نبوت ہونا اییا ہی تھا جییا سلاطین کیلیے لوئی مائداد خانصه کردی جاتی ہے اس بنا پر اوجود مخصوص ہونے کے **وقف ک**ی حیثیت اُسے زایل بنین ہوئی۔

اب يه د كمينا كم معفرت عمر بمي إن اصول سے وا قعف تحقي اوراسي بنايرانون نے فدک من وراثت بنین ماری کی یا یرکدیز کات بعدا لوقوع بن ؟-

عراق وشام کی فتے کے وقت حصرت عمر نے صما بسکے مجبع عام میں جو تقریر کی کتی اس میں قرآن مبيركي إس آيت سے مَا أَفَاءَ اللهِ مِعَلَىٰ رَسُولُهِ مِنَ اهلِ الفرُّ مِنْ فِيلَّهِ أَلْحُ اسْلِال

مل منوح الدران بلادري مفروو ملك منوح البدان صفرة اس

رکے صاف کہدیا تھا کہ مقاات مفتو حکسی خاص شخص کی ملک نہیں میں بلکہ وقف عام ہیں ، ینا یخه فنے کے ذکرمن بیحبث گذر کی ہے ،البتہ یشبہ موسکتا ہے کہ اس آیت سے پہلے دائیے، س سے فدک وغیرہ کا انحفزت کی خاص جائداد ہونا ابت ہواہے، اور فرد حصرت عمر ایکے ہی معنی قرار دیتے تھے ، آیت یہ ہے۔

وما افاء الله على رسوله منهم وهما أوحقتم او روكي إن اوكون سے ريني بود بي نفير سے) فرائے اب جيروايتاب سلطاردتاب-

عَلَيْ أَتِيمِنْ خَيْلُ وَلَا مِن كَا جُ لَكِنَ اللَّهُ كَيْسَلِّكُمْ إِنْهِ مِهِ رَا اللَّهُ مِينِ فِي اللَّهُ كَيْسَالِكُمْ النَّهِ مِينِ فِرَاكُو مُ سَلَّهُ عَلَى مِنْ لِيَتُنَّاءُ -

جنا يذ صنرت عرف إس أيت كوره مركها تما كذفكامت خالصة لرسول الله صك الله عَلَيْدِ وَسَلْفَاوريه دا قع**مي**ح نجاري - باب منس ، اور <del>باب المنازي ، اورباب الميرات</del> مين تبغييل نرکورے۔

اسين شبهنين كدهفرت عماس اتت كي نباير فدك دغيره كوالحفزت كا فالصد مجمعة تقريكين اُسی تنم کا خانصہ جو ذاتی ملکیت نہیں ہو ہاجسطرح سلاطین کے مصارت کے بیے کوئی زمین خاص ردیجاتی ہے کہ ہمین میرات کا عام قاعد و نبین جاری ہونا بلکہ چنجف جانشیں سلطنت ہوتا ہے ننا وہی اس سے تمتع موسکتا ہے۔ح**صرت ع**رکے اِس خیال کاقطعی ثبوت یہ ہے کہ انھون منے <del>۔</del> حب آیت ندکورهٔ بالای بنایرفدک کو انخفرت کا خانصه کها توساتمهی یا انفاظ فرائے مبیا که میمیخ کاری باب کمنس و باب المغازی مین مذکورہے۔

فَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ مِنْ فَقِي عَلَىٰ الْهَيْلِهِ نَعَعَتُ أَنْ مَنْتِ-اس مِن سَال بِرَا فِن لَيْتِ مَ الْ

سَنَتِهِ عُرِينُ هٰ ذَاللَال تُعمِاحٰ لهُ مَا بَعَى فَيْجِعَكُم اللهُ اللهُ عَلَى عُورِيرَ فِي كرت مَنْ المُخال تَجْعَلَ مَالِل لللهِ فَعَل رَسُول اللهِ يِلْ لِكَ حَيَانْ ابِي بِعَل زواء بيرو فات بِين تو ابو برف كما كمين تعتوفى الله نبيه صلى لله عليدوسكم فقال ان كا مانشين بون بس أسير مبندك اوراي مع ابوبكرانًا وَلَيْ رَسُولِ لِللهِ فَقَبَضَهَا ابُوبكِرِفَعَيلَ كاردان كى صِطعي رسولَ الله رَت عق بميسر فِيْهَا إِمَا عَمِلَ رَسُولُ لللهِ- + فِيمَ تَوفِي الله الأبكر النون نے وفات یائ روس الو كركام انستين عُکُمْتِ اَنَاوِلِیّ اَبِیْ بُرِفِقَبَطْتُهُما سنتان مِزِاعَادِتِی ایوایس بین سنے اسٹس برور رس تعبنہ اعمل فَهُمَا بِمَاعِل رسول الله صِلَّ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ على مرسول النَّاصلام عَلَيْهُ وَسَلَّو وَبِمَا عَمِلَ فِيهَا أَبُوبَكُرُ- رَدِية

اس تقریب مها من فلا برب كرحفزت عمر با وجود اسك كه فدك وغیره كو فا نعب جمعتے ستے ا اہم آنحفنرت کی ذاتی جا مُزا دہنیں سمجھتے تھتے حب مین وراثت جاری ہو)اوراسوم سے اسکے قبصنہ كامستحق عرب أسكو قرارد تيسمقي جررسول الندكا وإنشين مواجيا نجرهفرت ابومكرا درخود اپنج قبعنه کی وجہیں تبائی۔

حضرت عرف ية نقررا يُسوقت فرائي تعتى حب حضرت عياس ورحفزت على انكے إس فدك کے دعوبدا رمبوکرآئے تھے اورائخون نے کہدا تھا کہ اسمین وراثت کا قاعدہ ننین جاری ہوگٹا حاصل ہے کہ حضرت عمرے نزدیک ۔ فدک وغیرہ انخفزت کے خالصہ بھی تھے اور وقف بجی تھے ینا <u>جنوا</u> ق کی فتح کے وقت ،حفرت عمرنے اُسی آیت کوصرسے انخفرت کا فالعبہ ہزمایا جا ہے بڑھکر یا دفاظ کے فیال ہ عَامَةً فی القُرای کا بھتا مینی حِم اِس ائیت مین ہے وہ امنی موا منع (فدک وغیره) برمحدودسین بکه تام آبویون کوشامل ،-

ان دا قات سے تم ا زازہ کرسکتے ہوکوائن سائل کوجوا تبدارسے آج کم موکد آراریہ این اور جنین بڑے بڑے اکا برمعا بر کو آستبا م ہوا ، حفزت عُرنے کس خوبی سے طے کیا کو ایک طرف تو قرآن و صدیت کا میجے محل و ہی ہوسکتا ہے اور دوسری طرف اصولِ سلطنت و نظام تمرّن سے اِلکل مطالبتت رکھتا ہے۔

ذاتی مالات

191

اخلاق وعادات

عرب مین رومانی ترمبت کا آغاز اگر دیا سلام سے ہوا الیکن اسلام سے پہلے بھی اہلِ ہوا مین بہت سے ایسے اوصاف یائے جاتے تھے جو تمغاے شرافت تھے اور جن پر ہر قوم اہز انتا

كمك زا والموا ومنغيسه اطبدودم-

مین از کرکتی ہے - یہ اوصاف اگر دیگر دبیش، تام قدم میں بائے جائے سے لیل بعض بعض انتخاص ازادہ ممتاز ہوتے تھے اور ہی بوگ، قوم سے ریاست و مکوت کا منصب حاصل کرتے تھے، ان اوصاف مین فضاحت و بلاغت، قوت تقریبی نشاع ی، نشابی بیسگری، بها دری آزادی، ان اوصاف مین فضاحت و بلاغت، قوت تقریبی نشاع ی، نشابی بیسگری، بها دری آزادی، مقدم جیز بین تعین ، اور ریاست وا فسری مین المنی اوصاف کا بیا فاکیا جا استا حضرت محکود قدر شام ایست میں کا فی حصد دیا تھا۔

تقریرکا مکد مندا دا د تھا اور عکا فاکے معرکون نے اسکوا درزیا دہ جلا دیری تھی۔ بہی فالمیت معی جبی و باتھا جو اُن لوگون کے سیے بخصوص تھا جو سے زیادہ زبان آورہو تے سے ۔ اُن کے معمولی حبلون مین اُر میری کا افزاور مجل فقرے جو اُنکے منوسے کل جا تی ایک باغت کی روح پائی جاتی ہے۔ عرب معدم آری کو جب فقرے جو اُنکے منوسے کل جاتے ہے این بلاغت کی روح پائی جاتی ہے۔ عرب معدم آری کو جب سیار کی کیا توجو ککہ دہ غیر معمولی تن قوش کے آدی سے ایس سے متحدر ہو کر کہا" استدا ایسکا اور ممارا فنا لئے ایک جاتھ ہی ہے ، مطلب یہ کہا ور محمار اور امین ایس قدر تفا وت ہے کہ دو نو الی کے کام بنین علوم ہوتے۔

وبا کے داقعہ میں ابو عبیدہ نے حب اس براعترامن کیا کائٹ تعنای اتبی سے بھاگتے ہمیں ہو کس قدر بلیخ تعنان میں جواب دیا گڑاں قصای انہی سے تعنا سے اتبی کی طرف بھا گیا ہوں '' خماعت وقترن میں جو خطبے اُنعون نے دیے دہ آج بھی موجود ہیں ان سے اُنکے زورِ تقررور جربگی کلام کا اندازہ ہوسکتا ہے۔ مسندِ خلافت پر بھٹنے کے سائھ جو خطبہ دیا 'اُسکے ابتدائی فقر سے م

قرت نقربر

نطب

الله مَعَ إِنْ عَلِيْظُ فَلَيْنِي اللّهُ عَلِيْفِ فَيعِيْفُ اللهُ عَلَيْ فَعَلَوت و مَ اللّهُ مَعَ اللّهُ عَلَي فَعَلَمُ وَمِن مُورِمِن مُعَلَوق و و مَ اللّهُ عَلَيْ فَعَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّ

خلافت کے دوسرے تیسرے دن حب اُنفون نے واق برنشاکشی کرنے کے لئے لوگون کو حمیع کیا تولوگ ایران کے 'ا مسے جی ٹر ات تھے خصوصاً اس دھی*ے کہ حضر*ت حن الد ر د ن سے بلالیے گئے تھے ،اس موقع رحصرت عرکے زور رتقرر کا اثر تھا کٹنٹی شیبا نی کم منه وربها درب اختیاراً تله کفرا مواا در بعیرتا م محبع من اُلسی لگ گئی و شق کے سفر من جابیہ مین ہرتوم اور ہرتت کے آدمی حمیع تھے، عیسائیون کالار ڈنشپ ٹک شریک تھا، اُسکے سا تونیلھ نرمب، اوزمتلف قوم کے آدمی شرک تھے اور نحتلف معنامین اور نمتلف مطالب کا دا کراتھا سلما نون كواخلاق كى تعسيم دېنى تى، غير قومون كوا سلام كى تقيقت اورا سلام كى خبك صلح کے اغلاص تبانے تھے، فوج کے سامنے ، فاکد کی معز دلی کا عذر کرنا تھا، اِن تمام مطالب کو اس خوبی سے اواکیا کورٹ کا بھی تقریر کے حبتہ حب تہ فقر سے بوگون کی زانون پر ہے . فقہا۔ نے اُسے فقری مسائل اشنبا **و**کئے۔ اہل دب نے قوا عد فعیاحت و ملاعت ک<sup>ا تہ</sup>این مداکین ، تفیون وافلاق کے معنامین لکھنے والون نے اینا کا م لیا-- نئے۔ ستامیمین جب جے کیاا ور اکا اخیر جے تھا ، توایک شخفی سے نذکرہ کیا۔ کہ عُرُمرہا تومین طلحہ کے بات رہبت کرونگا ،حفزت عمر مقام منی مین تشریف رکھتے تھے اور وہن میر قبعہ

ا پیش آیا ۱۰ س وا تعه کی خبر سولی تو برا فروخته موکر فرایا که آج رات کومین اس صفحون برخطیه د وگا

عبدالرحمن بن عوت نے وصل کی که امیرالمونین! جے کے محبومین ہوتھ کے برے مصلے آ دی جبع ہوتے ہیں ، اگرآپ نے بیان تقرر کی تواکٹرلوگ محیج پیرا بیٹر مبین سُکے اور نہا داکر سکیں سگے <del>، مرینیم آ</del>گ خواص کے مجبع مین تقریر تیجیے، وہ لوگ! ت کا ہر بہار سمجے سکتے ہیں ، حصرت عمر نے یہ راسے تسلیم کی، آخر ذی الح<sub>جه</sub> مین مربنیه این میمویک دن لوگ بیس شوق وا تنفا رسی سجد مین سیلے سے آاکر حمیم ہوسے عنرة عبدالندن عباس زیاده نشتاق تقی اس کے مرکے قریب جاکومیٹیے اور سعیدین زیر سے مخاطب ہوکرکما کہ وکج عمرایسی نقرر کرنیگے کہ جی نہیں کی متی سیست نے بعثی سے کما کہ ایسی نمی ا بات کیا ہوسکتی ہے جو انھون نے پیلے ننین کہی ؟ غرص ا ذان ہو کی تو حضرت عمر نے خطبہ دیا، یہ بورا وا تعدا وربوراخطبہ صیم نجارتی میں مٰرکو ہے ، اسمین سقیفہ نبی ساعدہ کے وا قعہ، ا نضا رسکے خیالات، حضرت ابو کم کے جواب، معیت کی تعنیت، خلافت کی حقیقت اکو ا سنوبی اورعمر کی سے اداکیا کہ اس سے بڑھکز امکن تھا۔ اس تقریر کو بڑھکر بالکاف میشن موجا تاہے کواسوقت جو کھرموا وہی ہونا چاہئے تھااور وہی ہوسکتا تھا، جن مجمون من غير قومين تمي شرك ، وقي حين أن من أبح خطبه كا ترجم يمي ساتيا ية بوّاجاً ما تما ، جِنا كِنه دمنق مين مِقام مِا بِيهِ وِخطبه «يا-مترقم-سائة كسائم أسكاتر مبه تحيي كرماجا ماتعانه اگر دیا کثر رجل وربرحبته خطبه ویتے متنے میکن موکے کے دوخطیے ہوتے تنے اپن طبار ہو کوما او تھے۔ سفیفنی ساعده کے داقعہ میں خود اُنیا بیان ہے کورمین خوب مکیا رہو کرکیا تھا ،،۔ كم ميم كارى ملددوم ملبوته لملي احدى ميرتشونني ١٠٠٩ سكك ازالّانغا رصني ٥١٠١ حدة وم -

حفنرت عنمان حب خلیفه موت او خلبه دینے کے لئے منبر برج بیت تودفع اگرکے گئے اور زبان نے یاری نه دی، اُسوقت یہ عذر کیا که دا بو کمروغ خطبہ کے لئے طیبار ہو کر اُستے مقعے اور آیندہ سے مین بھی ایسا ہی کرؤگا"۔

نوم کاخطانظ منور بیکتے تقے وه اگرچه برنتم کے معنامین برخطبہ دیسکتے تھے لیکن انکا خودبیان ہے کو اسکا تھا ہی خطبہ میں بہتر کے معنامین برخطبہ دیسکتے تھے لیکن انکا خودبیان ہے کو ان نامنل تھا ہی خطبہ میں بہتر کی اس معذوری کی وجہ وجی، اُنے کہا وہ کی خطبہ بی خطب کے خطبہ بی خطب کی میں میں بہتر کی جائے ہے خطبہ کی کوئی متماز حالت نہیں ہوتی بجلات ہے عام خطبون میں خطبہ وجہ برج برخیا ہے تو تام اوجی اُسکو محکوم معلوم ہوتے ہیں اور عام خطبون میں خود بحز دائسکی تقریبین لمبندی اور زور آ جا اہے " لیکن ہارے نزد کیا ہمی وجہ ہے کہ خطبہ میں مومنوع سے خود بحز دائسکی تقریبین لمبندی اور زور آ جا اہے " لیکن ہارہ ہی محمولی باتمین وجہ ہے کہ خطبہ میں مومنوع سے خود بحز اُن کی اور خود ود 'ہوتا ہے اور مربار وہی معمولی باتمین وجہ ہے کہ خطبہ میں مومنوع سے خود ہوتا ہے اور مربار وہی معمولی باتمین کی دور بہتر ہے اور مربار وہی معمولی باتمین کی دور بہتر ہی ہی دور ہوتا ہے اور مربار وہی معمولی باتمین کر بی ہیں۔

یہ بات لحاظ کے قابل ہے کہ حفرت عمرے پہلے جن مضامین پرلوگ خطبے دیتے سکتے وہ پند و موغلت ، فخر و اِ تر عا، قدرتی واقعات کا بیان ، لیخ و خوشی کا اظهار ، ہو است الله کم کرتہ بچے معاطلت ' خطبے میں نہیں اوا ہو سکتے تھے ، حصرت عمر پہلے شخص ہیں جس سے پولٹیگل خطبے دکئے ۔ اسکے ساتھ وہ خطبون میں اس طریقے سے گفتگو کرسکتے تھے کہ کھا ہرمین معولی المین ہوتی تھیں لیکن اُس سے مہت سے پہلو کھتے تھے۔

ك تناب البيان والنبيين للجاخط مطبوعة مصر مفرَّرة -

وللترطب

طلبے کے گئے حوالین درکار رمن

خطبہ کے گئے ملکہ تقریر کے علاوہ ،اورعارضی باتمین جودر کا رہیں ،حفرت عمر من سب موجود تقین، آوازلمبندا ورُرِیُرعب تعی، قدآبنا لمبند تھاکذرمین پر کھڑے ہوئے تھے تومعلوم واتھاکہ مبرر کھڑے ہیں- اس موقع پرہم مناسب سمجھتے ہیں کا تکے بعض خطنے قل کردئے عامين-ايك ترقع يُرعمّال كومخاطب كرك جوفظه ديا أسكه يوالفاظ مين-إِنِّي كَا آجِلُ هٰ ذَاللَّا لَ مُصْلِحُ هَ الاخلالُ ثَلثُ - اَن يُونُغَذَ بِالْحَقِّ وَيُعْظَ بِالْحَقّ وَيَنعَ مِنَ الْبَاطِل وَلَسْتُ اَدَعُ احدً ايَظْلِمُ إَحَارًا احَتَّى اَضَعَ خَلَّ هِ عَلَكُمْ ضِ وَاضَعَ قَلَ مِنْ عَلَى خَلَّ هِ ٱلْاخْرَجَتِّى بِلَعَنَ الْحِق - يَا أَيُّهُ النَّاسُ إِنَّ اللَّهُ عَظَّمَ حَعَتُّ ا ونَ حَقَّ خَلْقِه فَعَالَ فِيمَاعَظُمُ مِنْ حَقَّه وَلا يَا مُؤكُّمُ أَنْ تَتَّخِذُ الملككة آرْبَالا ٱلْأَوَانِيِّ لَوْ انْعَثَلُواْ مَرَاءً وَلَاجَبَّارِينَ وَلَكِنَ بَعَثْتُكُوْ أَثَمَّةً الْهُلْ يَ فَيُتَلَى بَكُوْرَكَا تَغَلِقُوا الابوابُ دُونَهُ وَيَكُاكُلُ قَوِيُّهُ وَالْعَبْمُ اک اورخطیے کے میند جلے مین --قَلْ أَصَرُ اللهُ دينَاء فَكَرْ تُصِبِح فَأَنْتُمْ مِسْتَخُهُ لَغُونَ فِي أَلَا رُضِ قَاهِمُ ونَ يِا هُلِهَا ٱمَّةً مُخَالِغَةً لِهِ يُسْكِمُ إِلَّا امَّنَانِ \_ امَّةً مُسْتَعْبِكَ ۚ لِلإِسْلامِ واهله - يَتَجِيِّ وَنَ لَكُمْ-عَلَيْهِ وَالمُونِهُ وَلَكُو النَّفَعَةُ وَأُمَّةُ مَنْتَظِمُ وَنَ وَخَالِنَعَ اللهِ وسطواتِهِ فِي كُلِيَوْمِ وَكَيْلَةٍ قِلْ مَلَاءَاهُهُ قُلُوبَهُ وَمُعَالَةً لَلْهُ مُنْعُلُونُ مُنْ فَكُونُهُ اللَّهِ وَمُزَلَت بساحته ومع

ب فَاهَةِ العيش وَاسْتِغَاضَةِ المال وَتَتَا بُعِ البُعُونِ وَسَدِّ النُّعُورِ الْخ

ملك تاب لخراج منور ، ٧- سك ازالة الخفار ما خوذ از ما يخ طرى -

صرت عمرك خطبون كاخاتم مهنيه، إن فقرون برمة الحقا- الله تعريز تالعنى في عَمِيَّةٍ وَلَا نَاخِذُ نِي عَلَى غِنَّةٍ وَلَا تَجِعِلَنِي مَعِ الْعَافِلِينَ -

قوت الفرريك سائة تحريمين عبى ألموكمال تقاء الكي فرامين ، خطوط ، دستور العل ، توقيعات التي ترتب توري ہر می کی خررین آج موجو دہین ، جو کتر برجس صفهون بیہ اُس باب بین بے نظیرہے ، جنا پخیا م معض معض مخررين نقل كرتي بن-ابوموسے استعری کے نام-

آمَّابَعِدُ فِإِنَّ لِلِنَاسِ نَفَى مَّ عَنْ سُلُطَانِهِ مِفَاعُودُ بِاللهِ آنْ مَلْ كَنِي وَايَّاك عَمْياء هِمُولة وصْغَائَن مِحْوُلَةُ وَالْمُواء مُتَّبِعةٌ لِنْ مِنْ مَالِ للهُ عَلَى مَا رِد خَعْنِ الغُسَّان وَاجْعَلْهُ مُرِيدًا يَدًا وَرِيجُلًا رجلًا وا ذاكانَتْ بين القوم ثَائرَة يالفلان يالفلان فانما ثلاك بمغوى الشيطان فاضربهم بالسَّيعنِ حتى يغيواالمام الله وتَكُونَ دَعْوَتُهُ مِ إِلَىٰ لاسلام -

ایک اور بخر را او موسلے کے نام-

المابعب فان القوة فى الحل ان لا تؤخرُ واعمَل ليَوْم لِغَدٍ فأَنكَ إِذَا فَعَلَمْمُ ذُلِكَ تَلَامَ كَتَ عَلَيْكُمُ إِلا عُمَالَ فَلَهُ زَلْمُ وُلاً يَهَا مَا خُذُونَ فَاضَعُتُم -

عمروين العاص كوحب مسركا كورزمقر ركركي بهيجاء توالحفون نسي خراج سك بفيخ بين در کی ،حصرت عربے تاکیہ کھی ،عروبن العاص نے نیت دہل *کیا ،حصرت عربے عُقیمی*ن

مك مقدالفرر فطبات عمرض

آرز جرد تهديد كاخط لكها عمروبن العاص نے بھى نها يت آزادى اور دليرى سے جاب ديا، به تخرين مقررين مقرت عمرك زورلم تخرين مقررين مقرن نه الله دعين سے حضرت عمرك زورلم كا اندازہ ہونا ہے، بعض فقرك يہين - كا اندازہ ہونا ہے، بعض فقرك يہين - وقت مقال الشوء التي الله مقال الشوء التي الله مقال الله الله مقال الله مقال الله مقال الله مقال الله مقال الله مقال الله الله مقال الله الله الله مقال الله الله مقال الله الله مقال الل

كَفَفًا وعِندى باذن اللهِ دواعُ فِيْ فِي شِغَاءُ - إِنَّى عَجِبتُ مِن كَثْرَةُ كُنْبُي إِلَيْكُ فِي اِبْطَا يَاكَ بِالْحِراجِ وَكِنَا بِلِقِ الرَّيِّ بِتَنِيَّاتِ الطَّلُ مِ عَمَّا اَسْأَلُكَ فِيدِ فَلَا تَجْرَعُ

اباعبى الله إن يوخل مناق الحقُّ وتعطاهُ فانّ النَّه رَيْحُ مُج اللُّ دُّ-

یاس موجود ہے لکھتے ہیں۔ کوکات مین اَنْقَابِ اَهْ لِ زَمَانِ اللِّنِيْعِيْ اللَّهِ عَمْرِ اللَّهِ اللَّهِ عَمْر اللَّهِ اللَّهُ اللَّاللَّهُ اللَّهُ اللَّ

وَٱنْفَانِ هِنْ مُونِيهِ مَعْمِ فَيْلًا - انقاداورادانناس عقد

جا خطاف - كتاب البيان دائبيين مين لكما --

سله كآب العمة ذكر اشعارا لخلفار ١٠

نداق شاعری نداق شاعری كان عُمَّى بْنُ الْحَظَّابِ أَعْلَمُ النَّاسِ لِينَ مَرَ بَ ظابِ الْجَانِ مِن سبت بُرْ هَرَ شُوكَ كَانَ عُمَّى بْنُ الْحَظَّابِ أَعْلَمُ النَّهِ عَلَى النَّهِ النَّهِ عَلَى النَّهُ عَلَى الْعَلَى الْعَلِيلُولُولُولُولُولُولُولُولُولُ الْعَلَى الْعَلِيلُولُ الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى الْعَلَى ال

نجاشی ایک شاع تماجینے بتیم بن مقبل کے خا زان کی بچوکہی تھی-ان بوگون نے حفرت سے ہکی ٹسکایت کی ، حصزت عمرنے حسان بن ایت کو حوِشہور ٹیا عرصے ۔ مُکر قرار دیا اور حو فيصله أنمون ننے كيا أسى كونا فذكيا- إس وا قعەسے جونكه اس غلطاقنمى كا حمال تقاكر حفيرت خود شعرفهم ندیمتے ۔اس کئے اہل دب نے جہان اس وا قعہ کولکھا ہے ، یہ بھی لکھا ہے ت عرف کی حکمت علی تنی که وه میز بان شوار کے بیج مین نهین ٹیزا جاہتے تھے ، ور نہ شوکے دفائق اُن سے کون بڑھکر ہم پیکٹا تھا۔ مصزت عركوا كرحينا م مشهور شعرار كے كلام رغبورتھا ليكن تمن شاءون كوانخون ب مِن أَتناب كِياتِها ، امر القليس ، زمير فأ لغة ، ان سبين وه زمير كاكلام ، سے زیادہ سیندکرتے تنے اوراُسکوا شوالشوا رکہاکرتے تھے ،اہل عب اورعلاکا د کے نزدیک اب مک پیمسّلہ طے بنین مواکہ عرب کا سب سے بڑا شاء کون تھا ؛لیکن بیرسب کا اتفاق ہے کانضلیت اٹھی میون میں میدو دہے۔ حضرت عرکے نزد کا یہ ہم ب پرترجیج هتی، جررهیمی اسی کا قائل تھا ، ایک وفعه ایک غز دومن حصزت عبدالنّه بن ماس، حضرت عركے ساتھ تھے، حضرت عرفے عبدالتدین عباس سے کما کواشعوالشعرا مل تاب بيان والتبيين ملبوء معرم مغري، و- مسل و كيموكناب البيان والتبيين على خلاص في ما وكتاب العرة إب تعرَّم ل ستعوار ١١

معزوم بهر کوانتوانشوا کهنزینچ کے اشعار مربعو، عبدالنڈین عباس نے کہا وہ کون ! فرمایا زمیرانمون نے ترجیح کی وجربوهي - معنرت عمرنے أسكے جواب مين جوالفاظ فرمائے وہ يہ سكتے-

دمريضت كانه كايتيع تحوشي الكارم ولابعاظل وورزبين النوس الفاؤى لاشين بين ربتا وكلامين من المنطق ولا يَقُول الامالِعُرُف وكا إلى المعالِعُ في الميدِيُّ بني وتى، والني منون كوا زمّا ع من واقت يواجيكي يَمْتَكِي مُ الرَجُلُ الإِيمَا يكون فيه - التَوَاعِين ومان وزرراء بودقي أسن برتين

يورسندك موريريا شعاريث -

إذابتكرت قيس بن غيلان غاية مِن الحيث لمن ليبق اليها أيسود وَلُوكَانَ حَمْلٌ يُحِدُ لِلهُ السِّكَ اسْ لَمُرْمَّدُ وَلَكِنَّ حَمْدَ السَّاسِ للسِّ بِحُثْ لِلهِ

ا قدین من نے ، زمیر کا تام کلام طرح کر وخصوصیتین اسین تبانی مین وہ یہ ہیں اکرا کیا کلام مات ہوتا ہے اور ما وجو دائیکے کہوہ جا ہتت کا نتاع ہے اُسکی زبان الیمُنسستہ ہے، کواسلامی شاء معلم ہواہے ، اسکے ساتھ دو بیا سالغ نہیں کرا ، مفزت عمر نے ان

تام خسوصيتون كونها يت مختصر تفظون مين اداكرويا -

زمير كامروح ، برم بن شان وب كاليك رئيس تقا ، آنفاق ميكز زميرًا وربرم، و و نون کی اولا دیے حضرت عمر کا زمانہ پایا اور انکے دربارمین ما حزموے جصزت عمر نے ہم کے وزندسے کما کوانے اب کی مح مین زمبر کا کھ کلام بڑھو، اُسے ارشاد کی تمیل کی ضفت عن زمیر فایک مقارے فا ندان کی شان میں زمیر فوب کتا تھا، اسنے کما کہم صلیمی فوب ویتے تھے ،حفزت عرفے والیان الین ترنے جود ایتفا وہ فنا ہوگیا اوراک داہواتج

سى اقى ، زبىرىم من سى كماك مرم مع مقارى إي كوفطعت دئے محاليا بوت أسف كما يوسده ہدگئے۔ فوالکر بھاب اپ نے مرم کو خلعت عطا کئے تھے۔ زا زُا کو بور و زکر سکا۔ ترمیرکے بعد؛ وہ نا بندکے مقرن تقے اوراسکے اکثرا شعاراً کمو او تقے ، ام شعبی کا بیان اسٹی تیہے ے کوایک د نعہ لوگون سے نماطب ہو کر کہا کہ سے میرحکر نیاع کون ہے؟ لوگون نے کہا آپ زبادہ کون جا تاہے، زبایا۔ پیشوکسکاہے۔ كلاسليْمَان إِذْمِتَالَ كَلْإِلْهِ لَهُ صَّحْرُقِ الْهِرِ اوگون نے کما'ا بغتہ کا ایمروجھا بیشوکسکاہے ؟ آمَيْتُكَ عَمَا مِي يَا خَلِعًا يَثِيانَ عَلَى خَوْنِ تَظُنُّ لِيَ الظُّنُونَ لوگون نے کہا نا بغہ کا ۔ پیمر بوجیا یہ اشعا رکیے ہن ؟ حَلَفْتُ مَنَكُمُ ٱتُولِكُ لِنَفْسِكَ رَبِيًّ وَلَيْسَ وَسَ اعَاشِيلُكُ عِمَالُهُ هَبُ لوگون نے کہا ان کا فرا یار یتحض شوالعرب ہے۔ با منمہ وہ امریقیس کی آشا دی ا ورایا ومضامین کے منکر نیکھے ،ایب دنعہ عبدا مندین عباس نے شعرا کی سبت آئی راے یوٹھی توامرائیٹس کی سب یالفا فافرائے سَايِقُهُ وْخَسَعَ لَهُ مُعَالِنَ الشِّيعُ إِرْبِ عِنْ كَالِهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ وافتقرعن معان عنوي أتمع بصير انصناين كوبناكردا-اخيركا نقرواس لحاط سے ہے كا مرافتيس منى تقا اوراہل من فصاحت وبلاغت مين كم درجر سله أمّا ن تذكرهٔ زبير سك اغانى تذكرهٔ البنترا مانے جاتے تھے۔خِنا کی علامابن رشیق نے حصرت عرکے اِس قول کا ہی طلب بیان کیا ہے۔ حضرت عرکے ذوق سمن کا یہ مال تھا کہ اُنچھا شوشنے تھے توباربار رہے ہے لیکر مڑھتے تھے، ایک دفعہ زمبر کے اشعار سُن رہے تھے، یشعوا یا۔

شروزر ادَاِنَ الْحَقَّ مَقْطَعِثُ فَ خَلَاثُ سَيْمِ أَوْنِعِتَ أَنَّ أَوْجِلاً مُ

توحسَنِ تقییم پہت محفوظ ہوئے ،ا وردیز یک باربار ایس شعر کویٹے ھاکیے ، ایک اور دفعہ، عبد ف ابن الطیب کا لامیة قصیده سُن رہے متعے اس شعر کومُسنگر

وَالْمُنْ وَسَاعِ إِلَّا مُرِلِّينُ يَدِيكُ وَالْعِينُ مُنْ اللَّهِ مُنْ اللَّهِ وَالْعِينُ اللَّهِ وَاللَّهِ اللَّهِ اللَّ تعرُّك أسِّط اورد وسرامصرع بار بارزهت رب، سي مرح ا بوقتيس بن الاصلت كا قصيده ساتومعف شعاركوديرك دبرا ياكي-

اگرفیه انکومهات خلافت کی وجهسے اِن انتخال مین مصروت ہونے کامرقع منین مل سکتا تها - اسم ويكلبى دوق ركفته تقے سكرون نزارون شعراد تقے علمات ادب كابان

ہے کہ ایکے حفظ اشعار کا یہ حال تھا کہ جب کوئی معاطفیصل کرتے توصرور کوئی شور معت-

حبر متم کے اشعار وہ بیندکرتے تھے وہ صرف وہ تقے منین خووداری ازادی انترافتِ

نفنس، ممیت ۔غیرت، کے مضامین ہوتے تھے ، سی بنایر ۔ اُمراے فوج اور عال منلاع وحكم بعبيديا يتماكر لوگون كواشعاريا دكرنے كى ماكيدكى جائے - جنائي ابوسى ہشرى كوي

قرمان تجيجا-

ك تا بالعمره إبدالشا بميرن الشعراء من يتمام روبتين ماحظ في تماب البيان ولتبين دمغرً ، وه هين نقل كي بن-

مُرْمَن تَبِلَكَ بِتَعَلِّمِ الشِّعْمِ كَا تُنَهُ مِرَان كُواشَا كِ وَكُن كَا عَمُ وَوَ الْمِنْ وَالْمِن وَالْمَا كَ وَكُن كَا عَلَى وَكُنُ وَالْمُنْ اللَّهِ عُمِي اللَّهُ الْمُن اللَّهُ عَلَى مَعَا فِي الْمُنْ اللَّهُ الللِي الللِّهُ الللللِي اللللللِي

اشعار کاملیم مین داخل کرنا أَمَّا مِ اصْلاع مِن جِمَعُ مِي مِنْ عَمَا أَسِكَ يِهِ الْعَافَ مِنْ الْعَافَ مِنْ الْعَافَ مِنْ الْعَافَ الْ عَلِيْهِ وَلَا وَلَا مَا كُمُ الْعَوْمَ وَالْفَنْ وَسِينًا مَا اِنِيَا دلاد كُوتِزِا اورْ السواري مَكْمِلاءُ اورمز

عَيْمُوا وَهُ مُ تَعْرِبُعُومُ وَالْكُمْ وَلَيْنِيهُ ۚ إِنَّ الْأَدُورِ الْمِرَارِ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ المُتَالِمُ وَمُعْمُ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّالِينِينِ مِنْ اللَّهُ مِنْ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّالِمُ مِنْ اللَّهُ مِنْ مُنْ اللَّهُ مِنْ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ مُلَّالِمُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ أَلَّا مُعِنْ مُواللَّاللَّمُ مِنْ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّمْ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ م

شاءری کی اصلاح اس موقع پر بیابت بھی یاد رکھنے کے قابل ہے کہ حفرت عرفے نے شاوی کے بہت سے عیوب مِشاد سے ۔ اُسوقت بک تمام عرب مین یہ طریقیہ جاری تھا کہ شعوا، شریف عور تون کام علانیہ اشعار میں لاتے تھے ، ورائن سے اپنا عشق جبات تھے ۔ حضرت عمر نے اِس کا ام علانیہ اشعار میں لاتے تھے ، ورائن سے اپنا عشق جبات تھے ۔ حضرت عمر نے اور رسم کو یا لکل مثبا دیا اور ہکی سمنت سنرا مقرر کی ، اسی طرح ہجوگوئی کو ایک جرم قرار دیا ۔ اور حطیبہ کو جربشہور ہجوگو تھا اِس جرم مین قید کیا ۔

كليف

الطیفه بنوالعجلان ایک نایت مزز قبیله تھا، ایک ناع نے اکی بولھی اُنھون نے مسلم تھا، ایک شاع نے اکی بولھی اُنھون نے مسلم حضرت عرصے اکر شکایت کی مسلم حضرت عرضے کہا وہ اشعار کیا ہین ؟ اُنھون نے یشعر رہا۔ اِذَاللّٰهُ عَادًى اَنْھِ اَلْنِ الْمُقَلِّ بُنِ مُنْقَدِ لِي الْحَجْ لانِ وَهُ طَانِي مُنْقَدِ لِي الْحَجْ لانِ وَهُ طَانِ مُنْ مُنْ اللّٰهِ عَلَى اللّٰهِ مُنْ اللّٰهِ مِن وَسَنْسَ رَكِمَ عَلَى اللّٰهِ اللّٰهِ مُنْ اللّٰهِ مُنْ اللّٰهِ مُنْ اللّٰهِ مُنْ اللّٰهِ مُنْ اللّٰهُ مُنْ اللّٰهُ عَلَى اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰمُ اللّٰهُ اللّٰمُ ا

مفرت عرف فرمایا- یہ تو بجو نہیں بلکہ مرد عاہد اور مکن ہے کہ خدا اسکو قبول ناکوے ،

ك ازالة الخفارصفية ١٩١٠

أنفون نے دوسراشعر برجا۔

تَمْنِي لَنَهُ مُوكَ لِيَعِثْ لِي رُونَ مِنِ مِنْ إِنَّهِ وَكُلَّ يَظْلِمُونَ النَّاسَ حَبَّنَةَ خَمْ دَلٍ

ہ تبید کسی سے معدی سنین کرا اور نہ کسی پر، رائی برابطن ام کرا

حضرت عمرت فرمای کاش میراتام خاندان ایسای برتا طالا که شاع نے اس لحاظ

سے کہا تھا کو بین یہ اِتین کروری کی علاست مجمی جاتی تھین-

وَلَا يَبِهِ ﴿ وَنَ الْمُ الْمُ الْمُ كَالِمُ عَشِبَةً إِذَا صَلَ دَ الْمُوسُ الْمُعَنَّ كُلِّ مَنْهُ لِي

یہ بات بھی شاعر نے اس لحاظ سے کہی تھی کہ اہل عرکے ز دیک بیکیں اور کمرز رلوگ ایسا کیا کرتے

یہ بعدی سرف رس من مارکھا کی میں ہے جماع ہوریک یک رر مرد روی ہے ہا رسے۔ مقے حصرت عمر نے میشٹو سکر کھا کہ تھی ہے جماع تو بہت اُتھی بات ہے ' انھون نے اخریشور مرھا۔

وما سُبِيِّ العَبَلان اللَّا لِفَولِهِ مِن خِللْقَعْظِ عُلْ عُلْبُ العَبُلُ وَاعْبَلْ

أسكانام عملان اب ليے براكر لوگ ائس سے كہتے تھے كا بے أدغلام! بيا لا ك اور جلدى سے درو دُرولا

حضرت عرف فراي ستيكالعقم خاد ممثم "

کے متعلق اکٹرا کا حوالہ دیا کرتے تھے ، خطّاب کے باپ تھیں سمی اِس من مین شہرت کے متعلق اکٹرا کا حوالہ دیا کرتے ہے ، خطّاب کے باپ تھیں سمبی اِس من میں شہرت

ر کھتے متے جنا پذان وا نعات کوہم ،حصرت عرکے ابتدائی مالات میں لکھ آئے ہیں ،

كمنايرهنا بمي جيهاكهم أغازكتاب مين لكمر آئي مين اللام ت يبله سيكرايا عقا-

موا الانساب ا عبرانی زلان سے پہنیت

قراین سے معلوم ہوتا ہے کہ مرینہ تنجی اُتھون نے عبرانی زبان بھی سکھ لیھتی، روایا سے اً بت ہے کواس وقت تک توریت کا ترحمہ عربی زبان مین نہیں ہوا تھا۔ انخفزت کے ز انے میں حب توریت کا کچھ کا م ٹریا تھا توعبرانی ہی سنچہ کی طرف رجوع کرنا پڑتا تھا۔اور چزنکہ مسلما ن عبری منین جانتے تھے اس سے سودی ریٹھ کرٹنا تے اور عربی میں ترجمہ کرتے جاتے مسیح بخاری مین حضرت ابوم ربرہ سے روایت ہے کہ-كَانَاهُلُ ٱلْكِتَاكِيَةِي وَلَالْتُوكُرُاةُ بِالْعِلْرَانِيَّةِ الْمِنْ إِلَى الْمِارِيةِ وَمِرانِي زَانِ مِن رَّحَة عَيْرَ ويُفَيِّرُونَهُا بِالْعَرَبِيَّةِ كُلِهُ لَ أَلْمِسْكُونِ الْمُسْكُونِ اللهِ الْمُرابِيِّةِ فَي مِنْ اللهِ المُ مند دارمی مین روایت ہے ک<sup>ور</sup>ایک دفعہ <del>حصرت ع</del>ر، توریت کا ایک نسخه انحضرت کے یاس سے گئے اوراسکومٹرمنا شروع کیا، وہ ٹرھتے جاتے تھے اور آنخصرت کاچہرو عنیہ۔ ہو اجا یا تھا۔ اِسے قیاس ہو اہے کہ *حضرت عمر عبر*انی زبان اِس قدر سیکھ گئے تھے ک توریت کوخود براه سکتے تھے۔ یہ ا مربمی معیمے روایتون سے ابت ہے کہ ہیو دیون کے ہان سب ون توریت کا درس ہوا کرا تھا حضرت واکثر شرکب ہوتے تھے ، انکا خود مباین ہے کہین ہیو دیون کے درس کے دن ایکے ہین ما یا گرہا تھا جنائخہ ہیودی کہا کرتے تھے کہ تھارے ہم مرمبون میں سے م م مکوسب سے زماد و عزر رکھتے ہین کیونکہ تم ہارے باس آنے جاتے ہو<del>۔</del> ك معيم نجاري مطبوعة احدى مير مصفويه ١٠٥- تك سندداري علبوء كانپوصفور ١٠- مسك كنزا لعمال بروايت بهيقي وغيرهِ ملدا ول صفحهُ ٣٣٠ -

حضرت عمری نقادی اور کمته بنی نے بیان تھی کام دیا یعینی سب قدروہ میودیون کی ا کتا بون سے دا قعن ہوتے گئے ، اُسی قدر انکے مہود ہ ا فنا نون ا ورفعِنٹون سے اُنکونفرت ہوتی گئی۔ نهایت کثرت سے رواتیین موجود مین کہ نتام وعواق وغیرہ میں یسلما نون کورٹولیا كى تقىنىغات إت أمين توحفزت عرف بوگون كو نهايت عنى سے أنكے يرهنے سے رُوكا، ناخطان الني وانت وطباعي كاميح اندازه اكرديانك فقتى اجتما دات سے موسكتا ہے حسكا ذكر علمي مالات بن ویرگذر دیکالیکن کی ممولی سے معمولی بات بھی ذانت وطباعی سے خالی منین ہوتی تھی خیاج م دُوتین شالین مؤنے کے طور رنگھتے ہیں۔ حضرت عمارین یا سرکوحب اکفون نے کوفہ کا حاکم مقررکیا توبس دن می بنین گذرے منے کہ لوگون نے دربا رخلافت مین تسکایت میش کی کہ وہ رُعب و داب اور سیاستِ کے آدمی بنین <u>- حضرت عر</u>نے اکو واپس ملالیا ا ورکها کرمین خو دہمی اس با**ت کوما تیا تھا ک**ین من نے خال کیا کہ ثایہ مندا ایکواس آیت کا معداق نبائے۔ و ده آن عَنْ عَلَى الَّذِي ثِنَ السَّيْضُهِ عِفْ قُل إنه عِلْتَ بِن رَان ورُن رِهِ رَزُور بِن احمال رَبِن اوران رُوامام فِلْ لَا مُحْتَى مُنْجُعَلُهُ وَأَيِّكُ أَوْتُجُعَلَهُمُ الْوَامِنَانَ اوروزين كا) وارت باين-اكب د فغه اكت غفس كو دعا ما نگتے منا كر رمذا يا إمجاز متنون سے بحانا ،، فرا يا كيا تم برما، الموكة فعداً ككوال ولادية وسطّ- (قران مجيد من مدان ال واولا دكو فتية كما ب إستَّمَا آمُوَ ٱلْكُوْوَا وُلاَ وُكُوفِيْنَةً -)

ك ارخ طبرى والتونول عارين السر- ملك الالالتا ومنوه ٠٠-

ایک دفعہ ایک شخص نے یوجھا کہ دریا کے سفرین ۔ تعبرتے یا سنین و اُسکی غرص بھی كه در پاكا سفر شرعًا سفرت يا نبين مفترت تمرن وزا ياكيون نبين ، ما خود فرا تا ك-هُوَالَّذِي مُن كُلِسَ أَيْرُكُو فِي الْأَبِّرِ والْبَحْيِ وورضن وم جَرَكُو خَلَى ارترى كي سرارا تاب -أنكے مكيما نه مقول اكثرا دب كى كما بون من اور حضوماً محبع الاشال مبدائي كے الاستال مبدائي كے فا ہمین کثرت سے نقل کئے ہیں ، ہونے کے طور ربعبن مقوبے بیان درج کئے جاتے ہیں<sup>۔</sup> مَنْ كُنَّمُ سِيْرًا ﴾ كَا الْجِنيَا ( فِي مَلِيا ﴾ ﴿ جِنْحَسْ بِنا رازمِيمِيا آب وواينا امتيارانِ وت مِن ركمتابَ اِلْقُقُ الْمِنْ تَبِغُضُ فَ فَيْ فُرِي مِنْ إِلَى مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مُنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ مِنْ اَعْقَالُ النَّيَّ أَسِ اَعْدُ رَهُمْ لِلنَّ أَسِ- اسِينِ رَارِهِ عامَانِ وَمَعْنَ بِوانِ امَالِ كَا مِي اولِ رَسَلَامِو كَانْتُوعَنِّيْرُ عَمَلَ يُومِيكِ إِلَىٰ غَلِهِ لَكَ - أَنْ كَاكَامٍ . كُلُّ بِأَنْ مِنْ مَرْكُو-أَبَتِ اللَّهُ وَالْمِيْمِ إِنَّا أَنْ يَحْرُجُ أَغْنَا فَهَا أَرْبِي، را وي كئ بنيرنين رسعة -سَا آد مُسِرَ شَكْنَ عِلَى فَأَ قَالْبُ لَ- إِمِرِينِهِ بِنِي يَمِ اَ كُمْ نَيْنِ رَا مِنْ -مَنْ لَيْرِيَعْنِي مِنِ السَّسَرَّ يَفَعُ حِنْهِ إِن السَّرَانُ سِي اللهُ اللَّهِ مَا أَنْ مِن سبِّلا الرُّكا مَاسَالَنِيْ رَجُلُ الْكُنْتِ يَنْ لِي فِي عَكْلَةِ الْحَبِينِ يَعْمِيهِ وَلَيْ يَعْمِيهِ وَلَيْ الْمُعَالِمُ الْمُعْمِولُهُ الْمُعْمِدُ اللَّهِ وَلَيْ الْمُعْلِمُ الْمُعْمِدُ اللَّهِ وَلَيْ الْمُعْلِمُ اللَّهِ وَلَيْ الْمُعْلِمُ اللَّهِ وَلَيْ الْمُعْلِمُ اللَّهِ وَلَيْ اللَّهِ وَلَّهِ اللَّهِ وَلَيْ اللَّهِ وَلَيْ اللَّهِ اللَّهِ وَلَيْ اللَّهِ فَلْ اللَّهِ وَلَيْ اللَّهِ وَلَيْ اللَّهِ وَلَيْ اللَّهِ وَلِي اللَّهِ وَلَيْ اللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَلَا اللّلِي اللَّهِ وَلَيْ اللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَلَّهِ اللَّهِ وَلِي اللَّهِ وَلِي اللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَلَا اللَّهِ وَلِي اللَّهِ وَلَّهِ اللَّهِ اللَّهِ وَلِي اللَّهِ وَلِي اللَّهِ وَلَّهِ اللَّهِ اللَّهِ وَلِي اللَّهِ وَلِي اللَّهِ وَلَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ وَلَّا لَمْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِي اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْلِي اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللّلَّالِي اللَّهِ اللّ واعطت خطاب كرك كالملقاق النَّاسُ اللَّهُ عن من من البين تين مول عَنْ نَغْساك -اَقْلِلْ مِنَ اللَّهِ مِنْ اللَّ تُرْكُ الْخَطِيَّةِ اللَّهُ مِنْ مُعَالَجَةِ التَّوْبَةِ إِرْبِي تَلِيفِ سَائًا وَمُ مِيرُ دِيَا رَادِهِ أَسَانَ بَ

سله ميح ناري إلى المام عرب

منا نقون بر ناز زاره وحی کا انتظار فرماتے تھے، خِمانِی فاص بردہ کی آیت ازل ہوئی حبکو آیتِ جیاب کہتے ہیں آ عبد الندین آبی جو منا فقون کاسرگردہ تھا حب مرا، تو آنخفنرت نے فکن نبوی کی نبا پراسکے خازہ کی نماز ٹرمنی جاہی، حفزت قمرنے گتا فانہ عمن کیا کرآپ منا فق کے جنا زے پرنماز پڑھتے ہیں ! اُسپریوایت اُتری وَکَلافَصُلْ عَلٰ اَحَدِ مِنْ ہِنْ ہُنْ ہُور ہیں۔ وسلم وغیرہ میں ندکور ہیں۔

خعنرت عمر بی کی را ب معائب کا میجه عنا که قرآن مجبید مرّون در مرتب موا ور نه حفرت ا بو کمرا ورزیرین تابت (کا تب دحی) د و نون مهاحبون نے - بیلے اس تجویزسے مخالفت کی متمی، تام نرمبی اورُملکی ائم مسائل مین حبان حبان ا درصحا به کو<del>حصات عمرسے</del> اختلاف موا باشتناب بعض مرقعون کے، عمر اُحضرت عمر می کی رامین صائب کلین ، مالک فتوجہ کے شعلَق اکٹر صحابیت نوس الرائے تھے کہ فوج کو تقتیم کردیے ما مین ایک حصرت عمر اس راے کےخلاف تھے اوراگرلوگون نے انگی راے کو نہ ا<sup>ن</sup>ا ہترا تواسلامی ملکت آج کا سکا ا سے برتر ہوگئ ہوتی۔ حضرت ابو کر وحصرت علی دونون فتوحات کی آمرنی مین سخف کا برا برحقبہ لگاتے بھتے ، حضرت عرائے حقوق اور کارگزاری کے فرق مراتب کے لحافات المحتلف شرمین قراردین، حصرت ابر کمرو حضرت علی، د دنون معاجبون نے امّها ت<sup>ا</sup> ولا<sup>2</sup> لى حزيدو فروخت كوما بُزركَما ، حَعَرَت عَرِّنْ عِنْ الفت كي ان تام واقعات بين حفزت **له تامن ابريوست مامِب كتاب الحزلج من عميمة مين «انّ عربن المغاب استشار الناس ني السوا ديين افتع فزاي عما منهم** دوسرى مكر لكيفتي مين الق اصاب رسول التدصلي التدعليه وسلم وجا عملسليين اراد واعرب الخطاس م الشَّام آلخ- (كتَّاب مُركرمتَّغُونُ ١٥)

عركى را سے كو دو ترجيج ہے وہ محاج دليل نبين-

فلا فت کے تتعلق حب بجث بیدا ہوئی ک<del>ہ حضرت ع</del>رکے بعد کون ایس بارگران کواٹھا سکتا ہے ؟ تو مخیصا جون کے نام سے گئے۔ صرت عرق مراکب کے متعلّق خاص خاص راہین دین اوروه سب صحیح کلیسن

طائبة نكآ كالنبتعفر

بكته سنجى ادر وزيسي

وہ ہر کا م مین عورا ور فکرکوعمل مین لاتے تھے اورظاہری با تون پر بھروستنین کرتے

عقے انجا قول تھا کہ کا نیجج بنا کون الرجل طنطنتہ سنی سی سری سنرے کا آوارہ منکر د حوے میں نہ آو'

اكثركها كرتے عقے- لا تنظم واالى صلاق عن أدى كى نازوردز و بِهٰ الله الله على اور على الله الله على اور على

المُرِءِ وَلَاصِياً مِهِ وَلَكِنِ انْظُرُ واللَّ عَقَيلِهِ وَصِدْ لَهِ رَكِيمِ

اکی دفعہ اکیشخص نے اُنکے سامنے کسی کی تعریف کی ، فرا یا کہ مزسے معمی معاملیہ یرا ہے ؟ اُسنے کما منین، بوجھا کبمی سفرمن سائھ ہواہے؟ اُسنے کما نبین، فرایا کہ تو۔ تم وہ بات کتے ہوجومانتے نہیں ہے۔ اما دین کے باب مین بڑی علطی جو بوگون سے ہوئی یہی متی که اکثر مُحَدّثین عبرشخص کوظا مرمین زامر دیارسا دعیتے تھے تقہ سمجھکراس سے روہت مثروع كرديتي متع عبدالكريم بن ابى المخارق حو اليصنعيف الرواية شخص تقاأس ا مام مالک نے روایت کی۔ لوگون نے تعجب سے پوچھا کرآپ ایسے تنحف سے روایت

اُرتے ہین! اُنھون نے فرہایا کہ

عُرِّ فِي بَكْثَرَة جلوسه في لمسجيل الين البات المكرد مركاد الأده كرَّة عنسورين المُعَاكرًا عَمَّا

له يتول زارًا خفا رمقسة دوم صفيرًا ، وابين نقل كياب على فتح الميست صفي ١٦٠٠

ون كومتماتِ خلافت كى وجبسے كم فرصت لمتى تقى إس كئے عباوت كا وقت رات كو السنه برنى مرك مقرر کیا تھا۔معمول تھا کرات کو نفلین ڑھتے رہتے ، حب مبیح ہونے کو آتی تو گھروا لؤ کو کا ہے اوريه أيت يرهته وَأَعْمُ أَهْلاَقَ بِالصَّانُوةِ ۖ مَخِرِي نازمِن برِّي يري سورتين يُريت ليكن زبار ہ سے زیادہ ۱۲۰ آیتین ٹرھتے ، عبداللّٰدین عا**مر کا بیان ہے ک**ومین نے ایک وفع**انک** تیں بھے نخ<sub>بر</sub> کی ناز مڑھی توانھون نے سورۂ یوسف ا درسورۂ جج بڑھی بھی ۔ یونس کھف -ہود کالمیرمنا بھی اُن سے مرد<sub>ع</sub>ی ہے۔ نماز، جاعت کے ساتھ بیند کرتے تھے ، اور کھا کرتے تھے ۔ کہیں اُ سکر تمام رات کی عباوت پرتز هیچ دتیا ہون۔ کو ٹئ صزوری کا م ایرتا ۱ وروقت کی تاخیر کا خوٹ نہو آ و توليك اسكوانجام ديتے، ايك د فعه اتفامت ، د يكي متى اوصفيين درست ہو يكي متين كواليتن ا معن سے کلگرا کی طرف بڑھا۔ وہ اسکی طرف متوجہ ہوسے اور دیر کک اُس سے باتین رہے رہے ؓ۔ فرمایا کرتے تھے کہ کھانے سے فارغ ہولوت نماز طرحو ِ بعض و قات، جہاد وغیرہ کے ہمام مین ایس قدر مصردت رہتے تھتے کہ نماز مین بھی وہی خیال بندھار تہا تھا۔خود اُنخا قواہے کہ مین نما زیر متیاہو تا ہو ن ورفومین ملیار کیا گرما ہون ' ایک اورروایت ہے کہ من نے نازین کوئن <del>۔</del> جزير كاحباب كياً- ايك د فعه نمازيرم رب تقيمة أيت فَلِيْعُبْرُهُ وَارَبَّ هَذَا الْسَكِيْتِ أَنَى توکعبہ کی طرف انگلی اُٹھا کرا شارہ کیا۔ شاہ ولی اسٹرمیاحب نے اِس روایت کونقل کرکے لکھا ہے کہ نازمین ایس قدرا شارہ کرنا جا ئزینے ۔ تعبل اوقات حمید کا خطبہ ٹرمنے ٹرمنے کسی سے نگاب ك موطا الم مالك، وسلك الاله الحفار وحوالة معتمدين إلى شير مبنور المسلك ازارة الحفار بجوال ارّالة الخفا رحصير ومصفي ٩٥موجاتے۔ موطاامام مالک بین ہے کہ ایک دفتہ حضرت عُمان ، کو مجد بین دیرموگئی اورسجد مین اس وقت بہونے کہ حضرت عَرف خطبہ منر دع کر دیا تھا۔ عین خطبہ کی حالت مین حضرت عَرف افکی طرف دکھیا اور کہا کہ یہ یا وقت ہے ؟ انھون نے کہا مین ازارسے آر ہا تھا کہ اذائ سُنی فورۃ وضو کرکے حاصر موا۔ حصرت عَرف کہا دضو برکیون اکتفا کیا ؟ رسول الٹرصلی عمل کا حکم دیا کرتے تھے ، ابو بکر ابن ابی شیبہ سنے روایت کی ہے کہ مرنے سے داو برس سیلے مقبل کا دوزے رکھنے منٹر دع کئے تھے ، لیکن اٹھی کی یہ روایت بھی ہے کہ ایک شخص کی سنبت سُنا کہ حصا کہ الدہرے تو ایک مارنے کے لئے ، زہ اُ ٹھا یا۔

کرصا کم الدہرے تو اُسکے مارنے کے لئے ، زہ اُ ٹھا یا۔

کرصا کم الدہرے تو اُسکے مارنے کے لئے ، زہ اُ ٹھا یا۔

نیاست کے مواخذہ سے بہت ڈرتے ہے اور ہر دفت اسکا خیال رہتا تھا میج نجاری
مین ہے کدا کیہ دفعہ ابوموسی اشعری سے مخاطب ہوکر کہا کر کیون ابوموسیٰ اہم اسپر راضی ہو کرم اور جوا سلام لائے اور بجرت اختیار کی اور رسول الند کی خدست مین ہر مگی ہوجو درجی این نمام باتون کا صلہ ہمکو ہوا ہے کہ را بر سرا بر پر چیوٹ جائیٹن فعنی نہ ممکو تواب کے نہ عذاب' ابوموسی نے کہا نہیں مین توابیر مرکز را عنی نہیں 'ہم نے بہت سی نیکیان کی ہین اور ہمکو ابوموسی نے کہا نہیں میں تو کہا نہیں اور ہمکو تواب ہے کہا نہیں ہوئے کہا نہیں میں توابیر مرکز را عنی نہیں 'ہم نے بہت سی نیکیان کی ہین اور ہمکو ابوموسی نے کہا نہیں دور میان اسے کئی است کی گیا میں توابید مرکز کر اعزان ہے کئی است کی اس قدر میا ہما ہمون کر ہم ہے مواخذہ نمیوٹ جا مین ''۔ مرنے کے وقت پنتھ سے کر طبحتے ہے۔

ك إذا يَ النَّفَا رمَعَتُ ١٠١٠

ورقا دسیہ کے معرکہ مین حب انکو بمبیا توسور قاص کولکھا کہ مین ووہزارسوار تھاری مرد کو بھیجہا ہون ،عمرمودیکرب ہیلوانی کے ساتھ خطیب او نِشاع کھبی تھے حضرت عمر،اکٹراُ ا<del>ب</del> فنزن مرب کے متعلق گفتگو کیا کرتے تھے جنا کیہ ایک حلبیہ میں قبائل ع ب، دوراسلئ خبگ لی منتبت جوسوالات کئے اور عمر عدیرب نے ایک ایک کی نسبت حبی تصرا در لمیغ فقردن مین حواب دِسنےا سکواہل دب نے عمواً ا ورسعودی نے مروج الذہب مین تفصیل لکھا، خِنائخة نيزه كى نسبت يوجها توكها · آخُولُ وَيُ تَمَا خَانَكُ-مین مترا مبائی ہے لیکن کبھی کبھی دغا ریا اہے ،، يمرترون كى سنبت يوجيا توكها -قرة المناياً تمخطر وتصييب بين «ريخ قامد مرئمي منزل كيني بين وركمي بكرمات بن» ڈھال کی سنبت کما عَلَیْہُ قِیْلُ وُسُ اللّہَ وائیرہ اسی طرح ایک ایک متیار کی سنب<sup>ے</sup> عمیہ عب لمیغ فقرے استمال کئے حباکی تفصیل کا مجل نہیں۔ حضرت عرکے اس طربق عمل نے ء ب کے تمام قابل آدمیون کو در ارخلا فت میں خمیع ردیا، اور حفزت عمر نے آئی قالمیتون سے بڑے بڑے کا م ئے۔ رسول المتدعملي التدعليه وسلم كے تعلق كا نهابت إس كرتے تھے۔حب صحابہ دغيرہ كے ترویکا مقرر کرنے چاہے توعبدالرحمٰن بن عوف وغیرہ کی راے معی کر حضرت عرمقدم رکھنے جامین لیکن حصزت عمر نے انکارکیا اور کہا کہ ترتیب مراح مین سب سے مقدم انحضرت کے تعلقا کے قرب وبعد کا لا طرمے جنا کیسب سے پہلے قبیلینی ہاتم سے شرع کیا اور آمین تھی

ستعلقیر حباب مسول اوتر کا مارس د گاهار

تعفرت عباس د**حعزت علی کے نا** مون سے ابتدا کی۔ بنو <del>اس</del>ٹیم کے بعد <del>، انحفرت</del> سے *ن*ے مين قريب بنواميه تقے - پير بنوعبدالثمس وبنونونل ، پيرعبدالغرى - بيان كەكەھنىت عمر كا قبیلہ بنوعدی بایخوین درجے مین بڑنا تھا خیائیداسی رمنب سے سب کے نام لکھے گئے۔ نخوا بون کی مقدار مین نمی اسی کا لحاظ رکھا۔سب سے زیادہ منخواہن میں لوگون کی تمین و ہ امهجاب مرريخ حصنرت امام سن حسين عليها السلام ارُحياس گروه مين نه پختے ليكن أي ننخوامن اسی حساب سے مقررکین <sup>،</sup> رسول الله کے ازواج مطهرات کی تنجیامین باره باره منزار مقررکین اور میسب سے مری مقدار نتی - اسامتہ بن زمری تنخوا وجب اپنے فرز ندعیدانیت زبا دہ معزز کی توعیدا منٹرنے عذر کیا ۔ فزما ما کررسول اسٹیصلی اُسا مہ کو تحبیسے ، اور اُسا مہ کے باپ کو تیرے باپ سے زیادہ عزیز رکھتے سے ا حفرت علی کے ساتھ حضرت ابو کمرکی ابتداے خلافت میں رصبیا کہ ہم اور لکھ آئے ہیں سی قدر *شکر رنجی ر*ی حبکی وجه بیمتی که <del>حضرت علی نے حیاہ میننے تک حضرت ابو کم ر</del>کی خلافت پر بعیت نبین کی، خیا یخ معیم نجاری اِب غووة خیبر من ہے کرھنے مینے کے بعد مینی <del>بظام زم ر</del>ا کا أتقال ہو حکا۔ توحفزت علی نے ۔حفزت ابر کرکو مصالحت اور مبت کی غرض سے بلا اما ا میکن به کهلابھیجا کاتب تناائنن کیونکر حفرت علی حفرت عمری موجود گی کوسندنمین کرتے تھے '' ليكن رفته رفته حب حفزت على كوخلافت كاللال حاتار ؟ توبالكل مغاني برئي، جنايخه حفزت عمر - بڑی بڑی مہات می<del>ن حفزت علی کے مشورے کے بغیرکام بنین کرتے تق</del>ے - اور الله يما يمنيل تا المخراج منور ٢٠١٥ وه ٢٠٠٠ من خارى كر بهل الفاف بن كراهيت في محتمر عمر

حصرت على منايت د د شانه اورمخلصا نه مشوره ديتے تقے - ننا دند کے سرک<sub>ومی</sub>ن انگوسیالارمی

بنا ما إلى تعالبكنَ منون نے منطور نبین کیا ۔ مبت المقدس نئے ۔ توکار و بار خلافت انفی سے ہا تومین دکر گئے اتحا دا در گاگت کا اخیر مرتبہ یہ تھا کہ حضرت علی نے حضرت امّ کلتوم کوخوفاظم ز ہراکے بعبن سے تقین اُنکے عقد مین دیدیا خیا پی اُنگی تفصیل آگے آتی ہے۔

منکے اخلاق وعادات کے بیان میں ، متوخون سے تواضع اور سادگی کامتعقل عنوان تَنَا مُركيا ہے اور درحقیقت اُن کی فظمت و شان کتے اج پر ِ سادگی کا طرم نهایت خوشنامعلوم ہو اہے ۔انکی: ندگی کی تصویر کا ایک منے یہ ہے، کہ روم و شام پر فوصین جیج رہے ہیں ہتھیں و تسریٰ کے سفیرون سے معالمہ میش ہے ، خالد وامیرمعا دیہ ازیرس ہے ، سعد و قامن ا ا بوموسیٰ استوی عمروین العاص کے نام احکام بکھے جارہے ہیں ووسرائرخ یوکہ برن بر بارّه بیوند کا گرتہے، سرریمٹیا ساعاً مہے، یا نون مین بھٹری جوتیان ہیں۔ بھرا سطالت مین یا تو کا ندھے پرشک سے جارہے ہین کہ ہو ہ عور تون کے گھرمانی عفر اے یا مسجد کے وشتے مین فرسش ن*ماک پرنستے مین اس سے کہ کام کرتے کرتے تھک گئے* ہن اور نمیند کی کھ سي اگئي ہے۔

إر ہا کمت مدینہ کک سفرکیا لیکن خمیہ یا شامیا زکیمی ساتیزنین رہ -جہان تقیرےکسی کسی درخت پرجا در وال دی اد رائسی کے سابیمین بڑرہے، ابن سعد کی روایت ہے کہ کا ر و زانه خانگی خرج در و درم مقاجیکے کم ومبیش ۱۰ رموتے ہیں۔ایک د فعداحف **بن قیس** وسائخ

اسك كتاب زكورة في ٢٠٠٠ بابال و١٠

کے ساتھ اُنکے ملنے کو گئے۔ و مکیما تو وامن جڑھائے اِد حرا دُ حرد وڑتے بھرتے ہیں۔ احف کو د مکھیکر کہا آؤتم بھی میراسا تھ دو، مبت المال کا ایک اونٹ بھاگ گیا ہے ۔ تم جانتے ہوا ایک اونٹ میں کتنے فزیون کا حق شامل ہے ، ایک شخص نے کما امرا لمونئین! آپ کیون کلیے نام میں کتنے فزیون کا حق شامل ہے ، ایک شخص نے کما امرا لمونئی آئے بگر کھی خالے میں کسی غلام کو حکم دیجئے وہ و ٹھونڈھرلائیکا۔ فرایا۔ آئی عَبْلِمَ اَعْبَالُ مِی میں میں میں میں میں میں موسکتا ہے ، ا

موطا اما میحرمین روایت ہے کوجب نتا م کا سفر کیا تو شہرکے قریب بینی قصای کا جت
کے لئے سواری سے اُتر سے اُسلّم انخا غلام بھی سائقہ تھا۔ فاغ ہوکرائے تو (بھول کراکسی
مصلحت سے) ہلم کے اونٹ پرسوار ہوگئے۔ اُدھواہل نتا م ہتقبال کو آ رہے تھے، جو آ اتھا
پیلے ہلم کی طرف ستو تج ہو تا تھا۔ وہ حضرت بحرکی طرف انتارہ کر تا تھا، لوگون کو تجب ہو تا تھا او اُسِس مین (حیرت سے) سرگو شیان کرتے ہتے، حضرت بحر نے فرایا کر اُکی تکامین شائن شوکت وھونہ ھورہی مین (وہ بیان کہان)

ایک د فغه ظیمین کها که صاحبوا ایک زانے مین بین اس قدر نا دار مقا که لوگون کوابی عبد کرلا دیا کرتا تھا دہ اُسکے صلے مین محبکہ حبو ہارے دیتے ستے دہی کھا کر سبرکرتا تھا "یہ کمکر ممبرے اُ تراکئے لوگون کو تعجب ہوا کہ یمبر ریکنے کی کیا بات متی ، فرایا کرمیری طبیعت مین فراغ وراگیا تھا 'یہ اُسکی دوائتی ۔

مستنهٔ من سفز ج کیا اور به ره زانهٔ تماگهٔ انگی سطوت وجبروت کا آفتاب، نفسف الهام براگیا خا سیبرن المسیب جوا کی شهور آبعی گذرے مین و م بمی اس سفر مین شرکی ستھے۔

انکابیان ہے کرحصزت عرجب ابلج مین ہیونے تو سنگرنے سمیٹ کرائسیرکٹر ادال دیا ، اور کیو کمیہ بناکر فرسن خاک برلیٹ گئے ، بھرا آسان کی طرف اِت اُ مٹائے ، ورکہا اے خدا! میرا راب زما دہ موگئی۔اور قویٰ کمزور موگئے۔اب محیکہ ونیا سے اٹھا ہے۔ ا اگر مخلافت کے افکار نے انکوخشک مزاج نبا دیا تھا لیکن یُرانکی مبعی حالت بھتی کیم کبمی موقع مآیا تھا توزنرہ دلی کے اثنفال سے جی بہلاتے تھے ۔ ایک د فنہ صنرت عبداللہ بن عباس سے رات بھرا اشعار بڑھوا یا گئے ،حب صبح ہونے لگی تو کہا کہ ﴿ اب قرآن ٹرِھوا ا عدت ابن جوزی نے سیرہ العمین میں لکھا ہے کرایک دفعہ، رات کو گشت کرہے تھے کہا ن سے کا نے کی اُواز آئی، اُدھرمتو جہوئے اور دیڑنک کھڑے کنتے رہے، ایک دفعہ مفرح **من حنزت عمّان، عبدالندين عر، عبدالله بن زبير وعيره سائم سنتے - عبدالله بن زمير آ**خ ہم سنون کے ساتھ مُیں کرتے اوخیفل کے دانے اُچھا لئے چلتے تھے، حضرت عمر معرف ہقعہ **زاتے تنے کہ دکھیواونٹ بھڑکنے نہ یا مین . لوگون نے راجے صے صدی گانے کی فرایش کی** <u>وحفنرت عمرکے خیال سے ر</u>کے ،لیکن حب <del>حصنرت عمر</del>نے کچھڑا رامنی نز طاہر کی تورباح ف كا اشروع كيا ، حصرت عربجي سنت رائ ، حب صبح موحلي توفرها يا كوربس اب مداكم دکر ہا وقت ہے "، ایک و فعہ سفر جے مین ایک سوار گا یا جا یا تھا۔ بوگون نے حصرت عمر سے لها كرآب البكوشع نبين كرته، فرايا كورجمانا، شترسوارون كازا دِراه بيخي، خوات بن جبير كا بیان ہے کہ' ایک دفعہ سفر من میں حصرت عمر کے ساتھ تھا ، ابوعب یہ ہ اورعبدالعمن من عمر ك مولادا م م مِعْدِيه ٢٠٠٠ - كما ارادًا لخناصِيْ ٢٠٠٠ كما ارادًا نخارِسِيْ ١٥٠٠ -

زنره دلی

نراج كيمحي

ہمی ہمرکا ب بختے ، لوگون نے مجرُسے فرایش کی کہ منزارکے ا شعارگاؤ ، حفرت عمرِ نے فرایبتر ا من این اشعارگامین ، چنای مین نے گانا شروع کیا اور ساری رات گانار ا مزاج قدرتی طور پر نهایت تُند-تینراورز و دُشتعل داقع ہوا تھا- جا ہیّت کے زمانے بین تو وہ قہر محتبر تھے۔ سکن اسلام کے بعد بھی مرتون تک اسکا اثر نہیں گیا۔ غزوہ بررمین انحفرت نے زما یا کرمجھکومعلوم ہے کہ کا فرون نے بنوہشم کومجبور کے ہینے سائتہ رہا'ورنہ وہ خودکیمبی نہ آھے 'ا ِس سے اگرا<del> بوالبختہ ہی</del>، یاعبا سے وغیر*وکم*ین نظراً میٹ پُرنکو آفتل ذکرنا ، ابر حذیفیہ بول اُسٹے کہم اینے باپ بیٹے ، مبعا بئی سے درگذ نینین کرتے تو منو ہشم مين كيا خصوميت ہے- والنّدا گرعباس تحميكولات أينگے تومين انگولمواركا مروحكيماً وْكَا بْجَفْتِياً ارا کمی میرگشاخی ناگوا رگذری ،حصزت عمر کی مرت نخاطب مبوکر حزمایا- ایوطفس! «حعنرت عمرکی ا اکنیت متی) دیکیتے مو اِ عِمرسول کا چیرہ الموارکے قابل ہے ؟ حفرت عمر- آہے ہے اِ ہروگئے اورکما ا مازت ذیجے کمین اسکا سرا را دون " حذیقیت ترب رتب کے صمایی تھے اور پر حل اتفاقیہ أنكى زبان سن كل گيا تما-ينائي انخفرت نے اُن سے كوموا ضروندين كيا-ماطب بن ملتعد ایک مزرصی بی منع ، اورغوه بر رمین شرک رہے تھے ۔ اسمون نے ای ، فعه ایک عزورت سے بختا بر کمہ سے خفیہ خط وکتا بت کی ، یہ رازگفل گیا ،حفزت<sup>ع</sup>م برا فروخته موكر انخفنرت كے ياس سنچ كرم كا فرموگيا ، مجمكوا جازت ديجے كراسكوفتل كردون، تخضرت نے فرمایا ابن الخطاب الحجادل معلوم ہے۔ ضرائے تبایدامل مررسے کمدیا ہوکہ تم جو مله أيّا مفاريحور الوراه في مراء

یاہورو بین بر مُوان کردؤ کا ذوالو بھر و ایک شخص نے ایک دوڑا تحضرت سے گتافا زکماکر میں بھرا بعدل اختیار کردہ معنوت ترخصے سے بتیاب ہوگئے اور جا ہاکہ اسکو قبل کردیں بہر کھنے ترخون میں بنیاب ہوگئے اور جا ہاکہ اسکو قبل کردیں بہری حضرت نے منع کیا۔ اِن وا قوات سے مکواندازہ ہوگا کہ سرطرح ہردو تع یُرانکی کمواندا میں سے کلی بُرقی متی اور کا فرتو کا فرز خود مسلما نوان کے ساتھ انجا کیا سلوک تھا الیکن اسلام کی رکبت، اور عربی اور خلافت کی مهمآت نے انکور فتہ رفتہ نیایت نرم اور طرم نیا ویا بیان کہ کہ خلافت کے زوانے میں فرونگے سات جس رحمد ہی اور طلفت سے بڑا وکرتے بیان کے کہ کہ خلافت سے بڑا وکرائے سات جس رحمد ہی اور طلفت سے بڑا وکرائے سات جس رحمد ہی اور طلفت سے بڑا وکرائے ہیا۔ محقے ، تیج مسلمان سے مسلمان نیون کرتے۔

آل واو لاد کے ساتھ محبت

حمزت عمری ایک بوی جملی تعین انگے علن سے عاصم بیدا ہوئے۔ عاصم اہمی منیک ہی مے کہ کسی رجہ سے حمزت عمرنے انکو ملاق دیدی سیر حضزت ابو کمرکاز مانہ تھا، اور خفرت عرقباً سے جہان پیلے رہا کرتے تھے ۔ اٹھ کرمینے مین اُکئے تھے۔ ایک دن اتفاق سے قبا کی طرف مباخلے ۔عاصم ٰ بیوُّن کے ساتھ کھیل رہے تھے ،حضرت ع<sub>م</sub>ے اُنکو کی<sup>ر</sup> کرا ہے کھوٹ يرعُبايا اورسا تدييا بأيا إ- عاصم كي ان كوخبر موبي، ووأن كر فراهم مومين كدميرا أركابي مین اپنے ساتھ رکھونگی، حجاکڑا طول کھنچا اور وہ حضرت ابو کمرکے ہان ذیادی آئین خصر ا بو کرنے ، حضرت عرکے خلاف فیصلہ کیا اوراس سے وہ مجبور روگئے ،، یہ و اخت ۔ موطاا مام مالک وغیرہ مین مرکورہے۔ان وا قعات سے معلوم ہوّاہے کہ عور تون کے با تقه انخا مُسلوک محبّت اور رحم کے اُس یا بہ پر نہ تھا جبیبا اور بزرگون کا تھا- اولا داور ہل خا ندان سے بھی اکوغرمو لی مجتب زھتی۔البتہ ریہ سے جرحتیقی بھا بی سکتے نہا یت الفت می ا خِنا پِذهب وه یمامه کی زائی مین شهیدموئ توبهت روئے اور بخت قلق ہوا۔ فرما یا کرتے تھے کر جب یا مہ کی طرف سے مواملتی ہے تو محجاء زیر کی خوشیوا تی ہے۔عرب کا مشہور مرتبیا گو شاء متم بن نویره حب اکی خدمت مین آیا ته نومایش کی که زیر کا مرشه که محجکوتها راسا کهنا أآ تومين خود كهتا"

حصزت عمرنے جدیا کہ ہم پیلے جصنے بن لکھ آئے ، گمت جب ہجرت کی توعوالی میں اگھیم ہوئے جو مرینہ منوز ہ سے دُ ومین میل ہے۔ لیکن خلافت کے بعد غالباً وہان کی سکونت بالعل حمیورُ دی اور شہر میں آرہے۔ یمان جس سکان میں وہ رہتے ستے وہ سجد نو تی سے متقسل 'آب استلام اور آب ارحمہ کے بیج میں واقع متا ۔ چز کہ مرنے کے وقت وصیت کی متی کہ مکان بھکرانخا قرص اوا کیا جاسے جنا پیخہ آمیر معا ویہ نے اسکو حزیمیا اور دومیت سے وسائر پرات تمارت

ما گیر

شابره

وعن اداکیا گیااسلئے یہ مکان مّت تک <del>دارانقفنا</del> کے نام سے مشہور رہا۔ معاش کا ملی ذریعہ تجارت تھا جنا پخ صیم نجاری من سے کر صدیث استیذان کے لاعلمي كاأتخون نبے يہي عذبكيا كەمن خريږو زوخت مين شغول ہونے كى و جہسے انخضرت کی حذمت مین کم حاصر مبرّا تھا۔لیکن اور فتو حات بھی تعبی مجامل مرحاتی ہین <sup>-</sup> قامنی ابوبوسف نے کتاب الخراج میں لکھاہے کہ رسول اللہ نے مرینہ میں پنچکا بو کم وعرکو جاگیرن عطاكين خيبرجب فتح ہوا توانحفنرت نے تام صحابہ کو چومعرکہ من بترکب تقے تقسیم کر دیا۔ حصرت عرکے حصے مین جوزمین آئی اُسکانام شغ تھا اور وہ نہایت سیرحاصل زمین تھی موترخ بلاوزی نے لکھاہے کہ انخفرت نے خیبرے تام حصد دار دن کے نام ،ایک تما بین قلمبند كرا ديئ مقي بيود بني حارثة سي بعي أنكوا يك زمين إت أني تقى اوراً سكانا م بعي تمغ تھالیکن اُنفون نے یہ دونون زمنین خدا کی را ہیر دفٹ کردیں ۔ خبر کی زمین کے وقت كا دا قعه صحيح تنجاري باب انشروط في الوقف مين مذكور ہے، وقعت مين جرشرطيين كين يقيين ا یہ زمین نزیجی جائیگی۔ نرہیہ کی جائیگی۔ نہ وراثت مین متقل ہوگی، حوکچیہ اس سے حاصل ہوگا وہ فقرار۔ ذوی انقربی۔ غلام، مسا فرا ورمهان کاحق ہے۔ خلافت کے چند برس بعد انفون نے صحابہ کی خدمت مین مصارف ورخواست کی، اسپر حضرت علی کی راے کے موافق استقدر نخوا ہ مقرر ہو گئی جرممولی خور ک خلاصته ا لوفار لفظ تمعّ-

اوربیاس کے لئے کا فی ہو۔ سطعہ مین حب تمام لوگون کے روزینے مقرر ہوئے تواوراکا پر صیا برکے سائم انکے بھی ایخ ہزار درہم سالاندمقرر موگئے۔

معلوم ہوتا ہے کہ مینہ پنجاول ول، زرعت بھی کی متی نیکن سطرح کہ کھیت ٹانئ پر ربریتے ہے تخ کم بھی خود میا کرتے تھے اور کھبی اُسکا ہم بنیا ایھی سٹرکی کے ذرتہ وا تھا چنا لخب

میمی نا با الزارعه مین به دا قعه تصریح مرکوری -

عَدَا نهایت سا ده بهتی ،معمولاً رونی اورروغن رتیون دسترخوان پر موتا تھا۔رونی اکٹرگہرین كى ہوتى ئقى ليكن أمّا جِها نا نبين جا آنتھا۔ عام القحط مين ُجُو كا الترزام كرليا تھا كيمبي كمبي شعد د جيزين د ستر حوّان برموتی تقین اوروه به موتی تقیین گوشت ، روعن زیتون- **دوده- ترکاری- مسرکه** مهان إ سفرار آتے سفتے تو کھانے کی انگوتکیفت ہوتی تقی کیونکہوہ ایسی سادہ اور ممولی غذا کے عادی نبین ہوتے تھے۔

بهاس عبى ممولى بوماتها-اكثر صرف قميص سنيتے تھے- برنس اكي قسم كى ٽويى تقى جوعبيا ئى در دسش ا ورها کرتے تھے۔ مدینہ منورہ میں بھی ا سکا رواج ہو جلا تھا خیا کی حضرت عمر تھی کھی جم

استعال کرتے تھے جوتی وہی عربی وغنع کی ہوتی تھی جس مین تسمہ لکا ہوتا تھا۔

منایت بے کلفی اورسا دگی سے رہتے تھے۔ کیڑون مین اکثر میپند ہو یا تھا۔ ایک دفعہ دیراکمہ گھرمین رہے ، اِسرآئے تو لوگ اُنتظا رکررہے تھے ،معلوم ہواکہ بیننے کوکیٹرے نہ تھتے ا<sub>س</sub> کئے اُنتی کیرون کو دھوکر سُوکھنے کو ڈال دیا تھا خشک ہوگئے تو دہی مینکر یا ہر کلے۔

لیکن بن تمام با تون سے بینین خیال کرنا چاہئے کہ وہ رہبا نیت اور تقشف کوپیدر آو تھے

سا د گی دور لے کلنے ل باب مین انکی را سے کا افرازہ اس سے ہو اہے کرایک د فغہ ایک شخصر میکو انھوں نے مین کا عال مقرر کیا تھا ہی صورت سے اُن سے کمنے کو ایا کہ ابہاس فا خرہ زیبِ مدن تھا ا ورا یونین خوب ل یرا موات**حا** حصرت عمر نهایت نا ران مبوئ اور و ه کی*رے اُترواکرموٹا حیو*اکٹرا نیمایا۔ دوسری دفوآیا ورشان مواور علي يُراف كير سين راه والكريمي مفسودنين وميكونه ياكنده ورنباجا بي نه مِیان *جانی جا ہتین ' - حاصل یہ کہ وہ نہ* ہیے دہ کُلفات اورآرائیش کو بیند کرتے تھے نہ راہبا نہ زندگی كُواقِيما سمحقے تھے۔

حلیمہ پر تھا ۔ زنگ گندم گون ، قدنهایت لانبا یهان ک*ک کسکڑون نبرارون آدمیو نکے محب*ر بن کھ<sup>ے</sup> ہوت*ی تقے توانا قدرسے نظام و یا تھا۔ جناب کرگوشت گھن کی داھی۔ تخیین ٹری ٹری سرکے* الساسے *الکے تھے* حنرت عرب مرسیفه ین جو باتین ئی ایجا دکین انکو موضین نے کمچالکھا ہے اور کنکوا ولیات سے مب رت من خاینه مم انکے مالات کو امنی اولیات کی تفعیل خیم کرتے مین کراول ہم خرنست وارد۔

د ۱) بيت المال منى خزاز قائم كيا-

۲۰) عداتین قائرکین اور قاصنی مقرر کئے۔

دس) تاریخ اورسنه قائم کیا جوآج تک جاری ہے -

(مه) اميالمونين كالقب انمتياركيا-

(۵) فرحی دفتر ترتیب دیا-

(٦) دالینشیرون کی نخواهین مقررکین -

كى سىپ ئزادليات كتاب لادال بى ملال مسكرى اور لايخ طبرى من كميا خۇرىين اقى جىتەجىتە موقىون سى كىماكى گئى مېن -

(٤) وفرِّ ال قائم كيا-

(^) پمائش حاری کی-

(۹) مردم نماری کرائی-

(۱۰) تنرین گفدوایش

(١١) شهرًا وكرائح بيني كوفه-بصره-جيزو- فسطاط-موسل-

(۱۲) ما لك مقبوطنه كوصوبون مين تعتيم كيا-

(۱۳) عُشُورِيني ده کِي مقرر کي (اسِکي تفصيل صيغة محاصل مِن گذر حکي ہے)

(۱۴۰) دریاکی پیدا دار شلأعنه وغیره پرمحصول لگایا او مُحِصِّل مقرر کئے۔

(۵) جربی تا جرون کو کمک مین آنے اور بجارت کرنے کی اجازت دی-

(۱۶) جیلیٰ نرقائم کیا۔

(۱۷) وَرّه كا استعال كيا -

(۱۸) راتون کو گشت کرکے رعایا کے دریا فت حال کا طریقی نخا لا۔

(١٩) بولىس كامحكمة قائمُ كيا-

(٢٠) جا با فوجی جیا وُنیان قائمکین-

(۱۷) گھوڑون کی نسل میں ایک ویٹنس کی تینر قائم کی جوائسوقت تک وب مین نہاتی۔

(۲۲) پرجه نونس مقرر کئے۔

(۲۲) كَنْ عَظْمِ مِنْ مَوْرَة لك سافرون كى أرام ك ك مكانات بنواك-

(۱۲) راه پربرسے ہوئے بچین کی بروری اور پرداخت کے لئے روز بینے مقرر کئے۔

(۲۵) مختلف شهرون مین مهان فانے تعمیر کرائے۔

(۲۷) یہ قاعدہ وار دیا کہ اہم عرب (گو کا فرہون) غلام نین بنائے جاسکتے۔

(۳۵) مفلوک لال عیسایئون اور میودیون کے روزینے مقرر کئے۔

(۲۸) مكاتب قائم كئے-

(۴۹) معلّمون اورمدرّسون کے مثبا ہرے مقررکئے۔

(دس) خصنرت ابو كمركوا صرارك سائة قرآن مجبير كى ترتيب يراً ما ده كيا اورايني تهام سعا مركام كولوراكيا

(۱۳۱) قياس کااصول قائم کيا-

(۳۲) نوائفن مین عول کا مسکلایجاد کیا-

(سه) فجركي اذان من المصلوة خير المغوم اضافها ينا بناي موطالام الكمين إلى ففيل كور

(۳۲) نازِرا دیج عاعت سے قایم کی-

ره ١٠) متر باللاقون كوجواكي سائد ديامين طلاق بابين قرار ديا-

(۳۹) شراب کی حدکے لئے اسی کوٹے مقرر کئے۔

(س) تجارت کے گھوٹرون پرزکوٰۃ مقرر کی۔

(۳۸) بزنفلب کے عیبامیون پر بجائے جزید کے زکوہ مقر کی-

(۳۹) وقت كاطريقه ايجادكيا-

ر. ۲) نازخارهین کارکمبیرون پرتام بوگون کا اجاع کرادیا-

رام ) مسامبری عفاکاطریقی فائم کیا جنا بی اعزت سے تیم داری نے وعظاکماا و ریاسام میں بیلا وعظ تھا۔ ۱۳۷۶ اماموں اور و ذنون کی تخواہین مقرر کمین -۱۳۳۱ مسامبر مین را تون کوروشنی کا انتظام کیا -۱۳۳۱ ، ہجو کہنے پر توزیر کی سزاتا کا کم کی -

ره ۲) غرنبیدا شعارمین ،عورتون کے نام کینے سے منع کیا ما لا کم پیطر بقیر عرب میں مرتوسے حاری تھا۔ انکے سوا اور مبت سی آنکی اوّ بیات ہیں ۔ جنکوہم طوالت کے خوف سے قلم انداز کرتے ہیں ۔ انگے سوا اور مبت سی آنگی اوّ بیات ہیں۔ جنگوہم طوالت کے خوف سے قلم انداز کرتے ہیں۔

ازواج و اولاد

دوسری بوی قربیته بنت ابی میته المخزومی تقیین حجّ انخفرت کی زوجهٔ مبارک ام سلمه کی بن تقیمن ، چونکه به اسلام نبین لامین اور مشرکه عورت سے نکاح جائز نبین ، اس سے صلح حد میبه یکے بعد میٹ میں انکو طلاق دیدی-

تىسىرى بويىلىكة ىنت حبرول الخراعي قىين أكمواتم كلنوم كى كىتىمىن، يىمى الامنىلامىر.

ازواج

اوراسودبسے سلند میں اُکوجی طلاق ویدی۔عبداللہ الفی کے بطن سے ہیں۔

رمیب اور تربیۃ ولیش کے فا ذا ن سے اور کمیکہ۔خزاعۃ کے جبیادسے عین ، مدینہ منور ہم
مین اگر انعمار میں قرابت بیدائی ، بینی سئٹ مین عاصم بن نابت بن ابی الافلح حوا کیے معزز انفعار ی سفتے اور غزوہ کہ رمین سٹر کی رہے سفے اُ اُکی بیٹی جمیلۃ سے کاح کیا جمیلہ کام پہلے عاصیہ تھا۔حب وہ اسلام لامین تو انفعارت نے بدلاحم آیا امرکما لیکن اگرہ کی دوبے طلاق بری افرار سے علی انکوجی کی دوبے طلاق بری المحمد تھا۔حب وہ اسلام لامین تو انفعارت نے بدلاحم آیا مرکما لیکن اگرہ کی دوبے طلاق بری افران بیٹ اور برکت کاب تعالی جنا بیز خباب امیر سے محمد تو اور کاندان بیٹوت سے تعلق بیدا کرین جزیر پر شرف اور برکت کاب تھا۔ جنا بیز خباب امیر سے محمد کو صول شرف معقدود ہے ، تو خباب امیر نے منطق وزرایا اور سے شمیلہ حصول شرف معقدود ہے ، تو خباب امیر نے منطق وزرایا اور سے شمیلہ میں مہنا اور سے محمد کو سول شرف معقدود ہے ، تو خباب امیر نے منطق وزرایا اور سے شمیلہ میں مہنا ا

حفزت عمرك اورمومان معي تقين الم عكيم بنت الحارث بن مثام المخزومي فكيته تميني عاً كمة من*ت زمين عروبن بف*يل عاً كك<sub>َ</sub> مص<del>رت عربه ا</del> محيري مبن بقين والخالخاح مبليه ، *حضرت* الوكم ع فرز ندعبدالمتَّرِسَ مبواعقا ، ا ورجون كم عَالَكُه نهايت فوتصورت هين ،عيدالنَّه أنكوبت عاست مقع عبدا منَّد غزوهٔ طائفَ مِن شهيد موكِّئ - عَالَم شِيءِ إِنَا بنايت در دالكيز مرتبه لكها حسكا الك شوسيّ فَالْمِيْثُ كُلْمَتْ فَالْحُ عَيْنِي حَنِيْنَةً عَلَيْكَ وَلَايِنُونِ لِكَ جَلَايَ أَغُبَرًا من ف متم کهای سے کرمسیری آلم میشه یرے ادر مگین رہیگی، دربن فاک آلودہ رہیگا، تفرت عمر في مناهمين أنسية كاح كيا - دعوت وليم من حصرت على يمي شركب تق -حفرت عركے اولا دكٹرت سے ہوئى جن مين سے حفرت حفصہ اس كئے زا دہ تمازین كه دو از واج مطهرات مين د اخل بين- انخانخاح ميڭ خنيس بن خدا ند كے ساتھ ہوا تھا جونما برن محابهین سے تھے نِحنیس جب غزوہُ اُصرمین نسید موٹ تو وہستہ میں خباب رسولُ النّہ کے عقدمین آمیکن ان سے بہت سی حدثتین مروی مین اور بہت سے صحابہ نے اُن سے حدین روامیت کی مین مصهم مین ۹۴ برس کی عرایر انتقال کیا-اولاد ذوكورك مينام بين عبدالله عبيدالله عاصم- البيخمة بالرحمل تربير مجير إن من مین سابق الذكرزاده امورمن، حضرت عبدالله فقه وحدمیث كے بڑے ركن مانے جاتے ہن بخاری وسلمین انکے مسائل اوررواتیین کثرت سے ندکور ہیں، وہ حضرت عمر کے ساتھ کمہ مین اسلام لائے ، اوراکٹر غوات مین انحفزت کے ہمرکا ب رہے علاّمہ ذمہی نے تذکرہ الحفاظ مِن اورابن خلکان نے وفیات الاعیان مین انکا مال تغییر کے ساتھ لکھاہے ،جس ہے ایک

ادلاد ذکو به نسب

عبدانسدي

علم و مفتل اورز ہر ق تقد س کا اندازہ ہوسکتا ہے۔ علم دفتن کے علاوہ وی گوئی میں ہنایت بمبال ستے ، ایک دفعہ تجابی برخی ہیں خطبہ طرجر را تھا، صین ایسی مالت میں انفون نے کھڑے ہو کو کھا ، خیا بخر اس کے دوستوں کو قتل کیا ہے ، خیا بخہ اس کے انتقام کھڑے ہو کہ کا دخر کہ انتقام کی خوا کے دوستوں کو قتل کیا ہو ، خیا بخہ اس کے انتقام میں تجابی ہو کہ ایسی ہو کہ کا دورا میرم آلہ سے زمنی کیا اورا سی زخم شے بیا رہو کہ وفات بائی ، علا مرز زہ ہی نے کھیا ہے کہ جب تصرت علی اورا میرم آلہ سے انبی ملا مرز ہو ہی نے کھیا ہے کہ جب تصرت علی اورا میرم آلہ ہے کی خلافت بررا صنی بین میں دیا تولوگوں نے حضرت عبد استر سے اکر کہا کو رہ تا مرسل ان آپ کی خلافت بررا صنی بین ایسی میں اور کہا کو مین اس کے خون سے خلافت کو خریز انہیں جا ہتا ہے مسلما نون کے خون سے خلافت کو خریز انہیں جا ہتا ہے۔ حضرت عبد النہ کے بیٹے سالم نو خوا ہی است میں مینی مرنید منور ہو کے اُن سائت فقہا دین

سالم برعمدته

حضرت عبدالنّہ کے بیٹے سالم نقها سبویسی مینه منورہ کے اُن سات فقها رہن محسوب ہین جن رحدت و نقه کا مرار تقا اور شکے فتوے کے بغیر، کوئی قاصی و فیصلہ کرنے کا مجاز نہ تھا سالم کے علاوہ بانی ہجنہ فقها رکے یہ نام ہین، خارج بن زید عودہ بن الزبیر اللیان بن بیار و عبیدالنّہ بن عبدالنّہ بن عبدالنّہ سعید بن السب قاسم بن محد۔

یہ بات یا در کھنے کے قابل ہے کہ تا م محد تمین کے زدیک، حدیث کے داوسلے سب زیادہ سند ہین اور کہ تنین اس سلسلے کو نرنج برز کھتے ہیں یعنی اول وہ صدیث جبکی روایت کے داور تا م الک نافع عبدالنّہ بن تحریق دوسری وہ صدیث جبکے سلسلیمین زہری سالم اوعربی تنہ میں عبدالنّہ بن تحریق اللّم الک نافع عبدالنّہ بن تحریق سوا باقی تا م لوگ حصرت تحریم کے گھرائے بین عبدالنّہ اللّه اور سالم اور تا فق غلام کتے۔

کے ہیں ۔ عبدالنّہ انکے بیٹے۔ اور سالم کو تے۔ اور تا فق غلام کتے۔

حضرت عمرکے دوسرے بیٹے عبیدالٹرشخاعت اور میلوانی میر مشہورہن۔ تيسر عبيے عاصم نهايت پاكيزه نفس اور عالم و فاضل تھے بنئ ثمين حب أنمون ك تقال كيا توصون عبداللدي عرب أكام تبه لكما حيكا اكم شعريه-فَلَيْتَ الْمَنَا بَأَكُنَّ خَلَّفْنَ عَاصِمًا فَعِشْنَا جَمِيعًا اوذَهَبْنَ بِنَامَعًا كا ش موت - عاصم كو جمور باتى اكهمب مايورية - يا يما الما توسب كو يما أي عاصم نهايت بلند قامت اورمبيم تقي- اورشعر خوب كنتے تقى جنا كذا بل ادب كا قول ب که: ہرشا عرکو کھیے ناکچے وہ ا نفاظ بھی لانے ٹیرتے ہیں جومقصو دہنین ہوتے لیکن عاصم اِس سے ستنیے من عضرت عمرین عبدالعزر آبھی کے نواسے مخط<sup>ل</sup> ابن متیبہ نے کتاب المعارف مین حصرت عرکے یوتون پروتون اور نواسون کا

حال می نکھا ہے لیکن ہم اختصار کے لیاظ سے قلم انداز کرتے ہیں ہے۔

ك حضرت عركے از واج وا ولا د كا حال من شے اسدا لغانة -كتاب المعارف - ابن ملكانٌ كا مل بن الاثير- اور متح المغيث سے لكما ہے ،،

## حنائة

اليس يلله عِسْنَكِل النَّحْمَعَ العَالَمَ فِي وَاحدِ

حصرت عمرک سوائخ اور حالات ہفضیا کے ساتھ اوراس صحت کے ساتھ کھے جوا رئجی نقسنیون کی صحت کی اخیر جدرت دنیا میں اور جس قدر بڑے بڑے نامر اگئے جوا رئجی نقسنیون کی صحت کی اخیر جدرت دنیا میں اور جس قدر بڑے بڑے نامر اگذرے ہیں ، انگی فقتل سوائخ عمرای سیلیے سے موجو دہیں ، یہ دونو چیزین اب تمارے سامنے ہیں اور مکوایس ابت کے دیفہ اکر نمایم وقع ہے کہ تمام دنیا میں حصرت عمراکو کی مہایہ گذرا ہے یا نہیں ؟

اب حضرت عمرے حالات اورا کم خملت میشیتون پر نظر ڈوالو، صاف نظرائیگا

له و *مكندر تعبى سختے* اور <sub>ار</sub>سطو تعبی <sup>،</sup> مسیح تعبی سختے اور سلیمان تعبی <sup>،</sup> تیمور تعبی سختے اور نوشیر ا تمبى، الم م الوحنيفة تعبى كقے اور ا براميم ا دمم تعبى-سب سے پہلے حکم انی اورکشورتیانی کی حیثیت کو تو۔ دنیا مین حب قدر حکم ان گذرے ہین مرا کی کی حکومت کی تامین کوئی نہ کو ئی شہورمز برایسیہ سالا محفیٰ تھا۔ یہان ک*ت که اگر*ات**فات سے وہ مرتر ب**یسیسالار نہ رہا تو دفعتَّه فتو حاست بھی رُک گئین ی<u>ا</u> نظام حكومت كا دْحایجه كُوْگا-سكندرم رموقع برارسطوكي مراتيون كاسهارا ليكرطيا تفا-اكبرك يردسين انفنل ا ورٹوڈرمل کا مرکئے تھے۔ عباسیہ کی طمنت وشان برا کمہ کے دم سے بھی کیسی کن حضرت ممرکو صرف اینے دست و باز و کابل تھا۔ خالد کی عجیب وغریب معرکہ آرا میون کو دنکھکرلوگون کوخیال بیدا ہوگیا تھا کہ فتح وظفر کی کلیدائفی کے بات میں ہے لیکین جب حضرت عمر ہے اُنکومنزول کردیا توکسی کواحیاس کے بنواکوکل میں سے کوسنا یرزهٔ کل گیاہے ؟ <del>سعدو قاص فائ</del>ے ایران کی سبت بھی لوگون کو اسی متم کا وہم پیدا موحلا تھا'وہ معبی الگ کردیے گئے اورکسی کے کان رچون بھی نظی ۔ یہ بیے ہے کہ ضرت عمرخود سارا کام نہیں کرتے تھے اور نہ کرسکتے تھے لیکن میں لوگون سے کام لیتے تھے ہیں کسی کے بابند نہ تھے ، وہ حکومت کی کُلُ کو اس طرح چلاتے تھے کرجس رزے کوحمات چا بانخال لیاا ورجهان جا با لگا دیا ،معلحت ہوئی توکسی ٹیزیے کوسرے سے کا لدیا ا ور منرورت ہوئی تونئے میزدے ملیا رکولئے۔

دنیا مین کوئی ایسا حکما ن نبین گذر احبکومکی صرو تون کی وجہسے، عدافیانعم<sup>ین</sup> کی حدو دسے تجا وزیذ کرنا پڑا ہو-نوشیروان کو، ز ہا نہ عدل وانصا من کامیغمیرتسلیم آرا ہے لیکن اُسکا د من بھی اِس واغ سے باک ہنین بخلات اِسکے حضرت عمر کے تما موا مو لوحيان دا يو، اس متم كي ايك نطير بهي منين مل سكتي-دنیا کے اور مشہور سلاطین حن مالک میں پیدا ہوں ، و ہان مترت سے حکومت کے تواعدا ورآمئین قائم کھے۔اوراس کیے ان سلاطین کو کوئی نئی بنیا دہنین قا تم رنی ٹرتی تھی قدیم انتظا ات یا خود کا فی موتے تھے یا کیماضا فہ کرنا ٹرتا تھا۔ بخلاف ا کے حصرت عمر حس خاک سے بیدا ہوے وہ اِن چیزون کے نام سے اُنسانہ تھی۔ حوٰ وحصٰرت عمر نے ،ہم برس ک*ک حکومت وسلطنت کا خواب بھی نبین دیکیھا تھا* ا و ر اً غا نرشاب توا ونٹون کے چرانے مین گذرا تھا' اِن ما لات کے ساتھ ایک سیخ ملکت تَا يُمُ كُرِ نِي اور ببرقتم كے ملكي أتبطًا ات مثلاً تقتيم جوبجات و إضلاع أنتظام محاصل ا صینعهٔ عدالت، فوجداری اور پولیس بیبلک وکس تعلیمات مینغهٔ فوج، کواس قدر تر تی دینی اور آنکے اصول اور صنابطے مقرر کرنے <del>حصرت ع</del>رکے سوا اورکس کا کا م موسكتا تقا ؟-

تام دنیای تاریخ مین کوئی ایساحکران دکھاسکتے ہو جسکی معاشرت یہ ہو کہتیں مین دنس دس پیوند گئے ہون کا ندھے پر منتک رکھکرغریب عورتون کے بان بی بھرآ تا ہو۔ فریشِ خاک بربڑر ہتا ہو۔ بازارون مین بڑا بھرتا ہو۔ جمان جا تا ہوحب ریدہ

وتنہٰ چلاجا یا ہو، اونٹون کے برن پراینے ہات سے تیل متیا ہو، درو دربار بِعتیب و چاؤین مضم وخدم، کے نام سے اثنا منو، اور بھر میرعب و داب ہو کہ <del>عرب و تجم</del>راً سکے نا م سے ازتے ہون اور حس طرب مرخ کرتا ہوز مین دہل عابی ہو سکندر وہمتور ہے تا میں شرار فرح رکاب میں ہے کر بکلتے بھتے جب اُ کارعب قائم ہوتا تھا۔ <del>عمرفار دق</del> کے <del>سفرشام</del> مین سواری کے ایک اونٹ کے سوا اور کھیدنہ تھا نیکن حارون طرف غل ٹرا ہواتھا امرکزعالم حنبش من اگیاہے۔ اب علی حیثیت پر نظر دا او صحابیمن سے جن او گون نے خاص اس کا م کولیا تھا اور رات دن اسی شغل من بسرکرتے تھے شلاً حضرت عبدا سلدین عبامسس زیربن ناست -ابومررته عبدالتدين عمر عبدالتّه بن سعود انكے مسأل اوراجتها وات كا حضراً عرك مسائل اوراحتها دات سے مواز نذكرو، صاً ف مجتمد ومقلد كا فرق نظراً ميكا، زانه ا بعدمین اسلامی علوم نے بے انتہاز تی کی اور ٹرے بڑے مجتمدین وائیّہ من ریا ہوئے مثلا امام ابوہ نیفہ تنافنی۔ ن<u>نجاری غزالی</u>۔ رازی لیکن انصاف سے کمعو <u> عنرت عمرت حب بأب مين حو كيوارنها دكيا أسير كويا ضا فه ہو سكا؟ مسكانصاً وقدر َ</u> <u>ظیم شعائرا بن</u>د ح<u>ثیت نبوت -احکام تربیت کاعقلی یا نقلی م</u>زیا <sup>.</sup>ا حا دیث کا در ٔ مثلاً خراصاد كى قالبيت حجاج احكام مس وغيمت يمسأل شروع اسلام سے آج ك حركمارا رہے ہیں اورا مُر من سے اُن کے متعلق وانت اور لمباعی کا کوئی وقع نہیں اُٹھار کھا، لیکن ایفات کی گاہ سے دمکیو-حفزت ترنے ان سائل کو مبرطرح صل کیا تما کتیق

کا ایک قدم بھی اُس سے آگے بڑھ سکا ؟ تام ائر من نے یا اُن کی بیروی کی مانون كما توعلانىغلطى كى-ا خلاق کے لحاظ سے دکھیو توا نبیا کے سوا اورکون شخص اُنکا ہمیا یہ اسکتا ہے ا زېر و فناعت - تواضع وانکسار- فاکساري وسا د گي - رستي وحق پرستي-صبرور ضا-شکرو توکل۔ یہ اوصا ف اُن من حسب کمال کے ساتھ اِنے جاتے تھے کیا۔ تقمان ابراہم اہم ابو برشلی، معروف کرخی مین اسسے بڑھکر ایک جاسکتے تھے ؟۔ شاہ ولی انٹرصاحب نے حضرت عمر کی اس خصوصیت (بینی مامعیت کمالات) لومنا یت خوبی سے بیان کیا ہے اور ہم اسی برا بنی کتا ب کوختم کرتے ہیں- وہ تحر*ی*ے "سينهٔ فاروق عظم را بنزله فا نه تضور کن که در باسے نحلف دارو- در مبردرے صاحب کما لے نشسته ور كيب در مثلاً سكندر ذوالقرنين أنهمه سليقه للكركيري وجهان شانی و خمع جموشس و بریم زدن اعدار در در دگیر نوشیروان بان بهمه رفق ولین وعتیت پروری و

دا دگشتری داگرجه و کرنوشیروان دمیجیث قصائل حفیت فاروق مورادب ست) و قرور دیگراما م اوصنیت يامام ماك بأن بمة فيام يعلم فتوى واحكام ودرور ويكرم شدات مثل سيدي عبدالقا درحلاني بأخوسب بهارالدین و در در و گیرمجذ بشیروزن ابوهسه ررة وابن مسمو و و ورور و گر شخیم مانندمولا ناطلال ان رومی یا تیننج فزمدالدین عطارو مزد ما ک گرد اگرد این خانه ايتاده اندوم مخاسب حاجت خودرا ازصاحب فن درخوات تنامه و کامیاب ی گردد.